श्रीविश्वनाथो जयति ।

श्रीमहामण्डल डाइरेक्टरी ।

सन् १९२९ तथा ३० ईस्वी ।

(सम्वत् १९८७ के महामण्डल पञ्चांग सहित)

श्रीमान् पं० गोविन्दशास्त्री दुगवेकर

द्वारा सम्पादित ।

श्रीभारतधर्म महामण्डलके शास्त्रप्रकाशन विभाग द्वारा

प्रकाशित ।

निवेदन।

—:※:—

परम मङ्गलमय परमात्माकी अपार करुणासे "श्रीमहामण्डल डाइरेक्टरी" की यह पञ्चम संख्या प्रकाशित करते हुए हमें अत्यन्त आनन्द हो रहा है। "श्रीभारतधर्ममहामण्डल" के सञ्चालकोंको यह बात बहुत वर्षोंसे खटकती थी कि, सर्वमान्य राष्ट्रभाषा हिन्दीमें कोई ऐसी वार्षिक डाइरेक्टरी नहीं निकलती, जिससे हिन्दीसे परिचित सभी प्रान्तोंके लोग लाभ उठा सकें। अंग्रेजीमें जो थक्करकी डाइरेक्टरी निकलती है, उससे एक तो हिन्दी-भाषाभाषी लाभ नहीं उठा सकते। दूसरे, उसका मूल्य इतना अधिक है कि, सर्वसाधारण मध्यम श्रेणीके लोग उसे खरीद नहीं सकते। तीसरे, उसमें ऐसे ही प्रायः अधिक विषय होते हैं, जिनसे अंग्रेज या तत्तुल्य लोग ही अधिक लाभ उठा सकते हैं। अंग्रेजीमें और भी कई छोटी छोटी डाइरेक्टरियां निकलती हैं, परन्तु उनसे भी केवल हिन्दी जाननेवालोंका कोई उपकार नहीं हो सकता। देशमें अनेक प्रान्तीय भाषाएं प्रचलित हैं। उनमेंसे भी किसी भाषामें कोई डाइरेक्टरी नहीं निकलती। अतः "श्रीभारतधर्ममहामण्डल" के सञ्चालकोंने हिन्दीमें ही एक सर्वोपयोगी डाइरेक्टरी निकालनेका निश्चय किया और उसका कार्य भी आरम्भ कर दिया।

सौभाग्यसे उस समय "श्रीभारतधर्ममहामण्डल" के सञ्चालकोंके उत्साह और उद्योगसे "भारतधर्मसिण्डिकेट लिमिटेड" नामक कम्पनी दस लाख रुपयोंके मूलधनसे स्थापित हो चुकी थी। जिसके अनेक उद्देश्योंमेंसे प्रधान उद्देश्य यह है कि, मौलिक शास्त्रप्रकाशन किया जाय और स्वधर्मप्रचारार्थ अनेक भाषाओंमें समाचारपत्र प्रकाशित किये जायं। और राष्ट्रभाषा हिन्दी की उन्नति और प्रचारमें विशेष प्रयत्न दिया जाय। तदनुसार उक्त कम्पनीने शास्त्रप्रकाशन और समाचारपत्रोंके पृथक् पृथक् विभाग खोल दिये थे। श्रीमहामण्डलके संचालकोंने डाइरेक्टरी-सम्बन्धी

अपने निश्चयका शुभ प्रस्ताव सिण्डिकेटके डाइरेक्टरोंसे किया और परामर्श दिया कि, इसका सम्पादन महामण्डलसे सम्बन्धयुक्त विद्वानों द्वारा करा दिया जाया करेगा और प्रकाशन सिण्डिकेट करती रहे। इस उद्योगसे सिण्डिकेटको आर्थिक लाभ पहुँचना भी सम्भव है। डाइरेक्टरोंको यह परामर्श जँच गया और सिण्डिकेटके समाचारपत्र-विभाग द्वारा डाइरेक्टरी गत चार वर्षोंतक बराबर निकलती रही। परन्तु संयोगवश सिण्डिकेटको समाचार पत्र-विभागमें बहुत घाटा उठाना पड़ा, इस कारण उसने वह विभाग उठा दिया। अन्ततः डाइरेक्टरीका प्रकाशन भी बन्द होना स्वाभाविक हो गया।

प्रचारके विषयमें महामण्डलडाइरेक्टरीकी उन्नति आशाप्रद हो रही थी। क्या साहित्यसेवी, क्या राजा-महाराजा, क्या शिक्षित स्त्री-पुरुष, क्या सेठ-साहूकार सभी इसको पसन्द करते जाते थे। हिन्दी साहित्य-जगत्में यह एक बिलकुल नयी चीज होनेपर भी इसका आदर बढ़ रहा था। परन्तु दुःखसे कहना पड़ता है कि, हमारे देशवासियोंकी जैसी गिरी दशा हो गई है, उसके अनुसार इस स्वजातीय प्रशंसनीय कार्यके साथ बहुत कुछ असत् और निष्ठुरताका बर्ताव देखने और सुननेमें आया। बहुतसे विज्ञापनदाताओंने विज्ञापन छपाकर छपाईका रुपया नहीं दिया और बहुतसे स्वार्थी कर्मचारियोंने भी विज्ञापनके सम्बन्धमें बहुत धोखा दिया। इन सब शोकजनक कार्योंसे उक्त स्वजातीय भारत-धर्मसिण्डिकेट लिमिटेडको बहुत क्षति उठानी पड़ी। यद्यपि श्रीविश्वनाथकी कृपासे सिण्डिकेटने अपने सम्बादपत्र विभागको उठा कर और एक महापुरुषसे आर्थिक सहायता प्राप्त कर नये रूपमें अपना संस्कार करके अपनेको मजबूत और नया बना लिया है, परन्तु इस परिवर्तन द्वारा उसे बाध्य होकर अपने साप्ताहिक पत्रके साथ ही साथ इस वार्षिक डाइरेक्टरीको भी बन्द कर देना पड़ा।

ऐसी अवस्थामें इसका प्रकाशन बन्द हो जाना श्रीभारतधर्म-महामण्डलके सञ्चालकोंने उचित नहीं समझा। अतः सम्पादनकी तरह इसके प्रकाशनका भार भी महामण्डलने अपने ऊपर ले

लिया है । क्योंकि डाइरेक्टरीका महत्व अभी लोगोंको समझाना है। यद्यपि देशकी अनेक भाषाओंमें "रोजनामचे" निकल रहे हैं, तथापि उनका उपयोग बहुत ही कम लोग करते हैं। एक वर्ष हमने भी डाइरेक्टरीकी हर एक तिथिमें 'रोजनामचा' लिखनेके लिये थोड़ा स्थान छोड़ा था। परन्तु लोगोंने उसका उपयोग नहीं किया और हमारा व्यय व्यर्थ हुआ। आलस्य ही इसका कारण है। परन्तु "डाइरेक्टरी" आलसियोंका भी आलस्य छुड़ा सकती है। मनुष्यकी दिनचर्यामें बहुत सी बात जानने योग्य होती हैं, जिनके लिये लोगोंसे जिज्ञासा करनी पड़ती है। घर बैठे यदि वे सब एकाधारमें प्राप्त हो जायं, तो पूछना ही क्या है? यही काम हमारी डाइरेक्टरी करती रहेगी। उत्क्रान्तिके सिद्धान्तानुसार संसार प्रतिक्षण आगे बढ़ रहा है। सुन्दर भविष्यत्‌में प्रवेश करनेके लिये उज्ज्वल वर्तमान बनाना और उज्वल वर्तमान बनाते हुए अतीतको आंखोंके सामने रखना पड़ता हैं। इस कार्यमें डाइरेक्टरी पूर्ण सहायक होती है।

इस डाइरेक्टरीमें धार्मिक, सामाजिक, नैतिक, औद्योगिक, व्यापारिक, आयुर्वेदिक, ज्योतिषिक आदि सब बातोंका समावेश करनेका हमारा विचार है। इस वर्ष हमने १४ विषयोंके १४ खण्ड बनाए हैं। उन १४ मेंसे कुछ तो विशेषज्ञों द्वारा सम्पादित हुए हैं और कुछ विषयोंका नमूना मात्र दे दिया है। भविष्यत्‌में सभी खण्ड विशेषज्ञों द्वारा सर्वाङ्गपूर्ण सम्पादित हों, ऐसा प्रयत्न किया जा रहा है और भावी डाईरेक्टरी सर्वाङ्गसुन्दर और गृहस्थ मात्रके उपयोगी हो, ऐसा निश्चय किया है। अबतक व्यापार विषयका समावेश इसमें नहीं हुआ था। उसका नमूना इस वर्ष दिया गया है। सिरिटकेटसे महामण्डलमें इसके परिवर्तित होनेसे सब खण्ड जैसे होने चाहिए, वैसे सम्पादित नहीं हो सके हैं क्योंकि समयका अभाव रहा, और इसके प्रकाशनमें भी, नये प्रबन्धके कारण, विलम्ब हो गया है। अबके वर्ष यह सम्पूर्ण नया कार्य श्रीमहामण्डलको उठाना पड़ा है। इस कारण अनेक खण्डोंमें असम्पूर्णता रह गई है। पञ्चाङ्ग खण्डके विषयमें अबतक अनेक मतभेद रहे हैं। किसी किसीकी सम्मति यह है कि, हिन्दीभाषा भाषियोंको जैसे पञ्चांग देखनेका अभ्यास है, वैसाही पुराने ढंगका पञ्चांग

इसमें होना चाहिये। किसी किसीकी सम्मति है कि, बङ्गालमें जैसी विस्तृत पंजिका निकलती है, जिसे स्त्रियां और बच्चे भी समझ लें, वैसा पञ्चांग इसमें हो। अबकी संक्षेपसे दूसरी रीतिका ही अवलम्बन किया है। आगे लोगोंकी जैसी सम्मति होगी, वैसा किया जायगा। इस विषयमें विज्ञ लोगों की सम्मतिप्रार्थनीय है, आशा है, स्वदेशहितैषी, और स्वभाषा प्रेमी सज्जन सत्परामर्श देकर अनुगृहीत करेंगे। अब विचार यह है कि, प्रतिवर्ष यह वसन्त-पञ्चमी (माघ शुक्ला ५) को प्रकाशित हो जाया करे और इसमें वे सब विषय आ जाया करें, जो इस वर्षमें महत्वके समझे गये हों तथा आगम वर्षके कामके हों। इस वर्ष सभी खण्ड सम्मतिके लिये नमूनेके तौरपर लिखे गये हैं। अग्रिम वर्षसे प्रत्येक खण्ड विस्तृत रूपसे तैयार करनेका विचार है। विशेषतया व्यापारखण्डको बहुत उन्नत और सर्वाङ्गपूर्ण करनेका विचार है। जिससे इस डाइरेक्टरीके द्वारा देशी व्यापारीगण विशेष लाभ उठा सकें और सर्वसाधारणको भी विशेष सुभीता हो। व्यापारमें सहायता देनेके लिये महामण्डलके उदार सञ्चालकोंकी यह इच्छा है कि, विज्ञापनदाताओंको इस डाइरेक्टरीके द्वारा विशेष सहायता मिल सके। श्रीभारतधर्मसिण्डिकेट लिमिटेड एक व्यापारी संस्था है। उसने विज्ञापनकी दर लाभकी दृष्टिसे रक्खी थी। महामण्डल इससे लाभ उठाना नहीं चाहता। केवल लागत मात्र मूल्य लेकर व्यापारियोंके विज्ञापन यह छाप देगा। इस योजनासे नाममात्रव्ययसे देशी व्यापारियोंका महान् उपकार हो सकेगा। व्यापारियोंके लिये दूसरा सुभीता यह किया गया है कि, जो व्यापारी सज्जन २) के साथ अपना बिजनेस कार्ड भेज देंगे, उनका कार्ड अच्छे स्थानपर मोटे अक्षरोंमें छाप दिया जायगा और डाइरेक्टरीकी एक प्रति उन्हें बिना मूल्य दी जायगी। इस व्यवस्थासे साधारण व्यवसायी श्रीडाइरेक्टरीसे लाभ उठाकर अपने व्यापारको उन्नत कर सकेंगे। संक्षेपमें कहा जा सकता है कि, 'गागरमें सागर' भरनेका हम प्रयत्न कर रहे हैं। प्रयत्न करना हमारे हाथ है, 'यश-अपयश विधि हाथ!'

डाइरेक्टरीमें जो पञ्चांग भी प्रकाशित होता है, वह "ग्रह लाघव" गणितानुसार होता है। ग्रहलाघवका गणित प्रायः सर्व मान्य है। गत शताब्दिके उत्तरार्धसे देशके बड़े बड़े गणितज्ञ पञ्चाङ्ग संशोधन

सम्बन्धी उद्योग कर रहे हैं और उसके फलस्वरूप ग्रहलाघवीय और मकरन्दीय पञ्चांगोंके अतिरिक्त दृक्प्रत्ययके आधारपर स्वर्गीय महामहोपाध्याय परिडत बापूदेव शास्त्री सी० आइ० ई० जगत् प्रसिद्ध स्वर्गीय लोकमान्य परिडत बाल गंगाधर तिलक आदि विद्वानोंके पञ्चाङ्ग निकलने भी लगे हैं। पञ्चाङ्गसंशोधनकमेटी सन् १९०५ में बम्बईमें कांग्रेसके अवसरपर भारतके चुने हुए गणितज्ञोंने एकत्र होकर स्थापित की है, जो संशोधनका कार्य कर रही है। परन्तु अबतक विद्वानोंमें मत-भेद बना हुआ है। इसमें सन्देह नहीं कि, १५-२० सौ वर्ष पहिले लिखे हुए ग्रन्थोंमें उल्लिखित ग्रहगति अब बदल गई है। परन्तु जबतक सब विद्वान् एकमत नहीं होते और सर्वमान्य एक ही पञ्चाङ्ग सिद्ध नहीं होता, तबतक हमने प्राचीन ग्रहलाघवीय पञ्चाङ्गका अनुकरण करना ही निश्चित किया है। केवल ढङ्ग बदल दिया है। हमारे पञ्चाङ्गका ढङ्ग ऐसा सरल है कि, स्त्रियां और बच्चे भी प्रति दिनके ज्ञातव्य विषय तथा विधि-निषेध ज्ञात कर सकते हैं। हिन्दु जातिके लिये पञ्चाङ्ग ज्ञान अत्यन्त आवश्यक है। क्योंकि, हमारे नित्यके व्योहार पञ्चाङ्गानुसार ही होते हैं।

"श्रीभारतधर्ममहामरडल" सनातनधर्मावलम्बी समस्त हिन्दुओंकी अखिल भारतवर्ष व्यापी एकमात्र सर्वमान्य प्रतिनिधिभूत विराट् संस्था है। गत ३०-४० वर्षोंसे अनुकूलताके अनुसार यह यथाशक्ति हिन्दुजातिकी सेवा और स्वधर्मसंरक्षणका कार्य करती आयी है। इसकी वार्षिक कार्यविवरणी कई वर्षों तक अंग्रेजी भाषामें प्रकाशित की जाती थी। जिससे सब प्रान्तोंके सभ्यगण समझ सकें। परन्तु अब हिन्दी भाषाका प्रचुर प्रचार हो जानेसे हिन्दीमें ही यह प्रकाशित की जाती है और इस डाइरेक्टरीके साथ जोड़ दी जाती है। इस व्यवस्थासे महामरडलके कार्य सर्वसाधारणके सम्मुख अनायास आजाते हैं और संस्थाके हितशत्रु जो भ्रम फैलाया करते हैं, वह दूर होनेमें सहायता होती है।

इस डाइरेक्टरीके द्वारा हिन्दुमात्रको अनेक विषयोंमें सहायता पहुँचानेका तो लक्ष्य है ही, किन्तु प्रधान लक्ष्य राष्ट्रभाषा हिन्दीको पुष्ट करनेका भी है। जब तक किसी देशकी राष्ट्रभाषा सर्वाङ्गपूर्ण नहीं होती, तब तक उस देशकी यथार्थ उन्नति नहीं होती। भाषाके

सम्बन्धमें हम पूर्ण स्वाधीन हो जायं, तो स्वाधीनता हमसे दूर नहीं रहेगी। यह हमारी क्षुद्र सेवा है। राष्ट्र भाषा हिन्दीकी परम सहायक संस्थाओं जैसे काशीकी देवनागरी प्रचारिणीसभा, और प्रयागकी हिन्दी साहित्य सम्मेलन जैसी सभाओंके नेतृ वृन्दोंसे निवेदन यह है कि वेइस राष्ट्रभाषाके विस्तारके कार्य्यमें हमारे संरक्षक और सहायक बनें और इस डाइरेक्टरीको अपनावें। और ऐसा परामर्श देवें, कि हम राष्ट्रभाशा हिन्दीको सब प्रान्तोंके घरमें फैलाने और हिन्दी भाषाके द्वारा उन की दिनचर्य्यामें सहायता देनेमें सफल काम हो सकें।

श्रीभारतधर्म महामण्डलके अनेक कार्य विभाग है जिसका विस्तृत वर्णन श्रीमहामण्डल खण्डनमें वर्णित है। ऐसा होने पर भी श्रीमहामण्डल हिन्दी भाषा प्रचारके शुभ कार्यमें जितना सम्भव है उतना पुरुषार्थ कर रहा है। अतः यदि कुछ त्रुटि हो, उसपर ध्यान न देकर स्वदेश हितैषी राष्ट्र-भाषा प्रेमी यदि इस शुभ कार्यको अपनाकर इसकी जोग्यता-वृद्धिके लिये तथा इसके अधिकसे अधिक प्रचारके लिये हमारा हाथ बटावेंगे और शुभ परामर्श देकर इसकी पूर्णता सम्पादन करेंगे तो वे श्रीमहामण्डलके निकट ही नहीं, बल्कि समग्र हिन्दु-जातिके निकट कृतज्ञता-भाजन होंगे।

श्रीभगवान्‌की इस आज्ञानुसार—

"यत्करोपि यदश्नासि यज्जुहोपि ददासि यत्।
यत्तपस्यसि कौन्तेय! तत्कुरुष्व मदर्पणम्" ॥

इसे हम जनतारूपी जनार्दनके चरणकमलोंमें सादर समर्पित करते हैं। हमें विश्वास है कि, इससे देश, धर्म और हिन्दुजातिका अवश्य मङ्गल साधन होगा।

निवेदक—

गोविन्द शास्त्री दुगवेकर।

सम्पादक।

॥ श्रीः ॥

श्रीमहामण्डलडाइरेक्टरी
की

विषय सूची।

विषय पृष्ठ।

१—भूमिका—

२—धर्मखण्ड, [सम्पादक—श्रद्धेय श्रीस्वामी विवेकानन्दजी महाराज।] १–५२

१—मंगलाचरण (१), २—कालविवरण (२–६), ३—देशविवरण (६–७), ४—धर्मविवरण (७–९), ५—महासंकल्प (९–१२), ६—उपासनाके दिव्य देश (१२), ७—पीठरहस्य (१२), ८—पूजाके उपचार (१३), ९—उपासनाके भेद (१३), १०—कर्मकाण्ड (१४), ११—पंचमहायज्ञ (१४), १२—व्रतोत्सव कथाएँ (१५–२८), १३—सामान्य धर्मकृत्य (२९–३०), १४—दशविध संस्कार (३०–३४), १५—गोत्र और प्रवर (३४–३६), १६—अशौच निर्णय (३६–३९), १७—सन्ध्याविधि (३९–४४), १८—देवपूजन विधि (४५–५२)।

३—आयुर्वेद खण्ड, [सम्पादक—आयुर्वेदाचार्य श्रीमान् पण्डित बद्रीनाथ वैद्यराज, मैनेजिंग एजेण्ट "वैद्यामृत वर्क्स लिमिटेड" काशी।] ५३–६८

१—ऋतुचर्या (५३–५४), २—मासिकचर्या (५५–५७), ३—आशु-चिकित्सा (५८–६९)।

४—नियमखण्ड, [सम्पादक—श्रीगिरिजाकान्त झा, काशी।] ६९–७३ और २२२–२२८

१—म्युनिसिपल्टी (६९–७३), २—डाकके नियम (२२२–२५), ३—तारके नियम (२२५), ४—नोटके नियम (२२५–२६), ५—रुक्का, हुण्डी, स्टाम्प (२२६–२७), ६—मेहनताना वकील, रसूम अदालत, इनकम टैक्स (२२७–२८) व्यापार खण्डमें देखने योग्य है।

विज्ञापन ।

श्रीभारतधर्ममहामण्डलके साधारण सभ्य

हिन्दू नर-नारीमात्रको होना चाहिये ।

श्रीभारतधर्ममहामण्डलके साधारणसभ्य स्त्री-पुरुष सभी हो सकते हैं। उनको केवल दो रुपया सालियाना चन्दा देना होता है। इस चन्देके बदले उनको एक हिन्दी सामयिक पत्र अथवा एक संस्कृत मासिक पत्र जो जैसा चाहे विना मूल्य मिलता है। उनको एक अति सुन्दर चित्र सहित संस्कृत भाषाका मानपत्र प्राप्त होता है। उनको श्रीभारतधर्ममहा-मण्डलके अखिल भारतवर्षीय धर्म्मकार्य्यमें यथासम्भव सम्मति देनेका अधिकार होता है।

उनको अधिकार होता है कि, जितने चाहें, समाज हितकारी कोषके मेम्बर अपने परिवारवर्ग और रिस्तेदारोंमेंसे बनावें, और कोषके शादीफण्ड और गमीफण्डसे यथेष्ट सहायता प्राप्त करें।

प्रधानाध्यक्ष—श्रीभारतधर्ममहामण्डल,

प्रधान कार्यालय, जगतगंज बनारस ।

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

श्रीमहामण्डल-डाइरेक्टरी ।

(इसमें महामण्डल—पञ्चाङ्ग भी सम्मिलित है ।)

धर्मखण्ड ।

[सम्पादक—श्रद्धेय श्रीस्वामी विवेकानन्दजी महाराज ।]

मङ्गलाचरणम्।

ॐ श्रीहरिं परमानन्दमुपदेष्टारमीश्वरम् ।
व्यापकं सर्वलोकानां कारणं तं नमाम्यहम् ॥ १ ॥
खर्वं स्थूलतनुं गजेन्द्रवदनं लम्बोदरं सुंदरम् ।
प्रस्यन्दन्मदगन्धलुब्धमधुपैर्व्यालोलगण्डस्थलम् ॥
दन्ताघातविदारितारिरुधिरैः सिन्दूरशोभाकरम् ।
वन्दे शैलसुतासुतं गणपतिं बुद्धिप्रदं कामदम् ॥ २ ॥
शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशम् ।
विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम् ॥
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं ।
वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथं ॥ ३ ॥
मौलौ चन्द्रदलं गले च गरलं जूटे च गंगाजलम् ।
व्यालं वक्षसि चानलं च नयने शूलं कपालं करे ॥
वामाङ्गे दधतं नमामि सततं प्रालेयशैलात्मजाम् ।
भक्तक्लेशहरं हरं भयहरं कर्पूरगौरं परम् ॥ ४ ॥
मुक्ताविद्रुमहेमनीलधवलच्छायैर्मुखैस्त्र्यक्षणै—
र्युक्तामिन्दुकलानिबद्धमुकुटां तत्वार्थवर्णात्मिकाम् ॥
गायत्रीं वरदाभयांकुशकशां शुभ्रं कपालं गुणम् ।
शंखं चक्रमथारविन्दयुगलं हस्तैर्वहन्तीं भजे ॥ ५ ॥

नमः सवित्रे जगदेकचक्षुषे जगत्प्रसूतिस्थितिनाशहेतवे ।
त्रयीमयाय त्रिगुणात्मधारिणे विरंचिनारायणशंकरात्मने॥६॥
यं ब्रह्मावरुणेन्द्ररुद्रमरुतस्तुन्वन्ति दिव्यैः स्तवैः ।
वेदैः सांगपदक्रमोपनिषदैर्गायन्ति यं सामगाः ॥
ध्यानावस्थिततद्गतेन मनसा पश्यन्ति यं योगिनो ।
यस्यांतं न विदुःसुरासुरगणा देवाय तस्मै नमः ॥ ७ ॥

काल–विवरण ।

वैदिक शास्त्रोंके अनुसार कालका रूप ऐसा बताया गया हैः—१०० त्रुटिका एक पर, ३० परका एक निमेष, १८ निमेषकी एक काष्ठा, २० काष्ठाकी एक कला, ३० कलाकी एक घटिका, २ घटिका का एक क्षण, ३० क्षणका एक अहोरात्र अर्थात् पूरा दिन होता है। इसी चौबीस घण्टेके दिनके हिसाबसे सप्ताह, पक्ष, मास और ऋतुका क्रम बांधा गया है और वर्षका हिसाब सूर्यके सम्बन्धसे ठीक करनेके लिये ऐसा कहा गया है कि, ६० विकलाकी एक कला, ६० कलाका एक अंश, ३० अंशकी एक राशि और १२ राशिका एक वर्ष। पुनः वर्षके हिसाबसे एक सौर जगत्-रूपी ब्रह्माण्ड की आयु निश्चित की गयी है। १७२८००० वर्षका सत्ययुग, १२९६००० वर्षका त्रेतायुग, ८६४००० वर्षका द्वापरयुग और ४३२००० वर्षका कलियुग होता है। इस प्रकारसे ४३२०००० वर्षका एक महायुग अर्थात् एक चौकड़ी युग होता है। कालके पालक देवता मनु कहाते हैं। मनुका परिवर्त्तन होता रहता है। ७१ महायुगोंमें मनुका परिवर्तन होकर एक मन्वन्तर होता है। सन्धिसहित १४ मन्वन्तरोंका एक कल्प होता है। १४ मन्वन्तर और प्रत्येककी तीन सन्धि मिलकर ४३२०००००० वर्ष होते हैं। यही कल्प ब्रह्माका एक दिन समझा जाता है। प्रत्येक सौरजगत् रूपी ब्रह्माण्डकी सृष्टि करने वाले ब्रह्मा; स्थिति करने वाले विष्णु और नाश करने वाले शिव कहाते हैं। इन तीनोंमें से ब्रह्माजी प्रथम हैं। इनसे आयुमें बड़े विष्णु हैं और इनसे आयुमें बड़े शिव हैं। ब्रह्माकी आयु उनके वर्षोंसे सौ वर्षोंकी समझी जाती है। शास्त्रोंमें

ऐसा वर्णन है कि, एक कल्पका ब्रह्माका दिन और एक कल्पकी ब्रह्माकी रात्रि होती है। ब्रह्मा दिनमें सृष्टि करते हैं और रात्रिमें निद्रा लेते हैं। इस विचारसे साधारण सृष्टि एक कल्प तक रहती है। इस गणनाके अनुसार ४३२०००००० वर्षोंका एक कल्प अर्थात् ब्रह्माजीका एक दिन और ३११०४०००००००००० वर्षोंकी ब्रह्माजी की आयु समझी जाती है। ब्रह्माजीके १००० दिनोंकी विष्णुकी एक घड़ी होती है और इसी हिसाबसे विष्णुका वर्ष भी समझा जाता है। विष्णुकी भी उनके हिसाबसे १०० वर्षकी आयु होती है। अतः इस हिसाबसे गणना करने पर विष्णुकी आयु मनुष्योंके ९३३१२०००००००००००००० वर्षोंकी होती है। इससे यह सिद्ध होता है कि, एक विष्णुकी आयुमें अनेक ब्रह्मा बदल जाते हैं। शास्त्रोंमें यह भी कहा गया है कि, हमारे साधारणतः एक महीनेमें पितरोंकी एक दिनरात और हमारे एक वर्षमें देवताओंकी एक दिन रात होती है। परन्तु ब्रह्माण्डके नायक ब्रह्मा विष्णु, महेशकी आयु इन सबसे विलक्षण है। जिस प्रकार एक विष्णुकी आयुमें अनेक ब्रह्मा बदल जाते हैं, उसी प्रकार एक रुद्रकी आयुमें अनेक विष्णु भी बदल जाया करते हैं। विष्णुकी १२ लाख घड़ीकी रुद्र (शिव) की आधी घड़ी होती है। इस हिसाबसे रुद्रकी सौ वर्षकी आयु मानने पर वह मनुष्योंके २२३९४८८००००००००००००००००० वर्षों की होती है। यह आयु मर्यादा एक ब्रह्माण्डकी है। एक रुद्रके लय होते ही एक ब्रह्माण्डका नाश हो जाता है। इसीको महाप्रलय भी कहते हैं। ब्रह्माकी रात्रिमें नीचेके सातलोक और ऊपरके तीन लोक लीन हो जाते हैं। विष्णुकी रात्रिमें ऊपरके चार लोकतक लय हो जाते हैं और रुद्रकी रात्रिमें ऊपरके पांच लोक लय होते हैं और रुद्रके लय हो जाने पर ऊपरके सातोंलोक अर्थात् सम्पूर्ण चतुर्दश भुवन जगत्के कारण ईश्वरमें लयको प्राप्त होते हैं।

यह कहा जा चुका है कि, ब्रह्माकी आयु उनके परिमाणसे १०० वर्षों की होती है। उसका पूर्वार्द्ध गत हो चुका है। चौदह मनुओंमें १ स्वायम्भू, २ स्वारोचिष, ३ उत्तम, ४ तामस, ५ रैवत और ६ चाक्षुष मनु हो गये। सप्तम वैवस्वत मन्वन्तर और २८ वां कलि-युग चल रहा है। भविष्यत्में होने वाले मनुओंके नाम इस प्रकार हैं:—१ सावर्णि, २ दक्षसावर्णि, ३ धर्मसावर्णि, ४ रुद्र–

सावर्णि, ५ ब्रह्मसावर्णि, ६ रौच्यसावर्णि, ७ भौतिकसावर्णि। इस समय ब्रह्माके प्रथम वर्षके प्रथम मासके पहले पक्षके पहले दिनके दूसरे प्रहरकी ३ घड़ी, ४२ पल और ३ अक्षर बीत गये हैं।

सत्ययुग।

कार्तिक शुक्ल नवमीके प्रथम प्रहरमें श्रवणनक्षत्र तथा वृद्धियोगमें सत्ययुगकी उत्पत्ति है। इसका प्रमाण १७२८००० वर्षोंका है और इस युगमें चार अवतार होते हैं-यथा-१ मत्स्य, २ कच्छप, ३ वराह, ४ नृसिंह। इस युगमें पुण्य २० पाप ० और मनुष्यकी आयु १००००० वर्षोंकी होती है। शरीर प्रमाण २१ हाथका होता है। सुवर्ण रत्नादिके पात्र तथा ब्रह्माण्डमय प्राण होते हैं। पुष्कर ही इस युगमें तीर्थ रहता है और सूर्यग्रहण १००० तथा चन्द्रग्रहण १०००० होते हैं। स्त्रियां पतिव्रता होती हैं। राजा धर्मनिष्ठ होते हैं। यथा—१ हिरण्यकशिपु, २ प्रह्लाद, ३ वैरोचन, ४ बलि, ५ बाणासुर। बीज एक वपन होता है और २१ छेदन होता है। पुत्र पिताके वशमें रहते हैं। कपिल, भद्र, दक्षादि, ब्रह्माकी उपासनामें संलग्न रहते हैं। प्रजापालनमें सब तत्पर रहते हैं।

त्रेतायुग।

वैशाख शुक्ल तृतीया सोमवारके दूसरे प्रहर रोहिणी नक्षत्र तथा शोभन योगमें त्रेतायुगकी उत्पत्ति होती है। इसका प्रमाण १२९६००० वर्षों का है। इसमें अवतार तीन होते हैं। यथा—१ वामन, २ परशुराम, ३ रामचन्द्र। पुण्य १५ और पाप ५ होता है। मनुष्यायुर्बल १०००० दस सहस्र वर्ष तथा शरीर प्रमाण १४ हाथका होता है। पात्र रौप्य तथा द्रव्य सुवर्ण होता है। लोग परमेश्वरके भक्त होते हैं और अस्थिमय उनके प्राण रहते हैं। तीर्थ नैमिषारण्य रहता है। सूर्यग्रहण १८०० और चन्द्रग्रहण ११००० होते हैं। इसमें बीज वपन १ होता है और ७ छेदन होता है। प्रसव तीन होते हैं और राजा धर्मिष्ठ और सूर्यवंशवाले ही होते हैं। यथा—१ विक्रम, २ भगीरथ, ३ विश्वामित्र, ४ दिलीप, ५ रघु, ६ अज, ७ दशरथ, ८ रामचन्द्र, ९ लवकुशादि। तपोबल और वचन ही प्रमाण होता है।

द्वापरयुग।

माघ कृष्ण अमावास्या शुक्रवारको धनिष्ठा नक्षत्र और वरीय

योग तथा वृष लग्नमें द्वापरकी उत्पत्ति होती है। इसका प्रमाण ८६४००० वर्षोंका तथा इसमें दो अवतार होते हैं। यथा—कृष्ण और बौद्ध। *इस युगमें पुण्य १० तथा पाप १० होते हैं। मनुष्यकी आयु १००० वर्षोंकी तथा शरीरप्रमाण ७ हाथका होता है। उनके पात्र तांबा और द्रव्य चांदी होता है। रक्तमें इनके प्राण रहते हैं और तीर्थ कुरुक्षेत्र रहता है। सूर्यग्रहण ३६०० और चन्द्रग्रहण २००००० होते हैं। बीज वपन १ और छेदन २ होता है। प्रसव पांच होते हैं। चन्द्रवंशीय राजा होते हैं। यथा—सोम, बुध, तड़ाग, पुरूरव, अंगद, पाण्डु, युधिष्ठिर, अर्जुन, अभिमन्यु, परीक्षित, जनमेजय, देवखण्ड, सहनाम, जीवशम्भु, वेणु, विश्वरूपादि। सब विष्णुपूजक होते हैं। वचनही प्रमाण रहता है। लोग धनी होते हैं।

कलियुग।

भाद्र कृष्ण त्रयोदशी रविवारके दिन अर्धरात्रिमें आश्लेषा नक्षत्र व्यतीपात योग और मिथुन लग्नके उदयमें कलियुगकी उत्पत्ति होती है। इसकी आयु ४३२००० वर्षोंकी होती है। इसमें कल्कि अवतार होता है। पाप १५ और पुण्य ५ होता है। मनुष्यायुर्बल १०० वर्ष तथा शरीर साढ़े तीन हाथका होता है। मिट्टीके पात्र रहते हैं और हड्डियोंका व्यापार होता है। कूट द्रव्य रहता है और धूर्तोंकी पूजा होती है। प्राण अन्नमय होता है और तीर्थ गंगा रहती है। बीज वपन १ और छेदन १ होता है। प्रसव सात होता है और राजा धर्म-कर्म-रहित होते हैं। मिथ्याका अधिकतर प्रचार होता है और ब्राह्मणगण कुमार्गी हो जाते हैं। आजतक इस कलिकी आयु ५०३० वर्ष बीत चुकी है। अभी ४२६९७० वर्ष और रहेगी।

कलिका स्वरूप तथा माहात्म्य।

कलि पिशाचकी तरह वदन तथा क्रूर और कलहप्रिय होता है। यह बायें हाथसे अपनी इन्द्रिय और दाहिने हाथसे जिह्वा पकड़े हुए रहता है। इसके प्रभावसे मनुष्यकी देवतामें भक्ति नहीं रहती है और कपट वेषधारी तापस होते हैं। मनुष्य झूठ बोलते हैं और वृष्टि कहीं कहीं होती है। नीचजन प्रसन्न रहते हैं और राजा नीच होते हैं।

---

* भगवान् गौतम बुद्धने अपने आपको सप्तम बुद्ध माना है। इस कारण इस बुद्धावतारका प्रथम बुद्धावतारसे सम्बन्ध है। ऐसा माननेसे ज्योतिषशास्त्रका विरोध नहीं होगा।

सदाचार नष्ट हो जाता है। यही कलिकालका स्वरूप तथा माहात्म्य है। अब गीता, अध्यात्मविद्या, निगम, आगम, स्मृति और पुराणोंमें श्रद्धा किसीकी न रहेगी। नीच लोग मोक्षमार्गके उपदेष्टा बनेंगे।

८४ लक्ष योनिप्रमाण और स्थावरादिकी आयु।

जलके जीव ९ लाख, स्थावरोंमें २० लाख, उद्भिज्जयोनि ११ लाख, स्वेदज कृमिकीटादि योनि १० लाख, अण्डजोंकी योनि १० लाख और ३४ लाख पशुयोनि होती है। मनुष्यकी आयु १२० वर्षकी, वृक्षोंकी ५००, हाथीकी १२०, पक्षीकी ५, वानरोंकी ३००, घोड़ेकी, ३२, व्याघ्रकी ६४, सर्पकी १०००, कछुवेकी १५००, गदहेकी २५, पिपीलिकाकी १, कुत्तेकी १२, बकरीकी १६, मृगाकी २५, वृषभकी २४, ऊंटकी २५, गृद्धकी ४०००, पिंगलकी ३०००, जलधोतजकी ११५, तड़ाग, देवालय और कूपादिकी १००००, मेढ़ककी ३०००, बगुलेकी ६०००, वृश्चिक और गोहठीकी ८, पारावतकी १०० वर्षोंकी आयु होती है।

देश–विवरण।

कालके साथ ही देशका विवरण भी जान लेना चाहिये। सनातनधर्मावलम्बियोंका सबसे बड़ा विश्वास दैवी जगत् पर है। शास्त्रोंका यही सिद्धान्त है कि, हमारा यह मृत्युलोक भूलोकका एक चौथा हिस्सा है; अर्थात् भूलोकके चार हिस्से हैं, यथा—पितृलोक, प्रेतलोक, नरकलोक और मृत्युलोक। इस प्रकार हमारा यह भूलोक सातों स्वर्ग और सातों पातालरूपी चौदह भुवनोंका एक चौदहवां हिस्सा है। १ भूलोक, २ भुवर्लोक, ३ स्वर्लोक, ४ महर्लोक, ५–जनलोक, ६ तपोलोक और ७ सत्यलोक। ये उर्द्ध्वलोक और १–तल, २–अतल, ३–सुतल, ४ वितल, ५ तलातल, ६–रसातल और ७–पाताल, ये अधोलोक मिलकर चौदह भुवन हैं। इन्हींमें सप्त समुद्र अर्थात् १–लवण, २–क्षीर, ३-दधि, ४ घृत, ५ इक्षु, ६–मधु और ७–अमृत हैं। परन्तु यह विषय सूक्ष्म दैवी राज्यका है। भूलोकमें लवणसमुद्र ही प्रत्यक्ष है। तात्पर्य यह है कि, सनातनधर्मके सूक्ष्म विज्ञानके अनुसार हमारा यह स्थूल मृत्युलोक एक ब्रह्माण्डके एक चौदहवें हिस्सेका एक चौथा हिस्सा है। सनातन-

धर्मावलम्बी सूक्ष्मदैवी राज्यको इस स्थूलराज्यका चालक और आधार मानते हैं। भूलोकमें सात द्वीप हैं। यथाः—जम्बू, प्लक्ष, शाल्मली, कुश, क्रौञ्च, शाक, पुष्कर। जम्बूद्वीपके अन्तर्गत नव खण्ड ये हैं:—इलावृत, भद्राश्व, हरिवर्ष, केतुमाल, रम्यक, हिरण्यमय, कुरु, किंपुरुष, भारतवर्ष। कलिमें छः शक बनानेवालोंके नाम ये हैं:—इन्द्रप्रस्थमें युधिष्ठिर शक ३०४४, फिर उज्जयिनीमें विक्रम शक १३५ और नर्मदाके दक्षिण भागमें शालिवाहन शक १८००० है। इस शालिवाहन शकमें १८५१ गत हो गया है और भोग्य १६१४६ है। भविष्यमें विजयातिनन्दन शक १००००, नागार्जुन शक ४०००० वर्ष रहेगा। इसके बाद अन्त कलिमें ८२१ वर्ष रह जायंगे, तब सम्भल देशके गौड़ ब्राह्मणके गृहमें कल्कि अवतार होगा।

—:※:—

धर्म-विवरण।

ईश्वरकी जो अलौकिक शक्ति संपूर्ण संसारका भरण पोषण अथवा उसकी रक्षा करती है, उसीका नाम धर्म है। साधारण रीतिपर सृष्टिके सब पदार्थोंको दो भागोंमें विभक्त कर सकते हैं। एक जड़ दूसरा चेतन। जो साधारण धारिकाशक्ति अनादिकालसे इन दोनोंको अपनी अपनी अवस्थाओंमें स्थित रखती है, वही धर्म है। इस सम्पूर्ण ब्रह्माण्डकी प्रत्येक वस्तुमें तथा प्रत्येक अणु परमाणुके भीतर आकर्षण और विकर्षण नामकी दो शक्तियां हैं। इन दोनोंकी समानताके कारण ही इस असीम शून्य महाकाशमें वर्त्तमान अनन्त ब्रह्माण्डोंमें अनन्त सूर्य चन्द्र ग्रह नक्षत्र अपनी अपनी कक्षामें घूमते हुए कभी कोई अपनी कक्षासे गिरकर दूसरे ग्रहादिके साथ टक्कर नहीं खाते हैं। जलमय चन्द्रलोक तेजोमय सूर्य्यलोकमें प्रवेश करके नष्ट नहीं होता है अथवा बड़ा ग्रह छोटे ग्रहको अपने भीतर खींचकर नष्ट नहीं करता है। जो ईश्वरकी शक्ति इस प्रकारसे आकर्षण और विकर्षण दोनोंकी समानता रखकर सृष्टिके सब पदार्थोंकी रक्षा करती है, वही धर्म्म है। संसारमें धर्मकी इस धारिकाशक्तिका प्रभाव दो रूपोंमें दिखाई देता है। एक एक पदार्थको दूसरे पदार्थसे पृथक् रखकर उसको ठीक अपनी अवस्थामें रखना और दूसरा, क्रमशः उन्नति कराकर पदार्थको पूर्णताकी ओर ले जाना।

क्रमाभिव्यक्ति (क्रमशः प्रकट होने) के नियमसे जीवभावका विकाश उद्भिज्जसे आरम्भ होता है और क्रमशः स्वेदज, अण्डज एवं जरायुज पशु आदि योनियोंको पाकर मनुष्ययोनिमें पूर्ण हो जाता है। प्रत्येक जीवमें अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय और आनन्दमय, ये ही पांच कोष या पांच

विभाग हैं। जीवका स्थूल शरीर अन्नमय कोष या प्रथम विभाग, प्राण, अपान आदि क्रियाओंसे युक्त वायुको चलानेवाली शक्ति ही प्राणमय कोष या द्वितीय विभाग, कर्मेन्द्रिय और मन, मनोमय कोष या तृतीय विभाग, ज्ञानेन्द्रिय और बुद्धि, विज्ञानमय कोष या चतुर्थ विभाग और प्रिय, मोद और प्रमोद, इन तीन वृत्तियोंसे युक्त अन्तःकरणका अवस्थाविशेष, जिसका पूर्ण विकाश सुषुप्ति (घोरनिद्रा) कालमें होता है, वही आनन्दमयकोष या पञ्चम विभाग है। इन पञ्च कोषोंके विकाशके तारतम्यसे ही वृक्ष और मनुष्यमें इतना भेद हैं। उद्भिज्जमें केवल अन्नमय कोषके विकाशसे ही ऐसी शक्ति देखनेमें आती है कि केवल शाखा रोपनेसे वृक्ष बन जाता है। यह उद्भिजमें रहनेवाली धर्म्मशक्तिके किञ्चिन्मात्र विकाशका फल है। स्वेदजमें अन्नमय और प्राणमय कोषोंका विकाश है। प्राणमय कोषका विकाश होनेसे ही स्वेदज कीट आदिमें अनेक प्राणक्रियायें देखनेमें आती हैं। जैसा कि रोगके कीटसे शरीरमें रोग उत्पन्न होकर देशभरमें महामारीका फैल जाना और रुधिरमें शुक्लकीटकी प्रबलतासे रोगका विनाश होना इत्यादि। अण्डजमें अन्नमय, प्राणमय और मनोमय कोषोंका विकाश है। मनोमय कोषका विकाश होनेसे ही साधारण पक्षियोंमें अपने बच्चोंके साथ स्नेह करना अथवा कबूतर एवं चक्रवाक (चकवा) आदि विशेष पक्षियोंमें दाम्पत्य प्रेम आदि देखनेमें आते हैं, जो मनोवृत्तिके स्पष्ट लक्षण हैं। जरायुज पशु आदिमें विज्ञानमय कोषका विकाश होनेसे ही घोड़ा, हाथी और कुत्ते आदिमें स्वामीकी भक्ति आदि बुद्धिकी अनेक वृत्तियोंका परिचय मिलता है। मनुष्यमें पाँचों कोषोंका विकाश है। आनन्दमय कोषका विकाश होनेसे ही मनुष्य हंसकर अपने मनका आनन्द प्रकट कर सकता है। और और जीवोंमें आनन्दमय कोशके रहनेपर भी उसमें उसका विकाश नहीं है, इसलिये वे हंस नहीं सकते। जीव कोष-विकाशके अनुसार उद्भिज्जसे स्वेदज, स्वेदजसे अण्डज, अण्डजसे जरायुज पशु आदि, और पशु आदिसे मनुष्य योनिमें आता है। वहां भी क्रमशः असभ्यसे अनार्य, अनार्यसे आर्य्य शूद्र, शूद्रसे वैश्य, वैश्यसे क्षत्रिय, क्षत्रियसे ब्राह्मण, ब्राह्मणमें भी मूर्ख जातिमात्रोपजीवी ब्राह्मण, उससे कर्मी ब्राह्मण, उससे विद्वान् ब्राह्मण, विद्वानसे तत्त्वज्ञ, तत्त्वज्ञसे आत्मज्ञ ब्राह्मण होकर पञ्चकोषोंके विकाशकी पूर्णताको लाभ करता है। उसके बाद आत्मज्ञानको प्राप्त करके जीव मुक्त हो जाता है। जीवकी यह क्रमोर्द्ध्वगति या जीवभावका क्रमविकाश धर्म्मका ही कार्य है। इसलिये यह सिद्ध हुआ कि, जिस शक्तिने जीवको जड़से पृथक् कर रक्खा है और जो प्रत्येक विभिन्न जीवकी स्वतन्त्र सत्ताकी रक्षा कर रही है, एवं जो शक्ति

वृक्ष आदि स्थावरसे लेकर जीवको क्रमशः उन्नत करती हुई अन्तमें मोक्ष प्राप्त करा देती है, उसी एकमात्र व्यापक शक्तिका नाम धर्म्म है । सकल उन्नतिके ही मूलमें धर्मोन्नति है । बिना धर्मोन्नतिके पूर्ण सम्पादन किये कोई उन्नति पूर्ण नहीं हो सकती ।

महासङ्कल्प ।

सनातनधर्म्मके अनुसार संस्कार बीज है और कर्म्म उसका वृक्ष है । जैसे बीजमें सूक्ष्मरूपसे वृक्ष निहित रहता है, ऐसे ही संस्कार उत्पादक संकल्पमन्त्रमें भावी कर्म्मफल निहित रहता है । इस कारण सनातनधर्म्मके अनुसार जो महासङ्कल्प है, उसको सब प्रकारके वैदिक पौराणिक और तान्त्रिककर्त्ताको जान रखना चाहिये और इसके अनुसार कर्म्म करने चाहिये ।

सङ्कल्पमन्त्र ।

ओंतत्सत् * अस्य श्रीमन्महाभगवतः सच्चिदानन्दस्वरूपस्य श्रीमहादिनारायणस्य अचिन्त्याऽपरिमितशक्त्याऽऽध्रियमाणानां महाजलौघमध्ये †परिभ्रममाणानां अनेककोटिब्रह्माण्डानां एकमते अव्यक्तमहदहंकारपृथिव्यप्तेजोवाय्वाकाशाद्यावरणैरावृते अस्मिन् महति ब्रह्माण्डकटाहकरण्डे सकलजगदाधारशक्तिकूर्म्मवराहानन्तैरावतपुण्डरीकवामनकुमुदाञ्जनपुष्पदन्तसार्व्वभौमसुप्रतीकाष्टदिग्गजोपरिप्रतिष्ठितस्य अस्य अतलवितलसुतलतलातलरसातलमहातलपातालाख्यसप्तलोकोपरिभागे ‡ भुवर्लोकस्वर्लोकमहर्लोकजनलोकतपोलोकसत्यलोकाख्यलोकषट्कस्य अधोभागे भूर्लोकान्तर्गते मृत्युलोके + महाकालायमान फणिराजशेषसहस्रफणामण्डलविधृते दिग्दन्तिशुण्डादण्डस्तम्भिते वहिरन्धतमसावृतेन अंतःसूर्य-

---

* ओरेम् तत्सत् मन्त्रकी महिमा वेद और शास्त्रोंमें अनन्त कही गयी है । ज्ञानी-भक्त भगवान्‌को तीन रूपमें देखता है ओम्‌से अध्यात्मब्रह्मरूप, तत्‌से अधिदैव सगुण ईश्वररूप और सत्‌से अधिभूत विराट्‌रूप माना गया है । यह मन्त्र तीनों रूपोंका वाचक है । इसी विराट्‌रूपके सम्बन्धसे देशका वर्णन पहले किया जा रहा है, जिससे अनादि अनन्त देशका कुछ भाव कर्त्ताके चित्तमें उदय हो जाय ।

† यह जल कारणवारि है अर्थात जगदुत्पत्तिसंस्कारसमूहरूपी जल ।

‡ ये सात अधोलोक हैं इनमें असुर रहते हैं । ये सूक्ष्म लोक हैं । असुर पापवृत्तियोंके चालक होते हैं ।

+ ये सात ऊर्द्ध्व सूक्ष्म लोक हैं इनमें देवता वास करते हैं । देवता पुण्यवृत्तियोंके चालक होते हैं । भूलोकके चार हिस्से हैं । यथा—पितृलोक, नरकलोक, प्रेतलोक और यह हमारा स्थूल मृत्युलोक ।

प्रकाशितेन लोकालोकाचलेन वलयिते लवणेक्षुसुरासर्पिदधिक्षीरस्वादूदकाख्यसप्त-समुद्रविराजिते ॐ स्वर्णप्रस्थचन्द्रकश्वेतावर्तरमणसिंहलमहारमणपारसीकपाञ्चजन्यलङ्काद्युपद्वीपसहिते एवंविध सरोरुहाकारपञ्चाशतकोटियोजनविस्तीर्णभूमण्डले तुहिनाचलहेमकूटनिषधनीलश्वेतशृङ्गिगन्धमादनपारियात्राख्याऽष्टसीमाचलैर्विभक्ते तन्मध्यवर्त्तिभारतकिंपुरुषहरिवर्षेलावृतरम्यकहिरण्मयकुरुभद्राश्वकेतुमालाख्यनववर्षशोभितेजम्बूद्वीपे नानावर्णकेसराचलशिखररत्नबीजाञ्चितभूसरोरुहकर्णिकायमानस्य मेरोर्दक्षिणदिग्भागे दक्षिणोदधि हिमाचलयोर्मध्यप्रदेशे निखिलवेदोदितकर्मफलसाधनगङ्गासलिलवाहिनी प्राचीनसन्न्यासिसम्पादिततपोराशिहुताशिनाग्नि अन्तःस्थिताऽत्यन्तसन्तापसन्ततिकृतान्तवेदान्तवृत्तान्तश्रुतिस्मृतिमापन्नचान्तस्वान्तशान्तिविधायिनि वेदविन्मुनिगणचरणविहरणतपश्चरणामृतवर्षिणि अस्मिन् पुण्ये भारतवर्षे साम्यवर्त्ति कुरुक्षेत्रादि भूमध्यरेखाया, अयोध्यामथुरामायाकाशीकाञ्च्यवन्तिद्वारावत्यादिमुक्तिक्षेत्रयुतायां अस्यां कर्मभूमौ भागीरथीविन्ध्याचलयोः उत्तरदिग्भागे † श्रीशैलहेमकूटकिष्किन्धागरुडाचलव्यङ्कटाचलहस्तिगिरिप्रभृतिपुण्यशैलवति सकलभूमण्डलशिरोवर्त्तिनि गिरिजागिरिजापतिराजिराजिते आर्य्यावर्त्तैकदेशे अविमुक्त वाराणसी क्षेत्रे महाश्मशाने असीवरुणयोर्मध्ये आनन्दवने गौरीमुखे त्रिकण्टकविराजिते उत्तरवाहिन्याः भागीरथ्याः पश्चिमे तीरे अन्नपूर्णादुर्गाकेदारेश्वरविश्वनाथभैरवढुण्ढिराजादिदेवमण्डलमण्डिते जन्हुतनयापरमपावनवनवाहिनी परमसुन्दरतरुराजिविराजिते शैवशाक्तसौरवैष्णवगाणपत्यादिपरमभक्तगणविहरणस्वस्वोपास्यदेवमधुरनामकीर्त्तनपवित्रीकृते परमानन्दनिकेतने बुधजनमानसानन्दविधायिनी श्रीकाशीधामनि ‡ श्रीविश्वेश्वरचरणार्पितहृदयसहृदयसवितृप्रकाशप्रकाशमाननभोमण्डले श्रीभारतधर्ममहामण्डले × श्रीमदनेककोटिब्रह्माण्डघटनायाः सरोमविवरस्य विराट्रूपिणो भगवतो महापुरुषस्य शेषपर्य्यङ्कशायिनः श्रीविष्णोराज्ञया प्रवर्त्तमानस्य तन्नाभिस्थानसरोरुहादुत्पन्नस्य सकलवेदनिधेः जगत्स्रष्टुः

ॐ शेष अनन्त आकाशवाचक है। ये समुद्र भी अन्तर्जगत्के विषय हैं।

† यह काशीके लिये सङ्कल्प बनाया गया है। और और स्थानोंके लिये यह अंश बदल दिया जाय। आगे जो ऐसे ही शब्द आवें, वे भी अन्य स्थानोंके अनुकूल बदल दिये जायं। इसका पुरोहितगण खयाल रक्खें।

‡ प्रत्येक स्थानके पुरोहित उस स्थानसम्बन्धीय देश विभाग और स्थानमाहात्म्यकी प्राचीन प्रथाको जानते हैं। उसीके अनुसार काशी-सम्बन्धीय वर्णनको बदलकर अपने अनुकूल बना लेवें।

× श्रीमहामण्डलके प्रसिद्ध यज्ञमण्डपमें शतसे अधिक यज्ञ हो चुके हैं। उसीके अनुसार यह संकल्पमन्त्र है। अन्यान्य देश और पात्रके अनुसार यह हिस्सा बदल दिया जाय।

परार्द्धद्वयजीविनो ब्रह्मणः ✽ प्रथमपरार्द्धे पञ्चाशत्यतीतायां द्वितीयपरार्द्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे प्रथमवर्षे प्रथममासे प्रथमपक्षे प्रथमदिवसे उदयादि त्रयोदशघटिकासु अतीतासु स्वायम्भुवस्वारोचिषोत्तमतामसरैवतचाक्षुषाख्येषु षट्सु मनुषु व्यतीतेषु उपरितनघटिकायां सप्तमे वैवस्वतमन्वन्तरे सप्तविंशति महायुगेषु गतेषु अष्टाविंशतितमे महायुगे पुरुहूतनामेन्द्रसमये कृतत्रेताद्वापरेषु गतेषु वर्त्तमाने कलियुगे बौद्धावतारे विक्रमशके बार्हस्पत्य मानेन †......नाम संवत्सरे......अयने...... ऋतौ......मासे......पक्षे......तिथौ......वासरे......नक्षत्रे......योगे ... करणे......राशिस्थिते सूर्ये......राशिस्थिते चन्द्रे......राशिस्थिते भौमे...... राशिस्थिते बुधे......राशिस्थिते देवगुरौ......राशिस्थिते शुक्रे......राशिस्थिते शनौ......राशिस्थिते राहौ......राशिस्थिते केतौ एवं ग्रहगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ...लग्ने...गोत्रः...शर्म्मा श्रीभारतधर्ममहामण्डलप्रतिनिधितया‡ अखिलब्रह्माण्डजननपालनसंहरणकारिण्याः मूलप्रकृतेः ब्रह्माण्डभाण्डोदर्य्याः त्रिलोकपालिन्याः चतुःशक्तिधारिण्याः त्रिदेवजनन्याः ब्रह्ममय्याः देव्याः प्रसादार्थं वर्त्तमानभारतीयत्रिविधदुःखनिवारणार्थं अध्यात्मविद्यायाः पुनः प्रचारार्थं जगति सद्विद्याविस्तारार्थं देवर्षिपितॄणांसम्वर्द्धनो धर्म्मस्य सार्वभौमिकयथार्थस्वरूपोद्घाटनार्थं ब्रह्माण्डस्य त्रिविधमङ्गलसाधनार्थं विविधभाषाभूषितश्रुतिस्मृतिपुराणेतिहासादिधर्म्मग्रन्थप्रणयनप्रकाशनादिशुभकार्य्योन्नतिसाधनार्थं वर्णाश्रमसंरक्षणार्थं नारीजातिषु परमपुनीतपातिव्रत्यधर्म्मप्रचारार्थं आर्य्यजातीयानां ऐहिकपरमाभ्युदयपूर्वकनिःश्रेयसात्मकपरमपुरुषार्थसिद्ध्यर्थं च श्री.........देवप्रसादलब्धये...... ....क्रमेण.........यज्ञमहं करिष्ये। तत्रादौ गणपतिपूजनं वसोर्द्धारासहितं गौर्यादिषोडशमातृकापूजनं नान्दीमुखं आचार्यादिवरणं च करोमि।

✽ पहले देशका वर्णन करके अब कालका स्वरूप दिखाया जा रहा है। देश और काल दोनोंसे सब कुछ परिच्छिन्न है। इस कारण दोनोंका स्वरूप संकल्पमें रहता है। भगवान् सदाशिव, भगवान् विष्णु और भगवान् ब्रह्माकी अलग अलग आयुका वर्णन स्थानान्तरमें किया गया है। देख लेवें, जिससे सनातनधर्म्मप्रवर्त्तक पूज्यपाद महर्षियोंके अलौकिक दिव्य ज्ञानका महत्त्व जाना जायगा।

† जहां जहां जगह छूटी है, उन उन स्थानोंमें पुरोहितगण तत्तत् समय लगा लेवें, जिस समय कर्म किया जाय।

‡ यह भी अपने अपने देशकालपात्रके अनुसार बदला जायगा, सो पुरोहितगण ठीक कर लेवें और इसके आगे जो कामनाके मन्त्र आवें वे भी कर्त्ताकी कामनाके अनुसार बदल दिया करें। श्रीमहामण्डलके यज्ञोंमें जैसा संकल्प होता है, वही नमूना इनमें दिखाया गया है, क्योंकि बहुत विचार और सार्वभौम लक्ष्यसे यह मन्त्र बना है। इससे विभिन्न देशके पुरोहितोंको बड़ी मदद मिलेगी।

यह निष्काम संकल्पमंत्र है। विना संकल्पमंत्र कोई कर्म्म सुसिद्ध नहीं होता है। चाहे सकाम यज्ञादिक हों, चाहे निष्काम यज्ञादिक हों, संकल्पमंत्र पहले पाठ करके तब कर्म्म प्रारम्भ किया जाता है। पुरोहितगण अपने अपने यजमानकी सकामवासनाके अनुसार अपनी अपनी आवश्यकतासे इस मंत्रमें शब्दोंका हेरफेर कर लेवें। जो यज्ञादिक कर्म्मके कर्त्ता पुरोहितोंकी मदद न लेकर स्वयं पञ्चमहायज्ञादिक जैसे नित्य यज्ञ अथवा कोई नैमित्तिक कर्म्म करना चाहें, वे अपने अधिकारके अनुसार शब्दोंको ठीक कर लेवें।

उपासनाके दिव्यदेश।

सनातनधर्मावलम्बी मूर्त्ति आदि दिव्यदेशोंको ही ईश्वर मानकर उनकी पूजा नहीं करते हैं, वे दिव्यदेशोंमें सर्वव्यापक श्रीभगवान्का आवाहन करके उनकी उपासना किया करते हैं। शास्त्रोंमें दिव्यदेशोंके सोलह भेद कहे हैं, यथा—(१) अग्नि, (२) जल, (३) लिङ्ग, (४) स्थण्डिल, (५) कुण्ड, (६) पट, (७) मण्डल, (८) शस्त्र, (९) नित्ययंत्र, शालिग्राम और वाण; (१०) भावयंत्र जो रेखासे बनते हैं, (११) पीठ कुमारी और बटुकादि, (१२) विग्रह-धातु पाषाण मृत्तिका आदिकी मूर्त्तियां, (१३) विभूति-शास्त्रोंमें जो भगवद् विभूतियोंके नाम पाये जाते हैं, जैसे अश्वत्थ आदि (१४) नाभि-शरीरका मध्यस्थान, (१५) हृदय-शरीरका हृदयकमल और (१६) मूर्द्धा अर्थात् द्विदल कमल। ये सोलह दिव्यदेश कहाते हैं। इसमें सर्वव्यापक भगवान्की सत्ताकी पूजा की जाती है।

पीठरहस्य।

इन्हीं सोलह दिव्यदेशोंमें उपासनापीठका आविर्भाव और तिरोभाव होता है। जब साधक मन, मन्त्र और क्रियाकी सहायतासे इनमें जो व्यापक प्राण है, उसमें एक आवर्त्त (देवताओंके बैठने लायक आसन) बनाकर पीठका आविर्भाव कर लेता है, तब वही दिव्यदेश पीठ कहाता है। जैसे गौके सर्वशरीरमें रस-रूपसे दुग्ध रहनेपर भी वह केवल स्तनके द्वारा ही प्राप्त किया जाता है, ठीक उसी प्रकार सर्वव्यापक ईश्वरकी सत्ता पीठोंके

द्वारा ही निकट प्राप्त की जाती है। आह्वानके समय ये पीठ बन जाते हैं और विसर्जनके बाद उनकी दैवीसत्ता जाती रहती है। पीठ और भी कई प्रकारके होते हैं। तीर्थादिक भी नित्य पीठोंके अन्तर्गत हैं। पीठके और भी अनेक रहस्यमय भेद हैं, जो विद्वान् योगिजन बता सकते हैं।

पूजाके उपचार ।

मानस याग सर्वोत्तम और बाह्यपूजा मध्यम है। प्रथम मूल मन्त्रका उच्चारण करके पुनः देय वस्तु अर्थात् जो वस्तु देवताको अर्पण करनी है, उसका उच्चारण करे। पुनः सम्प्रदानका अर्थात् जिसको वस्तु अर्पण की जाय, उसका उच्चारण करके पुनः समर्पणार्थक पदका उच्चारण करे। इस प्रकार सब उपचार देवताको अर्पण करने चाहिये। पूजामें षोडश, दश और पञ्च इस प्रकार उपचारोंके तीन भेद योगतत्त्वज्ञ महर्षियोंने कहे हैं।

षोडशोपचार ।

(१) आवाहन (२) स्थापन (३) पाद्य (४) अर्घ्य (५) स्नान (६) वस्त्र (७) भूषण (८) गन्ध (९) पुष्प (१०) धूप (११) दीप (१२) नैवेद्य (१३) आचमन (१४) ताम्बूल (१५) आरती (१६) प्रणाम।

दशोपचार ।

(१) पाद्य (२) अर्घ्य (३) स्नान (४) मधुपर्क (५) आचमन (६) गन्ध (७) पुष्प (८) धूप (९) दीप (१०) नैवेद्य।

पञ्चोपचार ।

(१) गन्ध, (२) पुष्प, (३) धूप, (४) दीप, (५) नैवेद्य।

उपासनाके भेद ।

वेद और शास्त्रोंके अनुसार उपासनाके भेद निम्न लिखित माने गये हैं। यथा—(१) निर्गुण ब्रह्मोपासना, (२) सगुण पंचोपासनाके पांच भेद, यथा—विष्णु, सूर्य्य, शक्ति, गणपति और शिव (३) लीला विग्रह उपासना अर्थात् अवतार उपासना (४) ऋषि देवता पितृ उपासना और (५) भूतप्रेतादिकी तामसिक उपासना। साधककी जैसी प्रकृति और प्रवृत्ति होती है, उसीके अनुसार उसकी रुचि इन

अवलम्बनोंसे उपासना करनेकी होती है। गुरु भी अधिकारभेदका विचार रखते हैं।

कर्म्मकाण्ड।

ज्ञान, उपासना और कर्म्मकाण्डोंमेंसे कर्म्मकाण्ड सबसे विस्तृत है। यद्यपि कर्म्मके अनेक भेद हैं, परन्तु प्रधान तीन हैं। यथा— नित्यकर्म्म, नैमित्तिक कर्म्म और काम्यकर्म्म। जो किसी विशेष वासनाकी पूर्त्तिके लिये कर्म्म किये जाते हैं, वे काम्यकर्म्म कहाते हैं। यथा—पुत्रेष्टि याग और अनुष्ठानादिक। जिन कर्म्मोंके न करनेसे कोई पाप नहीं होता है, परन्तु करनेसे पुण्य होता है, ऐसे कर्म्मोंको नैमित्तिक कर्म्म कहते हैं। जैसे—नाना वैदिक और तान्त्रिक यज्ञादि और तीर्थ दर्शन आदि। जिन कर्म्मोंके न करनेसे पाप होता है और करनेसे कोई विशेष नया पुण्य नहीं होता, उनको नित्यकर्म्म कहते हैं। यथा—पञ्चमहायज्ञ, सन्ध्यावन्दन, तर्पण आदि। नित्य सन्ध्यावन्दन अपने अपने अधिकारके अनुसार प्रत्येक व्यक्तिको करना चाहिये और कमसेकम प्रातःसन्ध्याका काल और सायंसन्ध्याका काल नहीं चूकना चाहिए। यदि सुविधा न हो, तो मनसे ही उन क्रियाओंका अनुष्ठान करना चाहिये। मानसिक क्रिया रेलमें चलते समय अथवा शरीरकी अपवित्रतामें भी हो सकती है।

पञ्चमहायज्ञ माहात्म्य।

गृहस्थके लिये पञ्चमहायज्ञका माहात्म्य सर्वोपरि है। ज्ञान राज्यके चालक ऋषिगण ब्रह्मयज्ञरूपी शास्त्रपाठसे प्रसन्न होते हैं। कर्म्मराज्यके चालक देवतागण नित्य हवनसे तृप्त होते हैं। स्थूल राज्य और शरीरके रक्षक पितृगण पितृयज्ञ और तर्पणसे प्रसन्न होते हैं। भूतयज्ञके द्वारा पृथ्वीके सब प्राणियोंकी तृप्ति होती है और अतिथिसेवा द्वारा नृयज्ञका साधन होता है। अतिथि चाहे किसी जात पांतका हो, उसको नारायण मानकर अन्न और जल द्वारा; कुछ नहो तो आसन, जल और वचन द्वारा उसकी पूजा करनेसे नृयज्ञका साधन होता है। अति संक्षेपसे ही पञ्चमहायज्ञका साधन प्रत्येक गृहीको करना उचित है।

व्रतोत्सवकथाएँ।
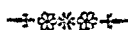
सम्वत्सर प्रतिपदा।

चैत्र शुक्ला प्रतिपत्के दिन कमलसे पैदा होनेवाले ब्रह्माजीका सत्कार (पूजा) करना चाहिये, क्योंकि इन्होंने ही चैत्र शुक्ला प्रतिपत्के दिनसे सृष्टि प्रारम्भ की थी। इस दिनके प्रथम निमेष, त्रुटि, लव, क्षण, काष्ठा, नाडी, मुहूर्त्त, प्रहर, दिन, रात्रि आदि कालावयवोंको ब्रह्माजीके सहित आह्वान करके पूजा करनी चाहिये और काल भगवान्का यथाविधि पूजन करना चाहिये। वेदवित् ब्राह्मणोंके द्वारा हवन करानेसे देवताओंकी तृप्ति होती है। इस कारण इस कार्यको अवश्य करना चाहिये। इसके अतिरिक्त उक्त दिन तोरण-पताका आदिसे गृहको सुसज्जित करना चाहिये और मिश्री एवं नीम भक्षण करना चाहिये।

पूजाका मन्त्र।

सम्वत्सरस्य प्रतिमां यां त्वां रात्र्युपास्महे।
सा नः आयुष्मती प्रजा रायस्पोषेण संसृजः॥
(अथर्व ३।१०।३)

किसी किसी देशमें इस दिन इन्द्रध्वजकी भी पूजा की जाती है और सम्वत्सरका फल सुना जाता है।

गणगौरी व्रत।

चैत्र शुक्ल तृतीयाके दिन सौभाग्यवती स्त्रीको महादेव गौरीका पूजन करना चाहिये। कुंकुम, अगरु, कर्पूर, मणि, वस्त्र और अलङ्कार आदिसे पूजन करनेकी विधि है। रात्रिमें जागरण करके प्रातःकाल दक्षिणा देनेसे सौभाग्य बढ़ता है और पुत्र उत्पन्न होता है। इस तृतीयाको मध्याह्नव्यापिनी लेना चाहिये। शिव-गौरीका पूजन सहस्र कमलोंसे करनेसे विशेष लाभ होता है। इस-लिये इसके लिये हर एक नारीको प्रयत्न करना चाहिये।

राम-नवमी।

चैत्र शुक्ला नवमी यदि पुनर्वसु नक्षत्रयुक्ता हो और मध्याह्नव्या-

पिनी हो, तो उसको महापुण्यवाली जानना चाहिये। विष्णुभक्तों-को अष्टमी विद्धा नवमी कभी न ग्रहण करनी चाहिये। नवमीमें उपवास और दशमीमें पारण करना चाहिये। श्रीभगवान् रामचन्द्र-जीने इसी दिन लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्नके साथ अवतार धारण किया था।

हनुमज्जयन्ती।

महावीरजीका जन्म चैत्र शुक्ला पौर्णिमा, स्वातीनक्षत्र, भौमवारको मेष लग्नमें हुआ था। इसलिये इस दिन प्रातःकृत्यसे निपटकर संयमपूर्वक ब्रह्मचारी महावीरकी ध्वजा गाड़कर षोड़शोपचारसे पूजा करे। इनकी पूजासे बल विद्या आयु क्रमशः सबकी वृद्धि होती है, विशेषतः ब्रह्मचारियोंकी।

अक्षय तृतीया।

(परशुराम जयन्ती)

अक्षय्यतृतीयाके दिन त्रेतायुगकी उत्पत्ति होनेके कारण इसे मन्वादि तिथि कहते हैं। इसमें हवन, शिव और विष्णुका पूजन, पितृ-तर्पण, घटदान और ग्रीष्म ऋतुकी वस्तुओंका दान किया जाता है। गङ्गास्नानादिका विशेष फल और माहात्म्य है। इसी दिन श्रीभग-वान् परशुरामने अवतार धारण किया था।

नृसिंह-चतुर्दशी।

वैशाख शुक्ल चतुर्दशीको यह व्रत किया जाता है। सोमवारको स्वाती नक्षत्रमें प्रदोषके समय श्रीभगवान् नृसिंहका अवतार हुआ था। स्वातीनक्षत्र, शनिवार और सिद्धियोगमें यह व्रत करना परम श्रेष्ठ है।

वटसावित्री व्रत।

ज्येष्ठमासकी अमावास्याके दिन या ज्येष्ठ शुक्ला पौर्णिमाके दिन यह व्रत करना चाहिये। इस व्रतमें पूर्वविद्धा अमा पूर्णा ग्राह्य है। व्रतके दिन प्रातःकाल स्त्री स्नान करके वटवृक्षके समीप जाकर हाथमें जलले, "मासानां मासोत्तमे मासि कृष्णपक्षीयाऽऽमायां... अथवा शुक्लपक्षीया पूर्णिमायां.....वारे मम भर्तुः पुत्राणामायुरारोग्यप्राप्तये जन्म जन्मनि अवैधव्य प्राप्तये च सावित्रीव्रतमहं करिष्ये।" इस प्रकार संकल्प करके वृक्षको स्नान करावे। फिर षोड़शोपचार पूजा

करे। इससे सौभाग्यवृद्धि होती है। इसी व्रतके प्रभावसे सती-सावित्रीने अपने मृत पति सत्यवानको जिला लिया था।

गङ्गादशहरा।

ज्येष्ठ शुक्ला १० को यदि सौम्यवार और हस्तनक्षत्र हो, तो वह तिथि सब पापोंको हरण करने वाली होती है। ज्येष्ठ शुक्ला १० को ही गङ्गाजी भूतलपर अवतीर्ण हुई थीं, इस कारण इस दिन गङ्गा-स्नान करनेसे सब पापोंका नाश होता है।

विष्णुशयनी एकादशी।

आषाढ़ शुक्ला एकादशीको "विष्णुशयनी एकादशी" कहते हैं। इसी दिन विष्णु भगवान् क्षीरसागरमें शयन करते हैं। किसीका मत ऐसा भी है कि, इन दिनों विष्णु भगवान् राजा बलिके द्वारपर अपनी पूर्व प्रतिज्ञानुसार चले जाते हैं। इस दिन अवश्य व्रत करना चाहिये।

चातुर्मास्यव्रत।

आषाढ़ शुक्ला एकादशीके दिन उपवास करके चातुर्मास्य व्रतको आरम्भ करना चाहिये। शंख, चक्र, गदा, पद्म, पीताम्बर धारिणी भगवान्की मूर्तिका ध्यान करना चाहिये। इस व्रतके प्रारम्भके दिन वेद जाननेवाले ब्राह्मणसे मूर्ति स्थापित कराकर स्नान करावे और गन्ध, पुष्प, धूप, दीपादिक समर्पित करे।

नागपञ्चमी।

श्रावण शुक्ला पञ्चमीको नागकी पूजा होती है, इसलिये इसको "नागपञ्चमी" कहते हैं। नागपञ्चमी षष्ठीविद्धा लेनी चाहिये, क्योंकि नागोंकी प्रसन्नता षष्ठीविद्धामें ही होती है।

रक्षाबन्धन।

श्रावण शुक्ला पौर्णिमाको प्रथम नित्यक्रियासे निवृत्त होकर देवता, पितर और सप्तऋषियोंका तर्पण करना चाहिये। दो पहरके बाद ऊनी वस्त्र या सूती वस्त्रमें हल्दीमें रंगी हुई चावलकी पोटली बांधकर एक पात्रमें रख दे। अनन्तर गृहको गोमयसे लीपकर चौक पुरावे और विधिपूर्वक शान्तिकलश स्थापन करे। घट अन्नसे परिपूर्ण तथा पीत वस्त्रसे ढका हो। यजमान स्वयं बैठकर वेदज्ञ

ब्राह्मणसे पूजा कराकर वह पीत चावलवाली पोटली मन्त्राभिषिक्त कर, अपने हाथमें बंधावे और इस मन्त्रका पाठ करावे।

येन बद्धो बली राजा दानवेन्द्रो महाबलः।
तेन त्वामभिबध्नामि रक्षे! मा चल मा चल॥

जन्माष्टमी।

एक दिन दिलीप राजाने अपने कुलाचार्य्य वशिष्ठजीसे पूछा कि, प्रभो! भाद्र कृष्ण अष्टमीके दिन देवकीके उदरसे शंख, चक्र, गदा, पद्मधारी भगवान् ने किस कारणसे जन्म लिया था? इसको आप विस्तारपूर्वक कहें। वशिष्ठने कहा, प्राचीन समयमें मथुराक कंस नामक राजासे पृथ्वी शासित थी। कंस बड़ा उद्दण्ड तथा प्रजा-घातक, स्वार्थी राजा था। एक समय उसके दुःखसे दुःखित वसुन्धरा उमापति श्रीशंकर भगवान्के समीप गई और विलाप करती हुई कहने लगी,—"हे प्रभो! कंसके दूतोंने मुझे अनेक दुःख दिये हैं,—इसलिये मैं आपकी शरणमें आयी हूं।" पृथ्वीका विलाप सुनकर शंकरजी बहुत क्रुद्ध हुए और धराके साथ ब्रह्मलोकको पधारे। ब्रह्मलोक पहुँचके पितामहसे सारा धराका क्लेश कहा और उसे मिटानेका उपाय पूछा। ब्रह्माके कहनेपर क्षीरशायी भगवान्के यहां पृथ्वी, देवगण और शंकरजीने पितामहके साथ आकर प्रार्थना की। विनिद्रित विष्णुसे देवताओंने पूर्वदत्त शंकरजीके वरदानको (तुम्हारा नाश तुम्हारे भाञ्जेका छोड़, दूसरा नहीं करेगा।) कहा। भगवान्ने कहा कि, देवताओ! आप सब कुछ जानते हो, तथापि आपके पूछनेपर कहता हुं। वसुन्धराके दुःखोंको मैं मिटा दूंगा। आप लोग अपने अपने गृहको जाइये, मैं कंसका नाश करनेके लिये गोकुलमें जाकर देवकीके गर्भमें जन्म लूंगा और मेरा माया यशोदाके गर्भसे सम्भूत होगी। जन्म-तिथि हमारी भाद्रकृष्ण अष्टमी रोहिणीनक्षत्रवाली होगी। अतः पृथ्वी सहित आप लोग उसकी प्रतिक्षा करें। देवगण घर गये। वसुन्धरा उस तिथिकी प्रतीक्षा करने लगी। वह तिथि आ गयी। कारागृहबद्ध देवकीके गर्भसे श्रीकृष्ण और वैराट नगरमें यशोदाके गर्भसे उनकी माया अवतरित हुई। कंसके भयसे भीत देवकीके कहनेपर वसुदेवजी यशोदाके घर श्रीकृष्णको

रख आये और उनकी कन्या (जो भगवान्की माया थी) को लेते आये। नन्दके घरमें विविध प्रकारके मङ्गलाचार होने लगे। उन दिनों उनके आनन्दकी सीमा न थी। देवकीको पुत्र न होकर कन्या हुई है, यह जानकर भी कंसने उसे मारना चाहा। तदनुसार उसका पैर पकड़कर एक शिलापर दे मारा। हाथसे कन्या छूट गयी और स्वर्गको जाती हुई कड़ककर कह गई कि, तेरा नाश-कर्त्ता गोकुलमें है। इधर श्रीकृष्ण दिन दिन बढ़कर शत्रुवर्गका नाश करने लगे। उन्होंने कंसका बध किया और माता पिताको कारागृहसे निकालकर द्वारिका भेज दिया। इस व्रतका करनेवाला कभी शोकाकुल न होगा और समस्त बाधाओंकी अवहेलना करता हुआ श्रीकृष्णपदमें लीन हो जायगा।

हरितालिका।

भाद्रपद शुक्ला तृतीयाको हरितालिकाव्रत किया जाता है। इसको मुहूर्तमात्र या उससे भी कम हो, तो भी चतुर्थीविद्धा ग्रहण करना चाहिये। यदि तिथिका क्षय हो, तो द्वितीयाविद्धा ग्रहण करना चाहिये। यह व्रत कन्याओं और सामान्यतः सौभाग्यवती स्त्रियोंके करने योग्य है।

गणेशचतुर्थी।

गणेशजीके चार व्रत प्रधान होते हैं। संकष्ट-चतुर्थी, दूर्वागणेश, कपर्दिविनायक और सिद्धिविनायक। इनमें सिद्धिविनायक जो भाद्रपद शुक्ल चतुर्थीको होता है, वह मुख्य है।

दूर्वागणेश।

श्रावण या कार्तिक शुक्ल चतुर्थीको यह व्रत होता है। इस व्रतमें तथा संकष्ट चतुर्थी व्रतमें गणेश मूर्त्तिकी पूजा करनी चाहिये। इसके करनेवाले, धनार्थी धन, मोक्षार्थी मोक्ष, विद्यार्थी विद्या और पुत्रार्थी पुत्र प्राप्त करते हैं। प्रतिमासकी शुक्ला चतुर्थी विनायकी और कृष्णा चतुर्थी संकष्टी कहाती है।

सिद्धिविनायक।

भाद्रपद शुक्ल चतुर्थीको यह व्रत होता है। इसमें मध्याह्नव्यापिनी चतुर्थीका ग्रहण करना चाहिये। यह व्रत सर्वसिद्धिप्रद है। इसी तरहसे "कपर्दिविनायक" व्रत श्रावण मासकी शुक्ला चतुर्थीसे लगा-

कर भाद्रपद शुक्ला चतुर्थीतक जो मनुष्य एकबार भोजन करके एक मास पर्यन्त "कपर्द्दिगणेश" का व्रत करता है उसके सब कार्य सिद्ध होते हैं ।

ऋषिपञ्चमी ।

एक समय युधिष्ठिरके प्रश्न करनेपर श्रीकृष्ण भगवान्ने ऋषिपञ्चमीके व्रतको तत्काल पापनाशक बतलाया । भगवान्ने कहा था,—पूर्वकालमें इन्द्रको जो ब्रह्महत्याका दोष लगा था, उसका एक भाग स्त्रियोंने भी ग्रहण किया था । इसी कारण प्रतिमासमें स्त्रियोंको रजोधर्म होता है । वे प्रथम दिवस चाण्डाली, द्वितीय दिन ब्रह्मघातिनी, तृतीय दिन धोबिन और चतुर्थ दिन शुद्ध मानी गयी हैं । उस रजोदर्शनकालमें यदि भ्रमवश स्पर्श हो जाय, तो वह दोष ऋषिपञ्चमी व्रतके करनेसे छूट जाता है ।

वामन द्वादशी ।

भगवान् वामन जटा, दण्ड, यज्ञोपवीत, कुशा, अजिनचर्मादि धारणकर जिस समय बलिके छलनेके लिये चले, उस समय देवताओंके आनन्दकी सीमा न रही । भगवान् यज्ञमण्डपमें पहुंच गये । बलिने आगत अतिथिका सम्मान किया और कहा–अतिथिदेव ! जो इच्छा हो, मांग सकते हो । छद्मवेषधारी वामनने कहा–मेरे जैसे ब्रह्मचारीको तो सांसारिक किसी भी चीज़की आवश्यकता नहीं, केवल तीन पाद भूमि चाहिये, जहां मैं बैठकर पठन पाठन कर सकूं । बलिने तुरन्त जल कुशा हाथमें ले, शुक्राचार्य्यके मना करनेपर भी संकल्प कर दिया । भगवान्ने विराट् शरीर धारण कर दो पादसे समस्त विश्वको नाप लिया और तीसरेके लिये बलिको भी नापा । तीन पैर पूरा न हो सका, इस कारण बलिको बांधकर वामनने कहा–राजा बलि ! तुम स्वर्ग छोड़कर सपरिवार पातालमें जाकर रहो । इस इन्द्रके बाद तुम इन्द्र होओगे । बलिने कहा–प्रभो ! प्रतीक्षानुसार आप तीन चार मास यहां बैठकर पठन पाठन किया करें । यही हमारी आकांक्षा है । वामनने एवमस्तु कहा । देवताओंको सुख स्वराज्य जैसे मिला, वैसेही इस व्रतके कर्त्ताको भी प्राप्त होता है ।

अनन्तव्रत ।

सूतजीने अनन्तव्रतके माहात्म्यमें एक प्राचीन कथाका वर्णन

किया है। प्राचीन कालमें महाराज युधिष्ठिरने जरासंधके मारनेके निमित्त राजसूय यज्ञ किया था। उस समय श्रीकृष्ण, युधिष्ठिर, अर्जुन और भीमसेनने यज्ञमण्डपको इन्द्रभवनकी तरह सुसज्जित किया था। दुर्योधन जो उस समय सम्राट् था, उसको जलके स्थान-पर स्थल और स्थलके स्थानपर जलका भ्रम हो जानेसे वह वहां गिर पड़ा। गिरते हुये दुर्योधनको देखकर हंसते हुए भीमने कहा कि अन्धोंकी सन्तान भी अन्धी होती है। इसीका वदला लेनेके लिये दुर्योधनने युधिष्ठिरको छलके द्वारा पासा खेलाकर हरा दिया और क्रोधके कारण वारह वर्ष वनमें रहनेकी आज्ञा दे दी। जब भगवान् कृष्ण एकबार वनवासकी दशामें युधिष्ठिरादि पाण्डवोंसे मिलनेके लिये आये, तो पाण्डवोंने कहा कि, हे प्रभो! आप कोई ऐसी युक्ति बतलावें, जिससे अनन्त दुःखोंका नाश हो। भगवान्‌ने कहा—मेरा नाम अनन्त है, इस कारण आप लोग मेरी कथाको श्रवण करिये। उससे वर्तमान आपके कष्ट नष्ट हो जायगें। कृतयुगमें सुमन्तु नामका वशिष्ठ गोत्री एक ब्राह्मण था। उसने दीक्षा नाम्नी भृगुकी कन्यासे विवाह किया था। कुछ दिनोंके वाद इस ब्राह्मण-पत्नीसे एक कन्या हुई, जिसका नाम शीला था। प्रसूत-ज्वरसे माता मर गयी। लड़की दिनों दिन शुक्लपक्षके चन्द्रमाकी तरह बढ़ने लगी। ब्राह्मणने इसकी रक्षाके लिये दुःशीला नाम्नी कन्यासे अपना दूसरा उद्वाह किया। शीलाके बढ़नेपर पिता माताको इसके विवाहकी चिन्ता हुई। एक दिन चिन्तित पतिपत्नी बैठे हुये थे—उसी समय कौण्डिन्य ऋषि आये और यथा कुलाचार विवाह कर शीलाको अपने आश्रममें लाये। महर्षिके साथ आती हुई शीलाने देखा कि, यमुनाके तटपर स्त्रियोंका झुण्ड खड़ा है। उसे देख इसने कहा कि, तुम लोग क्या कर रही हो? स्त्रियोंने उत्तर दिया कि, जिस व्रतकी समाप्तिमें सर्वार्थ सिद्धि होती है, वही व्रत हम लोग कर रही हैं। शीलाने संतुष्ट तथा प्रसन्न हो, अनन्त व्रतका पालन किया; जिसके फल स्वरूप महर्षिके आश्रमपर ऋद्धि और सिद्धि रहने लगीं। एक दिन ऋषिने शीलासे पूछा कि, तुमने मुझे मोहित करनेके निमित्त ही इस डोरेको अपने हाथमें वांधा है? पत्नी (शीला) ने उत्तरमें कहा कि, नाथ मैंने अनन्त व्रत किया था, इसी हेतु आपके आश्रमपर आजकल ऋद्धि सिद्धिका निवास है। यह वाक्य सुनकर

क्रोधाभिभूत ऋषिने उसके हाथका धागा तोड़कर अग्निमें जला दिया। इस अनन्तकी अवहेलनासे ऋषिकी दशा शोचनीय हो गयी और उन्हें अपने कर्तव्यपर पश्चात्ताप करना पड़ा। एक दिन ऋषी अत्यन्त दुःखी हो, वनमें अनन्तको ढूँढ़ने निकले, तो उन्होंने बहुत बड़े आमके वृक्षोंको देखकर पूछा—'तुमने अनन्तको देखा है?' उत्तरमें नहीं, सुनकर आगे गये तो सवत्सा गौको देखकर पूछा, किन्तु फिर नहींकी आवाज आई। इसी तरह रास्तेमें उन्होंने बैल, तलैया, गधा, और हाथीको देखकर पूछा, किन्तु सबने नकारहीसे काम लिया। ब्राह्मण वनान्तमें दुःखी और निराश हो पृथ्वीपर गिर पड़ा। भगवान्‌को दया आयी और उन्होंनेआकर कहा कि, तुम चौदह वर्षतक लगातार इस व्रतका अनुष्ठान करो, तो तुम्हारा भला होगा। जो तुमने बड़े विशाल आमवृक्षोंको देखा था, वे पूर्वजन्ममें वेदपारग थे। किन्तु उन्होंने किसीको विद्यादान नहीं किया, इस कारण वे वृक्ष हो गये हैं। जो गाय मिली थी, वह पृथ्वी थी। बीज बोनेपर हजम कर जाती थी। बैल साक्षात् धर्मका स्वरूप था। दोनों तलइयोंको देखा है, वे दोनों सगी बहिनें थीं। पर्वमें दानकर वे एक दूसरीको देती थीं इसकारण तलइया हो गई हैं। गधा और हाथी मदस्वरूप हैं, इस कारण इनके फन्देमें आकर किसीकी अवहेलना कर किसीको कष्ट नहीं पहुंचाना चाहिये। भगवान् अन्तरित हुए। ब्राह्मणने घर आकर अनन्तव्रत किया, जिससे वह पुनः लक्ष्मीवान् हो गया। इसी व्रतके प्रभावसे युधिष्ठिरका सारा दुःख दूर हुआ और उन्हें राज्यप्राप्ति हुई।

नवरात्र-महोत्सव।

एक समय शुम्भ, निशुम्भ और महिषासुरादि तामसिक वृत्तिवालोंसे अत्यन्त दुःखी हो, देवगणने चिच्छक्ति-महामायाकी स्तुति की। महामायाने अवतार धारण कर कहा कि, डरनेकी कोई बात नहीं, मैं शीघ्र ही अवतीर्ण होकर इनका नाश करूंगी। तुम लोग मेरी प्रसन्नताके लिये आश्विनशुक्ला प्रतिपदासे लेकर नवमीपर्यन्त घटस्थापनपूर्वक मेरी पूजा करो। यही नवरात्र महोत्सव है।

विजया दशमी।

आश्विन मासकी शुक्ला दशमीके दिन नक्षत्रोंके उदय होनेपर

विजया नामक काल होता है और वह सब कामनाओंको पूर्ण करने-वाला होता है। शत्रुको विजय करनेवाले राजाको इसी समयमें प्रस्थान करना चाहिये। उस दिन (विजयाके दिन) यदि श्रवण नक्षत्र हो तो अति उत्तम है। मर्य्यादापुरुषोत्तम भगवान् राम-चन्द्रजीने आश्विनशुक्ला १० के दिन बन्दरोंकी सेनाके साथ लंकेश्व-रके विजयके निमित्त प्रस्थान किया था। परिणाम यह हुआ कि, राजा रावण मारा गया और रामने विजय पायी। इसीलिये प्रत्येक राजा, महाराजाको चाहिये कि, अपने अपने शत्रुओंपर विजय करनेके लिये इसी दिन प्रस्थित हों। शत्रु-विजय अनभीष्ट हो, तो भी अपना सीमोल्लंघन कर शमीवृक्षकी पूजा कर प्रार्थना करनी चाहिये। 'हे शमीवृक्ष! तू पापोंका नाशक तथा अर्जुनके धनुषका धारण करने-वाला और रामचन्द्रजीको प्रिय वाक्योंसे सन्तुष्ट करनेवाला है,—इस-लिये मैं तेरी आज अर्चा करता हूं, जिससे कि मेरी भी भलाई हो!

करवाचतुर्थी।

प्रातःकाल स्त्री नित्यक्रियासे निवृत होकर एक पटपर चन्द्रमा-की मूर्त्ति लिखे और उसके नीचे शिव, षणमुख और गौरीकी प्रतिमा। इन सबकी पूजा कर १० कुहड़ (जो पुओंसे भरे हों) ब्राह्मणको दान देकर कथा श्रवण करे। यह व्रत केवल सौभाग्य चाहनेवाली स्त्रियोंके ही लिये है।

धनतेरस।

एक दिन यमराजने अपने दूतोंसे पूछा—"जब तुम लोग मेरी आज्ञानुसार प्राणियोंके प्राण लेते हो, तो तुम्हें कभी दया आयी है या नहीं? यदि आयी है, तो कहां और कब?" इस प्रश्नके उत्तरमें यमदूतने कहा कि, हंस नामक एक बड़ा भारी राजा था। वह एक समय काननमें आखेट करनेके लिये गया। घनघोर वन होनेके कारण साथियोंका साथ छूट गया। निदान मार्ग भूलकर राजा हेमराजके स्थानपर चला गया। हेमराजने हंसराजाको बड़ा सन्मान किया। तदनन्तर उसी दिन हेमराजाको एक पुत्र हुआ। परन्तु षष्ठी-पूजनमें श्रीजगदम्बाने प्रसन्न हो कहा था कि, "विवाहके चार दिनके बाद ही लड़का नहीं बचेगा।" हेमराजाने हंसराजसे अपने पुत्रजन्मका सारा वृत्तान्त कह सुनाया। हंसराज-

ने लड़केकी रक्षाके लिये उसे यमुनादहमें रख दिया और अवस्था प्राप्त होते ही शादी भी कर दी। इसके चौथे दिन यमदूतोंने उसके प्राण ग्रहण कर लिये। यमदूतोंने लौटकर कहा था, "प्रभो! ऐसे उत्सवमें इस तरहका व्याघात करना अत्यन्त घृणित कार्य है, किन्तु क्या करें, हमलोग तो परतन्त्र थे। अतः नाथ! कोई ऐसी युक्ति बतलाओ, जिससे ऐसे कष्ट किसीको भी न उठाना पड़े। उत्तरमें यमने धनतेरसके दिन (यमके लिये) दीप दान करनेको कहा। अतः इस व्रतका व्रती असामयिक मृत्युको नहीं प्राप्त होता।

नरकचतुर्दशी।

इस चतुर्दशीको पूर्वविद्धा लेना चाहिये। कार्तिक मासकी कृष्ण चतुर्दशीको प्रातःकाल दिन निकलनेके पहिले प्रत्यूषकालमें स्नान करना चाहिये। जो सूर्योदयके बाद इस तिथिमें स्नान करता है, उसका वर्ष भरका सारा शुभकर्म-फल नष्ट हो जाता है। इस दिन तेल लगाकर स्नान करना चाहिये और अपामार्ग (चिचड़ा) से भी अङ्ग प्रोक्षण करना चाहिये। पश्चात् यमतर्पण कर सायंकालमें उन्हें दीपदान करना चाहिये। दीपदानका क्रम तीन दिन है। इसका कारण यह है—भगवान् वामनने इन्हीं तीन दिनोंमें एक एक पाद करके पृथ्वीको नापा है। पृथ्वी पूरी तीन पाद न हो सकी, जिसके लिये बलिको बांधकर भगवान्ने कहा—तुम वरदान मांगो। बलिने कहा, जो इन तिथियोंमें यमको दीपदान करे और लक्ष्मी पूजन करे, उसको यमकी पीड़ा न हो तथा लक्ष्मी उसका घर कभी न छोड़ें। एवमस्तु कहकर भगवान् चले गये और बलि उनकी आज्ञानुसार स्वर्ग छोड़, पातालमें राज्य करने लगे।

दीपमालिका।

कार्तिक कृष्ण अमावास्याके दिन दीपमालिका उत्सव मनाना चाहिये। प्रदोषकालमें लक्ष्मी और कुबेरकी पूजा षोड़शोपचार वेदमन्त्रोंसे करनी चाहिये। यद्यपि त्रयोदशीसे लगातार दीपदान करना और लक्ष्मी, कुबेरकी पूजा करना शास्त्रोंमें लिखा है, तथापि प्रचलित रीतिका अनुसरण ही सबसे अच्छा और उत्तम है।

गोवर्धनपूजा अथवा अन्नकूट।

कार्तिक शुक्ल प्रतिपदाको अन्नकूटका महोत्सव किया जाता है।

एक समय वालखिल्य नामके महर्षिने कहा—"ऋषियो ! कार्तिक शुक्ल प्रतिपदाके दिन अन्नकूट कर गोवर्धनकी पूजा करनी चाहिए, जिससे भगवान् विष्णु प्रसन्न हो जायं।" महर्षियोंने पूछा—"भगवन् ! गोवर्धन कौन हैं और इनकी पूजासे क्या फल होता है?" वालखिल्यने कहा—"एक समय भगवान् कृष्ण अपने गोपाल सखाओंके साथ गौओंको चराते हुये गोवर्धनपर्वतकी तराईमें गये। वहां पहुंचकर ग्वालबाल अपने अपने छींकोंको खोलकर रोटी खाने लगे। अनन्तर एक सुरम्य पर्वत-शिलापर लतागुल्मादि ले आकर वे एक मण्डप बना साजने लगे। भगवानने पूछा—"आज कोई व्रत है? है तो कौनसा?" गोपोंने कहा—"आज व्रजके प्रत्येक गृहमें पकान्न तैयार किया गया होगा और अपने अपने गृहको सजाकर भगवान् इन्द्रकी पूजाकी तैयारी की गई होगी।" कृष्णने कहा—"यदि देवता प्रत्यक्ष होकर पकान्न भक्षण करते हों, तो अच्छा है, अन्यथा अप्रत्यक्षकी पूजा उचित नहीं है"। दुःखित गोपालोंने कहा—"श्रीकृष्ण ! तुम्हें इस प्रकार देवनिन्दा नहीं करनी चाहिये, बल्कि इसमें सम्मिलित होकर गोपालोंका उत्साह बढ़ाना चाहिये। इन्द्रकी पूजासे ही सुवृष्टि होती है और सारे जीव संतुष्ट रहते हैं।" श्रीकृष्ण यह सुनकर हँस पड़े और कहा कि, "विधाताने गोपालोंको इसीसे मूर्ख बनाया है। कहीं गोवर्धनसे बढ़कर इन्द्र अधिक वृष्टि करनेवाला है? क्या गोवर्धनके सामने इन्द्रकी कोई शक्ति काम करेगी? तुम लोग व्यर्थ मोहमें पड़कर प्रत्यक्ष श्रीगोवर्धनको पूजा न कर इन्द्रकी पूजा करने जा रहे हो।"

श्रीकृष्णके इस सारगर्भित उपदेशको सुनकर गोपोंको विश्वास हो गया—"गोवर्धन ही श्रेष्ठ देवता तथा इन्द्रसे भी बलिष्ट हैं।" तदनुसार उनकी पूजाकी सामग्री सबोंने एकत्रित की। पर्वतपर पहुंचकर श्रीकृष्ण अपनी शक्तिसे उसमें प्रवेश कर गये। गोपोंने यथाविधि श्रीकृष्ण सहित पूजा की और गोवर्धन देवता भोग भक्षण करते गये। इस दृश्यको देखकर गोप बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने अपनी पूजा सार्थक समझी। पूजा हो रही थी कि, कहींसे नारद जी आ गये और यह देखकर सीधे इन्द्रलोकको चले गये।

म्लानमुख देवर्षि नारदको देखकर इन्द्रने कहा—"प्रभो ! आज उदासीन होनेकी कौनसी बात है।" नारदने कहा कि, "मैं मर्त्यलोकमें

गया था। वहां मैंने देखा कि, जहां तुम्हारी पूजा होती थी, वहां तुम्हारे स्थानपर श्रीकृष्णके कहनेसे समस्त ब्रजवासी गोवर्धन पर्वतकी पूजा कर रहे हैं, यही हमारे उदास होनेका कारण है।" नारदजी यह कहकर चले गये, किन्तु इससे इन्द्रके हृदयमें बड़ी चोट लगी। उस समय उन्होंने अपने प्रलयकारी सम्बर्तादि मेघोंको बुलाकर कहा कि, तुम लोग ब्रजमें जाओ, और मूसलधार पानी बरसाओ। आज्ञा पाते ही मेघ दौड़े और पहुंचकर मूसलधार पानी बरसाने लगे। गोकुलवासी व्याकुल हो श्रीकृष्णकी शरण गये और कहा-"भगवन्! रक्षा करो। क्योंकि इन्द्रपूजाके दिन तुमनेही इन्द्रकी पूजा छुड़ाकर गोवर्धनकी पूजा करवाई है।" श्रीकृष्णने कहा कि, "आप सबके सब गोधनके साथ गोवर्धनकी शरण लो, वह आपकी रक्षा अवश्य करेगा।" सब उनके कथनानुसार गोवर्धनकी शरणमें आये और श्रीकृष्णने बढ़तीहुई मेघधाराको देख, गोवर्धनको उठालिया और सबकी यथेष्ट रक्षा की। सात दिन लगातार वृष्टि करते करते मेघ हार गये। इन्द्रके आश्चर्यकी सीमा न रही। विधाताके कहने पर कि, "श्रीकृष्णका अवतार हो गया है" इन्द्र पश्चात्ताप करने लगे और ब्रजमें आकर श्रीकृष्णसे क्षमा याचना करते भये। श्रीकृष्णने गोपोंकी सम्यक् सुरक्षा कर सबको सन्तुष्ट किया और कहा कि, "देखो, इन्हीं (गोवर्धन) के बलसे मैंने सात दिनोंतक इनकी (गोपोंकी) रक्षा की है। पहिले भी ब्रजवासीगण इन्हींको पूजा करते थे, किन्तु बीचमें यह पद्धति छूट गई थी। उसकी याद हमने पुनः दिला दी है। यह कोई नवीन पूजा नहीं है।"

भ्रातृ-द्वितीया।

कार्तिककी अपराह्णव्यापिनी यमद्वितोया ही श्रेष्ठ है। उसदिन यमकी विधि पूर्वक पूजा करनी चाहिये। इस दिन भाईकी दीर्घायुकामनासे बहिन उसे भोजन कराती है। यमुनाने भी यमको भोजन कराकर नेग लिया था।

प्रबोधिनी (देवोत्थानी) एकादशी।

कार्तिक शुक्ल एकादशी ही देवोत्थानी एकादशी कही जाती है। देवोत्थान शब्द दो शब्दोंसे मिलकर बना है, देव और उत्थान। देवका अर्थ देवता है और उत्थान उत् पूर्वक स्था धातुसे बना है,

जिसका अर्थ उठना है। अतएव देवोत्थानी एकादशी उस एकादशीको कहते हैं, जिस दिन विष्णु भगवान् अपनी शेषशय्यासे उठते हैं। पुराणोंमें यह कहा गया है कि, विष्णु भगवान् आषाढ़ शुक्ल एकादशीसे कार्तिक शुक्ल एकादशी तक चार महीने सोते हैं और कहीं कहीं तो यह भी कहा गया है कि, सभी देवतागण इस चौमासे भर सोते रहते हैं। यही कारण है कि, चौमासेमें कोई शुभ काम विवाह अथवा यज्ञोपवीत संस्कार आदि नहीं किया जाता। यहांतक कि, चौमासेमें लोग मकानका छवाना अथवा चारपाई बिनवाना भी अशुभ समझते हैं। इस एकादशीको लोग व्रत और केवल फलाहार करते हैं।

वैकुण्ठ-चतुर्दशी।

सत्ययुगमें भगवान् विष्णु विश्वेश्वरकी पूजा करनेके लिये काशी पधारे। प्रातःकाल मणिकर्णिका घाटपर स्नानकर स्वर्णके बने हुए एक सहस्र कमल लिये हुये विश्वनाथके मन्दिरमें पहुँचे। विष्णुने प्रथम भवानी और शङ्करकी अर्चना की, पश्चात् दोनोंका अभिषेक करने लगे। विष्णुकी परीक्षा करनेके लिये-"हमारा भक्त है या नहीं" इस विचारसे कमलोंमेंसे एक कमलपुष्प शिवजीने ले लिया। विष्णु स्नानादि क्रिया समाप्त कर जब पुष्प चढ़ाने लगे तो देखा कि, गिने हुये सहस्र कमलोंमें एक कम है। प्रथम गणना भ्रमात्मक समझकर उन्होंने पुनः पुष्प-गणना की किन्तु प्राथमिक गणना सत्य निकली। अतः पुष्पके बदले विष्णुने अपना दायां नेत्र उन्हें अर्पित कर दिया। विष्णुकी ऐसी अविचल भक्ति देखकर प्रसन्न हो, शिवने कहा कि, आप धन्य हैं। मैंने आज त्रिलोकीका राज्य आपको दे दिया। विष्णुने कहा—नाथ! राज्य तो दिया, किंतु शासन मैं कैसे बिना किसी शक्तिके करूंगा। शिवने सुदर्शनचक्र दिया और कहा कि, इस चतुर्दशी (कार्तिक शुक्ला चतुर्दशी) का नाम वैकुण्ठ चतुर्दशी होगा। जो लोग इस व्रतका पालन करेंगे, वे अवश्यही संसारके समस्त भोगोंको भोगकर अन्तमें वैकुण्ठके अधिकारी बनेंगे। इस व्रतके करनेवालोंको उचित है कि, पहले विष्णुपूजन समाप्तकर शिवपूजन करें, अन्यथा व्रतका फल कुछ न होगा।

वसन्त-पञ्चमी।

वसन्त पञ्चमीका त्यौहार ऋतुपरक है। परन्तु वसन्त ऋतुके चैत्र और वैशाख ये दो मासही मुख्य माने गये हैं। यद्यपि इन्हीं महीनोंमें यह पर्व भी होना चाहिये था, तथापि मकरसंक्रांतिके बाद उत्तरायण सूर्य होता है, इस कारण उसी समयसे वसन्तका प्रारम्भ मानकर माघ शुक्ला पंचमोको यह उत्सव मनाया जाता है। इस दिन सरस्वतीकी पूजाकी जाती है।

रथसप्तमी।

माघ मासकी शुक्ला सप्तमी सूर्यग्रहणके तुल्य होती है। जो लोग इस दिन अरुणोदयके समय स्नान करते हैं, वे महत्फलके भागी होते हैं। इसको अरुणोदयव्यापिनी लेना चाहिये। चांदी आदिके पात्रमें दीप जलाकर जलके ऊपर तैराना चाहिये और पितृतर्पण करना चाहिये। यदि इस व्रतके दिन षष्ठी सप्तमीका योग हो जाय, तो उसे पद्मयोग कहते हैं। उस समय स्नान करनेसे सहस्रसूर्यग्रहण स्नानका फल होता है।

महाशिवरात्रि।

शिवरात्रिव्रतमें प्रदोषव्यापिनी चतुर्दशीका ही ग्रहण है। 'मासानां मासोत्तमे' इत्यादि प्रकारसे संकल्पकर शिवकी षोड़शोपचार पूजा करनी चाहिये। यह व्रत फाल्गुन कृष्णा चतुर्दशीको उपोषित रह कर और रात्रिमें जागरणकर किया जाता है।

होलिका दहन।

होलीके दिन प्रदोष, अर्थात् सायंकालव्यापिनी फाल्गुन शुक्ला पूर्णिमाको रात्रिमें भद्राके न रहनेपर होलिकादहन करना चाहिये, गांवके लड़के जहां फूस काष्ठ वगैरह ढेर लगाये हों, वहां आबालवृद्धको जाकर अग्निकी पूजापूर्वक प्रदक्षिणा करनी चाहिये। तदनन्तर उस भस्मको दूसरे दिन प्रातःकाल इस मन्त्रसे प्रार्थनाकर लगाना चाहिये।

वन्दितासि सुरेन्द्रेण ब्रह्मणा शंकरेण च।
अतस्त्वं पाहि मां देवि भूति-भूति-प्रदा भव॥*

---

*व्रतोंका पूरा बयान व्रतोत्सवचन्द्रिकामें है, जो निगमागम बुकडिपोसे ३) पर मिलती है।

सामान्य धर्म-कृत्य।

—०※०—

ईश्वर-प्रार्थना।

ॐ नमो राजाधिराजाय प्रसह्य शायिने नमो वयं वैश्रवणाय कुर्महे। स मे कामान् कामकामाय मह्यं कामेश्वरो वैश्रवणो दधातु। कुबेराय वैश्रवणाय महाराजाय नमः। ॐ स्वस्ति साम्राज्यं भोज्यं स्वाराज्यं वैराज्यं पारमेष्ठ्यं राज्यं महाराज्यमाधिपत्यमयं समंतपर्य्यायी स्यात्सार्वभौमः सार्व्वायुष आन्त्यादापरार्द्धात्। पृथिव्यै समुद्रपर्य्यन्ताया एकराडिति तदप्येषश्लोकोऽभिगीतो मरुतः परिवेष्टारो मरुत्तस्यावसन् गृहे। आवीक्षितस्य कामप्रे विश्वेदेवा सभासद इति। विश्वतश्चक्षुरुतविश्वतो मुखो विश्वतो बाहुरुत विश्वतस्पात् संबाहुभ्यां धमति संपतत्रै द्यावाभूमि जनयन्देव एकः। ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्तदेवास्तानिधर्म्माणि प्रथमान्यासन्। तेहनाकं महिमानः सचन्तयत्रपूर्वे साध्याः सन्ति देवाःॐ ॥ १ ॥

योगेन सिद्धविबुधैः परिभाव्यमानं लक्ष्म्यालयं तुलसिकाचित भक्तिभृङ्गम्। प्रोत्तुङ्गरक्तनखराङ्गुलिपत्रचित्रं गंगारसं हरिपदाम्बुजमाश्रयेऽहम् ॥२॥ शिवं शान्तं शुद्धं प्रकटमकलङ्कं श्रुतिनुतं, महेशानं शम्भुं सकलसुरसंसेव्यचरणम्। गिरीशं गौरीशं भव-भयहरं निष्कलमजं, महादेवं वन्दे प्रणतजनतापोपशमनम् ॥ ३ ॥ विद्वद्वृन्दैर्गीयमानाच्छकीर्तिः शुण्डादण्डभ्राजदाश्चर्य्यमूर्तिः। विच्छिन्नोद्यद्विघ्नसन्तानमूर्तिर्मन्त्या तस्मात्सर्वकामस्य पूर्तिः ॥ ४ ॥ डमरुडिण्डिमझञ्झरझर्झरी मृदुरवाः सुहतः पटहादयः। झटिति झंकृतिभिर्जगदम्बिके बहुतरं हृदयं सुखयन्तु ते ॥ ५ ॥

प्रातःस्मरण।

ब्रह्मा मुरारिस्त्रिपुरान्तकारी, भानुः शशी भूमिसुतो बुधश्च।
गुरुश्च शुक्रः शनिराहुकेतवो, कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम् ॥

करदर्शन।

कराग्रे वसते लक्ष्मी, करमध्ये सरस्वती।
करपृष्ठे च गोविन्दः, करोमि करदर्शनम् ॥

भूमिवन्दन।

समुद्रमेखले देवि ! पर्वतस्तनमण्डले।
विष्णुपत्नि नमस्तुभ्यं पादस्पर्शं क्षमस्व मे॥

दीपप्रणाम।

शुभं करोतु कल्याणं आरोग्यं धनसम्पदाम्।
शत्रुबुद्धि विनाशाय दीपज्योति नमोस्तुते॥
स्वयंबुद्धिप्रकाशाय दीपज्योति नमोस्तुते।

दंतधावन।

इस मंत्रसे दतवन करेः—
मुखदुर्गंधिनाशाय दंतानांच विशुद्धये।
ष्ठीवनायच गात्राणां कुर्वेऽहं दंतधावनम्॥ १॥

स्नान।

इस मंत्रसे स्नान करेः—
ॐ पुष्कराद्यानि तीर्थानि गंगाद्याः सरितस्तथा।
आगच्छन्तु पवित्राणि स्नानकाले सदा मम॥ १॥
त्वं राजा सर्वतीर्थानां त्वमेव जगतः पिता।
याचितं देहि मे तीर्थ ! सर्वपापैः प्रमुच्यते॥
नमामि गंगे तव पादपंकजं सुरासुरैर्वन्दित दिव्यरूपम्।
भुक्तिं च मुक्तिं च ददासि नित्यं भावानुसारेण सदा नराणाम्॥

दशविध संस्कार।

मीमांसा शास्त्रके अनुसार १६ वैदिक संस्कार प्रधान माने गये हैं। जिनमेंसे ८ प्रवृत्तिके और ८ निवृत्तिके कहलाते हैं। उन्हीं १६ वैदिक संस्कारोंके अवलम्बनसे और भी अनेक संस्कारोंका वर्णन स्मृतियोंमें पाया जाता है। उनमेंसे दशविध संस्कारका इस समय प्रचलन विशेष है। इन संस्कारों (यज्ञों) के द्वारा मनुष्य क्रमशः अपने आप अभ्युदय और मुक्तिको प्राप्त करता है।

"जन्मना जायते शूद्रः संस्काराद्द्विज उच्यते।" मनुष्य जन्मसे शूद्र होकर संस्कारोंके द्वारा द्विज होते हैं। अतः संस्कार लुप्त न

हो, इस विषयमें सबको सतर्क रहना चाहिये । संस्कारोंके नाम—(१) गर्भाधान, (२) पुंसवन, (३) सीमन्तोन्नयन, (४) जातकर्म, (५) नामकरण, (६) अन्नप्राशन, (७) चूड़ाकरण, (८) उपनयन, (९) समावर्त्तन, (१०) विवाह । ये संस्कार प्रधानतः चार श्रेणीमें विभक्त हैं; यथा—(१) गर्भसंस्कार, (२) शैशव-संस्कार, (४) कैशोरसंस्कार (४) यौवनसंस्कार । गर्भाधान, पुंसवन और सीमन्तोन्नयन ये तीन गार्भसंस्कार; जातकर्म, नामकरण और अन्नप्राशन ये शैशवसंस्कार; चूड़ाकरण, उपनयन और समावर्त्तन ये कैशोरसंस्कार और विवाह यौवनसंस्कार है ।

१—गर्भाधान संस्कारका उद्देश्य सन्तानमें सत्त्वगुणका उत्कर्ष-साधन है । इस महदुद्देश्यकी पूर्तिके लिये ही ऋषियोंने स्नायु, मज्जा, मेदा, त्वक्, मांस और रक्त इन षट् पदार्थोंके संमिश्रणसे ही मानव शरीर समुद्भूत होना माना है । उसमें प्रथम तीन पितृ-शरीरसे और द्वितीय तीन मातृ शरीरसे प्राप्त होते हैं, इसलिये पिता और माताके मनमें जो भावना रहती है, वह संतानमें अवश्य आजाती है । गर्भाधान करनेवाले पिता-माताको चाहिये कि, प्रसन्न हो सुसन्तानोत्पत्तिकी इच्छा रखते हुए अपने मनमें कामवृत्तिको न बढ़ाकर सत्त्वगुणकी अधिक वृद्धि करें और शास्त्रविधिपूर्वक गर्भाधान करें ।

२—गर्भाधानके द्वितीय संस्कारको पुंसवन कहते हैं । पुंसवन शब्दसे पुत्र संतानका अर्थबोध होता है । यह संस्कार गर्भाधानके दिनसे तीनमासके बाद चौथे महीनेके १० दिनके अंदर होता है । प्रथम हवन करके पति पत्नीके पीछे खड़ा होकर पत्नीके स्कन्ध-स्पर्शपूर्वक दक्षिण हाथसे स्त्रीकी नाभिका स्पर्श करे और निम्न-लिखित मन्त्रका पाठ करता रहे । यथाः—"प्रजापति ऋषिरनुष्टुप् छन्दो मित्रावरुणाश्वि अग्निवायवो देवता पुंसवने विनियोगः । ॐ पुमांसौ मित्रावरुणौ पुमांसावश्विनावुभौ । पुमानग्निश्च वायुश्च पुमान् गर्भस्तवोदरे ।" अर्थात् सूर्य्य, वरुण, अश्विनीकुमार, अग्नि और वायुकी तरह पुरुष तुम्हारे गर्भसे आविर्भूत हो । पतिके मुखसे इस मन्त्रपाठको श्रवणकर स्त्रीको विशेष प्रसन्न होना चाहिये, क्योंकि पतिकी अपेक्षा गर्भिणीको पुत्रजननकी प्रबल इच्छा होती है । इस प्रसन्नताके कारण गर्भावस्थामें आलस्य, वमनादिजनित गर्भविकार प्रभृति न होकर गर्भपुष्टिकारक शक्तिका संचय विशेष

रूपसे होता है। इसके अतिरिक्त पुंसवनमें दो फलवाले उड़द और यवके साथ गर्भिणीकी नासिकामें स्पर्श करानेकी भी विधि है। गर्भ-रक्षाकी इन द्रव्योंमें विशेष शक्ति होती है, इसमें कोई सन्देह नहीं है। आयुर्वेदशास्त्रके मतानुसार बरगदके बीजका सेवन करनेसे विशेषरूपके स्त्रीदोष नष्ट होते हैं।

३—गर्भावस्थाके तृतीय संस्कारका नाम सीमन्तोन्नयन है। यह संस्कार गर्भाधानके षष्ठ या अष्टम मासमें किया जाता है। इसकी मूल क्रिया है सीमान्त या मांग काढना। इसके हो जानेसे गर्भिणी प्रसवकालपर्य्यन्त अनुलेपादि अनुलिप्त शृङ्गारवेषमें कभी आसक्त नहीं होती है। अन्तमें पति पुत्रवाली स्त्रियां गर्भिणीको एक वेदीपर बैठाकर जलपूर्ण घटसे स्नान करावें, तदनन्तर और मंगल कर्मको करें और सब मिलकर आशीर्वाद करें कि, "तुम वीर-प्रसवा जीवत्पुत्रिका और जीवितपतिका हो।" अनन्तर गर्भिणीको खिचड़ी (कृसरान्न) भक्षण करनेकी विधि है।

४—जातकर्म। सन्तानके भूमिष्ठ होते ही यह कर्म किया जाता है। पिता पहिले यव और धानके चूर्ण द्वारा या स्वर्ण द्वारा घृष्ट मधु एवं घृतको लेकर सद्योजात शिशुकी जिह्वा स्पर्श करे। इस विधिमें जो मन्त्र उच्चरित होते हैं, उनके अर्थसे और विज्ञानसे भी जान पड़ता है कि, इस विधिसे शिशुकी मेधा, आयु, तेज और स्मरणशक्ति बढ़ती है। द्रव्यगुण विचार पूर्वक यदि देखा जाय तो, स्वर्ण द्वारा आयु, प्रस्रावपरिष्कार और रक्तादिके दोष दूर होते हैं। घृतके द्वारा कोष्ठोंकी शुद्धि, बल और जीवनशक्तिका वर्द्धन होता है। मधुके द्वारा पिण्डकोषकी क्रिया बढ़ती तथा मुखमें लाल (लार) का सञ्चार होकर कफ नष्ट होता है।

५—नामकरण। सन्तान भूमिष्ठ होनेके बारहवें या सौवें दिन अथवा एक वर्षपर नामकरण किया जाता है।

६—अन्नप्राशन। पुत्रका षष्ठ या अष्टम महीनेमें और कन्याका पञ्चम या सप्तम मासमें अन्नप्राशन होता है।

७—चूड़ाकरण। गर्भावस्थामें जो सन्तानके शिरमें केश उत्पन्न होते हैं, उनके नाशके द्वारा शिशुमें तेज और बलकी वृद्धि होती है।

८—यज्ञोपवीत। गर्भसे लेकर अथवा जन्मकालसे लेकर अष्टम

वर्षमें ब्राह्मणका यज्ञोपवीत करना चाहिये। ब्राह्मणशिशु प्रायः आठ वर्षसे लेकर षोड़श पर्य्यन्त, क्षत्रिय एकादशसे २२ वर्ष पर्यन्त और वैश्य १२ वर्षसे लेकर २४ वर्ष पर्य्यन्त यज्ञोपवीतका अधिकारी रहता है। ब्राह्मणशिशु षोड़श वर्षके बाद सावित्रीपतित हो जाता है, इस कारण इसके अन्दर ही यज्ञोपवीत करना उचित है।

९—समावर्तन। यज्ञोपवीतके बाद गुरुके गृहमें रहकर विद्याध्ययन करनेकी पहिले विधि थी; दुर्भाग्यवश वह आजकल भ्रष्ट हो गयी है। अस्तु, पहिले ब्रह्मचारी पाठ समाप्त कर गुरुकी आज्ञासे घर जाते थे। घर जाकर शास्त्रानुमोदित विधिसे विवाह कर गार्हस्थ्य धर्मका पालन करते थे। इस समय वह प्रथा नहीं है। यह विधि उसी दिन अर्थात् यज्ञोपवीतके ही दिन करा दी जाती है।

१०—विवाह। यौवनावस्थाका एकमात्र विवाह संस्कार है। इस संस्कारमें सब जातिवालोंका समान अधिकार है। पति पत्नीको मिलकर जो कर्म करने चाहिये, वे सब हमारे शास्त्रोंमें बहुत लिखे हुए हैं। विवाहसम्बन्ध होनेके कारण स्त्री और पुरुष दोनों एक-शरीर हो जाते। श्रुतिमें भी लिखा है—"अस्थिभिरस्थीनि मांसैर्मांसानि त्वचात्वचम्।" विवाहके मन्त्रोंमें भी लिखा है,—"यदेतत् हृदयं मम तदस्तु हृदयं तव" इत्यादि प्रमाणोंसे स्त्री पुरुष मिलकर एक अङ्ग होते हैं, इसमें कोई सन्देह नहीं है। शास्त्रमें यह लिखा है—'सस्त्रीको धर्ममाचरेत्।' इससे मालूम होता है कि, विवाहिता स्त्रीको ही सहधर्मिणी कहते हैं औरको नहीं। इसलिये विवाहसम्बन्ध अवश्य यथाशास्त्र होना चाहिये। ब्राह्मण २४, क्षत्रिय २८, वैश्य ३२ और शूद्र ३६ वर्षके बाद ४८ के अन्दर विवाहके अधिकारी होते हैं।

विशेष ज्ञातव्य। दशविध संस्कारोंमेंसे प्रत्येक संस्कारमें नान्दीमुख श्राद्ध अवश्य करना चाहिये। जिनका संस्कार एक दिनमें ही हो, उनके पिताको चाहिये कि, नान्दीमुख श्राद्ध एक बार ही करें। जैसे एकसाथ यदि दो लड़कोंका यज्ञोपवीत हो तो, नान्दीमुख श्राद्ध दो बार न कर एक ही बार करे। पिताके अभावमें संस्कार होनेवाले लड़के ही अलग अलग नान्दीमुख करें। नान्दीमुख या वृद्धिश्राद्ध इन सबमें प्रायः समानता है। प्रथम विवाहमें लड़केका पिता ही नान्दीमुख श्राद्धका अधिकारी होता है। द्वितीय विवाहमें पिताके

रहनेपर भी जिसकी शादी हो, वही नान्दीमुख श्राद्धका अधिकारी है। संस्कार जिसका हो अथवा जो संस्कार करें, उनके पिता माताकी यदि मृत्यु हुई हो, तो एक वर्षके भीतर कोई शुभ कर्म नहीं कर सकते। यदि अत्यन्त संकट उपस्थित हो, तो वार्षिक पिण्ड सृतिपतरको देकर शुभकर्म करनेमें प्रवृत्त हो सकते हैं। किसी कारणविशेषसे यदि पुत्र या पुत्रीका संस्कार उचित समयपर न हो सके, तो उनका संस्कार समय बीत जानेपर भी करनेमें कोई दोष नहीं है। किन्तु शक्ति रखते हुए यदि बहलावा देकर संस्कार न करता हो, तो वह पुनः संस्कारका भागी नहीं हो सकता।

गोत्र और प्रवर।

[ब्राकिटमें प्रत्येक गोत्रके प्रवर लिखे गये हैं।]

मित्रयुव–(भार्गव वाध्यश्व दिवोदास), विद–(भार्गव औव जामदग्न्य), वैन्य–(भार्गव वैन्य पार्थ), आयास्य–(आंगिरस आयास्य गौतम), शारद्वत–(आंगिरस गौतम शारद्वत) जातूकर्ण–(अत्रि वशिष्ठ जातूकर्ण), कौशिक–(काशिक विश्वामित्र देवराज), यदभू–(यदभू विश्वामित्र कौशिक), पाराशर–(अगस्त्य पौर्णमास पाराशर), मित्रावरुण–(आत्रेय पाराशर अदर्भा), जावहिर–(जावहिरैक), दर्भ–(अंगिरस वार्हस्पति च्यवन), कृष्णाजिन–(विश्वामित्र च्यवन कृष्णानित मदंगिना), वत्स–(वत्स च्यवन आप्लुवन द्रमदा) उदवारन–(आंगिरस गौतमी स्नान), सत्यवर्ति–(अगाध्रचित सत्वतीत),पाराशर-(भार्गवोदनच्यस्रुणेति),भार्गव भार्गव (च्यवन अप्नवान नार्ध जमदग्नि), मुदगल—(मुदगल भार्गव च्यवन अप्रवायत जमदग्नि वा) शौनक–(शौनक अंगिरस समार्दा) चांद्रायण—(चान्द्रायण कृत्य वतन), चामनदेव–(चामन मध्याय मौनस), कात्यायन–(कात्यानेऽच्छिलविश्वामित्र), सांकृत्यन (सांकृत्यन सांख्या गौरव), गोभिल–(गोभिलआंगिरसश्चदेवा), हरिकर्ण–(हरिकर्ण तत्र धान्य) गालव–(गालवयज्ञातपहारीतोयकल्पा), दाल्भ्य–(दाल्भ्य योआ देवदशा), शांडिल्य–(शांडिल्य कोल्य वाल्मीक), मौनस–(मौनस भार्गव वाहव्यासांचा), गर्ग–(गर्ग गार्गेय मत्ति

कर्मा मुना), गार्गेय-(गार्गेय गर्ग शंखलिखित), वांछिल-(वांछिल यजन वर्द्धा) मौगिल-(मौगिल भागव साहित्य), भागानवि-(वत्स भार्गव च्यवन प्रवान), वाच्छिल-(ओम्म यमदग्नि), आत्तकर्ण-(वाञ्छिलच्यवनमौनिलोर्स्य), वाखिल—(वक सावकन सत्यायिका), करव-(वासल धारणीक सारेवत), मोगिल-(करा वोदास मान), वृद्धविष्णु-(मौगिलांऽगिरस वार्हस्पत्य), कौत्स-(वृद्धविष्णु यैस्युन शुद्धत्तस्य), वाल-(कौत्स आंगिरस यौवनाश्व), देवदत्त-(खिल कुशिक कौशिक), अष्टावक्र—(देवदत्त विष्णुरवते माराडव्य), कुशिक-(वाहल वेरुल करण), सम्भव-(लोहिकाक्ष वैतहव्य विष्णोर्व), कपिल-(सम्भव अनुरुक्त देवल असित), धौम्र-(कपिल श्रोदर देवराज), चन्द्रगग-(धोम कशिप अत्रिसर), कश्यप-(चन्द्रगर्ग अगिरस अत्रसुप्रभू,), अंगिरस-(कश्यपावत्स रणेकधव) भारद्वाज-(कश्यपेप कुशिक कौशिक काश्यपेय), कश्यप-(अंगिरस भरद्वाज वार्हस्पतसम्मा), शांडिल्य-(आंगिरसवार्हस्पत्य), वत्स-(काश्यप असित देवल), धनंजय-(शांडिल्य असित देवल), उपमन्यु-(भार्गव च्यवन अप्नवान), उपमन्यु-(विश्वामित्र माधुच्छंदस धनंजय) कात्यायन-(भार्गव वशिष्ठ उपमन्यु), सांकृत-(उपमन्यु वाशिष्ठ अभतवसु), गर्ग-(विश्वामित्र वाशिष्ठ किल) गौतम-(सांकृत सांख्यायन किल), पाराशर-(आंगिरस सैन्य गर्ग), कौशिक—(आंगिरस वार्हस्पत्य भारद्वाज), कौशिल्य—(पराशर वशिष्ठ सांकृत), भार्गव-(विश्वामित्र आघमर्षण कौशिक), वाशिष्ठ—(विश्वामित्र अघमर्षण माधुच्छंदस), कृष्णात्रि-(भार्गव च्यवन अप्रवान), अत्रि-(वाशिष्ठइन्द्रप्रमदाभारगासति), वत्स—(अत्रेय अर्चनानस श्यावाश्व), कौण्डियन-(भार्गवच्यवनअप्नवानयामदग्न्य और्व), कपि-(वाशिष्ठ कौण्डिण्यन मैत्रावरुण), विष्णुवधन-(आङ्गिरस अमोह वोरुद), नितुन्दन-(आङ्गिरस पौरकुत्सत्रासदस्य), वाभ्रव्य-(विश्वामित्र अवदल वाभ्रव्य), पूर्ण—(कश्यप आवत्सार नैध्रुव,) कश्यप—(आंगिरसवार्हस्पत्यभारद्वाजगौतमअत्रि), गौतम—(आंगिरसमार्य्यश्वामौद्गल), मुद्गल-(आंगिरसभार्य्यश्वमौद्गल्य), मिहरस—(कुशिककौशिककाश्य काश्यकाश्येय), सावर्ण्य-(सावर्ण्य पुलस्त्य पुलह)- मोनस-(मानस्य भार्गव वेधस), असिल—(असिलु वाशिलु कौशल),

वाशिल-(अत्रि आत्रेय), शौनक-(शौनक शौच भार्गव), चन्द्रायण (वात्स वत्स) वामदेव-(माण्धायम गौतम), माण्डव्य-(मांडव्य मांडुकेय विश्वामित्र), दाल्भ्य-(दाल्भ्य अंगिरस बार्हस्पत्य), गांगेय,-(गांगेय गर्ग सांख्यलिखित)।

सपिण्ड तथा सामनोदक और सगोत्र निर्णय।

अशौच-निर्णय।

मूल पुरुषसे सात पीढ़ी (पुरुष) पर्यन्त सपिण्ड होते हैं और आठसे १४ पुरुष पर्यन्त समानोदक तथा १५ पुरुषसे लेकर २१ पुरुष पर्यन्त सगोत्र होते हैं।

प्रथम दिन निर्णयः—रात्रिमें जनम, मरण अथवा रजोदर्शन हो, तो रात्रिका तीन विभाग करना चाहिये। यदि प्रथम और द्वितीय विभागमें ये हुए हों, तो गत दिवसका ग्रहण करना चाहिये और तृतीय भागमें हो, तो आगामी दिनका ग्रहण करना उचित है।

गर्भस्राव होनेपरः—तीन मासके अन्दर यदि गर्भस्राव हो, तो तीन दिन और चार मासके अन्दर हो, तो ४ दिन माताको अशौच रहेगा। पित्रादि सपिण्डोंको स्नानमात्र।

गर्भपात होनेपरः—पांचवें और छठें मासमें गर्भपात होनेपर पांच, दिन माताके लिये अशौच और पित्रादि सपिण्डोंके लिये तीन दिन तक जननाशौच लगेगा; मरणाशौच नहीं।

प्रसवः—सातवें महीनेमें प्रसव होनेसे १० दिन जननाशौच होगा।

मृत बालकके जन्म होनेपरः—दश दिवसतक जननाशौच होगा, मरणाशौच नहीं।

नालच्छेदनके पहिलेः—यदि नालच्छेदनके पहिले बालककी मृत्यु हो जाय, तो माताको १० दिन और पित्रादि सपिण्डोंके लिये ३ दिवस जननाशौच लगेगा, मरणाशौच नहीं।

नालच्छेदनके बादः—यदि बालककी मृत्यु हो तो पित्रादि सपिण्डोंके लिये १० दिवस तक जननाशौच होगा, मरणाशौच नहीं।

पितृगृहमें कन्याके प्रसूत होनेपरः—माता-पिताको १ अथवा तीन दिवस जननाशौच होगा।

पुत्रका अशौचः—दश दिन अनन्तर और नामकरणसे पूर्व यदि पुत्रकी मृत्यु हो, तो सपिण्डोंको स्नान, माता पिता और सापत्न्य माताको तीन दिन अशौच। बारहवें दिनके बाद छः महीनेसे पूर्व यदि मृत्यु होकर दहन हुआ हो तो सपिण्डोंको १ दिन और माता, पिता और सापत्न्य माताको ३ दिन और सात माससे तीन वर्ष-तक सपिण्डोंको १ दिन। तीन वर्षके बाद उपनयन तक पित्रादि सपिण्डोंको तीन दिन अशौच होगा। अनुपनीत और जननाशौ-चका अतिक्रान्त अशौच नहीं होगा। परन्तु औरस पुत्रकी मृत वार्त्ता दश दिनके बाद भी जब सुनायी दे, तब तीन दिनका अशौच होगा।

कन्याका अशौचः—दश दिनके बाद तीन वर्षतक मृत हो, तो सपिण्डोंको स्नान, माता पिता और सापत्न्य माताको छः मासतक १ दिन। तबसे तीन वर्षतक तीन दिन अशौच होगा। तीन वर्षके बाद विवाह तक सपिण्डोंको १ दिन और माता आदिको तीन दिवस अशौच होगा।

विवाहिता कन्याकाः—कन्याका यदि पितृगृहमें देहान्त हो तो माता पिता और सापत्न्य माताको तीन दिन, पितृव्य आदिको १ दिन और अन्य ग्राममें देहान्त हुआ, हो तो माता पिताको डेढ़ दिन और पितृव्य आदिको १ दिन अशौच होगा।

माता-पिताका—अनुपनीत पुत्र और अविवाहिता कन्याको १० दिन। अन्य किसीका उन्हें अशौच नहीं। विवाहित कन्याको १० दिनके भीतर मृत वार्त्ता ज्ञात हो तो उस दिनसे तीन दिन और १० दिनके बात ज्ञात हो तो १॥ दिन। परन्तु पुत्रको जब मृत वार्त्ता सुनायी दे, तब १० दिन तक अशौच होगा।

सापत्न्य माताकाः—विवाहिता कन्याको १० दिनके भीतर तीन दिवस, बाद १॥ दिवस। पुत्रको १० दिनके बाद त्रिरात्र अशौच होगा।

विवाहिता भगनीकाः—भ्राताके घरमें मृत्यु हो तो भ्राता और सापत्न्य भ्राताको त्रिरात्र। गृहान्तरमें मृत्यु हो तो पक्षिणी, और ग्रामा-न्तरमें १ दिन अशौच होगा।

भाईकाः—यदि बहिनके घर मृत्यु हो, तो बहिनको तीन दिन। गृहान्तरमें १ दिन अशौच होगा।

पितामह और पितृव्यकाः—पौत्री और भ्रातुष्पुत्रीको स्नानसे शुद्धि होती है।

मामाकाः—भाञ्जा और भाञ्जीको डेढ़ दिन। अपने घरमें मृत्यु हो तो तीन दिन, ग्रामान्तरमें अथवा अनुपनीत हो तो १ दिन अशौच रहेगा।

मामीकाः—भाञ्जा और भाञ्जीको डेढ़ दिन। सापत्न्य मामीका अशौच नहीं होता।

पतिकाः—१० दिन। पत्नीका भी १० दिन।

भाञ्जेकाः—उपनयन हुआ हो तो मामा और मौसीको तीन दिन, अनुपनीत हो तो डेढ़ दिन।

मातामह और मातामहीकाः—दौहित्रको तीन दिन, ग्रामान्तरमें डेढ़ दिन।

दौहित्रकाः—मातामह और मातामहीको तीन दिन, अनुपनीतका डेढ़ दिन। दौहित्रीका अशौच नहीं।

सास ससुरकाः—दामादके घर मृत्यु हो, तो दामादको त्रिरात्र, गृहान्तरमें डेढ़ दिन, ग्रामान्तरमें एक दिन अशौच होगा।

दामादकाः—ससुरके गृहमें मृत्यु हो तो त्रिरात्र, अन्यत्र स्नानसे शुद्धि।

सालेकाः—उपनीत हो तो १ दिन, अनुपनीत हो तो स्नानसे शुद्धि।

सालीकाः—घरमें मृत्यु हो तो १ दिन, ग्रामान्तरमें स्नानसे शुद्धि।

मौसीकाः—घरमें मृत्यु हो तो तीन दिन, अन्यत्र डेढ़ दिन।

फूफीकाः—घरमें मृत्यु हो तो तीन दिन, अन्यत्र स्नानसे शुद्धि।

नोट—अशौचमें यदि दूसरा अशौच आ जाय, तो १ अशौचके साथ दूसरा अशौच भी समाप्त हो जाता है।

नोट—८० या १२० कोस दूरके स्थानको देशान्तर कहते हैं। साग, पात, लकड़ी, चारा, लवण, दूध, अनाज, मृगचर्म आदि पदार्थ अपवित्र नहीं होते।

फुफेरे, ममेरे, मौसेरे भाईः—अपने घरमें मृत हों तो त्रिरात्र, अन्यत्र डेढ़ दिन। अनुपनीत हो तो १ दिन।

फुफेरी, ममेरी, मौसेरी बहिनः—विवाहिता मृत हो तो १ दिन, अविवाहिता हो तो स्नानमात्र।

दत्तकका:—परगोत्रोत्पन्न दत्तकके जनक और पालक माता पिताओंको तीन दिन, सपिण्डोंको १ दिन।

गुरुका:—त्रिरात्र, ग्रामान्तरमें पक्षिणी।

यतीका:—सब सपिण्डोंको स्नान।

सपिण्डोंका:—१० दिवस।

समानोदकोंका:—३ दिन।

सगोत्रोंका:—१ दिन या स्नान।

संध्याविधिः।

—:॰:—

हाथ पाँव धो, आचमन कर संकल्प करे। यथा—

श्रीविष्णुः विष्णुर्वा तत्सदद्य अनाद्यनन्तकालान्तर्गते ब्रह्मणो द्वितीय परार्द्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलि प्रथम-चरणे अनन्तकोटिब्रह्माण्डाभ्यन्तरे अस्मिन् ब्रह्माण्डे जम्बुद्वीपे भरतखण्डे आर्य्यावर्त्तैकदेशान्तर्गते पुण्यक्षेत्रे अमुकदेशे अमुककलेर्गताब्दे अमुकऋतौ अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुक गोत्रोत्पन्नः अमुकनामाहं ममोपात्त दुरितक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं प्रातः (मध्याह्न अथवा सायं) सन्ध्योपासनकर्म करिष्ये।

इसके बाद निम्नलिखित मन्त्रसे मार्जन स्नान करे। यथा—

ॐ योवः शिवतमोरसस्तस्य भाजयतेहनः। उशतीरिव मातरः। तस्मा अरंगमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपो जनयथा च नः। ऋतञ्च सत्यञ्चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत। ततो रात्र्यजायत ततः समुद्रोऽर्णवः। समुद्रादर्णवादधि सम्वत्सरोऽजायत अहोरा-

त्राणि विदधद् विश्वस्य मिषतो वशी। सूर्याचन्द्रमसौधाता यथा-पूर्वमकल्पयत्। दिवञ्च पृथिवीञ्चान्तरीक्षमथोस्वः।
अनन्तर प्राणायाम करे।

ॐ कारस्य ब्रह्मा ऋषिर्गायत्री छन्दोऽग्निर्देवता शुक्लोवर्णः सर्व कर्मारम्भे विनियोगः। सप्तव्याहृतीनां प्रजापतिर्ऋषिर्गायत्र्युष्णि-गनुष्टुप्बृहतीपङ्क्तिः त्रिष्टुप् जगत्यश्छन्दांसि, अग्नि-वायुः सूर्यो-वरुणो बृहस्पतीन्द्रविश्वेदेवा देवताः प्राणायामे विनियोगः। ॐ गायत्र्या विश्वामित्रऋषिर्गायत्रीछन्दः सविता देवता प्राणायामे विनियोगः।

इसके बाद अपने चारों ओर जलधारा देकर, उस धाराको अग्निमय दीवार समझता हुआ दाहिने हाथके अंगूठेसे दाहिने नथुनेको बन्द करके बायें नथुनेसे वायु खींचता हुआ तथा नाभिदे-शमें रक्तवर्ण चतुर्मुख द्विभुज अक्षसूत्र कमण्डलुकर हंसासनारूढ़ ब्रह्माजीका ध्यान करता हुआ निम्नमन्त्र जपता हुआ रहे।

ॐ भूः, ॐ भुवः, ॐ स्वः, ॐ महः, ॐ जनः, ॐ तपः, ॐ सत्यं, ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्। ॐ आपो ज्योतिरसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरों।

उपरान्त पहिलेकी तरह दाहिने तथा बायें दोनों नथुनोंको अना-मिका और कनिष्ठाके द्वारा बन्द करके श्वासको रोककर कुम्भक करता हुआ अर्थात् वायुको रोके हुए तथा हृदयमें नीलोत्पलद-लप्रभ चतुर्भुज शङ्खचक्रगदापद्महस्त गरुड़ारूढ़ केशवका ध्यान करता हुआ

ॐ भूः, ॐः, भुवः, ॐ स्वः, ॐ महः, ॐ जनः, ॐ तपः, ॐ सत्यं। ॐ तत् सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोद-यात्। ॐ आपो ज्योतिरसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरों।

यह मन्त्र जपता रहे।

इसके बाद दाहिने नथुनेसे अंगुठेको धीरे धीरे हटाकर वायु-त्यागरूप रेचक करता हुआ ललाटमें—श्वेत द्विभुज त्रिशूल डमरु-कर अर्द्धचन्द्रविभूषित त्रिनेत्र वृषभारूढ़ शम्भुका ध्यान करता हुआ निम्नमन्त्रको जपता रहे।

ॐ भूः, ॐ भुवः, ॐ स्वः, ॐ महः, ॐ जनः, ॐ तपः, ॐ सत्यं।

ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ।
ॐ आपो ज्योतिरसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरों ।

आचमन ।

दाहिने हाथमें जल लेकर प्रातः-सन्ध्यामें इस मन्त्रको पढ़ना चाहिये । मन्त्रः—

सूर्य्यश्चेति मन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः प्रकृतिश्छन्दः आपो देवता आचमने विनियोगः । ॐसूर्य्यश्च मा मन्युश्च मन्युपतयश्च । मन्युकृतेभ्यः पापेभ्यो रक्षन्तां । यद्राऽत्र्या पापमकारिषं मनसा वाचा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण शिश्ना रात्रिस्तदवलुम्पतु, यत् किञ्च दुरितं मयि । इदमहमाममृतयोनौ सूर्य्ये ज्योतिषि परमात्मनि जुहोमि स्वाहा ।

मध्याह्न सन्ध्यामें इस मन्त्रको पढ़ कर आचमन करना चाहिये—

आपः पुनन्त्विति मन्त्रस्य विष्णुऋषिरनुष्टुप्छन्दः आपो देवता आचमने विनियोगः । ॐ आपः पुनन्तु पृथ्वीं पृथ्वीपूता पुनातु मां पुनन्तु ब्रह्मणस्पतिर्ब्रह्मपूता पुनातु मां, यदुच्छिष्टमभोज्यञ्च यद्वा दुश्चरितं मम । सर्वं पुनातु मामापोऽसतांञ्च प्रति ग्रहं स्वाहा ।

सायं सन्ध्यामें इस मन्त्रको पढ़कर आचमन करना होगा—

अग्निश्चेति मन्त्रस्य रुद्रऋषिः प्रकृतिश्छन्दः आपो देवता आचमने विनियोगः । ॐ अग्निश्च मा मन्युश्च मन्युपतयश्च मन्युकृतेभ्यः पापेभ्यो रक्षन्तां यदह्ना पापमकारिषं मनसा वाचा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण शिश्ना अहस्तदवलुम्पतु यत्किञ्चदुरितं मयि, इदमह माममृतयोनौ सत्ये ज्योतिषि जुहोमि स्वाहा ।

इसके बाद फिर मार्जन करे । पुनर्म्मार्जन यथा—

आपोहिष्ठेति ऋक्त्रयस्य सिन्धुद्वीपऋषिर्गायत्रीच्छन्दः आपो देवता मार्जने विनियोगः । ॐ आपो हिष्ठा मयोभुवस्तान ऊर्ज्जे दधातन महेरणाय चक्षसे, ॐ योवः शिवतमो रसस्तस्य भाजयते हनः । उशतीरिव मातरः । ॐ तस्मा अरंगमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ आपोजनयथा चनः ।

इस मंत्रसे सिरमें जल छिड़कना चाहिये । इसके बाद अघमर्षण करे ।

अघमर्षण।

एक चुल्लू जल नासिकाके अग्र भागमें लगाकर पाठ करे—

ऋतमित्यस्याघमर्षणऋषिरनुष्टुप्छन्दो भाववृतो देवता अश्वमेधावभृते विनियोगः। ॐ ऋतञ्च सत्यञ्चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत ततो रात्र्यजायत, ततः समुद्रोऽर्णवः, समुद्रादर्णवादधि संवत्सरोऽजायत। अहोरात्राणि विदधद् विश्वस्य मिषतोवशी। ॐ सूर्य्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत् दिवञ्च पृथिवीञ्चान्तरिक्षमथोस्वः।

इस मन्त्रके द्वारा अघमर्षण करे। उसकी विधि यह है कि, दक्षिण करमें जल लेकर प्राणायामकी रीतिपर दक्षिण नासिका और फिर वाम नासिकासे उस जलका घ्राण करे, तदनन्तर कुंभक करते हुये मनमें अघमर्षण मन्त्रका पाठ करके तत्पश्चात् दक्षिण नासिकासे देहस्थित पापसमूहको निकालते हुए जलमें डाले। तदनन्तर उस जलको बायीं तरफ पृथ्वीपर बलपूर्वक डाल देवै।

सूर्य्योपस्थान।

प्रातःसन्ध्यामें एक पैरसे खड़े होकर, सायंसन्ध्यामें कृताञ्जलि हो और मध्याह्न संध्यामें ऊर्द्ध्वबाहु होकर—

प्रस्कण्व-ऋषि-गायत्रीछन्दः सूर्य्योदेवता अग्निष्टोमे सूर्य्योपस्थाने विनियोगः।

ॐ उदुत्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः। दृशे विश्वाय सूर्य्यम्॥

चित्रमित्यस्य कौत्स ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः सूर्य्योदेवता सूर्य्योपस्थाने विनियोगः। ॐ चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः। आप्रा द्यावा पृथिवीञ्चान्तरिक्षं सूर्य्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च।

ॐ नमो ब्रह्मणे, नमो ब्राह्मणेभ्यो, नमः आचार्य्येभ्यो, नमः ऋषिभ्यो, नमो देवेभ्यो, नमो वेदेभ्यो, नमो वायवे च मृत्यवे च विष्णवे च नमो वैश्रवणाय चोपजायत॥

इसके बाद न्यास करना चाहिये—

ॐ (कहकर हृदय) ॐ भूः (कहकर सिर) ॐ भुवः (कहकर शिखा) ॐ स्वः (कहकर समस्त शरीर) और ॐ तत् सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

कहकर दक्षिण करतलसे वाम करतल तथा, दक्षिण करपृष्ठसे वाम करपृष्ठको स्पर्श करना चाहिये ।

गायत्र्या विश्वामित्र ऋषिर्गायत्रीच्छन्दः सविता देवता जपोपनयने विनियोगः ।

(प्रातःकालमें गायत्री-ध्यान) ।

ॐ कुमारीमृग्वेदयुतां ब्रह्मरूपां विचिन्तयेत् ।
हंसस्थितां कुशहस्तां सूर्यमण्डल-संस्थिताम् ॥

(मध्याह्न कालमें गायत्रीका ध्यान) ।

ॐ मध्याह्ने विष्णुरूपाञ्च तार्क्ष्यस्थां पीतवाससाम् ।
युवतीञ्च यजुर्वेदां सूर्यमण्डल संस्थिताम् ॥

(सायंकालमें गायत्रीका ध्यान) ।

ॐ सायाह्ने शिवरूपाञ्च वृद्धां वृषभवाहिनीम् ।
सूर्यमण्डलमध्यस्थां सामवेदसमायुताम् ॥

गायत्री-जप ।

प्रातःकाल हृदयके समीप हाथको सीधा करके, मध्याह्न समय हृदयकी ओर तिरछा करके और सायंकाल अधोमुख करके वैदिक गायत्रीका जप करे । जप करनेके समय दोनों हाथोंको वस्त्रसे छिपाकर अंगूठेसे जनेऊको पकड़ लेना चाहिये ।

अनामिकाका मध्य और मूल पर्व (गांठ) कनिष्ठाका मूल, मध्य और अग्रपर्व, अनामिकाका तथा मध्यमाका अग्रपर्व, तर्जनीका अग्र, मध्य और मूलपर्व यथाक्रम अंगुठेके अग्र पर्वसे स्पर्श कर मन्त्रका उच्चारण करनेसे दश वार जप होता है । गायत्री मन्त्र—

ॐ भूर्भुवःस्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियोयोनः प्रचोदयात् । *

गायत्रीका जप कमसे कम १०८ वार अवश्य करना चाहिये ।

---

* गायत्रीका अर्थः—जो स्वर्ग मर्त्य और आकाशस्वरूप स्थावर जंगमात्मक त्रिभुवन-स्वरूप, सर्वान्तर्य्यामी, विज्ञानज्योतिर्म्मय, सृष्टि, स्थिति और संहार करने वाले हैं, और जो सर्व प्राणियोंके पूजनयोग्य पाप नाशकारी सूर्यमण्डल-मध्यवर्त्ति तेजके प्राणस्वरूप हैं, तथा जो मेरी बुद्धिको धर्म्म, अर्थ, काम और मोक्षके लिये प्रेरणा किया करते हैं, उन परमात्मा जगदीश्वरकी मैं चिन्ता करता हूं ।

इससे अधिक जितना हो उतना ही अच्छा है। असमर्थ होनेपर १० वार करना चाहिये। इससे कम न हो। †

किसी कारण सम्पूर्ण सन्ध्या करनेमें असमर्थ हो, तो गायत्री देवीका हृदयमें ध्यान करता हुआ १०८ वार गायत्री-जप करले। उसीसे संध्याका फल हो सकता है। इसके बाद—

ॐ ब्रह्मणे नमः, ॐ रूद्राय नमः, ॐ विष्णवे नमः, ॐ वरुणायनमः।

प्रत्येक मन्त्रसे एक एक अञ्जलि जल देना होगा।

सूर्यार्घ्य।

अर्घ्य द्रव्य अथवा जल लेकर—

ॐ नमो विवस्वते ब्रह्मन् भास्वते विष्णुतेजसे।
जगत्सवित्रे शुचये सवित्रे कर्मदायिने॥
इदमर्घ्यं ॐ श्रीसूर्य्याय नमः।
ॐ जवाकुसुमसङ्काशं काश्यपेयं महाद्युतिम्।
ध्वान्तारिं सर्व-पापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्।

इस मन्त्रसे सूर्य्यभगवान्को प्रणाम करे।

ॐ यदक्षरं परिभ्रष्टं मात्राहीनञ्च यद् भवेत्।
पूर्णं भवतु तत्सर्वं त्वत्प्रसादात् सुरेश्वरि।

इस मन्त्रसे गायत्री देवीको एक अञ्जलि जल देकर क्षमा प्रार्थना करे।

इसी तरह मध्याह्न और सायं संध्या भी करनी चाहिये। मध्याह्न और सायं सन्ध्यामें आचमन और गायत्रीका ध्यान पृथक है। उसको पहिले लिख चुके हैं। और सब प्रातः सन्ध्याके अनुसार ही करना चाहिये। * शान्तिः शान्तिः शान्तिः।

---

† जपविधिका विशेष विवरण 'साधन सोपान' में देखो।

* सन्ध्या वस्तुतः ब्रह्मोपासनाकी पद्धति है। इसमें सगुण ब्रह्मके ब्रह्मा, विष्णु और रुद्र, इन तीन देवताओंके रूपोंका ध्यान तथा गायत्री जप प्रमाण है। इस युगमें सन्ध्या नित्यकर्ममें ग्रहण की गई है। कारण, इस युगमें निर्गुण ब्रह्मकी उपासनाका अधिकार सबको नहीं है। सन्ध्या सबको करना उचित है। स्त्री और शूद्रके लिये वैदिक-सन्ध्या-निषेध है। उनके लिये तान्त्रिक सन्ध्याकी विधि विहित है।

देवपूजन विधि ।

—:*:—

पूर्वाह्न ही देवपूजनका प्रशस्त काल है। इसलिये प्रातःसन्ध्याके बाद ही देवपूजन करना चाहिये। यदि च शास्त्रमें अनेक देव-देवियोंका पूजन मिलता है, परन्तु उनमेंसे पांच ही प्रधान हैं। क्योंकि यह सृष्टि पञ्च भूतात्मक होनेके कारण प्रत्येक जीवमें भी एक एक तत्वका प्राधान्य रहता है। पृथ्वी तत्वके अधिपति शिव, जलके गणपति, अग्निके सूर्य्य, वायुकी अधिष्ठात्री शक्ति और आकाशके अधिपति विष्णु हैं। अतः जिस मनुष्यमें जिस तत्वका प्राधान्य होता है, उसको उसी तत्वके अधिपतिकी उपासना श्रीगुरुदेव बताते हैं। इसलिये केवल पञ्चायतन पद्धति ही लिखी गई है और ये पांचों रूप एक सगुण ब्रह्मके ही हैं, ऐसा समझना उचित है।

पञ्चायतन ।

गणपति, शिव, विष्णु, देवी और सूर्य्य, ये पञ्चदेवता हैं। इनको पञ्चायतन कहा जाता है। इन पञ्चदेवताओंमेंसे जिसकी पूजा होगी, वही प्रधान समझा जायगा। इस क्रमके अनुसार गणेशपञ्चायतन, शिवपंचायतन, विष्णुपंचायतन, देवीपंचायतन और सूर्य्यपंचायतन, ये पांचों पंच पंचायतन नामसे प्रसिद्ध हैं।

गणेशपंचायतनमें—बीचमें गणेश, ईशानकोणमें विष्णु, अग्निकोणमें महादेव, नैर्ऋतकोणमें सूर्य्य और वायुकोणमें देवी होंगी।

शिवपञ्चायतनमें—बीचमें शङ्कर, ईशानमें विष्णु, अग्निमें सूर्य्य, नैर्ऋतमें गणेश और वायुमें भगवती होंगी।

विष्णुपञ्चायतनमें—बीचमें विष्णु, ईशानमें शंकर, अग्निमें गणेश, नैर्ऋतमें सूर्य्य और वायुकोणमें देवी रहेंगी।

देवीपंचायतनमें—बीचमें देवी, ईशानमें विष्णु, अग्निकोणमें महादेव, नैर्ऋतमें गणपति और वायुकोणमें सूर्य्य होंगे।

सूर्य्यपंचायतनमें—बीचमें सूर्य्य, ईशानमें महादेव, अग्निमें गणपति, नैर्ऋतमें विष्णु और वायुकोणमें देवीको रखकर पूजा करनी चाहिये।

पूजाका आधार।

प्रतिष्ठित मूर्ति, घट, पट, अग्नि, शालग्राम शिला, पुस्तक, शिवलिंग और जल येही सब वस्तुएं पूजाकी आधार हैं। जल, शालग्राम और वाणलिंगमें सभी देवताओंकी पूजा हो सकती है। उसमें किसी देवताका आवाहन या विसर्जन करनेकी जरूरत नहीं होती है। सनातनधर्मके अनुसार मूर्त्तिघटपटादि जड़ पदार्थकी नहीं है। जो लोग हिन्दुओंको मूर्त्तिपूजक कहते हैं, वे अज्ञानी हैं। सच्चिदानन्दमय निराकार सर्वव्यापक परमात्माका सनातनधर्मावलम्बी मूर्त्ति, चित्र, अग्नि, जलादि सोलह प्रकारके दिव्यदेशोंमें पीठ बनाकर उस पीठके अवलम्बनसे उस परमात्माकी पूजा करते हैं। ऐसी हर समय साधककी धारणा रहनी उचित है।

पूजनप्रकार।

(सामान्यार्घ्य)

"अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोपि वा।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः" ॥

इस मन्त्रको पढ़ करके स्थानशुद्धि करें। इसके बाद सामान्यार्घ्य स्थापन करे। भूमिपर त्रिकोणमण्डल करके उसके ऊपर 'ॐ आधार शक्तये नमः' कहकर गन्ध पुष्प देवे। 'फट्' मन्त्रसे ताम्रपात्र या शङ्खको धोकर मण्डलके ऊपर रक्खे और 'नमः' मन्त्रसे ताम्र पात्र या शङ्ख जलपूर्ण करे। उसके अग्रभागमें अर्घ्य अर्थात् बिल्वपत्र, दूर्वा, चन्दन, अक्षत, पुष्पादि सजावे।

(जलशुद्धि)

ॐ गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु ॥

अंकुश मुद्रासे जलको स्पर्श करके इस मन्त्रको पढ़े और जलमें गन्ध पुष्पादि देवे।

(आसनशुद्धि)

ॐ ह्रीं आधारशक्तये कमलासनाय नमः।

इस मंत्रसे आसनमें गन्ध पुष्पादि देकर दाहिने हाथसे आसनको पकड़कर—

आसनमन्त्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः सुतलं छन्दः कूर्म्मोदेवता आसनोपवेशने विनियोगः ।

ॐ पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता ।
त्वञ्च धारय मां नित्यं पवित्रं कुरु चासनम् ।

इस मन्त्रको पढ़कर कृताञ्जलि हो, निम्नमन्त्र पाठ करे—

ॐ वामे गुरुभ्यो नमः, दक्षिणे गणपतये नमः, पश्चात् क्षेत्रपालाय नमः, ऊर्द्ध्वं ब्रह्मणे नमः, अधो अनन्ताय नमः, सम्मुखे पूजनीय देवताभ्यो नमः ।

(गन्धादिकी अर्चना)

वं एतेभ्यो गन्धादिभ्यो नमः ।

इस मन्त्रसे पूजाके सारे द्रव्योंमें तीन दफे जल छिड़के ।

एताभ्यो गन्धादिभ्यो नमः, एतदधिपतये विष्णवे नमः । एतत् सम्प्रदानेभ्यो नारायणादिभ्यो नमः ।

(नारायणादिकी अर्चना)

एते गन्धपुष्पे ॐ नारायणाय नमः, एते गन्धपुष्पे श्रीगुरवे नमः, एते गन्धपुष्पे ॐ आदित्यादिभ्यो नवग्रहेभ्यो नमः, एते गन्धपुष्पे ॐ ब्राह्मणेभ्यो नमः ।

(संकल्प)

* श्रीविष्णुर्नमोऽद्य अमुके मासि अमुके पक्षे अमुक तिथौ अमुक गोत्रः अमुक देवशर्मा श्रीविष्णुप्रीतिकामः (स्वेष्टदेवताप्रीतिकामो वा) यथामिलितोपचारद्रव्यैः गणपत्यादि नाना देवतापूजापूर्वक अमुकपञ्चायतनदेवतापूजनकर्माहं करिष्ये ।

(गणेशादि पञ्चदेवताकी पूजा)

एते गन्धपुष्पे ॐ गणेशादि पञ्चायतनदेवताभ्यो नमः, एतत् पुष्पं,......एष धूपः......एष दीपः......एतत् नैवेद्यं, ॐ गणेशादि पञ्चायतनदेवताभ्यो नमः ।

(सूर्यार्घ्य)

अर्घ्य लेकर—

एहि सूर्य्य सहस्रांशो तेजोराशे जगत्पते ।
अनुकम्पय मां भक्तं गृहाणार्घ्यं दिवाकर ॥

---

* विस्तृत संकल्प पहले दिया गया है, उसे देखें ।

नमो विवस्वते ब्रह्मन् भास्वते विष्णुतेजसे।
जगत्सवित्रे शुचये सवित्रे कर्मदायिने॥
इदमर्घ्यं ॐ श्रीसूर्य्याय नमः।

इसके बाद—

आदित्यादि नवग्रहेभ्यो नमः। इन्द्रादि दशदिक्पालेभ्यो नमः। सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः। सर्वाभ्यो देवीभ्योनमः।

उपरोक्त मन्त्रोंसे पूर्ववत् पंचोपचार पूजा करे।

समर्थ होनेसे गणेशादि प्रत्येक देवताके ध्यान और प्रणामादि पाठ करके पूजा करनी चाहिये। नहीं तो पूर्वोक्त रीतिसे पूजा करके मुख्य देवताका ध्यानादि पाठ करके पूजा करे।

(गणपतिध्यान)

खर्वं स्थूलतनुं गजेन्द्रवदनं लम्बोदरं सुन्दरम्।
प्रस्यन्दन्मदगन्धलुब्धमधुप व्यालोलगण्डस्थलम्॥
दन्ताघातविदारितारिरुधिरैः सिन्दूरशोभाकरम्।
वन्दे शैलसुतासुतं गणपतिं सिद्धिप्रदं कामदम्॥
पूजामन्त्र—गणेशाय नमः। वीजमन्त्र—गं।
एतत् पाद्यं गं गणेशाय नमः॥

इस तरहसे पूजा करनी चाहिये।

(प्रणामन्त्र)

देवेन्द्रमौलिमन्दारमकरन्दकणारुणाः।
विघ्नं हरन्तु हेरम्बचरणाम्बुजरेणवः॥

(सूर्य्यका ध्यान)

रक्ताम्बुजासनमशेषगुणैकसिन्धुं,
भानुं समस्त जगतामधिपं भजामि।
पद्मद्वयाभयवरान् दधतं कराब्जैः,
माणिक्यमौलिमरुणांगरुचिं त्रिनेत्रम्॥

पूजामन्त्र—"सूर्याय नमः" वीजमन्त्र—"ह्रीं" मूलमन्त्र, "ह्रीं हंसः।"

(प्रणाममन्त्र)

जवाकुसुमसङ्काशं काश्यपेयं महाद्युतिम्।
ध्वान्तारिं सर्वं पापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्॥

(विष्णुध्यान)

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं,
विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम्।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं,
वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथं॥

पूजामन्त्र—विष्णवे नमः। बीजमन्त्र—ॐ।

(प्रणाममन्त्र)

नमो ब्रह्मण्यदेवाय गोब्राह्मणहिताय च।
जगद्धिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमोनमः॥

(शिवध्यान)

ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं, चारुचन्द्रावतंसं,
रत्नाकल्पोज्ज्वलाङ्गं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम्।
पद्मासीनं समन्तात् स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानं,
विश्वाद्यं विश्ववन्द्यं निखिलभयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम्॥

पूजामन्त्र—शिवायनमः। बीजमन्त्र ॐ।

(प्रणाममन्त्र)

नमः शिवाय शान्ताय कारण-त्रय-हेतवे।
निवेदयामि चात्मानं त्वं गतिः परमेश्वर॥

(देवीध्यान)

कालाभ्राभां कटाक्षैररिकुलभयदां मौलिबद्धेन्दुरेखां,
शंखं चक्रं कृपाणं त्रिशिखमपि करैरुद्वहन्तीं त्रिनेत्राम्।
सिंहस्कन्धाधिरूढां त्रिभुवनमखिलं तेजसा पूरयन्तीं,
ध्यायेद्दुर्गां जयाख्यां त्रिदशपरिवृतां सेवितां सिद्धिकामैः॥

पूजामन्त्र—चण्डिकायै नमः। बीजमन्त्र ह्रीं।

(प्रणाममन्त्र)

सर्वमङ्गल-माङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तुते॥

इस तरह सूक्ष्मरूपसे या विशेषरूपसे पञ्च देवताओंकी पूजा करके मुख्य देवताकी पूजा करनी चाहिये। कूर्ममुद्रासे पुष्प लेकर ध्यान मन्त्र पढ़ते हुये हृदयमें उस देवताका ध्यान करे और उस पुष्पको

अपने मस्तकमें लगाकर दोनों आंखें बन्द करके मानसपूजा करे। * फिर ध्यान करके षोडशोपचारसे ,दशोपचारसे अथवा पञ्चोपचा-रसे † पूजा करे। मन्त्र यथा—

रम्यं सुशोभनं दिव्यं सर्वसौख्यकरं शुभम्।
आसनञ्च मया दत्तं गृहाण परमेश्वर॥ ‡
इदमासनं समर्पयामि।

भूर्भुवःस्वः अमुक देव वा अमुक देवि स्वागतं सुस्वागतं।

ॐ उष्णोदकं निर्मलञ्च सर्वसौगन्ध्यसंयुतम्।
पादप्रक्षालनार्थाय दत्तं ते प्रतिगृह्यताम्।
इदं पाद्यं समर्पयामि।
ॐ अर्घ्यं गृहाण देवेश गन्धपुष्पाक्षतैः सह।
करुणाकर मे देव गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तुते॥
इदमर्घ्यं समर्पयामि।
सर्वतीर्थसमायुक्तं सुगन्धिं निर्मलं जलम्।
आचम्यतां मया दत्तं गृहीत्वा परमेश्वर॥
इदमाचमनीयं समर्पयामि।
ॐ मधुपर्कं महादेव ब्रह्माद्यैः परिकल्पितम्।
मया निवेदितं भक्त्या गृहाण परमेश्वर॥
ॐ मधुपर्कं स्वधा, मधुपर्कं समर्पयामि।
ॐ पुनराचमनीयं समर्पयामि। ॐ सर्वतीर्थसमायुक्तं।

इत्यादि मन्त्र पाठ करे।

---

* मानसपूजा साधनसोपानमें देखो।

† षोड़शोपचार—आसन (१) स्वागत (२) पाद्य (३) अर्घ्य (४) आचमनीय (५) मधुपर्क (६) स्नान (७) वस्त्र (८) भूषण (९) चन्दन (१०) पुष्प (११) धूप (१२) दीप (१३) अंजन (१४) नैवेद्य (१५) आचमनीय (१६) प्रदक्षिण।

(दशोपचार)

पाद्य (प्रक्षालनार्थ जल) अर्घ्य (गन्ध, पुष्प, दूर्वा, अक्षत, जल) आचमनीय (जल) मधुपर्क, पुनराचमनीय, गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य।

(पञ्चोपचार)

गन्ध, पुष्प, धूप, दीप और नैवेद्य।

‡ देवी होनेसे परमेश्वरके स्थानपर परमेश्वरि कहना होगा।

ॐ गंगा सरस्वती-रेवा-पयोष्णी–नर्मदा–जलैः ।
स्नापितोऽसि मया देव तथा शान्ति कुरुष्व मे ॥
इदं स्नानीयं समर्पयामि ।
बहुतन्तुसमायुक्तं पट्टसूत्रादिनिर्मितम् ।
वसनं देव सूक्ष्मञ्च गृहाण परमेश्वर ॥
इदं वस्त्रं समर्पयामि ।
दिव्यरत्नसमायुक्ता वह्नि-भानु–समप्रभाः ।
गात्राणि शोभयिष्यन्ति अलङ्काराः सुरेश्वर ॥
आभरणं समर्पयामि ।
शरीरं ते न जानामि चेष्टां नैवच नैवच ।
मया निवेदितान् गन्धान् प्रतिगृह्य विलिप्यताम् ॥
गन्धं समर्पयामि ।
पुष्पं मनोहरं दिव्यं सुगन्धं देवनिर्मितम् ॥
हृद्यमद्भुतमाघ्रेयं देवदत्तं प्रगृह्यताम् ।
पुष्प समर्पयामि ।
ॐ वनस्पतिरसो दिव्यो गन्धाढ्यः सुमनोहरः ॥
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ॥
धूपं समर्पयामि ।
ॐ अग्निर्ज्योतिरविर्ज्योतिश्चन्द्रज्योतिस्तथैव च ।
ज्योतिषामुत्तमो देव दीपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ॥
दीपं समर्पयामि ।
अञ्जनं परमं रम्यं नेत्रयोर्भूषणं महत् ।
गृहाण वरदो देव प्रसीद परमेश्वर ॥
अंजनं समर्पयामि ।
शर्कराखण्डखाद्यञ्च मधुरं स्वादुचोत्तमम् ।
उपहारसमायुक्तं नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम् ॥

नैवेद्यको गायत्री मन्त्रसे शुद्ध करके बीचमें पुष्प डालकर धेनु-मुद्रा* करे। और—

* दोनों हाथ जोड़कर वाम हाथकी अंगुलियोंके बीचमें दाहिने हाथके अंगुलियोंको घुसाकर अर्थात् गुफा मारकर दाहिनी तर्जनीको वाम मध्यमामें, वाम तर्जनीको दक्षिण मध्यमामें, वाम कनिष्ठाको दक्षिण अनामिकामें और दक्षिण कनिष्ठाको वाम अनामिकाके साथ युक्त करनेसे धेनुमुद्रा होती है ।

ॐ प्राणाय स्वाहा, ॐ अपानाय स्वाहा, ॐ व्यानाय स्वाहा, ॐ उदानाय स्वाहा ॐ समानाय स्वाहा, ॐ ब्रह्मणे स्वाहा । ॐ नैवेद्यं समर्पयामि, हस्तप्रक्षालनं समर्पयामि, मुखप्रक्षालनं समर्पयामि, आचमनीयं समर्पयामि, ताम्बूलं समर्पयामि ।

(कर्पूरकी आरती)

ॐ कदलीगर्भसम्भूतं हेमबीजं विभावसोः ।
आरार्त्तिक्यमहं कुर्वे पश्य मे वरदो भव ॥

कर्पूरार्त्तिक करे । फिर प्रदक्षिणा करे ।

यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च
तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिणपदे-पदे ॥

(पुष्पाञ्जलि)

नानासुगन्धपुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च ।
पुष्पाञ्जलि मया दत्तो गृहाण परमेश्वर ।

तीन वार देनी चाहिये ।

इसके बाद यथाशक्ति पूजित देवताका मूलमन्त्र जप करे और स्तोत्रादि पाठ करके प्रणाममन्त्रसे प्रणाम करे । उपरान्त बद्धाञ्जलि हो, निम्न स्तुति करे—

ॐ मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं जनार्दन ।
यत्पूजितं मयादेव परिपूर्णं तदस्तु मे ॥

फिर हाथमें जल लेकर अर्पण करे ।

अनेनावाहनादि षोड़शोपचारैर्यथामिलितोपचारद्रव्यैः कृतेन पूजनाख्यकर्मणा श्रीअमुकपञ्चायतनदेवताः प्रीयन्ताम् ।

ॐ तत् सत् ब्रह्मार्पणमस्तु ।

आयुर्वेदखण्ड ।

[सम्पादक—आयुर्वेदाचार्य श्रीमान् पण्डित बद्रीनाथजी वैद्यराज, मैनेजिंग एजेण्ट "वैद्यामृतवर्क्स लिमिटेड"—काशी ।]

ऋतुचर्या ।

—:※:—

वर्षामें स्वभावतः देहमें वायुका प्राबल्य होता है, अतः वात-शांत्यर्थ मधुर अम्ल लवण रस अधिक प्रमाणमें सेवनीय हैं। वर्षामें देहमें क्लेदका भाग अधिक होनेसे उसके शांत्यर्थ कटु तिक्त कषाय सेवनीय हैं। स्वेदन, अनेक प्रकारकी भाफ लेना, देह मलना, दही, जांगल पशु-पक्षियोंका उष्ण मांस, गेहूँ, चावल, उर्दी, कूपका जल, पकाया अथा कोई भी जल सेवनीय है। पूर्वीहवा वृष्टि घाम ठण्ड श्रम नदीकिनारा दिनका सूतना रूक्षपदार्थ और नित्य मैथुन त्याज्य है।

शरदमें घी मधुर कषाय तिक्तरस शीतल लघु पदार्थ दुग्ध साफ चीनी ऊख निमक जांगल मांसरस थोड़ी मात्रामें गोधूम जौ मूंग पुराना चावल नदीका जल तथा दिनमें सूर्यतापतप्त रात्रिमें चंद्रकिरणसे शीतल अंशूदक पीना, चंद्रमा चंदन चांदनी रात सुगंधि पुष्पोंकी माला स्वच्छ वस्त्र मित्रोंके साथ बैठना मधुर भाषण सरोवरमें जलक्रीडा विरेचन जुलाब बलवानोंको फस्त खुलाना आदि योग्य है। शरदमें स्वभावतः पित्तकोप होता है, तच्छांत्यर्थ पूर्वोक्त आहार विहार सेवनीय है। दही व्यायाम अम्ल कटु उष्ण तीक्ष्ण पदार्थ दिनमें सूतना ओस घाममें सेवन त्याज्य है। शरदऋतुमें ऊख चावल मूंग सरोवरका जल पकाया दूध सायंकालमें चन्द्र किरण सेवनीय हैं।

हेमंतमें प्रातः जल्दी भोजन अम्ल मधुर लवण रस तैलाभ्यंग श्रम भोजनमें गेहूं मिश्री चीनी गुड आदि, चावल उर्दी मांस पीठीके पदार्थ नया अन्न तिल हरप्रकारसे कस्तूरी केशर अगर स्नान पानादिमें गर्मजल पवित्रता स्निग्धता [स्त्री संभोगादि सुख, भारी और गर्म वस्त्र सेवन करना उचित है।

शिशिर ऋतुमें शैत्य अधिक और आदानकालजन्य रूक्षताकी अधिकतासे वातका कोप होता है। अतः सामान्य हेमंत विधिका सेवन करना और त्याज्यका त्याग करना उचित है।

वसंतमें कफका कोप स्वभावतः होनेसे वमन करना नस्य लेना शहदके साथ हरें चाटना कसरत करना उवटन लगाना कफघ्न शहद पीपल आदिका वल लेना जांगल मांस सिकचेमें पकाया खाना गेहूं चावल अनेक प्रकारके मूंग जौ साठी भोजन करना चन्दन केशर अगरका लेप रूक्ष कटु उष्ण भोजन करना उचित है।

मधुर रस अम्ल दही स्निग्धपदार्थ दिनका सूतना दुर्जर पदार्थ रातमें ओस वसंतमें त्याज्य हैं।

ग्रीष्ममें पित्त कोप होता है, उसकी शांतिके वास्ते मधुर स्निग्ध ठंढा लघुद्रवमय आदि शिखरण चीनी जौका सत्तू दूध आनूपमांस रस चीनी भात भोजनमें, रात्रिमें ओस दिनमें सूतना चन्दन कपूरका लेप ठंढा जल अनेक प्रकारका पनाका सेवन योग्य है। उष्ण कटु क्षार अम्ल घाम श्रमका त्याग करना।

यह बात भी जाननेकी है कि शिशिर वसंत ग्रीष्म ये ऋतु आयुर्वेदशास्त्रमें आदान काल कहलाते हैं, इन ऋतुओंमें सूर्य्य अपने किरणों द्वारा संसारके रसभाग जलभागको शोषण करते हैं। अतः संसारके सभी पदार्थ खास कर मनुष्य अल्पबलवाले होते रहते हैं। अतः इस समय निर्बलकारक आहार विहारका त्याग करना और मृदु लघु वल अग्निरक्षक आहार विहार करना चाहिये।

वर्षा शरद हेमन्त ऋतु विसर्ग काल कहे हैं। इस समय चन्द्र अपने किरणों द्वारा अखिल जगतको वल देते हैं। अतः प्राणिमात्र सबल पुष्ट पाचनशक्तियुक्त होते हैं। क्रमसे दोषोंको दूर करते हुए स्निग्ध बलिष्ठ गुरु पदार्थ और तदनुरूप विहार भी सेवनीय हैं। यह संक्षिप्त ऋतुचर्य्या है।

मासिक चर्या।

—०※०—

चैत्र—इस महीनेमें हैजा, प्लेग व चेचकका प्रादुर्भाव होता है, तथा और भी अनेक प्रकारकी बीमारियां फैलती हैं। रात्रिमें गुरु-पाक भोजन, या अधिक रात्रि बीतने पर भोजन करना तथा अधिक जागरण करना स्वास्थ्यके लिये अत्यन्त हानिकारक है। इस मही-नेमें निम्न लिखित वस्तुएँ स्वास्थ्यके लिये लाभदायक हैं:-निमक मिर्च युक्त मठा, करेला, परवल इत्यादि। खासकर चेचकसे बचनेके लिये शोधनपदार्थोंको खाना बहुत लाभदायक है। साफ तांबेके बरतनमें शुद्ध जल रखकर पीनेसे हैजाका प्रकोप अकसर नहीं होता।

वैशाख—इस महीनेमें प्रचण्ड सूर्य तेजके कारण पृथ्वी शुष्क होती तथा स्नेह पदार्थोंके क्षयसे गरमी बहुत ज्यादा मालूम पड़ती है। इसलिये इस महीनेमें मधुर अन्न, तथा लघुपाक स्निग्ध और सुशीतल द्रव्योंका व्यवहार करना सर्वथा उचित है। जवका सत्तू ठंडे पानीमें घोलकर चीनीके साथ पीनेसे शरीरकी गर्मी शान्त होती है। इस महीनेमें लूह भी चलने लगती है। अतएव कच्चे आमको आगमें भूनकर पन्ना बनाकर पीनेसे तथा बदनमें लगा देनेसे लूहका शरीरपर असर नहीं होता; नीबू, मक्खन चीनीयुक्त मठा, पपीता आदि इस महीनेमें हितकर हैं। विशेष व्यायाम, तेजस्कर सूर्य-किरण, अधिक कटु, तिक्त, अम्ल, अति उष्ण पदार्थोंका सेवन करना हानिकारक है। मध्याह्न भोजनके बाद ठंढे स्थानमें सोना हितकारी है।

ज्येष्ठ—इस महीनेमें वृष्टि न होनेके कारण गरमी अधिक पड़ती है। जिससे प्राणिमात्रके शरीरमें शुष्कता तथा तृष्णा विशेष बढ़ती है। अतएव ठंढी चीजोंका खाना तथा पीना, चन्दन आदि सुगन्धित द्रव्योंका व्यवहार करना, चांदनी रातमें खुले स्थानमें आराम करना, जूही बेला आदि फूलोंकी माला पहनना हितकर एवं रुचिकर है। अत्यन्त तीव्र तथा कटु वस्तुओंको खाना, मादक द्रव्योंका सेवन और रात्रिमें जागरण शरीरके लिये सर्वथा हानिकर है। इस मही-नेमें भी दिनको थोड़ी देरतक सोना स्वास्थ्यके लिये लाभदायक है।

आषाढ़—वर्षाऋतुमें मन्दाग्निके कारण वायुका प्रकोप होता है। इससे नाना प्रकारके रोग उत्पन्न होते हैं। अतएव इस समय अग्निवर्द्धक तथा वायुनिवारक वस्तुओंका सेवन करना और समय समय पर मृदुविरेचन लेना उचित है। नदियोंका जल गंदा हो जाता है। इसलिये पानीको साफ करके पकाके व्यवहारमें लाना चाहिये। इस महीनेमें मीठे द्रव्योंका उपयोग करना हितकर है।

श्रावण—वर्षा अधिक होनेके कारण अजीर्ण, वायु तथा ज्वर आदिका प्रकोप बढ़ता है। इसलिये आषाढ़ महीनेके नियमोंको पालन करना चाहिये। जमीन गीली रहती है, जिससे बीमारियोंके फैलनेका विशेष भय होता है। इस कारण जहांतक हो सके साव-धानीसे स्वच्छता और कुछ उष्णता रखनी चाहिये। सुगन्धि धूप अति हितकारी है

भाद्रपद—इस महीनेमें वर्षाके कारण रसकी अधिकता होती है और दिन भी दोरसा होता है। जिससे वायु और पित्त बिगड़कर नाना प्रकारकी बीमारियां फैलती हैं। नंगे पैर चलना, कड़ी धूपमें घूमना तथा विशेष ठंढे स्थानमें रहना उचित नहीं है। इसमें मले-रिया बुखारका भय अधिक रहता है। रात्रिके समय ओसमें सोना हानिकारक है। क्योंकि ठंढक विशेष पड़ने लगती है। इस समय कपूर और चन्दनका व्यवहार करना लाभदायक है। भाद्रपदमें ब्याई हुई गायका दूध किसी देवकार्य तथा पितृकार्यमें व्यवहार करना निषिद्ध है और स्वास्थ्यकी दृष्टिसे भी इस दूधको पीना उचित नहीं है।

आश्विन—इस महीनेमें पित्त विशेष बढ़ा रहता है। अतएव पित्तकी शान्तिका यत्न अवश्य करते रहना चाहिये। इसी महीनेमें ऋतुपरिवर्तन होता है। इसलिये सावधान रहना चाहिये। वर्षा कम होनेसे शारीरिक दुर्बलता कम होती जाती है। शरद् ऋतुमें सूर्यकी किरणें अत्यन्त हानिकारक होती हैं। क्योंकि इस समय धूप लगनेसे पित्त बढ़ जाता है। मीठा, ईखका रस, मक्खन, चीनी आदिके व्यवहार उपकारक हैं। रात्रिमें सोनेके समय ठंढकसे बचना चाहिये।

कार्तिक—कार्तिकके महीनेसे ओसका पड़ना शुरू हो जाता है।

इस कारण सर्दीसे बचनेके लिये गरम कपड़ा पहनना शुरू कर देना चाहिये। इसी समय ऋतुपरिवर्तन होनेके कारण सर्दी गर्मी दोनोंकी समता न होनेसे विशेषतः संक्रामक रोग पैदा होते हैं। रातमें देरतक जागना तथा मादक द्रव्य विषके तुल्य त्याग देना चाहिये तथा मलेरियाग्रस्त रोगियोंको विशेष सावधान भी रहना चाहिए।

मार्गशीर्ष—इस महीनेमें दिनका सोना त्याग देना चाहिए। काफी गरम कपड़ा पहनना चाहिये। जिसमें कि, सर्दी बदनमें प्रवेश न कर सके। पुराने रोगियोंके लिए वायु परिवर्तनका समय यही है। नमकीन तथा मीठे द्रव्योंके व्यवहारसे लाभ होता है। घृत, मीठा, खट्टा, खीर, खोआ, नया गुड़ तथा सुगन्धित द्रव्योंका व्यवहार करना चाहिये। इस समय शरीरके लिये सूर्यकी किरणें लाभदायक हैं। जहांतक हो सके पांवमें ठंढक न लगने पाये।

पौष—इस महीनेमें सर्दी विशेष पड़ने लगती है, इससे स्वास्थ्य साधारणतया अच्छा रहता है, क्योंकि ठंढ गिरनेके कारण भूख बढ़ जाती है। पुष्ट द्रव्योंका खाना हितकर है। स्वास्थ्य रक्षाके लिए निर्बल तथा सबल शरीरके अनुसार सर्दी एवं धूपका सेवन करना चाहिये। शरीरको ऊनी वस्त्रोंसे रक्षित करना तथा पावोंको सर्दीसे बचाना उचित है। जाड़ेके महीनेमें हाथ, पांव तथा चेहरेपर स्नेह पदार्थ लगानेसे रूक्षता नहीं होती।

माघ—माघ महीना स्वास्थ्यके लिए अच्छा है। क्योंकि यह समय किसी खास बीमारीका नहीं है। जहांतक हो सके अच्छा खाना चाहिये और शीतसे बचनेके लिए काफी उष्ण वस्त्र धारण करना चाहिये। उष्ण स्निग्ध पुष्ट पदार्थ, मीठे और नमकीन पदार्थोंका सेवन उचित है।

फाल्गुन—ऋतुपरिवर्तनके समय शीत और गर्मीकी समता न होनेके कारण कफ तथा जठराग्नि विकृत हो जाती है। अतएव इस समय शुद्ध वायु सेवन, सुगन्धित द्रव्योंका व्यवहार और व्यायाम आदि करना हितकर है। इस समय चेचक, हैजा, इन्फ्लूयेञ्जा आदि रोगोंका भय रहता है। अतएव सावधान रहना चाहिये। नीमका फूल खाना हितकर है।

आशुचिकित्सा।

—:※:—

अधकपारीपर—पुराने रुईका धुआं नाकसे खींचना। अधकपारीपर—केसरको घीमें खरलकर नाश लेना। अधकपारीपर—पुराने गुड़में थोड़ा कपूर मिलाकर सवेरे सूरज निकलनेके पहले खाना। अफीम चढ़ी हो तो—रीठीका पानी पिलाना। अफीमके नशेपर—भूंजा हुआ हींग मंठेमें मिलाकर पीना। आमवातपर—सोंठ और गुरुचका काढ़ा पीनेसे जीर्ण आमवात भी आराम होता है। अतिसार—बेलका मुरब्बा खाना। अतिसार—बबूलकी छीमी और नमक पानीमें पीसकर पिलाना। अतिसारपर—छोटी हर्रै और सौंप एक एक तोला भूनकर चीनीके साथ दोनों समय थोड़ा थोड़ा खाना। अजीर्णपर—काली मिर्च और सेंधुर भैंसके मक्खनमें पेटपर मलना। अजीर्णपर—चित्रक, सेंधा नमक व काली मिर्चका चूर्ण मंठेके साथ खाना। अजीर्णपर—पीपलकी छालके रसमें अजवाइन, काली-मिर्च और दो मासे सेंधा निमक मिलाकर खाना। अजीर्णपर—पलासका पत्ता जलाकर गायके दूधमें मिलाकर पेटपर मलना। अजीर्णपर—सोंठ, पीपर, चिरायता और सेंधा नमक गरम पानीके साथ खाना। अपरसपर—पलासका पत्ता जलाकर गायके दूधमें पेटपर मलना।

अम्लपित्तपर—चिरायता और भंगरैयाके अर्क वा काढ़ेमें शहद मिलाकर पीना। अम्लपित्तपर—गुड़, छोटी पीपल और हर्रै समभाग गोली करके खाना। आगसे जलनेपर—चूनाके साफ पानीमें गरीका तेल फेटकर रुई तर करके बांधना। आँखकी सुर्खीपर—समुद्रफेन और मिश्रीका अञ्जन करना। आंखकी सुर्खीपर—बबूलका फूल और लाल चंदन पानीमें पीसकर अञ्जन करना। आंखके निनावेंपर—मिश्रीको जस्ताके फूल और सपेदामें घोटकर अंजन करना। आंखपर तेजी आनेके लिये—वैशाखी हर्रै और गेरू अंजन करना। आंखका पर्दा साफ होनेके लिये—सूखे चिचिढ़ेको बासी पानीमें घिसकर अंजन करना। आंखकी फूलीपर—नागरमोथा स्त्रीके दूधमें रगड़कर अंजन करना। आंखके

नाखूनापर—बबूलके फूलका रस घोड़ीके मूत्रमें मिलाकर अंजन करना। आंखकी सुर्खीपर—फिटकरीका पानी आंखमें छोड़ना। आंखके दर्दपर—आंबाहरदी वासी थूकमें घिसकर अंजन करना। आंखकी धुन्धीपर—मिश्री व आंबाहरदी स्त्रीके दूधमें अंजन करना। आंखके दर्दपर—सैजनके पत्तेका रस शहदमें मिलाकर अंजन करना।

उकवतपर—मैनसिल, तूतिया, गंधक ११ मासा, कपिला ६ मासे, मुर्दासंख २ मासे, रसकपूर २ रत्ती, १ छटांक चमेलीके तेलमें घोटके लगाना। उदररोगपर—२ मासे सरफोंकेकी पत्ती मठाके साथ पीना। उन्मादपर—ब्राह्मीकी पत्ती जलमें पीसकर पीना। उपदंशपर—पपरीखैर चमेलीके तेलमें मिलाकर लगाना। उबटन—तिल, जीरा, स्याहजीरा और सरसों दूधमें पीसकर प्रतिदिन लगानेसे मनुष्य गोरा होता है।

कफपर—पिपरामूल, सोंठ चोक, पित्तपापड़ा व पीपरका काढ़ा देना। कफज्वर—पोखरमूल, काकरासिंगी व पीपरका काढ़ा देना। कफज्वरपर—नागरमोथा, धमासा, गुरुच व सोंठका काढ़ा देना। कम सुननेपर, गोमूत्रमें चमेलीको पत्तीका रस और कपूर पकाकर २।२ बून्द छोड़ना। कंवलपर—कड़वी तरोईका चूरन एक चावल भर नाकमें सूंघना। कर्णरोगपर—मदारका पत्ता सेंककर २।२ बून्द रस कानमें छोड़ना। कफ पित्तज्वर—भटकटैया, गुरुच, सोंठ, चिरायता, व पोखरमूलका काढ़ा देना। कफवातपर—पीपल २, काली मिर्च ३ व तुलसीपत्र ७ जलमें पीसकर पीना। कफके बवासीरपर—आदीका रस ७ दिन लेना। कमजोर हमल बढ़नेको—कमलगट्टा और बदामका हलुआ खाना। कमजोर हमल बढ़नेको—मुलेठी व पाषानभेद पानीमें पकाकर शहदके साथ लेना। कमजोर हमल बढ़ानेको—आधसेर मठेमें पका अनार पीसकर पीना। कलप या खिज़ाब—बाल काले करनेको सूखे आंवलाका चूरन पीसकर नीबूके रसमें लेप करना।

कांछ निकलनेपर—केतकीके पत्तेका रस तिल्लीके तेलमें पकाकर लेप करना। कानके दर्दपर—भेड़के दूधमें सेंधानोन रगड़कर कानमें डालना। कानके बहनेपर—नीमके रसमें शहद मिलकर डालना। कानके दर्दपर—सुदर्शनके पत्तेके रसको कानमें डालना।

कानसे आवाज निकलती हो तो—कपूरका पानी कानमें छोड़ना। कानके बहनेपर—चित्रकमूल तेलमें पकाकर कानमें छोड़ना। कानके बहनेपर—बकरेके मूत्रमें सेंधानोन व जूहीकी पत्तीका रस गरमकर कानमें छोड़ना। कासपर—अनारके छिलकेका रस १ तोला ७ दिन लेना। कासपर—पीपल, वंसलोचन, दालचीनी व मिश्रीका दूध और पानीमें काढ़ा लेना। कांखमें बदबू होनेपर—नींबूके पत्तेका रस २।२ बून्द मलना। कांचबिन्दुपर—मनसील, सेंधा, हिराकस, शंख व मिरिचको शहदमें गोली कर अंजन करना।

कृमिपर—खुरासानी अजवाइन घीकुआरका गूदा मिलाकर खाना। कृमिपर-६।८ मासे रेंड़ीका तेल पिलाना। कुत्ता और शृंगालके काटनेपर तेल अकवनका दूध लगाना। कुत्ता काटनेपर—कुत्तेकी वीट लगाना। कुत्ता काटनेपर—घीकुवारका गुदा और सेंधानोन ५ दिन बांधना। कुत्ता काटनेपर—चौराईकी जड़का रस और घी ७ दिन पीना। कुष्टपर—त्रिफलाको जलमें पीसकर अपटन करना।

कौड़ी उभरी हो तो कुंदुरुका गोंद भेड़के दूधमें पीसकर लेप करना। कौड़ी उभरी हो तो, सिलारसका लेप लगाना। कंठरोगपर पपरीखैर व बड़ी इलायचीका चूरन नटहामें भुरकाना। कंठमालापर—बेलकी छाल और नामकी सींक समभाग कूटकर घी और मोममें मलहम करना। कंठमालापर—कसोरा व भेलकी अकवनके दूधमें पीसकर लगाना। कंठमालापर—सरसों, सैंजनका बीज, सनका बीज, तीसी और मुरईका बीज खट्टे मठेमें पीसकर लेप करना। कदपर—वह तुरंतका उभाड़ हो घोड़ेके बालसे बांध देना कि, कट जाय।

खजुआ शिरमें होना हो तो—कनैलकी पत्ती जलाकर तांबेके बर्तनमें घीके साथ खरकर मलना। खांसीपर—सुहागेकी लाई अड़ूसके रसमें खाना। खांसीपर—गोल मिरिच व हल्दी गरम दूधके साथ पीना। खांसीपर—मुलेठीका सत मुंहमें दबाना। खांसीपर—बबूलका गोंद मुंहमें रखना। खांसीपर—चौकिया सोहागाकी लाई पानीके साथ खाना। खांसीपर—[illegible] और मिश्री मुंहमें रखना। खांसीपर—अनारका छिलका मुंहमें रखना। खांसीपर—सफेद [illegible] और मिश्री मुंहमें रखना। खांसीपर—रैंगनीके फूलका अर्क पानके साथ

खाना। खांसीपर—आदीके रसमें शहद, पीपल और जवाखार चाटना। खांसीपर—गोल मिरिच १ तोला, पीपर १ तोला, अनारकी छाल २ तोला, जवाखार ६ माशा, गुड़ ४ तोलामें गोली बांधकर मूंहमें रखना। खांसीपर, चिचिड़ेके बीजके चूरनमें गोल मिरिच मिलाकर ३ दिन खाना। खांसीपर-पीपल, पोखरमूल, हर, सोंठ, कचूर, नागरमोथा, समभाग गुड़के साथ ३ मासे लेना। खांसीपर-मुलेठी और पीपल शहदमें खाना। खुजलीपर—हरताल, सेंधा व हल्दी गोमूत्रमें लगाना। खुजलीपर—आंवलेका चूरन शहदमें मिलाकर मलना। खुजलीपर—मिश्री और जीरा चावलके धोवनमें लेना। खुजलीपर—अजवाइन भूंज और महीन मुरदासंख पीसकर तेलमें लगाना। खुजलीपर—नीमकी पत्ती तेलमें जलाकर तेल लगाना। खुजलीपर—कड़वा नीम भूञ्ज और महीन पीसकर चंदनके तेलमें लगाना। खुजलीपर-काले धतूरेके फलमें गंधक रख भैंसके ताजे गोबरमें पकाकर मलना। खुजलीपर—अमलतास, हलदी व गंधक समभाग तेलमें मलकर लगाना।

गरमीके घावपर—चिकनी सुपारी, सुफेद खैर व संखजराहत कपड़ेमें छान कर मक्खनमें लगाना। गरमीके चट्टेपर—इनारूका फल जलाकर शहदमें खरलकर लगाना। गरमीके फोड़ेपर-मैनफर, कचूर और चंदन पानीमें घिसकर लगाना। गरमीके घावपर-कमलके पत्तेके पानीसे धोना। गरमीपर—नीमी छाल, धनियाँ, गुरुच और मुनक्काका काढ़ा कर शहद डालकर पीना। गरमीपर—सुपारी पानीमें पीसकर लेप करना। गरमीके घावपर—भंगरैयाके रससे धोना। गण्डमालापर—गुग्गुल और अफीम पीसकर लगाना। गाय भैंसका दूध बढ़ानेको—केंवाचकी जड़ ५ तोला पीसके घीके साथ ३ दिन खिलाना। गांठपर—मूलीका खार कौरशंखका चूर्ण पानीमें पीसकर लेप करना। ग्रीष्ममें—गुड़के साथ बहेड़ा खाना। गुल्म रोगपर—सज्जीखार व गुड़ चार माशा मिलाकर गोली खाना। गुल्मपर—इनारूकी जड़ गोमूत्रके साथ खाना। गोजरके विषपर—दीयाका जला हुआ तेल लगाना। गोजर कानमें जानेपर-परासके पत्तेका रस कानमें छोड़ना। ग्रंथीरोगपर—सज्जीखार और हलदी पानीमें पीसकर लेप करना।

घावपर—बैंगनकी पत्ती पीसकर लेप करना। घावका मलहम—जवका आटा, संखजीरा व शहद तेलमें मिला गरम कर लेप करना। घुमरीपर—बकरीके दूधमें चन्दनका तेल पीना। घाव लगनेपर—फिटकरीकी बुकनी घावमें भरना।

चूहेके जहरपर—धमासा, मजीठ, हलदी व सेंधा नोन महीन पीसकर पानीमें लेप करना। चूहेके जहरपर—अफीम रगड़कर धूप लेना या तेल लगाना। चेचकके दागपर—मक्खनमें जीरा और मिश्रीका चूरन खाना। चेचकके कीड़ेपर—राल, हींग और लहसुनका धूप देना। चेचककी गरमीपर—प्याजका रस घीके साथ पिलाना।

छींकपर—घी, गुग्गुल और मोमकी धुनी देना।

जखमपर मलहम—सफेद प्याज व स्याहजीराको घीमें जलाकर फेटकर लगाना। जखमपर मलहम—गाजरके रसमें शहद मिलाकर लगाना। जखमपर—नीमकी पत्ती पीसकर बांधना। जखमपर—मोम संखजराहत और घीका मलहम कर लगाना। जलेहुयेपर—१ पाव तिल्लीके तेलमें ४ पैसे भर चूनाका पानी फेटकर लगाना। जले हुये पर—कच्चा आलू पीसकर लगाना। जले हुएपर—जलते ही उसी दम उसी जगह खूब सेंकना। जले हुएपर—वही लिखनेकी स्याही लगाना। जड़इया पर—दूधमें त्रिफला देना। जड़इयापर—पांच लौंग और दो खटमल रोगीको न जानकर पानमें देना। जलोदरपर—सेंधा और राई समभाग कूटकर गोमूत्रमें पीना। जलोदरपर—पीपल २० तोला, सेंहुड़का दूध ७ पुट दे, छायामें सुखाकर ४ माशा खुराक करना। जीर्णज्वरपर—कायफल, नागरमोथा, कुटकी, कचूर, काकरसिंही और पोखरमूलका चूरन शहदमें खाना। जीर्णज्वरपर—मिश्री, गायका घी, सोंठ, मुनक्का व छुहाराको गायके दूधमें खीर खाना। जीर्णज्वरपर—भटकटैया और सोंठका काढ़ा लेना। जुलाब—रेंड़ीका तेल सोंठके काढ़ेके साथ लेना। जुलाब—मुनक्का, मिश्री व सनाय समभाग गोलीकर खाना। जुलाब—त्रिफला, सोंठ, मिरिच, पीपर व सनायमें थोड़ा सेंधा देकर खाना। जुलाब—१ तोला गुलकन्द पानीके साथ खाना। जुलाब रोकनेके लिये—बेलका मुरब्बा खाना। जुलाब रोकनेके लिये—दही भात खाना। जुलाब बन्द होनेके

लिये-अनारके फलका रस एक चम्मच चीनीके साथ खाना। जुकामपर-केसर और घीका नास लेना। ज्वरके रोगीके पास माके सिवाय दूसरी स्त्रियोंको न बैठने देना चाहिए। ज्वरपर पाचन-सोंठ, देवदार, धनियाका काढ़ा ३ दिन बाद देना चाहिए।

टुनकीपर—गोलेकी बीट और चूहेकी बीटका लेप करना।

ठंढईके लिये—अनारका शर्वत पानीमें पीना।

डेकार रोकनेसे अरुचि, खांसी, हिचकी आदि रोग होते हैं।

तालू धंसनेपर—बारहसिंघेके सींग गायके दूधमें घिसकर देना। तालू धंसनेपर-वच व जायफल दूध या घीमें लेप करना। ताकतके लिये-प्याजका रस शहदमें मिलाकर पीना। ताकतके लिये—आंवलेका रस घीमें मिलाकर पीना। ताकतके लिये—गेहूंके सतका हलुआ घी मिलाकर पीना। तृष्णाज्वरपर-गुरुच, पोखरमूल और सोंठका काढ़ा देना।

दस्तपर—अनारके नरम पत्तेका रस १ चम्मच गायके दूध व चीनीमें लेना। दस्तपर-अफीम, गुड़ व माजूफलकी गोली अन्दाजसे देना। दस्तपर—आमके पत्तेका रस थोड़ा चूनेका पानी मिलाकर ७ दिन पीना।

दांतके कीड़ेपर—रुईमें कपूर रखकर दांतपर दबाना। दांत हिलनेपर-मोलसिरीकी छालका दतवन करना। दांतका मंजन—बादामका छिलुका जलाकर फिटकिरीके साथ मंजन करना। दांतका मंजन—कच्चा गेरू, फिटकिरी व लायची पीसकर मंजन करना। दमापर—भारंगमूल और सोंठका चूरन शहदसे लेना। दादपर-सोंचर नोन नीबूके रसमें लगाना। दादपर—तीन तोला बेलका पत्ती और आधा तोला कपूर हल करके दादको पानीसे धोकर लगाना। दादपर—परासका बीया, फिटकिरी, मुरदासंख, मनसील व माजूफल नीबूके रसमें पीसकर लगाना। दादपर—सोहागा, जायफल और आंवलासार गंधक नीबूके रसमें खलकर लगाना। दादपर—चौकिया सोहागा और चंदन लगाना। दादपर—खस, गुलाबकली व मिश्रीका चूर्ण दूधके साथ पीना। दूध बढ़नेके लिये—मुनका पीसकर घी मिलाकर पीना। दूध बढ़नेके लिये—एक छटांक घी पके दालमें पीना।

धातुक्षयपर—मुनक्का मिश्री व पीपलका चूरन शहदमें लेना। धातुक्षयपर—असगंध, चीनी व पीपलका चूरन घी और शहदके साथ खाना। धातु जाना बंद करनेके लिये-तुलसीकी पत्ती और दूबका रस सात दिन लेना। धातुके गिरने पर-तीखुर गायका घी और गुरुचका सत देकर पीना। धातुके गिरनेपर-गुरुचका सत दूधमें लेना।

नह उखड़नेपर—गर्म पानीकी धार देना। नह उखड़नेपर—घी, शहद और हल्दी मिलाकर लगाना। नकसीरपर-दूध और आंवला पीसकर सिरपर लगाना। नजरके ज्वरपर-जहरमोहरेका जल पिलाना। नजर लगनेपर-राई और मिरचा तीन बार उतारकर जलाना। नाकसे खून गिरनेपर-प्याज काटकर सूंघना। नाकसे खून गिरने पर—पोतनी मिट्टीपर पानी डालकर सूंघना। नाकसे खून गिरनेपर—नाकसे पानी खींचना। नासूरपर-चीयां पीसकर मक्खनमें लगाना। नासको-नकछिकनी हाथमें मलकर सूंघना। निनावेंपर-फिटकिरीकी बुकनी ठंडे पानीमें मिलाकर कुल्ला करना। नींद लगनेपर-अन्दाजसे जायफल पानमें लेना।

पसीनेकी वदबूपर—अरूसकी पत्तीके रसमें शंखचूर्णका लेप करना। प्रदरपर—नीमकी छालके रसमें थोड़ा जीरा पीसकर ७दिन पीना। प्रदरपर—कपासका फूल घीमें भूंजकर खाना। प्रमेहपर—गुरुच पीसकर चीनी और दूधके साथ पीना। प्रमेहपर-आंवलेके रसमें हल्दी १४ दिन लेना। पिलईपर—इन्द्रजवका चूरन सेंधानमकके साथ खाना। गरमीपर—गूलरका रस ४ तोले जीरा और मिश्रीमें मिलाकर ७ दिन पीना। पेटके दर्दपर—जीरा व चूना मलकर फांकना। पेटके दर्दपर—घीके साथ सेंधा खाना। पेटके दर्दपर—कंजाका बीज भूंजकर घीके साथ खाना। पेटके नाड़ेपर-सौंफ, चीनी और पानी वा नीबूके रसमें पीना। पेटके कृमिपर—१ तोला खुरासानी अजवाइन बासी पानीमें लेना। पेटके कृमिपर-सोंठ, मिरच, पीपर और इन्द्रजवका बकरीके मूतमें अन्दाजसे काढ़ा देना। पोतेकी कौड़ी चढ़नेपर—चकवड़की पत्ती कांजीमें गरम कर बांधना। पोतेके बढ़नेपर—धूप, गुगुल, सेमर और खैरका गोंद तुलसीके पत्तेपर लेपकर बांधना। पोतेके बढ़नेपर—लजाधुरकी पत्ती

पीसकर गरम कर नसपर बांधना। पोतेके बढ़नेपर-बच और सरसों पानीमें पीसकर नसपर लेप करना। प्रदरपर-मुलेठी और मिश्री पीसकर चावलके पानीमें पीना। प्रदरपर-चौराईका रस शहद मिलाकर ७ दिन पीना। प्रदरपर-गुरुचकी जड़ चावलके पानीमें पीसकर ३ दिन पीना। प्रदरपर-कुशाकी जड़ चावलके धोवनमें पीसकर पीना। प्रसूतपर-दशमूलका काढ़ा देना। पागल कुत्तेके विषपर-तेल और अकवनका दुध लगाना। पित्तज्वरपर-धमासा, नागरमोथा, पित्तपापड़ा, चिरायता और कुटकीका काढ़ा लेना। पेशाव बन्द होनेपर-नाभीपर गोपीचन्दनका लेप करना। पेशाब बन्द होनेपर-शहदमें आंवलेका चूरनदेना। पेटके दर्दपर--जीरा, स्याहजीरा, सोंठ, अजमोदा, सेंधा, पीपरका चूरन नीबूके रसमें लेना। पेटमें अजीर्ण होनेपर—दस्त लेना। पेटमें बादी होनेपर—भोजनके पहले भातमें काला नमक खाना। पोतेके फूलनेपर--सुरतीका पत्ता घी लगाकर बांधना। पोतेके सूजनपर—त्रिफलाके काढ़ेमें गोमूत्र डालकर पीना। पोता बढ़नेपर—घी और सेंधा लगाकर केलाके फूलका पत्ता बांधना।

फिरङ्ग रोगपर—सौ बार धोया हुआ घी लगाना।

बदनमें दाद होनेपर—चन्दनमें कपूर मिलाकर लगाना। बहुमूत्रपर—गूलरकी जड़ शहदके साथ लेना। बवासीर बादीपर-मंठेमें पेहटेकी ७ कचरी व सेंधा निमक डालकर कुछ दिनतक लेना। बिद्रधीपर—जब गेहूं सोंठका चूरन घीमें पकाकर लेप करना। बालरोगपर-थोड़ा हींग ७ दिनतक ठण्डे पानीमें पिलाना। बाईसे आंख चढ़नेपर—लौंग पानीमें घिसकर अञ्जन करना। बाल-तोड़के फोड़ेपर—तीसीकी खल्लीका पोलटिस बांधना। बालखोरे-पर—कुटकी पीसकर मदारके पत्तेके रसमें लगाना। बालरोगपर-चौकिया सोहागा दूधमें पिलाना। बिच्छूके काटनेपर—अंगके जिस तरफ काटा हो उसके दूसरे तरफके कानमें नमकका पानी छोड़ना। बिच्छूके काटनेपर—छोटी हर्रे पानीमें पीस चिपटी करके घावको चाकूसे जरा खोलकर उससे बहते हुए खूनपर चिपका देना। बिच्छूके काटनेपर—जमालगोटा घिसकर या पलासका दूध लगाना। बिच्छूके काटनेपर—नवसादर और

हरताल पानीमें पीसकर लगाना। विषम ज्वरपर—गुरुच, भंगरैया और अडूसेका काढ़ा पीना। बवासीरके मसेपर—रसवत और चिनिया कपूर बासी पानीमें लेप करना। बदनकी दर्दपर—हिंगुआ और अजमोदाका चूरन गरम पानीसे लेना। बदनके गांठपर—पान, अजवाइन और वच पीसकर लगाना। ग्रीष्ममें—बराबर गुड़के साथ हड खाना। बरसातके दिनोंमें—सेंधा निमकके साथ बैसाखी हरें खाना। शरद ऋतुमें—बराबरकी चीनीके साथ हड खाना। हेमन्तमें-बराबरकी सोंठके साथ हड खाना। शिशिर ऋतुमें-बराबरकी पीपलके साथ हड खाना। बसन्तमें—शहदके साथ बैसाखी हरें खाना। बदनपर घाव लगानेपर—पानीकी पट्टी बांधना। बालखोरापर-खटमल रगड़ना। बालतोड़के फोड़ेपर—गोलमिरच और पीपल पानीमें घिसकर लगाना। बाल बढ़नेके लिये—गायके दूधमें तिल्लीका तेल और गोखरू पीसकर ७ दिन तक लेप करना। बाल लम्बे होनेके लिये-सड़ी गरीको लगाना। बाईसे आंख चढ़ने पर-रहरकी दाल पानीमें पीस कर अञ्जन करना। बुखार पर-पीपर और सोंठका चूरन शहदके साथ खाना।

भगन्दरपर-भांगकी पोटलीसे सेंकना। भांगके नशेपर-दहीमें पानी मिलाकर पिलाना। भिलावेपर-तिल्लीका तेल लगाना। भिलावेपर-तिल पानीमें पीसकर लगाना। भिलावेपर-धनियां पीसकर लगाना। भिलावेपर-गरम दूधका सुहाता सेंक करना।

मकड़ीके जहरपर-हलदी, दारुहलदी, मजीठ, मिरिच पतङ्ग और नागेशर ठंडे पानीमें पीसकर लेप करना। मसेपर-सज्जीखार, साबुन और नमकका लेप करना। मसेपर—बबूलकी छाल और नीम कूटकर घी और मोममें मलहम कर लगाना। मकड़ीपर—पुराना अमचुर बासी पानीमें पीसकर लेप करना। मकड़ीपर-हलदी और दूब दहीमें पीसकर लगाना। मेदरोग (चर्बी बढ़ने) पर—बदनमें धतूरके पत्तीका रस मलना। मुंह आनेपर-तीखुर, छोटी इलायचीके दाने व मिश्री महीन पीसकर जीभमें लगाकर लार गिराना। मुंह आनेपर—कपूर और चीनी महीन पीसकर ३—३ मासे तीन दिन खाना। मूर्छापर-बारहसिंघाका सींग रगड़कर शहदसे लेना। मूत्रकृच्छ्रपर—दूधमें पुराना गुड़ और मिश्री

थोड़ा गरम कर पीना। मधुमेहपर—जामुनकी छाल और सिंघाड़ा रोज तीन तोले खाना। मधुमेहपर—अडूसा, मुनक्का और हरेंका काढ़ा पीना। मूत्रकृच्छ्रपर—कटेली और सेमरकी छालका चूरन चीनीके साथ खाना। मूत्रकृच्छ्रपर—पके भतुवेके रसमें मिश्री मिलाकर पीना। मूत्राघातपर—शहदमें खट्टे अनारका रस और लायची डालकर पीना। मूत्रातिसारपर-कोहड़ेका छिलका चावलके पानीके साथ पीना। मूर्छापर—कपूर, गुलाबजल, चन्दनका अतर, अनारशर्बत मिलाकर पीना। मूत्राघातपर—रेवतचीनी, फालसेकी छाल, मौलसिरीका बीज, पीसकर चीनी डालकर पीना। मेढ़कके विषपर-थूहरके दूधमें सरसों पीसकर लेप करना।

रतौंधीपर—आंखमें रीठीका अंजन करना। रतौंधीपर-मुर्गीकी सेम बासी पानीमें घिसकर आंखमें अंजन करना। रतौंधीपर-प्याजका रस ३ बून्द आंखमें छोड़ना। रतौंधीपर-छोटी पीपर पानीमें घिसकर अंजन करना। रतौंधीपर-समुद्रफेन और मिश्रीका दोनों वक्त अंजन करना। रक्तातिसारपर-बेलकी गुद्दी २ टंक बकरीके दूधमें ७ दिन खाना। रक्तप्रदरपर—कतीला रातको भिगाकर सुबह मिश्री डालकर पीना। रक्तस्रावपर-बालबच्च और गुड़ शहदमें लेना। रक्तपित्तपर—चिरौंजी बदनमें मलकर स्नान करना। राजयक्ष्मापर-दशमूलअर्क १ छटांक २४ दिन पीना।

लुह लगनेका बचाव-हर वक्त प्याज पास रखना। लेहू गिरनेपर—नाग केसर पीसकर मक्खनके साथ खाना।

व्रण शोथपर—अफीम, रेवतचीनी व गुग्गुलका लेप करना। वृषणवृद्धि पर-कूट पीपर, सोंठ और अकलकाराका चूरन ७ दिन लेना। वातसंग्रहणी पर—सोंठ, गुरुच, नागरमोथा और अतीसका काढ़ा १४ दिन पीना। वातज्वर पर—अरूस, नागरमोथा, धमासाका काढ़ा लेना। वायुरोगपर-पोनेका पानी औटाकर पीना। वातरक्तपर—गोरखमुंडीका अर्क शहद डालकर पीना। विषमज्वरपर—दूधमें त्रिफला पीना।

शरीरकी बदबूपर—तुम्बल और बहेड़ेका कूटकर अपटन लगाना। शरीर व्रण हो तो—चंदनके तेलकी मालिश करना। शूलपर—करञ्ज, जीरा व सोंठ गरम पानीसे खाना। शूलपर—चूने-

की गोली खाकर गरम पानी पीना। शूलपर—अजवाइन और काला नमक गरम पानीसे लेना। शोथपर-अकलकरा और अफीमका लेप करना।

सर्पदंशपर—दंशकी जगह चाकूसे काट रीठी पीसकर लगाना और अंजन करना। सर्पदंशपर-सतावर दूध पीना। सर्पदंशपर-करञ्जकी छाल कूट पानीमें मिलाकर लगाना। सिरके दर्दपर-घूमचीका चूरन सिरपर लगाना। सिरके दर्दपर-गुड़का पानी छानकर पीना। या बारहसिंघाका सींग चंदनमें घिसकर लेप करना। सिरके दर्दपर-मगज बादामका लेप करना। सिर खवरा होनेपर-करनेकी पत्ती जलाकर तांबेके बरतनमें घीके साथ खलकर लगाना। सुजाकपर—गायके दूधमें गुड़ और गुरुच पीसकर ७ दिन पीना। सुजाकपर-आंवलेका रस २ तोला थोड़ी हल्दी और शहद मिलाकर पीना। सुर्ती लगनेपर-लौंग खाना। सुपारी लगनेपर-चीनी या गुड़ या निमक जलसे खाना। सोमरोगपर—पका केला मिश्रीके साथ खाना। सोमरोगपर-जवासाके रसमें शहद मिलाकर खाना। सुफेद प्रदरपर—आंवलेका बीज जलमें भिगा और पीसकर शहद और मिश्री मिलाकर खाना। सूजनपर—अकवन और रेंडीकी पत्ती पीसकर लेपकरना। सूतिकापर-दशमूलका काढ़ा लेना। सूतिका-पर-बदाम, मिर्च व मिश्री घीमें पकाकर खाना। संखियाके जहर-पर—कपूर खिलाकर घी और दूध पिलाना। स्वप्नावस्थापर-थोड़ा कपूर खाना। स्तनरोगपर-बकरीके दूधकी धारसे धोना। स्मरणशक्ति बढ़ानेके लिये-वीर्यरक्षा करना। स्वरभेदपर—कालीमिर्च चीनीमें पकाकर खाना।

हड्डीके बुखारपर—दूधमें जीरा पकाकर छायामें सुखाना और चूरनकर मिश्रीसे ७ दिन लेना। चिरायता और ३ दाना मिर्चका काढ़ा लेना। हिचकीपर-सुफेद चीनी, मिरिच, लौंग, सूखा नीब जलाकर छानकर शहदसे खाना। हिचकी पर-रेंड़का बीज पीपरके काढ़ेमें हींग डालकर पीना। हिचकीपर-गेंदेका सूखा फूल चिलमपर रखकर खींचना। हैजेपर-सुफेद प्याज, पुदीना और आदीका रस थोड़ा हींग डालकर पीना। हैजेपर-थोड़ा पानी खूब औटाकर पीना। हैजेपर-कस्तूरी खिलाना। हैजेपर—कपूरका अर्क चीनी या बतासेमें खिलाना।

रोग और आरोग्यताका संक्षिप्त निदान यह है:-काल इन्द्रियार्थका उचितसे कमयोग, हीन योग, उचितसे विपरीत मिथ्यायोग, उचितसे अधिक अतियोग, येही रोगोंका कारण है और सम्यक् (उचित) योग आरोग्यताका कारण होता है।

स्वभाव प्रवृत्त इन १३ वेगोंके रोकनेसे वात विकृत हो उदरावर्त्त पैदा करके सैकड़ों दारुण व्याधियोंको पैदा कर जीवनको भी संदिग्ध कर देता है। अतः इन स्वतः प्रवृत्त वेगको रोकनेका यत्न नहीं करना चाहिये। हां यदि इनकी प्रवृत्तिसे व्याधि होजाय तो अवश्य उपचार कर रोकना ही होगा। वे वेग १३ ये हैं—

अधोवायु छूटना। दस्त होना। झाडा लगना। पिशाब होना। जंभाई होना। आंखसे आंसू आ जाना। छींक आना। डेकार आना। कब्ज होना। शुक्र पात होना। भूख लगना। प्यास लगना। श्रमजनित श्वासोच्छ्वास। नींद लगना।

इनके अतिरिक्त मनोवेगको रोकना ही चाहिये ऐसे १४ वेग देहके हैं।

नियमखण्ड।

[सम्पादक—श्रीपण्डित गिरिजाकान्त झा, काशी।]

स्थानिक स्वराज्य अथवा म्युनिसिपल्टी।

—:※:—

किसी नगर निर्माणके उपरान्त उसकी सुव्यवस्था करने और वहांके रहने वालोंकी असुविधाओंको दूर करनेके लिये प्रान्तीय सरकार द्वारा जो संस्था स्थापित की जाती है उसीको म्युनिसिपल्टी अथवा स्थानिक स्वराज्य कहते हैं।

प्रान्तीय सरकारको अधिकार होता है कि किसी स्थानीय रकबेके विषयमें प्रकाशित करदे कि वह म्युनिसिपल्टी है।

प्रत्येक म्युनिसपल्टीकी हद्द नियत होती है और उस हद्दके अन्तर्गत रहने वालोंको म्युनिसिपल्टीके नियमानुसार रहना आवश्यक होता है।

सञ्चालन।

म्युनिसिपलटीका सञ्चालन एक कमेटीके द्वारा हुआ करता है जिसे म्युनिसिपलबोर्ड कहते हैं। म्युनिसिपलबोर्डद्वारा म्युनिसिपल्टीके सब नियमादि बनाये जाते हैं और उनकी स्वीकृति प्रान्तीय सरकारसे प्राप्त करनी होती है।

निर्वाचन।

म्युनिसिपलबोर्डके कार्य संचालकोंको "बोर्डका मेम्बर" कहते हैं। बोर्डके मेम्बर नागरिकोंके बहुमतसे चुने जाते हैं।

म्युनिसिपल्टीके अन्दर किसी जायदातका मालिक होने अथवा ग्रेजुएट होनेसे ही हरएक नागरिक मेंबर हो सकता है। २१ वर्षसे कम अवस्थाका कोई व्यक्ति, अथवा जो अदालतसे "विक्षिप्त" प्रमाणित हो चुका हो, अथवा ऐसा दिवालिया जो कानूनन ऋणके भारसे मुक्त न हो गया हो, अथवा जिसे फ़ौजदारी अदालतसे ६ मास या अधिकके लिये कारावासका दण्ड मिल चुका हो, वह मेंम्बर नहीं हो सकता।

म्युनिसिपल्टीके कर्तव्य।

(च) मुर्दोंका जलाने अथवा गाड़नेके लिये स्थान निश्चित करना और प्रबन्ध करना।

(छ) नागरिकोंकी सुविधाके लिये आम रास्ता, बाजार, वम्बुलिस, पाखाना, पेशाबखाना, और गन्दे पानीके निकासके लिये पनाले बनवाना।

(ज) सड़काके किनारेपर पेड़ लगवाना तथा पेड़ोंकी रक्षा करना।

(झ) नागरिकोंको जलका कष्ट न हो, इसके लिये प्रबन्ध करना।

(ञ) जन्म और मृत्युको दर्ज रजिस्टर कराना।

(ट) नागरिकोंको टीका लगाये जानेका प्रबन्ध करना।

(ठ) सर्व साधारणके लिये अस्पताल बनवाना और उनको कायम रखना तथा अस्पतालोंको आर्थिक सहायता देना।

(ड) प्राथमिक शिक्षाके लिये पाठशालाएं स्थापन करना।

(ढ) आग बुझानेमें सहायता देना तथा आग लग जानेपर जानमालकी रक्षा करना।

(ण) सार्वजनिक पार्क, बाग, पुस्तकालय, अजायबघर, पागलखाने, हाल, दफ्तर, धर्मशाले, ठहरनेके स्थान, पड़ाव, मुहताजखाने, दुग्धशाला, नहानेके घाट, वस्त्रादि धोनेके घाट, पानी पीनेके नल, तालाब, कूएं, बांध तथा अन्य सर्वसाधारणके लिये उपयोगी वस्तुएं बनवाना और उन्हें कायम रखना।

(त) जन संख्याका हिसाब ठीक रखना। इत्यादि

म्युनिसिपलिटियोंकी आयके मार्ग।

म्युनिसिपलिटियां अपना खर्च चलानेके लिए आयात और निर्यात कर लगाया करती हैं, जिसे चुंगी कहते हैं।

१—कोई माल बाहरसे म्युनिसिपलिटीके हदमें आवेगा तो उसपर निश्चित निर्ख, जो हर म्युनिसिपलिटीके दफ्तरमें रहता है, के अनुसार कर लिया जाता है।

२—कोई व्यक्ति यदि मालपर चुंगी न दे, और माल ले आवे तो वह कानूनन दण्डनीय होगा।

३—म्युनिसिपलिटीके नाके नगरके भिन्न भिन्न हिस्सोंमें चुंगी वसूल करनेके लिये बने रहते हैं। वहीं चुंगी वसूल करली जाती है।

४—म्युनिसिपलिटीके ऐसे नाके, जिनमें ऐसी कोई आई हुई चीज हो, जिसकी चुंगीका निर्ख न लिखा हो, तो उसके निर्खका निर्णय चुंगीके सदर दफ्तरसे होगा। जबतक निर्णय न होगा तबतक वह माल चुंगीके सदर दफ्तरमें जमा रहेगा।

५—कागज़ अथवा किताबोंपर किसी किस्मकी चुंगी नहीं ली जाती।

६—जिस प्रकार आने वाले मालपर चुंगी ली जाती है उसी प्रकार म्युनिसिपलिटीके अन्दरसे जो माल जाता है उसपर म्युनिसिपलिटी माल भेजने वालोंको चुंगी वापस देती है।

७—मालकी वापसी चुंगीके लिये म्युनिसिपलिटीके सदर दफ्तरमें दर्खास्त करनी होती है, और वहां मालका मुआइना होकर चुंगी वापस दिये जानेकी आज्ञा होती है।

८—म्युनिसिपलिटीकी हदके अन्दर जो मकानात होते हैं उनपर आमदनी अथवा मालियतके लिहाजसे सालाना कर लगाया

जाता है। ऐसे मकानात जो बन्द रहें उनपर कर नहीं लिया जाता।

९—मकानात जो म्युनिसिपलिटीके अन्दर बनाए जाते हैं, उनके बनानेसे पहले नकशा दाखिल करके म्युनिसिपलिटीसे हुक्म लेना होता है और आज्ञा मिलने पर मकान बनवाया जा सकता है।

१०—स्वास्थ्यके ख्यालसे म्युनिसिपलिटीको अधिकार है कि दिये हुए नकशेमें उचित परिवर्तन करके आज्ञा देवें।

११—प्रस्तावित मकान बनवानेकी मंजूरीके लिये नकशेकी दो प्रतियां दर्खास्तके सहित म्युनिसिपल्टीमें दाखिल करनी होती हैं। उसके बाद म्युनिसिपल्टीकी ओरसे कर्मचारी स्थानका निरीक्षण करके आज्ञा उसी नकशेपर लिखकर उसको १ प्रति लौटा देंगे, दूसरी प्रति दफ्तर म्युनिसिपलिटीमें रहेगी।

१२—आज्ञा मिलने पर १ सालके अन्दर मकान बनवाना आरम्भ हो जाना चाहिए। नहीं तो दूसरा हुक्म लेना पड़ता है।

१३—म्युनिसिपलिटीकी हद्दके अन्दर शिवालय मसजिद बनवानेकी जो दर्खास्तें म्युनिसिपलिटीमें पड़ती हैं, उनके लिये म्युनिसिपल्टीको जिला मजिस्ट्रेटसे आज्ञा लेकर देनी होती है।

१४—जिस म्युनिसिपल्टीके द्वारा पानीकी कल बनी हुई हो, वह म्युनिसिपल्टी जलका कर मकानके करके साथ ही वसूल करती है।

१५—मकान और जलपर जो कर वसूल किया जाता है, वह पेशगी लिया जाता है।

१६—करकी वसूलीका हिसाब प्रति वर्ष १ अप्रैलसे ३१ मार्च तक का होता है। और यह कर दो किस्तोंमें वसूल किया जाता है। १५ दिनोंकी नोटिस कर अदा करनेके लिये दी जाती है। उसके बाद म्युनिसिपल्टीको अधिकार है कि वह उचित कार्रवाई कर वसूल कर लेवे।

१७—जिस प्रकार मकानोंपर कर लगता है, उसी प्रकार नाव, गाड़ी आदि सवारी तथा पशुओंपर भी लगता है।

१८—म्युनिसिपल्टी द्वारा करके निर्द्धारण किये जानेपर यदि

वह अनुचित रीतिपर निर्धारित किया गया हो तो मालिक मकानको अधिकार है कि, वह बोर्डमें दुरुस्तीकी दरखास्त दे और यदि बोर्ड न सुने तो उसके लिये जिला मजिस्ट्रेटके यहां म्युनिसिपलटीके विरुद्ध दरखास्त दी जा सकती है ।

१९—यदि किसी रास्तेपर कोई शव (मुर्दा) पड़ा हो तो उसकी सूचना म्युनिसिपल्टीमें देनेसे वह उसे उठवा देनेका प्रबन्ध करेगी ।

२०—प्रत्येक सवारीको म्युनिसिपल्टीकी सड़कोंपर अपने बायें ओर रहकर चलाना चाहिये । नियम विरुद्ध चलनेपर १०) तक दण्ड किया जा सकता है ।

२१—रात हो जानेपर हर किस्मकी सवारीमें रोशनी लगानी चाहिये । रोशनी न लगी सवारीपर सवारी करनेसे दण्ड हो सकता है । यह दण्ड २०) तक हो सकता है ।

२२—सड़कों या गलियोंमें पशुओंको न बांधना चाहिये । बंधा रहनेपर पुलीसको अधिकार है कि वह उसे मवेशीखानेमें पहुंचा देवे ।

२३—म्युनिसिपलटीकी हद्दके भीतर यदि कोई इमारत खरीदी जाय तो उसे अपने नाम खरीदारको म्युनिसिपलटीमें ३ महीनेके भीतर दर्ज करानेकी दर्खास्त देनी चाहिये ।

२४—म्युनिसिपलिटीकी हद्दके अन्दर रहने वालोंको घरके किसी व्यक्तिके मरने अथवा बच्चा पैदा होने पर म्युनिसिपलिटीमें ३ दिनके भीतर दर्ज करादेना चाहिये ।

ज्योतिषखण्ड ।

[सम्पादक-श्री पण्डित भैयाजी गणनाथ ज्योतिषी, काशी ।]

वारवेला ।

रविवारको दिनके चतुर्थ यामार्द्ध और सोमवारको दिनके सातवें, मंगलको दिनके दूसरे भागमें, बुधवारको दिनके पांचवें भागमें, गुरुवारको दिनके आठवें भागमें, शुक्रवारको दिनके तीसरे भागमें, शनिवारको दिनके छठे यामार्द्धमें वारवेला होती है । यह शुभकार्यमें अत्यन्त निन्दित है ।

नन्दादि तिथियां।

१।६।११ इन तिथियोंकी नन्दा संज्ञा है और २।७।१२ इनकी भद्रा संज्ञा है। ३।८।१३ इनकी जया संज्ञा है। ४।९।१४ इनको रिक्ता तिथि कहते हैं। ५।१०।३०।१५ को पूर्णतिथि कहते हैं।

नक्षत्रोंके नाम।

अश्विनी, भरणी, कृत्तिका, रोहिणी, मृगशिरा, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा, मघा, पूर्वाफाल्गुनी, उत्तराफाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, पूर्वाषाढ़ा, उत्तराषाढ़ा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वाभाद्रपदा, उत्तराभाद्रपदा, रेवती।

नक्षत्रोंके स्वामी।

अश्वी, यम, अग्नि, ब्रह्मा, सोम, शिव, अदिति, बृहस्पति, सर्प, पितृगण, अर्यमा, सूर्य, विश्वकर्मा, पवन, शक्राग्नि, मित्र, इन्द्र, निर्ऋति, जल, विश्व, विरिञ्चि, हरि, वसु, वरुण, अजपाद, अश्वबुध्न, पूषा ये क्रमशः २७ नक्षत्रोंके स्वामी होते हैं। अर्थात अश्विनीके अश्विनीकुमार, भरणीके यम, कृत्तिकाके अग्नि इत्यादि क्रमसे स्वामी जानना चाहिये।

उग्रादि नक्षत्र।

पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा, पूर्वाभाद्रपदा, मघा, भरणी, उत्तराफाल्गुनी, श्रवण, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपदा और रोहिणी नक्षत्रकी उग्र संज्ञा है। पुष्य, अश्विनी, हस्त, इनकी क्षिप्र संज्ञा है। स्वाती, पुनर्वसु, श्रवण, शतभिष और धनिष्ठा नक्षत्रकी चर संज्ञा है। चित्रा, अनुराधा, मृगशिरा, रेवती इनकी मृदु संज्ञा है। अश्लेषा, आर्द्रा, ज्येष्ठा, मूल, इनकी तीक्ष्ण संज्ञा है। कृत्तिका, भरणी और विशाखा नक्षत्रकी मिश्र संज्ञा है। ये अपनी संज्ञाके अनुसार शुभाशुभ फलदायक होते है।

मेषादि द्वादश राशियां।

मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु, मकर कुम्भ, मीन।

नवग्रहोंके नाम और उच्चत्व नीचत्व ।

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
उच्च	मेष	वृष	मकर	कन्या	कर्क	मीन	तुला	कन्या मिथुन	तुला
नीच	तुला	वृश्चिक	कर्क	मीन	मकर	कन्या	मेष	धन	मेष

ग्रहोंके वर्ण ।

मंगल और सूर्यका रंग लाल, चन्द्रमा और शुक्रका वर्ण श्वेत, गुरु और बुधका वर्ण पीत, शनि राहु और केतु इनका वर्ण कृष्ण है।

ग्रहोंकी जाति और स्वभाव ।

गुरु और शुक्र ये ब्राह्मण तथा सात्विक हैं, मंगल और रवि क्षत्रिय तथा राजसिक हैं, बुध और चन्द्र वैश्य तथा सात्विक राजा हैं, राहु, केतु और शनि ये शूद्र और तामसिक हैं।

जन्मलग्नका फल ।

मेष लग्नमें जन्म हो तो दीनता, वृषमें गर्वित, मिथुनमें नाना प्रकारकी बुद्धि, कर्कमें शूरता, सिंहमें स्थिर बुद्धि, कन्यामें अतिमानी, तुलामें सत्यवादिता, वृश्चिकमें मलीन और धनमें पापबुद्धि, मकरमें मूर्ख, कुम्भमें चतुर, मीनमें अधीर होता है।

राशिज्ञान प्रकार ।

अश्विनी भरणी सम्पूर्ण और कृत्तिकाका एक चरण मेषराशि है। कृत्तिकाके तीन चरण और रोहिणी और मृगशिराके दो चरण वृष राशि है। मृगशिराके शेष चरण और आर्द्रा सम्पूर्ण और पुनर्वसुके तीन चरण मिथुन राशि है। पुनर्वसुका एक चरण, पुष्य और अश्लेषा सम्पूर्ण कर्क राशि है। मघा, पूर्वाफाल्गुनी सम्पूर्ण और उत्तरा फाल्गुनीका एक चरण सिंह राशि है। उत्तराफाल्गुनीके तीन चरण, हस्त सम्पूर्ण और चित्राके दो चरण कन्या राशि है। चित्राके दो चरण, स्वाती सम्पूर्ण और विशाखाके तीन चरण तुला राशि है। विशाखाका एक चरण, अनुराधा और ज्येष्ठा सम्पूर्ण वृश्चिक राशि है। मूल, पूर्वाषाढ़ा सम्पूर्ण और उत्तराषाढ़ाका एक चरण धन राशि

है। उत्तराषाढ़ाके तीन चरण, श्रवण सम्पूर्ण और धनिष्ठाके दो चरण मकर राशि है। धनिष्ठाके दो चरण, शतभिष सम्पूर्ण और पूर्वाभाद्रपदाके तीन चरण कुम्भ राशि है। पूर्वाभाद्रपदाका एक चरण और उत्तराभाद्रपदा और रेवती सम्पूर्ण मीन राशि है।

एक नक्षत्रमें चार चरण (यथा चू १, चे २, चो ३, ला ४ अश्विनी) होते हैं और नौ चरणकी एक राशि होती है।

ग्रहोंकी दृष्टि।

यदि जन्मलग्नसे दशम और तृतीय स्थानमें ग्रह पड़े हों, तो वे जन्मलग्नको एक पाद दृष्टिसे देखते हैं। इसी क्रमसे नवम, पञ्चम स्थानमें ग्रह द्विपाद दृष्टिसे, अष्टम और चतुर्थ स्थानमें त्रिपाद दृष्टिसे, सप्तमस्थानमें ग्रह सम्पूर्ण दृष्टिसे जन्मलग्नको देखते हैं। जन्मलग्नसे शनैश्चर एकादश अथवा तृतीय स्थानमें हो, तो पूर्ण-दृष्टिसे लग्नको देखता है। पञ्चम और नवमस्थानी गुरु पूर्णदृष्टिसे जन्मलग्नको देखता है। चतुर्थ और अष्टम स्थानमें भौम हों तो वे भी पूर्णदृष्टिसे जन्मलग्नको देखते हैं।

ताराशुद्धि।

मनुष्यके जन्म नक्षत्रसे दिन नक्षत्रतक गिनकर तीन तीन नक्षत्र नव जगह स्थापित करे। ताराओंके नामोंके अनुसार फल समझकर शुभ कर्म करे। ताराओंके नाम—जन्म, सम्पत, विपत्, क्षेम, प्रत्यरि, साधक, वध, मित्र, अतिमैत्र्य। जन्म तारामें विवाह, श्राद्ध, भैषज्य सेवन और यात्रा कभी न करे। विपत् और प्रत्यरिमें यात्रा निषिद्ध और वधमें सब कर्म निषिद्ध हैं। शेष शुभ हैं।

अष्ट मैत्रीज्ञान।

वर्ण, वश्य, तारा, योनि, ग्रह, गण, भकूट, नाड़ी इनका विचार करके विवाह शुद्धाशुद्ध जाने।

वर्णादिकोंका ज्ञान।

मीन, वृश्चिक, कर्क राशिवाले ब्राह्मणवर्ण होते हैं। मेष, सिंह और धन राशिवाले क्षत्रियवर्ण होते हैं। कन्या, वृष, मकर राशि-वाले वैश्यवर्ण होते हैं। मिथुन, तुला, कुंभ राशिवाले शूद्रवर्ण होते हैं।

वश्य ज्ञान।

सिंहको छोड़कर मनुष्यके वशमें सारे जीव रहते हैं। वधूवरके

गुण मिलाते समय इसका विचार करना बहुत आवश्यक है। जिनका परस्परमें भक्ष्य-भक्षकका सम्बन्ध है, उनके साथ विवाह कभी न करना चाहिये ।

विवाहमें तारा जाननेका क्रम ।

वधू नक्षत्रसे वरके नक्षत्रतक जो संख्या हो, उसमें नवका भाग दे। यदि शेष तीन, पांच, सात रहें तो अशुभ और सब शुभ होते हैं। इसी क्रमसे वरके नक्षत्रसे वधूके नक्षत्रतक गिनकर ताराकी शुद्धाशुद्धि जाननी चाहिये ।

योनिकूट ज्ञान ।

नक्षत्र			योनि
अश्विनी, शतभिषा	...	...	अश्व
स्वाती, हस्त	...	...	महिष
पूर्वाभाद्रपदा, धनिष्टा	...	...	सिंह
भरणी, रेवती	...	...	गज
कृत्तिका, पुष्य	...	...	मेष
पूर्वाषाढ़ा, श्रवण	...	...	वानर
रोहिणी, मृगशिरा	...	...	सर्प
ज्येष्ठा, अनुराधा	...	...	हरिण
आर्द्रा, मूल	...	...	श्वान
उत्तराफाल्गुनी, उत्तराभाद्रपदा		...	गौ
चित्रा, विशाखा	...	...	व्याघ्र
आश्लेषा, पुनर्वसु	...	...	मार्जार
मघा, पूर्वाफाल्गुनी	...	...	मूषक
अभिजित्, उत्तराषाढ़ा	...	...	नकुल

योनिमें पारस्परिक वैर ।

गौ-व्याघ्र, गज-सिंह, अश्व-महिष, श्वान-हिरण, वानर-मेष, बिड़ाल-मूषक इनमें स्वाभाविक परस्पर वैर रहता है। लोक-व्यवहारसे अन्यका भी वैर, और मित्रता समझकर मैत्री मिलानी चाहिये।

ग्रहमैत्री अर्थात् ग्रहोंकी मित्रता।

नाम	रवि	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
शत्रु	शनि शुक्र	०	बुध	चन्द्र	बुध शुक्र	सूर्य चन्द्र	रवि चन्द्र भौम
सम	बुध	शुक्र गुरु भौम शनि	शुक्र शनि	भौम गुरु शनि	शनि	गुरु मंगल	गुरु
मित्र	चन्द्र गुरु मंगल	रवि बुध	चन्द्र गुरु सूर्य	सूर्य शुक्र	सूर्य चन्द्र मंगल	बुध शनि	बुध शुक्र

वर और कन्याके राश्यधिप परस्परमें मित्र हों, तो विवाह अति उत्तम है। सम रहे अर्थात् शत्रु मित्र कुछ भी नहीं, तो साधारण है, किन्तु वैर रहनेपर विवाह कदापि नहीं करना चाहिये। यह उपरि लिखित चक्रमें स्पष्ट किया है।

राश्यधिप।

मेष और वृश्चिक राशिके स्वामी भौम हैं। वृष और तुलाके स्वामी शुक्र हैं। मिथुन एवं कन्या राशिके स्वामी बुध हैं। धन और मीनके स्वामी बृहस्पति हैं। मकर और कुम्भ राशिके स्वामी शनिश्चर हैं। कर्कराशिके स्वामी चन्द्रमा हैं। सिंहके स्वामी सूर्य हैं।

गणविचार।

देवगण—अनुराधा, मृगशिरा, अश्विनी, श्रवण, पुनर्वसु, पुष्य, स्वाती, हस्त, रेवती ये नव नक्षत्र देवगणके हैं।

मनुष्यगण—भरणी, रोहिणी, आर्द्रा, पूर्वा, उत्तरा, पूर्वाषाढ़ा, उत्तराषाढ़ा, पूर्वाभाद्रपदा, उत्तराभाद्रपदा, ये नव नक्षत्र मनुष्य-गणके हैं।

राक्षसगण—आश्लेषा, शतभिषा, मूल, विशाखा, कृत्तिका, मघा, चित्रा, ज्येष्ठा, धनिष्ठा ये नव नक्षत्र राक्षसगणके हैं।

अपने अपने गणमें यदि विवाह हो तो बहुत प्रेम रहता है। देवता और मनुष्यगणमें विवाह होनेपर मध्यम प्रेम होता है, किन्तु राक्षसगणके साथ देवगण तथा मनुष्यगणवालेका विवाह नहीं होना चाहिये।

वरवधूकी नाड़ी जाननेका चक्र।

आदि नाड़ी	अश्विनी	आर्द्रा	पुनर्वसु	उत्तरा फाल्गुनी	हस्त	ज्येष्ठा	मूल	शतभिष	पूर्वाभाद्रपद
मध्य नाड़ी	भरणी	मृगशिरा	पुष्य	पूर्वा फाल्गुनी	चित्रा	अनुराधा	पूर्वापाढ़ा	धनिष्ठा	उत्तराभाद्रपद
अंत्य नाड़ी	कृत्तिका	रोहिणी	आश्लेषा	मघा	स्वाती	विशाखा	उत्तरापाढ़ा	श्रवण	रेवती

विवाहमें विचारणीय नवपञ्चक।

मीनसे नवके अन्तरपर वृश्चिक राशि है और वृश्चिकसे मीन पांचवां। इसी प्रकार कर्क, मीन आदि दो दो राशियोंके नवपञ्चक योग होते हैं, वे विवाहमें अतिनिन्दित हैं।

मृत्युषडष्टक।

मेष और कन्या ये परस्पर छठें और आठवें होनेसे मृत्यु षडष्टक हैं। इसी रीतिसे तुला और मीन, मिथुन और वृश्चिक, मकर और सिंह, कुम्भ और कर्क, वृषभ और धन इन दो दो राशियोंका मृत्युषडष्टक योग कहलाता है, यह विवाहमें वर्जित है।

प्रीतिषडष्टक।

सिंह-मीन, तुला-वृष, कुम्भ-कन्या, मकर-मिथुन, मेष-वृश्चिक, धनु-कर्क, इन दो दो राशियोंका प्रीतिषडष्टक होता है, यह विवाहमें अति शुभ है।

यात्रा-प्रकरण।

यात्राके लिये उत्तम नक्षत्र।

अश्विनी, अनुराधा, रेवती, मृगशिरा, मूल, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, श्रवण, धनिष्ठा ये नक्षत्र यात्राके लिये शुभ कहे गये हैं।

मध्य नक्षत्र।

रोहिणी, पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा, पूर्वाभाद्रपदा, चित्रा, स्वाती, शतभिष, ये नक्षत्र यात्रामें मध्यम कहे गये हैं। इनके अतिरिक्त सब नक्षत्र त्याज्य हैं।

दिशाधिपति।

जिस दिशामें गमन करे, उस दिशाधिपको स्मरण कर ले। पूर्वादि दिशाक्रमसे दिशापतियोंके नामः—सूर्य, शुक्र, मंगल, राहु, शनि, सोम, बुध, बृहस्पति।

दिशाशूल।

रवि और शुक्रवारको पश्चिम, मंगल और बुधवारको उत्तर, सोम और शनिवारको पूर्व और बृहस्पतिवारके दिन दक्षिण दिशाकी यात्रा न करनी चाहिये।

नक्षत्रशूल।

श्रवण और ज्येष्ठामें पूर्व, पूर्वभाद्रपदा और अश्विनीमें दक्षिण, पुष्य और रोहिणीमें पश्चिम, हस्त और उत्तराफाल्गुनीमें दक्षिण दिशामें गमन करना निषिद्ध है।

यात्रामें लग्नविचार।

मेष, धनु, तुला लग्नमें यात्रा करनेपर विलम्बसे कार्यसिद्धि होती है। मकर, कर्कट, वृश्चिक लग्नमें यात्रा करनेपर मृत्यु होती है। सिंह, वृष, कुम्भ लग्नमें यात्रा करनेसे सर्वसिद्धि होती है और कन्या, मिथुन, मीन लग्नमें यात्रा करनेसे वाञ्छित फलकी प्राप्ति होती है।

यात्रामें तिथिविचार।

प्रत्येक षष्ठी, द्वादशी, अष्टमी, प्रतिपदा, पूर्णिमा, अमावास्या, चतुर्थी, चतुर्दशी, नवमी तिथिमें गमन करना शुभ नहीं है।

योगिनीवास-ज्ञान।

प्रतिपत् और नवमीमें पूर्व, तृतीया और एकादशीमें अग्निकोण, पञ्चमी और त्रयोदशीमें दक्षिण, चतुर्थी और द्वादशीमें नैऋत्यकोण, षष्ठी और चतुर्दशीमें पश्चिम, सप्तमी और पूर्णिमामें वायुकोण, द्वितीया और दशमीमें उत्तर, अष्टमी और अमावास्यामें ईशानकोणमें

योगिनी रहती है। आवश्यक होनेपर यात्रा कर सकते हैं, किन्तु अन्तिम नव दण्ड अवश्य त्याज्य हैं। सम्मुखस्थ और दक्षिण योगिनीके रहनेपर यात्रा करनेसे वध बन्धनादि अवश्य होता है। पीछे और वामभागमें रहनेपर सर्वसिद्धिकारिणी होती है।

कालवास-ज्ञान।

रविवारके दिन उत्तर, सोमवारके दिन वायुकोण, भौमवारके दिन पश्चिम, बुधवारके दिन नैऋत्यकोण, गुरुवारके दिन दक्षिण, शुक्रवारके दिन अग्निकोण, शनिवारके दिन पूर्व दिशामें काल रहता है। कालके सम्मुख और दक्षिण रहनेपर यात्रा न करनी चाहिये।

घातचन्द्र-विचार।

मेष राशिसे प्रथम, वृषसे पञ्चम, मिथुनसे नवम, कर्कसे दूसरे, सिंहसे छठें, कन्यासे दशवें, तुलासे तीसरे, वृश्चिकराशिसे सातवें, धनुसे चौथे, मकरसे अष्टमस्थ, कुम्भसे ग्यारहवें, मीनसे बारहवें चन्द्र घातक होते हैं। घातचन्द्रमें यात्रा सर्व आचार्यों के मतसे निषिद्ध है।

प्रशस्त वारकर्म।

रविवारके कर्म—राज्याभिषेक, गीत, वाद्य, यानकर्म, राजसेवा, गाय, बैलका लेना, देना, ओषधिका लेना, शास्त्रप्रारम्भ, सोना, तांबा, ऊनके कपड़े, चर्म, काष्ठ, युद्धकी बात, खरीदना, बेचना ये कर्म रविवारको करने चाहिये।

सोमवारके कर्म—शंख, कमल, मोती, रूपा, ऊख, भोजन, स्त्री-भोग, वृक्ष, जलादि कर्म, अलंकार, गाना, यज्ञादि, गोरस, गाय, भैंसकी खरीदी, पुष्प, वस्त्रधारण इत्यादि सोमवारको करना चाहिये।

मंगलके कर्म—भेदकरना, झूठबोलना, चोरी, विष, अग्नि, शस्त्रवध, नाश, संग्राम, कपट, दंगा, सेनाका पड़ाव, खानि, धातु, सुवर्ण, मूंगा, रक्तस्राव ये भौमको करने चाहिये।

बुधवारके कर्म—चतुरता, पुण्य, अध्ययन, शिल्प, सेवा, अक्षर-लिखना, धातुका व्यापार, सुवर्ण सम्बन्धि कर्म, मित्रता, व्यायाम, वाद ये बुधको करने चाहिये।

गुरुवारके कर्म—धर्म करना, नवग्रहादिकी पूजा, यज्ञ, विद्याभ्यास,

नया वस्त्रधारण, गृहकार्य, यात्रा, रथ-अश्व लेना, औषधि, भूषण धारण करना आदि गुरुवारको करने चाहिये ।

शुक्रवारके कर्म—स्त्रीसंग्रह, गाना, शय्या, मणि, रत्न, हीरा आदि गंध वस्त्रधारण, अलङ्कारधारण, उत्साह प्रदर्शन, वाणिज्य करना, खेत मोल लेना, दूकान करना, खेती करना, द्रव्य लेना इत्यादि शुक्रवारके कर्म हैं ।

शनिवारके कर्म—लोहा, पत्थर, शीशा, जस्ता, शस्त्र, दासता, पाप, झूठ बोलना, चोरी, अर्क निकालना, गृहप्रवेश, हाथी बांधना, मन्त्र लेना और स्थिर कर्म ये शनिवारके हैं ।

देशभेदके अनुसार अक्षांश और समयका निर्णय ।

[अक्षांश और कलकत्तेमें जिस समय १२ बजता है, उस समय दूसरे स्थानोंका समय-निर्णय ।]

स्थान	अक्षांश	घं० मि० से०
अमरावती	२०-५६	११-१७-३६
अमरकोट	२५-२१	१०-४५-३२
अमृतसर	३१-३७	११- ६- ४
अयोध्या	२६-४८	११-३५-३६
आगरा	२७-१९	११-१८-४४
अगरतला(त्रिपुरा)	२३-५१	११-१२-४
अजमेर	२६-२८	११- ५-१६
अम्बाला	३०-२३	११-१२-४०
आरा	२५-३३	११-४५-१६
आरकर	१२-५६	११- ७-४८
औरङ्गाबाद	१९-५२	११- ७-४८
अलीगढ़	२७-५५	११-१८-५६
अलवर	२७-३४	११-१२-५६
अहमदाबाद	२३- २	१०-५७- ०
इन्दौर	२२-४२	११-१०- ०
इमफल	२४-५०	१२-११-२०
इलाहाबाद	२५-२७	११-२४- ५
उज्जैन	२१-१०	११- ९-४०
उदयपुर	२४-३५	११- १-३२
कटक	२०-२८	११-५०- ५
कन्नौज	२७- २	११-२६-१६
करांची	२४-५१	१०-२४-४०
कलकत्ता	२२-३५	०- ०- ०
कानपुर	२६-२८	११-२८- ०
कांची	१२-५०	११-२५-३२
काशी	२५-२०	११-३८-४४
कूचविहार	२६-२०	११- ४-३२
कुमिल्ला	२३-२८	१२-११-२४
कुरुक्षेत्र[स्थानेश्वर]	२९-२९	११-१४-०
कृष्णनगर	२३-२३	१२- ०-२६
कनानोर	११-५२	११- ८- ०
कोचीन	९-५७	११-११-३२
कोलापुर	१६-४४	११-३-२६
खंडवा	२१-५०	११-११-५६
खुलना	२२-४९	१२- ४-५२
गंगासागर	२१-३८	११-५८-२२
गढ़वेता	२२-५०	११-५५-५२
गया	२४-४८	११-४६-४४
गाजीपुर	२५-३५	११-४१- ०
गोदलपाड़ा	२६- ९	१२- ९- ०
ग्वालियर	२६-१३	११-१६-१६
गोरखपुर	२६-४७	११-४० ४
गौहाटी	२६-११	१२-१२-३६
घाटाल	२२-४०	११-५७-३२

स्थान	अक्षांश	घं० मि० से०
चटग्राम	२२-२२	१२-१३-५६
चन्दननगर	२२-५२	१२- ०- ०
छपरा	२५-४७	११-४५-२८
जबलपुर	२३-८ ८	११-२६-२४
जयपुर	२६-५५	११- ९-५२
जलपाईगुड़ी	२६-३२	१२- १-३२
जूनागढ़	२१-३३	१०-४८-१६
झांसी	२५-२७	११-२०-५१
डायमंडहारबर	२२-१२	११-५६-२८
देहरादून	३०-१९	११-१८-४८
ढाका	२३-४२	१२-८ -१०
तञ्जोर	१०-४७	११-२३- ८
त्रिचनापल्ली	१०-५०	११-२१-२४
ट्रावंकोर	८-३०	११-१५-३६
दार्जिलिंग	२७- २	११-५९-४०
दीनाजपुर	२५-३८	१२- १- ८
डिब्रूगढ़	२७-३०	१२-१६-१२
दिल्ली	२८-३९	११-१५-२८
दुमका	२४-१६	११-५५-३२
द्वारका	२२-१५	१०-४२-३८
दरभंगा	२६-१०	११-५०-१२
धनबाद	२३-३८	११-५२-२४
धुवड़ी	२६- २	१२- ३-२८
नदिया	२३-२४	१२- ०-१२
नागपुर	२१- ९	११-२२-१६
नाटौर	२४-२५	१२- २-४४
नवागांव	२६-२२	१२-१७-२४
पाण्डेचेरी	११-५६	११-२५-५३
पटियाला	३०-२१	११-१२-१२
पबना	२४- १	१२- २-४०
पूना	१८-३१	११- २- ३
पुरी	१९-४८	११-४६-१२
पुरुलिया	२३-२०	११-५२- ८
पुर्निया	२५-४६	११-५६-४०
पेशावर	३४- १	१०-५२-५२
फतेहगढ़	२७-२४	११-२४-५६
फैजाबाद	२६-४७	११-३५- ८
फरीदपुर	२३-३६	१२- ६- ०
फिरोजपुर	३०-५६	११- ५- ०
बगड़ीकृष्णनगर	२२-४१	११-५५-५४
बगुड़ा	२४-५१	१२- ४- ८
बरीसाल	२२-४२	१२- ८-१२
बड़ौदा	२२-१८	१०-५६-२८
बर्दवान	२३-१५	११-५८-१२
बरहमपुर(बंगाल)	२४-६	११-५९-३६
बांकीपुर	२५-३६	११-४७- ८
बालेश्वर	२१-३०	११-५४-१६
बीकानेर	२८- १	१०-५१-५६
बीजापुर	१६-५१	११- ९-३२
बिष्णुपुर	२३- ५	११-५५-४८
बिहार	२५-१२	११-४८-४४
बङ्गलौर	१२-५८	११-१४-५२
बरेली	२८-२०	११-२४-१२
वैद्यनाथधाम	२४-२९	११-५३-२४
बम्बई	१८-५४	१०-५१-५२
भद्रक	२१- ५	११-५२-४४
भागलपुर	२५-१५	११-५४-२७
भूपाल	२३-१७	११-१६-२०
मुजफ्फरपुर	२६- ७	११-४८- ४
मथुरा	२७-२८	११-१७-२४
मैमनसिंह	२४-४६	१२- ८-१६
मैसौर	१२-२०	११-१३-१२
मङ्गलोर	१२-५२	११- ५-५६
मदुरा	९-५५	११-१९- ४
मद्रास	१३- ४	११-२७-३६
मालदह	२५- ४	११-५६- ८
मिरजापुर	२५- ९	११-३८-४२
मेरठ	२८-५९	१२-१७-२४
मुंगेर	२५-२२	११-५२-४२
मुलतान	३०-१२	१०-५२-२८
मेदनीपुर	२२-२५	११-५५-५६
जैसोर	२३- ८	१२- ३-२४
जोधपुर	२६-१७	१०-५८-४०
जोड़हाट	२६-४६	१२-२३-२८
रंगपुर	२५-४५	१२- ३-४४
रावलपिण्डी	३३-३७	१०-५८-४८
रांची	२३-२२	११-४८- ०

स्थान	अक्षांस	घं० मि० से०
रानीगंज	२३–३५	११–५५– ४
रामपुरबौलिया	२४–२३	१२– २–५१
रामेश्वर	२९–२८	११–२३–४८
रंगून	१६–४७	१२–३१–३६
लखनऊ	२६–५१	११– ३०–२०
लाहोर	३१–१५	११– ३–५६
लोहारडागा	२३–२६	११–४५–२४
शान्दीपुर	२३–१५	१२– ०–२३
शिवड़ी	२३–५५	११–५६– ५२
शिलाङ्ग	२५–२६	१२–१४– ८
सिलचर	२४–४९	१२–१७– ५६
शिवसागर	२७– ०	१२–१५– ४
श्रीनगर	३४– ६	११– ५–४८
सिलहट	२४–५९	१२–१४– ४
सम्बलपुर	२१–२७	११–४२–४८
सतारा	१७–४१	१२– २–३२
शिमला	३१– ६	११–१५–११
सूरत	२१–१०	११–५७–५६
सोमनाथ	२०–२५	१०–४८– ४
सोलापुर	१७–३८	११–१०– ८
हरिद्वार	२९–५८	११–१९–२४
हजारी बाग	२३–५९	१२–४८– ४
हैदराबाद सिंध	२५–२३	१०-४०– ४
हैदराबाद निजाम	१७·२६	११–२०–२४
हुगली	२५–५७	१२– ०–८

स्थान	घं० मि० से०
सिलोन (कोलंबो)	११–२६
वर्मा (रंगून)	१२–३२
पेकिंग (मध्याह्नोत्तर)	१–५२
टोकियो (सायं)	३–२६
वर्लिन (प्रातः)	७–१
वार्सा (प्रातः)	७–३१
कान्स्टेन्टिनोपल (प्रातः)	८–२
लण्डन (प्रातः	६–९
न्यूयार्क(गत आधीरातके बाद)	१–११
ग्रीनविच ५१–२९	६– ६–३६
रोम (प्रातः)	६–५७
पैरिस (प्रातः)	६–१६
मालटा	६–५१
केपटाउन	७–६
एडेन	८–५७
मारिशस	९–४३
सिङ्गापुर	१२–४८
पर्थ (आष्ट्रेलिया)	१–१६
एडी लेड	३–७
सिडनी	३–५७
विक्टोरिया	३–४०
विनीपेग	११–२५
क्वीबेग	१–११
डेमेरारा	२–१
सेन्टजान्स	२–२५

नाप

कपड़ेका नाप ।

देशी ।

आठ जवका एक अंगुल
३, अंगुलका १ गिरह
८, गिरहका १ हाथ
२, हाथ या १६ गिरहका १ गज

विलायती ।

३ लम्बे जौका १ इन्च
१२ इन्चका १ फुट
१८ इन्चका १ हाथ
३ फीट या दो हाथका १ गज

सोने चांदीका तौल ।

आठ खसखस दानेका १ चावल
८ चावलकी १ रत्ती
८ रत्तीका एक माशा
१२ मासेका १ तोला

विलायती बाजारका तौल ।

८ ड्रामका १ आउन्स
१६ आउन्सका १ पाउन्ड
२८ पाउन्डका १ क्वार्टर
४ क्वार्टरका १ हंड्रेडवेट (हन्दर)
२० हन्दरका १ टन

तौल।

५ चवन्नीका एक कच्चा
४ कच्चे का १ छटाक
४ छटाक या २०.भरीका १ पाव
४ पाव का १ सेर
५ सेरका १ पसेरी
८ पसेरी या ४० सेरका १ मन

वीलायती सिक्का।

४ फारदिंका १ पेनी
१२ पेन्सका १ शिलिङ्ग
२० शिलिङ्गका फ्लोरिङ्ग
५ ,, का १ क्राउन
२० ,, का १ पाउण्ड
*२७ ,, का १ मेटोर

विलायती तौल मन आदिके हिसाबसे।

२$\frac{1}{2}$ भरीका १ आउन्स
करीब आधे सेरका १ पाउण्ड
१३ सेर १० छटाकका १ क्वार्टर
१ मन १४$\frac{1}{2}$ सेरका १ हन्दर
१ मनमें ८२ पाउण्ड
२७ मन १० सेरका १ टन

समय-विभाग।

६० अनुपलका १ विपल
६० विपलका १ पल
६० पल या २४ मिनटका १ दण्ड
२$\frac{1}{2}$ दण्डका १ घण्टा
७$\frac{1}{2}$ दण्ड या ३ घंटेका १ प्रहर
८ प्रहरका १ दिन (दिन-रात)
४८ मिनटका १ मुहूर्त या वारकक्षण
७ दिनका १ सप्ताह
१५ दिनका १ पक्ष
२ पक्ष या ३० दिनका एक महीना
२ महीनेकी एक ऋतु
६ ऋतु या १२ महीनेका १ साल
१२ सालका १ युग
१०० वर्षकी १ शताब्दी

डाक्टरी तौल।

२० ग्रेनका १ स्क्रूपल
३ स्क्रूपलका १ ड्राम
८ ड्रामका १ आउंस
(२१ रुपया भारी)
१२ आउंसका १ प्वाइण्ट
१८० ग्रेनका १ रुपया भर होता है।

दूसरे प्रकारसे—

६० मिनिम (बूंद) का १ ड्राम
८ ड्रामका १ आउंस
१६ आउन्सका १ प्वाइण्ट
१२ आ० का १ छोटा प्वाइण्ट

दूरीका विलायती* नाप।

१२ इन्चका १ फुट
३ फुटका १ गज
५$\frac{1}{2}$ गजका १ पोल
४० पोल या २२० गजका १ फरलांग
८ फरलांग या १७६० गजका १ मील

कागजका नाप।

फुलस्केप	साइज	१७ × १३$\frac{1}{2}$	इंच
डबलफुलिस्केप	,,	१७ × २७	,,
क्राउन	,,	१५ × २०	,,
डबल क्राउन	,,	२० × ३०	,,
डिमाई	,,	१८ × २२	,,
डबल डिमाई	,,	२२ × ३६	,,
मिडीयम	,,	१२ × २६	,,
रायल	,,	२० × २३	,,
डबल रायल	,,	२३ × ४०	,,
सुपर रायल	,,	२२ × २८	,,
डबलसुपर रायल	,,	२८ × ४४	,,

नोट—२१ शि० की एक गिनी होती थी, किन्तु अब वह प्रचलित नहीं है। अतएव पाउण्डको ही गिनी माना है।

नोट—एक आउंस करीब करीब आधी छटांकके बराबर है १ पाउण्ड या १ प्वाइण्ट आधे सेरके बराबर होता है।

स्वप्नतत्त्व।

नेपोलियनके ग्रन्थ (the Imperial Royal Fortune teller) से।

जो दोषज (किसी रोगविशेषका) स्वप्न होता है, जो श्रुत (सुना हुआ स्वप्न), जो चिन्तित (दिनको सोचा हुआ), इच्छित (इरादा किया हुआ), स्वभावज (कफ, पित्त, वात आदिके विकारसे) होते हैं, उनको छोड़कर शेष स्वप्नोंका निर्णय नीचे लिखा जाता है।

१—शुक्ल प्रतिपदाका स्वप्न शुभ फलप्रद है।
२—द्वितीयाका स्वप्न निष्फल।
३—तृतीयाका स्वप्न सफल।
४—चतुर्थीका स्वप्न निष्फल।
५—पञ्चमीका स्वप्न कुछ फल देता है।
६—षष्ठीका स्वप्न जल्दी सफल होना कठिन है।
७—सप्तमीका स्वप्न गुप्त रखनेसे सिद्ध होता है।
८—अष्टमीका स्वप्न शीघ्र सिद्ध होता है।
९—नवमीका स्वप्न शीघ्र सिद्ध होता है।
१०—दशमीका स्वप्न सफल होता ही नहीं।
११—एकादशीका स्वप्न भी सफल नहीं होता।
१२—द्वादशीका स्वप्न कभी कभी सफल होता है।
१३—त्रयोदशीका स्वप्न शीघ्र सिद्ध होता है।
१४—पूर्णिमाका स्वप्न देरमें सिद्ध होता है।
१५—कृष्ण पंचमीका स्वप्न देरमें सिद्ध होता है।
१६—कृष्ण एकादशीका स्वप्न अवश्य सिद्ध होता है।
१७—कृष्ण षष्ठीका स्वप्न मिथ्या होता है।
१८—कृष्ण द्वादशीका स्वप्न मिथ्या होता है।
१९—कृष्ण त्रयोदशीके स्वप्नसे बुरा फल होता है।
२०—कृष्ण चतुर्दशीका स्वप्न शुभ होता है।

छींका सकुन

सम्मुख और दहिनी छींक अशुभ है, बायीं और पीठकी छींक शुभ है। ऊपर और नीचेकी छींक फलहीन है। आसनपर, शयन स्थानपर, दान देते समय, भोजनके समय, रणयात्राके समय छींक

हो तो शुभ है। पूर्वकी छींक अशुभ। आग्नेयकी दुःखकारिणी। दक्षिणकी अरिष्टकारिणी। नैऋत्यकी शुभ। पश्चिमकी मिष्टान्नदात्री। वायव्यकी धनदात्री। उत्तरकी कलहकारिणी। ईशानकी शुभ है। अपनी छींक भयकर्तृ। ऊपरकी शुभ और नीचकी अशुभ है।

नेत्र और बाहुस्फुरण।

स्त्रियोंके बायें और पुरुषके दाहिने नेत्र तथा बाहु स्फुरित हों, तो शुभ। इससे विपरीत अशुभ है।

पल्ली-पतन विचार।

मस्तक—राज्यप्राप्ति, भाल—बन्धुदर्शन, भृकुटी—राजसम्मान, नासिका-व्याधि, कान-लाभ, नेत्र-बन्धन, कण्ठ-शत्रुनाश, उदर-राजाश्रय, दक्षिणबाहु-सुख, वामबाहु-राजक्षोभ, स्कन्ध-विजय, भुज-मिष्टान्नप्राप्ति आदि फल होते हैं।

हस्तरेखाफल

पुरुषोंके दाहिने और स्त्रियोंके बायें हाथकी रेखाएं देखनी चाहिये। जिसके हाथमें मीनकी रेखा होती है, वह धनाढ्य और बहुत पुत्रवाला होता है, इसमें कोई सन्देह नहीं है। जिसके हाथमें तराज़, नगर और वज्रकी रेखा रहती है, वह वाणिज्यसिद्ध होता है। पद्म, धनुष और तलवारकी रेखावाला बहुत सुखी होता है। जिसके हाथके बीचमें त्रिशूल रहता है, वह राजा होता है और यज्ञ, धर्म, अर्चन, विप्रपूजामें प्रेम रखने वाला होता है।

शक्ति, तोमर, बाण जिसके हाथमें रहते हैं और साथही साथ रथ, चक्र, ध्वजादि भी यदि हों, तो वह मनुष्य निश्चय राज्य प्राप्त करता है। अंकुश, कुण्डल, चक्र जिसके हाथमें रहे, वह पुरुष अवश्य भूमिपाल होता है। पर्वत, कंकण और मुण्डमालाकी रेखा जिसके हाथमें रहती है वह निश्चय राजाका मंत्री होता है। सूर्य, चन्द्र, लता, नेत्र, अष्टकोण और त्रिकोण तथा मन्दिर, हाथी और घोड़ेकी रेखा जिसके हाथमें हो, वह पुरुष अवश्य धनयुक्त होता है। यदि अंगुष्ठके बीचमें यवकी रेखा हो तो वह सुख-भोगी होता है। मध्यमा और तर्जनीके मूलमें यदि यवकी रेखा हो, तो धनवान् और सुखभोगी अवश्य हो और अपने घर रहनेवाला हो।

सं० १६८७ के पर्वदिन ।

३१ मार्च नववर्ष, नवरात्रारंभ,
२ अप्रैल गणगौरी,
६ „ दुर्गाष्टमी,
७ „ रामनवमी,
१२ „ हनुमज्जयन्ति,
२८ „ सोमवती अमावास्य,
१ मई अक्षय्यतृतीया,
११ „ नृसिंहचतुर्दशी,
२७ „ वटसावित्री,
६ जून गङ्गा दशहरा,
७ „ निर्जला एकादशी,
२८ „ रथयात्रा,
६ जुलाई विष्णुशयनी एकादशी,
६ „ चातुर्मास्यव्रतारम्भ,
१० „ गुरुपूर्णिमा,
३० „ नागपञ्चमी,
८ अगस्त श्रावणी रक्षाबन्धन,
१७ „ जन्माष्टमी,
२६ „ हरतालिका,
२७ „ गणेश चतुर्थी,
२८ „ ऋषिपंञ्चमी,
३१ „ लक्ष्मीस्थापन,
६ सितंबर अनन्तचतुर्दशी,
८ „ महालयारंभ,
१ „ महालक्ष्मी जीवत्पुत्रिका
„ मातृनवमी,
२२ „ पितृविसर्जन, सोमवती
अमावास्या,
२३ „ नवरात्रारम्भ
३० „ महाष्टमी,
१ अक्तूबर दुर्गानवमी,
२ „ विजयादशमी,
७ „ शरत्पूर्णिमा, चंद्रग्रहण
सम्भावना,
११ „ करक चतुर्थी
१८ „ धनतेरस,
२१ „ दीपमालिका,
२२ „ अन्नकूट,
२३ „ भ्रातृ द्वितीया,
३० „ अक्षय्यनवमी,
२ नवंबर प्रबोधिनी एकादशी,
४ „ वैकुण्ठ चतुर्दशी,
१३ „ भैरवाष्टमी,
७ जनवरी गणेशचतुर्थी,
१४ „ मकरसंक्रान्ति पुण्यकाल
१८ „ मौनी अमावास्या,
२३ „ वसन्तपञ्चमी,
२६ „ अचला सप्तमी,
१५ फरवरी महाशिवरात्रि,
३ मार्च होलिकादहन,
४ „ होली (चतुःषष्ठी यात्रा)
५ „ होलिका धूलिवन्दन,
१७ „ वारुणी ।

संवत् १९८७ का जन्मराशिके अनुसार वर्षफल ।

मेष राशि ।

मेष राशि वालोंको इस वर्ष १९८७ संवतमें द्रव्यका खर्च बहुत होगा, वर्षके आरंभमें दूसरी बातोंमें कुछ शुभ फल होने पर भी ज्येष्ठसे बीच बीचमें सामान्य शारीरिक दुःख भी होगा ।

वृष राशि ।

वृष राशि वालोंको यह अशुभ वत्सर है, वर्षारंभमें मानसिक भय-संचार, बन्धु-विच्छेद, शत्रुसे पीडित होनेकी आशंका और अनेक प्रकारके अनिष्टकी आशंका मालूम होती है, ज्येष्ठ कृष्ण १२ के बादसे धनागमनका योग है, और मार्गशीर्षके अन्तसे शारीरिक क्लेश, रोग, भय आदि विशेष अशुभ फल होगा ।

मिथुन राशि ।

मिथुन राशि वालोंको जेष्ठ कृष्ण १२ तक शरीर कष्ट और मन संताप आदि अशुभ फल होगा, उसके बादसे व्यापार या आजीविका संबंधी कामकाजमें उत्तरोत्तर अच्छे दिन होंगे, धनका आगमन और मानसिक स्वच्छन्दता आदि भी बुरे नहीं होंगे ।

कर्कराशि ।

कर्कराशि वालोंको इस वर्षके आरम्भसे ही अनेक प्रकारके सुख भोग, कामकाजमें उन्नति, सन्मान वृद्धि, और धनागमका योग मालूम होता है, वर्षके आखिरी ३ मासमें कुछ कुछ बातोंमें कुछ अशुभ फल भी होगा ।

सिंह राशि ।

सिंहराशिवालोंको इस वर्षमें सन्तानादिकी पीड़ा, द्रव्य व्यय, आजीविकामें नुकसान आदि अशुभ फलकी संभावना होनेपर भी वह ज्यादे कष्टप्रद नहीं है, वर्षके अन्तिम भागमें सब विषयमें आनन्द होगा ।

कन्या राशि ।

कन्या राशि वालोंको इस वर्षमें अपने प्रेमीसे मनमोटाव होगा । और शत्रुसे पीड़ा होनेकी सम्भावना है और अन्यान्य विषयमें यह वर्ष साधारण ही रहेगा ।

तुला राशि।

तुलाराशि वालोंको प्रारम्भमें यह वर्ष धनका खर्च आदि कुछ कष्ट देने पर भी ज्येष्ठ कृष्ण १२ से धनोपार्ज्जन, सुख, सन्तान, कार्य्योन्नति, और मनकामनाकी सिद्धिका योग मालूम होता है।

वृश्चिकराशि।

वृश्चिकराशि वालोंको इस वर्षके प्रथममें राज्य सम्मान जैसे फलकी संभावना है, परन्तु शारीरिक क्लेश, धन-नाश, अनेक प्रकार के अनिष्टकारक योग, शत्रुवृद्धि और स्वजन पीड़ा आदिसे यह वर्ष वीतेगा, मार्गशीर्षके बादसे विशेष अशान्तिकी सम्भावना है।

धनराशि।

धनराशि वालोंको इस वर्षके आरम्भमें और अन्तमें साधारण शुभ फल होनेपर भी वर्षके मध्यमें आत्मीय पीड़ा, चित्त-क्लेश, धन-नाश, सन्ताप, धर्म्म-कार्यमें विघ्न, और आजीविका आदिमें असुविधा होनेकी सम्भावना है।

मकरराशि।

मकरराशि वालोंको इस वर्षमें खर्चकी अधिकता, देहपीड़ा, पराक्रम हानि, शत्रुओंसे भय, आदि अनेक कष्टकी संभावना है, मार्गशीर्षके पश्चात् आजीविका संबन्धी कुछ सुविधा और शारीरिक सुखकी आशा होती है।

कुम्भराशि।

कुंभराशि वालोंको यह वर्ष प्रारम्भमें कुछ अशुभ है, बादमें धन-लाभ, सन्मान, शारीरिक स्वस्थता, राजसम्मान, और सुखलाभका योग है, आत्मीय स्वजनोंसे सुख, और आजीविकावृद्धिका योग है, वर्षके मध्यमें खर्चकी अधिकता और कई कार्य्योंसे उद्वेग होने की सम्भावना है।

मीनराशि।

मीनराशि वालोंको इस वर्षके आरम्भसे मार्गशीर्ष पर्यन्त सन्तान आदिका क्लेश, मानसिक चिन्ता, मनके कार्य्यमें विघ्न, इत्यादि अशुभयोगकी सम्भावना है, इसके बादसे कुछ अच्छा दिन बीतनेकी सम्भावना है।

श्री सम्वत् १९८७ का वर्षफल।

सुभानु संवत्सरका फल-

इस वर्षमें राजाओंमें झगड़ा, अन्नका बहुत सस्तापना, सांपोंकी भयंकरता, कहीं कहीं अधिक व्याधि व रोग इत्यादि, कहीं कहीं वर्षा अच्छी, प्रजाको सुख भी कहीं कहीं होगा।

राजाका फल।

काम्बोज, काश्मीर, कलिंग देशोंमें होगा। मंगल कारक उत्तम वर्षा, उत्तम अन्न,मनुष्योंको सुख, राजाओंका उदय, गौवोंकी निरोगता और उत्तम दुग्ध तथा उत्तम ब्राह्मणोंका प्रजासत्कार होगा।

मंत्रीका फल।

वाह्लीक मालव देशोंमें अन्न धन वर्षा उत्तम होनेपर भी चोरोंका और रोगका अधिक डर रहेगा। राजाओंसे पीड़ित जन चोरीका कार्य करनेमें तत्पर होंगे।

वर्षाके अधिपतिका फल।

पौंड्र विदर्भ देशोंमें पानीकी वर्षा बहुत ज्यादा, उपद्रवसे रहित अन्नोंकी उत्पत्ति, अपने कर्मोंमें आसक्त ब्राह्मणादि, राजाओंमें प्रेम तथा पृथ्वी सब रसोंसे पूर्ण होगी।

चैत्रके अन्नपतिका फल।

सब देशोंमें गेहूं सरसोंकी अधिक वृद्धि,गरीबों अमीरोंको आनन्दरसके पदार्थोंका सस्तापन तथा गौवें रोगरहित होकर बहुत दुग्ध देंगी।

वर्षाके स्वामीका फल।

सर्व देशोंमें कभी जलकी वर्षा अच्छी कभी दुखदायक होगी। समस्त प्रजाओंमें किसीको गुप्त रोग किसीको प्रत्यक्ष और राजाओंके हृदयोंमें दुख, चोरोंसे ज्यादा हानि, फल मूल अन्नका भाव ज्यादा महंगा रहेगा।

रसके स्वामीका फल।

कोंकण मगध देशोंमें यज्ञोंका उत्सव, प्रजावर्गोंमें उत्सव, वर्षासे सन्तुष्ट चित्त पृथ्वी सुभिक्षसे तथा राजाओंके पापोंसे रहित होकर

आनन्दमय होगी। गौवोंका ऊन रेशमका भाव सस्ता तथा अन्य-रसके पदार्थोंका भाव मन्दा रहेगा।

धनके स्वामीका फल ।

प्रजाओंको राजाओंसे दुख पौष मासमें सब वस्तुओंका भाव अधिक तेज और तुषके धान्योंकी हानि होगी।

किलेके स्वामीका फल ।

समस्त देशोंमें प्रजागणोंको दुख होगा अनेक तरहके शत्रुओंका सामना तथा खेतीके धन्देमें टीड़ा मूंसा का उपद्रव रहेगा।

तक्षक नागका फल ।

सबल मेघ होकर खण्ड २ में महावृष्टि करेंगे। पृथ्वी दुध दही घीसे पूर्ण होगी॥

वरुण मेघ तथा संवर्तक मेघका फल ॥

पृथ्वी जलसे पूर्ण होगी॥ वर्षाढक प्रमाण १०० है, जिससे समुद्रमें ५० पहाड़ोंमें ३० पृथ्वीपर २० आढक वर्षा होगी।

आढक प्रमाण ।

४० कोश लम्बे ४० कोस चौड़े बरतनमें जितना जल रहे। उतनेका एक आढ़क होता है। रोहिणी पहाड़ पर है। फलमें वर्षा कहीं २ पर होगी। समयका वास कुम्हारके घर है॥

आर्द्राप्रवेश तिथिका फल ।

अनेक मंगल कार्य होंगे। हर तरहसे शुभ फल होगा।

नक्षत्र फल ।

समस्त पशु पक्षियोंकी वृद्धि होगी मंगल कार्य अधिक होंगे।

योगफल ।

राजाओंमें कलह झगड़ा इत्यादि होगा।

वारफल ।

समस्त आदमियोंके हृदयमें दुख दुर्बलता व्यापैगी।

रात्रिमें प्रवेशका फल ।

वर्षा अच्छी अधिक होगी तथा सब अन्नोंकी सस्ताई रहैगी।

संवत्सरका ग्रहानुसार मुख्यफल ।

इस वर्षके किसी महीनेमें रोग बडे जोरोंसे फैलेगा जिससे प्रायः बहुतसे देशोंमें हानियां जोरोंसे होंगी । यह रोग दो तरहका है (१) ज्वर इत्यादि (२) असहयोगादि—यह दोनों रोग मनुष्यों को जरूर ही बड़ी मात्रामें बढ़कर संसारके बड़े हिस्सेमें खलबली मचायेंगे । सामान्य रीतिसे मनुष्योंको सुख दुख बराबर । पशुओंको पहिले बड़ी हानि बाद बहुत लाभ होगा । असहयोगका आन्दोलन पहिले जोरसे चलेगा, गवर्नमेंटसे लाभ भी सामान्य रीतिसे होगा, व्यापारमें पहिले हानि गहरी है अन्तमें राजयुद्धोंकी संभावनासे व्यापार उत्तम चल जायगा और रोजगारी लोग हर तरहसे सुखी हो जांयगे । वर्षाका विचार पूर्ण रूपसे नहीं किया जा सकता है क्योंकि कहीं २ तो एक दम सूखा पड़ेगा कहीं कभी सूखा कभी पानी, कहीं २ पानी एक महीना जोर भर बरसकर सफा हो जायगा । परंतु जितना जल जहां वर्षेगा वह फायदा कारक होगा अन्तमें इस साल नदियोंके बवाह बहुत कम आयेंगे । तब भी तृण घास सामान्य भावपर ही बिकेगा । फल इस साल किसी देशमें अधिक पैदा होंगे जिससे सब देशोंमें पहुंचेंगे और सब जगहोंमें फलोत्पत्ति कमती होगी इस साल हैजेकी बीमारियां अधिक होगी, चोरोंका भय भी अधिक होगा, राज्य दंड तो सबसे अधिक होगा । समस्त सनातनी जनतामें कोई बड़ी सनसनी फैलेगी । गवर्नमेंटके प्रति विरोध कई तरहसे होंगे । इस साल गर्मीके दो महीनेमें कोई नया रोग बड़ा भारी होगा । हैजेकी तरहका । और जाड़ेके दो महीनोंमें असहयोगादि चर्चा जोरोसे होगी । वर्षामें आदि अन्तके महीनोंमें वर्षाका योग उत्तम है । बीचके दो महीनोंमें वर्षा कहीं दुखदाई कहीं सुखदाई होगी । इस साल वर्षाकी फसल आठआनेसे कुछ कमही होगी ज्यादा नहीं । शुरुमें जल बरसनेसे उत्तम फसल उत्पन्न होकर बीचमें सूखनेसे बिगड़ जायगी । बाद कोई कीड़ा लगनेसे बिगड़ेगी अन्तमें फिर अच्छा जल बरसनेसे फसल उत्तम बन जायगी । यह फसल परिश्रमसे उत्तम बन सकेगी ऐसा योग भी है । इस फसलको सुप बहुत कम है तब भी किसी तरहसे आठ आने तक हो जायगी । बाद चैत्रकी फसल कहीं २ बारह आनेसे भी ज्यादा होगी । अगर

"टाड़ीमूसा"से और चोरोंसे बचैगी तो यह फसल उत्तम होगी जाड़ेके दिनोंमें जल वर्षा होगी इससे उपज अधिक होगी। कहीं २ तुषार अधिक लगैगा। इस संवत्में अधिकतर गावोंके व शहरोंके सभी आदमियोंको कष्ट अधिक होगा। दुर्गा हवनसे सर्वत्र ही जनताको आनंद हो सकता है। इस साल पूर्वके देशोंमें तो वर्षामें व ग्रीष्ममें दोनों बराबर हानि उठानी पड़ेगी। परन्तु खाने मात्रको बहुत हो जायगा। पश्चिममें वर्षासे कुछ ग्रीष्ममें सुधार होगा। मध्यप्रदेशमें वर्षाका धान्य आठ आना, ग्रीष्मका बारह आना होगा। दक्षिणमें वर्षाका धान्य अच्छा होगा। चैत्रमें तुषारसे बिगड़ना संभव है अथवा टाड़ी इत्यादिसे। उत्तरमें दोनों पक्ष बराबर ही प्रायः है पूर्वके देशमें धान इत्यादि समरीतिसे होगी मध्यदेशमें कहीं २ धान कोदों इत्यादि तुष धान्य आठ आना होगा। मालवामें पीछे पानी बरसनेके कारण ज्वार नहीं होगी, धान कुछ अच्छी हो जायगी। जहां तुषार लगैगा वहां चना बहुत उत्तम होगा।

इस वर्ष वर्षा मध्यम, वर्षा धान्य आठ आना, ग्रीष्मका बारह आने तक, तृण घास सस्ता, कपड़ा सस्ता रहेगा। सर्वत्र राजकीय उपद्रव, प्रजामें रोगसे हलचल, भारतवर्षको गवर्नमेण्टसे सामान्य लाभ होगा।

आर्द्रादि दशतारका जल संख्या। पर्वतभूमौ ५०

आ.	पु.	पु.	श्ले	म.	पू.	उ.	ह.	चि.	स्वा.	नक्षत्र
६	४	६	६	५	६	५	५	४	४	आढ़क
१९	१०	११	१९	५१	५२	५१	१५	१०	१०	संख्या

मासपरत्वेन जल संख्या। पर्वत भूमौ ५०

आषाढ़े७।१५श्रावणे१३।४६ भाद्रे१७।१२आश्विने ११।३६ कार्तिके १०।८

विन्ध्योत्तरे देशे विंशोत्तरीमानेन आयव्यय चक्रम्।

मेष	वृष	मिथुन	क.	सिंह	क.	तुला	वृ.	धन	म.	कुं.	मीन	राशयः
११	५	११	५	८	११	५	११	८	२	२	१८	लाभ
१४	८	५	१	१४	५	८	१४	५	८	८	५	व्यय

विन्ध्यदक्षिणे देशे अष्टोत्तरीमानेन आय-व्यय चक्रम् ।

मेष	वृष	मिथुन	क.	सिंह	क.	तुला	वृ.	धन	म.	कुं.	मीन	राशयः
१४	१८	११	५	८	११	८	१४	२	५	५	२	लाभ
२	११	८	८	२	८	११	२	११	५	५	११	व्यय

आयव्यय ज्ञानप्रकार—आयव्ययौ समीकृत्वा एकहीनं तु कारयेत् । अष्टभिस्तु हरेद्भागं शेषांके फलमादिशेत् ॥ १ ॥ अथवा लाभं १ सौख्यं २ तथा क्लेशं ३ लोभं ४ लोकोपवादकम् ५ सन्मानं ६ विजयं ७ हानिं ८ कथितं पूर्वसूरिभिः ॥ २ ॥ अपनी राशिके लाभ खर्चको जोड़कर उसमें १ घटाकर ८ का भाग दे । जितना शेष बचे सो क्रमसे फल जानै ॥ लाभ १ सौख्य २ क्लेश ३ लोभ ४ लोकनिन्दा ५ सम्मान ६ विजय ७ हानि ८ यह फल क्रमसे होते हैं ।

चन्द्रग्रहण ।

श्रीसंवत् १९८७ शाके १८५२ आश्विनशुक्ल १५ भौमे (७ अक्टूबर ईस्वी सन् १९३०) रेवती भे चंद्रग्रहणं ग्रासमानं ०।२१ व्यंगुल ।

चंद्रग्रहणम् ।

ऽ	सूर्योदयात्	सूर्योदयघटिकातः	रेलवेघटिकातः
समय	घटी । पल	घंटा । मिनिट	घंटा मिनिट
स्पर्श	४५।५१	०।३२	०।४६
मध्य	४६।४२	१ । ७	१।११
मोक्ष	४७।३३	१ । १३	१।२७

अंगुल भरसे भी ग्रास कम है, इसलिये चित्र नहीं दिया गया है। यह ग्रहण दुर्बीन-से दिखाई देगा चंद्र-मामें कुछ मैलापन जरूर ही आवेगा ।

जगल्लग्नं ।
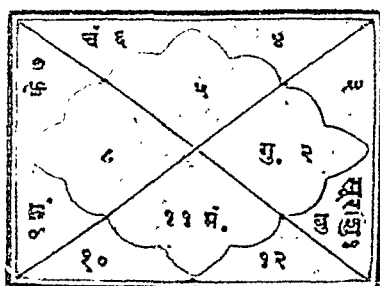
अब वर्षमें जगल्लग्नसे समस्त प्राणियोंके फलाफलकी रीति बताई जाती है। जन्मोदयाद्वाब्दजग प्रवेश लग्नं हि यद्भावगतं शुभान्वितं ॥ तद्भाववृद्धि प्रकरोति वर्षे पापान्विते तद्भवनस्य हानिः ॥ जन्मागतेसुखं २ अर्थे लाभाग्नौ ३ वंशवृद्धि कृत् ॥ तुर्ये मित्रसुखं पुत्रे पुत्रं षष्टे पराजयः ॥ २ ॥ स्त्री सौख्यमस्ते ७ मृत्यौरुक् ८ धर्मे धर्म ख १० गे धनं ॥ लाभे ११ लाभो दुःखमंत्ये १२ जन्मार्दर्कप्रवेशगे ॥ ३ ॥ जन्म लग्नसे जगल्लग्न जिस स्थानमें हो उस स्थानमें कहे माफिक फल कहना चाहिये । यदि वह राशि शुभ ग्रहसे युक्त हो तो शुभ फल, पापग्रहसे युक्त हो तो पाप फल होगा। पाप-शुभ दोनों मिश्र होंगे तो मिश्र फल होगा। पूर्ण चंद्रमा (यानी शुक्ल पक्षकी १० से कृष्णपक्षकी पंचमी ५ तक पूर्ण चन्द्रमा होता है) बुध, गुरु, शुक्र, शुभग्रह हैं। बाकी सूर्य, मंगल, शनि राहु, केतु, पाप और क्रूर ग्रह हैं। उनका क्रमसे फल कहना। जैसे जगल्लग्नकी राशि जन्म लग्नमें हो तो सुख, द्वितीयमें धन, तृतीयमें वंश वृद्धि, चतुर्थमें मित्रसुख, पंचममें पुत्रसुख, छठवेंमें पराजय, सप्तममें स्त्री सौख्य, अष्टममें रोग, नवममें धर्मवृद्धि, दशममें धनप्राप्ति, एकादशमें लाभ, द्वादशमें दुःख होगा। अब इसमें शुभ ग्रह हो तो शुभफल विशेष कहना और पाप ग्रह हो तो अशुभ विशेष कहना। शुभ पाप दोनों हों तो मिश्रफल कहना। पाप ज्यादा हो तो पापफल और शुभ हो तो शुभफल विशेष कहना। यह समस्त फल जन्म या लग्नसे राशिसे हर एकको कहना चाहिये।

मुख्य ज्ञातव्य विषय ।

ज्येष्ठ शुक्ल ११ शनिवारको गुरुका अस्त पश्चिममें है। आषाढ़ शुक्ल ६ शुक्रवारको गुरुका उदय पूर्वमें होगा। ज्येष्ठ कृष्ण १० शुक्रवारको मिथुनके बृहस्पति होंगे। अगहन कृष्ण १० शनिवारको

शुक्रका अस्त पश्चिममें होगा और सुदी ६ बुद्धवारको शुक्रका उदय पूर्वमें होगा। कार्तिक शुक्ल १० शनिको मीनके राहु तथा कन्याके केतु होंगे। इस वर्षमें राजा चन्द्रमा, मंत्री सूर्य वर्षाके अन्नपति बुध, चैत्रके अन्नपति चन्द्रमा मेघोंका स्वामी शनि, रसोंका स्वामी शुक्र, नीरसेश भौम, फलका स्वामी शनि, धनका स्वामी मंगल, किलोंका स्वामी शनि होगा। सोमवती अमावस्या २ होगी। वर्षा विश्वा १५ धान्य १७ तृण ६ शीत ७ तेज १३ वायु ७ वृद्धि १५ क्षय १५ विग्रह११ अहंकार १० सत्य ६ धर्म १० पाप १८ विश्वा होगा।

चैत्रशुक्लपक्ष फल।

इस पक्षमें पशुओंको कोई बड़ा रोग उत्पन्न होगा, मनुष्योंको भी कोई साधारण बीमारी विशेष रूपसे होगी। बादलोंकी छाया कभी कभी हो जाया करेगी टाड़ीका प्रकोप होगा, जिससे धान्यमें हानि होगी। चोरोंका भय अधिक रूपसे होना शुरू हो जायगा। चावल, उड़द, मूंगका भाव तेज होकर सम होगा। हरएक जगह हवनादि शांति जरूर होनी चाहिये। इससे अगाड़ी हैजा इत्यादि उस जगह प्रवेश न करेगा। कहीं कहीं पानी बरसनेसे धान्यकी हानि हो जायगी। इस पक्षमें प्रायः फल अच्छा बहुत कम होगा, किन्तु किसानोंको साधारण आराम रहेगा। गेहूं जव चना मंसूरका भाव सम रीति-पर रहेगा।

वैषाखमासफल।

इस महीनेमें किसी २ जगह पानी बड़े जोरसे बर्सेगा। चोरोंका भय सर्वत्र अधिक रूपसे सुनाई पड़ेगा, रोग इस मासमें मध्यम रूपपर हो जायगा। पशुओंको पीड़ा अधिक हो जायगी। अन्नकी पैदायश कई कारणोंसे बहुत कम हो जानेकी संभावना है। प्रजामें राज्यसे असंतोष फैलेगा। शांतिके लिये राज्यसे अधिक प्रबंध होनेपर भी पूर्णतया न होगी। जहां कहीं हैजेका प्रकोप शुरू हो जायगा। गेहूं, जव, चना, मसूर, मूंगका भाव सम होकर बाद मंदा हो जायगा। पीतल, तांबा, कांसाका भाव सस्ता रहेगा। कंबल, पश्मीना, और वस्त्रका भाव सम रहेगा। गाय, बैल, भैंस इत्यादि पशुओंका भाव सस्ता हो जायगा और तृण इत्यादिका भाव सम-रीतिसे हो जायगा। रांगा, जस्ता, आलमोनियम इत्यादि धातुओंका

भाव तेज रहेगा। तिली, सरसोंका भाव तेज और सम रहेगा। घृतका भाव पहिले तेज होकर बाद सम हो जायगा। सुगंधित पदार्थोंका भाव सस्ता हो जायगा। साधारण रीतिसे यह मास बुरा ही है।

ज्येष्ठमासफल।

इस महीनेमें पानी बरसनेका भी योग है। ५ दिन पानी बरसैगा। गर्मी हरसालकी अपेक्षा अधिक पड़ेगी। हवाके चलनेसे कई शहरोंमें तथा गांवोंमें बहुत हानि होगी। वृक्षोंसे फलोंकी हानि तथा पेड़ोंका टूटना इत्यादि कई तरहके नुकसान होंगे। हैजा तथा किसी दूसरी तरहका रोग इस महीनेमें होगा। बादलोंकी छाया प्रायः रहेगी। सामाजिक झगड़े बहुत जोरोंसे होंगे। वैशाखमें लिखे हुये पदार्थोंका भाव तेजका मंदा होगा, मन्देका सम होगा खाड़, उड़द, सूत, वस्त्र, तेल, हींग, हरदी, जीरा, अरहर, और ककुनी तेज रहेगी, नमक, कपास, रेंडी, सुपारी, फिटकरी, धनियां समभावपर रहैगी। उड़द, मूंग, अजवाइन कपूर, मंदे भावपर रहेंगे। मेथी, लाह, राई, खैर, सौंफ साधारण तेज रहैंगी, बादाम, पीपर, मिरचा, छोहाड़ा, मुनका, चिरौंजी, मंगरइल, तालमखाना, किसमिस, साधारण मंदी रहैगी। यह मास पशुओंके लिये प्रायः उत्तम है, किन्तु मनुष्योंके लिये उत्तम नहीं है इसमें नाना व्याधियां मनुष्योंको उत्पन्न होंगी।

आषाढ़मासका फल।

इस महीनेमें शुरूमें वर्षा होकर बाद बन्द हो जायगी। बाद बड़ी मुश्किलोंसे जल बर्षेगा। जल वर्षानेके लिये इन्द्रका पूजन परमावश्यक है अथवा दुर्गाका हवन कराते समय इन्द्र मंत्रका सविधि पूजन करना चाहिये, पशुओंको इस महीनेमें तृणकी तकलीफ बहुत ज्यादा होगी, किंतु रोगसाधारण होगा। मनुष्योंको हैजा इस महीनेमें भी रहैगा परन्तु सर्वत्र नहीं बच्चोंको कोई ज्यादा रोग होगा। जिससे बहुत हानियां होगी साधारण रूपसे बच्चोंकी मृत्युयें भी होंगी इस महीनेमें भी पहिले पानी होगी पर फसल बो देनेसे विशेष नुकसान कुछ न होगा। देखनेमें पहिले कुछ नुकसान मालूम पड़ेगा परन्तु फिर बाद सुदीमें या श्रावण कृष्णमें जल बरसनेसे चाको बचा हुआ पहिलेसे भी ज्यादा हो जायगा इस मासमें तेजो मंदी वैशाखके महीनेसे उलटी समझना चाहिये साधारण रीतिसे यह मास कृष्ण-

पक्षमें अच्छा है शुक्ल पक्षमें मध्यम है सामाजिक झगड़े और कुटु-म्बीय झगड़े अधिक होंगे कोई भी प्राणी अच्छी तरहसे प्रसन्न न रहेगा सब प्रायः हृदयसे दुखी ही रहेंगे।

श्रावणमासीय फल।

इस महीनेमें कुछ दिन पहिले सूखे बीतेंगे। बाद वर्षा कभी २ तो उत्तम होगी कभी केवल बादलही दिखाई देंगे। परन्तु कोई २ देशमें तो नदियोंकी बाढ़ोंसे बहुत भारी नुकसान होगा। प्रायः तो इस मासमें पानीकी वर्षा मध्यम ही होगी। कोई जगह तो पानीकी वर्षा बहुत देरमें होगी। आषाढ़की वर्षासे जो अन्न सूखेसे दिखाई देंगे। वह इस वर्षासे बड़े ही उत्तम दिखाई देंगे। सब अन्न घास इत्यादिका भाव शुक्लपक्षमें मंदा हो जायगा और कृष्ण पक्षमें घासकी मंहगाई ज्यादा रहेगी। गेहूं जौ इत्यादि अन्नोंका भाव भी तेज ही रहेगा पशुओंको तथा मनुष्योंको इस मासमें कष्ट बहुत अधिक रहेगा, परन्तु शुक्ल पक्षमें सब तरहसे आनन्द हो जायगा। हैजेका प्रकोप इस मासमें कहीं२ रहेगा तांबा,रांगा,जस्ता, पीतलका,भाव तेज होकर बाद सम हो जायगा। यह मास प्रायः साधारण रूपसे मध्यम ही बीतेगा। रोजगारियोंको श्रावण कृष्णमें लाभ अधिक होगा।

भाद्रमासीय फल।

इस महीनेमें कहीं २ वर्षा बहुत जोरोंसे होगी। इस वर्षासे मकान तथा गांवके बांध बह जायंगे। नदियोंकी बाढ़ें बहुत ज्यादा आवेंगी इससे भी हानि ज्यादा होगी और अन्नोंकी हानि पानी बरसनेसे ज्यादा होगी। कहीं कहीं सूखा एकदम पड़ जायगा इससे भी हानि अधिक ही होगी। पानी रोकनेके लिये भी इन्द्रका पूजन और दुर्गा-हवन परम लाभ दायक है और जहां सूखा पड़े वहां भी यही काम करना उचित होगा। मध्यदेशमें वर्षा प्रायः उत्तम ही होगी। पूर्वके देशों-में बहुत भारी वर्षा होगी। पश्चिममें वर्षा कभी साधारण कभी उत्तम ही होगी। दक्षिणमें वर्षासे बाढ़ बहुत ज्यादा आवेगी। उत्तरमें वर्षा बहुत ही ज्यादा होगी। इस महीनेमें गेहूँ, जव, धान, चावल, मूंग, उड़दका भाव साधारण रूपसे तेज रहेगा और आश्विन भरमें भी प्रायः यही हाल रहेगा। तांबा, कांसा, पीतल.रांगाका भाव साधारण रूपसे तेज होकर बादमें सम होकर आश्विनमें मन्दा हो जायगा।

आश्विन (क्वार) मासीय फल।

इस महीनेमें थोड़ा २ जल सर्वत्र वर्षेगा और कहीं २ बहुत जोरोंसे जल वर्षेगा, जिससे कि बहुत्र हानि जनताको उठानी पड़ेगी। सब जगह पर यह पानी जितना कि इस समय जरूरत है उतना न वर्षेगा, लेकिन थोड़ा सा बरसनेसे अन्नोंमें ४ आना फायदा हो जायगा। जिस जगह इस मासमें इन्द्र पूजन दुर्गा हवन और नगरकी सब जनता मिलकर उपवास करके रात्रिमें भोजन करेगी। वहां अवश्य पूर्ण जल वर्षेगा इसमें कोई सन्देह नहीं है और उस गांवमें खेतीसे लाभ १२ आना तक हो जायगा। चैत्रकी फसलमें इससे६ आना लाभ होगा। इस मासमें रोग इत्यादि जो कि फसली हैं उसीमें कुछ ऐसा रोग उत्पन्न होगा जिससे कि मालूम पड़ेगा कि इस साल यह नया रोग उत्पन्न हुआ है। इससे मनुष्योंकी हानि तो कमती होगी, लेकिन जिसको यह रोग हो जायगा वह सालोंतक थोड़ा बहुत रोगी बना ही रहेगा। इससे बचनेके लिये बेलके पेड़के नीचे बैठ कर एक हजार "ओं नमः शिवाय" मंत्र जपना ही लाभदायक है।

कार्तिकमासीय फल।

इस मासमें धानमें कीड़ा लग जानेसे कुछ हानि होगी, परन्तु कीड़ा सब जगह न लगेगा। जहां कीड़ा न लगेगा वहां पानी बिना धानोंका बहुत नुकसान होगा। प्रायः पानी बिना धानकी हानि बहुत जगहमें होगी। एककी जगहमें धान छ आने या सात आने होगी। गेहूं यव मसूर चना मटरका भाव साधारण रूपसे तेज हो जायगा सूत बिनौला कपड़ा कंबलका भाव साधारण रूपसे सम रहेगा पीतल तांबा रांगा जस्ता आदिका भाव सम हो जायगा। बैल गाय भैंस इत्यादिका भाव तेज होगा। चांदी सोनाका भाव पहिले मंदा होकर बाद सम होगा। इस महीनेमें बादलोंकी छायाः प्रायः बनी ही रहेगी। कहीं कहीं पानी भी बरस जायगा इस महीनेमें कोई ऐसा रोग होगा जिससे कि जनतामें बड़ी हानियां होगी। प्रायः इस रोगमें ज्वरसे विकार होकर पेटमे कोई ऐसा रोग होगा जिससे हर तरहसे जनतामें अशांति फैलेगी। इसके लिये शंकरका अनुष्ठान करनेसे ही विजय होगी और सब तरहसे फायदा होगा।

मार्गशीर्ष मासका फल ।

इस मासमें पानी बरसनेसे चैत्रकी फसलका तथा ज्वार इत्यादि अन्नोंका नुकसान बहुत होगा । इस महीनेमें गेहूं, यव, मसूर चनाका भाव तेज हो जायगा । उड़द, मूग, धान, चावलका भाव पहिले सम रह कर बाद मन्दा होगा । ज्वार, कोद्‌व तथा बाजरा इत्यादिका भाव साधारण मन्दा रहेगा । कपड़ेका तथा बिनौलेका और सूतका भाव पहिले सम रह कर बाद तेज हो जायगा । पीतल, तांबा, जस्ता, रांगाका भाव साधारण तेज रहेगा । सर्दी इस मासमें सम रूपसे ही रहेगी, पानी बरसनेके समय कुछ सर्दी ज्यादा होनेसे पशुवोंको हानि और बच्चोंको रोग होगा । यह मास प्रायः सम रूपसे ही बीतेगा, परस्परमें प्रेमके मनोभाव रहेंगे, राजा प्रजा-में कुछ मनोमालिन्यता रहेगी । कार्तिकके अन्नोंका भाव समरूपसे ही रहेगा । किसानोंको यह मास मध्यमरूपसे बीतेगा, तृणादिका भाव मन्द रहेगा । स्त्रियोंको यह मास प्रायः अधिक अच्छे रूपसे बीतेगा ।

पौष मासका फल ।

इस महीनेमें जाड़ा खूब जोरोंसे पड़ने लगेगा । इससे अन्नोंमें बहुत नुकसान होंगे दो या तीन दिन पानी बहुत बर्षेगा । मध्य देशमें प्रायः यह योग है । पूर्वके आधे प्रान्तमें भी वर्षा होगी, बादलोंकी छाया प्रायः रहा ही करेगी । पानी बरसनेके बाद कहीं २ तुषारसे हानियां अधिक होंगी, परन्तु इस पानीसे बहुत सुधार अन्नोंका होगा । यह वर्षा पूरबकी तरफ ही प्रायः होगी । जानवरोंको पीड़ा प्रायः रहेगी और प्रजाको आनन्द रहेगा । विशेष योग सब चीजोंकी मंहगाईका है । यह मास प्रायः बुरा ही है अन्नोंके हकमें अच्छा है ।

माघ मासका फल ।

इस महीनेमें तुषारसे हानि अधिक हो जायगी, अन्नोंमें कोई कृमी (कीड़े) पड़ जानेसे अन्नोंमें हानियां बहुत जगह हो जायगी और बहुत जगह पानी बरसनेसे अन्नोंमें बहुत फायदा होगा । इस महीनेमें ५ दिन जल बर्षेगा । इससे बहुत तरहके फायदे होंगे । तेज मन्दी इस मासमें गेहूं, यव, मसूर, चना, मूंग, उड़द इत्यादिकी सम रीतिपर रहेगी । चावल, गुड़, चीनीका भाव मन्दा रहेगी ।

चांदी सोनेका भाव कुछ तेज होकर कम होगा। पीतल, तांबा, रांगा, जस्ताका भाव तेज रहेगा। अरहर, ककुनी, धान, लाही, कोदवका भाव सम रहेगा। इस मासमें पशुवोंको कोई साधारण रोग होगा, मनुष्योंका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। बच्चोंको सरदीकी वजहसे स्वास्थ्यहानि, कहीं कहीं स्वार्थहानि भी होगी। यह मास अन्नादिमें पहिले हानि करके बाद उत्तमताको करेगा।

फाल्गुन मासका फल।

इस महीनेमें थोड़ा २ कहीं पर जल बर्षेगा टाड़ीका और मूसेका अन्नके लिये डर बहुत है। इस समयकी फसल कहीं २ तुषारसे खराब होगी। पानी बरसनेसे उत्तम हो जायगी। जहां तुपार न लगा होगा वहां पानी भी कम वर्षेगा पशुओंको आराम रहैगा। शुक्ल पक्षमें कुछ रोगकी सम्भावना है। मनुष्योंको कोई साधारण रोग उत्पन्न होगा बच्चोंके लिये यह मास खराब है। गेहूं, जौ, धानका भाव तेज रहैगा। शुक्लमें कुछ समतापर आवैगा। उड़द, मूंग, कोदव इत्यादिका भाव पहिले सम होकर बाद मंदा होगा। पीतल, तांवा, जस्ताका भाव तेज रहैगा। गाय, भैंस इत्यादि पशुवोंका भाव तेज रहैगा।

चैत्र कृष्णपक्षका फल।

इस पक्षमें प्रायः धान्यका भाव तेज़ हो हो जायगा। अन्नोंमें-कोई तहरकी हानि होनेसे जनतामें बड़ी हलचल मचेगी। यह हानि सब जगह नहीं होगी, परन्तु थोड़ी थोड़ी हानि सब जगह ही प्रायः होगी। बादलोंकी छाया रहेगी। पानी बरसनेका योग बहुत कम है। मनुष्योंको कोई साधारण रोग होगा। पशुवोंको सुख दुख बराबर है।

विवाह मुहुर्त्ताः।

वैशाखकृष्णपक्षः।

ति. १ चंद्रे स्वातीभे,रेखा७लग्नं विचार्यम्।

ति. २ भौमे अनुराधाभे, बुध शु. वेध शुक्र शु. यामित्रं रेखा ७ दोष
 ३ लग्नं मृत्युबाण यावन्नशुभं।

ति. ३ बुधे अनुराधाभे, रेखा ५ दोष ५ ल. चि. (व्यतीपात
 यावन्नशुभ लग्नं)।

ति. ४ गुरौ मूलभे. रेखा ८ दोष २ लग्नं विचार्यं ।
ति. ५ शुक्रे मूलभे. रेखा ७ दोष ३ लग्नं विचार्यं ।
ति. ७ रवौ उ. षा. भे. रेखा ७ दोष ३ लग्नं विचार्यं ।
ति. ८ चन्द्रे उ. षा. भे. रेखा ७ दोष ३ लग्नं विचार्यं ।
ति. १२ शुक्रे उ. भा भे. रेखा ७ दोष ३ लग्नं चिन्त्यं ।
ति. १३ शनौ उ. भा. भे. रेखा ७ दोष ३ लग्नं विचार्यं ।
ति. १४ रवौ रेवती भे. रेखा ८ दोष २ लग्नं चिन्त्यं ।

वैशाखशुक्ल पक्षः ।

ति. २ बुधे रोहिणी भे. ९ दोष १ ल. चि.
ति. ३ गुरौ रोहिणी भे. रेखा ८ दोष २ लग्नं विचार्यं ।
ति. ३ गुरौ मृगशिर भे. रेखा ९ दोष १ लग्नं विचार्यं ।
ति. ८ भौमे मघा भे. रेखा८दोष २ लग्नं चिन्त्यं ।
ति. ९ बुधे मघा भे. रेखा ७ दोष ३ लग्नं चिन्त्यं ।
ति. ११ गुरौ उ. फा. भे. रेखा ७ दोष ३ लग्नं चिन्त्यं ।
ति. १२ शुक्रे उ. फा. भे. रेखा ७ दोष ३ लग्नं चिन्त्यं ।
ति. १२ शुक्रे हस्तभे रेखा ७ दोष ३ लग्नं विचार्यं ।
ति. १३ शनौ हस्त भे. रेखा ७ दोष।२ लग्नं चिन्त्यं ।
ति. १४ रवौ स्वाती भे. रेखा ६ दोष ४ लग्नं व्यतीपात यावन्न शुभं ।
ति. १५ चंद्रे स्वाती भे. रेखा ८ दोष २ लग्नं विचार्यं ।

जेष्ठ कृष्णपक्षः ।

ति. २ बुधे. अनुराधा भे. रेखा ७ दोष ३ लग्नं चिंत्यं ।
ति. ३ गुरौ मूलभे. रेखा १०,दोष० लग्नं भद्रा यावन्न शोभनं ।
ति. ४ शुक्रे मूल भे. रेखा ८ दोष।२ लग्नं मृत्युबाण यावन्न शोभनं ।
ति. ५ शनौ उ. षा. भे. रेखा ६ दोष ४ लग्नं चिन्त्यं ।
ति. ६ रवौ उ. षा. भे. रेखा ७ दोष ३ लग्नं विचार्यं ।
ति. १० शुक्रे उ. भा. भे. रेखा ९ दोष १ लग्नं भद्रा यावन्न शोभनं ।
ति. १० शुक्रे रेवती भे. रेखा ६ दोष ४ लग्नंचिन्त्यं ।
ति. ११ शनौ रेवती भे. रेखा ७ दोष ३ लग्नं विचार्यं ।
ति. १४ भौमे रोहिणी भे. रेखा ८ दोष २ लग्नं चिन्त्यं ।

ज्येष्ठ शुक्लपक्षः ।

ति. १ गुरौ मृगशिर भे दोष १ लग्नं विचार्यं ।

तिं. ६ चंद्रे मघा. भे. रेखा ७ दोष ३ लग्नं चिन्त्यं।
तिं. ७ भौमे. मघा भे. रेखा८दोष २ लग्नं विचार्यं विवाहनक्षत्रं यावत्।
तिं. ८ बुधे. उ. फा. भे. रेखा ८ दोष २ लग्नं मृत्युवाण यावन्नशुभं।
तिं. ९ गुरौ उ. फा. भे. सशल्याग्नि वाणः रेखा ९ दोष,१ लग्नं।
तिं. ९ गुरौ हस्त भे. रेखा ८ दोष २ लग्नं चिन्त्यं।

मार्गशीर्ष शुक्लपक्षः।

तिं. १० रवौ उ. भा. भे. भद्रा पूर्व रेखा ६ दोष ४ लग्नं चिंत्यं।
तिं. ११ चंद्रे रेवती भे. रेखा ६ दोष ४ लग्नं चिंत्यं।
तिं. १५ शुक्रे रोहिणी भे. रेखा ७ दोष ३ लग्नं भद्रामृत्युवाणयोर्यावन्नशुभं।

पौष कृष्णपक्षः।

तिं. १ शनौ रोहिणी भे. रेखा ७ दोष ३ लग्नं चिन्त्यं।
तिं. १ शनौ मृगशिर भे. रेखा ७ दोष ३ लग्नं विचार्यं।
तिं. २ रवौ मृगशिर भे. रेखा ८ दोष २ लग्नं चिन्त्यं नक्षत्र यावत्।
तिं. ७ शुक्रे उ. फा. भे. रेखा ५ दोष ५ आवश्यके लग्नं चिंत्यं।
तिं. ८ शनौ उ. फा. भे. रेखा ६ दोष ४ लग्नं विचार्यं।
तिं. ८ शनौ हस्त भे. रेखा ८ दोष २ लग्नं विवाहर्क्षं यावत्।
तिं. ९ रवौ हस्त भे. रेखा ७ दोष ३ मृत्यु वाण यावन्नशुभलग्नं।

माघ कृष्णपक्षः।

तिं. ११ बुधे. अनुराधा भे. रेखा ६ दोष ४ लग्नं विचार्यं।
तिं १३शुक्रे मूल भे. रेखा ६दोषः४लग्नंभद्रापूर्वमेवचिंत्यं।

माघ शुक्लपक्षः।

तिं. १ चंद्रे उ भा. भे. रेखा ८ दोष २लग्नं विचार्यं।
तिं. ४ शुक्रे उ. भा. भे. रेखा ८ दोष २लग्नं चिन्त्यं नक्षत्रं यावत्।
तिं. ५ शनौ उ.भा.भे. रेखा ८ दोष २ मृत्युवाणयावन्नशुभलग्नं।
तिं. ५ शनौ रेवती भे. रेखा ६ दो.४ मृत्युवाणयावन्नशुभलग्नं।
तिं. ६ रवौ रेवती भे रेखा ६ दो. ४ लग्नं चिंत्यं।
तिं. ९ बुधे. रोहिणी भे रेखा ६ दो. ४ लग्नं विचार्यं।
तिं. १० गुरौ रोहिणी भे. रेखा ५ दोष ५ लग्नं चिन्त्यं।
तिं. १० गुरौ मृगशिर भे. रेखा ७ दो. ३ लग्नं विचार्यं।
तिं.११ शुक्रे मृगशिरभे. रेखा ८ दोष २ लग्नं भद्रोपरान्ते चिंत्यं।

फाल्गुन कृष्णपक्षः ।

ति. १ भौमे मघा भे. रेखा ७ दो. ३ लग्नं चिन्त्यं ।
ति. २ बुधे मघाभे. रेखा ८ दो. २ लग्नं विचार्यं विवाहनक्षत्रं यावत् ।
ति. ३ गुरौ उ. फा. भे. रेखा ६ दो. ४ लग्नं भद्रा यावन्न शोभनं ।
ति. ४ शुक्रे उ. फा. भे. रेखा ६ दो. ४ लग्नं चिन्त्यं ।
ति. ४ शुक्रे हस्त भे. रेखा ८ दोष २ लग्नं चिन्त्यं ।
ति. ५ शनौ हस्त भे. रेखा ७ दोष ३ लग्नं विचार्य नक्षत्र यावत् ।
ति. ७ चन्द्रे स्वाती भे. रेखा ७ दो. ३ लग्नं विचार्यं स्वेच्छया ।
ति. ८ भौमे अनुराधा भे. रेखा ८ दो. लग्नं चिन्त्यं ।
ति. ९ बुधे. अनुराधा भे. रेखा ७ दो. ३ मृत्यु बाण यावन्नशुभलग्नं ।
ति. १० गुरौ मूल भे. रेखा ५ दो. ५ लग्नं चिंत्यं ।
ति. ११ शुक्रे मूल भे. रेखा ६ दो. ४ लग्नं विचार्यं ।
ति. १२ शनौ उ. षा. भे. रेखा ८ दो. २ मृत्युबाण यावन्न शुभं लग्नं ।
ति. १३ रवौ उ. षा. भे. रेखा ८ दो. २ लग्नं ।

फाल्गुन शुक्लपक्षः

ति. २ गुरौ उ. भा. भे. पात दो. केतु यामित्रं एवं बाणः रेखा ७ दोष ३ लग्नं विचार्यं ।
ति. ३ शुक्रे उ. भा. भे. पात. दो. केतु यामित्रं रेखा ८ दोष २ लग्नं चिन्त्यं विद्वद्भिः ।
ति. ४ शनौ रेवती भे. शनि लत्ता दो. राहुयुति दो. केतु यामित्रं रोगबाणदग्धातिथि. रेखा ५ दोष ५ लग्नं चिंत्यं भद्रायावन्नशोभनं ।

चैत्र कृष्णपक्षः ।

ति. १ गुरौ हस्त भे. पात. दो. केतुयुतिः राहु यामित्रं सशल्या. बा. रेखा ६ दो. ४ लग्नं विचार्यं ।
ति. २ शुक्रे हस्त भे. पात. दो. केतुयुतिः राहुयामित्रं रेखा ७ दोष ३ लग्नं चिंत्यं विवाह नक्षत्र यावत् ।
ति. ३ शनौ स्वातीभे राजबाण उपग्रह दोषः क्रांतिः साम्यदोषः रेखा ७ दोष ३ लग्नं विचार्यं स्वेच्छया ।
ति. ४ रवौ स्वातीभे. उपग्रह दोषः क्रांतिसाम्य दोषः दग्धा तिथिः रेखा ७ दोष ३ लग्नं चिन्त्यं ।

ति. ६ चंद्रे अनुराधा भे. पात. दो. चौरबाण दोष रेखा ८ दोष २ लग्नं विशाखोपरि विचार्यं ।

ति. ७ भौमे अनुराधा भे. पात दोष रेखा ६ दोष १ लग्नं भद्रा पूर्वं चिंत्यं ।

ति. ८ बुधे मूल भे बुधलत्ता दो. गुरु वेधः गुरुयामित्रं रोगबाण उप. रेखा ५ दोष ५ आवश्यके लग्नं चिन्त्यं ।

अथ यज्ञोपवीत मुहूर्ताः ।

चैत्र शुक्ल पक्ष ।

ति. ५ शुक्रे रोहिणी भे. लग्नं २ शुक्र दा. अन्यचिंत्यं ।
ति. १२ गुरौ पू. फा. भे. लग्नं चिंत्यं स्वबुद्धया ।

वैशाख कृष्ण पक्षः ।

ति. ३ बुधे अनुराधा भे. व्यतीपातत्वान्न शुभं ।
ति. ५ शुक्रे मूलभे. लग्न चिंत्यं स्वबुद्धया ।

वैशाख शुक्ल पक्षः ।

ति. ३ गुरौ रोहिणी भे. लग्नं २ ने. दा. अन्यच्चिंत्यं ।
ति. १० बुधे. पू. फा. भे. लग्नं २ ने. दा. अन्यच्चिन्त्यं ।
ति. ११ गुरौ पू. फा. भे. उ. फा. भे. च लग्नं २ ने. दा. अन्यच्चिन्त्यं ।
ति. १२ शुक्रे उ.फा. भे. हस्तभे च लग्नं २ ने. दा. अन्यच्चिन्त्यं ।

ज्येष्ठ कृष्णपक्षः ।

ति. बुधे अनुराधाभे लग्नं २ ने. दा. अन्यच्चिन्त्यं ।

ज्येष्ठ शुक्लपक्षः ।

ति. २ शुक्रे आर्द्राभे लग्नं २ ने. दा. अन्यच्चिन्त्यं ।
ति. ५ रवौपुष्यभे लग्न २ ने दा. अन्यच्चिन्त्यं ।

अथ द्विरागमन मुहूर्तः।

वैशाखकृष्ण पक्षः।

ति. १ चंद्रे स्वाती भे. लग्नं चित्यं।
ति. ५ शुक्रे मूल भे. लग्नं चित्यं।
ति. ८ चंद्रे उ. षा. मे. श्रवणे च ल. चित्यं।
ति. ११ गुरौ शतभिषा भे. लग्नं चित्यं।
ति. १२ शुक्रे उ. भा. भे. लग्नं चित्यं।

वैशाखशुक्ल पक्षः।

ति. ३ गुरौ रोहिणी भे. लग्नं चित्यं।
ति. १२ शुक्रे उ. फा. भे. हस्त भे. च ल. चित्यं।
ति. १५ चंद्रे चित्रा भे. लग्नं चित्यं।

मार्गशीर्ष शुक्लपक्षः।

ति. १ शुक्रे अनुराधा भे. लग्नं चित्यं।

पौषकृष्ण पक्षः।

ति. १० चंद्रे चित्रा भे. भद्रोत्तरं ल. चित्यं।

फाल्गुन शुक्लपक्षः।

ति. १ बुधे शतभिषा भे. लग्नं चित्यं।
ति. ३ शुक्र उ. भा. लग्नंचित्यं।
ति. ६ चंद्रे अश्विनी भे. लग्नंचित्यं।
ति. १० शुक्रे मृगशिरा भे. लग्नंचित्यं।

चैत्रकृष्ण पक्षः।

ति. १ गुरौ उ. फा. भे. लग्नंचित्यं।
ति. २ शुक्रे हस्त भे. लग्नंचित्यं।

इति मुहूर्ताः।

पाठकोंको सूचना।

हमने जो कई मुहूर्त भद्रा, वैधृति, व्यतीपात, अमावास्या, मृत्युबाणमें लगा दिये हैं, वहां पण्डित लोग अत्यावश्यक समयमें भद्रा वैधृति आदिका स्पष्टीकरण तथा उन २ शुभ कर्मोंके नक्षत्रका स्पष्टीकरण तथा इन दोनोंको अच्छी तरह देखकर लग्न की कल्पना कर लेव, अन्यथा कोई अच्छे हो मुहूर्तमें विवाह शोधें। भद्रा वैधृति इत्यादि वाले मुहूर्तोंको छोड़ देवें। इस वर्षमें शुद्ध शुभ मुहूर्त बहुत कम हैं।

संस्कृत-खण्ड।

[सम्पादक—महामहाध्यापक, महामहोपाध्याय, श्रीमान् पण्डित-प्रवर अन्नदाचरण तर्कचूड़ामणि महोदय, काशी।]

अखिल भारतवर्षीय

संस्कृत-विश्व-विद्यालय।

(जिसमें श्रीवाराणसी-विद्यापरिषद् और आयुर्वेद-सम्मिलनी सम्मिलित है।)

[प्रधान कार्यालय, महामण्डल भवन, जगत्‌गंज, बनारस।]

सनातनधर्मका धार्मिकशिक्षा-विस्तार, संस्कृत-विद्याप्रचार, आयुर्वेद आदि शास्त्रोंका प्रचार, राष्ट्रभाषा हिन्दीकी उन्नति और पुरुष और स्त्रियोंके धर्मज्ञानकी उन्नतिके मंगलमय अभिप्रायसे यह अखिल भारतवर्षीय संस्कृत-विश्वविद्यालय स्थापित हुआ है।

परीक्षा तथा पाठ्य-पुस्तक-नियमावली।

परीक्षाओंके नाम।

(१) संस्कृत सम्बन्धीय उपाध्यायपरीक्षा, (२) महोपाध्याय परीक्षा। पौरोहित्य परीक्षाके दो नाम रक्खे गये हैं—(३) श्रौतकर्मविशारद परीक्षा और (४) स्मार्तकर्मविशारद परीक्षा। गुरु और आचार्य्यसम्बन्धीय परीक्षा—(५) धर्माचार्यपरीक्षा। आयुर्वेद सम्बन्धकी परीक्षाएँ—(६) प्रथम आयुर्वेद परीक्षा, (७) मध्यम आयुर्वेद परीक्षा, (८) आयुर्वेदशास्त्री परीक्षा, (९)

आयुर्वेद आचार्य परीक्षा । हिन्दीभाषा इस समय भारतवर्षकी राष्ट्र-भाषा समझी जाती है। अतः इसकी उन्नतिके लिये जो परीक्षा होगी, उस परीक्षाको स्त्री और पुरुष दोनों दे सकते हैं। पुरुषों-को केन्द्रमें उपस्थित होकर परीक्षा देनी होगी और स्त्रियें घरसे ही दे सकेंगी। उसका नाम (१०)—राष्ट्रभाषाविशारद परीक्षा है।

१—उपाध्याय-परीक्षाकी पाठ्यपुस्तकें।

प्रथम प्रश्नपत्र व्याकरण और साहित्यका होगा। जिसमें गद्य, पद्य, दोष, गुण, रीति, छन्द और अलंकार प्रभृति पूछे जायंगे। द्वितीय पत्र दर्शनशास्त्रका होगा। जिसमें पञ्चदशी, और सांख्यतत्त्व-कौमुदीके प्रश्न रहेंगे। तृतीय पत्रमें ईशोपनिषद्, केनोपनिषद्, कठो-पनिषद्, शम्भुगीता, शक्तिगीताके प्रश्न रहेंगे। चतुर्थ पत्र धर्म-शास्त्रका है। इसमें मनुसंहिता और याज्ञवल्क्यसंहिताके प्रश्न पूछे जायंगे। पञ्चम पत्रमें विष्णुपुराण, संन्यासगीता और भगवद्गीताके प्रश्न दिये जायंगे।

२—महोपाध्याय परीक्षाकी पाठ्यपुस्तकें।

प्रथम पत्रमें उपाध्यायपरीक्षाके प्रथम पत्रके परीक्षितव्य विषयके अतिरिक्त वैदिक छन्द और वैदिक व्याकरण तथा निरुक्त पूछे जायंगे। द्वितीय पत्र दर्शनशास्त्रका है। इसमें योगदर्शन भाष्य सहित, सांख्यदर्शन भाष्य सहित, कर्ममीमांसा दर्शन भाष्य सहित परीक्षणीय ग्रन्थ हैं। तृतीय पत्रमें छान्दोग्योपनिषद् सभाष्य, श्रीमद्भगवद् गीता और सप्तशती गीता भाष्य सहित (गीतार्थ-चन्द्रिका हिन्दी तथा मातृमहिमा-प्रकाशिनी टीका सप्तशती गीताके लिये उपयोगी है।) धीशगीता, सूर्य्यगीता, विष्णुगीताके प्रश्न रहेंगे। चतुर्थपत्रमें धर्मशास्त्रके प्रश्न होंगे। जिसमें सटीक मनुसंहिता, समिताक्षरा याज्ञवल्क्यसंहिता पाठ्यग्रन्थ हैं। पञ्चम पत्रमें श्रीमद्भागवतके तृतीय स्कन्ध और महाभारतके अनुशासनपर्वके प्रश्न होंगे।

३—श्रौतकर्मविशारद परीक्षाकी पाठ्यपुस्तकें।

प्रथम पत्रमें संहिता, दर्शपौर्णमासपद्धतिके प्रश्न रहेंगे। द्वितीय पत्रमें श्रौतसूत्र, कल्पसूत्र, गोभिल गृह्यसूत्र, आश्वलायन-

गृह्यसूत्रके प्रश्न रहेंगे। तृतीय पत्रमें सोमयागादि प्रयोग, कुण्डसिद्धि, धर्मकर्मदीपिका और त्रिवेदीय सन्ध्याके प्रश्न रहेंगे। चतुर्थ पत्रमें देवार्चन, ग्रहयाग, संस्कार और श्राद्ध मन्त्रार्थकी परीक्षा होगी। पञ्चम पत्रमें व्याकरण और साहित्यकी परीक्षा होगी।

४—स्मार्तकर्मविशारद परीक्षाकी पाठ्यपुस्तकें।

(१) दशकर्मपद्धति अथवा षोडशसंस्कार, श्राद्धविवेक, (२) प्रतिष्ठामयूख, शान्तिमयूख, (३) सप्तशतीगीता (मातृमहिमा प्रकाशिनी टीका सहित) त्रिवेदीय श्राद्धप्रयोग और नित्यकर्म-चन्द्रिका, (४) आह्निकतत्त्व, धर्मकर्मदीपिका, त्रिवेदीय संध्या (५) व्याकरण साहित्यकी साधारण परीक्षा।

५—धर्माचार्य्यपरीक्षाकी पाठ्यपुस्तकें।

धर्माचार्य्यपरीक्षा देनेवाले विद्वानोंको श्रौतकर्मविशारद अथवा स्मार्तकर्मविशारद परीक्षा, इन दोनोंमेंसे किसी एक परीक्षामें अवश्य उत्तीर्ण होना चाहिये, अथवा महोपाध्याय परीक्षामें उत्तीर्ण होना चाहिये। अथवा किसी विश्वविद्यालयकी सर्वोच्च श्रेणीकी संस्कृत परीक्षा उत्तीर्ण करना आवश्यक होगा। जिससे यह प्रमाण मिले कि, संस्कृत विद्या और कर्मकाण्डके वे अच्छे ज्ञाता हैं। धर्माचार्य परीक्षा देनेवाले विद्वानोंके लिये गुप्त प्रश्न नहीं जावेंगे, उनको खुले हुए प्रश्न जावेंगे और उनके प्रश्न ऐसे होंगे कि, जिससे जाना जाय कि, ऊपर लिखित विषयोंके अतिरिक्त निम्नलिखित ग्रन्थ और शास्त्रोंमें उनका पूरा प्रवेश है। तभी धर्माचार्य्य परीक्षा देनेका अधिकार होगा। (१)—इस परीक्षामें प्रविष्ट होनेवाले विद्वानोंको समस्त दर्शनों (न्यायदर्शन, वैशेषिक दर्शन, योगदर्शन, सांख्यदर्शन, वेदके तीन काण्डोंके अनुसार तीनों मीमांसा दर्शन) के ज्ञानके अतिरिक्त शुद्धाद्वैत, द्वैताद्वैत, विशिष्टाद्वैत, अद्वैत और द्वैत, पाशुपत इत्यादि साम्प्रदायिक दर्शनोंका ज्ञान अत्यावश्यक है। (२)—मन्त्रयोगसंहिता, हठयोगसंहिता, लययोग संहिता और राजयोग संहिता। धर्मकल्पद्रुम सम्पूर्ण, त्रिवेदीय सन्ध्या, मन्त्रमहोदधि। (३)—देवीभागवत, श्रीमद्भागवत, विष्णुपुराण, महाभारत। (४)—शम्भुगीता, शक्तिगीता, संन्यास-

गीता, श्रीमद्भगवद्गीता और सप्तशती गीता सभाष्य, तन्त्रसार और महानिर्वाणतन्त्र । (५)—शास्त्रसम्बन्धी रचना ।

आयुर्वेद परीक्षाएँ ।

आयुर्वेद सम्बन्धी चारों परीक्षाओंकी ग्रन्थावली नीचे दी जाती है ।

६—आयुर्वेद प्रथम परीक्षा ।

१—माधवनिदान मूलमात्र (सम्पूर्ण) २—शार्ङ्गधर (पूर्व-खण्ड) ३-द्रव्यगुण तथा आयुर्वेदीय प्रबन्धरचना । ४-शक्तिगीता, सदाचारशिक्षा ।

७—आयुर्वेद मध्यम परीक्षा ।

१—चक्रदत्त परिभाषासह (सम्पूर्ण) । २—रसेन्द्रसारसंग्रह । ३—वाग्भट (शारीरस्थान) आयुर्वेदीयप्रबन्धरचना । ४—नीतिचन्द्रिका अथवा सांख्यकारिका मात्र, सप्तशती गीता ।

८—आयुर्वेद शास्त्रिपरीक्षा ।

१—चरकसंहिता (निदानेन्द्रियचिकित्सास्थानानि) । २—सुश्रुतसंहिता (सूत्रशारीरस्थाने) ३—माधवनिदान (सम्पूर्ण) विजयरक्षितकृत मधुकोषटीकोपेत । ४—अष्टाङ्गहृदय (सूत्रस्थान) आयुर्वदीय प्रबन्धरचना । ५—भगवद्गीता अथवा भाषापरिच्छेद, कारिकामात्र । शम्भुगीता ।

९—आयुर्वेद आचार्य परीक्षा ।

१—चरकसंहिता (सम्पूर्ण) । २—सुश्रुतसंहिता (सम्पूर्ण) । ३—अष्टाङ्गहृदय (सम्पूर्ण) ४—अनिर्दिष्टग्रन्थेभ्यः आयुर्वेदविषयकप्रश्नाः । ५—सांख्यदर्शनं योगदर्शनञ्च ।

१०—राष्ट्रभाषाविशारदपरीक्षाकी पाठ्यपुस्तकें ।

(१)—धर्म्मकल्पद्रुमका ५,७ खण्ड, धर्म्मचन्द्रिका, प्रवीणदृष्टिमें नवीन भारत, नवीन दृष्टिमें प्रवीण भारत, दासबोध, (२) पद्यसाहित्यः—कबीरकी साखी, सुजान रसखान, छत्रप्रकाश, भूषणग्रंथावली, रामचरित्रचन्द्रिका रामायण, कविताकौमुदी, भारतभारती । (३) गद्यसाहित्यः—कृषिशास्त्र, सम्पत्तिशास्त्र, शालोपयोगी भारतवर्ष, हिन्दीका इतिहास, लेखनकला । (४) अलंकार मंजूषा,

नम्बर पावेगा, वह द्वितीय श्रेणीमें और जो ६० नम्बर पावेगा, वह प्रथम श्रेणीमें उत्तीर्ण समझा जावेगा।

(६) परीक्षासमयके दो मास पहले कार्याध्यक्ष अखिल भारतवर्षीय संस्कृत विश्वविद्यालय कार्यालय, श्रीमहामण्डल भवन जगत्‌गंज बनारस, इस पतेपर आवेदनपत्र भेजना होगा। निर्दिष्ट समयके अनन्तर आवेदन स्वीकृत नहीं होगा।

(७) धर्माचार्य, स्मार्त्तकर्मविशारद और श्रौतकर्मविशारद परीक्षा देनेमें केवल ब्राह्मणोंका ही अधिकार होगा।

(८) परीक्षा देनेवाले विद्वानोंको इस विश्वविद्यालयके स्वीकृत नियमोंका पालन करना होगा, अन्यथा परीक्षामें अति व्युत्पत्ति दिखानेपर भी विश्वविद्यालय पारितोषिक आदि नहीं दे सकेगा।

(९) उपदेशकपरीक्षा, धर्मविनोदनीपरीक्षा, राष्ट्रभाषा-विशारद परीक्षा और विद्यालयकी दो परीक्षाओंको छोड़कर अन्य सब परीक्षाओंके उत्तर संस्कृतभाषामें लिखने होंगे।

(१०) परीक्षासमयके पहले परिषद्‌कार्यसम्पादक महोदय परीक्षार्थियोंके निकट परीक्षाभवनमें प्रवेशार्थ प्रवेशपत्र भेजेंगे, उसीसे परीक्षार्थियोंको परीक्षास्थान, परीक्षासमय आदि ज्ञात होंगे।

(११) सब परीक्षार्थियोंको उत्तरपत्र देवनागरी लिपिमें लिखने होंगे।

(१२) प्रथम बारह श्रेणियोंकी परीक्षाओंमें कई सुवर्णपदक, कई रौप्यपदक, धन पारितोषिक, यथा—५००), २००), १००), ५०) और २५) मानपत्र आदि उपहार देनेका नियम है, जिससे विद्वानोंको उत्साह हो। शेष दो छात्रवृत्ति-परीक्षाओंमें जो अलग अलग छात्रवृत्ति देनेका नियम है, जैसा कि ऊपर लिखा गया है, उसकी संख्या पीछेसे नियत होगी। सब मानपत्र और सनदोंपर हिज-हाइनेस महाराजाधिराज दरभंगाके हस्ताक्षर होंगे। जो इस अखिल भारतवर्षीय संस्कृतविश्वविद्यालयके चांसलर हैं। अथवा वाइस 'चांसलरके दस्तखत होंगे।

अन्य विशेष समाचार जाननेका पता—

कार्याध्यक्ष—अखिल भारतवर्षीय संस्कृतविश्वविद्यालय,

महामण्डल भवन, जगत्‌गंज, बनारस।

प्राचीन विद्यापीठ तथा अन्य स्थान ।

भारतवर्षमें प्राचीन विद्यापीठ निम्न लिखित थे । काशी, कांची, उज्जैन, काशमीर, नदिया, मिथिला, कन्नौज, शृङ्गेरी, द्वारका, ज्योतिर्मठ (उत्तराखण्ड) और पुरी । इनमें अधिकांश उच्छिन्न या उच्छिन्नप्राय हो गये हैं । कुछ ऐसे हैं, जहां संस्कृतकी संस्कृति सुरक्षित है ।

काशी ।

काशी विद्यापीठकी मर्यादाका अबतक अक्षुण्ण है । यहां अब भी संस्कृतके धुरन्धर पण्डित विद्यमान हैं और पठन पाठनका कार्य जारी है । केवल शास्त्रोंकी ही नहीं, वेदों और कर्मकाण्डकी भी प्रगति यहां देख पड़ती है । संस्कृतोन्नतिकारी संस्थाओंमें यहांका राजकीय संस्कृत महाविद्यालय (क्विन्स कालेज) पुराना और प्रसिद्ध है । इसमें सकल शास्त्रोंका अध्यापन होता है और परीक्षाएं भी ली जाती हैं । इसके अतिरिक्त हिन्दुविश्वविद्यालयसे सम्बन्धयुक्त संस्कृत कालेज (जिसमें काश्मीर नरेश द्वारा संचालित 'रणवीर पाठशाला' भी सम्मिलित है,) विशेष उल्लेख योग्य है। ठीकमणि पाठशाला, संन्यासिपाठशाला, विडला पाठशाला, वेदवेदाङ्ग पाठशाला जैसी अन्य कई संस्कृत पाठशालाएं यहां चल रही हैं और उनमें सहस्रों विद्यार्थी शिक्षा लाभ करते हैं । संस्कृतके ग्रन्थोंकी खोज और संग्रहके लिये "सरस्वती भवन" नामक एक सरकारी संस्था स्थापित हुई है, जिसमें अनेक विद्वान् परिश्रमपूर्वक खोजकार्य करते हैं । ऐसी उत्तम संस्थाएं देशमें गिनी गिनायी हैं । यहांकी "मालती शारदा सदन" नामक संस्थामें भी संस्कृतके अनेक बहुमूल्य ग्रन्थ संगृहीत हुए हैं । श्रीभारतधर्ममहामण्डल तो संस्कृतकी उन्नतिमें प्रारम्भसे ही लगा हुआ है । अनेक अप्रकाशित संस्कृत ग्रन्थोंकी इसने खोजकी है और उनमेंसे कतिपय भाष्य, टीका और अनुवाद सहित प्रकाशित भी किये हैं । "सूर्योदय" नामक संस्कृत मासिकपत्र (जिसका आदर देशभरके लोगोंने किया है) महामण्डलके तत्वावधानमें ही निकलता है और अब ऐसा निश्चय हुआ है कि, सूर्योदयके साथ ही साथ प्रकाशित असंस्कृत ग्रन्थ भी प्रकाशित होते रहें, जिससे एक सुन्दर ग्रन्थमाला तैयार

हो जाय। संस्कृत विश्वविद्यालय भी महामण्डलद्वारा ही परिचालित हो रहा है। क्वीन्सकालेजके पण्डितों द्वारा सम्पादित कई अप्राप्य ग्रन्थ गत शताब्दिमें लाजरस प्रेससे प्रकाशित हुए थे, परन्तु उस प्रेसका अब आस्तित्व नहीं रहा है। महामण्डलके अतिरिक्त अब यहां "हरिदास कंपनी" ही एक ऐसी संस्था है, जो संस्कृतके अनेक अप्रकाशित ग्रन्थ छापती है और इससे उसे आर्थिक लाभ भी अच्छा होता है। प्रयागमें स्थापित हुए पाणिनि-कार्यालयकी यहां एक शाखा है। इसके द्वारा भी अनेक उपयुक्त संस्कृत ग्रन्थ प्रकाशित होते हैं।

कांची।

कांचीमें शैव तथा वैष्णव आचार्योंकी प्राचीन गद्दियां होनेसे वहां भी संस्कृत विद्याकी सुरक्षाका अच्छा प्रबंध है। पीठोंमें ग्रंथ-संग्रह प्राचीन कालसे चला आरहा है और पठन-पाठनका कार्य भी चलता है। 'मञ्जुभाषिणी' नामक एक संस्कृत साप्ताहिक पत्र भी वहांसे निकलता है।

उज्जैन।

महाराज जयाजी राव सिंधियाके विद्यानुराग तथा उदारतासे उज्जैन विद्यापीठकी वेधशालाका पुनः संस्कार हुआ है। भारतवर्षमें यह वेजोड़ वेधशाला है। वहां संस्कृत महाविद्यालय भी स्थापित है, परन्तु उससे वहुत थोड़े लोग लाभ उठाते हैं।

काश्मीर।

यहांका विद्यापीठ वहुत शिथिल हो गया था। परन्तु महामण्डलके सञ्चालकोंकी प्रेरणासे स्वर्गीय पुण्यवान नरपति महाराजा प्रताप सिंह महोदयने उसका सुधार किया और संस्कृत ग्रन्थ संशोधनका कार्य भी अग्रसर किया है। वहांकी संस्कृत पाठशाला भलीभांति चल रही है और संशोधन विभागसे अमूल्य ग्रन्थ भी प्रकाशित होते हैं।

मिथिला।

मिथिलाके विद्यापीठका संस्कार महामण्डलके कर्तृपक्षकी प्रेरणासे ही स्वर्गीय मिथिलेश महाराजाधिराजने किया था। वहांका संस्कृत पुस्तकालय विहारमें सर्वश्रेष्ठ है और राज्यमें कई संस्कृत पाठशालाएं चलरही हैं। मिथिलाके पण्डित प्रसिद्ध होते हैं।

स्वर्गीय श्रीनरेशने अनेक प्रकारसे उत्साहित कर, संस्कृत क्षेत्रमें मिथिलाकी कीर्तिरक्षाकी है।

नदिया।

नदिया (नवद्वीप) यद्यपि अब विद्यापीठकी योग्यता नहीं रखता, तथापि अबतक वहां संस्कृतका पठन-पाठन जारी है। वहां न्याय वैशेषिक दर्शनोंकी जैसी शिक्षा होती है, वैसी अन्यत्र नहीं होती। वहांके पण्डित विवादपटु और प्रतिभाशाली होते हैं।

कन्नौज।

कन्नौजसे तो अब संस्कृतका प्रचार एकदम उठ ही गया है। स्वर्गीय श्रीमान् मुकुन्ददेव मुखोपाध्याय महोदयकी उदारता और महामण्डलके सहयोगसे कान्यकुब्जकी प्रतिष्ठारक्षार्थ एक संस्कृत पाठशाला वहां स्थापित की गयी है। इसमें व्याकरण, साहित्य आदिकी शिक्षा दी जाती है। परन्तु वहांकी जनता संस्कृतसे उदासीन ही है।

श्रीशंकरप्रभुके चार पीठ।

भगवान् श्रीशंकराचार्य प्रभुके चार पीठोंमेंसे उत्तराम्नाय ज्योतिर्मठ, पूर्वाम्नाय गोवर्धनमठ और पश्चिमाम्नाय शारदामठमें संस्कृतोन्नतिके सम्बन्धमें कोई कार्य नहीं होता। एकमात्र दक्षिणाम्नाय श्रृंगेरी मठमें संस्कृतशिक्षाका उत्तम प्रबन्ध है। अनेक धुरंधर पंडित वहां पठन-पाठन किया करते हैं और मठके अनेक ग्रंथ कुंभकोनमके वाणीविलास प्रेससे नियमित रूपसे प्रकाशित होते हैं।

मैसोर।

मैसोर दरबारकी ओरसे संस्कृत अनुसन्धानविभाग बहुत विस्तृत रूपमें प्रस्थापित हुआ है। इसमें दक्षिण भारतके चुने चुनाये विद्वान् परिश्रम पूर्वक कार्य करते हैं। स्वर्गीय महामहोपाध्याय पंडित गणपतिशास्त्रीने इस विभागको बहुत उन्नत किया है। महाकवि भासके अनेक ग्रन्थ खोजकर उन्होंने उनका प्रकाशन किया था। अब भी उस विभागसे अनेक उपयुक्त ग्रन्थ प्रकाशित होते रहते हैं।

बड़ोदा।

बड़ोदेके सयाजी पुस्तकालयने बहुत कुछ कीर्ति प्राप्त की है। ऐतिहासिक प्राचीन कागज़ पत्रोंका इसमें बहुत संग्रह हुआ है।

उन पत्रोंसे उस समयकी भारतीय राजनीतिपर अच्छा प्रभाव पड़ता है, जिस समय भारतकी अन्तरराष्ट्रीय राज भाषा संस्कृत थी। इस पुस्तकालय और इससे सम्बन्धयुक्त संशोधन विभाग-से कई संस्कृत ग्रन्थ भी प्रकाशित हुए हैं।

पूना।

पूना यद्यपि प्राचीन विद्यापीठ नहीं है, तथापि गत दो तीन शताब्दियोंमें वहां सब विद्याओंकी बहुत उन्नति हुई है। अबतक संस्कृतके प्रचारकी वहां "आनन्दाश्रम" नामक एक ही संस्था थी; जिसके द्वारा सैकड़ों संस्कृत ग्रन्थ विशुद्धताके साथ प्रकाशित हो चुके हैं। किन्तु अब "भाण्डारकर रिसर्च इंस्टिटयूशन" नामक जो प्रचण्ड संस्था स्थापित हुई है, उससे संस्कृत साहित्यका महदुपकार साधित होना निश्चित है। पूनेकी वेदशास्त्रोत्तेजक सभा ५७ वर्षोंसे सफलताके साथ चल रही है और वहांका मीमांसा विद्यालय तो संसारमें अतुलनीय है। क्रियासिद्धांशके साथ मीमांसाका अध्यापन एकमात्र इसी विद्यालयमें होता है।

कलकत्ता।

इसी तरह आधुनिक उन्नतिशील नगरोंमें संस्कृत शिक्षा प्रचारके विचारसे कलकत्तेका भी उल्लेख करना आवश्यक है। सरकारी संस्कृत कालेज सर्व प्रथम वहीं स्थापित हुआ है। जीवानन्द, ईश्वरचन्द्र आदिने संस्कृतकी प्रचुर सेवा की है और अनेक संस्कृत ग्रन्थोंकी टीकाएं तैयार कर प्रकाशित की हैं। इस समय जितने मुद्रित संस्कृत ग्रन्थ प्राप्य हैं, उनमेंसे अधिकांश कलकत्तेसे प्रकाशित हुए हैं। कलकत्तेमें अब भी अनेक संस्कृत पाठशालाएं भलीभांति परिचालित हो रही हैं।

लाहोर।

लाहोरमें सरकारी संस्कृत कालेज है और उसीकी ओरसे परीक्षाएं ली जाती हैं। इसके परीक्षाकेन्द्र काशी और कलकत्ता कालेजसे अधिक हैं। काशी कालेजसे जिस प्रकार 'आचार्य' और कलकत्ता कालेजसे 'तीर्थ' की सर्वश्रेष्ठ उपाधि प्राप्त होती है, उसी प्रकार लाहोर कालेजसे 'शास्त्री' की उपाधि मिलती है। इसीका अनुकरण बनारस हिन्दु विश्वविद्यालयने भी किया है। लाहोरके एंग्लो

वैदिक दयानन्द कालेजमें संस्कृत ग्रन्थोंका उत्तम संग्रह है। ऐसा संग्रह पंजाबमें अन्यत्र नहीं देख पड़ता।

मुजफ्फर पुर ।

यहां एक उत्तम संस्कृत कालेज है, जिसकी स्थापनाके लिये स्वर्गीय श्री मिथिलेशने बहुत कुछ उद्योग किया था। बिहारका यह परीक्षाकेन्द्र है और यहांसे सर्वश्रेष्ठ तीर्थ उपाधि दी जाती है।

जयपुर ।

यहां संस्कृतका बड़ा पुराना कालेज है और उससे मध्यप्रान्त, मालवा, राजपूताना तथा दिल्ली प्रान्तके संस्कृतप्रेमी लाभ उठाया करते हैं।

इन नगरोंके अतिरिक्त नागरपुर, नासिक, चूरू, उदयपुर, वाई आदि स्थानोंमें भी संस्कृतकी सुरक्षा और उन्नतिके उद्योग हो रहे हैं।

भारत-यात्रा-खण्ड ।

[सम्पादक—श्रीमान् शारदानन्द ब्रह्मचारी, एम. ए.]

—०:॥:०—

भारतवर्षके पीठस्थान ।

दक्षयज्ञमें सतीके देह त्याग करने पर महादेवजी मृत शरीरको कंधेपर रखकर पागलकी तरह नाचते रहे। भगवान् विष्णुने उस देहको चक्र द्वारा काट डाला। जहां जहां शरीरके टुकड़े गिरे हैं, उन उन स्थानोंका नाम पीठस्थान है।

१ हिंगुला—सतीका ब्रह्मरन्ध्र। विग्रहदेवी कोटरी और भीमलोचन भैरव। रेल द्वारा बम्बई पहुंच कर स्टीमरसे करांची (२५० कोस) जाना होता है। इसके बाद ४१५ कोस समुद्रके किनारे किनारे पैदल व ऊंट पर जाना होता है। जहां पर अन्धेरी गुफामें ज्योति दीख पड़ती है। करांची रेल द्वारा भी जा सकते हैं।

२ शर्करा या करवीरपुर—यहां सतीको तीन आंखें हैं। देवी महिषमर्दिनी और क्रोधीश भैरव हैं।

उमा तथा महोदर भैरवके स्थान हैं। बी. एन. डब्लू. रेलवेके जनक पुर रोडके पास यह स्थान है।

२२. करटगांव—इस स्थानपर सतीका हाथ है। देवी भवानी तथा चन्द्रशेखर भैरवके स्थान हैं। शिवजीने स्वयं कहा है कि, कलियुगमें मैं चन्द्रशेखर पर्वतपर रहता हूं। ई. आई. रेलवेके ग्वालन्दो स्टेशनसे स्टीमरपर चांदपुर तक जाना पड़ता है। वहांसे ए. बी. रेलवे द्वारा सीताकुण्ड जाना पड़ता है।

२३. मानसरोवर—इस स्थानपर सतीके दाहिने हाथका हिस्सा है। दाक्षायिणी तथा अमर भैरवके स्थान हैं।

२४. उज्जैन—इस स्थानपर सतीकी कहुनी है। देवी मंगल-चंडी तथा कपिलाम्बर भैरवके स्थान हैं।

२५. मनीदेव—इस स्थानपर देवीका मणिवन्ध है। देवी गा-यत्री तथा सर्वानन्द भैरवके स्थान हैं।

२६. प्रयाग—इस स्थानपर देवीके हाथोंकी उंगलियां हैं। देवी ललिता तथा भवभैरवके स्थान हैं। इलाहाबादसे त्रिवेणीघाट दो कोस है। अलोपी देवीका मन्दिर त्रिवेणी घाटसे एक मीलकी दूरीपर है।

२७. बहुला—इस स्थानपर सतीका वामबाहु है। देवी बहुला और भीरुक भैरवके स्थान हैं। सर्वसिद्धि प्रदायक हैं। कलकत्तेसे रेल अथवा स्टीमर द्वारा कटवा जाना होता है। कटवामें केतुग्राम नामसे यह तीर्थ स्थान है।

२८. जलन्धर—इस स्थानपर सतीका वाम स्तन है। देवी त्रिपुर-मालिनी तथा भीषण भैरवके स्थान हैं। ज्वालामुखी तीर्थस्थान है।

२९. रामगिरि वा चित्रकूट पर्वत—यहांपर सतीका दक्षिणस्तन है। देवी शिवानी तथा भैरवचण्डोके स्थान हैं। बी. एन. रेलवेके बिलासपुर स्टेशनसे उतरकर तीन कोस पैदल चलना पड़ता है।

३०. वैद्यनाथ—इस स्थानपर सतीका हृदय है। देवी जयदुर्गा तथा वैद्यनाथ भैरवके स्थान हैं। ई. आई. रेलवेके जसिडिह स्टेशनपर उतरकर वैद्यनाथधामको जाना पड़ता है।

३१. उत्कल विरजक्षेत्र—इस स्थानपर सतीकी नाभि है। देवी विमला तथा जगन्नाथभैरवके स्थान हैं। एन. बी. रेलवेके पुरी स्टेशनमें उतरना पड़ता है।

३२. कांची—इस स्थानपर सतीका कंकाल है। देवी देवगर्भा तथा रुरु भैरवके स्थान हैं। ई. आई. रेलवेकी लूपलाईनमें बोलपुर स्टेशनसे दो कोसकी दूरीपर कोपाई नदीके तटपर यह स्थान है। यहांपर एक ऐसा कुण्ड है, जिसपर लोग पूजा चढ़ाते हैं।

३३. कालमाधव—इस स्थानपर सतीका वाम नितम्ब है। देवी काली तथा असिताङ्ग भैरवके स्थान हैं। इस स्थानपर अनेक प्रकारकी पूजा करते हुये लोग सिद्धि प्राप्त करते हैं।

३४. नर्मदा—इस स्थानपर सतीका दक्षिण नितम्ब है। देवी सेनाख्या तथा भद्रसेन भैरवके स्थान हैं।

३५. कामरूप या कामाख्या—इस स्थानपर महामुद्रा योनिपीठ है। देवी कामाख्या तथा उमानन्द भैरवके स्थान हैं। ए. बी. रेलवेके गौहाटी स्टेशनसे ८॥ कोसपर है। देवी स्वयं कहती है, "त्रिगुणातीत होकर भी जिस पर्वतपर मैं रक्तपाषाणरूपिणी होकर विराजमान रहती हूँ, जिस स्थानपर साक्षात हयग्रीव माधव और उमानन्द नामके भैरव स्थित हैं, जिस क्षेत्रमें देवी मोक्षदाका नित्य विहार होता है, उस नित्य, प्रत्यक्ष और प्रधानमय क्षेत्रमें जीवकी मुक्ति निःसन्देह है।

३६. नेपाल—इस स्थानपर जानुद्वय हैं। देवी महामाया तथा कपाली भैरवके स्थान हैं।

३७. जयन्ती—इस स्थानपर वाम जङ्घा है। देवी जयन्ती तथा क्रमदीश्वर भैरवके स्थान हैं। यह स्थान सिलहट (श्रीहट्ट) के जयन्तिया परगनेमें खासिया पर्वतके दक्षिण बाऊरभाग नामक गांवके पास पहाड़के निचले-हिस्सेमें देवीके उरुदेशकी प्रतिकृतिका दर्शन होता है। यही जयन्तीपीठ है। श्रीहटसे इस स्थानके लिये वर्षाऋतुमें स्टीमर द्वारा तथा अन्य ऋतुओंमें नावसे कन्हैयाबाद पहुंचकर २॥ कोस पैदल जाना पड़ता है।

३८—मगध—इस स्थानपर दक्षिण जंघा है। देवी त्रिपुरा तथा त्रिपुरेश्वर भैरव हैं।

३९—त्रिपुरा—इस स्थानपर दक्षिण चरण है। देवी त्रिपुरा तथा त्रिपुरेश्वर भैरव हैं।

४०—युगाद्या—इस स्थानपर दक्षिण चरणका अंगुष्ठ है। देवी महामाया तथा क्षीरखण्डक भैरवके स्थान हैं। वर्दमान स्टे-

शनसे बैलगाड़ी द्वारा १० कोस उत्तरको जाना होता है। वैशाखी संक्रान्तिमें इस स्थानपर मेला होता है।

४१. कालीघाट—इस स्थानपर दक्षिण चरणकी चार उंगलियां हैं। देवी काली तथा नकुलेश्वर भैरवके स्थान हैं। कलकत्तेमें दक्षिणकी तरफ १॥ कोसपर है।

४२. कुरुक्षेत्र—इस स्थानपर दक्षिण पादका गुल्फ है। देवी सावित्री तथा स्थाणु भैरवके स्थान हैं।

४३. वक्रेश्वर—इस स्थानपर भ्रूमध्य भाग है। देवी महिषमर्दिनी तथा वक्रनाथ भैरवके स्थान हैं। ई० आई० रेलवेके आमोदपुर स्टेशनसे ७-८ कोस पश्चिममें है। यहांपर ७ गर्म पानीके फुहारे, कुण्ड तथा पापहरा नदी है। महामुनि अष्टावक्रने इसी स्थानपर सिद्धिलाभ किया था। शिवरात्रिपर यहां खूब मेला होता है।

४४. जस्सोर—इस स्थानपर पाणिपद्म है। देवी यशोरेश्वरी तथा चण्ड भैरवके स्थान हैं। कलकत्ता हालीपुकुर स्टेशनसे ४२ मील टाकीरोट स्टेशन होकर यशोर अथवा ईश्वरीपुरमें जाना होता है।

४५. नन्दीपुर—इस स्थानपर हार है। देवी नन्दिनी तथा नन्दीकेश्वर भैरवके स्थान हैं। ई० आई० रेलवेकी लूप लाइनमें सैंथिया स्टेशनके पूरब तरफ यह पीठस्थान है।

४६. काशी—इस स्थानपर कुण्डल है। देवी विशालाक्षी तथा कालभैरवके स्थान हैं। जिस स्थानपर सतीके कानसे मणिमय कुण्डल गिरा था, उसी स्थानका नाम मणिकर्णिका है।

४७. कन्याश्रम—इस स्थानपर पृष्ठदेश है। देवी शर्वाणी तथा निमिष भैरवके स्थान हैं।

४८. लङ्का—इस स्थानपर नूपुर है। देवी इन्द्राक्षी तथा राक्षसेश्वर भैरवके स्थान हैं। प्राचीनकालमें इन्द्रदेवने इनकी उपासना की थी।

४९. विराट-इस स्थानपर वाम पदांगुली है। देवी अम्बिका तथा अमृताद भैरवके स्थान हैं।

५०. विभासक-इस स्थानपर वामगुल्फ है। देवी भीमरूपा तथा

सर्वानन्दकपाली भैरवके स्थान हैं। मेदिनीपुर जिलेके तमलुक स्टेशनसे सी० एस. कम्पनीकी स्टीमरसे जाना पड़ता है।

५१. त्रिस्रोता-इस स्थानपर वामपाद है। देवी भ्रामरी तथा अम्बर भैरवके स्थान हैं। बङ्गालके जलपाईगुड़ी जिलेमें बांदाके पास शालपाड़ी गांवमें यह पुण्य स्थान है।

भारतवर्षके तीर्थस्थान।
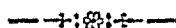
अतारा-जिला तिरहुतमें बनगांव महिषा गांवमें है। मुंगेरसे स्टीमरपर गोगरी जाकर वहींसे १५ कोस बैलगाड़ीसे जाया जाता है।

अजन्ताकी गुफा—बरारसे हैदराबाद निजामके राज्यतक विस्तृत है। जी. आई. पी. रेलवेके पचोरा स्टेशनसे बैलगाड़ी अथवा पैदल चलकर फरीदपुरको जाना चाहिये। वहांसे गुफाके लिए एक घंटेका रास्ता है।

अपराजितादेवी—ई. आई. रेलवेकी लूप लाइनमें मुरारई स्टेशन है। वहांसे डेढ़ कोस पश्चिममें कनकपुर गांव है, यहींपर पाषाणमयी कालिकाकी मूर्त्ति है।

अवन्तीमहातीर्थ—उज्जैनसे एक कोसकी दूरीपर क्षिप्रानदीके तीरपर है। यहांपर दत्तात्रेयका मन्दिर, रामघाट, पिशाचमुक्तेश्वर, गन्धर्ववीघाट, चत्रीघाट, मंगलाघाट आदि तीर्थस्थान हैं।

अमरकण्टक पर्वत—नर्मदानदीकी उत्पत्तिका स्थान है। यहांपर बहुतसे प्राचीन मन्दिर देखने योग्य हैं। बी० एन० रेलवेके पेण्ड्रा-रोड स्टेशनसे ३॥ कोसकी दूरीपर अमरकंटक है।

अमरनाथतीर्थ—दो हैं (१) काश्मीरकी राजधानी श्रीनगरसे गण्डार गांव होकर ५ दिनका रास्ता है। (२) जी० आई० पी० रेलवेके कल्याण स्टेशनसे जाया जाता है।

अहिल्यापाषाणी-बक्सर स्टेशनसे उत्तर गङ्गा तटपर रामरेखा घाट और चरित्रवन है। वहांसे तीन मील पूरबको पत्थरकी अहिल्या हैं।

अयोध्या या रामगया तीर्थ—अयोध्या स्टेशनसे १ मील उत्तरको

तरफ महामुनि वशिष्ठका आश्रम तथा वशिष्ठकुण्ड है। थोड़ेही दूरपर श्रीरामचन्द्रजीका जन्मस्थान, महाराज दशरथका महल, हनुमानगढ़ी इत्यादि दर्शनीय हैं। अयोध्याघाटपर ही श्रीभगवान् रामचन्द्रजीने शरीरत्याग किया था। यहांपर स्नान तथा पिण्ड दान करना चाहिये।

आदिनाथ तीर्थ—बङ्गालमें चट्टग्रामके दक्षिण पश्चिमके कोणपर महेशखाला द्वीपमें मैनाक पर्वतके ऊपर है।

इन्द्रप्रस्थका ध्वंसावशेष–दिल्लीसे १ कोश दक्षिणमें यह स्थान है। युधिष्ठिर आदि पाण्डवोंके निवासस्थान अब भी यमुना तट-पर दिखाई पड़ते हैं।

इलोरा–नागपुरसे १७१ मीलकी दूरीपर नन्दगांव है। यहींसे ४६ मील तांगेपर चढ़कर इलोराके लिये जाना पड़ता है। पर्वतमें देवमन्दिर, इन्द्रसभा, दशअवतार तथा जैनमन्दिर देखने योग्य हैं।

उमानन्द-आसाम प्रदेशमें गोहाटीके पास एक छोटेसे पहाड़ी द्वीपमें श्रीउमानन्दजीका मन्दिर है। उमानन्दजीको पूजा न चढ़ा कर कामाक्षादेवीका दर्शन निषिद्ध है।

ओंकारेश्वर–फेरीघाट स्टेशनसे ३॥ कोस बैलगाड़ीके द्वारा अमरेश्वर जाकर नर्मदा नदीको पार करना पड़ता है। वहींपर विन्ध्याचल पर्वतपर ओंकारेश्वरका दर्शन होता है।

ऋष्यशृंगमुनिका आश्रम—भागलपुर जिलेके माधोपुर तह-सीलमें सिद्धेश्वर नामक स्थानमें ऋष्यशृङ्गमुनिका आश्रम था। यहांपर शृंगेश्वर शिव हैं, शिवरात्रिके समय यहांपर १५ दिन तक मेला लगता है। इस स्थानपर पहुंचनेके लिये मुङ्गामाघाटसे सिमरियाघाट जाना चाहिये। यहींसे बमउनी जंक्शन ६ मील तथा मानसी ४० मील, भपटिआही ६० मील, यहींसे रघुपुर स्टेशनको जाना चाहिये। इस स्थानसे २४ मील बैलगाड़ीपर जाना पड़ता है।

कपोतभञ्ज—गायकवाड़ नेरोगेज (छोटी लाइन) रेलवेके बड़ोदासे १८ मीलकी दूरीपर डाकोर स्टेशनमें उतरना पड़ता है। यहांपर अक्टूबरके महीनेमें मेला लगता है।

कटाक्षराज—इस स्थानपर सतीका वामचक्षु गिरा था। एन. डब्लू. रेलवेके लालमूड़ा स्टेशनसे खेवाके लिये जाना पड़ता है।

खेवासे तीन कोस एक्के अथवा घोड़ेसे पहुंचा जाता है। चैत्रकी संक्रान्तिके समय यहांपर मेला लगता है।

कनखल—हरिद्वारसे एक कोस दक्षिणमें है। हरिद्वारसे गङ्गा त्रिधारा होकर कनखलमें आकर मिली हैं। यहांपर दक्षराजकी राजधानी थी। अब भी यहां पण्डालोग यज्ञस्थानका दर्शन कराते हैं। दक्षेश्वर शिवलिंगका पूजन प्रधान है।

कर्णगढ़—बङ्गालके मेदिनीपुर जिलेमें शलबनी थानाके अधीन कर्णगढ़ ग्राम है। मेदिनीपुरसे ५ कोस बैलगाड़ीसे जानेका रास्ता है। यहांपर दानवीर कर्णका निवासस्थान था। अब भी पुराने विशाल पत्थरोंका मन्दिर जङ्गलोंमें दिखायी पड़ता है।

कश्यप मुनिका स्थान—श्रीनगरसे पश्चिम-दक्षिणके कोणपर सुपियान नामक स्थान है। यहाँपर कश्यप मुनिका स्थान है। इस स्थानपर जानेके लिये घोड़े कियायेपर मिलते हैं।

काशीधाम—यहांपर मणिकर्णिका, दशाश्वमेध, अस्सी, पंच-गङ्गा आदि पुण्य तीर्थों का स्नान और विश्वेश्वर, अन्नपूर्णा, विशालाक्षी महामृत्युञ्जय तथा कालभैरवका दर्शन अवश्य करना चाहिये।

यह काशी हिन्दूतीर्थ और धर्मात्माओंकी प्रधान तपोभूमि है। जगतमें जिस रामायणकी इतनी मर्य्यादा है उसके जन्मदाता महर्षि वालमीकि और भाषा रामायणकार गोस्वामी श्रीतुलसीदास महाराजने इसी पवित्र भूमिमें बैठकर रामायणकी अवतारणा की थी। वाल्मीकि टीला इसी काशीमें है, जिसके पास ही पिशाचमोचन स्थान है जो गयाके समान पुण्यधाम है। यहीं भारतधर्ममहामण्डल द्वारा-स्थापित अनाथ आर्य्य महिलाओंका अन्नसत्र है। इसी काशीमें भारतभरके तीर्थ विराजमान हैं।

वालमीकि टीलेके पास ही एक सुवृहत शस्यशामला भूमिमें अखिल भारतवर्षका सम्मानपात्र भारतधर्म सिण्डिकेट भवन है, जिसके सामने ही दूसरी पटरीपर सनातनधर्मके महोपदेशकोंका महाविद्यालय और धर्म महामण्डलकी यज्ञशाला तथा गायत्री मन्दिर आदि दर्शनीय स्थान हैं। यहीं श्रीभारतधर्ममहामण्डलका प्रधान कार्य्यालय और विशाल भवन है।

इसी काशीमें मर्य्यादापुरुषोत्तम भगवान् श्रीरामचन्द्रने दश

अश्वमेध यज्ञ किये थे, जिससे उस घाटका नाम दशाश्वमेध घाट पड़ा है।

राजा हरिश्चन्द्रने अपने तईं यहीं वेचकर विश्वामित्रको दक्षिणा दी और सत्य दानकी लाज रखी थी। जिनके नामसे हरिश्चन्द्र-घाट प्रसिद्ध है।

सनातनधर्मके सब आस्तिक और श्रद्धावान् राजा महाराजाओंके यहां राजभवन हैं। महाराजा ग्वालियरका राजभवन मन्दिर और अन्नसत्र, महाराजा काश्मीर, महाराजा बड़ौदा, महाराजा इन्दौर, महाराजा विजयानगरम्, महाराजा विलासपुरका विलास-भवन जो अपनी तरजकी इस शहर भरमें एक ही प्रासाद वाटिका है। महाराजा नैपाल, महाराजा अलवर, महाराणा उदयपुर का राणा महल और महल्ला, महाराजा जयपुरका मानमन्दिर प्रसिद्ध ज्योतिषयंत्रालय, महाराजा रीवांकी राजअट्टालिका, महाराज दर्भङ्गाका राजभवन घाट और अन्नसत्र है।

कुमारीकुण्ड—सीताकुण्ड स्टेशनसे ५ कोसकी दूरीपर कुमिरा स्टेशनके पास जलमें अग्नि जल रही है। यहांपर स्नान, तर्पण तथा हवन आदि करना उचित है।

कुरुक्षेत्र—स्टेशनसे कुरुक्षेत्र शहर डेढ़ मीलकी दूरीपर है। एक्का गाड़ी सवारीके लिये मिलती है।

खाण्डव वन—खण्डवासे भुसावल तक खाण्डव वन कहा जाता है। खण्डवा स्टेशनमें उतरना चाहिये। रास्तेके दोनों तरफ बड़े बड़े जङ्गल, पहाड़, नदियां और छोटे छोटे प्राचीन मन्दिर दर्शनीय हैं।

गंगासागर—कलकत्तेसे दक्षिणमें बङ्गालकी खाड़ी है, यहींपर गंगाजी सागरसे मिलती हैं। पौष महीनेकी संक्रान्तिपर बहुत बड़ा मेला होता है। यहां पर कपिल मुनिकी मूर्ति है। कलकत्तेसे स्टीमर द्वारा जाया जाता है।

गंगोत्रीतीर्थ—गंगाजीका गोमुख पर्वतको भेदकर प्रथम पतनका यह स्थान ८ कोस नीचे है।

गढ़वेला—यह बी. एन. रेलवेका एक स्टेशन है। उत्तराभि-

मुक्त देवी सर्व मङ्गलाका यह स्थान है। इनकी महिमाके विषयमें बहुतसी कहानियां हैं।

गयाधाम-स्टेशनसे १ कोसकी दूरी पर फलगू नदीके किनारे यह तीर्थस्थान है। भगवान् गदाधरके चरणकमलोंमें तथा फलगू नदी और अक्षयवटके मूलमें पिण्ड देना चाहिये। बुद्धगया इस स्थानसे ३ कोस दक्षिणमें है।

गिरिराजपुरी-गिरि, गिरिलक्ष्मी तथा गिरिराजका स्थान शिमला पहाड़में अब भी दर्शनीय है।

गुहकालय-ई. आई. रेलवेके चुनार स्टेशनसे एक कोसकी दूरी पर किलेके निचे यह स्थान है।

गौराङ्ग प्रभुके पितृदेव जगन्नाथमिश्रका स्थान-जिला श्रीहटके नहाईर घाटमें स्टीमरसे उतरना पड़ता है। यहांसे आधे कोसकी दूरी पर गौराङ्ग प्रभुका मन्दिर है। रथयात्रा तथा झूलनके अवसर पर और चैत्र महीनेके प्रति रविवारको मेला होता है।

चण्डिका पहाड़-हरिद्वारसे एक कोस पूरबमें पहाड़के ऊपर देवी चंडीका मन्दिर है।

चन्द्रनाथतीर्थ-ग्वालन्दोसे स्टीमरपर चांदपुर, फिर वहांसे रेल द्वारा सीताकुण्डके लिये जाना पड़ता है। स्वयं भगवान् चन्द्रमौलिने कहा है-"विशेषतः कलियुगे वसामि चन्द्रशेखरे"। इस वाक्यकी पूर्तिके लिये चन्द्रनाथमें अष्टशक्ति अष्टमूर्ति होकर लिंगरूपमें विराजमान हैं। यह एक पीठस्थान भी है। इसके आसपासमें अनेक तीर्थ स्थान हैं। किन्तु पहाड़ पर होनेके कारण रास्ता कठिन अगम्य तथा भयानक है, इस कारण यहांके बहुतसे तीर्थ अब भी नहीं जाने जाते। (१) व्यासकुण्डके पश्चिममें भैरव तथा व्यास मुनिका मन्दिर है। (२) सीताकुण्ड बिलकुल भर गया है, किन्तु मन्दिर अब भी पुराने इतिहासका साक्षी है। (३) यह स्थान निर्जन है, तथा जंगली दृश्योंके सौंदर्यसे भगवत्-प्रेममें मानव हृदय मुग्ध हो जाता है। कुण्डसे थोड़ी ही दूर पर घन विटप लतादिसे परिवेष्टित प्राकृतिरमणीय, सुन्दर, मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान् रामचन्द्र तथा वीरशिरोमणि श्रीलक्ष्मणजीके कुण्ड निर्मल जलसे भरे हैं। (४) इससे थोड़ी ही दूर पर पूरबकी ओर भगवान् चन्द्रशेखरकी नेत्राग्नि "ज्योतिर्मय" पाषाणमें सदा जाज्वल्यमान

रहती है (५) "ज्योतिर्मय" से दक्षिण-पश्चिमके कोण पर काली वाड़ी है, जहां कि दशभुजा मूर्ति विराजमान है। (६) अनुच्च पर्वत पर स्वयंभुनाथका मन्दिर है। इसमें राम लक्ष्मण सीता, अन्नपूर्णा आदिकी अनेक मूर्तियां हैं। इस स्थानको प्रकृतिने अपने मनोरम दृश्योंसे सौन्दर्यमय बना रखा है। स्वयंभुनाथके दर्शनसे—

"अश्वमेध सहस्रस्य वाजपेयशतस्य च।
एतद्दीपमुखं दृष्ट्वा फलमाप्नोति मानवः॥
सर्वपापविनिर्मुक्तो धनधान्यसुतान्वितः।
शिवत्वं लभते मर्त्यो पुनर्जन्मविवर्जितः॥

(७) "मन्मथनद अथवा पादगया"-यहां पर पिण्डदान करना चाहिये। (८) ऊनकोटिशिवोंके स्थान-यहां पर पत्थरके अनेक शिवलिङ्ग हैं। इन पर झरनोंसे पानी वहाकर प्रकृति स्वयं इनका पुजन करती है। (९) "विरूपाक्षका मन्दिर—विरूपाक्षके मन्दिर में शिवजीके दर्शनसे—

"यस्य कटीदेशसंस्था विरूपाक्षो महेश्वरः।
रुद्रलोकमवाप्नोति, यस्तत्रारोहते नरः॥"

चन्द्रनाथ—पर्वतके शिखरपर यह तीर्थ है। इस पर चढ़नेसे-

"श्रीचन्द्रशेखरारोहे मुक्तिमाप्नोति मानवः।
कुल विंशति संयुक्तः शिवलोके महीयते॥"

(११) पातालपुरी—यहां पर प्रकाण्डहर, गौरी, शिव, गुप्तकाली तथा और भी अनेक देव देवियोंकी मूर्तियां विराजमान हैं।

(१२) बड़वानल—सीताकुण्डसे दक्षिण-पूर्व कोणमें २२ कोस की दूरीपर यह स्थान है, यहां पर जलमें अग्नि जल रही है। बड़वानलमें स्नान करनेसे:—

"युगान्ते दह्यते येन ब्रह्माण्डं सचराचरं।
स साक्षाद्वाड़वो वन्हि सर्वपापहरः शुभः॥
तत्र स्नानेच दानेच शिवप्रीतिकरो नरः।
अनन्त फलमाप्नोति तर्पणं पितृमुक्तिदम्॥"

(१३) "लवणाक्ष"—सीताकुण्डसे २॥ कोस दक्षिण-पूर्व है। यत्र तत्र अग्निमय कुण्ड है। (१४) सीताकुंडसे ९ मील दक्षिण "कुमारीकुण्ड" तीर्थ है। (१५) चट्टग्रामसे ३० कोस दक्षिण बंगाल

की खाड़ीमें महेशखाली द्वीपके अन्तर्गत सिंधुगर्भमें आदिनाथका पवित्र मंदिर है । (१६) "सहस्त्रागा" (१७) सूर्यकुण्ड (१८) ब्रह्म-कुण्ड, (१९) गुरुधूनी ।

चिंतापूर्णि—होशियारपुरके उत्तर-पश्चिम तथा ज्वालामुखीसे २० कोसकी दूरीपर है । यहांपर छिन्नमस्ता देवीका मंदिर है ।

जटाभटक्क—त्र्यम्बकेश्वरके पास ब्रह्मगिरीके ऊपर है । यहांपर शिवजीकी जटासे गोदावरी नदीका प्रवाह वह रहा है । पर्वतका यह अंश जटाकी तरह दीख पड़ता है । तटपर अंजीरके पेड़के नीचे ध्यानावस्थित गौतममुनिकी मूर्ति है ।

"जल्लेश्वर" मंदिर—(१) यद्यपि मंदिर भग्नावस्थामें है, तथापि इस मंदिरमें प्राचीनकालकी चित्रकारियां, दर्शनीय हैं । यह स्थान बङ्गालके जलपाईगुड़ी शहरसे ८ मील पूरवकी ओर है ।

(२) दूसरा बर्धवान जिलेके मेमारी स्टेशनसे दक्षिण जो ग्रामके दक्षिण-पश्चिम कोणके पातालगृहमें पञ्चमुण्डी आसन है ।

तारकेश्वर—हवड़ासे ३६ मीलकी दूरीपर है । रेल द्वारा जाना पड़ता है,

तारादेवी—ई. आई. रेलवेके मल्लारपुर स्टेशनमें उतरकर २ कोस पूरबमें चण्डीपुर गांव है, वहींपर तारादेवीका मंदिर है । महामुनि वशिष्ठने यहींपर सिद्धि प्राप्त की थी । आश्विन शुक्ल चतुर्दशीको यहांपर उत्सव होता है ।

त्रिवेणी—गंगा, यमुना और सरस्वतीका संगम स्थल है । त्रिवेणी प्रयागमें है ।

त्र्यम्बकेश्वर—जी. आई. पी. रेलवेके नासिक रोड स्टेशनसे नासिक शहर ३ मीलकी दूरीपर है । यहांसे १८ मीलकी दूरीपर तीनों ओर पर्वतोंसे घिरे हुए स्थानमें त्र्यम्बकेश्वरका मन्दिर है ।

दण्डकारण्य—नागपुरसे नासिकतक विस्तृत भूभाग ही प्राचीन कालसे दण्डकारण्य कहा जाता है ।

द्वारकापुरी—बम्बईके अन्तर्गत गुजरातके कच्छ-खाड़ीके पास है रेल वहां तक अब गयी है ।

निमाई तीर्थका घाट—बंगालके जिला हुगलीमें,वैद्यवाटी स्टेशनके पास है ।

नैमिषारण्य—युक्तप्रान्तमें बघौली स्टेशनसे ७-८ कोस बैलगाड़ीमें चढ़कर आया जाता है। यहांपर दधीचि मुनिके पश्चात् महामुनि व्यासदेवका आश्रम था।

परशुरामजीका आश्रम—ई. आई. रेलवेके सुकामा स्टेशनसे २॥ मील पश्चिममें है। दूसरा रत्नागिरिमें है।

पंचवटीवन—बम्बई प्रान्तमें गोदावरी नदीके तटपर है। १२वें वर्ष यहांपर कुम्भका मेला लगता है। यहां पर लक्ष्मणजीने सूर्पणखाकी नाक काटी थी। नासिक स्टेशनसे ५ मील ट्राममें चलकर पूर्वदक्षिणाभिमुख श्रीरामचन्द्रजीकी पर्णकुटी है। यहांका प्राकृतिक दृश्य अति मनोहर है।

पशुपतिनाथतीर्थ—नेपालकी राजधानी काष्ठमाण्डव नगरसे २ मील पूरबमें बागमती नदीके पश्चिम तटपर यह स्थान है। नदीके पूरब तरफ गुह्येश्वरी देवीका मन्दिर है। शिवरात्रिके समय यहां पर मेला लगता है। इस अवसरपर नेपालमें प्रवेश करनेके लिये आज्ञा लेनेकी आवश्यकता नहीं पड़ती। बी. एन. डब्लू. रेलवेके रक्सउल स्टेशनसे ८० मीलपर काष्ठमाण्डव नगर है।

रक्सडलसे डोलीमें सीमगिरि पर्वतके नीचे भीमदेवी नामक स्थानतक आनेके लिये ७) रु० किराया लगता है और यहांसे ८) रु० देकर झंपानमें सवार होकर काष्ठमाण्डव जाया जाता है। जिन्हें झंपानकी आवश्यकता होती है, वे पहलेसे ही काष्ठमाण्डवमें चिट्ठी लिखकर बंदोबस्त करते हैं।

पुरी—ओड़ीसाके समुद्र तटपर पुरी शहरमें जगन्नाथदेव तथा विमलादेवीका मन्दिर और मन्दार गिरिका सुरंग, वैतरिणी तीर्थ, और थोड़ी ही दूरपर भुवनेश्वरका मन्दिर है।

पुष्कर तीर्थ—राजपुतानेमें है। अजमेर शहरसे तांगे अथवा डोलीसे पुष्कर तीर्थके लिये जाया जाता है। इसके पासमें ही गायत्री तथा सावित्रीदेवीका मन्दिर है। हर १२वें वर्ष कुम्भका मेला लगता है।

पार्वतीशैल—शहर पूनाके दक्षिणमें सह्य पर्वतके शिखरपर पार्वती पर्वतपर सुवर्णमयी पार्वतीजी तथा पाषाणकी शिवमूर्ति है।

पाण्डव गुफा—पूनाके फरगुसन कालेजके पाससे पर्वतश्रेणी

दिखाई पड़ती है । कहा जाता है कि, वनवासके समय युधिष्ठिर आदि पाण्डव इसी गुफामें रहते थे ।

पाण्डुकेश्वर—बद्रीनारायणसे थोड़ी देर न चे पाण्डुकेश्वर नामक एक अपूर्व सोनेकी विष्णुमूर्ति है। अर्जुन स्वर्गसे इस मूर्तिको लाये थे ।

पृथूदक—स्थानेश्वरसे २४ मील पश्चिममें है। यहां भी गयाकी तरह पिण्डदान किया जाता है। यहांपर पृथ्वीराजका भवन यज्ञ-शाला तथा कालीमन्दिर है। दिल्लीसे ७ मील दक्षिणमें है ।

बगड़ी—कृष्ण नगर—इस स्थानपर कृष्णराय नामक भगवान् श्रीकृष्णकी पाषाणकी मूर्ति तथा राधाकी धातुमूर्ति विराजमान है। ४०० वर्ष पहले बगड़ीके स्वाधीन राजाकी सहायतासे ब्राह्मण, परमभक्त राघवधर रायजीने सिद्ध पुरुष उपेन्द्रभट्टजीको पुरोहित बनाकर इस युगल मूर्तिकी प्रतिष्ठाकी थी। होली, रथयात्रा, रास-लीला, आदि अवसरपर यहांपर बहुतसे यात्री इकट्ठे होते हैं। कृष्ण-नगर बी. एन. रेलवेके गढ़वेत्ता स्टेशनसे ३ मीलपर है ।

बद्रिकाश्रम—बद्रिकाश्रम जानेके लिए हरिद्वारसे १ महीनेका रास्ता है। यहांपर चतुर्भुज विष्णु भगवान्की मूर्ति विराजमान हैं। कार्तिकसे चैत्र तक जाड़ा और बरफके कारण रास्ता बिलकुल बंद रहता है। रास्तेमें लोहेका पुल मिलता है, जो लक्ष्मणझूलाके नामसे प्रसिद्ध है। हर बारह कोसपर यात्रियोंके ठहरनेके लिये 'चट्टी' बनी है। जो यात्री पैदल नहीं चल सकता, उसे १००) रु० देकर झम्पान किरायेपर लेना चाहिये ।

बरदाबाटल—देवी विशालाक्षीका मन्दिर बङ्गालके जिला खुलना-में है। कहा जाता है कि, राजा सभासिंह इनके बड़े कृपापात्र थे ।

बाराहक्षेत्र—भगवान् विष्णुके तृतीय अवतार बाराहदेवकी मूर्ति नेपाल राज्यके अन्तर्गत धवलगिरिमें स्थापित है। कार्तिक महीनेमें पूर्णिमाके दिन हरसाल मेला लगता है। ई. बी. रेलवेके अंचराघाट स्टेशनसे बैलगाड़ी द्वारा कुशी नदीके तटसे २० मील चलकर धवलगिरि पर्वतके नीचे पहुंचना फिर २० मील पर्वतपर चढ़कर बाराह भगवान का दर्शन होता है ।

विश्वामित्र मुनिका आश्रम—शाहाबाद जिलेमें ई. आई. रेलवेके

बक्सर स्टेशनसे उत्तर ओर चरित्रवन नामक स्थानमें मुनीजीका आश्रम है तथा इसके पास ही रामरेखा घाटपर रामजीका मन्दिर रामेश्वरनाथका शिवमन्दिर है। निकट ही ब्रह्माकी गुफा, ताड़का-मन्दिर, ताड़कानाला है।

विन्ध्यवासिनी—जिला मिर्जापुरमें ई. आई रेलवेके विन्ध्याचल स्टेशनसे ३ फरलांगपर देवीका मन्दिर है। विन्ध्याचलके यात्रियोंको त्रिकोण करना चाहिये। त्रिकोण यात्रामें पहाड़पर, कालीखोह तथा अष्टभुजादेवीका दर्शन होता है। इसी पर्वतपर देवीसे शुम्भ निशुम्भ नामक राक्षसोंसे युद्ध हुआ था। यह सिद्ध पीठस्थान है।

वेदव्यासका जन्म स्थान—बी. एन. रेलवेके सोकल स्टेशनसे ५ मील पश्चिम की तरफ शंख नदीसे परिवेष्टित द्वीपाकार ब्राह्मणी कोयल नामक स्थानमें श्रीव्यासदेवका जन्म हुआ था।

भर्तृगुहा—जी. आई. पी. रेलवेके उज्जैन स्टेशनसे १ कोस उत्तरमें क्षिप्रा नदीके तटपर भूगर्भस्थित प्रासादमें ध्यानमग्न श्रीभर्तृहरि और उनके गुरु गोरखनाथ तथा महारानी पिङ्गलाकी मूर्तियां हैं।

स्थानेश्वर शहरके पास एक छोटासा ताल है, जिसमें राजा दुर्योधन युद्धमें परास्त होकर छिपे हुए थे। इसके पासही देवी कुन्तीका शिवालय तथा पितामह भीष्मकी शरशय्या है।

मत्स्यदेश—जैपुरसे खाण्डव वन तक विस्तृत भूभागको प्राचीन कालमें मत्स्यदेश कहा जाता था। यहांपर महाराज विराट्की राजधानी थी।

मथुरा—टूँडला और आगरेसे मथुरा जा सकते हैं। यमुनाके दक्षिण तटपर, ध्रुव और विश्राम घाटपर पितृलोकके लिये पिण्डदान किया जाता है। मथुरासे ३ कोसपर महावन तथा महावनसे आधा कोसपर गोकुल है।

मन्दारपर्वत—भागलपुरसे ६१ मीलकी दूरीपर मन्दार पर्वत है। मन्दार हिल नामक ई. आई. रेलवेका एक स्टेशन है।

महाराजा विक्रमादित्यके प्रासादका सिंहद्वार—उज्जैन शहरमें है जिसके सिंहद्वारका भग्नावशेष अब भी देखने योग्य है।

महर्षि पातञ्जलिका आश्रम—बङ्गालमें वर्धमान जिलेके मंतेश्वर थानेके अधीन पातन ग्राममें महर्षि पातञ्जलिका योगाश्रम है।

यहां पर पतञ्जलेश्वर शिवलिंग अब भी वर्तमान हैं। ई. आई. रेलवेके मेमारी स्टेशनसे १० मील उत्तरमें यह स्थान है। स्टेशनसे आश्रमको जानेके लिये बैलगाड़ी मिलती है।

महर्षि सन्दीपन मुनिका आश्रम—यह आश्रम क्षिप्रा नदीके उत्तरकी तरफमें है। वसुदेवजीके पुत्र बलरामजी तथा श्रीकृष्ण जीने यहीं पर विद्याध्ययन किया था। यहां पर बहुतसे देवमन्दिर तथा अनेक साधु अब भी निवास करते हैं।

महर्षि भृगुकाआश्रम—आश्रमसे थोड़ी ही दूर पर नर्मदा नदी समुद्रसे मिली है।

महर्षि वाल्मीकिका आश्रम—कानपुरसे १२ मीलकी दूरी पर बिठूर नामक स्थानमें वाल्मीकिजीका स्थान है। वाल्मीकेश्वर महा देव स्थापित हैं। ब्रह्माजीने यहां पर यज्ञ किया था, इसीसे इस प्रान्तका नाम ब्रह्मावर्त है।

महालक्ष्मी—बम्बई शहरमें महालक्ष्मी स्टेशन है। स्टेशनसे १ मील दूरी पर समुद्रके किनारे महालक्ष्मीका मन्दिर है। मन्दिरसे समुद्र तट तक संगमर्मरकी सीढ़ी बनी हुई है।

महाकाल—उज्जैनमें क्षिप्रानदीके तटसे थोड़ी ही दूर पर मन्दिर की दाहिनी तरफ गुफामें शिवकी अद्वितीय विशाल मूर्ति विराज-मान है।

महामुनि जमदग्निका आश्रम—हिमालय पर्वतके ऊपर रेणुका तालावसे २ मील ऊँचे पर है।

महामुनि भरद्वाजका आश्रम—इलाहाबाद स्टेशनसे उत्तर-पश्चिमके कोण पर है।

मानस सरोवर—यह स्थान, हरिद्वारसे २०० मील ईशान कोण में हिमालय पर्वत पर है।

मुम्बादेवीका मन्दिर—बंबई शहरकी अधिष्ठात्री मुम्बादेवीकी धातुमूर्तिके सामने एक तालाब है, जिसके चारों ओर सीढ़ियां तथा अनेक मन्दिर बने हुए हैं। यहांसे थोड़ी ही दूर पर भूलेश्वर महा-देवका मन्दिर है।

मेहरकालीवाड़ी—मेहरगांव-चांदपुरसे १४ मीलकी दूरी पर यहां सर्वानन्द ठाकुरने कालीजीसे सिद्धि प्राप्तकी थी। यहां पर

पौषसंक्रांति तथा दुर्गापूजाके बाद बहुतसे लोग एकत्रित होते हैं। चांदपुरसे भिगड़ा होकर कालीवाड़ीके लिये जाना चाहिये।

रामशर तीर्थ—खण्डवा स्टेशनसे १ कोस दक्षिण-पूर्व कोणमें है। पञ्चवटी जाते समय जनक नन्दिनी सीताजी प्याससे व्याकुल हो गयीं, उसी समय पानी न मिलनेसे भगवान् रामचन्द्रजीने बाणसे पृथ्वीको वेधकर पानी निकाला। यहां पर एक कूआं तथा पासमें ही भगवान्की एवं हनुमानजीकी पाषाणमूर्ति है।

रूपनाथ तीर्थ-श्रीहट्ट जिलाके अन्तर्गत जयन्त नामक गांवमें रूपनाथजी प्रसिद्ध हैं। यहां पर शिवरात्रिके दिन मेला लगता है।

रेणुका तीर्थ-यह स्थान हिमालय पर्वत पर है। दिल्ली अम्बाला कालका रेलवेके अम्बाला केन्टूनमेंट स्टेशनसे ६० मील उत्तर महानगर नामक स्थान है, यहींसे १५ मील उत्तरमें रेणुका तीर्थ है। यहां पर परशुरामजीने पितृ आज्ञा पालन किया था। यहां पर स्नान तर्पण आदि करना चाहिये। कार्तिक-शुक्ल नवमीको यहां पर मेला लगता है।

रोवालसर-ज्वालामुखीसे ६० मील पूरबमें है। यहां पर पानी में तैरते हुए पर्वत पर शिवमन्दिर है। यदि यहांसे सीधे उत्तरकी तरफ जाया जाय तो मनोमहेश, और मनोमहेशसे और भी उत्तर जाय तो मनुष्य कैलास तक पहुंच सकता है। किन्तु रास्ता दुर्गम है। रास्तेमें बालकरूपी महादेवका दर्शन होता है।

शिववाड़ी—ढाका जिलेके मानिकगंजकी शिवबाड़ी प्रसिद्ध है। यहां पर कुण्डमें सोई पाषाणकी वृहद् शिव तथा बालभैरवकी मूर्ति है। यहां पर शिवरात्रिको मेला लगता है। यह स्थान ग्वालन्दोसे १६ मील उत्तर पूरबमें है।

श्रीवृन्दावनधाम—मथुरासे पांच मील पर है। वृन्दावनसे ६-७ कोसकी दूरी पर, राधाकुण्ड, श्यामकुण्ड, गोवर्धन गिरि तथा मानसरोवर आदि स्थान बड़े ही मनोहर हैं। बैलगाड़ी अथवा इक्केसे जाया जाता है, जिसका किराया १) रु० रोज लगता है। होलीके अवसर पर तीन चार दिन तक बहुत भारी मेला होता है।

साधक राम प्रसादका जन्मस्थान-कलकत्तेसे ३६ मील पर हाली शहर स्टेशनके पास है। दिवालीके अवसर पर प्रसाद नामक मेला लगता है।

सीतादेवीका जन्मस्थान—दरभंगासे कमतौल होकर ६ मील-पर जनकपुर है, अथवा जनकपुर रोड स्टेशनसे भी जाया जा सकता है। यहींपर सीतादेवीका जन्म हुआ था।

सीताकुंड—मुंगेरसे ५ मीलपर सीताकुण्ड है। स्टेशनसे गाड़ी पालकी, इक्के मिलते हैं। मुंगेर स्टेशनके पास राजा जरा-सिन्धुका किला देखने योग्य है।

सुकुल तीर्थ—ब्रोचसे ५ कोस पूरबमें पवित्र नदी नर्मदाके उत्तर तटपर सुकुल तीर्थ प्रसिद्ध है। बम्बईसे ब्रोच २४० मील है। नर्म-दानदी विन्ध्याचलसे निकलकर भृगुक्षेत्रमें सागरसे मिली हैं। नर्मदामें स्नान करनेसे सब पाप नष्ट होता है। नर्मदाके तटकी भूमि तीर्थस्थान है। किन्तु इसमें भी सुकुलतीर्थ सबसे श्रेष्ठ है। उज्जैनके राजा चाणक्य इसी स्थानमें स्नान करके पापोंसे मुक्त हुए थे। जब नर्मदासे राजा इस तीर्थको आ रहे थे, उनके बाल काले रंगके थे यहां आते ही बालोंका रंग श्वेत हो गया। यहांपर तीन पुण्यतीर्थ हैं, यथा कबीर, हुंकारेश्वर, सुकुलतीर्थ। हुंकारेश्वरतीर्थमें विष्णु भगवान्‌का मंदिर है, यहांपर अगहनके महीनेमें मेला लगता है। एक मीलकी दूरीपर नर्मदाके किनारे मङ्गलेश्वरका मन्दिर है। इसके उस छोरपर कबीर वट नामक एक बहुत बड़ा वटवृक्ष है। इसके नीचे सात हजार आदमी आनन्दपूर्वक बैठ सकते हैं। भार-तवर्षमें इससे बड़ा दूसरा वटवृक्ष नहीं है। कहा जाता है कि, कबी रके दतूनसे इस वटवृक्षकी उत्पत्ति हुई है। यहांपर एक मंदिर भी है।

सूर्यदेवका जन्मस्थान—काश्मीरके श्रीनगरसे नाव द्वारा जाना, थल और यहांसे ४ मीलपर मटन स्थान है। कहा जाता है कि सूर्य्यदेवका जन्म यहींपर हुआ है। इस रास्तेसे अमरनाथ भी जाया जाता है।

सेतुबन्धरामेश्वर-भगवान् श्रीरामचन्द्र द्वारा प्रतिष्ठित लिङ्गरूप-में शिवकी मूर्ति विराजमान है।

सोमनाथका स्थान—सौराष्ट्रमें सूरत स्टेशनसे एक कोसकी दूरीपर है।

हरधनु—भगवान् श्रीरामचन्द्रजीके धनुष तोड़नेपर एक हिस्सा जनकपुरमें तथा दूसरा सीतामढ़ी स्टेशनसे तीन कोसकी दूरीपर गिरा है।

हरिनाथ—सम्बलपुर जिलाके फुलरू और बुड़ी सम्बरके इलाके में भगवान् विष्णुकी एक अतिसुन्दर वाराह अवतारकी मूर्ति है। यह मन्दिर पहाड़ काटकर बनाया गया है, इसके दोनों तरफ प्राकृतिक झरना है। इस स्थानपर पहुँचनेके लिये सम्बलपुरसे ५४ कोस बैलगाड़ीसे जाया जाता है।

हरिहर क्षेत्र–पटना हाजीपुरके पास है। यहां हर कार्तिक पूर्णिमाको लक्खी मेला होता है।

हरिद्वार–लक्सर स्टेशनसे हरिद्वारके लिये जाना पड़ता है। यह रमणीक स्थान गंगाके दक्षिण तटपर है। शिवालिक पर्वतसे गंगाजी यहांपर समतल भूमिमें गिरती हैं। महर्षि कपिल मुनिने यहांपर कठोर तपस्या की थी, इस कारण यहांका दूसरा नाम "कपिल स्थान" है। शैव सम्प्रदायके लोग इस स्थानको हरद्वार कहते हैं। ब्रह्मकुण्ड (गंगा घाट) में स्नान करके, इससे दक्षिण कुशावर्त घाटपर पितृलोकके लिये पिण्डदान करना चाहिये। इस स्थानमें सर्वनाथ शिवलिंग विराजमान हैं। गंगाद्वार घाटके मंदिरमें विष्णुपादुकाएँ हैं। इस घाटपर कुंभमें स्नान करनेपर पुनर्जन्म नहीं होता। यहांपर हरसाल चैत्रकी संक्रान्तिके अवसरपर मेला लगता है। यहांपर नारायणशिला, मायादेवी तथा भैरवका मन्दिर है। मायादेवीके मंदिरमें चतुर्भुज त्रिमस्तक-धारिणी दुर्गाकी कराल मूर्ति विद्यमान है। मूर्तिके एक हाथमें नरमुण्ड, दूसरेमें त्रिशूल और तीसरेमें चक्र है। मंदिरके सामने सर्वनाथ शिवकी अष्टबाहु मूर्ति तथा नन्दीकी मूर्ति है। सर्वनाथके मंदिरके बाहर महाबोधि वृक्षके नीचे बुद्धदेवकी एक मूर्ति है। यहांसे डेढ़ मीलपर कनखलमें दक्षराजाका शिवहीन यज्ञ-स्थान है, जहांपर पतिनिन्दा सुनकर भगवती दक्षनन्दिनी सतीने शरीरत्याग किया था। कनखलसे दक्षिणमें दक्षेश्वर नामक शिव-मूर्ति है, यहांपर गंगाजी त्रिधारा होकर बहती हैं, इसके सङ्गम स्थान-पर स्नान करके मनुष्य पापमुक्त होता है। सीताकुण्ड, नीलधारा पर्वत अथवा चण्डी पहाड़। यहांपर चण्डिकादेवीकी मूर्ति, विश्वेश्वर महादेव तथा बिल्वपर्वत देखने योग्य हैं। हरिद्वारके पूर्व दक्षिण सूर्यकुण्ड, होकर उत्तर सप्तश्रोता या सप्तधारा, १४ मील पर हृषीकेश है। यहांपर गंगाजी पहाड़से नीचे गिरती हैं।

प्राकृतिक शोभा मनोहर एवं दर्शनीय है। यहां स्नान तर्पण आदि करना चाहिये। २ मील उत्तरमें लक्ष्मण झूला नामक लोहेका पुल है, पहले इस पुलके अभावके कारण यात्रियोंको बड़ा कष्ट होता था, किन्तु अब कलकत्तेके मारवाड़ी रायबहादुर सूर्यमल झुनझुनूवालेने इस पुलको बंधवा दिया है, जिससे यात्रियोंका कष्ट दूर हो गया है, हर एक मनुष्य सुविधासे पार हो सकता है। हरिद्वारके पूरबमें निलोंकेश्वर, पश्चिम-दक्षिणमें बिलोकेश्वर गौरीकुण्ड और दक्षिणमें पिछेड़ नाथका शिवलिंग है।

हर्षद्वीप—महाकालेश्वरके स्थानसे पश्चिमाभिमुख हर्षद्वीप है। महाराजा विक्रमादित्यके बनाये हुए एक विशाल मन्दिरमें पाषाणमयी कालिकाकी मूर्ति स्थापित है।

हम्पी—मद्राससे २७६ मीलपर गंटाकल जंक्शन, यहांसे ८० मील हॉसपेट स्टेशनसे ५० मीलकी दूरी पर विजयनगरकी प्राचीन राजधानी हम्पी है। यहां पर अनेक देव देवियोंके मन्दिर तथा प्रासादोंके भग्नावशेष दर्शनीय हैं, यहांसे ४ मीलकी दूरी पर अमागुण्डी नामक स्थानमें बहुतसे मन्दिर हैं, थोड़ी ही दूर पर तुङ्गभद्रा नदीके तट पर श्रीरामचन्द्रजीका मंदिर तथा पास ही टूटा हुआ पुल दिखाई पड़ता है। यह पुल केवल पत्थरोंको जोड़कर ही बनाया गया था। यहां पर वालि सुग्रीवका मंदिर देखने योग्य है।

हिंगलाज—करांचीसे ५० कोसकी दूरी पर है। यहांसे ८ दिनका रास्ता चन्द्रकूट पहाड़के लिये है। अग्निकुण्डनामक झरनेके एक तरफ हिंगलाजकी गुफा तथा दूसरी तरफ कालीलोहकी गुफा है। हिंगलाजकी मूर्ति हिन्दू-मुसलमान सब पूजते हैं।

क्षीर भवानी—काश्मीरसे ६ कोस उत्तर पश्चिम वितस्ता नदीसे होकर सिन्धु नदीकी शाखासे १ कोस जानेके अनन्तर झीलके बीचोंबीच क्षीरभवानीका मन्दिर है।

द्वादश ज्योतिर्लिङ्गोंके नाम।

सोमनाथ-सोराष्ट्रमें, मल्लिकार्जुन-श्रीशैलपुर, महाकालेश्वर-उज्जयिनीमें, ओंकारेश्वर-मोरटक्केके पास, वैद्यनाथ-परलीमें, भीमशंकर-डाकिनीमें, रामेश्वर-सेतुबन्धमें, नागेश-दारुक वनमें, विश्वेश-काशीधाममें, त्र्यम्बक-गोदावरीके तटपर, केदार-हिमालयपर, घृष्णेश-सह्याद्रि पर्वत पर हैं।

धर्मशालायें।

वनारस—छावनी स्टेशनके पास श्रीकृष्णधर्मशाला, पथरगली—वैजनाथपटेल, शक्करकन्दगली—भगतराममारवाड़ी, गढ़वासी टोला—विन्ध्यवासिनी प्रसाद ब्राह्मण, वृन्दावनजी सारस्वत ब्राह्मण, दूधविनायक—विशनजी मोरारजी, फाटक सुखलालसाहु—विशनसिंह, मीरघाट—धर्मदास नन्दनसाहु दीपचन्द्र सी. आई. टेहनी टोला—जटाशंकर, मुरली गली—जेठाधनजी, रामघाट—जीतमल गिरधारीलाल मारवाड़ी, फाटकशुकुल—लछमन राम हनुमान प्रसाद, कूचा माधोदास—मधुवनदास द्वारकादास, बाबा-रामदास, गढ़वासीटोला-महाराज भरंग, दूधविनायक—मुन्नूबाई, गढ़वासीटोला-तरवेने ब्राह्मण, फाटक घासीराम-पंचायती महेश, ज्ञानवापी,—राधाकृष्ण शिवदत्तराय मारवाड़ी, मैदागिन—रघुनाथ दास (सिर्फ जैनियोंके लिये) सुड़िया-ताराचन्द खत्री। राजघाट स्टेशनके पास साधारण धर्मशाला।

कलकत्ता—(१) फूलचन्द मुकीम जैन धर्मशाला नं० ९ श्यामा चाईकी गली बड़ा बाजार। मोतीचन्दनखतने हिंदू और जैन यात्रियोंके ठहरनेके लिये वनायी। ठहरनेका स्थान मुफ्त। (२) ७९ क्रास स्ट्रीट बड़ा बाजार। सिक्खोंका मन्दिर बड़ी संगतमें सिक्खोंके ही ठहरनेका स्थान है। (३) १५० नं० हरिसनरोड बड़ा बाजार हिंदू यात्रियोंको मुफ्त ठहरनेके लिये शामदेव भुटियाने बनायी है। (४) नं० ६ मल्लिकस्ट्रीट, राय सूरयमल वहादुरने बनाई है। ठहरनेका स्थान मुफ्त। (५) बाबू लक्ष्मीनारायणकी धर्मशाला तथा पंचायत। नं० ५१ बांसतल्ला स्ट्रीट, इसमें दो मकान हैं, जिनमें ६०० यात्री ठहर सकते हैं। यात्रियोंको खानेका प्रबन्ध स्वयं करना पड़ता है। (६) हाजीबक्स इलाहीका मुसाफिरखाना नं० ७६ कोलूटोलास्ट्रीट कलकत्ता मुसलमान यात्रियोंके ठहरनेका स्थान मुफ्त। मकान चार मञ्जिला है, जिसमें १५० यात्री ठहर सकते हैं। हर एक कमरेमें बिजलीकी रोशनी तथा पलङ्गका प्रबन्ध है। परदानशीन स्त्रियोंके लिये अलग प्रबन्ध है। यात्रियोंकी सुबिधाके लिये एक प्रबन्धक उसी काममें नियुक्त है। (७) नं० १०७ १०९—लोअर चीतपुर रोडका मुसाफिरखाना-हाजी इब्राहिम सुलेमान साहबजी तथा हाजी मुसाजी

अहमद साहबजीने कलकत्तेमें आनेवाले मुसाफिरोंके सुभीतेके लिये बनाया है। इसमें २०० मुसाफिर ठहर सकते हैं। परदानशीन स्त्रियोंके लिये खास प्रबन्ध है। रोशनी, जल तथा पलंग इत्यादि मुफ्त मिलता है, रसोई घर अलग है, जिसमें यात्रियोंको भोजनका प्रबन्ध स्वयं करना पड़ता है। (८) धन सुखराय जैथमल जैन श्वेताम्बर धर्मशाला नं० ४४ बद्रीदास टेम्पिल स्ट्रीट, हालसी बगान कलकत्ता। इस धर्मशालेको बा० मिश्रीलाल रैदानीजीने हिन्दू और जैन यात्रियोंके लिये बनाया है। स्थान अच्छा है।

हवड़ा—स्टेशनके बगलमें राजा शिवबक्स बागला साहबकी। यहां जलपान भी मिलता है।

श्रीरामपुर—स्टेशनके पास ठहरनेकी जगह मुफ्त तथा जलपान भी मुफ्त मिलता है। यह बा० चेत्र मोहनशाहजीकी है।

तारकेश्वर—यह धर्मशाला महन्थ महाराज सतीशचन्द्र गिरीजीकी है। यहां साधु, सन्यासी तथा गरीबोंको मुफ्त ठहरनेका स्थान तथा भोजन दिया जाता है।

कटवा—कालीबाड़ी धर्मशाला। यह धर्मशाला स्टेशनसे १ मील दूरीपर गौराङ्ग घाटके पास है। इसे श्रीयुत चटर्जीने कालीबाड़ीके नामसे बनवाया है। इसमें ५० यात्री ठहर सकते हैं। यात्रियोंको ठहरनेकी जगह ३ दिन तक मुफ्त दी जाती है। खाने पीने तथा बिस्तर आदिका प्रबन्ध स्वयं करना पड़ता है।

वर्द्धवान—स्टेशनसे ५०० गजकी दूरीपर है। इसे बा० शशिभूषण बोसने बनाकर म्युनिसपेलिटीको समर्पित कर दिया। इसमें १०० यात्रियोंके ठहरनेकी जगह है।

रानीगंज—बजाजकी धर्मशाला। धर्मशाला रेलवे स्टेशनसे २ फरलाङ्गकी दूरीपर पश्चिम तरफमें है। यह जयनारायण गुरुदयालकी स्मृतिमें बनायी गयी है। इसमें निरामिष भोजी ६० यात्री ३ दिन तक मुफ्त ठहर सकते हैं। यहांसे बाजार पासमें है। बना बनाया भोजन हर समय मिल सकता है। इस धर्मशालामें रसोईघर भी अलग है, किन्तु सिर्फ मारवाड़ियोंके लिये। स्त्रियोंके लिये कोई खास प्रबन्ध नहीं है, किन्तु जरूरतपर परदेकी व्यवस्था हो सकती है।

आजिमगंज—स्टेशनके दोनों तरफ दो धर्मशालायें है। एक रामबुद्धसिंह बहादुरकी और दूसरी राय गणपतिसिंह बहादुरकी। इसमें केवल जैन तथा ओसवाल यात्री ठहर सकते हैं-प्रबन्ध स्वयं करना पड़ता है।

कोलगांव—धर्मशाला स्टेशनसे ४०० गजकी दूरी पर है। स्टेशन पीर-पैंतीके बा० गिरधारीलाल मारवाड़ीने बनायी है। इसमें ३०० यात्री ठहर सकते हैं। भोजनका प्रबन्ध स्वयं करना पड़ता है।

सुलतानगंज—स्टेशनसे थोड़ी दूरपर है। इसे दिल्लीके सेठ बैजनाथमल मारवाड़ीने बनाया है। यह दो मञ्जिला मकान, केदोनाथके मंदिरके सामने गंगाके किनारेपर है। स्नानकी सुविधा अच्छी है। ऊपरका हिस्सा भद्र पुरुषोंके लिये है तथा रसोई घर एवं स्नानागर अलग है। ६०० यात्रियोंके ठहरनेका स्थान है। भोजन करीबमें ही मिलता है, यात्री केवल ३ दिन तक मुफ्त ठहर सकते हैं।

इशी—स्टेशनसे १०० गज दूरी पर दो धर्मशालायें हैं, जिन्हें शुजाली दक्षिणके श्रीमान् सेठ धनचरनजी चांदजी जैन दिगम्बरने बनाया है। एकका नाम दिगम्बर जैनधर्मशाला है, जिसमें १०० यात्री ठहर सकते हैं। दूसरी श्वेताम्बर जैनधर्मशाला है, इसमें ५०० यात्री ठहर सकते हैं। यह स्थान केवल जैन तथा उच्चवर्णके हिन्दुओंके ही लिये है, जिसमें ३ दिनतक मुफ्त रहने दिया जाता है। खाने पीनेकी चीजें पासहीमें मिलती हैं।

मुंगेर—स्टेशनसे थोड़ी दूर पर राय बहादुर बैजनाथ गोइनकाने यह दो मंजिला धर्मशाला बनायी है। ऊपरका हिस्सा उच्चजातिके हिन्दुओंके लिये है, जिसमें रसोई घर तथा स्नानके लिये जगह अलग है। ५०० यात्री ठहर सकते हैं। बंगालके भूतपूर्व छोटे लाट सर एडवर्ड बेकरने १९०९ ई० में १२ अगस्तको इस धर्मशालेको खोला था।

बरियापुर—स्टेशनसे थोड़ी दूरपर गङ्गा किनारे यह धर्मशाला शोभाराम शिवदत्तरायने बनवायी है, जिसमें १०० यात्री तीन दिन तकके लिये ठहर सकते हैं। भोजन पास हीमें मिल सकता है।

भागलपुर—स्टेशनके पास ३ धर्मशालायें हैं॥ एक जैन धर्मशाला जिसे आजिमगंजके राय धनपतसिंह बहादुरने बनवायी है। इसमें २०० यात्री ठहर सकते हैं। दूसरा ताड़मल धर्मशाला है,

जिसमें १०० यात्री ठहर सकते हैं। तीसरा स्टेशनसे ६०० गजपर भदरमलकी धर्मशाला है, जिसमें ३०० यात्री ठहर सकते हैं।

आसनसोल—स्टेशनसे आधे मीलकी दूरीपर मुंशीबाजारमें आशाराम, जौहरीमल, रामनारायण गङ्गाविशनकी धर्मशाला है। इसमें उच्चजातिके हिन्दू, सिक्ख तथा जैनोंको ठहरने दिया जाता है। २०० यात्री ठहर सकते।

गिरीडीह—स्टेशनसे दक्षिण तरफ यह धर्मशाला है। इसे मुर्शिदाबादके रायधनपतसिंहजी बनवायी है। धर्मशाला खासकर परेशनाथके जाने वाले यात्रियोंके लिये है।

पयूल—स्टेशनसे १५० गज दक्षिणकी तरफ यह धर्मशाला है। इसे कलकत्तेके बा० उगरमल हजारीमलने बनवायी है। इसमें उच्च जातिके १०० हिन्दू यात्रियोंके ठहरनेका स्थान है। ३ दिनतक मुफ्त ठहर सकते हैं। यदि ज्यादह दिन ठहरना हो तो, मैनेजरको सूचना देनी पड़ती। धर्मशालेके दरवाजे पर ही बाजार भावसे भोजन मिलता है।

मोकामा—स्टेशनके पास लाला भगवानदास बागलाने इस धर्मशालाको बनवाया है।

पटना सिटी—यहां तीन धर्मशालायें हैं। एक स्टेशन ही पर है, जिसे लाला गुरुमुखराय सरावगीने बनवायी है। दूसरा मगलोके तालावके पास है जो स्टेशनसे आधे मीलकी दूरी पर है, इसे लाला अनन्तलाल अगरवालेने बनवायी है। तसरी धर्मशाला स्टेशनसे १ मीलकी दूरीपर चौकमें है, इसे पटनाके मारवाड़ी समाजने बनवायी है।

गुलजारीबाग—यह धर्मशाला स्टेशनके बाहर बिलकुल करीबमें है, इसे बा० किशोरीलाल चौधरीने बनवायी है, इसमें ७०० यात्री ठहर सकते हैं। किराया कुछ नहीं देना पड़ता। भोजनका प्रबन्ध स्वयं करना पड़ता है। इसमें यूरोपियन भी ठहर सकते हैं।

पटना जंक्शन—स्टेशनके दोनों ओर दो धर्मशालायें हैं। एक-को लाला जय, तथा दूसरेको लाला छोटेलालने बनवाया है। स्थानका कुछ देना नहीं पड़ता, खाने पीनेकी चीजें पासमें ही मिलती हैं।

मानपुर—यह धर्मशाला स्टेशनसे १ मीलकी दूरीपर फलगू नदीके पूरब तटपर अखोरी प्रेमनारायणजी जमींदारने बनवायी है। इसमें सब जातिके यात्री ठहर सकते हैं। बाज़ार करीबमें ही है। खाने पीनेकी सब चीजें सुविधासे मिलती हैं।

गया—यहां तीन धर्मशालायें हैं। एक स्टेशनके पास ही है जो हिन्दुओंके लिये सेठ शिवप्रसादजी झुनझुनूवालेने बनवायी है। दूसरा शहरके निकट घरके पास जो स्टेशनसे २ मीलपर पुराने शहरमें है। तीसरी बुद्धगयाके मन्दिरके पास महाबोधी सोसाइटीके प्रबंधसे बौद्ध यात्रियोंके लिये बनवायी गयी है।

पामरगञ्ज—यह धर्मशाला स्टेशनके पास सेठ शिवप्रसादजी झुनझुनूवालाने बनवायी है।

पुनपुन—यहांपर भी स्टेशनके पास ही सेठ शिवप्रसादजी झुनझुनूवालेने एक और धर्मशाला बनवायी।

मोगलसराय—स्टेशनके पास ही बा० रामजी दास जाटियाकी धर्मशाला है। यह केवल हिन्दू यात्रियोंके लिये है। इसमें २०० यात्रियोंके ठहरनेकी जगह है। ठहरनेकी जगह मुफ्त दी जाती है। भोजनका प्रबन्ध यात्रीको स्वयं करना पड़ता है।

मिरजापुर—भैरामल वंशीधरकी धर्मशाला है।

विन्ध्याचल—स्टेशनके पास शिवनारायण बलदेवदास सिघांनियाकी धर्मशाला है।

नैनी—स्टेशनके पास विहारीलाल कुंजीलाल सिघाँनियाकी धर्मशाला है।

आगरा—आगरा फोर्ट स्टेशनसे ४०० गजकी दूरीपर लाला रामकिशनदास सरावगीने यह धर्मशाला बनवाई है। आगरा सिटी स्टेशनके पास ३ और धर्मशालायें हैं।

आगरा फोर्ट और आगरा सिटी स्टेशनसे घोड़ा गाड़ीसे १० मिनिटमें काली वाड़ी पहुंच सकते हैं। सिटी स्टेशनके पास एक धर्मशाला है जिसे राय बहादुर विशम्भरनाथने बनवायी है और एक दूसरी धर्मशाला है जिसे गयाप्रसाद बिहारीलालजीने बनवायी है। हर एकमें १०० यात्री ठहर सकते हैं। ठहरनेकी जगह मुफ्त, भोजनका प्रबन्ध स्वयं यात्रीको करना पड़ता है।

अयोध्या—नागेश्वरनाथके मन्दिरके पास विन्दुवासिनीकी धर्म-शाला। महल्ला रायगंजमें छामनलालकी धर्मशाला है। रायगंज रेलवे स्टेशनके पास हनुमानगढ़ीकी धर्मशाला है। रायगंजमें हरनारायणदासकी धर्मशाला है। कटरेमें जैन दिगम्बरोंकी धर्म-शाला है। आलमगंज जैनश्वेताम्बरोंकी धर्मशाला है। रायगंजमें कन्हैयालालकी धर्मशाला है। नये घाटके पास महन्थ सुखराम-दासकी धर्मशाला है। रायगंजमें रूसी स्टेटकी धर्मशाला है। मीरनपुर डेरा बीबीके पास सरयूप्रसाद और धनीरामकी धर्मशाला है। नये घाटपर सुख रामदासकी धर्मशाला है।

इलाहाबाद—ठीक स्टेशनके पास विहारीलाल कुंजीलाल सिघां-नियांकी धर्मशाला है। यहां सब चीजें मिल सकती हैं। दूसरी एक कायस्थकी धर्मशाला है, जिसे लाला रघुनाथ सहायने बनवाई थी, यह धर्मशाला कीटगंग रोड पर डुकेट साहबके पुलके पास जमुना नदीसे कोई दस मिनटका रास्ता है। इसमें चार कमरे हैं, जिनमें एक स्त्रियोंके लिये है। भोजनका प्रबन्ध हो सक्ता है तथा नौकर भी वहींके मिल सकते हैं चित्रगुप्त मन्दिर इसी धर्मशालेमें हैं। महल्ला अहियापुर कल्याणीदेवीके मंदिरके पास खुशरूबागके पीछे एक दूसरी धर्मशाला है जो स्टेशनसे आधे मीलके फासलेपर है। इसमें ५० यात्री ठहर कसते हैं। इसे लाला अंगनलाल अग्रवालने बनवायी है।

मुहल्ला दारागञ्ज—बाबू मोतीचंदका, मोरी—बाबू राम प्रसाद चौधरीका, बकसीकला—बुधसेन संगलसेनका, नईबस्ती—जीव-रामका, अलोपीबाग—लाल शिवप्रतापसिंहका, अलोपीबाग—लाल बच्चूलालका, शिवकाटीमहादेव—लाला गुलजारीलालका; अलो-पीबाग—महन्थ जानकीदासका, मोरी—रीवांके महाराजका मिना-हाजपुर—मुन्नीलाल सेठका, मुट्ठीगंज—गोमती बीबीका, अलोपी-बाग—रायराधारमनका, नईबस्ती—राय शिवप्रसादका, चौखंडी-राय शिवप्रसादका, अलोपीबाग—रामदासका, अलोपीबाग—राणा संग्रामसिंहका, मुट्ठीगंग—रामनाथका, मिनहापुर—शेखमशी उद्दीनका, मुट्ठीगंज—तेजपालगोकुलदासका, मोरी—वासुदेव-रावका।

अलीगढ़—स्टेशनके पास लाला अयोध्याप्रसादकी यह धर्म-

शाला है। इसमें २० यात्रियोंका स्थान है। भोजनादि पासमें मिल सकते हैं।

बरेली—स्टेशनके पास सेठ खुन्नीलालकी धर्मशाला है, बरेली सिटी स्टेशनके पास बा० रामचन्द्रकी धर्मशाला है। मोहल्ला बिहारीपुर अतिश्रानमें बा० श्यामनारायण सिंह कक्करकी धर्मशाला है। उसी मुहल्लेमें गोविन्द बीबीकी तथा अन्तिया बीबीकी धर्मशाला है। मदारी दरवाजेमें लाला कुंवरसेनकी धर्मशाला है। कूचा सीतारामनें लाला गनेश मुनीमकी धर्मशाला है। सिटी स्टेशनके पास राय किशनलालकी धर्मशाला है।

कानपुर—यहांपर दो धर्मशालायें हैं। एक स्टेशनसे आध मीलकी दूरीपर जिसे बैजनाथ रामनाथ सिधानियांने बनवायी। दूसरा स्टेशनसे ४०० गजकी दूरीपर है, इसे तुलसीराम शिवप्रसाद बनवायी है। मुहल्ला नयागंजमें जो कि स्टेशनसे १ मीलकी दूरीपर है एक और धर्मशाला है जो मच्छी भवनके नामसे प्रसिद्ध है। यहां उच्च जातिके १०० हिन्दुओंके ठहरनेकी जगह है। भोजनका सामान पासहीमें मिल सकता है।

चांदपुर सिआऊ—श्रीमती वासन्ती देवीका।

डाकोर—यह धर्मशाला सन् १६११ ई० में सम्राट् सप्तम एडवर्डकी स्मृतिमें बुलन्दशहर जिलेके सिकन्दराबादके रईस मु० शंकरस्वरूपजीने बनवायी है। यह स्टेशनके पास ही है। इसमें सब जातिके यात्री ठहर सकते हैं। स्थान ५०० यात्रियोंका है, भोजन भी पासहीमें मिल सकता है।

दिल्ली—एक धर्मशाला स्टेशनसे २ फरलांगकी दूरीपर है। इसे लाला छन्नामलने बनवायी है। ठहरनेकी जगह मुफ्त मिलती है। भोजनका सामान पासहीमें मिलता है। दूसरा फतेहपुर बाजारमें लाला लक्ष्मीनारायणकी धर्मशाला है, जो स्टेशनसे २ फरलांग दूरीपर है। ठहरनेका स्थान मुफ्त, भोजन पासहीके दूकानोंसे मिल सकता है।

धामपुर—जैपुरके रईस मुन्शी भगत बिहारीलाल साहबने इस धर्मशालेको भगतआश्रमके नामसे खोला है।

इटावा—स्टेशनसे आधे मीलकी दूरीपर एक धर्मशाला है, जिसमें २०० यात्री ठहर सकते हैं।

फैजाबाद—(१) पतितदासके मन्दिरके पास मुहल्ला अमानीगंजमें (२) फैजाबाद और देवकलीरोडके बीचमें मुहल्ला वेनीगंजमें (३) देवकलीरोडपर देउआकी कोठीके सामने, (४) मुहल्ला साहबगंजके मूलचन्द चम्मनलालकी दूकानके पास, (५) शाहबगंजमें पं० परमेश्वरनाथ शाहपुरके मकानके पास, (६) मुआफा नाकामें हरदयालजीका ।

गाजियाबाद—दो सरायें हैं । एक स्टेशनसे आध मीलकी दूरी पर है । जिसमें ८०० यात्री ठहर सकते हैं । दूसरी स्टेशनसे दो फर्लाङ्गपर है, जिसे मिस्टर जानइंगिल ब्राइटने वनवायी है । ८०० यात्रियोंके ठहरनेका स्थान है ।

हाथरस सिटी—यहांपर ८ धर्मशालायें हैं, किन्तु विशेषतः हिन्दुओंके लिये ।

हरद्वार—(१) लाला जगदीशप्रसादका, (२) लाला निहालचन्दका, (३) लाला सुखवीरसिंहका, (४) महाराजा कपूरथलाका, (५) महाराजा नालागढ़, (६) महाराजा पटियालाका, (७) महाराजा पुञ्छका, (८) महारानी विसुईका, (६) महारानी सेरीका, (१०) नन्दकिशोरका, (११) पंचायती, (१२) पं० हरप्रसादका, (१३) रानी विलासपुरका, (१४) सेठ भागचन्दका, (१५) सेठ विन्द्राशलीका, (१६) सेठ जगन्नाथका, (१७) सेठ जैरामदासका, (१८) सेठ लक्ष्मीचन्दका, (१६) सेठ परमानन्दका (२१) सेठ सूरजमलका, (२१) सेठ त्रिलोकचन्दका, (२२) सेठ वाईका, (२३) विनायक मिश्रका ।

जोशीमठ—सुप्रसिद्ध महात्मा स्वामी श्रीनरब्रह्मानन्दजी महाराजको अधीनतामें यहां और आस पासकी धर्मशालाओं तथा सदावर्तोंका प्रशंसनीय सुप्रबन्ध है ।

भारतवर्षके चारों कोनोंपर चार महातीर्थ हैं । उनमें श्रीबद्रीनाथ केदारनाथका तीर्थ बड़ा बीहड़ और अगम जङ्गल पार करके बड़े विकट पर्वतोंको लांघ कर जाना पड़ता है । उस तीर्थका बड़ा ही महात्म है । यहां तक कहा जाता है कि जो जाय बद्री सो न आवे उद्री । अर्थात् वहांके जानेवाले जन्म धारण करनेके कष्टसे मुक्ति पाजाते हैं ।

उसी बद्रीनाथ केदारनाथकी यात्रामें उनकी धर्मशाला और सदावर्त्त स्थान पहाड़पर पड़ते हैं उन सबका प्रबन्ध इन्हीं स्वामी श्रीनखदानन्दजी महाराजको समर्पित है।

केदारनाथ—श्रीभारतधर्म महामण्डलके द्वारा स्थापित करायी गयी श्रीनैपाल दरबारके धनसे यहां एक सुविशाल धर्मशाला है। जहां सदावर्त जारी रहता है। यात्रियोंको सब तरहके सुभीते यहां दिये जाते हैं।

मथुरा—यहां भी कई सुप्रसिद्ध धर्मशालाएं हैं।

वृन्दावन—इस पुण्य भूमिमें बहुतसी धर्मशालाएं हैं श्रीरङ्गजी का मंदिर मथुरा वृन्दावनके सब मंदिरोंसे सुविशाल है। सदावर्त्त स्थान इस मन्दिरका बहुत ही बड़ा है।

लखनऊ—छेदीलालकी धर्मशाला, अमीनउद्दौलापार्क अमीनाबाद; सर आई आगामीरके पास मुहल्ला अहियागंजमें प्रभूदयाल जैनकी धर्मशाला है।

मेरठ—(१) नाइमकी धर्मसभाका, (२) लाला धर्मदासका, (३) लाला किशनसहायका, (४) लाला परमानन्दका, (५) लाला सुन्दरलालका, (६) लाला तोतारामका; (७) मुसम्मात सुन्दरकुंअरका, (८) पंचायतीका, (६) रस्तोगीका।

मुरादाबाद—(१) मुहल्ला कांचरी सरायमें गुलजारीलालका, (२) रेलवे स्टेशनके पास कोठीवालेका। (३) काठघर रेलवे स्टेशनके पास साहु भूपनशरणका।

नीमसार—रेलवे स्टेशनके पास सेठ शिवरामदास तथा रामनिरञ्जनदासकी धर्मशाला है।

सहारनपुर—रेलवे स्टेशनके पास शंकरलालका (२) फिरोजगेट कैम्पिग्राउण्ड।

संडीला—रेलवे स्टेशनके पास राजा दुर्गाप्रसादका।

उन्नाव—बाबू रामसहायका।

गढ़मुक्तेश्वर—रायसाहब नामामल जानकीदासकी दो धर्मशालायें हैं।

डाक-बङ्गला।

अवधरुहेलखंड स्टेशनोंके पास निम्न लिखित बंगले हैं। इन

बङ्गलोंका प्रबन्ध गवर्नमेंटके हाथमें है । गवर्नमेंटके नियमानुसार ही ठहरना पड़ता है ।

स्टेशनसे—बनारस छावनी—आधा मील, प्रतापगढ़—पौनमील, सुलतानपुर—पौन मील, अमेठी—चौथाई मील, जैस-अढ़ाई मील, रायबरेली—डेढ़ मील, जफराबाद और जौनपुर—तीन मील, फैजाबाद—पौन मील, बाराबंकी—आधा मील, ब्रह्माघाट—३ फरलांग, उन्नाव—आधा मील, अउहदपुर—डेढ़ मील, हरदोई—पासहीमें, हरद्वागंज—आधा मील, शाहजहांपुर—आधा मील, मलीहाबाद—एक फरलांग, तिलहर—डेढ़ मील, संडीला—दो फरलांग, मीरनपुर कटरा—डेढ़ मील, सीतापुर—एक मील, बरेली—दो मील, बिलग्राम—तीन फरलांग, अलीगढ़—तीन फरलांग, बहोजें—पौन मील, मुरादाबाद—दो मील, बस्ती—पासहीमें, धामपुर—पासहीमें, शिवहर—एक मील, नगीना—पासहीमें, अमरोहा-आधा मील, नजीबाबाद—पासहीमें, गजरौला—दो मील, कोटद्वारा—पासहीमें, चांदपुरसिआउ-दो फरलांग, हरद्वार—पासहीमें, देहरादून—पासहीमें, रुड़की सवा मील, हापुड़—ढ़ाई मील, सहारनपुर—पासहीमें ।

भारतके मुख्य नगरोंका संक्षिप्त विवरण ।

अयोध्या ।

फैजाबाद शहरसे ४ मील उत्तर-पूरबकी दिशामें सरयू नदीके किनारेपर बसी हुई है । यह मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान् श्रीरामचन्द्रकी राजधानी थी, जिसकी महिमा रामायणमें वर्णित है । अयोध्यामें अनेक राममन्दिर हैं, जिनमें हनुमानगढ़ी आदि बहुत प्रसिद्ध हैं । पश्चिमकी तरफ पहाड़ीपर भगवान् रामचन्द्रजीका जन्मस्थान है । और इसके पासहीमें कनकभवन, सीतारसोई, बड़ा स्थान, रत्नसिंहासन, रङ्गमहल, आनन्दभवन, कौशल्याभवन इत्यादि प्राचीन स्थान देखने योग्य हैं । चैत्रमें रामनवमीके अवसर पर, श्रावणमें झूलनके समय तथा कातिककी पूर्णिमाको खूब मेला लगता है ।

अटक ।

यह जिला रावलपिण्डी डिवीजनमें है । इसके पूर्वमें झेलम

और रावलपिण्डी, पश्चिममें पेशावर और कोहाट, दक्षिणमें शापुर और उत्तरमें शापुर जिला है। मुरब्बा ४१७८ मील और जनसंख्या ५११८७६ है। इस जिलेका प्रधान स्थान केम्पवेलपुर है। अटक इस कारण इतिहास प्रसिद्ध हो गया है कि पहिले बाजीराव पेशवाने कटकसे लेकर अटकतक मराठोंका गेरुआ झण्डा फहरा दिया था। यहां दुसूती चद्दर, अंगोछे, रूमाल, शर्टके कपड़े, मसहरी, परदे, टावेल, टेबलक्लाथ आदि देशी चीजें अच्छी बनती हैं। इनके प्रधान व्यापारी श्रीलालचन्द पुरुषोत्तम लाल पिण्डी हैं।

अजमेर।

यह राजपूतानेका एक जिला है। यहां चीफ कमिश्नर भी रहते हैं। देशभरके राजकुमारोंके लिये यहां मेयो कालिज नामका शिक्षालय है। यहां हिन्दी और मारवाड़ी बोली जाती है।

यहांके सुप्रसिद्ध सौदागरोंका विवरणः—

इब्राहिमएण्ड सन्स—सिलाईकाम। करीमखां एण्डको—मदारगेट गोली, बारूद, छर्रा, पिस्तौल, बन्दूक, तोप, तलवार आदिके व्योपारी।

माथुर ट्रेडिङ्ग कम्पनी, लिखने पढ़नेका सामान, पं० रामदयाल शर्मा, आयुर्वेदीय दवाखाना। शर्मन् कम्पनी कैसरगंज, तस्वीरोंका सामान बेचने वाले।

प्रसिद्ध रईस और जमींदार—खरवाके ठाकुर श्रीरावगोपालसिंह बहादुर, भिनाईके राजा, देवली, मेहरो, जुनिया, बघेरा, पारा, गोविन्दपुर, बन्दनवाड़ा और बागसूरीके ठाकुर साहबान।

वकील वैरिस्टरादि—श्री जी. पी. माथुर, श्री एम० पी० भार्गव, श्रीगौरीशंकर, श्रीभवनसिंह, श्रीमगनलाल, श्रीदयाशंकर, श्रीपुस्करनाथ, श्रीहरि शिवसहाय वर्मा।

अमरावती।

यह मध्यप्रदेशके बरारका एक जिला है। यहां हिन्दी और कहीं कहीं मरहठी बोली जाती है।

यहांके सुप्रसिद्ध वाणिज्य व्यवसायीः—बैंक आव बरार लिमिटेड, इम्पीरियल बैंक आव इण्डिया, बरार ट्रेडिङ्ग कम्पनी।

रामचन्द्र कन्हैयालाल—भुसारीगेट ।

प्रसिद्ध राजा रईस—श्रीखुमानसिंह कोट, राजा मोहनसिंह, सालवान, राजा भरतसिंह, रायपुर वाले ।

प्रसिद्ध वकील व परकार्य साधक—आनरेबल जी० एस० खापर्डे, एस० बी० गोखले । बालकृष्ण श्रीधर वापट, नारायणराव भिड़े आदि महाशयगण ।

अमृतसर ।

पञ्जाबका एक मशहूर जिला है । यहां पञ्जाबी और हिन्दी बोली जाती है । यहांका सुवर्ण-मन्दिर देखने योग्य है ।

यहांके वाणिज्य व्योपारी—दीवानचन्द एन्ड सन्स, गुलजारीलाल एण्ड सन्स श्रीकरनसिंह, सोहनसिंह, श्रीप्रभुदयाल कृष्णप्रकाश अग्रवाल ।

बैंकर्स—इम्पीरियलबैंक आवइण्डिया, चार्टर्डबैंक आवइण्डिया आस्ट्रेलिया और चाइना, नेशनलबैंक आवइण्डिया, पञ्जाब एण्ड सिन्ध बैंक लिमिटेड ।

सरदार और रईस—आनरेबल सरदार सुन्दरसिंह मजीठिया ।

अन्दमान ।

यह टापू समुद्रमें हुगली नदीके मुहानेसे ५९० मील, मद्रास और कलकत्तेसे ८०० मील, रंगूनसे ३८५ मील, मौलमीनसे ४१० मील है । पहिले यहां आजीवन कारावासका दण्ड पाये हुए कैदी ही रहते थे । किन्तु अब फोर्ट, कृषि, पुलिस, पी. डब्लू. डी., जंगल, जहाज, स्वास्थ्य आदि विभाग अच्छी उन्नति कर रहे हैं । आबादी भी बढ़ रही है और पोर्टब्लेअर तथा अन्य स्थानोंमें गिरजे, मसजिद और मन्दिर भी बन गये हैं ।

अम्बाला ।

यह पञ्जाबकी अम्बाला कमिश्नरीका सदर मुकाम है । यहां मुंशी स्टाइलकी हिन्दी और पंजाबी बोली जाती है ।

यहांके प्रसिद्ध वकील बेरिष्टर—श्री आत्माराम जी, श्री अब्दुलरसीदखां, लाला दुलीचन्द साहब, बाबू मानसिंह और श्री एल० एन० सिंह इत्यादि हैं ।

बैंकर्स, वाणिज्य व्यवसायी—पञ्जाब नेशनलबैंक, इम्पीरियलबैंक

आफइण्डिया। बनारसीदास, हरकिशनदास एण्ड सन्स, दौलतराम एण्ड सन्स, घोष एण्डको, किशनप्रसाद एण्ड कम्पनी लिमि०, सोहनलाल एण्ड कम्पनी, सर्दार मूखासिंह एण्ड सन्स। श्री मुकुटबिहारी एण्ड ब्रदर्स जौहरी इत्यादि।

पायनियर इण्डस्ट्रियलवर्क्स स्टेशनरी, फ्रेञ्चचाक, टेबुलसाल्ट, सिरका मरहम आदिके व्योपारी हैं। पञ्जाब मोटर और कैरिजवर्क्स।

अलमोड़ा।

यह युक्त प्रदेशकी कमायूं कमिश्नरीका एक पहाड़ी जिला है। इसमें हिन्दी भाषा बोली जाती है। हवा पानीके विचारसे यह बड़ा स्वास्थकर स्थान है।

वाणिज्य व्योपार करने वाले—मतीराम शाह एण्ड सन्स, गंगाराम जोगाराम एण्ड सन्स जेनरल मर्चेण्ट और कुन्दनलाल मथुराशाह कपड़ेके और सुगन्धित द्रव्यके व्योपारी हैं।

लक्ष्मीलाल आनन्द ब्रदर्स—जेनरल मरचेण्ट और कमीशन एजेंट्स हैं।

श्यामलाल एण्ड सन्स मरचेण्ट्स।

अलीगढ़।

यह युक्त प्रदेशकी आगरा कमिश्नरीका एक जिला है। यहां मौलवी स्टाइलकी हिन्दी बोली जाती है। लोहे और पीतलके ताले तथा लोहेकी तिजोरियोंके बहुतसे कारखाने हैं। बड़ी अनोखी कारीगरीके और मजबूत ताले यहां बनाये जाते हैं।

मशहूर व्योपारी—माडर्नलाक वर्क्स, शिवलाक वर्क्स, महात्मागांधी लाक वर्क्स, मिश्रीलाल लाकवर्क्स, कारोनेशन सेफ एण्ड लाकवर्क्स, इण्डस्ट्रियल फैक्टरी एण्ड लाक वर्क्स, रिलायन्स लाक वर्क्स आदि प्रसिद्ध हैं।

वकीलबेरिस्टर-श्रीमुहम्मद इशहाक, टी० ए० शेरवानी, बाबू ज्वालाप्रसाद वर्मा, बाबू चन्दामल गवर्नमेण्ट प्लीडर।

राजा रईस—तालिबनगर स्टेटके नव्वाब साहब, मुरसान, हबीबगंज, बाजगढ़ी, पिटावा और सासनीके रईस तथा बरौलीकी रानी साहिबा।

अहमदाबाद ।

यह बम्बईके गुजरातका एक मशहूर जिला है। यहां गुजराती और हिन्दी बोली जाती है।

वकीलबेरिस्टर—श्री एम० पी० मोदी, श्री० टी० टी० मजुमदार, रायबहादुर गिरधारीलाल उत्तमराम पारेख पं० नवलशङ्कर नरसिंहप्रसाद शुक्ल।

वाणिज्यव्यवसायी—अहमदाबाद स्टोडियो मेनुफेकचरिङ्ग कम्पनी लिमिटेड।

अहमदाबाद डाइङ्ग ब्लीचिङ्ग एण्ड मेनुफेक्चरिङ्ग कम्पनी लिमिटेड।

अमीन पटेल एण्ड कं०—माल आमदनी और रफ्तनी करनेवाले तथा एजेण्ट।

बाबू ब्रदर्स एण्डको—श्रीरजमलखुशालदास, मिल, जिन और इलेक्ट्रिक चीजोंके व्योपारी।

हीरालाल रणछोड़दास एण्डको०—बैंकर्स, एक्सपोर्टस् और कपड़ेके व्योपारी।

आगरा।

युक्तप्रदेशकी आगरा कमिश्नरीका सदर है। एक समय मुसलमान बादशाहोंने दिल्ली छोड़कर इसको सिंहासनभूमि (पायतख्त) बनाया था। यहांके देहाती ब्रजकी बोली और नगरनिवासी शुद्ध खड़ी हिन्दी बोलते हैं।

बैंकर्स—आगराबैंक लिमिटेड, बनारस बैंक लिमिटेड, इम्पीरियल बैंक आफ इण्डिया। भार्गव कमर्शियल बैंक लि०।

व्योपारी—एस० एन० सिंह एण्ड ब्रदर्स, शाह एण्डको, रैना एण्डको, अबरोई लिमिटेड।

साइंटिफिक अपरेटर्स एण्ड केमिकल वर्क्स, रामकुमार मोहन लाल कं०, रायट्रेडिङ्ग कम्पनी। टंडन ब्रदर्स, श्रीतनसुखराम आनन्द राम इत्यादि।

राजा और रईस—दि आनरेबल राजा कुशलपालसिंह-बहादुर आवकोटला, भदावरके मान्यवर राजा साहब।

आजमगढ़ ।

बनारस कमिश्नरीका एक मशहूर जिला है । यहां हिन्दी बोली जाती है । बलवेके समयसे यह जिला मशहूर हुआ था । बाबू कुंअरसिंहने लखनऊ से लौटते समय इसपर घेरा डाला था । इस कारण यहां बड़ा मोरचा हुआ था ।

वाणिज्य व्यवसायी--गिरधरदास मधुसूदनदास यहांके बड़े महाजन हैं ।

इस जिलेमें मऊनाथभंजन बहुत बड़ा कस्बा है । जहां १८००० आदमी बसते हैं । मऊमें देशी चीनी और देशी कपड़ेका बड़ा व्योपार होता है । देशी साड़ियां, गमछे, धोतियां, सूती और रेशमी कपड़े, गलता वगैरः बहुतही अच्छे बनते हैं । श्रीरामगोपाल रामचन्द्र देशी चीनी और कपड़ोंके नामी व्योपारी हैं ।

इलाहाबाद ।

यह युक्तप्रदेशकी सरकारका सदर मुकाम है । यहां गङ्गा, यमुना और गुप्तसरस्वतीका सङ्गम स्थान त्रिवेणी कहलाता है । हिन्दुस्तान भरके तीर्थोंका यह अधीश्वर तीर्थराज है । यहां हिन्दी बोली जाती है । यहां इस प्रदेशका हाईकोर्ट है ।

प्रसिद्ध एडवोकेट वकील बेरिस्टरः—पं० बिहारीलाल, नेहरू गवर्नमेण्ट जिला वकील हैं । सर तेज बहादुर सप्रू, पं० मोतीलाल-नेहरू, श्रीमनमोहनलाल अग्रवाला, श्री ए० पी० दुबे, श्रीआर०एस० वाजपेयी, डवल्यू० के० पोर्टर, डाक्टर सुरेन्द्रनाथसेन । श्रीगजाजर प्रसाद, श्रीबेनीमाधव घोष । श्रीभगवानदास भार्गव, श्रीएस० सी० चटर्जी, श्रीजानकीप्रसाद कपूर, श्रीकन्हैयालाल, मंजरअली सोखा, श्री सी० एन० शास्त्री इत्यादि ।

व्योपार वाणिज्य—सी० एन० विश्वास एण्डको-गोली बारूद, बन्दूक पिस्तौल तलवार आदि हथियारोंके व्योपारी । श्रीएम० जे० आराट्नएण्डको, ग्रेएण्डको, हनहार्ट एण्डको, इण्डियनट्रेडिङ्ग कम्पनी, देशी तिजारत कं०, अवरोई लिमि०, ए० एच० हीलर एण्डको लि० ।

प्रयाग—एक बहुत बड़ा सिविल और मिलिटरी स्टेशन है । उत्तर और पूरबमें गंगा बहती हैं तथा दक्षिणमें यमुना ।

युक्तप्रान्तकी सरकारी राजधानी तथा इलाहाबाद ब्रिगेड [फौज] का बड़ा दफ्तर भी यहीं है। स्टेशनके विश्रामागार अच्छे हैं तथा अंग्रेजोंके लिये सेन्ट्रल होटल और ग्रेण्ड होटल स्टेशनसे बहुत थोड़ी दूर पर हैं। स्टेशनके उत्तर भागमें सिविल स्टेशन है तथा दक्षिणकी तरफ शहर बसा हुआ है। जब ड्यूक आफ एडिनबरो भारतवर्षमें आये थे, उनके स्मरणार्थ यहां पर एक एलफ्रेडपार्क बनाया गया है, जिसके घुड़दौड़के स्थान, तथा विलायती बेण्ड-बाजा प्रसिद्ध हैं। यहां एक और मेकफर्सन पार्क है तथा मुगल-साम्राज्यके समय खुशरू बाग बनाया गया था, जो अब भी देखने योग्य है। सिपाही विद्रोहके समय एक देशी फौजके कारण यहांपर भी दंगा हुआ था। किला सिविल स्टेशनसे कुछ दूर पर गंगा जमुनाके संगम पर स्थित है। किलेमें महाराजा अशोकके समयका एक स्तम्भ है, जिस पर महाराजाकी आज्ञा खुदी हुई है, जो ईसाके २४० वर्ष पहलेकी है। इसी स्तम्भ पर उस समयका इतिहास भी खुदा हुआ है। ईसाइयोंके रोमन तथा प्रोटेस्टेन्ट सम्प्रदायोंके गिर्जे हैं। इलहाबादमें बिजलीकी रोशनी, स्कूल, कालेज, जेल, अस्पताल, पानीका कल, सिनेमा, हाईकोर्ट आदि वर्तमान सभ्यताके सभी अङ्ग प्राप्त हैं।

प्रयाग हिन्दुओंका एक बहुत बड़ा तीर्थ स्थान है। यहां पर नित्यप्रति हजारों यात्री त्रिवेणी स्नान तथा पिण्डदान करनेके लिये आया करते हैं। माघके महीनेमें तो यहांपर लाखों यात्रियोंकी भीड़ इकट्ठी हो जाती है। यात्री स्नानके बाद किलेमें जाकर अक्षयवट तथा विंदुमाधवका दर्शन करते हैं। कुम्भ तथा अर्धकुंभके समय कई लाख यात्री आकर निवास करते हैं।

उन्नाव।

यह लखनऊ कमिश्नरीका एक जिला है। यहां हिन्दी बोली जाती है।

वकील बेरिस्टर—पं० चक्रपाणि तिवारी, पं० चन्द्रदत्त बाजपेयी, चौधरी रामकृष्ण, बाबू हरिशङ्कर इत्यादि।

राजा और रईस—महम्मद बागके रायबहादुर नन्दोंकी और कुठाकियाके ठाकुर साहब।

पायोनियर निट्स लिमिटेड—यह बीनी बनानेके व्योपारी हैं।

कटक।

यह उड़ीसाका एक मशहूर जिला है। यहां हिन्दी, बंगला, उड़िया और तेलगू बोली जाती है।

प्रसिद्ध वकील और परकार्य्यसाधक-श्री वी० एन० मिश्र वेरिस्टर, रायबहादुर जानकीनाथ घोष, श्रीराम सुव्वाराव, श्री-सतीश्चन्द्र चक्रवर्त्ती, श्रीश्यामाप्रसन्नदास गुप्ता, मौलवी अब्दुल हफीज, श्रीरामशंकरराय, श्रीरासविहारीमिश्र।

बैंकर्स—कटक बैंक लिमि०, इम्पीरियल बैंक आवइण्डिया।

वाणिज्यव्योपार—इण्डोवृटिश ट्रेडिङ्ग कम्पनी—साइकल और मोटरके व्योपारी, कटक प्रिंटिङ्ग कं० लिमि०, पुस्तक जाववक्स और अखबार छापनेवाले, कारोमण्डल कं० लि०, जहाज स्टीमरके कारबारी। श्री० पी० प्रस्टी एण्ड सन्स चांदनी चौकके प्रसिद्ध जौहरी, चश्मा वेचनेवाले और जेनरल मरचेण्ट तथा एजेण्ट।

रईस और जमींदार—गंगापुर स्टेट, सुन्दरगढ़के श्रीजनार्द्दन-सिंह, सरजोपालीके जमींदार श्रीगजराजसिंह साहब।

करांची।

भारतकी पश्चिमी सीमापर समुद्रके किनारे करांची मशहूर वन्दरगाह है। कमिश्नरी और जिलेका सदर मुकाम है। सिन्धी और हिन्दी भाषा यहां बोली जाती है। यह वाणिज्य व्योपारकी मण्डी है। रूई, सूत, कपड़ा, ऊन, ऊनीवस्त्र, कोयला, शराब, धातु, दियासलाई, चीनी, मसाला, तम्बाकू, रंग, मेवे, कागज आदि और सेनाकी सामग्री आदि दूर दूर देशोंको भेजी जाती हैं। यह सन् १८५० ई० के वादकी वस्ती है। व्योपारका केन्द्र होनेसे इसीकी बहुत जल्द उन्नति हुई है।

बैंक्स—यहां बहुतसे बैंक प्रसिद्ध हैं—सेण्ट्रल बैंक आव इण्डिया लि०, लायड्स बैंक लि०, नेशनल बैंक आवइण्डया लि०, मरकेण्टाइल बैंक आवइण्डिया लि०, पञ्जाब नेशनल बैंक लि०, सेविङ्ग एण्ड हेलिफक्स बैंक लि०, कराची बैंक लि०, इम्पीरियल बैंक आव इण्डिया लि०, चारटर्ड बैंक आव इण्डिया आस्ट्रेलिया चायना लि०।

वाणिज्यव्यवसायी—श्री बी० आर० हारमेन मेहता एण्ड को०,

श्रीइण्डो यूरोपियन ट्रेडिङ्ग कम्पनी श्रीकाहूएण्ड काहू कं०, कराची इलेक्ट्रिक सप्लाई कारपोरेशन लि०, श्री जी० वी० कोटवाल एण्ड-को०, श्रीलोकमानजी आदमजी लोटिया एण्डको, श्रीपटेल एण्ड सन्स, श्रीमार्टिन एण्ड हेरिस कं०, लि०, श्रीतैयबजी एण्डको० श्रीसिंगर सीविङ्गमेशीन कम्पनी, स्पेंसर एण्डको० लि०, श्रीआदम-जुद्दा भाई एण्ड सन्स । जेनरल हार्डवेयर मेटल्स और मकानका सामान बेचनेवाले । श्रीहाजी अब्दुल शकूर, हाजी अब्दुल कादिर एण्डको० इम्पोर्टर हैं ।

प्रसिद्ध वकील वेरिस्टर—सय्यदहसन जाफरी, वकील आले-नबी, अयोध्याप्रसाद पण्डा, ब्रजविहारीशर्मा, बाबू सन्तोषकुमार मुकर्जी इत्यादि ।

करौली ।

यह राजपुतानेकी एक रियासत है जो सरकारको कर नहीं देती । यहां हिन्दी बोली जाती है ।

राज्यका प्रबन्ध महाराजाधिराजकी सहायक कौंसिल करती है, जिसके चीफ मेम्बर राव साहब पं० शङ्करनाथ शर्मा हैं । रायसाहब मुंशी जुगलकिशोर जुडिशियल मेम्बर हैं । श्रीडाक्टर महावीरसहाय राज्यके वैद्य हैं, सुप्रिंटेण्डेण्ट लाला मुरारीलाल साहब कस्टम ट्रेड और आबकारीके अधिकारी हैं ।

कलकत्ता ।

यह गङ्गा अर्थात् भागीरथीके बायें किनारे बसा है । हवड़ा और कलकत्तेके बीचमें गङ्गानदी बहती है । बजरोंपर झूलने वाला बीचका सुविशाल पुल दोनों शहरोंको मिलाता है । पुलपरसे आदमी पांव पैदल और घोड़े गाड़ियां तथा मोटरोंसे आया करते हैं । जहाजोंके लिये पुल यथावसर विज्ञापन देकर तोड़ा जाता है । समुद्रमें ज्वारभाटा होनेके कारण गङ्गाका पानी यहां सदा गंदला रहता है । यह बृटिश भारतकी पहले राजधानी थी, तब भारतप्रभु श्रीमान् वाइसराय यहां विराजते थे । अब राजधानी उठ-कर दिल्ली चली गयी, इस कारण केवल बङ्गालके अधिकारी श्रीमान् गवर्नर महोदय यहां सकौंसिल निवास करते हैं । इस शहरकी मनुष्यगणना साढ़े आठ लाखके लगभग है । यहां सब देशके आदमी

रहते हैं। यहां हिन्दी, अंग्रेजी, बङ्गला, उड़िया सब यथावसर बोली जाती है। देश विदेशके इतने व्योपारी यहां रहते हैं कि, उनका नाम भी दिखाया जाय तो महाभारतका पोथा हो जायगा। बहुत थोड़ेसे व्योपारियोंके नाम यहां दिये जाते हैं।

श्री० बी० के० पाल एण्डको, श्रीएम० भट्टाचार्य्य, एण्डको, बोन फील्ड्सलेनमें अंग्रेजी दवाओंके सुप्रसिद्ध व्योपारी हैं। श्रीलाहिड़ी एण्डको कालिजस्क्वेयरमें, श्रीएन० के० मजुमदार, श्रीएन० एल० पाल यूनिक होमियो हाल, होमियोपेथी दवाओंके व्योपारी हैं।

कार एण्ड महता धरमतल्लेमें, जेनरल मरचेण्ट हैं। वाल्टर लाक एण्डको०, मेसर्स मेस्टन एण्डको, डी० एन० विश्वास आदि बन्दूक, पिस्तौल, तलवार गोली बारूद आदि हथियारोंके व्योपारी हैं। राय बद्रीदास बहादुर, मेसर्स लाभचन्द मोतीचन्द सुप्रसिद्ध जौहरी हैं। श्रीथैकरस्प्रिङ्क एण्डको० श्रीडबल्यू० न्यूमेन एण्डको स्टेशनरीके व्यापारी, श्रीयूनीवर्सल एण्ड कम्पनी, मेसर्स भोलानाथ एण्डसन्स, श्रीजान डिकिंसन एण्ड कं० कागजके व्योपारी हैं। श्री ई० ए० थामसन एण्ड कं०, श्रीडबल्यू लेसली एण्डको०, श्री बाबू कान्तिचन्द्र मुकुर्जी, हार्ड वेयर और लोहेकी चीजोंके सुप्रसिद्ध व्योपारी हैं। श्रीमगनलाल गोवर्द्धनदास, श्रीगोदरेज कं० तिजोरी के व्योपारी हैं। श्रीहरक्यूलस एण्ड कम्पनी, श्रीदास एण्ड कं० कैशबक्स और ऊंचे दर्जेके ताले आलमारी आदिके सुप्रसिद्ध व्योपारी हैं। श्रीह्वाइटवे लेडला एण्डको०, चौरंगीमें, श्रीमोहितदा युधिष्ठिरदां बहुबाजार स्ट्रीटमें, श्रीजहरलाल पन्नालाल कालिज स्ट्रीटमें तैयार पोशाकके नामी व्योपारी हैं।

कसौली।

अम्बाला जिलेकी यह एक छावनी है। कालकासे शिमला जाने वाली लाइनमें यह स्टेशन पड़ता है। यहां सरकारकी ओरसे कुत्तेके काटने और क्षयी रोगियोंका बड़ा अस्पताल है।

वाणिज्य व्योपार—सदर बाजारमें हिमालयास्टोर असल पहाड़ी शहदके व्योपारी हैं, जहां शिलाजीत, फलोंके मुरब्बे, केशर, कस्तूरी, हींग वगैरः बढ़िया मिलती है।

दवा दारू और सब तरहकी चीजें मोहनलाल कम्पनीके यहां

मिलती हैं। एस. मोहम्मद अली मारकेट बाजारके जनरल मरचेंट और मशहूर कमीशन एजेंट्स हैं। शमीमल एण्ड ब्रदर्स मारकेट बाजारमें जनरल मरचेंट और सरकारी नीलामखानेके मालिक हैं।

कानपुर।

यह संयुक्त प्रदेशमें इलाहाबाद कमिश्नरीका एक जिला है। यहां हिन्दी बोली जाती है। जीन, मारकीन, ट्वील, सूती कपड़े बनानेकी स्वदेशी काटन मिल्स, म्यूरमिल्स और ऊनी कपड़ेके लिये लाल इमली उलनमिल्स है। यह युक्त प्रदेश ही नहीं बल्कि हिन्दुस्तानमें अन्नकी बहुत बड़ी मण्डी है। युक्तप्रान्तका चेम्बर आवकामर्स यहां है। चमड़ेका भी बड़ा कारखाना है।

बैंकर्स—इलाहाबाद बैंक, नेशनलबैंक आव इण्डिया, चार्टर्डबैंक आवइण्डिया, इम्पीरियलबैंक आव इण्डिया, अवधकमर्शियलबैंक लि०, पञ्जाब नेशनलबैंक लिमिटेड।

व्योपारी—अग्रवाल ब्रदर्स कम्पनी, पीसगुड और जनरल मरचेंट एम्पायर-इञ्जीनियरिंग कम्पनी, लोहेकी कड़ी, काठ, प्लेन और पनारीदार शीट आदिके व्योपारी ठीकेदार इत्यादि। अब्दुलगनी, अब्दुलअजीज, चमड़ेके सब तरहके सामान वेचने वाले, एच. एस. अहमदहुसैन एण्डसन्स, जनरल मरचेण्ट, कमीशन एजेण्ट बूट और शूके व्योपारी। अमीरचन्द एण्ड सन्स, बद्री प्रसाद एण्ड सन्स, घोड़ोंके साज वगैरः वेचने वाले और जनरल मरचेण्ट हैं। भगवानदीन, हरिश्चन्द्र आदि भी नामी व्यापारी हैं। कूपरएलेन कम्पनी और नार्थ वेस्टर्नटेनेरी कम्पनी यहांकी बहुत मशहूर है, चमड़ेका कारबार और बहुत बड़ी मशहूर टेनरी यहां है। मेसर्स एलिगनमिल्स। हाजी कासिम अहमद एण्ड कम्पनी, इण्डियन टरपेण्टाइन एण्ड रासिन कम्पनी, ज्वालाप्रसाद राधाकृष्ण साहू कोठीवाले बड़े व्यापारी हैं। इंगिलिश बाजारकी त्रिपाठी कम्पनी दवा दारू वेचनेवालोंमें प्रसिद्ध है।

रईस जमींदार—पुराने कानपुरके श्रीबलभद्रप्रसाद तिवारी, देरापुरके ठाकुर राजेन्द्रबहादुरसिंह, विठ्ठौरके चौधरी राजकुमार, चौधरी गङ्गासहाय, बिठूरके श्रीपुरषोत्तमराव तांतिया, डेश-

पुरके ठाकुर गङ्गासिंह, अकबरपुरके चौबे बालकराम और चौधरी गन्धर्वसिंह और खानपुरके ठाकुर विश्वम्भरसिंह वर्मा।

कानपुर—युक्तप्रांतमें वाणिज्य तथा रेलवेके कारखानेके लिये प्रसिद्ध है। यहांसे भारतके हर प्रान्तोंके लिये रेल मिल सक्ती है। यहांपर सूती तथा ऊनी वस्त्र बनानेके अनेक कारखाने हैं, जैसे कानपुर काटनमिल्स आदि। चमड़ा, आटा, तेल, थैला बीनने आदिके लिये भी यहांके कारखाने प्रसिद्ध हैं। कानपुर सिपाही विद्रोहके समय जिस कूपमें अंग्रेजोंको फेंक दिया गया था उसपर एक देवदूतकी मूर्ति बनाई गई है तथा उसे सुरक्षित रक्खा गया है। यह भी देखने योग्य है। ब्रह्मावर्त सनातनधर्म महामण्डल और सनातनधर्म कालेज भी यहीं हैं।

काशी।

यह बनारस कमिश्नरीका सदर मुकाम और हिन्दुओंका प्रधान तीर्थस्थान गङ्गाके बायें किनारेपर गोल मण्डलाकार बसा है।

बैंकर्स—इलाहाबाद बैंक लिमिटेड, बनारस बैंक लिमिटेड, इम्पीरियल बैंक आव इण्डिया, बैंक आव बिहार लिमिटेड।

वाणिज्यव्योपार—श्रीछन्नूलाल रामजीदास, श्रीदामूजी महाराज, श्रीराधाकृष्ण शिवदत्तराय, श्रीसरजूप्रसाद मुकुन्दलाल सोने चांदी गहनेके व्योपारी हैं।

काशीसिल्क और पीताम्बर आदि—गिरधरदास, जगमोहनदास बालाजी एण्डको, बनारस ब्रोकेड लिमि० श्रीबालमुकुन्दमल एण्ड सन्स, बनारस इण्डस्ट्रियल एण्ड ट्रेड एसोसियेशन, गोकुलचन्द्र, रामचन्द्र। के. एस. मुधिया एण्डको। कागज, कलम, दावात स्टेशनरी—श्रीमाताप्रसाद शिवनन्दनप्रसाद, श्री जनरल ट्रेडिङ्ग कम्पनी, मेसर्स भोलानाथदत्त एण्ड सन्स, श्रीनन्दकिशोर ब्रदर्स, भार्गव बुक एजेंसी आदि। श्रीगोपीचन्द एण्ड सन्स, श्रीके० कृष्ण एण्ड ब्रदर्स चश्मेके व्योपारी। अङ्गरेजी ढगके खाने—जनरल काश्मीरी होटल, बांसका फाटक और कचौड़ीगलीके मारवाड़ी बासेमें देशी भोजन तैयार रहते हैं।

राजा रईस—दि आनरेबल राजा मोतीचन्द सी. आई. ई. रायबहादुर कुंअर नन्दलालजी आनरेरी कप्तेन, कुंअर कवीन्द्रनारायण

सिंह, राजा सत्यानन्दप्रसाद सिंह, रायकृष्णचन्द्र, राय शिवप्रसाद, राय बटुकप्रसाद खत्री बहादुर, बाबू भगवानदास; श्रीदेशभक्त बाबू शिवप्रसादगुप्त, पं० रामचन्द्र नायक कालिया इत्यादि।

श्रीकवीन्द्र आयुर्वेद औषधालयके संस्थापक तथा आयुर्वेदज्ञाता श्रीज्योतिश्चन्द्रजी कविरत्न, काव्यतीर्थ, विद्याभूषण सांख्यरत्न, कविराज, आयुर्वेदाचार्य भट्टाचार्यजी हैं। आप बहुत पुराने तथा प्रसिद्ध चिकित्सकोंमेंसे हैं तथा १५ वर्षतक बड़ी योग्यताके साथ चटगांवमें चिकित्सा भी की है। आपकी औषधियां रोगोंके लिए वास्तवमें रामबाण हैं। जनताको इनकी औषधियोंसे अवश्य लाभ उठाना चाहिए। अब आप कई वर्षोंसे ८३ नम्बर दशाश्वमेध बनारसमें रहकर वहीं चिकित्सा करते हैं और आवश्यकतानुसार रोगि परिचय्यार्थ रोगीके घर भी जाते हैं।

काशी—[बनारस]—गंगाके वायेंतटपर हिंदुओंकी यह पवित्र नगरी बसी हुई है, यहांपर गंगा उत्तर वाहिनी हैं। मोगल-सरायसे रेल द्वारा काशी आना पड़ता है। इसलिये गंगा पार करनेके लिये एक अति उत्तम तथा मजबूत पुल बंधा है जिसका नाम डफरिन ब्रिज है। पुलकी लम्बाई ३५०८ फीट है। पैदल तथा घोड़ागाड़ी और बैलगाड़ियोंके लिये भी रास्ता बना हुआ है। काशी बहुत प्राचीन तथा एक प्रसिद्ध नगरी है। संस्कृतविद्या तथा हिंदू सभ्यताका यही केन्द्र स्थान है। भगवान् बुद्धदेवने अपने धर्मप्रचार का कार्य यहींसे शुरू किया था। अब भी काशीसे ६ मीलकी दूरीपर उत्तरकी तरफमें सारनाथ नामक स्थान है, जहांपर बुद्धके समयकी मूर्तियां टूटे फूटे बर्तन, अति-सुन्दर मकान आदि जमीनके अन्दरसे खोदकर निकाले गये हैं। करीब, २,८०० वर्ष तक वह स्थान बौद्ध-धर्मके प्रचारका केन्द्रस्थान था।

११९४ ई० में महम्मद्गोरीने इस स्थानपर विजय पाया था और करीब ६०० वर्ष तक मुसलमानोंहीके पास था। १८७१ ई० में पुनः यह स्थान बृटिश अधिकारमें आगया।

राजघाटपर महाराज बनारसका किला है। जो अब बिलकुल भग्नावस्थामें पड़ा है। इसमें भी बुद्धके समयकी मूर्तियां मिलती हैं। इससे मालूम होता है कि, इस स्थानपर भी बौद्धोंका" विहार

तथा मन्दिर था। अब भी शहरमें किसी २ स्थानपर बौद्धमूर्तियां किंतु उत्तरकी तरफ विशेष देख पड़ती हैं।

विश्वेश्वरगंजके पास वृद्धकालका मंदिर है, यह स्थान बहुत प्राचीन है। लोगोंकी धारणा है कि वृद्धकालके कुंडमें स्नान कर लेने से कुष्ठ, बुखार तथा और भी अनेक संक्रामक रोगोंसे मनुष्य मुक्त होता है। यद्यपि काशीमें हिन्दुओंके शिवालय बहुत हैं, किंतु छोटे हैं, वैसे विशाल नहीं हैं जैसे कि मथुरा आदिमें हैं। यहां पर औरङ्गजेबने प्राचीन विश्वनाथके मन्दिरको तोड़कर एक मसजिद बनवायी है, जो ज्ञानवापीके पास है तथा दूसरी मसजिद माधवराबके धौरहरेके नामसे प्रसिद्ध है, इसमें दो मीनार हैं, जो १४१० फीट ऊंचे हैं। इस मीनार पर चढ़कर लोग शहरके अनुपम दृश्यको देखते हैं।

काशीमें अनेक विशाल भवन बने हुए हैं, जिनमें सबसे प्रसिद्ध महाराजा जयसिंहका बनाया हुआ "मानमन्दिर" है। यह दशाश्वमेध घाटके पास है, इसका निर्माण १६९३ में हुआ था। इसमें अब भी ज्योतिषशास्त्रके अनेक यन्त्र आदि बने हैं। कहा जाता है कि, इसमें एक यन्त्र बना हुआ था, जिससे कुछ दिन पहले ध्रुव तारा साफ साफ दिखायी पड़ता था। काशीके मन्दिर, कुण्ड, घाट आदि समग्र भारतवर्षमें प्रसिद्ध है। श्रीविश्वनाथजीके मन्दिरके विषयमें जो कुछ लिखा जाय थोड़ा है। यह विशाल स्वर्ण-मन्दिर देखने योग्य है। हजारों यात्रि नित्य प्रति दर्शनके लिये आते हैं। दिन रातमें ५ आरती होती है। हर आरतीके समय दर्शकोंकी बहुत बड़ी भीड़ इकट्ठी रहती है। यहां जो कुछ चढ़ता है, उससे पाठशाला, क्षेत्र, तथा उपकारी संस्थाओंको भी मदद दी जाती है। इस स्थानके प्रधान हैं श्रीयुत पं० महावीर प्रसादजी। आप बड़े ही सज्जन तथा भक्त हैं। जबसे आपके हाथमें प्रबन्ध आया, सब प्रकारकी त्रुटियां मिटा दी गयीं हैं।

श्रीअन्नपूर्णाजीका मन्दिर—विश्वनाथजीके मन्दिरसे १०० कदम की दूरी पर है। इस विशाल मन्दिरमें पश्चिमाभिमुख अन्नपूर्णादेवीकी भव्यमूर्तिका दर्शन होता है। सैकड़ों भिक्षुकोंको भोजन मिलता है तथा प्रबन्ध भी अच्छा है। इस प्रधान मन्दिरके चारों कोणपर, सूर्य, गणपति, हनुमान, गौरीशंकर, आदिके छोटे २ मन्दिर हैं।

आदि विश्वेश्वर—ढुंढिराज गणेश, साक्षी विनायक, तारकेश्वर ज्ञानवापी आदिके मन्दिर श्रीविश्वनाथजीके मन्दिरके आस पासमें ही है। शहरके दक्षिण तरफ श्रीदुर्गाजीका मन्दिर तथा श्रीसंकट मोचन हनुमानजीका मन्दिर, पश्चिम भागमें श्रीवैद्यनाथ, कामाक्षा-देवी, बटुक भैरव आदिके मन्दिर, पूरबमें गंगाके उस पार महाराजा काशिराजके किलेमें श्रीवेदव्यासजीका मन्दिर है।

काशीके प्रधान मन्दिर, घाट, कुण्ड आदिमें कालभैरव, केदारनाथ, तिलभाण्डेश्वर, आदिगणेश, गोपाल मन्दिर, संकटा देवी, बालाजी, सिद्धेश्वरी, श्रीगोस्वामी तुलसीदासजीका मन्दिर, गुफाके श्रीहनुमानजीका मन्दिर, लोलार्ककुण्ड, लक्ष्मीकुण्ड, सूर्यकुण्ड, अमृतकुण्ड, नागकुण्ड, मणिकर्णिकाकुण्ड, अगस्तकुंड, अस्सीसंगमघाट, केदारघाट, दशाश्वमेधघाट, मणिकर्णिकाघाट, पञ्चगङ्गाघाट, वरुणासंगम, नागपुरघाट, सिन्धियाघाट, अति प्रसिद्ध तथा देखने योग्य हैं। पिशाचमोचनकुण्ड, बाल्मीकिजीका टीला, बाल्मीकिकुण्ड, श्रीभारतधर्ममहामण्डलका प्रधान कार्यालय तथा श्रीभारतधर्मसिण्डिकेट लिमिटेडका प्रधान दफ्तर स्टेशनरोडपर मध्य बस्तीमें है। यात्रियोंको यदि किसी प्रकारका कष्ट हो, तो सिण्डिकेटभवनमें जाकर श्रीआर्यधर्म प्रचारिणी सभाके दफ्तरमें सेक्रेटरी महोदयसे मिलकर वे अपना कष्ट कहें, तो उनका उचित प्रबन्ध किया जाता है।

कबीरचौराके पास प्रिन्स आफ वेल्स हास्पिटल है। सन् १८७७ में सम्राट् सप्तम एडवर्ड जब कि, युवराज होकर आये थे, उसी समय उन्होंने इस अस्पतालकी नींव डाली थी।

टाउनहाल—मैदागिनके कम्पनी बागके पासमें ही है। इसे महाराज विजयानगरम्‌ने काशीवासियोंकी सुविधाके लिये अपने खर्चसे बनवाया। गवर्नमेन्ट संस्कृत कालेजकी इमारत देखने योग्य है। इसका निर्माण सन् १८५३में हुआ था। इसमें गवर्नमेन्टका २ लाख रुपयेके करीब खर्च हुआ था, तथा भारतके अन्य नरेशोंने भी सहायता दी थी, जिनके चित्र भी भवनमें ही उपस्थित हैं। महाराजा अशोकके समयका एक स्तम्भ जो जिला गाजीपुरमें पाया गया था, उसे उस समयके माननीय छोटे लाट मिस्टर टामसन साहबने

अपने व्ययसे कालिजके अहातेमें उपस्थित किया है। ऐतिहासिक दृष्टिसे विदेशी लोग इसे देखनेके लिये आया करते हैं।

इसी भवनमें कालेजका पुस्तकालय है, जो "सरस्वतीभवन" के नामसे प्रसिद्ध है। इस पुस्तकालयमें संस्कृतके अनेक प्राचीन ग्रंथ तथा हस्तलिखित पुस्तकोंका उत्तम संग्रह है।

राजाकालीशङ्करका आश्रम—यह सिविल लाइनमें है, इसमें दरिद्र, अंधे, लंगड़े, लूले, कोढ़ियोंकी मुफ्त चिकित्सा की जाती है तथा भोजन और रहनेके लिये स्थान मिलता है।

सरकारी इमारतें—पागलखाना, सेण्ट्रलजेल डिस्ट्रिक्टजेल, म्युनिसिपल आफिस, कमिश्नर तथा एजेण्ट साहबका दफ्तर, कलेक्टरका दफ्तर, खजाना, तहसील, डिस्ट्रिक्ट इञ्जिनियर, पुलिसका दफ्तर, सेसनजजका दफ्तर, इम्पिरियल बैंक आदि देखने लायक हैं।

महाराजा काशिराजका नदेसर भवन तथा मिण्टहाउस भी सिविल लाइनमें ही है।

अंगरेजोंके लिये काशीमें दो होटल हैं। एक होटल डि पेरिस, दूसरा क्लार्कस होटल तथा हिन्दुओंके लिये जेनरल काश्मीरी हिन्दू-पवित्र भोजनालय, बांसके फाटकपर पार्वतीआश्रम, हिन्दू बोर्डिङ्ग हौउस आदि दशाश्वमेधपर अनेक स्थान हैं।

काशीमें घाटोंकी शोभा विशेषकर पंचगंगा, मणिकर्णिका और दशाश्वमेध घाटकी शोभा अपूर्व है। मणिकर्णिका और हरिश्चन्द्र घाटके स्मशान भी देखने योग्य हैं। ११ श्राद्ध करनेकी विधि है। यथाः—१-आदिकेशव (वरुणासंगम), २-पंचगंगा, ३-मणिकर्णिका, ४-दशाश्वमेध, ५-असीसंगम, ६-कर्दमेश्वर, ७-भीमचंडी ८-रामेश्वर, ९ शिवपुर १०-कपिलधारा और ११-पिशाचमोचन। पिशाचमोचनके तीर्थपुरोहित पं० शिवशंकरजी बड़े ही सुयोग्य और सच्चरित्र पुरुष हैं।

कुष्टिया (बङ्गाल)

यह नदिया जिलेका एक परगना है। यहां बङ्ग भाषा और हिन्दी बोली जाती है।

वाणिज्य व्यापार—यहां देशी कपड़ोंका लक्ष्मी काटन मिल्स नामक बड़ा पुतलीघर है।

कुष्टिया देशीभण्डार लिमिटेड, देशी चीजोंके प्रसिद्ध व्यापारी और बङ्गालकेमिकल एण्ड फारमास्यूटिकल वर्क्सके एजेण्ट हैं।

वकील आदि—वैद्यनाथ अधिकारी गिरीशचन्द्रसान्याल, ज्योतिन्द्रभूषण सान्याल, श्रीसुरेन्द्रनाथ सरकार।

कोलार।

यह मैसूर राज्यके पूर्व ओरका एक जिला है। यहां कनाड़ी, तेलगू, तामिल और हिन्दी बोली जाती है। इस जिलेके कोई १५ वर्ग मीलमें सोनेकी खानें हैं।

वकील आदि परकार्यसाधक—मिस्टर बापूराव, बो. नागेश्वर अय्यर, सी. नरसिंह राव, वी. एस. श्रीनिवास अय्यङ्गर।

वाणिज्य व्यवसायी—एम. वी. रामालिङ्गम एण्ड सन्स, ओरियेण्टल टोबाकूमेनुफेकचरिङ्ग कम्पनी, ओरियेंटल वोविङ्ग वर्क्स, श्री गुलाम अहमद कारोमण्डल कोलारफील्ड।

गया।

यह पटना कमिश्नरीका मशहूर जिला फल्गू नदीके किनारे पर बसा हुआ है। हिन्दुओंके श्राद्ध पिण्डका बड़ा पुरातन तीर्थ है। यहां हिन्दी बोली जाती है।

बैंकर्स—बैंक आव बिहार लिमिटेड, गया बैंकर्स एण्ड ट्रेड एसोसियेशन लिमिटेड, इम्पीरियलबैंक आव इण्डिया।

वाणिज्य व्यापार—स्टार कमर्शियल कं० शिकार और खेलकूद की चीजें बेचनेवाले, कार ब्रदर्स कोयला, चूना, लकड़ी और अबरकके व्योपारी। श्री भगवतीचरण बैजनाथ, बिहार ट्रेडर्स लिमिटेड, जनरल मरचेंट कमीशन एजेन्टस, श्रीरामसहायलाल, कचहरी रोड पर बड़े पुस्तक विक्रेता हैं।

गाज़ीपुर।

यह बनारस कमिश्नरीका एक बड़ा जिला और जिलेका सदर मुकामी शहर है। यहां अफीमकी बड़ी नामी कोठी है। हिन्दुस्तानके वाइसराय लार्ड कार्नवालिसका यहां मकबरा है। ऐसी मर्यादा हिन्दुस्तानके किसी शहरको नसीब नहीं है। यहां हिन्दी बोली जाती है। इस जिलेमें गहमर, रेवतीपुर और शेरपुर बड़े बड़े गांव हैं। यह शहर गुलाबके वास्ते हिन्दुस्तान भरमें प्रसिद्ध है।

वकील आदि परकार्य्यसाधक-श्रीशरच्चन्द्रराय, श्रीविन्ध्येश्वरी प्रसादसिंह गहमरी, श्रीशिवप्रसाद वर्मा, श्रीदमड़ीराय इत्यादि।

वाणिज्य व्योपार—गाजीपुर डिस्ट्रिक्ट को अपरेटिव बैंक लि०। जैसुखराय काशीप्रसाद, बैंकर्स, कोलशुगर एण्ड माइकामरचेंट वेलकम कम्पनी अंग्रेजी दवा बेचनेवाले और जेनरल मरचेंट्स।

रईस और जमींदार—शाह बदरे आलम, श्रीईश्वरदयाल और प्रेमदयाल पाण्डेय, श्रीचौबे रासबिहारीलाल रायबहादुर, रायसाहब बाबू रामेश्वरलाला मारवाड़ी, बाबू विभूतिनारायणसिंह, बाबू प्रतापनारायणसिंह कुड़ेसर, श्रीरानीरायकुंवर और कुंवरनारायण सिंह आव अवसानगंज।

इस जिलेमें गहमर डेढ़ मील लम्बा और डेढ़ मील चौड़ा है। जहां राजपूत और ब्राह्मणोंका प्राधान्य है। इनकी प्रधान जीविका खेतीके सिवाय पलटनोंमें नौकरी करना है। यहां सिपाही, नायक हवलदार जमादार, सूबादार, सूबादार-मेजर और लेफिटनेंट बहुत हैं। लेफिटनेंट बाबू रामस्वरूपसिंहको विक्टोरियाक्रास मेडल मिला है।

गोरखपुर।

इसके उत्तरमें नेपाल राज्य, पूर्वमें चम्पारन, पश्चिममें बस्ती और दक्षिणमें गोगरा (शरयू) नदी है। मुरब्बा ४५२८ मील है। हिन्दी भाषा बोली जाती है। कहते हैं कि, सुप्रसिद्ध योगिराज श्रीगोरखनाथजीकी यह जन्मभूमि होनेसे ही इसका नाम गोरख-पुर पड़ा। पड़रौना, तमकुही, बदरवार, मझौली, डनोला और सलेमनगढ़ ये इस जिलेके प्रसिद्ध जमींदार हैं। कानपुर शुगर वर्क्स लिमिटेड, गौरी फैक्टरी ये कारखाने अच्छे हैं। बंगाल नार्थ वेस्टर्न रेलवेका यह प्रधान केन्द्र है। व्यापार साधारण है, परन्तु जिलेका विस्तार बहुत बड़ा होनेसे कचहरियोंमें अच्छी चहल पहल रहती है। यहांका गीता प्रेस महत्वकी संस्था है। इसके द्वारा हिन्दी साहित्य और धार्मिक भावोंका अच्छा प्रचार हो रहा है। 'कल्याण' नामक सर्वाङ्गसुन्दर मासिकपत्र भी इस प्रेससे निकलता है।

गोवा।

यह हिन्दुस्तानके पश्चिमीकिनारेका पोर्चुगीज सेटलमेण्टका स्थान है, जो बम्बईसे दक्षिण और पश्चिमको बसा है। यहां

पोर्चुगीज और कोकनी तथा हिन्दुस्तानी बोली जाती है। इसका सदर स्टेशन पणजी है।

चटगांव।

यह बङ्गालकी खाड़ीपर बङ्गप्रान्तका एक जिला है। यहां वङ्गला और हिन्दी बोली जाती है।

वकील और परकार्य्यसाधक—रायबहादुर सतीशचन्द्रसेन, रायसाहब ईश्वरचन्द्रसेन गुप्त, श्रीज्ञानदारञ्जन दत्त नामी वकीलोंमेंसे हैं।

बैंकर्स—महालक्ष्मीबैंक लि०, इम्पीरियल बैंक आफ इण्डिया, नेशनल बैंक आफइण्डिया, चटगांव चेम्बर आफ कामर्स, चटगांव सेंट्रल को अपरेटिव बङ्क।

वाणिज्य व्यापार-बुलक ब्रदर्स एण्डको लि०-चावलके व्यौपारी, ईस्ट बङ्गाल ट्रेडिङ्ग कं०—कोयले आदिके व्यापारी, याकूबअली एण्ड सन्स जेनरल मरचेंट। शालीमार एण्ड को० लिमिटेड मोटर वगैरः मरम्मत करनेवाले। निशिकान्तसेन जेनरल मरचेंट।

रईस और जमींदार—रायबहादुर उपेन्द्रलाल राय, ब्रजेन्द्रकुमार राय, राजा भुवनमोहनराय चौधरी, जमालखां अब्दुल हकीम इत्यादि।

चन्दरनगर।

हुगली जिलेमें फ्रेंचसरकारका यह इलाका पांडेचेरी गवर्नरके अधीन केवल ३ वर्गमीलमें है। यहां बंगला, हिन्दी और फ्रेञ्च बोली जाती है।

वाणिज्य व्यवसायी—श्रीनन्दूलालदास जेनरल मरचेंट, एस. एम० मार्तण्ड एण्ड ब्रदर्स, सुगन्धित विक्रेता। श्रीपूर्णचन्द्रशील एण्ड को० फरनिचर मरचेंट।

रईस जमींदार—कुंअर सत्यप्रियघोषाल, श्रीचन्दीप्रसादसिंह, श्रीसत्यकृपाल वनर्जी इत्यादि।

जमशेदपुर (तातानगर)

यह विहार उड़ीसेकी सिंहभूमिका परगना है। तातानगरसे यहांतक पक्कीसड़क भी है। यह तीन हिस्सोंमें बंटा है। एक हिस्सेमें बड़े धनी हिन्दुस्तानी और यूरोपियन रहते हैं। दूसरेमें

साधारण हिन्दुस्तानी और एङ्गलोइण्डियन रहते हैं और तीसरा भाग जिसको लोअरपार्ट कहते हैं, किरानी और क्लर्कोंसे आबाद है। हिन्दुस्तानमें इस तरहका अंग्रेजीविभाग केवल इसी शहरमें है। यहां मान्यवर देशगौरव ताताका लोहेका कारखाना भारतीय उद्योग धन्धोंकी कीर्ति है। यहां साधारणतः हिन्दी बोली जाती है।

बैंकर्स—इम्पीरियल बैंक आफ इण्डिया।

वाणिज्यव्यवसाय-एग्रीकलचरल इम्प्लीमेण्ट कम्पनी लि० गोलमुरी, इण्डियन केवल कम्पनी लि० तातानगर, इण्डियन स्टील वायर प्रोडक्ट लिमि० गोलमारी, पेननशुलर लोकोमोटिव कम्पनी और ताता आयरन एण्ड स्टील कम्पनी आदि प्रसिद्ध कारखाने हैं।

जबलपुर।

यह जबलपुर कमिश्नरीका सदर मुकाम और जिला है। यहां हिन्दी बोली जाती है। मध्यप्रदेशमें यह नाजकी बड़ी मण्डी है।

बैंकर्स—इलाहाबादबैंक लिमिटेड, भार्गव कमर्शियलबैंक लिमिटेड, इम्पीरियलबैंक आव इण्डियो, जबलपुर को अपरेटिव सेंट्रलबैंक जबलपुरमें तथा मुरवारा सेंट्रल बैंक लिमिटेड और इम्पीरियलबैंक आप इण्डिया कटनीमें भी हैं।

वाणिज्य व्यवसायी—दिनशा एण्डको, स्पिरिट और जनरल मरचेंटस, श्रीकरसेटजी एण्ड कम्पनी, लोकमान्य पुस्तक भण्डार, राधामोहन रामनरायण अग्रवाल, राखी ब्रादर्स एजेंसी, श्रीत्रिवेदी एण्ड सन्स।

रईस और जमींदार—दीवान बहादुरसेठ जीवनदास, सेठ गोविन्ददास, सेठ साहब आनरेबल श्रीजमनादासजी, पाटनके गुरु शिवप्रसाद, ठाकुर बलबीरसिंह रोहनियां, रेवाप्रसाद पिपरिया कला, खंडवाराके ठाकुर जगराजसिंह इत्यादि।

जालन्धर।

यह पञ्जाबकी जालन्धर कमिश्नरीका फरद मुकामहै। हिन्दी और पञ्जाबी बोली जाती है।

बैंकर्स—सेंट्रल को अपरेटिवबैंक लिमिटेड, इम्पीरियलबैंक आव इण्डिया।

वाणिज्य व्यवसायी—धीरूमल बैजनाथ, किरासन तेलकेबड़े

व्यौपारी हैं। बिल्लामल रंगनाथ लाल बाजारमें और खुशीराम रामचन्द्र बड़े बजारमें सोने चांदीके व्यौपारी हैं। तुलसीराम गुरदासराम, हंसराज विलायतीराम, बेलीराम दीनानाथ, सेवाराम दयालदास फेटनगंजमें चीनीके व्यापारी और कमीशन एजेंट्स हैं।

जौनपूर।

यह बनारस की कमिश्नरीका एक जिला है। यहां हिन्दी बोली जाती है। बेला चमेली और गुलाब तथा मसालोंके तेल फुलेल इत्र और नेवाड़ मूली यहांकी बहुत प्रसिद्ध हैं।

सुखलालगंज कालीन कम्पनी सुखलालगंज, इस जिलेमें मशहूर कारखाना है। गल्ला, बीज, कालीन आदिके वे लोग बड़े व्यौपारी हैं। श्रीजवाहिरलाल एण्ड सन्सके द्वारा वहांका प्रबन्ध होता है।

झांसी।

यह झांसी कमिश्नरीका मशहूर जिला और सदर मुकाम है। यहां हिन्दी बोली जाती है।

बैंकर्स—इलाहाबाद बैंक लिमिटेड।

वाणिज्यवसायी—जी० टंडन एण्ड ब्रदर्स चश्मा और किताबके व्यापारी तथा कमीशन एजेण्ट हैं। तुलाराम पन्नमलाल बनारसी और भागलपुरी कपड़ोंके प्रसिद्ध व्यापारी हैं।

कटेहराके राजा श्रीसरदारसिंहजी, तथा राजा श्रीमंत बालकृष्ण राव भाउजी साहब इत्यादि। यहांके रईस हैं। यहांकी महारानी लक्ष्मीबाईका किला देखने योग्य है।

टूटीकोरिन।

यह मदरास प्रेसीडेंसीका एक जिला है। यहीं साउथइण्डियन रेलवे समाप्त होती है। यहां तामिल, अंग्रेजी और हिन्दी बोली जाती है।

बैंकर्स—चेम्बर आवकामर्स। नेशनल बैंक आवइण्डिया। इम्पीरियल बैंक आवइण्डिया।

वाणिज्यव्यवसाय—मुत्थूस्वामी पिल्ले कम्पनी, दवा वगैरः के बड़े व्यौपारी हैं। मथु कम्पनी ब्रिटिशइण्डिया स्टीमनेविगेशनके एजेण्ट हैं। बम्बई कम्पनी कपड़े आदिके बड़े सौदागर हैं।

ढाका।

बंगालका यह एक बड़ा जिला है। इसके उत्तरमें जिला मेमनसिंह पूर्वमें मेघना नदी, दक्षिणमें पद्मा नदी और पश्चिममें ब्रह्मपुत्रा नदी है। गंगाके उत्तरी तटपर नगर बसा है, जो गंगा मुखसे लगभग १०० मील है। मु क्षा २७७९ मील है और बंगाली बोली जाती है। कुल चार डिविजन हैं। एक अच्छी युनिवर्सिटी है। इंजीनियरिंग और मेडिकल स्कूल भी हैं, और भी कई एक हिन्दु मुसलमानोंके स्कूल हैं। धनगराम पुस्तकालय, अनाथालय, दातव्य युनियन, सोशल सर्विसलीग आदि संस्थाएं हैं। प्रधान प्रधान सब बैंकोंकी शाखाएं हैं। बंगाल जमींदारी और बैंकिंग कंपनी, अन्नपूर्णा मेडिकल हाल, बसाक, भद्र, धनिक, आई. जी. एन. रेलवे कंपनी, पेपर कंपनी, पटुआ कंपनी आदिके कारोबार अच्छे हैं। यहांका देशी-विदेशी व्यापार बहुत अच्छा है।

त्रिचनापल्ली।

यह मद्रास प्रेसीडेंसीका एक जिला है, यहां तामिल और हिन्दी बोली जाती है। यहां सिगार बनानेके बड़े बड़े कारखाने हैं।

बैंकर्स—इम्पीरियल बैंक आव इण्डिया, त्रिचनापल्ली हिन्दु सेविङ्गस बैंक लिमिटेड, वारियर कमर्शियल बैंक लिमिटेड।

वाणिज्यव्यवसायी—चार्लस ब्रदर्स-सिगार बनानेवाली कम्पनी है। ए. चार्लटन एण्डको आस्टिन एण्डको, बर्टन एण्डको आदि कोई ८० बड़े बड़े सिगार बनानेके कारखाने हैं।

तंजौर।

यह मद्रास प्रेसीडेंसीका एक जिला है। यहां हिन्दी और तैमिल भाषा बोली जाती है।

बैंकर्स—इम्पीरियलबैंक आव इण्डिया।

श्री एम. गनपति पिल्ले एण्ड को० चावलके व्योपारी हैं। श्री टी. के. नारायणस्वामी नाइडू जेनरल मरचेंट हैं। श्रीसन एण्ड कम्पनी फौंटेनपेनके थोक व्यापारी हैं। साउथ इण्डियन कामर्स कम्पनी चावलके बड़े व्योपारी और जेनरल मरचेंट हैं। इस जिलेमें नागापट्टम एक प्रसिद्ध मुकाम है, जहां स्टीलट्रंकके बड़े बड़े कारखाने हैं।

थाना ।

यह बम्बई प्रेसीडेंसीका एक जिला है। यहां मराठी हिन्दी और गुजराती बोली जाती है।

दिनकर प्रभाकर गुप्ते यहांके प्रसिद्ध वकीलोंमेंसे हैं। यहां इम्पीरियल बैङ्क आव इण्डियाका एक ब्राञ्च है। श्री डी. के. फड़के यहांसे आमदनी और रफ्तनी करनेवाले और जेनरल मरचेंट हैं। मेहरवीनजी नवरोजजी अंतिया भी यहांके जेनरल मरचेंट्स और कमीशन एजेंट्स हैं।

दरभङ्गा ।

यह तिरहुतका एक जिला है। इसकी सरहदसे एक ओर भारतके स्वाधीन राज्य नैपालका इलाका शुरू होता है। यहां हिन्दी भाषा बोली जाती है।

इसी जिलेमें दरभंगाराज एक सुविशाल राज्य है। जिसके वर्तमान अधिकारी श्रीहिजहाइनेस महाराजाधिराज श्रीकामेश्वर सिंहजू देवबहादुर हैं।

बैंकर्स—नेशनल को अपरेटिव बैंक लिमि० नयाबाजारमें और दरभंगा बैंक लिमि० लालबागमें हैं।

राजा रईस और जमींदार—रायबहादुर महामायाप्रसाद, रायबहादुर विश्वेश्वरीप्रसाद, श्रीसिद्धेश्वर प्रसाद सोधवाड़ा, श्रीसूरनसिंह जोगियारा, राजेन्द्रप्रसाद और मुनेश्वरप्रसाद कांसीसिमरी।

दुर्ग ।

मध्यप्रदेशका यह एक जिला है। यहां हिन्दी भाषा बोली जाती है।

बैंक—यहां डिस्ट्रिक्ट को अपरेटिव बैंक है।

वकील—श्रीवासुदेव श्रीधर किरोलकर, श्रीरामदयाल साहु, श्रीरघुवरदयाल बालोद संजारी, श्रीलालइंदरसिंह अम्मागढ़वाले हैं।

दानापुर ।

यह पटना जिलेका एक परगना गंगाके दाहिने किनारेपर है। यहां सरकारी पलटनकी बड़ी छावनी है। यहां हिन्दी भाषा बोली जाती है।

यहां सदर बाजारमें बाबूलाल एण्ड सन्स बड़े महाजन और जेनरल मरचेंट तथा कमीशन एजेण्ट्स हैं। श्रीगदाधरप्रसाद, रामप्रसाद, श्रीजायसवाल एण्ड को०, रायसाहब जनकधारी लाल, एण्ड सन्स, हेमनारायण शाह एण्ड को०, दलदरीवाले विश्वासी महाजन और अन्नादिके व्यौपारी तथा मिल्स मालिक हैं। श्री सरजूप्रसाद ब्रदर्स, श्री एस० बी० कापरी एण्डको, एम० एल० वर्मा एण्ड ब्रदर्स भी नामी व्यौपारी हैं। श्रीलाळधारी सिंह, श्रीमहुकधारीसिंह. श्रीदेवधारीसिंहजी, रायबहादुर चन्द्रधारीसिंह, श्रीउमेश्वरधारीसिंह, श्रीचन्द्रीप्रसादजी जमींदार और रईस हैं।

दिल्ली।

यह ब्रिटिश भारतकी राजधानी और महामान्य गवर्नर जेनरल और वाइसरायका स्थान है। यहां मौलवी स्टाइलकी हिन्दी बोली जाती है।

बैंकर्स—इलाहाबाद बैंक लिमिटेड, इम्पीरियल बैंक आफ इण्डिया, नेशनल बैंक आफ इण्डिया, चेम्बर आफ कामर्स पञ्जाब चारटर्ड बैंक आफ इण्डिया, आस्ट्रेलिया और चाइना। लायसड् बैंक लिमिटेड. मरकेन्टाइल बैंक आफ इण्डिया, पंजाबनेशनल बैंक लिमिटेड।

वाणिज्य व्यापार—काउन एण्ड कम्पनी, अलवान कम्पनी, एहसान एण्ड एहसान कम्पनी, आमराव निगम ट्रेडिङ्ग कम्पनी, श्रीबद्रीदास एण्ड सन्स, बिहारीलाल एण्ड सन्स, भानामल गुलजारीलाल, आर० बी० बूटासिंह एण्ड सन्स, एम० बुलाकीदास एण्ड सन्स, दिल्ली आयरन सिण्डिकेट, इलाही बख्श एण्डको, हरनारायण गोपीनाथ अचारवाले, जंगीपेन कम्पनी आदि बड़े नामी व्यापारी हैं।

देहरादून।

मेरठ कमिश्नरीका यह पहाड़ी जिला है। यहांका हवा पानी स्वास्थ्यकर होनेसे धनी अमीर यहां आकर ठहरते हैं। कोई राजादिसे जब अपने देशसे निकाला जाता है, तब उसको भी यहीं जगह दी जाती है। यहां हिन्दी और पहाड़ी बोली जाती है।

देहरादून—यह स्थान समुद्रसे २३०० फीट ऊंचे पर पहाड़ोंके

बीचमें अत्यन्त रमणीक तथा दर्शनीय है। इसकी आब हवा बहुत अच्छी है। युक्त प्रान्तमें यह अंग्रेजोंकी एक प्रधान बस्ती है। शहरमें स्कूल, गिरजाघर, जेल, पोस्टाफिसके अलावः सरवे डिपार्टमेन्टका प्रधान दफ्तर यहीं है। सरकारी फारेस्ट कालेज भी यहीं है। मुसलमान साम्राट् अकबर शिकार खेलनेके लिये यहां आया करते थे। यहांके जङ्गलमें शेर, हाथी, चीता, भालू, हरिन, बन्दर आदि बहुत मिलते हैं। इस स्थानका वर्णन रामायण महाभारतमें भी पाया जाता है। भगवान् रामचन्द्रने रावणबध करनेके लिये यहींपर तपस्या की थी तथा महाप्रस्थानके समय पञ्चपाण्डव भी इसी रास्तेसे गये थे। यहांके शिवालिक पर्वत, नागसिद्ध पर्वत प्रसिद्ध हैं। देहरादूनका वर्तमान शहर १७ वीं शताब्दीमें सिक्ख गुरु रामरायने स्थापित किया था। होलीके समय यहां पर झंडा मेला होता है, जिसमें हजारों यात्री इकट्ठे होते हैं।

बैंकर्स—इलाहाबाद बैंक लिमि० और इम्पीरियल बैंक आफ इण्डियाके यहां ब्राञ्च हैं।

वाणिज्य व्यवसाय-श्रीगोकुलचन्द आत्माराम, श्रीलक्ष्मीनारायण एण्डको, शिवमल गोकुलचन्द, इत्यादि नामी सौदागर और चाय बेचने वाले हैं।

राजा रईस—नाहनसरमोरके राजा, जुब्बलके राजासाहब, नाभाके महाराजा, श्रीहृदयनारायण मुआफीदार, इत्यादि।

दारजिलिङ्ग।

यह राजशाही कमिश्नरीका एक पहाड़ी जिला है। यहांका हवा पानी बहुत अच्छा और स्वास्थ्यकर है। बङ्गालके गवर्नर साहब गर्मीमें यहां निवास करते हैं। यहां ओड़िया, हिन्दी और पहाड़ी बोली जाती है।

बैंकर्स—इम्पीरियलबैंक आव इण्डिया।

वाणिज्यव्यवसायी—जज बाजारमें श्रीअमीर एण्ड सन्स, कालीन और रेशमी शालके व्यापारी हैं। श्रीजेठमल भोजराजकपड़ेके व्योपारी और महाजन, वलीमहम्मद एण्ड तैयबजी जनरल मरचेंट हैं

धारवाड़।

यह बम्बई हातेका एक जिला है। यहां मरहठी, कनाड़ी और हिन्दी बोली जाती है

वकील—श्रीगंगाधर राव देशपांडे, श्री एम. पी. अभयङ्कर, श्री वी. जी केलकर इत्यादि।

बैंकर्स—इम्पीरियलबैंक आव इण्डिया, धारवाड़बैंक लिमिटेड, धारवाड़ अरबन कोअपरेटिवबैंक लिमिटेड।

नदिया।

यह बङ्गालहातेका एक जिला है। यहांके नैयायिक पण्डितोंकी विद्याचर्चाके लिये यह नगर बड़ा प्रसिद्ध है। यहां बंगला और हिन्दी बोली जाती है।

बैंकर्स—बङ्गाल कमर्शियलबैंक लिमिटेड, सेन्ट्रल कोअपरेटिवबैंक लिमिटेड इत्यादि।

वाणिज्य व्यवसाई—श्रीहृषीकेष और तारापद विश्वास कमीशन एजेण्ट हैं, श्रीआर० मित्र एण्डको कृष्णनगर श्रीन्यूमेडिकल हाल रानाघाट।

नरायनगंज।

यह ढाका जिलेका एक परगना है। यहां बङ्गला और हिन्द बोली जाती है। यहां जूट (पटुआ) का व्यापार बहुत होता है।

बैंकर्स—इम्पीरियलबैंक आव इण्डिया, नरायनगंज चेम्बर आवकामर्स।

वाणिज्यव्यवसाई—रलीब्रदर्सकी एजेंसी, श्री यू. सी. बनर्जी एण्ड सन्स, प्रसिद्ध हैं। श्रीबीरकुमारी ब्रदर्स, श्रीनारायणगंज कम्पनी लिमिटेड, श्रीवाट ब्रदर्स एण्डको, श्रीआर०सिंह एण्डको लि०, जूटके मशहूर व्यापारी हैं।

नागपुर।

यह मध्यप्रदेशका सदर मुकाम और मशहूर जिला है। मरहठी और हिन्दी यहां बोली जाती है।

बैंकर्स—इम्पीरियलबैंक आव इण्डिया, इलाहाबादबैंक लिमिटेड, कोअपरेटिव सेण्ट्रलबैंकर्स लिमिटेड, प्राविंशियल काअपरेटिव बैंक लिमिटेड।

वाणिज्य व्यवसाय—रायबहादुर श्रीबन्शीलाल अबीरचन्द, श्री बरजोरजी बेचनजी, ककरेजा कम्पनी, इत्यादि हैं।

नासिक।

यह बम्बई हातेका एक जिला और इसके पास हिन्दुओंका

गोदावरी तीर्थ होनेसे बहुत प्रसिद्ध है। यहां गुजराती, मरहठी, और हिन्दी बोली जाती है।

बैंकर्स—यहां इम्पीरियल बैंकका एक ब्राञ्च है।

वाणिज्य—डो. कावसजी एण्डको, जमसेठजी एण्ड नवरोजजी, श्री. ए. ई. लाल एण्ड सन्स दवादारू और जेनरल मरचेण्ट्स हैं।

नीलगिरि ।

यह मन्द्राज हातेका एक जिला है। यहां उटकमण्ड पहाड़ की चोटीपर मद्रासके गवर्नर गरमी बिताते हैं। हवा पानी यहांका बहुत अच्छा और स्वास्थ्यसुधारक है।

नैनीताल ।

कमाऊं कमिश्नरीका बड़ा स्वास्थ्यकर जिला है। यहां हिन्दी भाषा बोली जाती है।

बैंकर्स—यहां इम्पीरियल बैंक आफ इण्डिया और इलाहाबाद बैङ्क लिमिटेडकी शाखायें हैं।

वाणिज्य व्यवसाय—श्रीदुर्गाशाह मोहनशाह कमीशन एजेंट्स, श्रीगोविन्द एण्डको दवादारू और जेनरल मरचेंट, श्रीरामधनदास एण्डको यहांके प्रसिद्ध व्योपारी हैं।

वकील—रायबहादुर पं० बद्रीदत्त जोशी, श्रीगोविन्द वल्लभपन्त, श्रीपण्डित नीलाम्बर पन्त।

पचमढ़ी ।

यह मध्यप्रदेशकी सरकारका गरमीमें निवासस्थान है। पिप-रिया स्टेशनसे जाना पड़ता है। यहां दार्जिलिङ्ग और शिमलाकी तरह ठंढ पड़ती है। यहां हिन्दी और गोंडी बोली जाती है। यहांसे पिपरिया तक पचमढ़ी मोटरसरविस कम्पनीकी मोटर चला करती है।

पवना ।

यह राजशाही कमिश्नरीका एक मशहूर जिला है।

बैंकर्स—पवना सेंट्रल को अपरेटिव बैंक, इण्डस्ट्रियल बैंक।

वाणिज्य व्योसाय—स्थलोटर लिमिटेड, सीराजगंज लोन आफिस कम्पनी, लिमिटेड।

पटना ।

यह पटना कमिश्नरीका सदर है। यहां विहार उड़ीसाके वास्ते

हाईकोर्ट है। यह बहुत पुराना शहर एक समय पाटलिपुत्रके नामसे राजधानी था। यहां सिक्खोंके गुरु ग्रन्थसाहबका मान्यस्थान है। यहां हिन्दी बोली जाती है। हिन्दीकी ऊंची शिक्षाके लिये बहुत बड़ा नार्मल स्कूल है। यहां बहुत बड़ा ऊंचा गोलघर है, जिसपरसे कुंअरसिंह बलवेके समय घोड़ेपर सवार हो भागे थे।

बैंकर्स—इलाहाबाद बैंक लि०, बैंक आफ विहार लि०, इम्पीरियल बैंक आफ इण्डिया, गोरखपुर बैंक लि०।

वाणिज्यव्यवसायी—विहार ट्रेडिंग कम्पनी, भानामल गुलजारीमल, विहार नोटिंग कम्पनी, भारत इन्श्यूरेंस कम्पनी लि०, राजा एण्ड कम्पनी, श्री रस्तोगी एण्ड सन्स, श्रीपाल एण्ड सन्स, शेखरहीमबख्श एण्ड ब्रदर्स।

प्रतापगढ़।

यह फैजाबाद कमिश्नरीका एक जिला है। यहां हिन्दी बोली जाती है। यहां युक्तप्रदेशके कृषिविभागके डाइरेक्टरका आफिस है। जहांसे किसानोंको आदर्श बीज दिये जाते हैं। इस जिलेमें कालाकांकर एक राज्य है, जहांसे हिन्दी भाषाका एकलौता दैनिक हिन्दोस्थान निकलता था।

वकील—श्रीगुरुप्रसादसिंह, मुन्शी अवधबिहारीलाल, पं०बद्रीप्रसाद उपाध्याय, शेख वजीरुद्दीन हैदर, श्रीशीतलप्रसाद श्रीवास्तव्य।

पूना।

यह बम्बई हातेका इतिहासप्रसिद्ध जिला है। सरकारी पल्टनकी यहां बहुत बड़ी छावनी है। यहां हिन्दी और मरहठी बोली जाती है। यह भारतके राजनीतिक क्षेत्रोंका प्रधान केन्द्र है।

बैंकर्स—पूना सेंट्रल कोऑपरेटिव बैंक, पूना बैंक लिमिटेड, इम्पीरियल बैंक आफ इण्डिया।

वाणिज्य व्यवसाय—बङ्गाल कोल सप्लाइंग फर्म, श्री. ए. बी. बापुरे एण्ड ब्रदर्स, भारत इन्श्यूरेंस कम्पनी लिमिटेड, चुन्नीलाल मनीलालशाह, श्रीएन्० कूपर एण्डको, श्री जे. एस० शाहबाजखां एण्ड सन्स, श्रीसरस्वतीमण्डल, श्रीसावजी जहांगीरजी एण्ड सन्स, विष्णुसदाशिव एण्डको, हाइट वे लेडला एण्डको।

पेशावर।

यह हिन्दुस्तानकी उत्तर पश्चिम सरहद्का मशहूर जिला है। यहां पश्तो, पञ्जावी, फारसी और हिन्दी बोली जाती है।

बैंकर्स—पञ्जाब नेशनल बैंक लिमि०, इम्पीरियल बैंक आफ इण्डिया।

वाणिज्य व्यवसायी—श्रीबद्रीदास एण्ड सन्स-यहांसे आमदनी, रफ्तनी करने वाले ब्योपारी और जेनरल मरचेंट हैं। श्रीचन्दन सिंह वजीरसिंह—अन्दर शहर वाले यहांके हींग और सूखे मेवाके ब्योपारी हैं। श्रीखालसी ब्रदर्स जेनरल मरचेंट है। श्रीमूलचन्द एण्ड सन्स, श्रीरामदास अग्रवाल एण्ड ब्रदर्स, श्रीमंगलसिंह वाधवा एण्ड सन्स, अन्दर शहर पेशावर कमीशन एजेंसी-सूखा और ताजा मेवा। रामचन्द्र दीनानाथ खन्ना जौहरी इम्पोर्टर्स-श्रीरामकृष्ण सेठी एण्डको होस्टिङ्गस मनूमेण्टके पासवाले।

फरीदपुर।

यह ढाका कमिश्नरीका एक जिला है। यहां बङ्गला और हिन्दी बोली जाती है।

बैंकर्स—फरीदपुर बैंक लिमिटेड, गोआलन्दोको अपरेटिव सेंट्रल बैंक लि०, मदारीपुर राजवारी बैंक लिमिटेड राजवारी।

रईस और जमींदार—हवीगंजके श्रीगुलाम सत्तार और श्री-गुलाम मौला चौधरी, चन्द्रपालीके श्रीरमेशचन्द्र रायचौधरी, कोम-शाके आनरेवुल राय बहादुर उपेन्द्रलाल राय।

फर्रुखाबाद।

यह इलाहाबाद कमिश्नरी युक्तप्रदेशका एक जिला है। यहां ओंटका रोजगार बहुत होता है। जिले भरमें हिन्दी बोली जाती है। इसी जिलेमें सुगन्धि द्रव्यके लिये कन्नौज प्रसिद्ध स्थान है।

बैंकर्स—इम्पीरियल बैंककी यहां एक शाखा है।

वाणिज्य व्यवसाई—श्रीअयोध्याप्रसाद श्रीकृष्णलाल, जगदीश स्वरूप भगवानस्वरूप, वेनीराम मूलचन्द, ओरियेण्टल परफ्यूमर्स एण्डको, श्रीसीताराम अयोध्याप्रसाद कन्नौजवाले इत्र फुलेल आदि सुगन्धि द्रव्यके व्यापारी हैं।

रईस और जमींदार—आनरेरी लेफ्टिनेण्ट श्रीराजा दुर्गानारायणसिंह साहब तिर्वा, शमशाबादकी तकिया सुलतान बेगम, श्री रामचरण दूबे और श्रीरघुबरदयाल हिवरामऊ, पं० प्यारेलाल चतुर्वेदी कायमगंज, बाबू भारतेन्दु और लाला पुरुषोत्तमनारायण फर्रुखाबादवाले।

फतेहपुर।

यह इलाहाबाद कमिश्नरीका मशहूर जिला है। यहां सूती कालीन अच्छा बनता है। जिले भरमें हिन्दी बोली जाती है।

वकील और प्लीडर्स—श्रीशिवअधार, श्रीदुर्गाप्रसादजी, श्रीहृदयरामजी, श्रीसालिगरामजी आदि।

रईस और जमींदार—श्रीहरिहर प्रसादजी, श्रीगणेशचरनजी, श्रीवेनीप्रसादजी, श्रीमोतीराम किशोरीशरन, श्रीअवधविहारीलालजी, श्रीगुलाममुस्तफाखां, राजा शिवरामसिंह, ठाकुर सुभगसिंह साहब अरगलवाले, श्रीहरप्रियासरन आफ शिवराजपुर, आद्याशरण आव कोड़ा।

फिरोजपुर।

यह पञ्जाबकी जालन्धर कमिश्नरीका एक जिला है। यहां पञ्जाबी और हिन्दी बोली जाती है।

बैंकर्स—पञ्जाब नेशनल बैंक लिमिटेड, इम्पीरियल बैंक आव-इण्डिया।

वाणिज्य व्यौपार—रायबहादुर सरदार बूटासिंह एण्ड सन्स, यहांके बड़े ठीकेदार हैं।

श्रीदेवीसहायजैनी तम्बूके सरकारी ठीकेदार हैं। दौलतराम विद्याप्रकाश सब तरहके कपड़ोंके व्यौपारी और कमीशन एजेण्ट हैं। श्रीनन्द एण्डको० रेजिमेंटल बाजारमें एजेण्ट और आमदनी रफतनी करनेवाले हैं।

फैजाबाद।

यह युक्तप्रदेशका बड़ा पुराना प्रसिद्ध जिला है। यहां मुंशी स्टाइलकी हिन्दी बोली जाती है।

बेंकर्स—अवध कमार्शियल बैंक लिमिटेड, इलाहाबाद बैंक लि०, अयोध्या बैंक लिमि०, इम्पीरियल बैंक लि०।

वाणिज्य व्यवसायी—श्रीनिगम एण्ड कम्पनी—दवादारूके व्योपारी हैं, श्रीमूलचन्द एण्ड ब्रदर्स चौकके बड़े बुकसेलर और कागजके व्योपारी हैं। श्रीनवरोजजी मानिकजी एण्ड को० सिविल लाइन्समें दूकानदार हैं।

राजारईस—इसी जिलेमें अयोध्याका इतिहासप्रसिद्ध राज्य है। जहां भगवान रामचन्द्रने अवतार लिया था। श्रीराजा जगदम्बिका प्रतापसिंह, श्रीमहारानी जगदम्बिका देवी अयोध्या, श्रीनरेन्द्र बहादुर सिंह आव चन्दीपुर, श्रीसय्यद मुहम्मदरजा आव टांडा, बाबू मुहम्मदयासीन अलीखां आव देवगांव।

बङ्गलौर।

यह मैसूर रेसिडेन्सीकी एक प्रसिद्ध छावनी है। यहां हिन्दी, कनाड़ी, मरहठी, तामिल और तेलगू बोली जाती है।

यहां इम्पीरियल बैंक आवइण्डियाकी शाखा है। बङ्गलौर बैंक लिमिटेड नामका एक बैंक है। दक्षिणी परेडमें और छावनीमें रमाविलास बैंक लिमिटेड है। एवेन्यूरोडमें बैंक आव मैसूर है।

वाणिज्य व्यवसाय—श्री ए० लवेण्डर एण्ड कं०, नेशनल ट्रेडिंग कम्पनी जेनरल मरचेण्ट हैं।

सेण्ट मार्क्स रोडमें ओरियेंटल गवर्नमेण्ट सेक्यूरिटी लाइफ एश्यूरेंश कम्पनी है।

बम्बई।

भारतमें इससे बढ़कर दूसरी सुन्दर नगर नहीं है। पश्चिमी समुद्र तटपर बसी हुई इस नगरीकी लम्बाई लगभग १२ मैल और चौड़ाई ४ मैल है। बम्बई अहातेकी यह राजधानी है। जी. आई. पी. और बी. बी. सी. आई. रेलवेके नगरीमें २३—२४ स्टेशन हैं। विक्टोरिया टर्मिनस स्टेशन, विक्टोरिया और अलबर्टम्यूजियम, ताजमहाल होटल, राजाबाई टावर, सर्पशाला, चौपाटी, जौहरी बाजार आदि प्रेक्षणीय स्थल हैं। गोवर्धन गोशाला, कालबादेवी, माधवबाग आदि धार्मिक स्थान भी दर्शनीय हैं। कपड़ेकी कितनी ही मिले हैं और मिलवालोंका यह प्रधान अड्डा है। मराठी और गुजराती यहांकी भाषा है और २२ मुरब्बा मीलमें लगभग १२ लाख की आबादी है। देशी प्रेसोंमें निर्णय सागर, ज्ञानसागर, वेंकटेश्वर,

लक्ष्मीआर्ट आदि प्रेस बहुत अच्छा काम करते हैं। यहांकी चित्र-कला प्रसिद्ध है। व्यापारमें यह नगरी सर्वश्रेष्ठ समझी जाती है। कोंकणके रत्नागिरि आदि स्थानोंमें यहींसे जहाजपर सवार होकर जाना पड़ता है। सब बैंकोंकी यहां शाखाएं हैं। और सब चीजोंका कारोबार यहां होता है। बम्बई प्रान्तके गवर्नर कभी यहां, कभी पूना और कभी महाबलेश्वर रहते हैं

बरेली।

यह युक्तप्रदेशका एक प्रसिद्ध जिला है। यहां हिन्दी बोली जाती है।

बैंकर्स—इम्पीरियल बैंक आवइण्डिया, इलाहाबाद बैंक लिमिटेड, डिस्ट्रिक्टको अपरेटिव बैंक लि०।

वाणिज्यव्यवसाय—श्री जे० पी० मेहरा एण्ड को मशहूर जेनरल मरचेण्ट हैं। यहांसे 'भ्रमर' नामका सुप्रसिद्ध मासिकपत्र निकलता है। श्री पं० राधेश्याम इसके सुयोग्य सञ्चालक हैं। श्रीन्यू-साइकल कम्पनी कंटोमेण्टमें मोटर और साइकल के ब्योपारी हैं। मोहम्मद अयूबखां एण्डसन्स सिविललाइन्समें सौदागर हैं।

बहराइच।

यह फैजाबाद कमिश्नरीका एक जिला है। इसकी सरहदसे नैपालकी तराई शुरू होती है। साखू सरईके लिये यह जगह प्रसिद्ध है। यहां हिन्दी बोली जाती है।

वकील बेरिस्टरादि—श्रीनिजामुद्दीन हैदर, श्रीवसन्तराय भण्डारी, श्रीभैरोनाथसिंह, श्रीबद्रीनाथ शुकुल, श्रीरायसाहब ननकुप्रसाद, श्रीगयाप्रसाद पाण्डेय।

रईस और जमींदार—पयागपुरके राजा श्रीवीरेन्द्रविक्रमसिंह, भिनगाकी महारानी साहिबा, गंगवलकी रानी साहिबा श्रीइतराज, रेहनाके राजा श्रीरुद्रप्रतापनारायणसिंह इत्यादि।

बाराबंकी।

यह युक्तप्रदेशका एक जिला है। यहां हिन्दी बोली जाती है।

बेरिस्टर वकील—श्रीसरदारहुसेन साहब, श्रीभगवतीदयाल साहब, श्रीकुञ्जविहारीलाल, श्रीरामेश्वरीप्रसाद, श्रीरघुनाथसिंह' श्रीसूरजबख्शसिंह, श्रीशम्भूनाथ पाण्डेय।

राजा और रईस—रामनगरके राजा उचित नारायणसिंह, हड़हाके राजा रघुराजबहादुरसिंह, राजा भगवानबख्शसिंह आव पोखरा, आनरेबल राय श्रीराजेश्वरबली आव दरयाबाद ।

ब्यावर ।

यह अजमेर मेरवाड़ेका एक कस्बा है। यहां कपड़ा बनानेकी मिलें हैं। यहां हिन्दी बोली जाती है।

बैंकर्स—यहां ब्यावर सेंट्रलबैंक लिमिटेड नामक बैंक है।

वाणिज्य व्यवसाय—यहां कृष्णमिल्स देशी धोतियोंके बनानेका बड़ा पुतली घर है।

गेडाबजारमें बिहारीलाल श्यामसुन्दरलाल बड़े कमीशन एजेंट हैं। जो बड़े एक्सपोर्ट और इम्पोर्ट (आमदनीरफतनी) करनेवाले हैं। श्रीहीरालाल जगन्नाथ, कपड़ोंके सौदागर और कमीशन एजेंट हैं। श्रीजेसाराम ताराप्रसाद ऊनके व्यापारी और कमीशन एजेंटस हैं। सेठ खींवराज ठाकुरदास बड़े महाजन और कमीशन एजेंटस हैं।

भड़ोच ।

यह जिला बम्बई अहातेमें है। इसके उत्तरमें माही नदी, पूर्व और दक्षिण पूर्वमें बड़ोदा और राजपिपला राज्य, दक्षिणमें कीन नदी और पश्चिममें खंबाइतकी खाड़ी है। मुरब्बा १४५३ मील और जनसंख्या ४१३४१ है। गुजराती बोली जाती है। कुल मिलाकर ६ ताल्लुक हैं और यह व्यापारका अच्छा स्थान है। गल्ला, रुई, चांदी और जवाहिरातके व्यापारका यह केन्द्र माना जाता है। इम्पीरियल बैंक, को आपरेटिव बैंककी शाखाएं हैं।

भागलपुर ।

यह गंगातटपर बिहार उड़ीसाका एक जिला है। इसी जिलेमें सुप्रसिद्ध प्रजापालक आनरेबल राजा कीर्त्यानन्दसिंह बहादुरका बनैली राज्य और बाबू लक्ष्मीनारायणप्रसाद सिंहका पचगछिया स्टेट है। जिले भरमें हिन्दी बोली जाती है।

बैंकर्स—बनारसबैंक लिमिटेड, इम्पीरियलबैंक आव इण्डिया, मधेपुरा सेंट्रलको अपरेटिवबैंक लिमिटेड ।

वाणिज्य व्यवसायी—सुजागंजमें श्रीकृष्णदास रघुनाथदास

अग्रवाल रेशमी चीजोंके सौदागर हैं। नया बाजारमें मकसूदन एण्ड ब्रदर्स ट्रङ्कके व्योपारी हैं।

राजा और रईस—कुंवर कृष्णानन्दसिंह, कुंवर रामानन्दसिंह, श्रीदीपनारायणसिंह, श्रीरायबहादुर योगेन्द्रनारायणसिंह, श्रीराजा-कमलानन्दसिंह आदि।

मद्रास।

यह दक्षिण भारतके मद्रास अहातेकी राजधानीका नगर समुद्र तट पर ९ मील लम्बा और ३॥ मैल चौड़ा और मुरब्बा २७ मैलमें बसा हुआ है। यहांकी जन संख्या ५२३६५१ है। इस अहाते के गवर्नर कभी मद्रास और कभी ऊटकमण्ड रहते हैं। युनिवर्सिटी, हाईकोर्ट, कारपोरेशन आदि संस्थाएं हैं। साहित्यिक, वैज्ञानिक, धार्मिक सोसाइटियां तथा अनेक क्लब भी हैं। तैमिल, तेलगू, द्राविड़ी चेंबर आफ कामर्स, सदर्न इण्डिया चेंबर आफ कामर्स, मद्रास आदि भाषाएँ बोली जाती हैं। मद्रास फायर इन्शुरेन्स, मेरिन इन्शु-रेन्स, ट्रेड असोसिएशन आदि व्यापारिक संस्थाएं हैं। सब बैंकों-की यहां शाखाएं हैं और प्रायः सब वस्तुओंका व्यवसाय होता है।

मदुरा।

यह मन्द्राज हातेका एक प्रसिद्ध जिला है। यहां पर श्रीलक्ष्मी देवीका सुविशाल अद्वितीय मन्दिर है। यहां तामिल, तेलगू और हिन्दी बोली जाती है।

बैंक—यहां इम्पीरियल बैंकका ब्रेंच है।

वाणिज्य व्यवसाय—यहां मायर कम्पनीमें सिगारका व्या-पार होता है। मदुरा कम्पनी लिमिटेड सौदागर और एजेंट हैं। श्री एस. मिलर एण्डको दिन्दीगालमें सिगारके कारखाने वाले हैं। श्रीपेरी एण्डको सिगारके कारखानेदार और जनरल मरचेंट हैं। श्री आर० राजालिङ्गम एण्डको० दिन्दीगालमें बड़े भारी कमीशन एजेंट्स, आर्डर सप्लायर्स और जनरल मरचेंट्स हैं। के. आर० रङ्गनाथम एण्ड ब्रदर्स नार्थ न्यू स्ट्रीटमें स्टेशनर्श और रबर-स्टाम्प बनानेवाले हैं।

जमींदार और रईस—आनरेबल दीवान बहादुर वी० रामभद्र नाइडू, आवकोकापानइयाकात्तार, श्रीविश्वनाथ कामराज पंडया

नायककर आवभट्टीपुरम, श्रीमूक्त स्वामी उत्तापानायककर आव अत्तापान्याक कनूर। श्री ए० रङ्ग स्वामी अय्यर आव अक्कारामेसी।

मथुरा।

यह युक्तप्रदेशका एक प्रसिद्ध जिला जमुनाके किनारेपर बसा है। यहां ब्रज भाषा और हिन्दी बोली जाती है।

बैंकर्स—मथुरा डिस्ट्रिक्ट कोआपरेटिवबैंक, इलाहाबादबैंक लि० इम्पीरियलबैंक आवइण्डिया।

वाणिज्यव्यवसायी—यहां सुखसंचारक कम्पनीका छत्ताबाजारमें बहुत बड़ा कारखाना है। फ्रेण्ड एण्ड कम्पनीका चन्दनके चंवरादिका कारखाना, श्री एल. पी. नागरका घीया मंडीमें कारबार है। श्रीभीकाजी एण्ड सन्सका कंटोनमेंटमें शराबका कारबार है। वे लोग जनरल मरचेंट और नीलाम करने वाले भी हैं।

मसूरी।

यह युक्तप्रदेशका एक प्रसिद्ध पहाड़ी मुकाम है। यहांका जलवायु बहुत अच्छा है। यहां गढ़वाली और हिन्दी बोली जाती है।

बैंकर्स-इलाहाबादबैंक लिमिटेड, इम्पीरियलबैंक आवइण्डिया।

वाणिज्यव्यवसाय—श्रीजेम्स एण्डको अङ्गरेजी दवाओंके व्योपारी हैं। श्रीबाबू एण्डको क्यूरियस और रेशमके व्योपारी हैं। श्रीमथुरादास एण्ड सन्स लंधोराबाजार महाजन, कपड़ेके व्योपारी और कमीशन एजेंट हैं, श्रीपरमानन्द लन्दनहौस नीलाम वाले, और फरनीचर वाले, श्रीटहलराम एण्डको सिलाई और सूटके व्योपारी, ह्वाइट वे लेडलाकी भी यहां बड़ी दुकान है। श्रीहिमालयाशीड स्टोर्स, बारलोगंजमें जनरल मरचेंट हैं।

मलाबार।

यह मदरास प्रेसीडेंसीका एक जिला है। यहां मलयालम और हिन्दी बोली जाती है। इसका सदर स्टेशन कलीकट है।

बैंकर्स—इम्पीरियलबैंक आव इण्डिया, तेलीचेरी चेम्बर आव कामर्स, नेदनगुदीबैंक लिमिटेड कलीकट।

वाणिज्यव्यवसायी—श्री सी. आरीन एण्डको, फ्लोरिङ्ग हाइहसके व्योपारी, वेस्टएण्ड कम्पनी पेट्रोलियमके सौदागर, श्री एस

आर. वालकृष्ण, लकड़ीके व्यौपारी और जनरल मरचेंट हैं। श्री कवरजी अरदेशर एण्डको लकड़ीके व्यौपारी, श्रीजोसेफ एण्डको, चमड़े के व्यौपारी हैं। श्रीमलावार टिम्बर एण्ड कम्पनी लकड़ीके सौदागर और जङ्गलके मालिक हैं। श्रीविक्टोरिया वीविंगस्टब्लिश मेंट कानानूर, वढिया देशी कपड़े और तरह तरहके ट्वील और तौलिया तथा टेबुलक्लाथ बनाने वाले हैं।

राजा रईस—श्री राजा उदयशर्मा, आववेलियापट्टन, श्रीसुलतान अली राजा और अहमदअली रजा कनानूर।

मालवा।

सेंट्रल इण्डियामें कई देशी राज्योंको मिलाकर मालवा कहलाता है। इसीमें पिपलोदा राज्य भी है। जिसके अधिकारी महाराज श्रीराय मङ्गलसिंह और युवराज श्रीमहाराज कुमार रतनसिंहजी हैं। यहां रांगड़ी और हिन्दी बोली जाती है।

वाणिज्य व्यवसाय—सेठ नरायनदास किशुनदत्त मन्दसोर, रूई और गल्लेके व्यौपारी तथा कमीशन एजेंट्स हैं।

मिदनापुर।

यह बङ्गालकी वर्दवान कमिश्नरीका एक ज़िला है। यहां बङ्गाली उड़िया, सैंथाली और हिन्दी बोली जाती है।

यहां मिदनापुर सेंट्रलको अपरेटिववैंक लिमिटेड नामका वैंक है।

वाणिज्य व्यवसाय—श्री ड़ी. दास सन एण्डको दवाओंके व्यौपारी और आमदनी रफ्तनी करने वाले महाजन हैं।

राजा रईस—ताड़ाजोलके राजा नरेन्द्रलाल खां, चोवीगंजके भुवनेश्वर मित्र, महिषादलके राजा सतीप्रसाद गुप्त।

मिर्जापुर।

यह युक्तप्रदेशका एक मशहूर जिला है। यहां लाखका बड़ा व्यौपार होता है। जिले भरमें हिन्दी बोली जाती है।

वैंकर्स—मिर्जापुर डिस्ट्रिक्टको अपरेटिव वैंक लि०, इम्पीरियल वैंक आफ इण्डिया।

वाणिज्य व्यवसायी—यहां लाखके बड़े व्यौपारी और महाजन

ये हैं—श्रीमहादेवप्रसाद काशीप्रसाद, श्रीशिवचरण राम सहाईराम, श्रीमहादेवप्रसाद वैद्यनाथप्रसाद, विश्वनाथप्रसाद वैजनाथप्रसाद, इन लोगोंके यहां मिर्जापुरी कालीनका काम भी होता है। माधो प्रसाद कम्पनी तिरमोहानी और मिर्जापुर स्टोन कं० स्टोन और टाइल्सके व्यापारी हैं। श्रीरामलाल रामविलास ऊनी कालीनके व्योपारी और कमीशन एजेंट्स हैं।

मुंगेर ।

यह भागलपुर कमिश्नरीका एक जिला है। यहां हिन्दी भाषा बोली जाती है। इसी जिलेमें गिद्धौरका राज्य है।

वाणिज्य व्यवसायी—पेनिनशुलरटोबाकू कम्पनी लिमि०—प्रसिद्ध तम्बाकू और सिगरेट बनानेवाली कम्पनी है। श्रीमकसूदन ब्रदर्स स्टीलट्रंकके व्योपारी हैं।

K,C.I.E. गिद्धौर, महाराजा सर चन्द्रमौलेश्वरप्रसाद सिंह बहादुर

राजा—रईस श्रीराजा रघुनन्दनप्रसाद सिंह, श्रीराजा देवकीनन्दनप्रसाद सिंह, श्रीउदितनारायण सिंह, खानबहादुर ए, डबल्यू० खां इत्यादि।

मुजफ्फरनगर ।

यह युक्तप्रदेशका एक मशहूर जिला है। यहां कम्बल अच्छे बनते हैं। जिले भरमें हिन्दी बोली जाती है।

वाणिज्य व्यवसाय—खतौलीके श्रीदीपचन्द एण्डको मशहूर कमीशन एजेंट और कंट्राक्टर हैं। श्रीगोकुलचन्द एण्ड बाबूलाल जैनी कमीशन एजेंट्स और जेनरल मरचेंट हैं। यहां हिन्दुस्तान एश्यूरेंस एण्ड म्युच्युयल बेनो फिट सोसाइटी लि० प्रसिद्ध कम्पनी है। शान्ति केमिकल वर्क्स थोक और फुटकर अंग्रेजी दवाके व्योपारी हैं।

मुजफ्फरपुर ।

यह तिरहुत डिवीजनका एक मशहूर जिला है। उत्तम लीची फलके लिये यह बहुत प्रसिद्ध है। यहां हिन्दी बोली जाती है।

बैंकर्स—बनारस बैंक लिमि०, सेंट्रलको आपरेटिव बैंक लि०, इम्पीरियल बैंक आफ इण्डिया।

वाणिज्य व्यवसाय—बङ्गाल प्रीजर्विङ्ग कम्पनी, कलकत्ता

आफिस १० नं० इण्टाली रोड, श्रीबोस एण्ड कम्पनी। 'तिरहुत समाचार' साप्ताहिकपत्र निकलता है। श्रीरामफलसाहु एण्ड सन्स स्टेशनरीके व्यौपारी हैं।

रईस और जमींदार—श्रीबाबू सुरेन्द्रप्रसाद शुक्लजी साहब कन्हौली, बाबू सुरेन्द्रनारायण सिंह अकरौली, बाबू लक्ष्मीश्वरप्रसादजी भूली, रायबहादुर बाबू द्वारकानाथ सुरहा, सिलौत, श्रीरङ्गप्रसाद जी एम. ए. सीतामढ़ी। इत्यादि।

मुरशिदाबाद।

यह कलकत्ता प्रेसीडेंसीका एक इतिहासप्रसिद्ध जिला है। यहां बढ़िया सूतके हिन्दुस्तानी कपड़े, धोती, मलमल और रेशमी कपड़े बनते हैं। यहां बङ्गला और हिन्दी बोली जाती है।

वाणिज्यव्यवसाय—श्री एस. एस. बागची एण्डको खागड़ामें रेशमके प्रसिद्ध व्यौपारी हैं। श्री एस. के. लाहिड़ी रेशमके और श्री डी. एस. भट्ट एण्ड एण्ड के. पी. सिंहा जूट और मुर्शिदाबादी सिल्कके बड़े व्यापारी हैं। श्री एस. सी. चक्रवर्ती जीयागंजवाले कमीशन एजेंट और गल्लेके सौदागर हैं। श्रीमुरशिदाबाद सिल्क-स्टोर जीयागंज और श्रीप्रतापचन्द्र शाहा एण्ड सन्स खागरावाले मुरशिदाबादी रेशमके बनाने और बेचनेके बड़े कारबारी हैं।

मुरादाबाद।

यह रुहेलखण्ड कमिश्नरीका एक मशहूर जिला है। यहांके कलईके बरतन बहुत मशहूर हैं और हिन्दुस्तान भरके लोगोंमें मुरशिदाबादी कलईकी प्रसिद्धि है। यहां मुन्शीस्टाइलकी हिन्दी बोली जाती है।

बैंकर्स—मुरादाबाद डिस्ट्रिक्टको अपरेटिव बैंक लिमि०, इलाहाबाद बैंक लिमि० और इम्पीरियल बैंक आफ इण्डिया।

वाणिज्यव्यवसाय—श्री डी. बी. कपूर स्टेशनरोडपर पीतलके बरतनके सौदागर हैं। किशनलाल रामगोपाल कमीशन एजेंट, श्री रुस्तमजी एण्डको० जेनरल मरचेंट, शेखमोहम्मद मेहर नूरइलाही चौक बाजारमें छुरी कांटा और चमड़ाके व्यौपारी हैं। श्रीजयनारायण एन्स सन्स बरतनके व्यौपारी हैं।

मुल्तान ।

यह पञ्जाबकी मुल्तान कमिश्नरीका सदर मुकाम है। यहां पञ्जाबी और हिन्दी बाली जाती है।

वाणिज्य व्यवसाय—श्रीजहांगीर एण्ड सन्स फरनिचर औरी जेनरल मरचेंट हैं। श्रीमंगतराय चोपरा पीसगुड्स मरचेंट हैं। श्री जे. आर. मल्लिक एण्ड सन्स अंग्रेजी दवाके थोक और फुटकर व्योपारी हैं। श्री एम. मुजफ्फरुद्दीन एण्ड सन्स, लाहोरी गेटवाले चमड़ेके बड़े व्योपारी हैं। श्रीरामसिंह काबुली एण्डको ईटके बड़े व्योपारी हैं। श्रीरामानन्द सिंह एण्ड सन्स चांदीकी कलई चढ़ानेके बड़े व्योपारी हैं। श्रीठाकुरदास मोहनलाल एण्डको चूड़ीसरायवाले इम्पोर्टर्स और एजेंट्स हैं, उनके यहां ए. बी. सी. (पांचवां एडिशन कोड) व्योहार होता है।

मेरठ ।

यह मेरठ कमिश्नरीका सदर मुकाम है। यहां हिन्दी बोली जाती है। सरकारी फौजकी बड़ी छावनी है। यहांकी दरियां मशहूर है।

बैंकर्स—व्योपारसहायक बैंक लि०, इम्पीरियल बैंक आफ इण्डिया, इलाहाबाद बैंक लि०।

वाणिज्य व्यवसाय—श्रीवसूमल एण्ड बसन्तराय गोटे और लकड़ीके व्योपारी हैं। श्री के. बिहारीलाल एण्ड सन्स तस्वीर और फ्रमोंके व्यापारी हैं। श्री विश्वेश्वरदयाल प्यारेलाल हापुड़ गल्लाके प्रसिद्ध व्योपारी हैं। श्रीअली ब्रदर्स सदरबाजारमें फैंसी गुड्सके सौदागर हैं। श्रीदुर्गाप्रसाद रामचन्द्र दिल्ली रोडमें बड़े महाजन और सरकारी कंट्राक्टर हैं। श्रीहजारीलाल एण्ड बालमुकुन्द सदरबाजारमें शराबके थोक और फुटकर व्योपारी हैं। श्री डी. ए. एहूजा एण्डको टेलर्स और कनफेक्शनर्स हैं। श्रीकृष्ण ब्रदर्स इम्पोर्टर्स, एक्सपोर्टर्स और जेनरल आर्डर सप्लायर्स हैं।

मैमनसिंह ।

यह ढाका कमिश्नरीका एक बड़ा जिला है। इस जिलेमें कालीपुर इस्टेट और राजा मैमनसिंहका इलाका है। यहां बङ्ग भाषा और हिन्दी बोली जाती है।

बैंकर्स—यहां सेन्ट्रलको आपरटिव बैंक और इम्पीरियल बैंककी शाखाएं हैं ।

वाणिज्य व्यवसाय—श्रीसुनीतिफारमेसी बड़ा अंग्रेजी दवाईखाना है । श्री. एस. वीर शिकारगंजवाले चश्मा विक्रेता और फोटोका सामान बेचनेवाले सौदागर हैं । श्री एम. एम. दे किशोरगंजवाले बैंकर, बुकसेलर और स्टेशनर हैं ।

रंगून ।

बर्मा प्रान्तका यह राजधानीका नगर है । बर्मी और चीनी भाषा यहां बोली जाती है । समुद्र और स्थलका व्यापार अच्छा है । गवर्नर शासन करते हैं । हाईकोर्ट, कारपोरेशन और युनिवर्सिटी है । अनेक व्यापारिक और साहित्यिक संस्थाएं हैं । बर्मा और बर्माज चेम्बर आफ कामर्स, चाइनीज चैंबर, फायरमेरिन इन्शुरन्स, रंगून इंपोर्ट, राइस ब्रोकर्स और ट्रेड असोसिएशन्स हैं । इलाहाबाद बर्माको अपरेटिव, चार्टर्ड, हांगकांग-शंघाई, इम्प रियल लाइड, मर्कंटाइल, नेशनल आदि बैंक हैं । बेसिन, मन्दालय जैसे कई अच्छे नगर बर्मामें हैं ।

रांची ।

यह छोटा नागपुर कमिश्नरीका एक जिला है । यहां सर्वसाधारणमें अधिकांस हिन्दी बोली जाती है ।

वाणिज्यवसाय—यहां श्री. ए. टी. भट्टाचार्जी एण्डको मिंट रोडमें जेनरल मरचेंट और कमीशन एजेन्ट्स हैं, बिहार आसाम टी लेबर एजेंसीका चायका कारखाना है । श्रीखेमराज पूरनमल मोटरवाले और इञ्जिनियरिङ्ग सामानके व्योपारी हैं । श्री जोखीराम मूलचन्द जेनरल मरचेंट, कंट्राक्टर्स और इमारत बनानेवाले हैं ।

रावलपिण्डी ।

यह पञ्जाबके रावलपिण्डी कमिश्नरीका सदर मुकाम और इतिहास प्रसिद्ध छावनी है । यहां भटरवारी पञ्जाबी और हिन्दी बोली जाती है ।

बैंकर्स—यहां पञ्जाब एण्ड सिन्ध बैंक लिमि०, बैंक आव नार

दरन बैंक इण्डिया लिमि०, इम्पीरियल बैंक आवइण्डिया, लायड बैंक लिमिटेड हैं।

वाणिज्यव्यवसायी—श्रीबख्तावरसिंह दरशनलाल जैनी सदर-बाजारमें कपड़ेके व्योपारी हैं, भारत कमिर्शियल कं० लि० मेसीगेट-में मोटर, मोटरसाइकल और विजलीके पंखे आदिके व्योपारी हैं, श्रीलक्ष्मणदास भोलानाथ आर्याकोल कम्पनी कोल मरचेंट और कंट्राक्टर्स हैं।

रायपुर।

यह छत्तीसगढ़का एक बड़ा जिला है। यहां छत्तीसगढ़ी और हिन्दी बोली जाती है।

वाणिज्यव्यवसायी—श्रीरायबहादुर वंशीलाल अवीरचन्द, श्री-रामरतनदास रायबहादुर, मिलोंके मालिक महाजन और जेनरल कमीशन एजेंट्स हैं।

इस जिलेमें बस्तर, सारंगगढ़, सरगुजा, धमतरी, धरमजयगढ़, सकराई आदि राज्य हैं।

रुड़की।

यह सहारनपुर जिलेकी एक प्रसिद्ध छावनी है। यहां खड़ी हिन्दी बोली जाती है। यहां बड़ा भारी इञ्जिनियरिङ्ग कालेज है।

वाणिज्यव्यवसायी—श्रीगोपाल ब्रदर्स, जेनरल मरचेण्ट और कमीशन एजेण्ट हैं। हाजीगुलामहुसेन इञ्जिनियर और कंट्राक्टर हैं। श्रीओमप्रकाश मुत्सद्दीलाल बैंकर्स, कपड़ेके व्योपारी, चीनी और गल्लेके सौदागर हैं। श्रीएम० अबूखां एण्ड ब्रदर्स जेनरल मरचेंट्स हैं।

लखनऊ।

यह लखनऊ कमिश्नरीका सदर मुकाम और युक्तप्रदेशकी सर-कारका भी सदर मुकाम सा है। यह बहुत पुराना नव्वाबी जमाने-का नाजनखरेवाला शहर गोमतीके किनारे बसा है। यहां मौलवी स्टाइलकी हिन्दी बोली जाती है।

बैंकर्स—अवधकमर्शियल बैंक, इलाहाबाद बैंक लि०, इम्पीरि-यल बैंक आवइण्डिया।

वाणिज्यव्यवसायी—अग्रवाल एण्डको० ह्यूवेट रोडमें इञ्जिनियर और कण्ट्राक्टर हैं। असगरअली, मुहम्मदअली सुगन्धि द्रव्यके व्यापारी, श्रीभोलानाथ एण्डको अमीनाबाद, स्टेशनर्स और जेनरल मरचेण्ट हैं। श्रीगंगापुस्तकमाला अमीनाबाद पार्कमें पुस्तकोंके बड़े व्यौपारी हैं। श्रीछोटेलाल रायबहादुर कण्ट्राक्टर, बैंकर और टिम्बर मरचेण्ट हैं। श्रीव्यूक एण्डको घोड़ा गाड़ी बनानेवाले, श्रीदीनानाथ एण्ड हेमराज गणेश गंजवाले कंट्राक्टर्स और जेनरल मरचेण्ट हैं। श्रीदीवानचन्द एण्ड सन्स गणेशगंज बड़े सौदागर हैं। श्रीगोपालदास वंशीधर अमीनाबाद पार्क कपड़ेके व्यौपारी और बैंकर्स और टेलर्स हैं। यहांका नवलकिशोर प्रेस और कागज-का कारखाना प्रसिद्ध है।

लाहौर।

यह पञ्जाब सरकारका सदर स्थान है। यहां पञ्जाबी और हिन्दी बोली जाती है।

बैंकर्स—पञ्जाबनेशनल बैंक लिमि०, पञ्जाब इण्डस्ट्रियल बैंक लिमि०, नेशनल बैंक आवइण्डिया लि०, इलाहाबाद बैंक लि०, इम्पीरियल आव इण्डिया। फ्रंटियर बैंक लिमिटेड, मुसलिम बैंक आव इण्डिया लिमिटेड।

वाणिज्यव्यवसाय—यहांकी अमृतधारा दवा पं० ठाकुरदत्तकविविनोदकी बड़ी प्रसिद्ध है। श्रीअब्दुलशकूर एण्ड सन्स दिल्ली हौस वाले जेनरल मरचेंट, श्रीआर्य्याब्रदर्स कोल कं०, श्रीआत्माराम एण्ड सन्स अनारकली, बुकसेलर्स, श्री बी० डी० बड़ाल एन्डको, मेकलोगनरोड वाले काश्मीरी चीजोंके व्यौपारी हैं। श्रीबूरामल अमोलकराम अनारकली वाले रंग और वारनीशके व्यौपारी हैं। श्रीरायसाहब एम० गुलाबसिंह अनारकली वाले मशहूर प्रिंटर हैं। अकबरी गेटकी श्रीरायल ट्रेडिङ्ग कम्पनी मशहूर एक्सपोर्टर्स और इम्पोर्टर्स हैं।

लुधियाना।

यह जलन्धर कमिश्नरीका बड़ा जिला है। यहां पञ्जाबी और हिन्दी बोली जाती है।

यहां इम्पीरियल बैंक आव इन्डिया और पंजाब नेशनल बैंक लिमिटेड, दो बैंक हैं।

वाणिज्यव्यवसाई—श्रीआर्य्यन ट्रेडिंग कं० शाल और स्वदेशी कपड़ोंके बड़े व्योपारी हैं। पुराने बाजारमें श्रीऔषध भण्डार दवाओंके व्यौपारी हैं। एस० एम० वंशीलाल एण्डको, जेनरल मरचेंट हैं। श्रीहरगोपाल स्वराज इंडस्ट्रीज हाथसे बुनी हुई चीजोंके बड़े व्यौपारी हैं। श्रीमनसाराम बनारसीदास न्यूइजर्टन उलनमिल्सके एजेन्ट हैं। श्रीसेठ बाबूराम लक्ष्मीचन्द रेशमी चीजोंके व्यौपारी हैं। श्रीतिवारी भवनवाले हिमालया और काबुलके बने तोहफोंके सौदागर हैं। श्रीतुलसीदास मेघराज महाजन और जेनरल मरचेन्ट हैं। श्रीवैश्य ट्रेडिङ्ग कम्पनी स्वदेशी माल और शाल आदिके व्यौपारी हैं।

सहारनपुर।

यह मेरठ कमिश्नरीका एक जिला है। जिले भरमें हिन्दी बोली जाती है।

बैंकर्स—इम्पीरियलबैंक आव इन्डिया।

वाणिज्यव्यवसाय—श्रीभगवानदास एन्डकम्पनी प्रसिद्ध महाजन हैं। देवबन्दके श्रीधर्मदास कुलवन्तराय जेनरल मरचेन्ट और कमीशन एजेन्ट हैं। श्री बी० वी० जोशी एन्ड ब्रदर्स अंगूठेके निशानके एक्सपर्ट हैं। दि जेनरल स्टोर्स यहांके सिगरेट, साइकल और पेट्रोलके व्यौपारी हैं। इन्डोफारेन कमर्शियल कम्पनी प्रसिद्ध कमीशन एजेन्ट्स हैं।

सागर।

यह मध्यप्रदेशका एक जिला और मशहूर छावनी है। यहां हिन्दी भाषा बोली जाती है।

बैंकर्स—सागरको अपरेटिव सेन्ट्रल बैंक लि०। सागर सेन्ट्रल बैंक लिमिटेड।

वाणिज्यव्यवसाय—श्रीभवानीप्रसाद लक्ष्मीप्रसाद पुरोहित कमीशन एजेन्ट और सागर को अपरेटिव स्टोर लि० जेनरल मरचेन्ट हैं। श्रीफीनिक्स इन्डस्ट्रियल कं० हार्डवेयर, जिन, मिल्स और इञ्जिनपार्ट्स स्टोर्स हैं।

रईस और जमींदार—श्रीनारायणराव दीवान, श्रीमाधवराव

पिठोरिया, श्रीगोपालराव रेहली, श्रीलक्ष्मणराव देवरी, श्रीठाकुर रामनाथ पिंडेरवा, श्रीराजा अमानसिंह विलथरा और खुरईके सेठजी तथा गढ़ाकोटाकी मालकिन।

शाहाबाद (आरा)

यह पटना कमिश्नरीका एक जिला है। यहां सर्वथा हिन्दी बोली जाती है। इसी जिलेमें बक्सर विश्वामित्र मुनिकी यज्ञभूमि है, जिसका पूरा बयान तीर्थस्थानोंमें दिया गया है।

वाणिज्यव्यवसायी—नेशनल बूट हौस चौकपर जूतेके व्योपारी हैं, श्रीएस० एम० इब्राहिम एन्डको० जेनरल मर्चेन्ट हैं, श्रीजैसुखराय काशीप्रसाद बक्सरमें चीनी गल्लेके बड़े व्योपारी और कमीशन एजेन्ट हैं।

राजारईस—श्रीमहाराजाधिराज केशवप्रसादसिंह साहब, चीफ आव डुमराँव। कुँवर राधिकारमण प्रसादसिंह सूरजपुरा, कुँवर चन्द्रसेन शरणसिंह भगवानपुर।

शाहजहांपुर।

यह युक्तप्रदेशका एक मशहूर जिला है। यहां हिन्दी बोली जाती है।

वाणिज्यव्यवसाय—यहां चीनी और शाहजहांपुरी रम शराबका बहुत बड़ा कारखाना है। श्रीओन्टा ब्रदर्स बहादुरगंजवाले बुकसेलर और लिखने पढ़नेकी चीजोंके व्योपारी हैं। श्रीकेरू एन्डको लि० रोजा शुगर बनानेवाले सौदागर हैं। कमिर्शियल पब्लिशिङ्ग हाऊस पुस्तक प्रकाशक हैं। श्रीआर० एल सेठ एन्डब्रदर्स गल्लेके बड़े व्योपारी हैं। श्रीतिजारत इनवेलप कम्पनी कार्डबोर्डके बक्स बनानेवाली कम्पनी है।

शिकारपुर (सिंध)

यह सिन्धका बड़ा कस्बा है। सूखा मेवा हरी तरकारियोंकी यह बड़ी मन्डी है। यहां सिन्धी और हिन्दी बोली जाती है।

वाणिज्यव्यवसायी—श्रीदूलहामल रीझामल कमीशन एजेण्ट और जेनरल मरचेन्ट हैं, श्रीदयाराम मेघराज, श्रीहीरानन्द रचल-दास, श्रीहिकमतराम धन राजमल, श्रीगोकुलदास बीरोमल जेनरल मरचेन्ट और कमीशन एजेण्ट हैं।

शिमला।

यह पञ्जाबका एक पहाड़ी और स्वास्थ्यकर स्थान है। भारतवर्षके अधिकारी गर्मीकी तपनमें यहीं शैलनिवास करते हैं। यहां पहाड़ी और हिन्दी बोली जाती है। कुछ पर्वतनिवासी तिब्बतकी बोली भी बोलते हैं।

बैंकर्स--लायड्स बैंक, इम्पीरियल बैंक आव इन्डिया, सेन्ट्रल मर्चेंट अदर हुड अरबन बैंक आव इण्डिया सिलोन लिमि०, मरकेंटाइल बैंक आव इण्डिया लिमिटेड।

वाणिज्य व्यवसाय--लोवर बाजारके छाजूराम एण्ड सन्स अंगरेजी दवा, फोटोग्राफीका सामान बेचनेवाले व्योपारी हैं। श्रीपसन्तराम एण्ड को कंट्राक्टर और हाउस एजेंट हैं। लोवर बाजारके श्रीअयोध्यादास परमानन्द सिगरेट, दियासलाईके सौदागर और जेनरल मरचेंट हैं। गिरधरदास. हरीदास, रघुनाथ दास बनारसी माल और रेशमके व्योपारी हैं। श्रीरैकेनएन्डको सिविल टेलर्स, श्रीथैकर स्प्रिङ्क एण्डको, भारतप्रसिद्ध स्टेशनर्स, श्रीरेमिङ्गटन टाइपराइटर कं०, वाटस एण्डको, अवरोई लिमिटेड, श्रीलारेंस मेयो लिमि०, श्रीहाइट्वेलेडला एन्डको लि०, श्री दी डायर एन्ड को० लि० सोलन, श्रीडेविडको० ब्रदर्स प्रसिद्ध कम्पनियां हैं।

सीतापुर।

यह लखनऊकी कमिश्नरीका एक ज़िला है। यहां हिन्दीभाषा बोली जाती है।

यहां इलाहाबाद बैंककी एक शाखा है।

वाणिज्य व्यवसाय—श्रीजयनारायण अभयानन्द गल्लाके बड़े सौदागर और बैंकर हैं। डाक्टर मुहम्मद हुसैन अली एन्डसन्स अङ्गरेजी दवाओंके व्योपारी और जेनरल मरचेन्ट हैं।

रईस और जमींदार—श्रीमथुराप्रसाद बिसैंडी, श्रीठाकुर सूरजबख्शसिंह, श्रीठाकुर शिवपालसिंह रामपुर, श्रीलब्बर आजमशाह कुतानगर। श्रीगङ्गाबख्शसिंह, श्रीविश्वम्भरनाथसिंह, श्रीशङ्करबख्श आव रामपुर, श्रीबलदेवसिंहजी श्रीलालजीसिंह रामकोट।

शिलाङ्ग।

यह आसामका एक जिला है। यहां खसियाकी जबान और हिन्दी बोली जाती है।

वाणिज्यव्यवसाय—श्रीरामचन्द्र शीतमल पुलिस बाजारमें चावल, कपास और ऊनके व्योपारी हैं। श्रीकरीमबख्श एन्डको० जेनरल मरचेंट हैं। श्रीसागरमलमोहनलाल, श्रीरामयशराय विहारीलाल, श्रीरामधारीगनपतराय पुलिसबाजारके प्रसिद्ध व्योपारी हैं। श्रीज़ुम्मतुल्लाह एन्डसन्स, श्रीकमला एजेंसी, श्री बी. व. एन, दे एन्ड को. ये लोग जेनरल मरचेंट हैं।

सूरत।

यह बम्बई हातेका इतिहासप्रसिद्ध जिला है। यहां गुजराती और हिन्दी बोली जाती है।

बैंकर्स—बैंक आफ बड़ोदा लि०, सूरतडिस्ट्रिक्ट को आपरेटिव यूनियन लि०, सूरतपीपुल्स कोअपरेटिव बैंक लि०, इम्पीरियल बैंक आव इण्डिया।

वाणिज्यव्यवसायी—श्री आर. एच. वाना एन्डको साबुनके व्योपारी, डिनशा एन्डको शरावके व्योपारी और जेनरल मरचेंट हैं। श्रीकिनखापवाली ब्रदर्स कांपिथ बजारमें मोती मुंगा और जवाहराती पत्थरके व्योपारी हैं, श्रीअमीचन्द एन्ड सन्स जौहरी हैं।

स्यालकोट।

यह लाहौरकी कमिश्नरीका एक जिला है। यहां पञ्जाबी और हिन्दी बोली जाती है।

बैंकर्स—इम्पीरियल बैंक आफ इण्डिया, पसरूर सेन्ट्रलको अपरेटिव बैंक लि०।

वाणिज्यव्यवसायी—श्रीत्रेलीराम एन्डको क्रीकेट, हाकी और खेल कूदका सामान बेचनेवाले बड़े सौदागर, श्रीअनवर एण्डको, बंङ्गाल स्पोर्ट मेनुफेक्चरिङ्ग कम्पनी, श्री बी. बलदेवसिंह एण्ड ब्रदर्स, श्रीफतेमोहम्मद डेवरा एन्डको, शिकारी सामानके व्योपारी हैं। पञ्जाब चेम्बर आवस्पोर्टस जेनरल मरचेन्ट, श्रीराम दित्तामल

रोड़ामल श्रीनाहरएन्डको, श्रीयशवन्तसिंह एन्डको० प्रसिद्ध व्योपारी हैं।

हजारीबाग।

यह बिहारका एक पहाड़ी जिला है। यहां सर्वत्र हिन्दी बोली जाती है। इस जिलेमें अबरककी खाने बहुत हैं।

बैंकर्स—यहां हजारीबाग बैंक लिमिटेड और छोटानागपुर एसोसियेशन लिमिटेड हैं।

वाणिज्यव्यवसाय—श्री. जे. एस. एन्डको अबरक और कोयलेके व्योपारी हैं, श्रीपरेशनाथ एन्ड सन्स गिरीडीहमें कोयलेके व्योपारी हैं। श्रीकोलट्रैडिङ्गको. गिरडीहवाले कोयला और अबरकके व्योपारी हैं।

रईस और जमींदार—पदमाके कुंवरसाहब श्रीरामेश्वरनारायण सिंह, कुंडाके श्रीरामेश्वरनाथसिंह, दुरण्डाके श्रीवीरेश्वरनारायण सिंह, चन्द्रमाभाके श्रीतुलसीनारायणसिंह।

हबड़ा।

यह बङ्गालका एक मशहूर ज़िला है यहां बंगला और हिन्दी बोली जाती है।

बैंकर्स—पानपुर कोअपरेटिव बैंक, मरकैंटाइल बैंक आफ इण्डिया लिमिटेड।

वाणिज्यव्यवसाय—श्रीरामप्राणशर्मा कोढ़का इलाज करनेवाले, ईस्टर्न मिल्स स्टोर्स शिवपुर, श्रीफिलिप्स एन्डको लोहेके सामानके बहुत बड़े व्योपारी, श्रीपाल दे एन्डको प्रसिद्ध कमीशन एजेन्ट्स हैं। श्रीपीकिम एन्डको कुसुंडिया रोडवाले जेनरल आर्डर सप्लायर्स हैं। हबड़ा प्लेट एन्ड सीड् स्टोर खुरट रोड, श्रीएच० सी० विश्वास एन्डब्रदर्स पानपुर, पञ्जाब लाइम कोल कम्पनी जेनरल कमीशन एजेन्ट हैं।

हाथरस।

यह अलीगढ़ जिलेमें व्यापारकी बड़ी मन्डी है। यहां हिन्दी बोली जाती है। यहांके देशी चाकू सरौते बहुत प्रसिद्ध हैं।

यहां इम्पीरियल बैंककी एक शाखा है।

वाणिज्य व्यवसाय—स्वदेशी वस्तु प्रचारक कं० चाकू सरौते

और तालेके प्रसिद्ध व्योपारी हैं। श्री आर० सी० शर्मा एन्डको जेनरल मरचेन्ट छुरी तालेके व्योपारी हैं। श्रीआसाराम एण्डको छुरी ताले आदिके सुयशवान व्योपारी हैं। श्रीभगवानजी माखनजी बाजारवाले एजेण्ट और कारमरचेंट हैं। श्रीदेवीदास कुन्दनलाल एसरहट्टा बाजारवाले कागजके सौदागर हैं।

हुन्डीवाले श्रीमोहनलाल बद्रीदास, श्रीनाथराम रामदयाल, श्रीमटरूमल सामुखराव, श्रीफूलचन्द रोशनलाल इत्यादि।

हैदराबाद सिंध।

यह सिन्धका एक जिला है। यहां हिन्दी और कहीं कहीं मारवाड़ी बोली जाती है।

बैंकर्स—इम्पीरियलबैंक आव इन्डिया।

वाणिज्यव्यवसाय—श्रीपाहूमल ब्रदर्स शाही बाजारवाले बैंकर एन्ड जेनरल मरचेन्ट हैं। यहांसे गुज्ञये "उम्मीद" नामका एक मासिक रिसाला जारी होता है।

रईस और जमींदार—श्रीएच० एच० हाजी मीर नूरमुहम्मदखां और इहानमल मेघराज।

होशङ्गाबाद।

यह मध्यप्रदेशका एक जिला है। यहां हिन्दी बोली जाती है।

वकील—श्रीचन्द्रगोपालमिश्र बी० ए०एल० एल० बी, श्रीगुलजारीमल चौबे एम० ए० एल० एल० बी० श्रीएस० पी० गोखले एल० एल० बी०, श्री बी० एल० तिवारी, एल० एल० बी०।

जमींदार और रईस—श्रीसेठ फतहचन्द श्रीसेठ नन्हेलाल बासीराम, श्रीराय साहब दीवान आलमचन्द।

पं० गोविन्दराव हर्दा, सेठ गङ्गाविशुन हर्दा, सेठ डोंगरसिंह भंडिया। श्रीराजा प्रह्लादसिंह टेकराईपुरा, श्रीराजा लालकमलसिंह नन्दीपुरा।

होशियारपुर।

यह जालन्धर कमिश्नरीका एक जिला है। यहां पञ्जाबी और हिन्दी बोली जाती है।

वाणिज्यव्यवसायी—श्रीसोमनाथ खत्री एण्ड सन्स मोटर, मोटरसाइकल, साइकल और पेट्रोल आदिके सुप्रसिद्ध व्योपारी हैं। श्री

एम० एल० जैनी एन्ड सन्स सुवर्ण मन्दिर वाले फोटोग्राफी सामानके व्यौपारी हैं। श्रीत्रिभुवनदास ओहरी एन्ड सन्स एक्सपोर्ट और इम्पोर्टर्स हैं। श्रीजैरामदास नाथूराम जोहरी पीतल और लकड़ीके शिल्पकार हैं।

रईस और जमींदार—श्रीराजा रघुनन्दनसिंह जसवानके और श्रीराना उपेन्द्रचन्द्र मनासवालेके।

राजखण्ड।

[संपादक—श्रीमान् पं० गोपालचन्द्रचक्रवर्ती वेदान्तशास्त्री, काशी]

राजपरिवार।

वर्तमान सम्राट्।

श्रीमान् महामाननीय पञ्चमजार्ज महोदय ब्रिटेन, आयरलेण्ड तथा भारतके सम्राट् हैं।

आपका जन्मः—३ जून सन् १८६५, सिंहासनारोहणः—६ मई १९१० और विवाहः—६ जुलाई १८९२ को हुआ। हिजरायलहाइनेस श्रीमती प्रिंसेस विक्टोरिया मेरी महोदया सम्राज्ञी हैं, जिनसे छः बच्चे हुए।

(१) हिज़रायल हाइनेस श्रीमान् कुमार एडवर्ड एलबर्ट (प्रिंस आफवेल्स) महोदय-जन्म २३ जून १८९४।

(२) हिजरायल हाइनेस श्रीमान् कुमार एलबर्ट फ्रेडेरिक (ड्यूक आफयार्क) जन्म १४ दिसम्बर १८९५

(३) हिजरायल हाइनेस श्रीमती प्रिंसेस विक्टोरिया अलेकजेण्ड्रा (प्रिंसेजमेरी) जन्म २५ अप्रैल १८९७, व्याहकाल २८ फरवरी १९२२ (इनके दो बच्चे हैं)।

(४) हिजरायल हाइनेस प्रिंस हेनरी विलियम जन्म ३१ मार्च १९००

(५) हिजरायल हाइनेस प्रिन्स जार्ज एडवर्ड जन्म २० दिसम्बर १९०२

(६) हिजरायल हाइनेस प्रिन्स ज्वान्हचार्ल्स जन्म १२ जुलाई १९०५

बृटिश भारतकी शासन प्रणाली।

बृटिश भारतका विलायती दफ्तर कचार्ल्स ष्ट्रीट व्हाइटहाल, एस, डब्ल्यू, लन्दनमें है। यहांके सर्वप्रधान आफिसरका पद "सेक्रेटरी आफ स्टेट फार इण्डिया" कहलाता है।

वर्तमान समयमें श्रीमान् दी राइट आनरेवल वेजवुडवेन महोदय इस पदको सुशोभित कर रहे हैं।

आपके काउन्सिलमें कई एक विभाग हैं। जैसे (१) एडमिनिसट्रेटिव डिवीजन (२) इकजिक्यूटिव डिवीजन (३) मिलिटरी डिपार्टमेण्ट (४) मिसलेनियस विभाग (५) इण्डिया आडिट विभाग (६) इण्डिया स्टोर डिपार्टमेण्ट (७) हाई कमिश्नर डिपार्टमेण्ट इत्यादि।

भारत गवर्नमेण्ट।

राजधानी दिल्ली और शिमला। भारतवर्षके वाइसराय (राजप्रतिनिधि) तथा गवर्नर जनरल महामाननीय श्रीमान् हिजएक्सेलेन्सी दि राइट आनरेबल एडवर्ड फ्रेड्रिक लिंडले उड पी. सी. बारोन इरविन आव किरबी अण्डरडेल इनदिकंट्री आव यार्क।

भारतीय कमाण्डर इन चीफ (जंगी लाट) माननीय श्रीमान् हिज एक्सेलेन्सी फील्डमार्शल सर विलियम आर वर्डउड वार्ट G.C.B.G.C.M.G.K.C.S.I.C.I.E.D.S.O.।

बङ्गाल, बम्बई, बर्मा, मद्रास, युक्तप्रान्त, पंजाब, विहार, ओड़ीसा आसाम, सेण्ट्रलप्राविन्स (मध्यप्रदेश)। इन नव प्रदेशोंमें १-१ गवर्नर शासन करते हैं।

राजधानियाँ—बंगाल—कलकत्ता, बम्बई—बम्बई, बर्मा—रंगून, मद्रास—मद्रास, युक्तप्रान्त—इलाहाबाद, पंजाब—लाहोर, बिहार-ओड़ीसा—पटना, आसाम—शिलांग, सेन्ट्रल प्राविन्स—नागपूर।

भारतीय स्वाधीन नरपतियोंकी तोपोंकी सलामी।

२१ तोपोंकी सलामी।

महाराजा बड़ोदा (गायकवाड़)
महाराजा ग्वालियर (सिन्धिया)
निजाम हैदराबाद
महाराजा जम्बू तथा काश्मीर
महाराजा मैसूर

१६ तोपोंकी सलामी।

भूपालकी बेगम
महाराजा इन्दौर (होलकर)
खां साहब किलात
महाराजा कोल्हापुर
महाराजा ट्रावनकोर
महाराणा उदयपुर (मेवाड़)

१७ तोपोंकी सलामी।

नवाब बहावलपुर
महाराजा भरतपुर
महाराजा बीकानेर
महारावराजा बून्दी
महाराजा कोचीन
महाराजा कच्छ
महाराजा जैपुर
महाराजा जोधपुर
महाराजा करौली
महाराव कोटा
महाराज पटियाला
महाराज रीवां
नबाब साहब टोंक

१५ तोपोंकी सलामी।

महाराजा अलवर
महारावल बैसवारा
महाराजा भूटान
महाराजा दतिया
महाराजा देवास (बड़ा)
महाराजा देवास (छोटा)
महाराजा धार
महाराजा राणा धौलपुर
महारावल डूंगरपुर
महाराजा ईदर
महारावल जैसलमेर
महाराजा किशनगढ़
महाराजा ओरछा
महारावत प्रतापगढ़
नवाब रामपुर
महाराज सिकिम
महाराव सिरोही

१३ तोपोंकी सलामी।

महाराजा बनारस
महाराजा भावनगर
महाराजा कूच विहार
महाराजा धरंगधारा
नवाब जावरा
महाराजा राणा झालावार
महाराजा झींद
नवाब जूनागढ़
महाराजा कपूरथला
महाराजा नाभा
महाराजा नवानगर
नवाब पालनपुर
महाराजा पोरबन्दर
महाराजा रायपिपला

महाराजा रतलाम
महाराजा त्रिपुरा

११ तोपोंकी सलामी ।

महाराजा अजयगढ़
राजासाहब अलिराजपुर
नबाव बाओनी
राना बरवानी
महाराजा बिजावर
राजा बिलासपुर
नवाव केम्बे
राजा चम्बा
महाराजा चरखारी
महाराजा छतरपुर
राजा फरीदकोट
ठाकुर साहब गोन्डल
नवाव जनजीरा
राजा झाबुआ
नवाब मलेर कोटला
राजा मंडी
महाराज मनीपुर
ठाकुर साहब मोरवी
राजा नरसिंहगढ़
महाराज पन्ना
राजा पदुकोटा
नवाब रामपुर
राजा राजगढ़
राजा सैलाना
राजा सम्थर
महाराजा सिरमौर
राजा सीतामऊ
राजा सुकेत
राजा टेहरी गढ़वाल

९ तोपोंकी सलामी ।

नवाव बालासिनोर
नवाव बङ्गनापल्ली
राजा बांसदा
राजा बरौंधा
राजा बरिया
राजा छोटा उदयपुर
महाराना दन्ता
राजा धरमपुर
ठाकुर साहिब ध्राल
सुलतान फदथली (शुका)
सवबवा हसोपाव
राजा कालाहांडी
सावबवा केंगटंग
रावबहादुर चिखलीपुर
सुलतान किशन और सकोत्रा
सुलतान लहेज या अलकन्ता
ठाकुर साहब लिमडी
नवाव लोहारू
राजा लुनावदा
राजा मैहर
महाराजा मयूरभंज
साव बवा मोंगानई
सरदार मुधोल
राजा नागोद
ठाकुर साहब पलिताना
महाराजा पटना
ठाकुर साहब राजकोट
नवाब सेचीन

सरदार सांगली	राजा सन्थ
सर देशाई सावन्तवाड़ी	ठाकुर साहब बाधवान
सुलतान शेहर और मोकल्ला	राजा साहब वांकानेर
महाराजा सोनपुर	सार बा० याङ्कवे

उक्त राज्योंके साथ ब्रिटिश सरकारको विशिष्ट नियमोंके अनुसार सन्धि हुई है। इस कारण वे आन्तरिक शासनके सम्बन्धमें स्वाधीन हैं। इनकी निगरानीके लिये गवर्नर जनरलकी ओरसे एक एजेंट नियुक्त रहता है। वही इनके हिताहितको देखता है।

तोपोंकी व्यक्तिगत सलामी।

२१ तोपें—उदयपुर (मेवाड़)—हिज़हाईनेस महाराजाधिराज हिन्दुसूर्य महाराणा सर फतेहसिंह बहादुर जी. सी. एस. आई, जी. सी. आई. ई., जी. सी. वी. ओ.।

१९ तोपें—बीकानेर—मेजर जनरल हिजहाइनेस महाराजा सर गंगासिंह बहादुर जी. सी. एस. आई. जी. सी. आई ई. जी. सी. वी.ओ. जी.बी. ई. के. सी. बी. ए. डी. सी. एल. एल. डी.।

कोटा—आनरेरी लेफ्टेनेण्ट कर्नल हिजहाइनेस महाराजाधिराज सर उमेदसिंह बहादुर जी. सी. एस. आई. जी. सी. आई. ई. जी. बी. ई.।

पटियाला—आनरेरी मेजर जनरल हिजहाइनेस महाराजाधिराज सर भूपेन्द्रसिंह महेन्द्र बहादुर जी. सी. एस. आई. जी. सी. आई. ई. जी. बी. ई.।

१७ तोपें—अलवरः—आनरेरी कर्नल हिजहाइनेस सवाई महाराजा सर जयसिंह बहादुर जी. सी. आई. ई., के. सी. एस. आई.

धौलपुर—आनरेरी मेजर हिजहाइनेस रायसुद्दौला सिपाहदार उलमुल्क महाराजाधिराज श्रीसवाई महाराजा राणा सर उदयभानसिंह लोकेन्द्र बहादुर दिलेरजंग जयदेव, के. सी. एस. आई. के. सी. वी. ओ.।

१५ तोपें—बनारसः—आनरेरी लेफ्टेनेण्ट कर्नल हिजहाइनेस

महाराजा सर प्रभुनारायणसिंह बहादुर जी० सी० एस० आई०, जी० सी० आई० ई०।

झींदः—आनरेरी लेफटनेण्ट कर्नल हिजहाइनेस महाराजा सर रणवीरसिंह बहादुर जी० सी आई० ई० के० सी० आई० ई०।

कपूरथलाः—आनरेरी लेफटेनेण्ट कर्नल हिजहाइनेस महाराजा सर जगतजीतसिंह बहादुर जी० सी० एस० आई० जी० सी० आई० ई०।

नवानगरः—आनरेरी लेफटेनेण्ट कार्नल हिजहाइनेस महाराजा सर रणजीतसिंहजी जी० बी० बी० ई०, के० सी० एस० आई०।

११ तोपें—बरियाः—आनरेरी केप्टेन हिजहाइनेस महारावल राजा श्रीरणजीतसिंहजी जी० बी० ई०, के० सी० एस० आई०।

भोरः—हिजहानेस शंकरराव चिमनाजी पन्त सचिव।

धरमपुरः—हिजहाइनेस महाराणा श्रीराजा मोहनदेवजी नरेन्द्रदेवजी।

लुनावदाः—हिजहाइनेस महाराणा श्री सर राजा वखतसिंहजी दलेलसिंहजी के० सी० आई० ई।

वांकानेरः—आनरेरी केप्टेन हिजहाइनेस महाराणा श्रीसर राजा अमरसिंह बेनीसिंहजी के० सी० आई० ई०।

९ तोपें—राजा पद्मसिंहजी बुशहर।

कांकेरः—महाराजाधिराज कमलदेवजी।

सनातनधर्ममें आस्था रखनेवाले देशी राज्य।

(१) अजयगढ़।

यह बुन्देलखण्डकी एक सनद्दार रियासत है। यहां हिन्दी बोली जाती है। यहांके नरपति बुन्देले क्षत्रिय हैं। टेहरी आदि राज्योंसे इनका बिरादरी सम्बन्ध विद्यमान है। वर्तमान नरपति धर्मबुद्धिसम्पन्न हैं और धर्म तथा विद्योन्नतिके कार्यमें भाग लेते हैं।

(२) अलवर।

यह राजपूतानेका प्रभावशाली राज है। कोई तीन हजार पचीस वर्गमीलमें इसका विस्तार है। यहांभी राजभाषा हिन्दी

है। यहांके वर्तमान नरपति हिज़हाईनेस महाराजाधिराज श्रीमान् जयसिंह अलवरेन्द्र महोदय एक अति विद्वान्, बहुदर्शी, सुवक्ता और प्रभावशाली नरपति हैं। श्रीमान् सार्वजनिक धर्मकार्य और नरेन्द्रमण्डल आदिके कार्यमें विशेष भाग लेते हैं। श्रीमान्के विशेष उद्योगसे इस राज्यमें हिन्दीका आदर बढ़ा हुआ है।

(३) आवागढ़ ।

युक्त प्रान्तके ज़िला एटामें यह राज्य है। यहांके स्वर्गीय नरपतिने क्षत्रिय महासभाके स्थापन करनेमें और क्षत्रिय जातिको विद्यादान करनेमें विशेष भाग लिया था। उनके सुयोग्य पुत्र वर्त्तमान नरपति श्रीमान् राजा सूर्यपालसिंह स्वधर्मरक्षा और विद्यादानमें मुक्तहस्त और स्वदेशभक्त माने जाते हैं।

(४) उदयपुर ।

यह राजपूतानेका बहुत पुरातन राज्य है। यहांके हिन्दुसूर्य महाराणा प्रतापसिंहको हिन्दू राजत्वका शिरोमणि कहा जाता है। इस कारण इस राजवंशके राजा हिन्दू सूर्य्य कहलाते हैं। यहां मारवाड़ी और हिन्दी बोली जाती है। शहरके चारों ओर शहरपनाहकी चहारदीवारी है। यहांके प्रवीण नरपति हिज हाईनेस महाराजाधिराज आर्यकुलकमलदिवाकर हिन्दुसूर्य महाराणा श्रीमान् फतेहसिंह राजेन्द्रने, जो बड़े धर्मात्मा और तपस्वी हैं, राजकार्यकी शिक्षाके लिये अपने श्रीमहाराज कुमारको राज्यशासनका बहुत सा भार सौंप दिया है। श्रीमान् महाराजकुमार साहब भी इसी आज्ञाके अधीन होकर अच्छा कार्य्य कर रहे हैं। उदयपुरके समान सुन्दर राजधानी भूतलमें नहीं है। इस राज्यमें ऐसे सुविशाल जलाशय हैं, जैसे पृथ्वीभरमें नहीं हैं। पैदावार रुई, ज्वार, बाजरा, गेहूँ, तेलहन, ऊख और तम्बाकू है। यहां पहाड़की एक घाटीमें श्रीएकलिंगजी महादेवका प्रधान मन्दिर है, जो राजपूतानेमें प्रसिद्ध है। उदयपुरका प्राकृतिक दृश्य जगत्में अतुलनीय है। इसी प्रकार उदयपुरके वर्तमान नरपति वर्तमान राजन्य वर्गोंमें आदर्शचरित्र और आदर्श क्षत्रिय नरपति हैं। उदयपुरके उमराओंकी अतुलनीय व्यवस्था इस राज्यका प्रधान गौरव है। इसी राज्यमें श्रीनाथद्वारेका शुद्धाद्वैत वैष्णवपीठ विराजमान है।

जहांके वैष्णव कुलशेखर श्रीगोस्वामीजी महाराज अतिप्रशंसनीय हैं। नाथ द्वारा संस्थान भी एक छोटा सा राज्य है। उदयपुर राजधानीमें श्रीजगदीशजीका मन्दिर भारतवर्ष भरमें एक दर्शनीय मन्दिर है। उदयपुर राज्यमें सब श्रेणीके ब्राह्मणों और सब श्रेणीके क्षत्रियोंका निवास है। चौरासी प्रकारके ब्राह्मण उदयपुरमें रहते हैं और सबके पास ब्रह्मार्पण विपुल भूमि है। नित्य एक ब्राह्मण जातिका भोजन राज्यसे होता है, जिससे चौरासी कहते हैं। साधुसेवाका प्रवन्ध भी इस राज्यमें प्रशंसनीय है। इस आदर्श हिन्दु राज्यमें चित्तोरगढ़ और कुम्भगढ़ नामक दो जगत् प्रसिद्ध दुर्ग हैं। २५-३० लाख रुपया व्यय कर वर्तमान हिन्दूसूर्य महाराणा साहबने उनकी मरम्मत करा कर अपने पूर्वजोंकी कृतिको दृढ़ किया है।

(५) काशमीर।

यह हिन्दुस्तानका बहुत बड़ा देशी राज्य है। जो लगभग सवा चौराची हजार वर्गमीलमें विस्तृत है। इसको धरतीका स्वर्ग कहते हैं। फारसीके कवियोंका तो कहना है कि, अगर जवह किया हुआ मुर्ग यहां पहुंचे, तो उसके पर ऊग आवेंगे। सचमुच यह भारतका ही नहीं, भूतलका स्वर्ग अर्थात् कैलास है। इसकी तहसील पौन करोड़से अधिक है। काश्मीरमें लोहे और सुरमेकी खानि बहुत हैं। शाल दुशालेके लिये काश्मीर प्रसिद्ध है। केसर यहांका नायाब तोहफा है। यह बहुत विशाल राज्य है, जिसमें जम्बू, लद्दाख,चित्राल आदि बड़े बड़े राज्य शामिल हैं। इस गद्दीके अधीन अनेक बौद्ध और मुसलमान राजा हैं। यह एक प्रकारका साम्राज्य है। इस राज्यके स्वर्गीय नरपति महाराजाधिराज प्रताप सिंह सनातनधर्मके प्रधान स्तम्भरूप थे और ऐसा कोई धर्मकार्य न था, जिसमें वे सहायता नहीं देते थे। इस सुप्रसिद्ध राज्यके वर्तमान नरपति श्रीमान् महाराजा हरिसिंह बहादुर बड़े प्रजावत्सल और बुद्धिमान् हैं। इससे हिन्दु प्रजा इनके पूर्वजोंके अनुरूप बहुत कुछ आशा रखती है। यहां पशमिना, लकड़ीकी चीजें, केशर आदिका व्यापार अच्छा है।

(६) किशनगढ़।

यह राजपुतानेकी जयपुर रेसीडेंसीमें एक देशी राज्य है। यहां

हिन्दी भाषा बोली जाती है। यह राज कुछ धार्मिक विषयोंमें सुप्रसिद्ध है। वर्तमान नरपतिके स्वर्गीय पिताने अपने ज्येष्ठ भ्राता स्वर्गीय नरपतिकी सहायतासे वैदिक सोमयज्ञ किया था, जिसका कीर्तिस्तम्भ उस राज्यमें विद्यमान है। वे आजीवन अग्निहोत्री रहे। सोमयज्ञके बाद वर्तमान किशनगढ़नरेशका जन्म हुआ था, इस कारण इनका नाम हिजहाईनेस महाराजा श्रीमान् यज्ञनारायण सिंह है। श्रीमान् बड़े सुशील अन्तर्जगत्पर विश्वास करनेवाले और स्वधर्मानुरागी हैं। यह राजवंश राठोर क्षत्रिय है।

(७) कोटा।

यह ईस्टर्न राजपूताना एजेंसीका एक सुविख्यात देशी राज्य है। इसका क्षेत्रफल ५६८४ वर्गमील है। यहां हिन्दी भाषा बोली जाती है। यह राज्य हाड़ा राजपूत वंशका है। राज्यकी आबादी छः लाख तीस हजार है। श्रीमान् वर्तमान कोटा राज्याधिपति अति सुशील और स्वधर्मानुरागी तथा सच्चरित्र हैं। इस राज्यका संबंध उदयपुर राजवंश जैसे बड़े बड़े राजवंशोंसे है। इस समय धनवान और सम्पन्न राज्योंमें इस राज्यकी गणना होती है।

(८) क्यूंठल।

यह राज्य शिमलाकी पर्वत श्रेणीमें शिमलाके पास है। शिमला शहरकी जमीन पहिले इसी राज्यकी थी। यह राजकुल शिमलाके निकटस्थ सब राजकुलोंमें टिकेत समझा जाता है। इस राजकुलमें बड़े बड़े धर्मात्मा राजा उत्पन्न हो चुके हैं। वर्तमान नरपति अति सुशील युवक हैं और इनसे सनातनधर्मावलम्बी गण बहुत कुछ आशा करते हैं।

(९) गवालियर।

यह सुप्रसिद्ध राज्य सेन्ट्रल इंडिया एजेन्सीमें सर्व प्रधान राज्य है। यह राज्य अति समृद्धिशाली और शक्तिशाली है। यहांके स्वर्गीय नरपतिकी प्रबन्धशक्ति और राजनीतिकुशलता भारत प्रसिद्ध थी। उनके सुयोग्य पुत्र अभी नाबालिग हैं। इस राज्यकी रीजेन्सी कौंसिलकी सुव्यवस्था, प्रधानकर्मचारियोंकी योग्यता और सरदारोंकी प्रभावशालिता अति प्रशंसनीय है। इस राज्यमें हिन्दी-

की चर्चा अच्छी है। इस राज्यमें विधवाविवाह करने वाला दण्डार्ह होता है।

(१०) गिद्धौर।

यह प्राचीन क्षत्रिय राज्य विहारमें है। इस राज्यके अधीन वैद्यनाथ ज्योतिर्लिंगधाम है। इस राजकुलके ये ही कुलदेव हैं। यहांके स्वर्गीय नृपति बड़े धर्मात्मा और सदाचारी थे। सब बड़े बड़े धर्मकार्योंमें वे भाग लेते थे। वर्षों तक श्रीभारतधर्ममहामण्डल-की मन्त्रिसभाके सभापति रह चुके थे। उनके सुयोग्य पुत्र वर्तमान गिद्धौराधिपति धर्मनिधि महाराजा चन्द्रमौलीश्वर प्रसादसिंह बहादुर अपने पितृदेवके ही आदर्शपर चल रहे हैं। स्वधर्मानुरागी, विद्याभ्यासक्नमें रुचि रखनेवाले, साहित्यसंगीतादिके प्रेमी और नैष्ठिक हैं। यह राज्य विहारमें प्रथम श्रेणीका क्षत्रिय राज्य माना जाता है। इनका वैवाहिक सम्बन्ध उदयपुरके प्रथम श्रेणीके सामन्तोंके साथ है।

(११) जोधपुर।

राजपूतानेका यह राज्य विस्तार और मालगुजारीके ख्यालसे बहुत बड़ा है। यहांके वर्त्तमान नरपति हिजहाइनेस महाराजाधिराज उमेद सिंह बहादुर युवक नरपतियोंमें आदर्शचरित्र हैं। वे अति सुशील, व्यसनोंसे रहित और अति सज्जन हैं। उनसे सनातनधर्मा-वलम्बी जनता भविष्यतमें बहुत कुछ आशा रखती है। राज्यका प्रबन्ध अच्छा है। इस राज्यमें गो जातिके आदर और रक्षाका सुप्रबन्ध है।

(१२) टिहरी।

यह धर्मराज्य उत्तराखण्डकी राजधानी समझी जाती है। यहांके नरपति केदार और बद्रीनाथके राजा माने जाते हैं। यहांके स्वर्गीय नृपति बड़े प्रभावशाली, देशकालज्ञ और प्रतापशाली थे। वे स्वभावसे ही सब धर्मकार्योंमें भाग लिया करते थे। इनके सुयोग्यपुत्र वर्तमान टिहरी-राज्याधिपति भी अपने पितृदेवके पथपर चल रहे हैं। केदारनाथ जीर्णोद्धार बद्रीनाथ जीर्णोद्धार और जोशी मठ संस्थानके पुनरुद्धार कार्यमें आप सहानुभूति रखते हैं। गंगोत्रीका सुप्रसिद्ध महातीर्थ इसी राज्यमें है। श्रीभगवान्

शंकराचार्यने जो भारतवर्षको चार भागोंमें विभक्त करके चार धर्मराज्य स्थापन किये थे, उनमें उत्तराखण्डका पीठ ज्योतिर्मठ कहलाता है। वह वर्तमान जोसीमठ नामक गांवकी थोड़ी दूरी पर जंगलमें स्थित है और इसी राज्यमें है।

(१३) टीकमगढ़।

यह राज्य बुन्देलखण्डका सबसे बड़ा और पाटवी राज है। इस राज्यके स्वर्गीय महाराजा अति प्रतापशाली और धर्मात्मा थे। बहुत दिनों तक श्रीभारतधर्ममहामण्डलकी प्रतिनिधिसभाके सभापति रह चुके थे। उनके सुयोग्य पौत्र वर्त्तमान नरपति हिज हाइनेस महाराजा वीरसिंह देव बहादुर बड़ेही होनहार हिन्दीभाषा-प्रेमी, देशकालज्ञ और सुशील हैं। उनसे हिन्दुजाति बहुत कुछ आशा रखती है। यह ओरछा राज्य कहाता है। इसकी राजधानी टीकमगढ़ है। यहांके प्राचीन राजन्यगण अति वीर और गुणग्राही थे। सुप्रसिद्ध कवि केशवदासकी प्रतिभा यहीं विकसित हुई थी।

(१४) डूंगरपुर।

यह मेवाड़ पोलिटिकल एजेंसीमें एक भिन्न राज्य है। साढ़े चौदह सौ वर्गमील इसका क्षेत्रफल है। मालगुजारी लगभग सात लाखके है। यहांके स्वर्गीय सुप्रसिद्ध नरपति श्रीमान् महारावल विजयसिंह बहादुर एक आदर्श चरित्र अति पुण्यवान् और स्वधर्मानुरागी नरपति थे। उन्होंने काशीके श्रीमहामण्डल भवनमें एक वैदिक यज्ञमण्डप बनाकर अनेक यज्ञ किये थे। विद्यानुराग, धर्मानुराग और प्रेमवृद्धिका उन्होंने अपने जीवनमें बहुत कुछ परिचय दिया था। उनके सुयोग्य पुत्र हिजहाइनेस महारावल लक्ष्मणसिंह बहादुर अति शीलवान युवक नरपति हैं। उनसे सनातन धर्मीगण उनके स्वर्गीय पितृदेवके अनुसार बहुत कुछ आशा करते हैं।

(१५) दरभंगा।

दरभंगाके महाराजाधिराज मिथिलाधिपति कहाते हैं। यह राजगद्दी बहुत कुछ विशेषता रखती है। यह राजगद्दी ब्राह्मणोंकी है। जो महाराजाधिराज होते हैं, वेही मैथिल ब्राह्मण समाजके समाजपतिभी होते हैं। ब्राह्मणसमाज और राजसमाज दोनोंमें इस राज-

कुलकी विशेष प्रतिष्ठा है। इस गद्दीके अधीश्वर दो पीढ़ियोंसे श्री-भारतधर्ममहामण्डलके प्रधान सभापति होते आये हैं और वर्णाश्रम सदाचारकी रक्षामें दृढ़ होते आये हैं। इस राज्यकी आय लगभग एक करोड़ रुपयेके है। हिज़हाइनेस वर्तमान महाराजाधिराज श्रीमान् कामेश्वर सिंह बहादुर योग्य पिताके योग्य पुत्र हैं। उनसे वर्णाश्रम धर्मी बहुत कुछ आशा रखते हैं।

(१६) देवास।

यह राज्य मालवेके अन्तर्गत इंदोरके निकट है। इस राज्यकी विचित्रता यह है कि, एक राजधानीमें दो महाराजाओंकी गद्दियां हैं। ये दोनों नरपति देवास पांती १ और देवासपांती २ कहलाते हैं। देवासपांती २ के अधीश्वर हिजहाईनेस महाराजा श्रीमान् मल्हार राव पंवार महोदय बड़े सुशील, भगवद्भक्त और साधुसेवी हैं। सार्वजनिक धर्मकार्यों में सहायता देनेकी इन्हें बहुत रुचि है। यह कुल परमार अग्निकुल कहाता है। श्रीमान् नृपवरकी तरह उनके लघुभ्राता विद्याभूषण महाराजकुमार सदाशिवराव खासे साहब विद्वान् तथा अनेक गुणोंसे अलंकृत हैं।

(१७) धार।

यह सुप्रसिद्ध धारानगरी है, जिसे अब धार कहते हैं। यह भी प्रमारोंकी ही गद्दी है। मालवा प्रान्तमें यह राज्य अति प्राचीन और सुप्रसिद्ध है। यहांके स्वर्गीय नरपतिकी विशेष प्रशंसा थी। उनके सुयोग्य पुत्र अभी नाबालिग हैं। राजकार्य उनकी मातेश्वरीके आज्ञाधीन होकर सुयोग्य दीवान् श्रीमान् राव बहादुर धर्मभूषण के० नाद्कर महाशय बहुत ही योग्यतासे सम्पन्न करते हैं और उस राज्यकी मर्यादाके अनुसार प्रायः सब विद्या और धर्मकार्यकी उन्नतिमें भाग लेते हैं।

(१८) नरसिंहगढ़।

यह भूपाल एजंसीका एक देशी राज्य है। नरसिंहगढ़की राजधानी बड़ी ही सुन्दर है। वहां का पार्वत्य दृश्य अति मनोहर है। अग्निवंशी क्षत्रियोंकी यह शुद्ध और प्रसिद्ध गद्दी समझी जाती है। इस राज्यके स्वर्गीय नरपति बड़े धर्मात्मा, सुशील, लोकप्रिय, और विद्यानुरागी थे। उनके सुयोग्य पुत्र हिजहाईनेस महाराजा विक्रम

सिंह पिताके सदृश होनहार हैं। अभी थोड़े दिन हुए उन्हें राज्याधिकार प्राप्त हुए हैं। उनसे सनातनधर्मी बहुत कुछ आशा रखते हैं।

(१९) नैपाल ।

यहांके अधिपति महाराजाधिराज कहलाते हैं और यहांके राजमंत्री महाराजा कहलाते हैं, वे ही राज चलाते हैं। हिन्दुस्तानमें यही एक पूरा स्वाधीन हिन्दूराज्य कहलाता है। यहां नैपाली, नेवारी, लामा, गुरंग, किराती और हिन्दी बोली जाती है। यहांकी राजधानी काठमांडो है। यहां कवायददार सेना १५००० के करीब है। तराईमें तेलहन, तम्बाकू और अफीम बहुतायतसे होती है। यहां जो स्त्री अपने पतिके मरनेपर उसके साथ ही सती होना चाहे, वह सती हो सकती है और वर्णाश्रमधर्मकी मर्यादा रखते हुए धर्मशास्त्रके अनुसार राज्यशासन होता है। वर्तमान महाराजा तथा प्रधान मंत्री तथा प्रधान सेनापति, जिनके हाथमें राजशासनकी बागडोर है, उनका नाम हिज हाईनेस महाराजा भीमसमशेर जंग राणाबहादुर है। यहांका राजवंश उदयपुर हिन्दुसूर्य राजवंशसे निकला है, ऐसा माना जाता है। वर्णाश्रम शृङ्खलाकी बहुत कुछ मर्यादा नेपाल राज्यमें ठीक ठीक है।

(२०) पटियाला ।

यह पञ्जाबका सबसे बड़ा हिन्दु राज्य है। राजपुरा जङ्क्शनसे १६ मील पश्चिमको इसका सदर मुकाम पटियाला रेलवे स्टेशन है। इस राज्यमें तांबा, स्लेट और मार्बलकी खानें हैं। यहां हिन्दी और पञ्जाबी बोली जाती है। यहांके वर्तमान नरपति भारत साम्राज्यके नरेन्द्रमण्डलके [illegible] राजा रत[illegible] हैं और राजन्यवर्गोंमें उनकी विशेष प्रतिष्ठा है।

(२१) पन्ना ।

यह मध्यभारतके [illegible] खण्डमें एक सनदी राज्य है। यहां हीरे और मूल्यवान पत्थर बहुत निकलते हैं। पन्द्रह बीस फुट [illegible] खोदनेपर कीमती पत्थर मिलने लगते हैं। यहांके नरपति [illegible]क, उत्साही और धर्मात्मा हैं।

(२२) पुंछ ।

यह राज्य श्रीमान् महाराधाधिराज काश्मीरनरपतिके अधीन

माना जाता है। पुंछ राज्य बहुत विशाल है और यहांके नरपति स्वाधीन अधिकार भी रखते हैं। इस राज्यके वर्तमान नरेश बड़े सुशील, धर्मात्मा और विद्यानुरागी हैं।

(२३) बांसवाड़ा।

यह मेवाड़ पोलीटिकल एजेन्सीके अधीन एक स्वदेशी राज्य है। यहां बांसवाडी हिन्दी बोली जाती है। यह राज्य पहाड़ और जंगलसे भरा है। इसकी सीमामें माही नदी बहती है, जिसके करारे चालीस पचास फुटतक ऊंचे हैं। यहांके नरपति सब धर्मात्मा होते आये हैं। यह कुल उदयपुरसे सम्बन्ध रखता है। इस राज्यके वर्तमान नरपति हिजहाइनेस भारतधर्मविभूषण महारावल श्रीमान् पृथ्वीसिंह बहादुर अति सुशील हैं और धर्मकार्योंमें प्रायः भाग लेते हैं।

(२४) बनारस।

यह हिन्दुओंका पवित्र तीर्थस्थान काशीराज जगत्में प्रसिद्ध है। काशीनरेशकी राजधानी रामनगर पुण्यसलिला गङ्गाके दाहिने किनारेपर बसी है। राज्यका क्षेत्रफल कोई एक हजार वर्गमील है। इसी पार नगरसे काशिराजके महलोंकी अनुपम छवि देखकर यात्री अपने नेत्र सफल करते और पार उतरकर महाराजा बहादुरका यशोगान करते हुये महलोंका दर्शन और वेदव्यासका पूजन करते हैं। यहांके महाराजा वयोवृद्ध और धर्मात्मा हैं। यहां हिन्दी भाषा बोली जाती है। इस राज्यके कुछ हिस्सेमें स्वाधीन राज्य जैसे अधिकार भी इस राज्यको प्राप्त राव बहा राज्यकी ओरसे काशी नगरीमें जो प्रतिष्ठित व्यक्तियों सम्पन्न करते प्रबन्ध है, वह अति प्रशंसनीय है।
न विद्या ओ

(२५) विज

यह बुन्देलखण्डका एक प्रसिद्ध राज गद्द। यहांके वर्तमान नरपति हिज़हाईनेस भारतधर्मेन्दु महारजा सावन्तसिंह बहादुर सुशील, सदाचारी, लोकप्रिय और स्वधर्मानुरागी हैं। श्रीमान् प्रायः धर्म और देशहितके कार्य्योंमें भाग लेते हैं।

(२६) बूंदी।

यह चन्द्रवंशियोंकी गद्दी है। हाड़ा जातिके क्षत्रिय यहांके

अधीश्वर होते आये हैं। यह राजकुल बहुत ही प्रसिद्ध और प्राचीन है। कोटा और झाला वाडके निकट यह राजधानी है। यहांके वर्तमान नरपति अति सुशील हैं। यहांके दीवान विद्यालंकार श्रीमान् पंडित ननिगोपाल भट्टाचार्य एन० ए० बड़ी योग्यतासे राज-शासन करते हैं।

(२७) विजयपुर।

यह पश्चिमोत्तर प्रान्तका अति प्राचीन और प्रसिद्ध राज्य है। राज्य बहुत विशाल और समृद्धिशाली है। इसी राज्यके अन्तर्गत सुप्रसिद्ध विन्ध्याचलक्षेत्र है। यह राजकुल गहरवार क्षत्रियोंकी पाटवीगद्दी मानी जाती है। इस सुप्रसिद्ध राज्यके वर्तमान अधिपति धर्मसुधाकर श्रीमान् राजा वेणीमाधव प्रसादसिंह बहादुर सदाचारी, वर्णाश्रमधर्ममें दृढ़ अनुराग रखने वाले और प्रजापालक हैं। श्रीमान् संस्कृतके विद्वान और सब प्रकारसे विद्यानुरागी तथा सनातनधर्मकी रक्षामें तत्पर हैं। सनातनधर्मी श्रीमानसे बहुत कुछ आशा रखते हैं।

(२८) रंका।

यह विहारके अन्तर्गत एक क्षत्रिय राज्य है। यहांके वर्तमान नरपति सदाचारी और स्वधर्मानुरागी हैं। वर्णाश्रमकी रक्षा और सनातनधर्मानुरागी हैं। वर्णाश्रमी इनसे बहुत कुछ आशा रखते हैं।

(२९) रतलाम।

यह मालवेका बड़ा राजपूत राज्य है। यहां हिन्दी और रांगड़ी बोली जाती है। राजा रतनसिंहने इस कसबेको बसाया था, इस कारण इसका नाम रतलाम पड़ा है। शहर बड़ी सुन्दरताके साथ बसा है। इलाका अफीम और अन्नकी उपजके लिये प्रसिद्ध है। यहांके नरपति हिजहाईनेस श्रीमान् महाराजा सज्जनसिंह बहादुर अपने पूर्वजोंकी तरह लोकप्रिय और शीलवान हैं। और प्रायः धर्म तथा लोकहितके कार्यों में भाग लेते हैं।

(३०) सैलाना।

यह मध्यभारतकी पोलिटिकल एजेंसीका प्रथम श्रेणीका राज्य है। जिसका क्षेत्रफल ४५० वर्गमील है। यह मालवेका सुप्रसिद्ध

राज्य है। इसका राजवंश जोधपुर राज्यसे सम्बन्ध रखता है। इसके नरपति धर्मात्मा उत्साही और सज्जन हैं। इस राज्यके वर्तमान नरपति हिज हाईनेस भारतधर्मनिधि महाराजा श्रीमान् दिलीपसिंह बहादुर बड़े सुयोग्य, लोकप्रिय, सदाचारी, धर्मात्मा और धर्म तथा देशके काममें भाग लेनेवाले हैं। श्रीमान् नृपवर अखिल भारत वर्षीय क्षत्रिय महासभाके प्रधान सञ्चालक, प्रधान मन्त्री और श्रीमहामण्डलकी मन्त्रिसभाके सभापति हैं। श्रीमान् नृपवरने सर्वधर्मसदन और गवेषणालभा अपने राज्यमें स्थापन करके बड़ी उदारता और जगत्कल्याणका परिचय दिया है। इस राज्यके दीवान धर्मरत्न पण्डित प्यारेकृष्ण कौल अति लोकप्रिय तथा विचारशील हैं।

(३१) सिरमोर।

यह पंजाबके पार्वत्य प्रदेशमें अति सुंदर राजधानी है। छोटा राज्य होनेपर भी अति समृद्धिशाली है। यहांके वर्तमान नरपति स्वधर्मानुरागी अति शीलवान और विद्यानुरागी हैं। देशहितके कार्यों में भाग लेते हैं।

व्यापार-खण्ड।

[सम्पादक—श्रीमान् पं० फूलचन्द्रशर्मा, बी० ए० एलएल० बी० आगरा।]

रेलवेके संक्षिप्त नियम।

यात्रियोंको रेलवेस्टेशन और भाड़ा जानना बहुत जरूरी होता है, लेकिन सब स्टेशनोंके नाम और सब दर्जोंका भाड़ा देना इस महामण्डलडाइरेक्टरीमें असम्भव है। इसके लिये अंगरेजोंका कोचिङ्ग टेरिफ और हिन्दोंका टाइमटेबल रेल कम्पनियोंकी ओरसे अलग बिका करता है। यहां संक्षेपरूप पर बड़े बड़े मुख्य स्टेशनोंके नाम और कुछ प्रसिद्ध स्टेशनोंकी दूरी मीलोंमें लिखी जाती है। इस समय रेलका भाड़ा दर्जेवार नीचे लिखे अनुसार लिया जाता है।

(१) महसूलका विधान—३ वर्षसे कमका बच्चा बिना महसूल रेलमें जहां चाहे जा सकता है। तीन वर्षसे १२ वर्ष तकका आधा महसूल लगता है। १२ वर्षसे ऊपरका महशूल हो नीचे लिखे भावसे लिया जाता है।

पहला दर्जा	=) मील
दूसरा दर्जा	-) मील
ड्योढ़ा दर्जा	)॥ मील
तीसरा दर्जा	)४ मील

(२) जो यात्री गाड़ीमें जगह नहीं होने या किसी और कारण से टिकट लेनेपरभी रेलमें सफर करना नहीं चाहता, वह गाड़ी छूटतेही स्टेशन मास्टरको इत्तिला देनेसे टिकटका दाम वापस पा सकता है। या किसी दरजेका टिकट लेकर उस दरजेमें जगह नहीं होनेसे उसके नीचेके दरजेमें सफर करना पड़े, तो गार्डको इत्तिला देकर महसूलमेंसे जो अन्तर है वह ले सकता है।

(३) आने जानेका (रिटर्न) टिकट छः महीने तकका मिलता है। इसका लेनेवाला यदि मीयादके अंदर लौट न सकता हो तो आधी मीयाद ही पर जहांसे वह लौटनेवाला हो उस स्टेशनपर टिकट वापस करे, तो एक ओरका पूरा महसूल लेकर बाकी उसे वापस मिल सकेगा। रिटर्न टिकट एक मुसाफिर दूसरेके हाथ नहीं बेच सकता।

आने जानेका एक प्रकार हर दर्जेका टिकट मिलता है, जिसे वीकैंड टिकट कहते हैं। शर्त यह है कि केवल शुक्रवारको यह टिकट मिलता है और मंगलवारको आधीरात तक वापस आ जाना पड़ता है। इस टिकटके महसूलमें कुछ रियायत होती है।

(४) पहले दर्जेका यात्री १॥ मन, दूसरे दर्जेका यात्री १ मन। डेवढ़े दर्जेका यात्री ३० सेर और तीसरे दर्जेका यात्री २५ सेर बोझा अपने साथ बे महसूल ले जा सकता है। ओढ़ना, बिस्तरा, खानेका सामान, हैंडबेग, छाता व छड़ीका वजन नहीं किया जायगा। आधे टिकटवाले लड़केके लिये आधा बोझा माफ है। अधिक बोझा होनेसे लगेजकी दरसे महसूल देकर रसीद लेना होगा। यह लगेजका बोझा गार्डके पास भी रक्खा जा सकता है, किन्तु

उतरनेवाले स्टेशनपर यात्री उसे मियादपर न छुड़ाले, तो हर्जाना फी बोझा ।) रोज देना पड़ेगा ।

(५) १०० मीलसे वेशी चलनेवाले यात्रीको अधिकार है कि १०० मीलजा चुकनेके बाद प्रति १०० मील वा उसके अंशपर एक दिन, इस हिसावसे रास्तेमें एक या अधिक स्टेशनोंपर ठहरता हुआ देरसे पहुंचे ।

(६) रेलमें स्त्रियोंके डब्बोंपर "स्त्रियोंके लिये" लिखा रहता है। इनमें १२ वर्ष तकके लड़के भी वैठ सकते हैं। इनमें टिकट जांचनेका पुरुषको अधिकार नहीं है ।

(७) कोई पैसेंजर गाड़ी नियत समयके पहले स्टेशनसे नहीं छूट सकती। स्टेशन—मास्टरको स्टेशनपर गाड़ी पहुंचते ही नौकरों द्वारा जोरसे चिल्लाकर उस स्टेशनका नाम और गाड़ी कितनी देर ठहरेगी, कहलाना चाहिये ।

(८) टिकट लेनेके बाद यात्री गाड़ीमें न चढ़ सके तो ३ घण्टे-के अन्दर टिकटका दाम वापस ले लेना चाहिये ।

(९) यदि कोई यात्री गार्डको कहे या उससे सार्टिफिकेट लिये बिना अपने टिकटसे ऊंचे दर्जेके डब्बेमें वैठे या जहांका टिकट लिया हो उससे अधिक यात्रा करे, तो उसे प्रचलित नियमानुसार अधिक महसूल व जुर्माना देना पड़ेगा ।

(१०) यात्रीका समान गाड़ीमें छूट जानेसे स्टेनमास्टरको अगले स्टेशन पर तार भेजना चाहिये। लावारसी सामान स्टेश-नपर दो दिन रक्खा जाकर उसके बाद वड़े स्टेशन भेज दिया जाता है ।

(११) यदि यात्री विशेष कारणसे अपनी गठरी कुछ कालतक स्टेशनमास्टरके पास रख देना चाहे, तो प्रति गठरी पहले २४ घण्टे या अंशका =) और उसके बाद −) प्रति २४ घण्टे या अंशके लिये देना पड़ेगा। स्टेशन-मास्टर इसकी रसीद देंगे ।

(१५) जंकशन स्टेशनपर किसी यात्रीको भूलसे दूसरी गाड़ीमें वैठने न देना टिकट कलेक्टरका काम है ।

(१३) जिस डब्बेमें जितने मुसाफिर वैठनेकी संख्या लिखी रहे उससे अधिक मुसाफिर वैठानेका रेलवे कम्पनीको अधिकार नहीं है ।

(१४) यदि कोई रेल कर्मचारी यात्रीसे असभ्य व्यवहार करे या यात्रीको पानी, रोशनी, सफाई, डब्बेमें जगह आदिसे तकलीफ उठानी पड़े तो रेलवेके ट्राफिक सुपरिंटेन्डेण्टके पास खबर करनी चाहिये। बदइन्तजामी या दुर्लक्ष्यसे यात्रीको जो हानि उठानी पड़ेगी उसके लिये रेलवे जिम्मेदार है।

(१५) यदि यात्री गफलतसे टिकट जहां तकका लिया हो उससे आगे चला जावे किन्तु उसके आगेके स्टेशनपर पहुंचनेपर स्टेशनकी सरहदके बाहर बिना गये पहली ही गाड़ीसे लौटे तो उसे इस अधिक यात्राका किराया या दंड न देकर सिर्फ वापस आनेका किराया देना होगा।

(१६) रेल द्वारा दो प्रकारसे माल भेजा जाता है:(क) पार्सल, जिसका महसूल प्रत्येक वस्तुपर बराबर है और सबसे पहिलेकी गाड़ीमें भेजा जाता है, यह पानेवालेको शीघ्र मिलता है (ख) गुड्स, जिसमें प्रत्येक वस्तुपर अलग २ महसूल लगता है। यह मालगाड़ीसे जाता है व देरसे पहुंचता है। गुड्सका महसूल पार्सलसे कम लगता है।

(१७) पार्सल या गुड्सका महसूल भेजनेवाला चाहे तो पहिले दे सकता है या छुड़ाते समय भी। शीघ्र बिगड़नेवाली वस्तुओंका महसूल पहिले ही लिया जाता है। रेल द्वारा जो बिल्टी मिलती है उसमें भेजने व पानेवालेका नाम, मालका वजन, महसूल और महसूल पाने या न पानेका ब्योरा रहता है। बिल्टी लानेवाला ही माल छुड़ा सकता है। बिल्टी खो जाय तो छुड़ानेवालेको ॥) स्टाम्प कागजपर इकरारनामा लिखना पड़ेगा।

(१८) किसी प्रकारका ज्यादा दिया हुआ महसूल वापस लेना हो तो ३ महीनेके भीतर चीफ अपरेटिंग सुपरिंटेंडेंट या कमर्शल मैनेजरको लिखना चाहिये। टिकट व लगेजमें यदि अधिक महसूल लिया गया हो तो तुरन्त स्टेशन-मास्टरको कहना चाहिये।

(१९) लगेज, पार्सल या गुड्सकी वस्तु यदि गुम हो जाय, नुकसान हो जाय या किसी दूसरेको गलतीसे दे दी जाय, तो माल रवानगीकी तारीखसे ६ महीनेके अन्दर उन सब रेलवेके उचित

अधिकारियोंको जाब्तेसे नोटिस देनी चाहिए, जिन २ रेलवेमेंसे वह माल जानेवाला हो ।

(२०) लगेज, पार्सल या गुड्समें सोना, चांदी, रेजगारी, रेशमी, जरदोजी या ऊनी कपड़ा, दुशाला, मोती, जवाहरात, घड़ी, चित्र या नकशे आदि कीमती माल हों, तो वह साफ लिखवाकर उसका महसूल अधिक देना होगा ।

(२१) लगेज और रेलवे पार्सलका महसूल ।

२॥ सेर तक फी ५०० मील या अंशपर ।=) तथापि कितनी ही दूरपर भेजा जाय १॥) और २॥ सेरसे अधिक व ५सेर तक,फी २५० मील या अंशपर ।=) व कितनी ही दूरपर भेजनेसे ३) और ५ सेरसे अधिकका आगे लिखे मुताबिक लगेगाः—

दूरी मीलोंमें मील तक	१०सेर तक रु०	आ०	२० तक रु०	आ०	३०सेर तक रु०	आ०	१मन तक रु०	आ०
२५	०	६	०	६	०	६	०	६
५०	०	६	०	६	०	१२	०	१२
७५	०	६	०	१२	१	१	१	१
१००	०	६	०	१२	१	१	१	७
१२५	०	१२	१	१	१	७	१	१३
१५०	०	१२	१	१	१	७	२	२
१७५	०	१२	१	७	१	१३	२	८
३००	०	१२	१	७	२	२	२	१३
३२५	१	१	१	१३	२	८	३	३
३५०	१	१	१	१३	२	१३	३	९
३७५	१	१	२	२	३	३	३	१५
४५०	१	१	२	२	३	३	४	२
४२५	१	७	२	८	३	९	४	१०
५००	१	७	२	८	३	१४	४	१५
५२५	१	७	२	१३	४	४	५	५
६००	१	७	२	१३	४	४	५	१०
६२५	१	१३	३	३	४	१०	६	०
६५०	१	१३	३	३	४	१५	६	६
६७५	१	१३	३	९	५	५	६	११
७५०	१	१३	३	९	५	५	७	१

७७५	२	०	३	१४	५	१०	७	७
९००	२	०	३	१४	५	१४	७	१२
९२५	२	३	४	४	६	३	८	२
९५०	२	३	४	४	६	९	८	७
१०५०	२	३	४	७	६	११	८	१३
१०७५	२	८	४	१३	७	१	९	३
११००	२	८	४	१३	७	७	९	८
११२५	२	८	४	१५	७	१०	९	१४
१२००	२	८	४	१५	७	१०	१०	१
१२२५	२	१३	५	५	८	०	१९	७
१२५०	२	१३	५	५	८	५	१०	१३
१२७५	३	३	५	१०	८	७	११	२
१३००	३	३	६	०	८	७	११	४
१४००	३	३	६	६	८	१३	११	१०
१५००	३	९	६	११	९	३	१२	०
१५५०	३	१४	७	१	९	८	१२	५
इससे ऊपर	३	१४	७	१	९	१४	१२	११

विशेष हाल जाननेके लिये रेलवेकी कोचिङ्गटेरिफ मंगाकर देखें ।

प्रमुख स्टेशन ।

हवड़ासे—
६७ बर्दवान
१३२ आसनसोल
१८३ मधुपुर
२२८ झाझा
२८३ मोकामा
३२२ पटनासिटी
३३ पटना जं.
२४४ दानापुर
३६९ आरा
४११ बक्सर
४१८ मोगलसराय ग. होकर
४५८ मिरजापुर
५१२ इलाहाबाद
५६४ खागा
५८६ फतेहपुर

६३३ कानपुर
७१६ इटावा
७५४ शिकोहाबाद
७७६ टुंडला
८०६ हाथरस
८२९ अलीगढ़
८९० गाजियाबाद
९०३ दिल्ली
९८० करनाल
१०२६ अंबालाकंट
१०६६ कालका
११३६ शिमला
बम्बईसे—
१६७ धोंड
२३० कुर्डूवाडी
२८३ सोलापुर

४४३ रायपुर जं.
५१८ गंताकल जं.
५३६ गूटी
६३२ कडापा
७१० रेनीगुंता
७५१ आरकोनम जं.
७९४ मद्रास
लाहोरसे—
३३ अमृतसर
८४ जलंधर कंट
११७ लुधियाना
१८७ अंबाला कंट
२२७ कालका
२८७ शिमला
बम्बईसे—
११९ पूना

१८८ वठार
२०९ मिरज
३६१ वेलगांव
२९६ लौंडा
४४० धारवाड़
४५२ हुबली
५३३ हरिहर
६१२ विरुर
६४१ अर्सीकरी
७०१ तुमकुर
७४४ वंगलौरसिटी
हवड़ासे—
१३९ आसनसोल
१६९ धनवाद
१८७ गोमोह
२१५ हजारीबागरोड
२९२ गया
३४२ सोनईस्टवंक
४१८ मोगलसराय
५४५८ मिरजापुर
१३ इलाहाबाद
५६५ मानिकपुर
६१२ सतना
६७४ कटनी
७२१ जवलपुर
८९३ सोहागपुर
८८४ इटारसी
९९४ खंडवा
१०७१ भुसावल
११८५ मनमाड
१२३१ नासिक
१२६१ इगतपुरी
१३१४ कल्याण
१३३७ बम्बई
लखनऊसे—
१०३ शाहजहांपुर
१४६ बरेली
१८६ रामपुर
२०३ मुरादाबाद
२५० नगीना
२६४ नजीबाबाद
२८९ लकसर
३०० रुड़की
३२२ सहारनपुर
३७३ अंबालाकंट
हवड़ासे—
७२ खरगपुर
३९ गलुढिह
१५५ टाटानगर
१९४ चक्रधरपुर
३२० झार्सुगुडा
३६५ रायगढ़
४४७ बिलासपुर
५१५ रायपुर
५३९ दुर्ग
५५७ राजनांदगांव
५७७ डोंगरगढ़
६२२ गोंदिया
६६४ भंडारारोड
६९४ कामटी
७०३ नागपुर
७५२ वर्धा
८११ बडनेरा
८६१ अकोला
८८६ शेरगांव
९४७ भुसावल
देहरादूनसे—
६५ लकसर
सहारनपुर
१४९ अंवालाकंट
२२९ लुधियाना जं०
२५२ जलंधर कंट
३०२ अमृतसर जं.
३३६ लाहोर जं.
हवड़ासे—
१०२६ अंवालाकंट
१०४४ राजपुरा
१०९७ लुधियाना
११२९ जलंधर कंट
११६१ अमृतसर
१२१२ लाहोर
१२७५ वजीराबाद
१२९६ लालामूसा
१३१६ झेलम
१२९२ रावलपिंडी
१४०१ पेशावरकंट
देहरादूनसे—
४८ हरद्वार
६५ लकसर
१९ नाजीबाबाद
१५२ मुरादाबाद
२०८ बरेली जं.
२२२ शाहजहांपुर
२५४ लखनऊ जं.
४०२ रायबरेली
४९२ परतापगढ़
५४१ बनारस कंट

५५१ मोगलसराय जं.
६७९ गया
७२६ हजारीबागरोड
७८४ गोमोह
८१२ धनवाद
८३९ आसनसोल जं.
९०४ वर्द्दवान
९७७ हवड़ा

काठगोदामसे—
३९ रिछा रोड
६६ बरेली जं.

लखनऊसे—
२ लखनऊ सिटी
५५ सीतापुर
८३ लखीमपुर
१६३ पीलीभीत
१८७ भोजीपुरा
२५१ काठगोदाम

सियालदा से—
१४ बरकपुर
२४ नैहाटी
४६ रानाघाट जं.
१०३ पोरादा जं.
२५० परबतीपुर
३१२ जलपाईगुरी
३३५ सिलिगुरी जं.
३६७ कुरसियांग
३८६ दार्जिलिंग

पोरादासे—
५२ ग्वालंदोघाट
१२६ नरायनगंज
१६७ ढाका
२४१ मैमनसिंह

ग्वालन्दाघाटसे—
७९ चांदपुर
१११ लकसम
१९२ चटगांव

कलकत्तासे—
१०३ पोरदहा
२१६ बोगरा
२८९ कौनिया जं.
२९१ टीष्टा जं.
२९८ लालमनेहरहाट
३३० गोलकगंज जं.
४०६ सोरभोग
४७३ अमीनगांव
४७५ पंडूघाट
४८० गौहाटी जं.

हवड़ासे—
७२ खरगर
८० मिदनापुर
१७७ आद्रा जं.
२०१ पुरुलिया
२७२ रांची

कलकत्तासे—
१०३ परोदा
१४३ हरदुरदी जं.
१९६ सिराजगंजकँट
२२० जगन्नाथगंज
२३८ सिंघजन जं.
२७१ मैमनसिंह

आसनसोलसे—
१५१ मोकामा
२०० पटना सिटी
२०६ पटना जं.

हवड़ासे—
१५ बौरिया
७२ खरगपुर
१४४ बालासोर
२५४ कटक
२८३ खुर्दारोड
३१० पुरी
३१० पुरी

आसनसोलसे—
२६ आद्रा
५१ पुरुलिया
१२२ रांची

हवड़ासे—
१३२ आसनसोल
१८३ मधुपुर
२६२ किउल
२८३ मोकामा जं.
३२८ पटना जं०
३६९ आरा
४११ बकसर
४३४ दिल्दारनगर
४१८ मोगलसराय
४२९ बनारसकंट
४६५ जौनपुर
५९० फैजाबाद
६१६ लखनऊ

आसनसोलसे—
१२० किउल
१५१ मोकामा
२०६ पटना जं०

हवड़ासे—
४१८ मोगलसराय

४१३ इलाहाबाद
७७६ टुण्डला
७९० आगराफोर्ट
८८४ बांदीकुई
९४० जैपुर
१०२४ अजमेर

आसनसोलसे—
२६ आद्रा
१३१ खरगपुर
२१२ कटक
३६९ पुरी

करांचीसिटीसे—
१०५ कोटरी
१११ हैदराबाद
४२० लूनी जं.
४४० जोधपुर
५०४ मेरतारोड
५७७ कुचामनरोड
५९७ फुलेरा जं.
७३० रेवाड़ी
७८१ दिल्ली

दिल्लीसे—
७९ जिन्द
१८५ भटिंडा
२९० बहावलनगर
४०३ समसत
४७९ खानपुर
६१२ रोहरी जं.
६१५ सक्कर
६३० रुक जं.
६६७ जेकबाबाद
७६४ सीबी जं.
८५२ क्वेटा

करांचीसिटीसे—
१८६ रोहरी
३१८ खानपुर ज.
३५४ समसत जं.
५३९ मेकलोडगंजरोड
६१२ भटिंडा
६७३ जखल
७५३ रोहत

बम्बईसे—
१६७ सूरत
२४८ बड़ोदा
३१० अहमदाबाद
४२५ आबूरोड
४२८ मारवाड़ जं.
५७२ लूनी जं.
५२२ नसीराबाद
८८१ हैदराबादसिंध
८९१ कोटरी
९९३ करांची सिटी

आगरा फोर्टसे—
१७ अछनेरा
३६ मथुरा जं.
१०४ कासगंज जं.
१६८ बरेली जं.
२३४ काठगोदाम

बम्बई—
३४ कल्याण
८५ इगतपुरी
११७ नासिक रोड
१६२ मनमाड जं.
२७६ भुसावल
४६४ इटारसी
५२१ भोपाल

६०७ बीना जं.
७०२ झांसी जं.
७६३ ग्वालियर जं.
८३५ आगरा कैंट
८६८ मथुरा जं.
९५७ दिल्ली जं.
९७० गाजियाबाद
१००० मेरठ कैंट
१०६८ सहारनपुर
१११९ अंबाला कैंट
११३६ राजपुरा
११५१ लुधियाना जं.
११८३ जलंधर कैंट
१२३२ अमृतसर जं.
१२५४ लाहोर जं.
१३३७ लालामूसा जं.
१४३४ रावलपिंडी
१५४२ पेशावर कैंट

मद्राससे—
४२ अर्कोनम
८१ कटपडी
१३२ जालारपेठ
२०७ सलेम
२४३ एरोड
३०२ पोदानुर
३२८ मेट्टपलेयम
३४९ कनूर
३५७ उटकमंड

बम्बईसे—
१६७ सूरत
२०४ भड़ोच
२४८ बड़ोदा

२९२ गोधरा
३३७ दोहाद
४०८ रतलाम
४३४ नागदा
५७२ कोटा जं०
६४१ सवाईमाधोपुर
७२८ बयाना
७५४ भरतपुर
७७९ मथुरा जं०
८६५ दिल्ली जं०
१०५० भटिंडा
११०४ फिरोजपुर कंट
११६२ लाहोर जं.
१२२४ वाजीराबाद
१२४५ लालमूसा
१३४२ रावलपिंडी
१३९३ कंबेलपुर कंट
१४२३ नौशेरा
१४५० पेशावर कैंट

हवड़ासे—

७२ खड़गपुर
२५४ कटक
२८२ खुर्दा रोड
३७५ बरहामपुर
५०९ विजया नगरम्
५४७ वाल्टेर
६४० सामलकोट
७२७ राजमहेंद्री
७६४ बेजवाड़ा
९८३ नेलोर
९४५ गुंतुर
१०३२ मद्रास

बम्बईसे—

३४ कल्याण जं०
७५ कसारा
८५ इगतपुरी
११७ नासिक रोड
१६२ मनमाड जं०
२७६ भुसावल जं०
३५३ खंडवा जं०
४६४ इटारसी जं०
५२१ भोपाल जं०
६०७ बीना जं०
७०२ झांसी जं०
७७३ ओरई
८४० कानपुर जं
८८५ लखनऊ जं०

मद्राससे—

१०२ विलुपुरम्
१७७ मायावरम्
२२१ तंजोर
२५२ त्रिचनापली
३२३ कोदईकेनलरोड
३४८ मदुरा
४४८ रामेश्वरम्
४५९ धनुषकोटी

बम्बईसे—

२ भायकला
३४ कल्याण
६२ करजत
८० लोनावला
११९ पूना
१६७ धोंड
२८२ सोलापुर
२९२ होटगी
३७६ वाड़ी
४४६ विकराबाद
४९१ हैदराबाद
४९७ सिकन्दराबाद

बनारस कैंटसे—

१ मंडुआडीह
११ राजातलाव
२० कछवारोड
३० माधोसिंह
३८ कोंदरोड
४९ भीटी
५४ हंडिया खास
६५ हनुमानगंज
७२ झूसी
७४ इजतवृज
अलाहाबादसिटी

देशी डाकके नियम।

(भारत, ब्रह्मदेश, लंका व पोर्तुगीज इंडिया)

१–कार्ड।

साधारण)॥ जवाबी ‌-) सरकारी कार्डके नाप व वजनका सादा कार्ड भी उसपर Post Cord लिखकर व)॥ का टिकट लगा कर भेज सकते हैं। कार्डपर पतेकी ओर बांये आधे भागमें लकीर-के भीतर सब कुछ, लेकिन दाहिनी ओर सिर्फ पानेवालेका पता लिख या पतेकी चिट चिपका सकते हैं। विरुद्ध होनेसे चिट्ठी समझी जाती है। बिना टिकटका कार्ड नहीं जाता।

२–चिट्ठी।

महसूल–प्रति २॥ तोला वा अंशपर........-)

३—पुस्तक या नमूनेका पाकेट।

महशूल प्रति ५ तोला वा अंशपर)॥ इसमें पुस्तकें, विज्ञापन, नकशे, छापनेकी कापी, फोटो, प्रूफ वगैरह भेज सकते हैं, किंतु डांकके टिकट नोट, हुन्डी चेक वगैरह और प्राइवेट चिट्ठियां नहीं।

४—पार्सल।

इसमें हरेक वस्तु जा सकती है, किन्तु बहनेवाली वस्तु (तेल वगैरह) जो भली भांति बन्द न की गई हो नहीं जा सकती। पार्सल वैरंग नहीं भेजाजाता। चौथाई सेर (२० तोला) तक =) ऊपर हो, तो कुल वजनके फी आधा सेर या अंशपर–५॥ सेर हो, तो ≈) अधिक हो, तो ।)

५—रजिस्टरी।

५॥ सेरसे ऊपरका पार्सल, वी. पी., हुन्डी, चेक, टिकट, आदि जरूर रजिस्ट्री करानी चाहिये। स्वेच्छासे हरएक कार्ड, चिट्ठी, पाकेट, पार्सल, रजिस्टरी भेज सकते हैं। महसूलके अलावे रजि-स्टरीका टिकट =) जवाबी रजिस्टरीका -) अधिक।

६—बीमा रजिस्टरी।

हरेक चिट्ठी या पार्सल जिसमें नोट, सिक्का. सोना, जवाहरात, सोना चांदीके गहने आदि हों अवश्य बीमा रजिस्टरीसे भेजना चाहिए। बीमा की हुई चिट्ठी या पार्सल गुम होनेसे डाकखान

कीमतका देनदार होगा, किन्तु बीमामें लिखी रकमसे अधिकका (चाहे रकम अधिक हो) या वस्तुकी वास्तविक कीमतसे अधिकका (चाहे बीमा अधिकका कराया गया हो) डाकखाना देनदार नहीं होगा। किन्तु दस्तावेज जिसकी निश्चित कीमत नहीं रहती, चाहे जितनी रकमके लिये बीमा कराये जा सकते हैं। बीमाकी रकमके फी १००) वा अंशपर =) महसूल अलावे ≈) फीस रजिस्टरी लगाना चाहिये। वी. पी. भी बीमा हो सकती है। वी. पी. कमकी हो तो भी पूरी कीमतका बीमा हो सकता है। बीमा पानेवालेकी दस्तखती रसीद भेजनेवालेको मिलती है।

७—वेल्यु पेएबल (वी. पी.)

बीमा रजिस्टर्ड या सिर्फ रजिस्टरी पत्र, पार्सल व बुकपाकेट वी. पी. रवाना हो सकते हैं। दाम, डाक-महसूल, रजिस्टरी तथा बीमा कराया हो, तो बीमाका महसूल आदि मिलाकर कुल रकम फार्मपर लिखना चाहिये। वही माल पानेवालेसे वसूल होकर भेजनेवालेको मनीआर्डर द्वारा मिल जाता है। इस आनेवाले मनीआर्डरका महसूल वी. पी. पानेवालेसे अलग लिया जाता है। एक वी. पी. १०००) रु० तककी हो सकती है।

८—बैरिंग महसूल।

चिट्ठी या पाकेट बिना टिकट लगाये छोड़ा जाय, तो असल महसूलका दूना व कम टिकट लगाकर छोड़ा जाय, तो कमीका दूना महसूल पानेवालेसे वसूल किया जाता है।

९—सार्टिफिकेट।

बिना रजिस्टरी वस्तु डाकखाने तक पहुंचने की रसीद, उसपरके पतेकी नकल लिखकर)। का टिकट लगा, वस्तुके साथ देनेसे डाक की मोहर लगा कर मिलती है, पार्सल ६ तक तथा कार्ड, चिट्ठी या पाकेट ३ अदद तकका)। में सर्टिफिकेट मिल सकता है।

१०—मनीआर्डर।

१०) या उससे कम पर =) उससे अधिक २५) तक ।) उससे अधिक प्रति २५) या अंशपर ।) यदि अंश १०) से अधिक न हो तो =) लिया जाता है एक मनीआर्डरमें ६००) से अधिक नहीं जा सकता। मनीआर्डरमें सवा, डेढ़ या पौन आना नहीं जाता।

११—तारका मनीआर्डर।

इसमें मनीआर्डरके महसूलके सिवाय तारका खर्च एक्सप्रेस तार दी जाय तो १।।) व आर्डिनरी तार दी जाय तो ।।।) लगता है। मामूली मनीआर्डर फार्म पर ही बगलमें By Telegraph और आगे Express या Ordinary लिखना चाहिये। इसमें भी कूपन और मजमून भेजा जा सकता है, जिसका महसूल एक्सप्रेसका प्रतिशब्द =) और आर्डिनरीका प्रतिशब्द -) अधिक लगेगा। ऐसा मनीआर्डर ६००) तकका हो सकता है।

१२—पोस्ट आफिस सेविंग्स बंक।

यह बंक प्रायः प्रत्येक डाकखानेमें होता है। इसमें प्रत्येक व्यक्ति अपने या किसी नाबालिग या पागलकी ओरसे अलग अलग खाता खोलकर रुपया जमा कर सकता है। किसी नाम पर एकसे अधिक डाकखानेमें रुपया जमा नहीं रह सकता। किसी खातेपर एकसे अधिक नाम नहीं चढ़ते।

इसमें १) से कम रकम नहीं ली जाती और सवा, डेढ़, पौन आना भी जमा नहीं होता। जब चाहिये तब वापस लेनेके करारसे वर्ष (१ अप्रेलसे ३१ मार्च) में ७५०) के ऊपर जमा नहीं किया जाता और ५०००) से अधिक कभी जमा नहीं रह सकता। नाबालिगकी ओरसे केवल १०००) जमा रह सकता है। सप्ताह (सोमवारसे शनिवार) के बीचमें एक ही बार रुपया वापस हो सकता है। ब्याज दर ३) सैकड़ा प्रतिवर्ष मिलता है। यदि गवर्नमेंटसे सेक्युरिटी कागज़ या प्रामिसरी नोट खरीदकर सेविंग्स बंकमें रक्खे जांय तो वह रकम ज्यादे जमा हो सकती है और उसका ब्याज भी अधिक मिलता है। "पासबुक" में लेनदेनका ब्यौरा तथा ब्याज जमा होता है और यह देशी भाषामें भी रहता है।

जिस खातेमें १०) या कम रकम रह गयी हो, वह ३ वर्ष; जिसमें १०) से अधिक किन्तु १००) तक रकम रह गयी हो, वह ६ वर्ष और जिसमें १००) से अधिक रह गयी हो, वह १२ वर्ष बिना लेन देनके रहे, तो वह लावारसी समझा जायगा और उसका रुपया नहीं मिलेगा।

१३—तारके साधारण नियम ।

(भारत वो ब्रह्मदेश)

तार दो दर्जेका होता है—(क) एक्सप्रेस जो हर रोज लिया जाता है और आर्डिनरीसे पहिले भेजा जाता है और (ख) आर्डिनरीसे जो छुट्टियां छोड़कर और दिनोंमें लिया जाता है और एक्सप्रेसके बाद भेजा जाता है । महसूलः—

एक्सप्रेसका १२ शब्दोंतक १॥) आगे प्रतिशब्द =)

आर्डिनरीका १२ शब्दोंतक ॥।) आगे प्रतिशब्द -)

इसमें लिखे हुए पतेके शब्द जोड़े जाते हैं । भेजनेवाला चाहे तो अपना पता पूरा लिखे, अधूरा लिखे या न लिखे ।

तारका जवाब मंगानेके लिये कमसे कम ।॥) देना होगा । यह रकम यदि जवाब भेजा न गया हो तो Officer in charge of the Telegraph Check Office, Calcutta को जमाकी तारीखसे दो महीनेके अन्दर दरखास्त करनेसे देनेवालेको वापस मिलेगी । तारका मजमून अङ्गरेजी अक्षरोंमें होना चाहिये । तार तामील होने की तारीख व समय मंगानेका चार्ज ।॥)

तारघरोंमें काम करनेका समय रोजका अलग और छुट्टियोंके दिनका अलग है । छुट्टीके दिन "आर्डिनरी" तार नहीं लिया जाता । आफिस बन्द होनेके बाद १) लेट फी देनेसे सिर्फ "एक्सप्रेस" तार लिया जाता है ।

☞ डाक व तारकी विशेष जानकारीके लिये "पोस्ट एण्ड टेलिग्राफ गाइड" मंगाकर देखिये ।

१४—नोटके साधारण नियम ।

(१) गवर्नमेंट करेंसी नोट इन दामोंके होते हैं:-५) १०) ५०) १००) ५००) १०००) १००००) रु० ।

(२) ५) १०) ५०) १००) के नोट युनिवर्सल नोट कहलाते हैं ।

(३) बड़े नोट इन हातोंके होते हैं:-कलकत्ता, कानपुर, लाहौर, मद्रास, बम्बई, कराची व रंगून ।

(४) किसी हातेका नोट उसी हातेके किसी सर्कारी खजानेमें और युनिवर्सल नोट हिन्दुस्तानके हरेक सर्कारी खजानेमें पूरी कीमत पर भुनाया जा सकता है ।

(५) यदि पूरा या टुकड़ा नोट डाकसे कहीं भेजना हो तो उसको रजिस्टरी व बीमा अवश्य करा लेना चाहिये, नहीं तो डाकमें गुम हो जानेपर उसका दाम नहीं मिलेगा।

(६) यदि किसीके पास फटा नोट अथवा दो टुकड़े दो नोट के भूलसे आजायं और दाम लेना चाहे तो " कंट्रोलर आफ करॅसी, कलकत्ताके पास अर्जी भेजे। कुछ दिन बाद जमानत देनेपर दाम मिलेगा। अधूरे नोटका कोई मूल्य नहीं समझा जाता।

(७) किसीका नोट खो जाय तो उसे उस नोटका नम्बर लिखकर भेज देना चाहिये जिससे उस नोटका लेन देन बंद कर दिया जाय। सरकार नोटका रुपया देनेसे इनकार नहीं कर सकती चाहे कोई लावे, किन्तु उसका नाम और पता पूछ कर असल मालिकको खबर कर देगी कि वह यथोचित प्रबन्ध करे।

१५—रुक्का हंडुलतलब।

जब चाहे तब देनेके इकरारपर जो रुपया उधार लिया जाता है उसके रुक्के या हैंडनोटपर टिकट २५०) तक -) इससे ऊपर १०००) तक =) व इससे कितना ही अधिक हो तो ।) लगाना पड़ता है। हैंडनोटपर गवाह नहीं लिया जाता किन्तु अलग रसीद लेकर उसपर गवाही ली जाती है।

१६—दर्शनी व मियादी हुंडी।

दर्शनी हुण्डीपर सिर्फ -) का टिकट लगता है। एक वर्ष या इससे कम मियादकी हुण्डीपर नीचे लिखे मुताबिक दरका हुण्डी का कागज लगता है:—

२००) या इससे कमपर ≡)	„ १६००) „ १॥)	„ २००००) „ १८)
इससे अधिक ४००) तक ।=)	„ २०००) „ २।)	„ २५०००) „ २२॥)
„ ६००) „ ॥-)	„ ५०००) „ ४॥)	„ ३००००) „ २७)
„ ८००) „ ।।।)	इससे ज्यादे ७५००) तक ६।।।)	इससे अधिक चाहे जितनी
„ १०००) „ ॥।≡)	„ १००००) „ ९)	रकम होनेसे पूरी रकमके
„ १२००) „ १=)	„ १५०००) „ १३॥)	फी १००००) या अंशपर ९)

१७—स्टाम्प कागज।

(१) एकरार नामा जिसके लिये दूसरा नियम न हो ॥)

(२) बैनामा यदि मालियत ५०) तक हो ॥)

५०) अधिक १००) तक ... ... १)
१००) से अधिक १०००) तक प्रति १००) ... १)
१०००) „ प्रति ५००) ... ... ५)
(३) तमस्सुक १०) वा उससे कमपर ... =)
उससे अधिक ५०) तक ... ... ।)
„ १००) तक ... ... ॥)
„ १०००) तक १००) या अंशपर ... ॥)
„ प्रति ५००) या अंशपर ... ... २॥)
(४) रेहननामा दखली ... बैनामेका रसूम।
(५) रेहननामा बिना कब्जा ... तमस्सुकका रसूम।
(६) मोखतारनामा खास ... ... १)
(७) फारखती (किसी जायदाद व हकसे अलग होना);—
१००) तकके लिये ... ... तमस्तुकका रसूम।
उससे कितना ही अधिक हो ... ... ५)

१८—मेहनताना वकील (नम्बरी मुकदमोंमें)।

(१) मेहनताना वकील मुकद्दमा नंबरी व अपीलमें प्रायः ५) फी सैकड़ा लगता है किन्तु १५००) से अधिक नहीं हो सकता।

(२) यदि दावेकी तायदाद ५०००) से अधिक हो तो उस बादका २) सैकड़ेकी दरसे मेहनताना लगता है।

(३) मुतफर्कात मुकद्दमोंमें १।) सैकड़ा मेहनताना लगता है किन्तु २५०) से अधिक नहीं लिया जाता।

(४) मुकद्मा एकतरफा और सुलहनामेमें २॥) सैकड़ा मेहनताना लगता है।

१९—रसूम अदालत।

(१) अर्जी दावा व याददाश्त अपील—

यदि दावा १००) तक हो तो प्रति ५) या अंशपर ।=)
उससे अधिक १०००) तक प्रति १०) „ ॥।)
„ ५०००) „ १००) „ ५)
„ १००००) „ २५०) „ १०)
„ २००००) „ ५००) „ १५)
„ ३००००) „ १०००) „ २०)

" ५००००) " २०००) " २०)
" प्रति ५०००) वा अंश ... ... २५)
३०००) से अधिक फीस किसी अवस्थामें नहीं लगता।

(२) दरखास्त तजवीज सानी—यदि डिग्री होनेसे ९० दिनके जाय...नं० १ की आधी फीस।

(३) वही दरखास्त ९० दिनके बाद दी जाय तो नं० १ की फीस

(४) सार्टिफिकेट वसीयत नामा या विसारतः—

फी १००) या अंशपर... ... २) से ३)

☞ स्टाम्प कागज, मेहनताना वकील व रसूम अदालतका पूरा ब्योरा दे सकना असंभव है। इसका दर हर प्रांतमें अलग है। अतः आवश्यकताके समय कोर्टमें ही दर्याफ्त किया जाना चाहिये।

२०—इन्कम टैक्स।

जिस व्यक्तिका वर्षभरका साधारण मुनाफा २०००) से कम हो उसे कुछ टैक्स नहीं देना पड़ेगा। पूरा २०००) या ऊपर होनेसे नीचे लिखे मुताबिक टैक्स लगेगा।

२०००) या अधिक हो तो फी रुपया...५ पाई
५०००) या अधिक हो तो फी रुपया...)॥
१००००) या अधिक हो तो फी रुपया...)॥।
२००००) या अधिक हो तो फी रुपया... -)
३००००) या अधिक हो तो फी रुपया... -)।
४००००) या अधिक हो तो फी रुपया... -)॥

सुपर टैक्स, कम्पनियों आदिका टैक्स तथा विशेष हाल जानने के लिये इन्कम टैक्सके खुलासा नियम इन्कमटैक्स पाकट देखिये।

नमककी आत्मकथा।

मैं ब्रह्मस्वरूप हूं, नहीं, ब्रह्मसे बढ़कर हूं। ब्रह्मका अनुभव होता है, प्रत्यक्ष दर्शन नहीं। मेरा दर्शन होता है और अनुभव भी। यही क्यों? ब्रह्मनिरूपण करते हुए ब्रह्मवादियोंको मेरा ही दृष्टान्त देकर ब्रह्मको सिद्ध करना पड़ता है। ब्रह्मकी तरह मैं भी स्थिर-चरमें व्याप्त रहता हूं। व्यवहारमें चीनी जैसे मधुर पदार्थोंको प्रधानता दी जाती है। परन्तु उनमें मधुरता मैंने ही उत्पन्नकी है। यदि

मधुर पदार्थों से मेरा अंश निकाल दिया जाय, तो वे कडुई हो जायंगी। चीनीके सत्तको यदि किसीने चखा हो, तो उसे मेरे कथनकी सत्यता जंच जायगी।

भोजन मेरे विना नीरस हो जाता है और विना मेरे सहारे कोई हैजा, प्लेग, रक्तपित्त, ज्वर आदिसे बच नहीं सकता। मैं रसराज हूं और सौन्दर्यका प्राण हूं। किसीके सुन्दर और कोमल चेहरेका वर्णन करते हुए लोग कह बैठते हैं,—"चेहरेपर क्या ही नमक है!" कोई यह नहीं कहता कि,—"चेहरेपर क्या ही मलाई है, या क्या ही अच्छा जलेबीका शीरा है!" देव-दानवोंके समुद्र मन्थनसे जो १४ रत्न लक्ष्मी, कौस्तुभ, पारिजातक, अमृत आदि निकले, वे मेरे ही रूप हैं। अतः सभी सिन्धुसे उत्पन्न होनेपर "सैन्धव" मुझीको कहते हैं। ईमानदारीकी तो मैं चोखी कसौटी हूं। जो मेरा आदर करे, उसे नमकहलाल और जो अनादर करे, वह नमकहराम कहाता है।

कुछ लोगोंका ख़याल यह है कि, मेरा नामकरण अरब या फारसियोंने किया है। यह उनकी भूल है। अनादि अनंत वेदोंमें मेरा एकबार नहीं, हजारों बार नाम आया है। रुद्रसूक्तके दो भाग हैं। उनमेंसे प्रथम और प्रधान भाग मेरे ही नामसे प्रसिद्ध हुआ है। एक भागका नाम है, "नमक" और दूसरेका "चमक"। "नमक" न रहे तो वेदोंमें भी "चमक" नहीं आती; औरोंकी तो बात ही क्या है? मेरे नामको उलट भी दो, तो वह किसीसे "कम न" रहेगा।

मनुष्यकी भी विचित्र खोपड़ी होती है। असीम ब्रह्मकी तरह मुझ व्यापकको भी मनुष्य कानूनसे बांधना चाहते और मुझपर कर लगाते हैं। इससे बढ़कर उपहास्य क्या हो सकता है? यह तो हवाकी गठरी बांधना है। संसारके किसी सभ्य देशमें मुझपर टैक्स नहीं लगाया जाता। रूस-जापानके युद्धके अवसरपर आर्थिक-कष्टके कारण जापानी सरकारको कुछ कर बढ़ाने और नये लगाने पड़े। बहुतेरे अर्थनीतिज्ञोंका अनुरोध था कि, मुझ (नमक) पर कर लगाया जाय। परन्तु आस्तिक जापानी सरकारने यह मूर्खता करनेसे इनकार कर दिया।

भारतवासियों जैसे अभागे प्राणी इस समय संसारभरमें नहीं हैं। मैं इनके देश (भारत) को तीनों ओरसे घेरे बैठा हूं। पर वे प्रतिवर्ष करोड़ों मनोंकी तादादमें मुझे विदेशसे मगवाते हैं। भारतवासियोंको यह लतसी पड़ गई है कि, जितना ही उन्हें अधिक दो, उतने ही वे अतृप्त होते जाते हैं। उन्हें तैंतीस करोड़ अर्थात् फी मनुष्य एकसे अधिक देवता दिये गये तो भी उनसे संतुष्ट न होकर वे ईसा-मूसा, भूत-प्रेत, पीर-पैगम्बरोंको पूजते ही हैं। मैं इनपर न्योछावर हो रहा हूं। और मेरे लिये वे औरोंके मुंहकी ओर ताकते रहते हैं। जहां १८९० में लीवरपुलसे मेरी दो करोड़ मनकी मांग थी, वहां अब ७ करोड़ मनसे आधक हो गई है। कहते हैं, राम रावणके युद्धमें मरे हुये राक्षसोंकी पर्वतके समान पड़ी हुई हड्डियों और लाशोंसे भी कौवे तृप्त नहीं हुए थे।

मुझ (नमक) से वेष्टित भारतवर्षमें मुगलोंके राजत्वके पूर्व कभी मुझपर कर नहीं लगा। अकबर और उसके बादके सम्राटोंके समयमें २० मन पीछे १॥) कर लगने लगा। उस समय मेरी दर सर्वत्र ॥~) मन और उड़ीसा जैसे समुद्र तटवर्ती प्रान्तोंमें ≡)॥ मन थी। अंगरेजी राज्यमें बढ़ते बढ़ते मेरा कर २॥) मन तक बढ़गया था और लोगोंके पचासों वर्षतक लड़ने झगड़नेसे अब १॥) मन लिया जाता है। मेरी पैदावार करनेमें अधिकसे अधिक फी मन ~)। व्यय होता है। ~)। की वस्तुपर २॥) या १॥) कर लागना वर्वरता नहीं तो क्या है?

स्वास्थ्य-विज्ञानवेत्ता मेरे महत्वको समझते हैं। उन्होंने सिद्ध कर दिया है कि, प्रत्येक मनुष्यको प्रतिवर्ष मुझे ।) और पशुको ४० सेर उदरसात् करना चाहिये; तभी स्वास्थ्य ठीक रह सकता है। पर लोभियोंकी कृपासे भारतका प्रति मनुष्य प्रति वर्ष ६ सेर और पशु १० सेर से अधिक मुझे प्राप्त नहीं कर सकता। इसीसे यहांके मनुष्य और पशु निर्बल, निःसत्त्व, निर्वीर्य होते और अकालमें ही कालके गालमें वेरोक टोक चले जाते हैं। उनकी यह अवनति तभी रुक सकती है, जब वे मेरी श्रद्धा पूर्वक उपासना करें, मेरा सेवन करें।

जगत् बहिर्मुख हो रहा है। जगत् मिथ्यात्वके बदले जब जगत्के लोगोंने ब्रह्मको ही मिथ्या मान लिया है, तब मुझे कौन पूछता है?

परन्तु ब्रह्म जिस प्रकार सत्य है और सत्यके आधारपर ही सब कुछ स्थित है, उसी प्रकार मैं सत्य हूं और जगत्में जो कुछ तेज बल सौन्दर्य, रस, स्वाद, सच्चाई, सजीवता चिरंस्थायिता है, वह सब मेरा ही विलास है। मेरे विना कोई क्षणभर भी नहीं ठहर सकता। मुझपर टैक्स लगाना, आकाशपर मुहर लगानेके बराबर और मुझे कानूनसे जकड़ना ब्रह्मको मुट्ठीमें बांधनेके बराबर है। मैं इतना व्यापक, अगाध और अनाद्यनन्त हूँ कि, किसीके काबूमें आही नहीं सकता। चाहे कोई अपने मन वाली कितनी ही क्यों न करले! मैं अटल हूं और अटल रहूंगा।

देशकी व्यापारिक स्थिति।

इस रत्नगर्भा भारत भूमिमें मनुष्य, पशु, पक्षी आदि जीवोंके उपयोगी सब वस्तुएं उत्पन्न होती हैं। कच्चा माल तैयार होकर उससे पक्का माल तैयार करनेमें हम परतन्त्र हैं। कहीं कहीं पक्का माल तैयार करनेमें सुभीता हो गया है, परन्तु वह इतना अपर्याप्त है कि, उससे देशकी माग पूरी नहीं की जा सकती। कच्चे मालमें गेहूँ, चावल, चना, मटर, मूंग, उरदी, मसूर, तीसी, तिल, खसखस, मूफली, चिरौंजी, काजू, महुआ, सरसों, जव, जुनरी, बजरा, अरहर, आदि गल्ला तथा रूई, सन, तंबाकू, लाही, गोंद, चाय, नील, अफीम, टसर, ऊन, नारियल, रेशम आदि अन्य वस्तुएं बहुतायतसे होती हैं। इनका पक्का माल यहां बहुत कम होता है। खनिज पदार्थोंमें सोना, तांबा, लोहा, जस्ता, हीरा, माणिक, लहसुनियां, शीशा, गेरू, गंधक, कोयला, पारा, अबरक, घासलेट, नमक आदि बहुत होते हैं। जलसे भी नमक, मोती, मूंगा आदि निकलते हैं। औषधि वनस्पतियां, नाना प्रकारके पत्थर और सब प्रकारकी लकड़ी इस देशमें होती है। जितनी व्यापारिक वस्तुएं यहां होती हैं, परतन्त्रताके कारण उनके सहस्रांश, लक्षांशका भी हम उपयोग नहीं कर सकते। इन वस्तुओंका विस्तृत हाल हम अग्रिम वर्षकी डाइरेक्टरीमें लिखेंगे।

देश भरके व्यापारियोंकी वृहत्सूची हमने तैयार की है। इस वर्ष समयाभावसे उसे हम छाप नहीं सके हैं। अग्रिम वर्ष छापेंगे। तो भी भारतके प्रसिद्ध नगरोंके विवरणमें हमने उन नगरोंके प्रसिद्ध व्यापारी व्यवसायियोंके नाम दे] दिये हैं। कारखानोंका

विवरण भी पूर्ण रूपसे अग्रिम डाइरेक्टरीमें दिया जायगा। ज्ञात कारखानों और व्यापारियोंकी सूची हमारे पास है। उनसे हम पत्राचार करेंगे ही। किन्तु जो अज्ञात हैं, उनसे प्रार्थना है कि, जिनके हाथमें यह डाइरेक्टरी जाय, वे अपना बिजनेस कार्ड हमारे पास भेज दें, जिससे आगामी डाइरेक्टरीकी पूर्णतामें कोई कसर न रह जाय। यह सभीकी अपनी वस्तु है। अतः इसे पूर्ण करना भी सबका काम है। रेल, तार, डांक आदि सरकार व्यापारियोंसे सम्बन्ध रखने वाले व्यापारोंका कुछ विवरण और व्यापारसे सम्बन्ध रखने वाले नोट, रुक्के, कोर्ट आदिके नियमोंके विवरण इस खण्डमें देही दिया गया है। भविष्यत्में यह खण्ड सर्वाङ्गपूर्ण करने का निश्चय किया गया है।

हिन्दी साहित्यखण्ड।

(सम्पादक—श्रीमान् पं० कालीप्रसाद शास्त्री महाशय।)

हिन्दीकी वर्तमान अवस्था ;

हिन्दीका साहित्य गद्य और पद्य दो भागोंमें विभक्त है। सबसे पहिले गद्यका रूप महाराज पृथ्वीराजके परवानोंमें पाया जाता है, जिनका उत्पत्तिकाल ११ वीं शताब्दी है। हां, गद्य ग्रंथ लेखक सर्वप्रथम गुरु गोरखनाथजी हैं। इनका "गोरखबोध" १५ वीं शताब्दीमें लिखा गया है। इसके बाद महात्मा वल्लभाचार्यके पुत्र श्रीविट्ठलनाथजीका "शृङ्गाररसमंडल" है। इसी १६ वीं शताब्दीमें इनके पुत्रका तीसरा प्रधग्रन्थ "बावन वैष्णवोंकी वार्ता" मिलता है। इसके अनन्तर नन्ददासजीकी "विज्ञानार्थ प्रकाशिका" और "नासिकेतु पुराण भाषा" मिलता है। इसके पीछे गोस्वामी तुलसीदासजीका फैसलानामा मिलता है। आगे चलकर लल्लूलाल, इन्शा अल्ला तथा सदलमिश्रके पीछे भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्रके समयसे फिर गद्यने नवीन रूप धारण कर दिया, जो उत्तोतर उन्नत ही होता जाता है। अभी इसकी सरणी रुका नहीं, अभी इसका स्वरूप ठीक नहीं बताया जा सकता। वर्तमान गद्य—साहित्य

निवन्ध, कहानी, गल्प, उपन्यास, नाटक आदि कई शाखाओंमें विभक्त है।

निवन्ध, निवन्धोंमें आलोचना, विज्ञान, गणित, रसायन, भूगोल, खगोल, इतिहास, जन्तु शास्त्रधर्म आदि हैं। इनके भिन्न २ लेखक हैं।

आलोचना, यद्यपि पत्र पत्रिकाओंमें आलोचनायें प्रकाशित होती हैं, तथापि जैसी आलोचनाएँ होनी चाहिये नहीं होतीं। खेद है कि महावीर प्रसाद द्विवेदी, पद्मसिंह शर्मा, मिश्रबन्धु, शालिग्राम शास्त्री राय बहादुर गौरीशंकर हीराचन्द ओझा बाबूकाशी प्रसाद जयसवाल जैसे अव ओजो आलोचक नहीं दिखाते। आज सम्पूर्ण ग्रंथोंकी अध्ययन प्रणाली बन्द सी है। यही कारण है कि पढ़े लिखे भी तत्था बात कहनेमें गल्ती कर जाते हैं।

विज्ञानः-विज्ञानसे मेरा मतलब आधुनिक कल कारखानोंसे है। इस समय पत्रोंमें विज्ञानवाटिका, वैज्ञानिक जगत् आदि कितने ही वैज्ञानिक सम्बन्धी स्तम्भ रहते हैं किन्तु वे विदेशियोंकी भावनासे भरे होते हैं। बात यह है कि, भारतमें दो चार महानुभावोंको छोड़कर नवनिर्मावक विज्ञानियोंका अभाव है। कुछ पुस्तकें भी हैं, पर उनमें विदेशीयताकी बू पूर्णतया है। विज्ञान मासिक पत्र इस विषयका प्रयागसे निकलता है। गोपाल स्वरूप भार्गव, शालिग्राम वर्मा आदि इसके कई अच्छे लेखक हैं।

गणितः-भारत गणितज्ञोंका केन्द्र है। यहांके जैसे गणितज्ञ कहीं नहीं हुये। आज भी यहां अद्भुत गणितज्ञ हैं, पर उनका गणितज्ञान गूढ़ ग्रन्थों तक ही है। हां, महावीर प्रसाद, श्रीवास्तव इस विषयके लेख कभी कभी अच्छे लिखा करते हैं।

रसायनः-रसायन ग्रन्थ संस्कृतमें तो बहुत हैं, पर हिन्दीमें इनका अभाव है। इसके लेखक भी बहुत नहीं। जो हैं वे कनिष्ठकामें ही गिनने लायक हैं।

भूगोलः-इस सम्बन्धका रामनारायण मिश्रके सम्पादकत्वमें प्रयागसे एक मासिक पत्र भी निकलता है। यद्यपि इस विषयके भी लेखक कम ही महानुभव हैं, तब भी साधुचरण, शिवप्रसाद गुप्त जैसे महानुभाव इस विषयमें सफलता पा चुके हैं।

खगोलः—खगोल सम्बन्धी विज्ञान ज्योतिःशास्त्रके अन्तर्गत है। हिन्दीमें इसका भारी अभाव है। कभी २ इस विषयपर लेख पत्रोंमें प्रकाशित हो जाते हैं।

इतिहासः—भारतवर्षका इतिहास आज भी अज्ञताके गाढ़ान्धकारमें छिपा है। नित्य नये अन्वेषणोंसे उसका बराबर स्वरूप बदल रहा है। तब भी ईश्वरी प्रसाद शर्माका प्रयत्न स्तुत्य है। सुन्दरलालने भी "भारतमें अंग्रेजी राज्य" नामक ग्रन्थ लिखा था, पर वह पढ़नेको भी नहीं मिला। उसपर मत ही क्या निश्चित किया जा सकता है। प्राणिशास्त्रः—प्राणिशास्त्रके विज्ञानियोंका अभाव ही सा है। यद्यपि इस विषयके लेखजबतक पढ़नेको मिलते हैं, तब भी उनमें स्वदेशीयताका उत्कर्ष नहीं। ठीक नहीं कहा जा सकता कि इस विषयका हिन्दीमें कौन बड़ा विज्ञ है।

धर्मः—भारतमें मनुष्य मनुष्यका धर्म अलग २ है। अपने अपने विषयके अलग २ पत्र और लेखक हैं। धर्मसम्बन्धी लेख बराबर पत्रोंमें प्रकाशित होते हैं। किन्तु वास्तविक धर्मके प्रचारकी ओर हिन्दी लेखक ध्यान बहुत कम दे रहे हैं। भारतधर्मप्राण देश है। धर्मके सहारे लेखक सब तरहकी बातें प्रचारित कर सकते हैं। हर्ष है कि, काशीका सिण्डिकेट इस विषयमें भली भांति दत्तावधान है। उसमें बड़े २ कई धर्म सम्बन्धी ग्रन्थ हिन्दीमें निकाले हैं, जिनके अध्ययनसे आध्यात्मिक विज्ञान सुलभतासे प्राप्त हो सकता है। इस संस्थाने शब्दज्ञानार्णव नामक बृहत् शब्दकोष निकालनेका आयोजन किया है।

कहानीः—कहानी लिखनेकी प्रथा भारतमें प्राचीन है। यहां सूरति मिश्रकी सिंहासन बत्तीसी जैसी कितनी ही पुस्तकें बहुत समयसे चल रही हैं। आज इसका क्षेत्र विस्तृत है। हां, कहानियोंकी अभिव्यक्ति कभी २ भारतीय भावोंसे परे होती है, यह हिन्दीके लिये अनिष्ट है। आज कहानियोंकी भरमार है। इसका नियंत्रण आवश्यक है। इसकी पत्रिकायें भी कई निकलती हैं।

गल्पः—गल्प और कहानीमें जो अन्तर है, वह हृदयसे ज्ञात होता है। स्पष्टतया कहानी किसी बातको सीधी तरह बता देती है और गल्प उसी बातको घुमाकर बताती है। जो कहानी लेखक हैं, वे गाल्पिक और गाल्पिक कहानी लेखक हो सकते हैं। किशोरीलाल

गोस्वामी, प्रेमचन्द्र, जयशंकर प्रसाद, विश्वम्भरनाथ शर्मा, सुदर्शन, ज्वालादत्त आदि कितने ही इसके लेखक हैं। गल्पोंमें भी भारतीयताका ध्यान रहना चाहिये।

उपन्यासः—"उपन्यासस्तु वाङ्मुखम्" कहकर अमरकोशकारने उपन्यासकी प्राचीनता सिद्ध कर दी है। तब भी देवकीनन्दन खत्रीकी चन्द्रकान्तामें उपन्यास पढ़नेके लिये लोगोंको अत्यधिक आकृष्ट किया है। आज भारतका उपन्यासिक क्षेत्र भी भरा है। इसके लेखक भी सैकड़ों हैं। कहानी और गल्पोंके लेखक उपन्यास लिखनेमें भी पटु हैं। हां, हिन्दीमें बङ्गभाषाके उपन्यास रूपनारायण पाण्डेयके द्वारा खूब आकृष्ट हुये हैं। आज हिन्दीमें मौलिक उपन्यासोंकी कद्र अधिक है। पर भारतीयताका ध्यान कभी २ लोग भुला देते हैं, यह ठीक नहीं। उपन्यास अधिक सद्भावजनक होने चाहिये।

नाटकः लाखों वर्षसे भारतमें नाटकोंका प्रचार है। हिन्दीमें आज राधेश्याम, हरिकृष्ण जौहर, तुलसीदत्त शैदा, जयशंकर प्रसाद जी० पी० श्रीवास्तव, बद्रीनाथ भट्ट, गोविन्द शास्त्री, दुगवेकर नारायण प्रसाद बेताब, आगा हश्र आदि कई महानुभाव हैं। अभिनय करने लायक नाटककार थोड़े हैं। अभी तक यह नहीं ठीक कहा जा सकता कि, नाटकोंकी भाषा कैसी होनी चाहिये।

कविताः हिन्दी-कविताका ठीक रूप ८ वीं शताब्दीसे मिलता है। विशेषतया मुञ्ज और भोजकी कवितामें प्रथमकी हिन्दी-कवितायें कही जा सकती हैं। हिन्दी कविता ब्रजभाषा, खड़ी बोली और रहस्यवाद नामक तीन तरहकी हिन्दी आजकल चल रही है। इस समय जगन्नाथदास रत्नाकर, ब्रजभाषाके सर्व प्रधान कवि हैं। खड़ी बोलीकी कविता-लेखकोंमें अयोध्या सिंह उपाध्याय, रामचरित उपाध्याय, मैथिली शरण गुप्त आदि कितने ही महानुभाव हैं। रहस्यवादकी कविताओंकी हिन्दी लेखन-प्रणाली सब अशास्त्र है इसलिये हम उसे खड़ी बोलीसे पृथक् समझते हैं। इसके लेखकों में पन्त निराला, नवीन आदि कई प्रसिद्ध महानुभाव हैं। रहस्यवाद कविताकी सृष्टि बंगलाके ढंगपर भावात्मक मूक विषयोंपर हुई थी, पर आज उसका स्वरूप ठीक नहीं।

अभी हिन्दीमें समाजनीति, राजनीति, भाषाशास्त्र, गृहशास्त्र,

चित्र, अलंकार, विज्ञापन, प्रकाशन आदि अनेक विषयोंके सुधारकी अत्यधिक आवश्यकता है । शालोपयोगी पुस्तकें हिन्दीमें बहुत कम अच्छी हैं ।

हिन्दीके प्रचारसे नागरी प्रचारिणी सभा काशी, हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन प्रयाग और भारतधर्म महामण्डल काशी आदि कई संस्थायें बड़ी तत्परता दिखा रही हैं। श्रीवेङ्कटेश्वर प्रेस, भारतजीवन प्रेस, नवलकिशोर प्रेस आदि कई प्रेस हिन्दीकी बहुत समयसे सेवा कर रहे हैं। इस शताब्दीके मौलिक ग्रन्थोंमें विशालकाय ग्रन्थ बाबू श्यामसुन्दर दासका शब्दकोष, स्वामी दयानन्दका धर्मकल्पद्रुम और शिवप्रसाद गुप्तकी पृथ्वी-प्रदक्षिणा है ।

हिन्दीके समाचारपत्र दैनिक, द्विदैनिक, साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक और त्रैमासिक छः भागामें विभक्त हैं । दैनिक पत्रोंमें—अर्जुन, आज, द्विदैनिक पत्र सूर्य, परिवर्तन, भारतमित्र, वर्तमान, विश्वमित्र, लोकमत, स्वतंत्र, हिन्दुसंसार; साप्ताहिक पत्रोंमें—अभ्युदय, आर्य मित्र, कर्मवीर, जयाजी प्रताप, प्रताप, वङ्गवासी, भारतमित्र, भारतवासी, मतवाला, व्यंङ्कटेश्वर समाचार, विश्व-मित्र, श्रीकृष्णसन्देश, स्वदेश, सैनिक, हिन्दी नवजीवन, हिन्दूपञ्च, पाक्षिक पत्रोंमें—क्षत्रिय मित्र, लोकधर्म, गोरक्षक आदि; मासिक पत्रोंमें—आर्यमहिला, कल्पवृक्ष, खिलौना, चांद, बालक, भूगोल, त्यागभूमि, माधुरी, महारथी, विशाल भारत, वीणा, सरस्वती आदि; त्रैमासिक पत्रोंमें—नागरी प्रचारिणी, सम्मेलन पत्रिका आदि प्रसिद्ध हैं ।

हिन्दी परीक्षा लेकर सम्मानित करनेवाली संस्थाओंमें हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन और भारतधर्ममहामण्डल प्रधान हैं । किन्तु भारतधर्म-महामण्डल आदरणीय व्यक्तियोंकी गुण पूजा विना परीक्षाके बहुत कालसे भी करता आ रहा है । हिन्दीमें बहुत कम सम्माननीय व्यक्ति रह गये होंगे, नहीं तो सभीका सत्कार महा-मण्डलने किया है । मानदानकी सूची देखनेसे ज्ञात होता है कि, इस वर्ष भी महामण्डलने कई हिन्दीके विद्वानोंको सम्मानित किया है । वैसे तो "कास कास मां पानी, दुइ दुइ कास मां बानी" बदलती ही रहती है । पर आज माधुरी, पंजाबी, अवधी,वैसवारी

बिहारी, और मध्यदेशी हिन्दी अधिक प्रचलित तथा साहित्य-पूर्ण है।

अनुवादकोंमें रूपनारायण पाण्डेय, व्याकरणज्ञोंमें कामता प्रसाद गुरु और अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी, टीकाकारोंमें लाला भगवान् दीन, समन्वयात्मक विवेचकोंमें बाबू भगवान्दास, ग्राम्य साहित्यज्ञोंमें रामनरेश त्रिपाठी हिन्दीके प्रधान व्यक्ति हैं।

हिन्दीके प्रचारमें गान्धी, मालवीय, दीनदयालु शर्मा आदिने व्याख्यानों द्वारा बड़ी सहायता पहुंचाई है। रुपया देकर हिन्दी-प्रचारकोंको प्रोत्साहित करनेवाले महानुभावोंमें महाराज गायकवाड़ सबसे प्रथम हैं। हिन्दीके पुरस्कारोंमें मंगला प्रसाद पारितोषिक सर्व प्रधान है।

यद्यपि हिन्दीके राष्ट्रभाषा होनेमें अब कोई सन्देह नहीं रह गया तब भी बड़े शोकके साथ कहना पड़ता है कि हिन्दीके सेवकोंमें दीर्घदर्शी और विमर्शी संस्कृतके विद्वान् अभी कम हैं। जबतक संस्कृतके धुरंधर विद्वान इधर ध्यान नहीं देंगे तबतक हिन्दी प्रतिष्ठाके उच्च शिखर पर कभी नहीं पहुंच सकती। कारण यह है कि जितना सर्वाङ्गसम्पूर्ण साहित्य संस्कृतका है उतना अन्य किसी भाषाका नहीं, और संस्कृत भाषाका उच्च साहित्य अल्पमेधा और सूक्ष्म विद्योंकी शक्तिसे परे है। इस लिये आवश्यकता है कि संस्कृतके विद्वान् अत्यधिक संख्यामें हिन्दीकी ओर आकृष्ट किये जायं। यदि गूढ़ साहित्य हिन्दी न प्राप्त करेगी तो उसकी मर्यादा अक्षुण्ण न होगी। जो भाषा जितनी गूढ़ता प्राप्त करेगी वह उतनी ही अमर होगी। हिन्दीके विद्वान् लेखकोंको उचित है कि वे हिन्दीको मनोविनोदकी सामग्री न मानकर सरल विषयोंको छोड़ गम्भीर विषयोंका अध्ययन और लेखन करें। इससे उनका परिश्रम सार्थक और लोगोंका हित होगा। बङ्ग और महाराष्ट्र भाषाका उत्कर्ष संस्कृतके विद्वानों द्वारा ही हुआ है। हिन्दीको उसीका अनुकरण करना चाहिये।

हर्ष है कि स्त्रियोंने भी हिन्दी-साहित्यकी ओर अच्छा मनोयोग किया है। आज महादेवी वर्मा बी. ए., सुभद्राकुमारी चौहान, तोरन देवी लली आदि कई महिलायें उच्च श्रेणीकी कवयित्रियां हैं।

श्यामकुमारी नेहरू एम० ए०, विद्यावती शास्त्रिणी, उमानेहरू, हेमन्त कुमारी चौधरानी, विद्यावती सेठ बी० ए० आदि कई प्रसिद्ध निबन्ध लेखिकाएं हैं। किन्तु खेद है कि इनमें कई स्वधर्म, स्वाचार और स्वदेशके विरुद्ध बहुत लिखती हैं। हमारी आर्यमहिलामें कुछ दिनसे कुछ लेखिकाओंका समूह अपनी प्रतिष्ठाके अनुकूल लेख लिखनेमें सन्नद्ध है।

हां, हिन्दीमें अभी गर्हित "तू तू मैं मैं"का साम्राज्य है, यह ठीक नहीं। खण्डन मण्डन बुद्धि और विषयका विवर्द्धक है, पर उसमें सौजन्यकी मात्रा उत्साह वर्धक शब्दोंके रहते हुए भी अधिक होनी चाहिये। हमारे विचारमें हिन्दीका शरीर खड़ी बोली है, आत्मा ब्रजभाषा और रहस्यवादादि बुद्धि वैकृत्य।

ईश्वर करे हिन्दी अत्यधिक परिमार्जित होकर भारतीयोंका मस्तक ऊंचा करती हुई संसारकी समस्त भाषाओंमें प्रधानता पाकर अपनी माता संस्कृतभाषाका मुख आचन्द्रदिवाकर समुज्वल करे।

कला खण्ड।

(सम्पादक-श्रीमान् राय जगन्नाथ दासजी "लालजी" रईस, बनारस।)

इस समय नयी-पुरानी मिलाकर अनन्त कलाओंकी सृष्टि हुई है। जिनमेंसे महत्वकी कलाओंका विवरण अग्रिम डाइरेक्टरीमें दिया जायगा। अपनी प्राचीन ६४ कलाओंका व्योरा इस प्रकार है:—

(१) गीत (गाना), (२) वाद्य (बजाना), (३) नृत्य (नाचना) (४) नाट्य (नाटक करना, अभिनय करना), (५) आलेख्य (चित्रकारी करना), (६) विशेषकच्छेद्य (तिलकके साँचे बनाना), (७) तंडुल-कुसुमावलि-विकार (चावल और फूलोंका चौक पुरना), (८) पुष्पास्तरण (फूलोंकी सेज रचना वा बिछाना), (९) दशनवसनांगराग (दाँतों और अंगोंको रँगना वा दाँतोंके लिये मंजन, मिस्सी आदि, वस्त्रोंके लिये रंग और रंगानेके सामग्री तथा अंगोंमें लगानेके लिये चंदन, केसर मेंहदी, महावर, आदि बनाना और उनके बनानेकी विधिका ज्ञान), (१०) मणिभूमिका

कर्म (ऋतुके अनुकूल घर सजाना), (११) शयनरचना (बिछावन वा पलंग बिछाना), (१२) उदकवाद्य (जल तरंग बजाना), (१३) उदकघात (पानीके छींटे आदि मारना वा पिचकारी चलाने और गुलाबपाशसे काम लेनेकी विद्या), (१४) चित्रयोग (अवस्था परिवर्तन करना अर्थात् नपुंसक करना, जवानको बुड्ढा और बुड्ढेको जवान करना इत्यादि), (१५) माल्यग्रन्थन विकल्प (देव पूजनके लिये वा पहननेके लिये माला गूंथना), (१६) केशशेखरापीड़-योजन (शिखरपर फूलोंसे अनेक प्रकारकी रचना वा शिरके बालोंमें फूल लगाकर गूंथना)(१७) नेपथ्ययोग (देशकालके अनुसार वस्त्र, आभूषण आदि पहिनना), (१८) कर्णपत्रभंग (कानोंके लिये कर्णफूल आदि आभूषणोंको बनाना), (१९) गंधयुक्ति (सुगंधित पदार्थ जैसे गुलाब, केवड़ा, इत्र, फुलेल आदि बनाना) (२०) भूषण भोजन, (२१) इन्द्रजाल, (२२) कौचुमार योग (कुरूपको सुन्दर करना वा मुंहमें वा शरीरमें मलने आदिके लिये ऐसे उबटन आदि बनाना जिनसे कुरूप भी सुन्दर हो जाय), (२३) हस्तलाघव (हाथकी सफाई वा फुर्ती वा लाग), (२४) चित्रशाकापूपभक्ष्य-विकार क्रिया (अनेक प्रकारकी तरकारियां, मालपूवा और खानेके पकवान बनाना) । सूपकर्म, (२५) पानकरसरागासव योजन (पीनेके लिये अनेक प्रकारके शर्बत, अर्क और शराब आदि बनाना), (२६) सूचीकर्म (सीना पिरोना) (२७) सूत्रकर्म (रफूगरी और कसीदा काढ़ना तथा तागेसे तरह तरहके वेल बूटे बनाया), (२८) प्रहेलिका (पहेली वा बुझौवल कहना और बूझना), (२९) प्रतिमाला (अंत्याक्षरी अर्थात् श्लोकका अंतिम अक्षर लेकर उसी अक्षरसे आरंभ होने वाला दुसरा श्लोक कहना, वैतवाजी) (३०) दुर्वाचक योग (कठिन पदों वा शब्दोंका तात्पर्य निकालना), (३१) पुस्तक वाचन (उपयुक्तरीतिसे पुस्तक पढ़ना) (३२) नाटिकाख्यायिका दर्शन (नाटक देखना वा दिखलाना), (३३) काव्य समस्यापूर्त्ति (३४) पट्टिका वेत्र वाण विकल्प (नेवाड़, वाध वा वेंतसे चारपाई आदि बुनना), (३५) तर्ककर्म (दलील करना वा हेतुवाद), (३६) तक्षण (वढ़ई संगतराश आदिका काम करना), (३७) वास्तु विद्या (घर बनाना इञ्जि-

नियरी), रूप्यरत्नपरीक्षा (सोने चांदी आदि धातुओं और रत्नोंको परखना।

(३६) धातुवाद (कच्ची धातुओंको साफ करना वा मिली धातुओंको अलग अलग करना), (४०) मणिराग ज्ञान (रत्नोंके रंगोंको जानना), (४१) आकर-ज्ञान (खानोंकी विद्या), (४२) वृक्षायुर्वेद योग (वृक्षोंका ज्ञान, चिकित्सा और उन्हें रोपने आदिकी विधि), (४३) मेष-कुक्कुटलावक युद्धविधि (मुर्गा, भेड़ा, बेटरू, बुलबुल, आदिको लड़ानेकी विधि), शुकसारिका आलापन (तोता मैना पढ़ाना), (४५) उत्सादन (उबटन लगाना और हाथ पैर सिर आदि दबाना), (४६) केशमार्जन (कौशलसे बालोंका मलना और तैल लगाना), (४७) अक्षर मुष्टिका कथन (करपलई), (४८) म्लेच्छितकलाविकल्प (म्लेच्छ वा विदेशी भाषाओंका जानना), (४६) देश भाषा ज्ञान (प्राकृतिक बोलियोंको जानना), पुष्प शकटिकानिमित्त ज्ञान (दैवी लक्षण जैसे बादलकी गरज, बीजुलीकी चमक इत्यादि देखकर आगामी घटनाके लिये भविष्यद्वाणी करना), (५१) यंत्रमातृका (यंत्र निर्माण), (५२) धारणमातृका (स्मरण बढ़ाना), (५३) पाठ्य (दूसरेको कुछ पढ़ते हुए सुनकर उसी प्रकार पढ़ देना), (५४) मानसी काव्य-क्रिया (दूसरेका अभिप्राय समझकर उसके अनुसार तुरन्त कविता करना वा मनमें काव्य करके शीघ्र कहते जाना), (५५) क्रियाविकल्प (क्रियाके प्रभावको पलटना), (५६) छलितकयोग (छल वा ऐयारी) करना, (५७) अभिधानकोष (छंदोंका ज्ञान,) (५८) वस्त्रगोपन (वस्त्रोंकी रक्षा करना), (५६) द्यूतविशेष (जुआ खेलना), (६०) आकर्षण क्रीड़ा (पासा आदि फेंकना), (६१) बालक्रीड़ा कर्म (लड़का खेलाना), (६२) वैनायकी विद्या ज्ञान, (विनय और शिष्टाचार, इल्म, इख्लाक वो आदाब), (६३) वैजयिकीविद्या, ज्ञान, (६४) वैतालिकी विद्या ज्ञान।

संस्था खंड ।

[सम्पादक—श्रीयुत कालीपद सरकार बी० ए० एल एल० बी०]

इण्डियन नेशनल कांग्रेसके संक्षिप्त नियम ।

कांग्रेसका उद्देश्य—भारतवर्षको हर न्याय तथा शांतिमय उपायोंसे स्वराज्य प्राप्त करा देना है। कांग्रेसका प्रतिवार्षिक महाधिवेशन बड़े दिनकी छुट्टियोंमें पूर्व महाधिवेशन निश्चत अथवा ऐसे स्थानमें होगा जिसका सर्वभारतीय कांग्रेस समिति निश्चय करे। सर्व भारतीय कांग्रेस समिति आवश्यकतानुसार स्वयं या अधिकांश प्रादेशिक कांग्रेस समितियोंके अनुरोधसे समय समय पर कांग्रेसका विशेष महाधिवेशन भी करेगी।

कांग्रेसके महाधिवेशनमें आने वाले प्रतिनिधियोंकी संख्या साधारणतः जन संख्याके प्रति पचास हजार पर एक है। प्रदेशसे स्त्रियों, अल्पसंख्यक रक्षणीय जातियों तथा वर्गोंका ख्याल रखते हुए निश्चित प्रतिनिधि चुने जानेका प्रबन्ध वहांकी प्रादेशिक समिति करेगी तथा उसके लिये जिला व स्थानीय समितियोंको नियम बना देगी।

प्रति वार्षिक तथा विशेष महाधिवेशनके निश्चयोंको कार्यान्वित करना तथा कांग्रेसके कार्योंका नियमानुसार प्रबन्ध करना सर्व भारतीय कांग्रेस समितिका कर्तव्य होगा। कांग्रेसके महाधिवेशन में विषयनिर्वाचिनी समिति भी सर्वभारतीय कांग्रेस समिति ही होगी। प्रादेशिक समिति, जिला समिति तथा स्थानीय समिति क्रमानुसार इसके मातहत रहकर काम करेगी।

प्रत्येक तहसील, तालुका, फिर्का या सब डिविजनकी एक स्थानीय कांग्रेस समिति होगी। जिलेके कुल स्थानीय कांग्रेस समितियोंके प्रतिनिधियोंकी सभा जिला कांग्रेस समिति होगी। प्रदेश भरको कुल जिला कांग्रेस समितियोंके प्रतिनिधियोंकी सभा प्रादेशिक कांग्रेस समिति होगी। कुल प्रादेशिक कांग्रेस समितियोंके प्रतिनिधियोंकी सभा सर्व भारतीय कांग्रेस समिति होगी।

जो व्यक्ति उम्रमें १८ वर्षसे कम न होगा तथा कांग्रेसके उद्देश्य-साधनकी रीति तथा नियमोंकी लिखित मंजूरी देगा, वही स्थानीय कांग्रेस समितिका सभासद रहेगा। ऐसा सभासद ही कांग्रेसके जिला, प्रादेशिक तथा सर्वभारतीय समितिमें, महाधिवेशनमें विषय निर्वाचिनी सभामें तथा कार्यकारिणी समितियोंमें योग दे सकेगा।

सर्वभारतीय समितिमें सब प्रदेशोंके मिलकर ३५० सदस्य सभापतियों, मंत्रियों और कोषाध्यक्षोंके सिवाय होंगे। सर्वभारतीय समिति द्वारा निश्चित तथा अन्य उपस्थित अत्यन्त जरूरी कामोंको "कांग्रेस कार्यकारिणी समिति" किया करेगी। जिसमें सर्वभारतीय समितिके चुने हुए ६ सदस्य तथा वर्तमान सभापति, मंत्रीगण व कोषाध्यक्षगण मिलकर १५ व्यक्ति होंगे कांग्रेसके ३ प्रधान मंत्री व २ कोषाध्यक्ष होंगे।

कांग्रेसने प्रचलित भाषा तथा जनसंख्याके अनुसार अपने ये २० प्रदेश कायम किये हैं। पहिला नाम प्रदेशका, उसके बादका अंक उस प्रदेशकी ओरसे सर्वभारतीय कांग्रेस समितिमें जानेवाले सदस्योंकी संख्याका उसके बादका वहांकी भाषाका व आखिरीका नाम केन्द्रस्थानका है:—(१) तामिलनाडू-मद्रास २५ (तामिल) त्रिचनापली, (२) आंध्र २४ (तेलगू) विजगांड़ा, (३) कर्नाटक १५ (कनाडी) गन्तूर, (४) केरल ८ (मलायी) कालीकट, (५) बंबई शहर ७ (मराठी व गुजराती) बंबई, (६) महाराष्ट्र १६ (मराठी) पूना, (७) गुजरात १२ (गुजराती) अहमदाबाद, (८) सिन्ध ६ (सिंधी) हैदराबाद, (९) संयुक्त प्रदेश ४५ (हिन्दी) इलाहाबाद, (१०) पंजाब और पश्चिमोत्तर सीमाप्रदेश ३७ (पंजाबी और हिंदी) लाहोर, (११) दिल्ली ८ (हिंदी) दिल्ली, (१२) अजमेर-मेरवाड़ा ब्रिटिश राजपुताना ७ (हिंदी) अजमेर, (१३) मध्यप्रदेश १३ (हिंदी) जबलपुर, (१४) मध्यप्रदेश ७ (मराठी) नागपुर, (१५) बरार ७ (मराठी) अमरावती, (१६) बहार ३२ (हिंदी) पटना, (१७) उत्कल १२ (उड़िया) कटक (१८) बंगाल व समाघाटी ४८ (बंगला) कलकत्ता, (१९) आसाम ५ (आसामी) गोहाटी, (२०) ब्रह्मा १२ (ब्राह्मी) रंगून।

कांग्रेसकी कार्यवाही यथासंभव हिन्दुस्तानीमें ही होगी। अंगरेजी और प्रान्तीय भाषाओंका भी उपयोग हो सकता है।

कांग्रेसके प्रेसिडेण्ट और
अधिवेशनके स्थान तथा वर्ष।

राष्ट्र महासभाके अबतक कौन कौन प्रेसिडेंट हुये और कहां किस वर्ष कांग्रेस हुई, इसकी तालिका कालानुक्रमसे नीचे दी जाती है—

क्रम सं०	सन्	अधिवेशका स्थान
(१)	१८८५	बम्बई
	श्री श्रीउमेशचन्द्र बनर्जी	
(२)	१८८६	कलकत्ता
	श्रीदादाभाई नौरवजी	
(३)	१८८७	मद्रास
	श्रीबद्रुद्दीन तय्यबजी	
(४)	१८८८	प्रयाग
	श्रीजार्जयूल	
(५)	१८८९	बंबई
	श्रीसर विलियम वेडरवर्न	
(६)	१८९०	कलकत्ता
	श्रीफिरोजशाहमेहता	
(७)	१८९१	नागपुर
	श्रीआनन्द चालू	
(८)	१८९२	प्रयाग
	श्रीउमेशचन्द्र बनर्जी	
(९)	१८९३	लाहौर
	श्रीदादाभाई नौरौजी (एम० पी०)	
(१०)	१८९४	मद्रास
	श्रीअलफ्रेड वेब (एम० पी०)	
(११)	१८९५	पूना
	श्रीसुरेन्द्रनाथ बनर्जी	
(१२)	१८९६	कलकत्ता
	श्री आर० एम० सयानी	
(१३)	१८९७	अमरावती
	श्रीशंकरन् नायर	
(१४)	१८९८	मद्रास
	श्रीआनन्दमोहन बोस	
(१५)	१८९९	लखनऊ
(१६)	१९००	लाहौर
	श्री ना० ग० चन्दावरकर	
(१७)	१९०१	कलकत्ता
	श्री डी० ए० वाच्छा	
(१८)	१९०२	अहमदाबाद
	श्रीसुरेन्द्रनाथ बनर्जी	
(१९)	१९०३	मद्रास
	श्रीलालमोहन घोष	
(२०)	१९०४	बंबई
	श्रीसर हेनरी काटन	
(२१)	१९०५	काशी
	श्रीगोपालकृष्ण गोखले	
(२२)	१९०६	कलकत्ता
	श्रीदादाभाई नौरौजी	
(२३)	१९०८	मद्रास
	श्रीरासबिहारी घोस	
(२४)	१९०९	लाहौर
	श्रीमदनमोहन मालवीय	
(२५)	१९१०	प्रयाग
	श्रीसर विलियम वेडरवर्न	
(२६)	१९११	कलकत्ता
	श्रीविशननारायण दर	
(२७)	१९१२	बांकीपुर
	श्री रा० ना० मुधोलकर	
(२८)	१९१३	करांची
	श्रीनवाब सैयद अहमद	
(२९)	१९१४	मद्रास
	श्रीभूपेन्द्रनाथ बसु	
(३०)	१९१५	बंबई
	श्री सर स० प्र० सिंह	
(३१)	१९१६	लखनऊ
	श्री अम्बिकाचरण मजुमदार	
(३२)	१९१७	कलकत्ता
	श्रीएनीबेसेन्ट	
(३३)	१९१८	दिल्ली
	श्रीमदनमोहन मालवीय	
(३४)	१९१९	अमृतसर
	श्रीमोतीलाल नेहरू	
(३५)	१९२०	नागपुर
	श्रीविजयराघवाचारिअर	
(३६)	१९२१	अहमदाबाद
	श्रीचित्तरंजनदास	
(३७)	१९२२	गया
	श्रीचित्तरंजनदास	
(३८)	१९२३	कोकानाडा
	श्रीमहमद अली	

(३९) १९२४ बेलगांव
महात्मा गान्धी
(४०) १९२५ कानपुर
श्रीसरोजिनी नायडू
(४१) १९२६ गौहाटी
श्रीनिवास अयङ्गर
(४२) १९२७ मद्रास
श्रीडाक्टर अन्सारी
(४३) १९२८ कलकत्ता
श्री पं० मोतीलालजी नेहरू
(४४) १९२९ लाहोर
श्री पं० जवाहिरलालजी नेहरू

परिशिष्ट

सूरत कांग्रेस।

सूरतमें सन् १९०७ में कांग्रेस भङ्ग हुई, इसलिए कांग्रेसकी संख्यामें इसकी गणना नहीं कीजाती।

अध्यक्षकी अनुपस्थिति।

अहमदाबाद (१९२१) की कांग्रेसके अध्यक्ष दे० चित्तरञ्जन दास थे। पर वे उस समय १७ (२) क्रिमिनल ला एमेंडमेंड ऐक्टमें गिरफ्तार करके प्रेसिडेन्सी जेलमें रक्खे गये थे। इसलिये उनकी अनुपस्थितिमें हकीम अजमल खांने अध्यक्षका काम किया।

स्पेशल कांग्रेस।

स्पेशल कांग्रेसकी तालिका इस प्रकार है—

(१) १९१५ बंबई
श्रीहसन इमाम
(२) १९२० कलकत्ता
श्रीलाला लाजपतराय
(३) १९२३ दिल्ली
श्रीअबुल कलाम आजाद

स्थानान्तर।

(१) सन् १८८५ की पहली कांग्रेस पूनेमें होनेवाली थी, पर वहांपर हैजेका प्रकोप होनेसे वह कांग्रेस बम्बईमें हुई। कुछ लोग कहते हैं कि, हैजेका यह प्रकोप पूनेमें उतना नहीं था, जितना सरकारी अधिकारियोंके चित्तमें था।

(२) सन् १९०७ की कांग्रेस नागपुरमें होनेवाली थी, पर वहां गरम दलकी गरमी देखकर कांग्रेसके सूत्रधार वह कांग्रेस सूरतमें लेगये। वहां कांग्रेस भंग हो गयी।

शान्तिनगरम् ।

सभापति और कोषाध्यक्ष—महाराजाधिराज दरभङ्गाधिपति ।

पृष्ठ-पोषकः—हिन्दु-सूर्य्य महाराणा उदयपुराधिपति प्रभृति ।

एक आदर्श हिन्दू नगरके स्थापनका साधन पर्व ।

दान या चन्दा आवश्यक नहीं होगा ।

सङ्घशक्ति और बुद्धिकी सुचालनासे ही सुसम्पन्न होगा ।

(प्रारम्भ करनेके लिये एक हजार ग्राहक आवश्यक हैं, उनसे भी बहुत ज्यादा अर्थात् तेरह सौ ग्राहक इस बीचमें ही हो गये हैं, जिन्होंने साढ़े तेरह लाख रुपयेकी जमीन खरीदना स्वीकार किया है। जिनमेंसे कुछ रुपया आ भी गया है और बंकमें जमा भी हो गया है।)

उद्देश्य और सहयोगके लिये आमन्त्रण ।

(१) भारतीय सभ्यता प्रतिभा कर्मशक्ति संग्रथन-शक्ति और आत्मरक्षणमें बुद्धि वीरता एवं सनातन हिन्दू धर्मका आदर्श और वैशिष्ट्य पूर्णाङ्गरूपसे प्रकटित अवस्थामें जगत्के सामने दृष्टान्त और बीज रूपसे अन्ततः एक स्थानमें भी चिरकाल तक संरक्षण-की आशासे—

(२) चित्तशोधन बुद्धिविकाश आयुःस्वास्थ्योन्नति पराऽपरा-विद्यालाभ और साधनशक्ति भारतके इन पांच विशेष ऐश्वर्य्योंके चिरकाल तक संवर्द्धनमें सामने आनेवाली सब प्रकारकी प्रतिकूल-ताओंको दूर करने और अनुकूलताओंका संवर्द्धन करनेके उद्देश्यसे—

(३) अन्नवस्त्र और गृहसम्पत्ति एवं शिक्षा और साधनकी सुव्यवस्था जो अब भी धर्म्म और सभ्यताका विक्रय न करके भी अति सरलतासे ही हो सकती है, उसको कार्य्यरूपसे समाजको दिखानेके उद्देश्यसे—

(४) लोकवृद्धिके साथ ही साथ प्रत्येकके लिये एक लाख हाथ धर्मभूमिके हिसाबसे सङ्घके कृषिकार्य्यको बढ़ाकर प्रत्येकको अन्नवस्त्रादिके सम्बन्धसे स्वतोनिर्भर और निश्चिन्त रखकर सदा सचेत रखना, चरित्रकी दृढ़ता, आत्मरक्षणमें बुद्धि, धीरता, सङ्घ-

बन्धन, परार्थपरता एवं शान्ति और शृङ्खलाके विषयमें आदर्श-जीवन, धर्म्मलक्ष्य एक कर्मयोगी गृहस्थसङ्घका गठन करते हुए, उनके दृष्टान्त और सुयोगके आदर्शसे सब प्रदेशोंके सर्वस्तरके (श्रेणीके) सर्व्व सम्प्रदायके लोगोंको लेकर एक लक्ष्य और एकाभिमुख एक जातिगठनके उपाय स्वरूपसे—

हम शान्तिनगर नामसे सब विषयोंमें सम्पूर्ण अनुकूलताओंका एक आदर्श नगर स्थापन करनेमें अग्रसर हुए हैं।

काशीधाममें मोक्षक्षेत्र पञ्चकोशीके भीतरमें असो और वरुणाके बीचमें बहुत ऊंचे समतल स्वास्थ्यकर स्थानमें आधा कोस लम्बी चौड़ी एक विशाल जमीन लेकर हमारे आदर्शनगरके स्थापनाकी व्यवस्था हुई है। उसकी जमींदारीका स्वत्व और प्रजास्वत्व मूल्य देनेसे ही मिलेगा, इस प्रकार निश्चय हुआ है। स्वास्थ्यविज्ञान, समाविज्ञान, अर्थविज्ञान और धर्म्मविज्ञानकी विशेष रूपसे आलोचना करके सर्वज्ञ ऋषियोंके मत और वर्त्तमान वैज्ञानिकोंके आदर्शको विचारमें रखकर सर्व्वापेक्षा श्रेष्ठतम आदर्शसे उक्त कल्पित नगरका एक नक्शा भी बन गया है। कलकत्ता इम्प्रूभमेण्ट ट्रस्टके और इस विषयके विशेषज्ञ दस बारह इञ्जिनियरोंके साथ आलोचना भी की गई है। सबोंने ही एक वाक्यसे इसकी विशेष प्रशंसा और समर्थन किया है। ऊपर उसकी प्रतिलिपि दी गई है।

सनातनधर्म्मका आदर्श और चित्तशुद्धि, बुद्धिविकाश, आयुःस्वास्थ्योन्नति, पराऽपरा विद्यालाभ और साधन विषयक शक्ति विकाशिनी ब्रह्मचर्य्य मूलक पञ्चाङ्ग शिक्षा एवं समवाय नीतिके कृषिगोरक्षा वाणिज्यादिको समर्थन करते हैं, वे जिस किसी स्तरमें (अवस्थामें) होनेपर भी, उन स्थापनका अन्यतम मुख्य उद्देश्य है।

नगरमें दो नीतियोंके दो समाज समान संख्यामें निवास करेंगे। एक दल आदर्शके पालनमें बाध्य रहेगा और अन्यदल पालनमें स्वाधीन रह कर भी सरलस्वभावसे आदर्श सम्पूर्ण रूपसे समर्थन करने वाला होगा। प्रथमदल व्यक्तिगत सम्पत्ति न रखकर सङ्घको पुष्ट करनेके भावसे समाजके कल्याणसाधनमें और स्नान सन्ध्या होम ध्यान धारणादि धर्म नियमोंके परिपालनमें एवं पुत्र

कन्याओंको ब्रह्मचर्य्य मूलक सुशिक्षा देनेमें वाध्य रहेगा। द्वितीय दल इस धर्म्मनीति और अर्थनीतिके पालनमें सम्पूर्ण स्वाधीन रूपसे रहकर ही केवल हमारे आदर्शके समर्थनके लिये किम्वा सत्सङ्गमें रहकर शान्ति प्राप्त करनेकी आशासे अथवा क्रमोन्नतिकी आशासे इस नगरमें निवास करेगा। इस द्वितीय दलके लिये नगरके चारों तरफ चतुष्कोण दस श्रेणियोंमें पांच हजार खण्ड (टुकड़े) अलग निर्धारित किये हैं। अर्थशक्ति और प्रयोजनके अनुसार सबके लिये अपनी अपनी इच्छाके अनुसार मिल सके, इस अभिप्रायसे सहजलभ्य होनेके लिये २५, २०, १०, ५, और ३, पर्य्यन्त क्षुद्र परिमाणकी भी जमीनें यथाक्रम ६०, ८०, ५६, ४० और ३० हाथके विस्तारके अलग अलग टुकड़ेमें रक्खी जायंगी।

३२० वर्गहस्त वा प्रति विश्वाका मूल्य केवल २००) दो सौ रुपयाके हिसावसे देनेसे ही कोई भी सनातनधर्मी उक्त जमीनके टुकड़ोंमेंसे किसी भी प्रकारका टुकड़ा खरीद सकेगा। और भी विशेष ज्ञातव्य यह है कि, इन्हीं मूल्योंके रुपयोंसे ही जमीनका यथार्थ मूल्य देकर भी इतना बचाव रहेगा कि जिससे इस आदर्श नगरकी सड़क आदि देवस्थान आदि शिक्षालय आदि चिकित्सालय आदि बाजार आदि और सब धर्म्मस्थान गोशाला आदि बन सकेंगे और चिरकाल पर्य्यन्त उनका संरक्षण हो सकेगा। सुतरां इस नगरमें जलके लिये, रोशनीके लिये वा सफाई आदि किसी कामके लिये भी किसी प्रकारका टेक्स नहीं देना पड़ेगा। दूसरी ओर स्मरण रखियेगा, वर्त्तमान शहरमें इस समय ५०००) पांच हजार रुपयेसे १५००) डेढ़ हजार रुपये तककी अपेक्षा कम मूल्यमें कहीं भी एक विश्वा जमीन नहीं पावेंगे और उसके ऊपर चुङ्गी और टेक्सका तो जुलुम है ही। वर्तमान शहरों की अपेक्षा यहां सब विषयोंमें ही अधिकतर सुव्यवस्था रहेगी। तो भी समवाय नीतिके कारण इतने कम मूल्यमें जमीन देना सम्भव होगा।

इस दूरदर्शितासे सम्पादनकी व्यवस्था होनेसे किसीको कुछ भी दान देना या त्याग स्वीकार करना नहीं होगा, वल्के धनके हिसावसे भी सब ही लाभवान् होंगे। केवल संघशक्ति और बुद्धिकी सुचालनासे ही हिन्दूसभ्यताके स्तम्भ स्वरूप इतने बड़े

एक कल्याणजनक सुमहत् कामका सम्पादन होसकेगा। देशभरके कर्मठ लोग और सर्वसाधारण लोग बुद्धि और कर्म्म शक्तिके विकाशका और महत् काममें आत्मोत्सर्ग करनेका सुभीता पावेंगे।

इस प्रकारसे पर्य्याप्त संख्याका कर्मयोगियोंका दल दृढ़चरित्र, स्वतोनिर्भर और केन्द्रीभूत होने पर, उनमेंसे एक एक दलमें विभक्त होकर भारतवर्षके प्रत्येक प्रदेशमें, प्रत्येक जिलेमें, यहां तक कि दस पन्द्रह कोसके अन्तरमें वहां जाकर और केन्द्र स्थापन करके अपने चरित्र, धर्म्मजीवन और स्वतोनिर्भरताके दृष्टान्तसे उस केन्द्रके चारों तरफके समाजकी शिक्षा, अन्न वस्त्रके निर्बाहकी व्यवस्था, संघबन्धन और एकमतकी ओर अग्रसर करनेका कार्य्य कर सकेंगे। सुतरां सनातनधर्म्मावलम्बियोंकी भारतव्यापी संघबद्धता अनायास निश्चयताके साथ इस आदर्श नगरके स्थापनसे कार्य्यमें परिणत होगी।

इस समय मैं आपलोगोंके पास साहससे निवेदन करता हूँ कि प्रयोजन बुद्धिसे ही हो, किम्वा स्वजातिको उसके सनातन आदर्शमें प्रतिष्ठित रखनेके लिये ही हो अथवा अन्न वस्त्र गृह शिक्षा और साधन समस्याके आदर्शानुरूप परिपूर्ण करनेमें सहायता करनेके उद्देश्यसे ही हो, उक्त नगरकी जमीनका एक एक टुकड़ा खरीदें। स्वार्थत्याग न करके भी बल्कि लाभवान् होते हुए स्वजातिके आदर्श और प्राणकी रक्षा करनेमें हेतुभूत हों।

जमीनके खरीदने वाले सज्जन एक बार इस आदर्श नगरके नीचे लिखे बीस विशेष सुभीतों पर लक्ष्य करें।

(१) इस नगरमें निवास करने किम्वा समय पर आकर रहने पर नगरके आदर्शसे अपने स्त्री पुत्र पुत्रियोंको उत्तम शिक्षा प्राप्त हो सकेगी। काशीधाम शान्तिजनक महातीर्थ क्यों है? इसका यथार्थ विशेषत्व क्या है? यह सब प्रत्यक्ष रूपसे अनुभव कर सकेंगे।

(२) दाल चावल घी दूध आदि खाद्य पदार्थ और लोहा ईंट पत्थर आदि बनानेके पदार्थ एवं अन्यान्य आवश्यक सकल वस्तु

ही समवाय नीतिसे थोकबन्द खरीदनेके भावसे खरीद करके समान भावसे सबको बांटनेकी व्यवस्था रक्खी जायगी, सुतरां अत्यन्त सस्ते भावसे पा सकेंगे ।

(३) दूध, मक्खन, घी, तेल, आटा, खांड और औषध अपनी देख रेखमें तयार कराकर अपने निःस्वार्थ मनुष्योंके द्वारा बांटनेकी व्यवस्था रहेगी, सुतरां आयुः स्वास्थ्य और धर्म्मरक्षामें एवं बालक और प्रसूता स्त्रियोंकी अकालमृत्युके प्रतीकार करनेमें सुभीता पावेंगे ।

(४) संघके चिकित्सक अपनी बनाई शुद्ध औषधि देकर बिना मूल्य शान्ति नगरमें निवास करने वाले सबकी चिकित्सा करेंगे ।

(५) हमारी शिक्षा और पुस्तकादि बिना मूल्य सबके पुत्र कन्या पा सकेंगे । वेद, वेदाङ्ग, प्राच्य-पाश्चात्य दर्शन, विज्ञान, गणित, अर्थनीति, कृषि, गोपालन और समाजनीति प्रभृति सब विद्याओंकी शिक्षाकी यहां उच्चतम श्रेणीकी व्यवस्था रहेगी ।

(६) रुचिकर और धर्मानुकूल पुराण पाठ, नाटक प्रदर्शन और पूर्णाङ्ग पुस्तकालय द्वारा शिक्षाकी सुविधा भी रहेगी ।

(७) काशीके प्राचीन शहरके साथ तुलना करनेसे इस नगरमें सब विषयोंकी ही अधिकतर सुव्यवस्था रहने पर भी जमीनका मूल्य बहुत सस्ता पड़ेगा ।

(८) जो कोई इच्छा करनेसे ही संघके कृषिक्षेत्र और गोरक्षण-के साथ अपने व्यक्तिगत कृषिक्षेत्र और गौ भैंस स्वतन्त्र रूपसेही रखनेका सुविधा पावेंगे; सुतरां सहज ही जीविकाकी स्थाई व्यवस्था भी कर सकेंगे । थोड़े मूल्यमें अति उर्व्वरा जमीन पावेंगे ।

(९) स्वास्थ्यकी सुविधाकी तो तुलना ही नहीं हो सकती । प्रत्येक मकानके सामने २८ हाथ प्रशस्त रास्ता रहेगा और चारों और पञ्चांश बगीचा अवश्य रहेगा । सबके काममें आनेके लिये इस संघके द्वारा परिचालित शुद्ध और पूर्ण बाजार, कृषि और फूल फलोंका परीक्षण क्षेत्र, गौतम याज्ञवल्क्य अगस्त्य शङ्कराचार्य्य रामानुज कुमारिलभट्ट महाराणाप्रताप सिंह,शिवाजी और रामदास प्रभृति महात्माओंकी मूर्त्तियोंसे सुशोभित मालाकार प्रशस्त

प्रमणोद्यान, गङ्गा जमुना आदिकी मूर्त्तियोंसे सुशोभित सुबृहत् जलाशय, पुष्पोद्यान, पुस्तकालय, महाविद्यालय, ब्रह्मचारी आश्रम, व्यायामशाला, सभा करने और कथोपकथन करनेके लिये विस्तृत चत्वर (चबूतरा) एवं गायत्रीदेवी अग्नि सूर्य्य गणपति शिव शक्ति विष्णु ब्रह्मा और गुरु इन नव विग्रहोंके नव मन्दिर रहेंगे। बारह रास्ते और चार पुल ४० हाथ चौड़े रहेंगे। सारांश यह कि रास्ता, बगीचा, बाजार और गृहादि निर्म्माणके लिये स्वास्थ्यके विचारका ही मुख्य लक्ष्य रखकर नक्शा बना है। अनिष्टकर वस्तु मिश्र खाद्य पदार्थके तो इस नगरमें प्रवेश होनेका भी सुविधा नहीं रहेगा।

(१०) संघशक्ति और परिचालन शक्ति बढ़ानेके लिये इस नगरकी म्युनिसपिल्टी अपने हाथमें रहेगी। उसमें पूर्व कथित दोनों दलोंके व्यक्ति अधिकारी होंगे।

(११) संघकी सब सम्पत्तिके, यहांतक कि बाहरके कृषिक्षेत्र और गोधनके एवं मठ मन्दिर और शिक्षाविभागके ऊपर संरक्षक परिषद् (ट्रस्ट बोर्ड) के सदस्य रूपसे अधिकार भी नगर निवासी प्रत्येक व्यक्तिके हाथमें रहेगा।

(१२) रास्तानिर्माणके लिये किम्बा नगरमें आनेवाली वस्तुओंके ऊपर चुङ्गी (म्युनिसिपैलिटी टेक्स) देना नहीं होगा। स्थायी भाण्डारमें जमा रुपयोंकी आयके द्वारा ही सब कार्य्य अच्छी तरहसे चल सकेंगे।

(१३) वहां मुकद्दमोंकी सम्भावना ही नहीं रहेगी, क्योंकि सारे नगरकी जमींदारीका स्वत्व संघ वा समष्टिके अधीन रहेगा, एवं क्रेताओंका संघके सदस्य रूपसे स्वत्व रहेगा। किन्तु व्यक्तिगत रूपसे अपनी जमीनके ऊपर चिरस्थाई मौरूसी स्वत्व अर्थात् अवर्द्धनीय करसे सब प्रकारसे व्योहार करनेका चिरस्थायी अधिकार रहेगा। सुतरां सीमाकी रेखाकी रक्षा करनेका दायित्व (जिम्मेवरी) संघके ऊपर ही रहेगा।

(१४) अपनी जमीन घर आदि जिस किसी शर्तसे दान विक्रय आदि जिस किसी रूपसे हस्तान्तरित कर सकेंगे अर्थात् दे सकेंगे।

(१५) मूल्यका रुपया इकट्ठा न देनेसे भी चल सकेगा। कमसे कम तृतीयांश देकर बाकी रुपया तीन वर्षमें किस्तके क्रमसे दे सकेंगे।

(१६) मकान खुदको ही बनाना होगा, किन्तु मध्यवित्त लोगों के लिये अर्थात् तीन हजारसे सात हजार रुपया खर्च होने तकका घर संघसे २० बीस वर्षमें क्रमशः देनेकी शर्तपर बना देनेकी व्यवस्था रहेगी। अपनी इच्छाके अनुसार घर छोटा बड़ा बना सकेंगे।

(१७) इच्छा करनेपर धनी दरिद्र सब ही बिना मूल्य संघसे नाना आकार और फैशनके मकानका प्लेन और इष्टिमेट पा सकेंगे, किन्तु जमीन विभक्त होनेका समय निश्चय होनेपर पावेंगे।

(१८) संघके तत्वावधानमें मकान बन सकेगा। एवं खाली मकानके रक्षणावेक्षणका भार भी संघ ले सकेगा।

(१९) जमीनका मूल्य पूरा देनेपर एवं जमीन पानेपर, कमसे कम आधा रुपया ६॥ रुपया सैकड़ा वार्षिक सूद देकर अनायास संघसे आपत्ति विपत्तिके समय कर्ज रूपसे पा सकेंगे।

(२०) गङ्गा स्नान, विश्वनाथ दर्शन और स्टेशनपर जाना आना, संघकी मोटर लारीसे अति सस्तेमें हो सकेगा। पञ्चक्रोशीके भीतर अर्थात् मोक्षक्षेत्रमें और गङ्गाजीके किनारे पर ग्राम बसानेके योग्य स्थान मिलना सम्भव नहीं है और गङ्गाजीके किनारेके लिये मोक्ष-क्षेत्र त्याग करना भी वाञ्छनीय नहीं है। इस कारणसे गङ्गादेवी विश्वनाथ और स्टेशन इन तीनों स्थानोंसे ही डेढ़ माईल दूर मोती झीलसे दुर्गाजी पर्य्यन्त विस्तृत स्थान नगरके लिये निर्धारित हुआ है। अस्तु, मोटरलारी दो तीन रक्खी जायगी ही और अकपट सत्यधर्मका आदर्श, सामाजिक शृङ्खला, स्वास्थ्य द्रव्य बाजारकी पूर्णता और समवाय नीतिकी सुविधाके साथ तुलना करनेपर भी उक्त दूरत्व कुछ भी नहीं है।

आज पर्य्यन्त ग्राहक संख्या तेरहसौ पचहत्तर और उनके स्वीकार किये हुये भूमिमूल्यस्वरूप प्राप्त होने योग्य कुल रुपये साढ़े-तेरह लाख हो गये हैं। सबको ही कमसे कम तृतीयांश रुपया देनेके लिये अनुरोध पत्र भेजा गया है। कमसे कम एक हजार सदस्योंके भी रुपया देनेपर काम प्रारम्भ हो जायगा। इति शम्

आपके सहयोगप्रार्थी—

कोषाध्यक्ष और सभापति—महाराजाधिराज दर्भङ्गाधिपति।

संगठननायक—श्रीशारदानंद ब्रह्मचारी, शान्तिनगर संगठन कार्यालय, ११६ मिश्रपोखरा, काशी।

सेक्रेटरी—कुमार श्री कवीन्द्रनारायण सिंह एम० एल० सी० (काशीराज परिवार)—सोमचन्द्र चट्टोपाध्याय विद्याभूषण बी० एस० सी०, बी० एल० एम० आई० ई० ई०, प्रोफेसर आफ इञ्जिनियरिङ्ग, हिन्दू विश्वविद्यालय, बनारस।

सोलिसिटर-अर्द्धेन्द्रकुमार गङ्गोपाध्याय कलिकाता हाईकोर्ट। विमलचन्द्र मुखोपाध्याय एलएल० बी० एडवोकेट बनारस।

अन्य संस्थाएं।

उक्त संस्थाओंके अतिरिक्त निम्न लिखित संस्थाएं अपने अपने ढंगसे विशेषता और महत्त्व रखती हैं:—(१) हिन्दू महासभा (इसमें आर्य समाजी आदि भी सम्मिलित हैं)। (२) आर्यधर्म-प्रचारिणी सभा (यह काशीके तीर्थोद्धारका कार्य करती है।) (३) आर्यमहिला हितकारिणी महा परिषद् (सनातन धर्मावलम्बिनी महिलाओंकी एकमात्र महासभा है। इससे सम्बन्धयुक्त एक विधवा अन्नसत्र है, जिसके द्वारा सनातनधर्मावलम्बिनी विधवाओं-को अन्नकी सहायता दी जाती है और इसकी ओरसे "आर्य्यमहिला" नामक पत्रिका श्रीयुत पं० कालीप्रसाद शास्त्रीजीके सम्पादकत्वमें बड़ी सजधजके साथ निकलती है।) (४) ऋषिकुल-हरिद्वार, (५) हिन्दुकालेज, देहली, (६) सनातनधर्म कालेज, लाहौर (७) सनातनधर्म कमर्शल कालेज, कानपुर, (८) सनातनधर्म कालेज, दौलतपुर (बङ्गाल), (९) ब्रह्मचर्याश्रम, भिवानी, (१०) आयुर्वेद महाविद्यालय, पीलीभीत, (११) अनाथालय, काशी, (१२) गोवर्धन संस्था, बंबई और वार्दे (१३) श्रीकृष्णगोशाला-कलकत्ता, १४—रामकृष्णमिशन, बेलूर, अलमोड़ा, काशी, १५—नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, १६—ब्राह्मण महा सम्मेलन-काशी, इत्यादि।

श्रीमहामण्डल-खण्ड ।

[सम्पादक—श्रीमान् कुमार कवीन्द्रनारायणसिंह महोदय, एम० एल० सी०]

श्रीभारतधर्म-महामण्डल ।

अखिल भारतवर्षीय सनातनधर्मावलम्बियोंकी प्रतिनिधिभूत सभारूपसे इस धार्मिक-सामाजिक संस्थाको भारतसरकार, समस्त स्वाधीन नरपति, धर्माचार्य और वर्णाश्रमधर्मी प्रजाकी प्रत्येक जातिके मुखियाओंने लेख द्वारा स्वीकार कर लिया है।

इस संस्थाके संरक्षकोंमें पूज्यपाद श्रीशंकराचार्यजी महाराज शृंगेरी-पीठ, शारदापीठ, गोवर्धनपीठ तथा वैष्णवाचार्य महाराज तोताद्रि मठ, नाथद्वारा, सलीमाबाद संस्थान जैसे धर्माचार्य तथा हिज़हाईनेस हिन्दुसूर्य श्रीमहाराणासाहब उदयपुर, महाराज नेपाल, काश्मीर, मैसोर, बूंदी, टेहरी, कोटा, सैलाना, अलवर, टिपरा, बड़ोदा, ग्वालियर, रीवां, पटियाला, जोधपुर, बीकानेर, अजयगढ़, किशनगढ़, पन्ना, दतिया, डूंगरपुर, बांसवाड़ा, नरसिंहगढ़, धांगध्रा, देवास, रतलाम, जयपुर, लिमड़ी आदि जैसे स्वाधीन नरेश सम्मिलित हैं।

प्रधान कार्यालय—काशीके जगत् गंजमें स्थित है और प्रान्तीय मण्डल कलकत्ता, मद्रास, हैदराबाद (दक्षिण), श्रीरंगम्, नासिक, बम्बई, गौहाटी, पटना, नागपुर, अमरावती, उदयपुर, फीरोजपुर, कराची, लखनऊ, मेरठ, दिल्ली, अजमेर, अहमदाबाद, रावलपिण्डी और कानपुरमें हैं। शाखा सभाएं सब प्रान्तोंके नगरोंमें हैं।

काशीके प्रधान कार्यालयमें आर्यमहिलाहितकारिणी महापरिषद्, अखिल भारतवर्षीय संस्कृत विश्वविद्यालय, विश्वनाथ अन्नपूर्णा दान भाण्डार, वर्णाश्रमसंघ, सर्वधर्मगवेषणामन्दिर आदिके कार्यालय हैं और प्रधान सभापतिका कार्यालय दरभंगामें है।

श्रीमहामण्डलके प्रधान पदधारियोंके नाम ।

—०:*:०—

प्रधान सभापति—

हिज़ हाईनेस श्रीमान् महाराजाधिराज मिथिलाधिपति श्रीमान् कामेश्वरसिंह बहादुर दरभंगा नरेश, दरभंगा ।

सभापति मंत्रीसभा—

हिज़ हाईनेस महाराजा भारतधर्मनिधि श्रीमान् दिलीपसिंह बहादुर, सैलाना ।

उप-सभापति—

१—महामहाध्यापक महामहोपाध्याय पं० अन्नदाचरण तर्कचूड़ामणि, काशी ।

२—धर्मसुधाकर राजा वेणीमाधव प्रसादसिंह महोदय, कंतित राज, विजयपुर ।

३—दि आनरेबल धर्मरत्न राजा मोतीचन्द साहब, सी. आई ई. काशी ।

चीफ़ सेक्रेटरी-(प्रधान मंत्री)

दि आनरेबल सर डाक्टर देवप्रसाद सर्वाधिकारी सी. आई. ई. सी. वी. ई. एल एल. डी. इत्यादि–कलकत्ता ।

सहयोगी प्रधानमंत्री—

धर्मभूषण लाल दियाली राम बी० ए० पटियाला ।

प्रधानाध्यक्ष—

श्रीमान् धर्मविनोद कुंवर कवीन्द्रनारायण सिंह एम. एल. सी. आनरेरी मजिस्ट्रेट तथा रईस, काशी ।

संयुक्त प्रधानाध्यक्ष—

(१) धर्मविनोद पं. बलदेवदास व्यास, स्पेशल मजिस्ट्रेट, काशी।
(२) राय बहादुर धर्मरञ्जन बा. बटुकप्रसाद खत्री, रईस, काशी।

ॐ तत्सत् ।

अकुण्ठं सर्वकार्य्येषु धर्मकार्य्यार्थमुद्यतम् ।
वैकुण्ठस्य हि यद्रूपं तस्मै कार्य्यात्मने नमः ॥

श्रीमहामण्डल

की

कार्य-विवरणी ।

(सन १९२९ तक)

—:※:—

(१) प्रस्तावना ।

भारतवर्षकी राष्ट्रभाषा हिन्दीकी उन्नति और प्रचारके लिये श्रीमहामण्डल-डाइरेक्टरीकी स्थापना हुई है। ऐसा प्रयत्न किया जा रहा है कि, हिन्दुस्तानके घर घरमें इसका प्रचार हो। यद्यपि अभी इस शुभकार्यका केवल बीजारोपण हुआ है, परन्तु आशा है कि, शीघ्र ही लाखोंकी संख्यामें इसका मुद्रण होकर भारतवर्षके सब प्रान्तोंमें हिन्दीभाषाके प्रचार और वर्णाश्रमधर्मकी महिमा घोषित करनेमें महामण्डल-डाइरेक्टरी कृतकार्य्य होगी। इसी शुभ लक्ष्यमें सहायक बननेके लिये श्रीभारतधर्ममहामण्डलके संचालकोंने यह निश्चय किया है कि, श्रीमहामण्डल डाइरेक्टरीमें प्रतिवर्ष श्रीभारत-धर्ममहामण्डलकी कार्य्यविवरणी प्रकाशित हुआ करे और यह शुभ-कार्य स्थायी हो।

(२) प्रारम्भ ।

अट्ठारहवीं शताब्दिके अन्तिम भागमें अर्बुदगिरि (आबू पहाड़) के वनमें श्रीवशिष्टाश्रम नामक पवित्र तीर्थमें इस स्वजातीय महा-यज्ञका प्रस्ताव हुआ था। एक साधु तथा एक गृहस्थ विद्वान् ब्राह्म-णने मिलकर इसका शुभ संकल्प किया था। तदनन्तर राजपूतानेके अन्तर्गत किशनगढ़ नामक स्वाधीन राज्यमें वहांके स्वर्गीय धर्मात्मा नरपति महाराजाधिराज शार्दूलसिंहजी तथा उनके लघुभ्राता स्वर्गीय दीक्षित महाराज जवानसिंहजी दोनोंकी शुभ इच्छासे जब सुप्रसिद्ध

सोमयज्ञ हुआ था, उस समय इस महायज्ञका कार्य शुभ रीतिसे प्रारम्भ किया गया था। सन् १९०१ ई०में श्रीभारतधर्ममहामण्डलके स्थापयिताने धर्मतिलक रायरायान श्रीमान् वरदाकान्त लाहड़ी महाशय, धर्मभूषण श्रीमान् राव गोपालसिंह महाशय और स्वर्गीय धर्मरत्न विद्यासुधाकर श्रीमान् राव बहादुर श्यामसुन्दरलाल सी० ए० सी० आई० ई० महाशयकी सहयोगितासे पत्रद्वारा भारतवर्षके सब प्रान्तोंके बड़े बड़े गण्यमान्य हिन्दुनेताओंसे परामर्श कर तथा व्याख्यानवाचस्पति पं० दीनदयालु शर्मा और महोपदेशक स्वर्गीय पं० माधवमिश्रकी सहयोगितासे इस महाद्रुमका बीजरोपण किया था। सन् १९०२में श्रीमथुरापुरीमें भारतवर्षके सब नेतृवृन्दने मिलकर एक महाधिवेशनमें इस अखिल भारतवर्षीय अद्वितीय महा सभाकी सरकारी कानूनके अनुसार रजिस्ट्री कराई थी। कई वर्षों तक इस महासभाका प्रधान कार्यालय मथुरापुरीमें रहा। उसके अनन्तर इसका प्रधान कार्य्यालय वर्णाश्रमधर्मियोंके प्रधान केन्द्र काशीपुरीमें लाया गया। श्रीमथुरापुरीसे श्रीकाशीपुरीमें प्रधान कार्य्यालयके परिवर्त्तनके समय सन् १९०६ त्रिवेणी तटपर एक महाधिवेशन हुआ था, उसमें प्रथम हिन्दी कार्य विवरणी वितरित हुई थी। तत्पश्चात् सन् १९१० में "श्रीमहामण्डलकी बाल्यावस्था" नामक एक विस्तृत कार्य्यविवरणी हिन्दी भाषामें प्रकाशित की गई थी। सन् १९१५ से १९२३ तक अंगरेजी भाषामें इस महासभाकी विस्तृत कार्य्यविवरणी प्रति वर्ष प्रकाशित होती रही। और सन् १९२४से अवतक श्रीमहामण्डलकी रिपोर्ट नियमित रूपसे इस महामण्डल डाइरेक्टरीमें निकल रही है। प्रतिमास सर्कुलर द्वारा कार्य विवरणी प्रकाशित होते रहनेके कारण इस महासभाकी बाल्यावस्थामें अर्थात् सन् १९१४ तक इसकी वार्षिक कार्यविवरणी प्रकाशित नहीं होती थी। सन् १९१५में जो 'अर्लि हिस्ट्री ऑफ महामण्डल' नामक पुस्तक अङ्गरेजीमें प्रकाशित हुई थी। उसमें इस महासभाकी कार्यप्रणाली यथेष्टरूपसे वर्णित है।

(३) देवासुर-संग्राम।

अन्तर्जगत्में देवासुर संग्राम विद्यमान है। उसीका फलरूप इस मृत्युलोकमें भी देवासुर-संग्रामके लक्षण प्रकट होते हैं। श्रीभारत-

धर्म्ममहामण्डल नामक महायज्ञ जो इस घोर कलियुगमें वर्णाश्रम-धर्मकी सुरक्षा, सनातनधर्मकी महिमाप्रचार, सद्विद्याविस्तार, हिन्दूजातिमें संघशक्तिकी उत्पत्ति और वर्णाश्रमधर्मियोंके सब प्रकारके कल्याण करनेके अभिप्रायसे प्रारम्भ हुआ है, उसमें देवासुर संग्रामके लक्षण तो अवश्य ही प्रकट होते रहेंगे, इसमें सन्देह ही क्या है। सञ्चालकोंको सहायता न देना, उनके शुभ पुरुषार्थमें बाधा पहुँचाना, उनका मिथ्या अपवाद प्रचार करना, बुद्धिभेद, मतभेद, अशान्ति और पारस्परिक कलह उत्पन्न करना, उनके दूरदर्शितापूर्ण शुभ उद्योगोंको न समझना और न समझने देना, सहायकोंको बहकाना इत्यादि आसुरी-प्रकोपसे नाना विपत्ति इसके सञ्चालक अब तक सहते आये हैं और पद-पदमें विपत्ति सहते हुए विश्वनाथकी कृपासे धर्मकार्य्यको अग्रसर करते रहे हैं। गत वर्ष अर्थात् रिपोर्टके वर्षमें भी श्रीमहामण्डलको अनेक आसुरी आक्रमणोंसे आत्मरक्षा करनी पड़ी है।

(४) यज्ञानुष्ठान।

सनातनधर्म और वैदिक विज्ञानके अनुसार यह माना गया है कि, यह मृत्युलोक दैव सूक्ष्मलोकके चौदहवें हिस्सेका एक चौथा हिस्सा है। दैवलोकमें ऋषि, देवता और नित्य पितृगण तथा अधोलोकोंमें असुरगण वास करते हैं। यह स्थूल मृत्युलोक सूक्ष्म-दैवलोककी सहायतासे ही सुरक्षित होता है। देवतागण दैवराज्यके सञ्चालक हैं। इस कारण देवताओंकी प्रसन्नताप्राप्तिके लिये यज्ञानुष्ठान करना सनातनधर्मियोंका प्रधान धर्म है। श्रीमहामण्डल सनातनधर्मियोंकी समष्टिरूप स्वजातीय महासभा है। इसके प्रधान कार्य्यालयमें देवताओंकी तृप्ति तथा प्रसन्नता प्राप्तिके लिये नियमित यज्ञानुष्ठानके निमित्त एक स्थायी यज्ञमण्डपका निर्माण किया गया है। उसमें सन् १९२९ के अन्ततक १११ यज्ञ हो चुके हैं। उनमेंसे इस वर्षमें आठ यज्ञ हुए हैं और सब समेत निम्नलिखित यज्ञोंका अनुष्ठान हुआ है। सोमयज्ञ १, रुद्रयज्ञ १८, महारुद्रयज्ञ ५, अतिरुद्रयज्ञ २, शक्तियज्ञ १५, सहस्रचण्डीयज्ञ ३, शतचण्डीयज्ञ २३, अम्बायज्ञ ४, गायत्रीयज्ञ १, ऋग्वेदशान्तियज्ञ १, महाविष्णुयज्ञ १, विष्णुयज्ञ ७, गणपतियज्ञ ३, विश्वम्भरयज्ञ १, सूर्य्ययज्ञ ५, शिव-

यज्ञ ५, देवीयज्ञ २, हरिहरयज्ञ ३, जातवेदसाग्निदुर्गायज्ञ १, सत्रयज्ञ ३, विश्वधारकयज्ञ १, श्रीधीशयज्ञ १ और लक्ष्मीयज्ञ ५, हुए हैं। इनमेंसे बड़े बड़े यज्ञ ऐसे भी हुए हैं, जिनमें चालीस हजार रुपये तक खर्च हुए हैं। बड़े बड़े यज्ञोंके अन्तमें काशीके विद्वान् ब्राह्मणोंका पूजन भी किया गया है और प्रायः यज्ञोंके अन्तमें चारों वेदोंके वेदपाठी ब्राह्मणोंकी वसन्तपूजा भी की गई है। श्रीमहामण्डलके इस आदर्श यज्ञानुष्ठानके नमूनेपर पञ्जाबसे लेकर आसाम प्रान्ततक अनेक स्थानोंमें यज्ञ हुए हैं और महामण्डल प्रधान कार्यालयके द्वारा योग्य वैदिक ब्राह्मण भेजे गये हैं।

अब यज्ञोंका सिलसिला नियमित बना रहे, इस लिये यह व्यवस्था की गयी है कि, महामाया न्यास नियमित यज्ञानुष्ठानोंका व्यय किया करें। उस न्यासका पुनःसंस्कार करते हुए यह नियम विशेषरूपसे बना दिया गया है।

(५) मानदान-विभाग।

श्रीमहामण्डलका यज्ञानुष्ठानविभाग जिस प्रकार देवपूजनके विचारसे स्थापित किया गया है, उसी प्रकार श्रीमहामण्डलके मानदान-विभागका कार्य्य नृयज्ञरूपसे मनुष्योंके गुणपूजासम्बन्धसे किया जाता है। इस विभागसे निम्नलिखित श्रेणीके मान दिये जाते हैं। यथाः—

१—धार्मिकता और धर्मकार्यों में सहायताके विचारसे राजा-महाराजाओंको मानदान।

२—उसी विचारसे सब श्रेणीके योग्य व्यक्तियोंको मानदान।

३—धार्मिक तथा परोपकारी आर्य्यमहिलाओंको मानदान।

४—साधारण विद्याविषयक मान। स्वदेशी, विदेशी सब श्रेणीके विद्वानोंको यह मान दिया जाता है।

५—संस्कृतविद्योपाधि।

६—विशेषसंस्कृतविद्योपाधि, यथाः—वैद्यक, ज्योतिष, कर्मकाण्ड आदि।

७—विशिष्टविद्योपाधि।

८—हिन्दीविद्योपाधि।

९—पदार्थविद्या, सायन्स और शिल्पसम्बन्धीय मानदान।

१०—भारतीय अन्य देशभाषाओंकी विद्योपाधि।

११—संगीतविद्योपाधि ।

१२—व्याख्यानसम्बन्धीय उपाधि । यथाः—उपदेशक, महोपदेशक इत्यादि ।

१३—परोपकार और जीवरक्षासम्बन्धी मान ।

१४—साधारण मानपत्र, प्रशंसापत्र और धन्यवादपत्र ।

१५—कृषि और उद्भिज्ज विद्योपाधि । जो इसी वर्षसे आरम्भ की गई है ।

जो जातीय मान दिये जाते हैं, वे धर्माचार्य्य और राजन्यवर्ग एवं सब प्रान्तीय प्रतिनिधिवर्गकी ओरसे होनेके कारण इस मानदान विभागका आदर जातीय पुरस्काररूपसे किया जाता है और श्रीमहामण्डलके विद्या सम्बन्धीय मानका प्रभाव तो यूरोप और अमेरिकाके सभ्य देशोंमें भी हुआ है। श्रीमहामण्डल विद्या, सायन्स और आर्ट आदिके सम्बन्धसे मान देनेमें धर्म और जातिका विचार नहीं रखता है ।

इस मानदानविभागकी स्थापनासे लेकर सन् १९२८के अन्ततक सबश्रेणीके मानकी संख्या ३२२२ थी । इसके बाद जिन-जिन गुणी सज्जनोंके गुणकी पूजा की गई है, उसकी सूची नीचे प्रकाशित की जाती है । भारतवर्षके राजन्यवर्ग और विद्वज्जनमण्डलीमें तो इस मानका यथेष्ट आदर है ही, विदेशमें इसका कैसा आदर है, उसके नमूनारूपसे नीचे फ्रान्स देशके एक बड़े नामी विद्वान्का संस्कृतपत्र प्रकाशित किया जाता है ।

"श्रीभारतधर्ममहामण्डलसकाशाद् यन्मानपत्रं भवद्भिः प्रेषितं, तद् इदानीं प्राप्तं, विस्मयोद्वेगाकुलः पुनः पुनरनुपश्यामि । अहो बतः अयम् मादृशो जन एतावतो बहुमानस्य पात्रं भवति ? एषा नन्वह द्वारदोषेण उपादिता मया स्यात् ? विद्यार्णवाभ्यन्तरेऽदृष्टिगोचर एव विन्दुः सागरपदेन यदाख्यायते,तादृशस्योपचारस्य साहित्यशास्त्रे संज्ञा कीदृशो विद्यते ? अनर्होऽपि सन् एतत् मानपत्रं कृतज्ञः सादरं प्रतिगृह्णामि । तेन हि मैत्र्याः परम्पराश्रयता स्पष्टं प्रदर्श्यते । मया चिरकालाद्धृदयसर्वस्वं भारतदेशाय दत्तम् । अद्य तु भारतदेशेन भारतदेशानुरक्ताय प्रेमाशयस्य चिह्नं दीयते । महामण्डलस्य सर्वस्य च राष्ट्रस्य कुशलं भूयादिति शम् । भवदीयः—

Sylvain levi, professor Callage-ade, France.

इस सालमें जिन जिन राजा-महाराजाओं, सज्जनों और आर्य-

महिलाओंके गुणकी पूजाके निमित्त उनको जातीय मान दिया गया है, उनकी विस्तृत नामावली आगे प्रकाशित की जाती है।

राजधर्म्मोपाधि।

श्रीमान् महाराजा चन्द्रमौलेश्वर प्रसाद सिंह बहादुर गिद्धौर। धर्मनिधि।

श्रीमान् राजा गिरिधर प्रसाद नारायण सिंह साहिब देव— बहादुर; रंका। धर्मालङ्कार।

धर्मोपाधि।

श्रीमान् एम० के० आचार्य्य महाशय, ४६ लिंघाचेटी स्ट्रीट मद्रास। धर्मालङ्कार।

श्रीमान् सेठ रमणलाल केशवलाल दातार पेटलाद (गुजरात) दान-धर्म-धुरीण।

श्रीमान् बाबू केदारनाथजी मिश्र कलकत्ता। धर्मविनोद।

श्रीमान् प्रियनाथ बनर्जी, चीफ मैनेजर दरभंगा। राजधर्मविभूषण।

श्रीमान् सेठ लक्ष्मण दासजी डागा १८-२२ शेख मेमन स्ट्रिट, बम्बई। धर्मविनोद।

श्रीमान एन० नटेश अय्यर बी० ए० बी० एल० एडवोकेट आर गवर्नमेण्ट प्लीडर रामनद, मद्रास। धर्मरञ्जन।

श्रीमान् के० बाल सुब्रह्मनिया अय्यर बी० ए० बी० एल० एडवोकेट, मैलापुर मद्रास। धर्मरञ्जन

श्रीमान् ए० वेंकट रायालिया बी० ए० बी० एल० एडवोकेट मैलापुर मद्रास। धर्मरञ्जन।

श्रीमान् एम० के० वैद्यनाथ अय्यर बी० ए० बी० एल० एडवोकेट कुम्बकोनम् मद्रास। धर्मरञ्जन।

श्रीमान् एस० महालिङ्ग अय्यर, सेक्रेटरी ब्राह्मण सभा, तंजोर। धर्मभूषण।

श्रीमान् आर० बी० सीतारामिया शास्त्री बी० ए०, बी० एल०, एडवोकेट मसलीपट्टम्। धर्मरञ्जन।

श्रीमान् महाविद्वान् चावलो यज्ञेश्वरसोमयाजी शर्मा बी० ए० बी० एल० एडवोकेट अमलापुरम्। धर्मरत्न।

श्रीमान् पुल्लू पन्त रामचन्द्रिया आनरेरी मजिस्ट्रेट कुरनूल। धर्मरञ्जन।

श्रीमान् हेमाद्रिकोंडलराय शर्मा वेजवाड़ा। धर्मरञ्जन।

श्रीमान् के० मार्कण्डेय शर्मा पूनामलाई हाइरोड मद्रास। धर्मविनोद।

श्रीमान् डाक्टर के. वी. सुब्बाम्मा अमाथ्या एम. बी. वरदा मुठियाप्पन स्ट्रीट मद्रास। धर्मरञ्जन।

श्रीमान यू. पी. कृष्णामाचार्य वेंकटा चेलामुडालीस्ट्रीट पार्कटाउन मद्रास। धर्मभूषण।

श्रीमान् सो. एच. वासवियाह श्रेष्टी एडिटर "विश्या" गुंटुर। धर्मरञ्जन।

श्रीमान् गोवूरामचन्द्र राओ आनरेरी मैजिस्ट्रेट वेजवाड़ा। धर्मरंजन।

श्रीमान् वड़ वू गौरीसोमशेखर राव डाइरेक्टर सनातनधर्म कानफरेंस गोदावरी। धर्मरंजन।

श्रीमान् भट्टी वेंकटा सुब्बियाह गारू महाजन गुंटुर (मद्रास) धर्मविनोद।

श्रीमान् एन. श्रीनिवास आचार्य बी. ए. बी. एल. एडवोकेट पुरसवालकम् (मद्रास) धर्मरंजन।

श्रीमान् श्रीवश्य सिंहासनम् विद्वान् नडादुर तिरुमंगलम् नरसिंहाचार्य स्वामीगल रिटायर्ड संस्कृत विद्वान् मद्रास। धर्मभूषण।

श्रीमान् कोटि कन्नी कन्दनम् आचार्य सिंहासनपति, श्रीपण्डित भूटाणम् महाविद्वान् एम. कुमार ताताचार्य स्वामीगल कंजीवरम्। धर्मालंकार।

श्रीमान् सेठ मोहनलाल मथुरादास पोष्ट बक्स नं. ५५ मौलमीन बर्म्मा। धर्मरञ्जन।

श्रीमान् सेठ चुन्नीलाल फूलचन्द चोनाई, खजुरी पोल अहमदाबाद। धर्मभूषण।

श्रीमान् सेठ मंगलदास गिरधरदास पारिक अहमदाबाद। धर्मालंकार।

श्रीमान् सेठ सर गिरजा प्रसाद, अहमदाबाद। धर्मरत्न।

श्रीमान् रावबहादुर रावबलवीर सिंह रेवाड़ी (गुड़गावाँ) धर्मभूषण।

श्रीमान् पं० वालकृष्ण मार्तण्ड चौंडे महाराज वाई। धर्मभूषण।

श्रीमान् लाला हरिराम जी साहब दिल्ली। धर्मभूषण।*

श्रीमान् केशवराव गनेश देशपाण्डेय शंकर टेकरी वाड़िया बाजार, बड़ौदा। धर्मालंकार।

श्रीमान् ब्रजमोहन लालजी वर्मा छिन्दवाड़ा (सी.पी.) धर्मभूषण।

श्रीताराचरण गांगोली शिवालय, बनारस। भक्तिभूषण।

श्रीमान् वाबू श्रीयदुनन्दनसिंहजी कान्तीपुरड्योढी, पो०—शकरी (बिहार) धर्मालंकार।

श्रीमान् बाबू श्रीमदनमोहनजी मधुवनी ड्योढी। धर्मालंकार।

कुलाङ्गना मानदान।

श्रीमती रानी श्यामसुन्दर कुवांरी राज्य मझौली धर्मलक्ष्मी।

श्रीमती सावित्री देवीजी महोदया पालीखुर्द—इटावा साहित्य-चन्द्रिका।

श्रीमती मातुः श्रीलक्ष्मी अम्मल प्रेसिडेंट लक्ष्मीविलास-सभा (लेडीज़ एसोसियेशन) ट्रिप्लीकेन मद्रास। धर्मचन्द्रिका।

श्रीमती मोती बाई बनारस, विद्याविनोदनी।

श्रीमती तोरन देवी 'लली' लखनऊ साहित्य-चन्द्रिका।

श्रीमती विमला देवी 'रमा' डुमरांव साहित्य-चन्द्रिका।

श्रीमती कुमारी गङ्गादेवी भार्गव 'छलना' साहित्य-चन्द्रिका।

संरक्षकमानपत्र।

हिज हाईनेस महाराजा भीमसमशेर-जंगबहादुर राणा मार्शल और प्राईममिनिस्टर नैपाल।

हिज हाईनेस महाराजा बहादुर दुर्जनशालसिंहजी खिलचीपुर

हिज एक्सलेन्सी राणा युद्धशमशेर जंगबहादुर-राणा डिप्टी प्राईममिनिस्टर नैपाल।

---

* गत वर्ष इनकी धर्मोपाधि गलतीसे अन्य प्रकारसे छपी थी।

हिज़ ऐक्सलेन्सी राजा धर्मसमशेर—
जंगबहादुर राणा कमाण्डर इन चीफ नैपाल।

संरक्षक आचार्य मानपत्र।

श्री १०८ परमहंस परिव्राजकाचार्य-शारदा पीठाधीश्वर शंकराचार्य श्रीमान् स्वामी राजराजेश्वर आश्रम महाराज डाकोर (गुजरात)

विशिष्ट विद्योपाधि।

श्रीमान् बाबू हरिश्चन्द्रजी एम० ए० आई० सी० एस० जज, बनारस। विद्यानिधि।

श्रीमान् मेजर बी. डी. वसु, भुवनेश्वरी आश्रम-बहादुरगंज, इलाहाबाद सिटी। विद्याविभूषण।

विविध विद्योपाधि।

श्रीमान् सरकार बहादुर जौहरी साहब बी० ए०—एल एल० बी० एडवोकेट हाईकोर्ट नं० ५ सिटी-रोड इलाहाबाद। विद्यारत्न।

श्रीमान् पण्डित काशीनाथ ज्योतिषी ३/७ अस्सीघाट बनारस। ज्योतिष शास्त्रालङ्कार।

श्रीमान् गोस्वामी जगदीशप्रसाद राजवैद्य, मन्दिर-राजा तेजासिंह कचौरीगली बनारस (शेखूपुर स्टेट्स हाउस चूनीमण्डी लाहोर।) वैद्यभूषण।

श्रीमान् पं० रामेश्वर जोशी कुष्टियां नदिया। आयुर्वेदभूषण।

श्रीमान् कविराज शिवनाथ शर्मा नकशल नैपाल वैद्यभूषण।

श्रीमान् राजवैद्य धीरजराम जयशंकर शक्तिविजय—औषधालय चौखम्बा बनारस। भिषग्भूषण।

श्रीमान् पं० कालीकुमार महोदय त्रिलोकी, पो० टेढ़ा, उन्नाव, भिषग्रत्न।

श्रीयुक्त डाक्टर ज्योतीन्द्रनाथ मैत्र एम० बी० (स्पेशलिस्ट इन आइ डिज़ीज) १८७ मानिकतल्लास्ट्रीट-कलकत्ता भिषग्रत्न।

श्रीयुत विपिनचन्द्र मलिक एम० ए० बी० एल०—
एडवोकेट कलकत्ता हाईकोर्ट ३६।१ चित्तरंजन—
एवेन्यू कलकत्ता नीतिविशारद ।
डाक्टर श्रीयुत राधाविनोदपाल एम० ए० बी०—
एल० हिन्दूला प्रोफेसर नीतिरत्न ।
श्रीमान पं० वंशीधर जोशी आयुर्वेदाचार्य C/o ए०
सुखदेवजी गजानन्द चौक, पटना । वैद्यरत्न ।
श्रीमान पण्डित लक्ष्मीनारायण वैद्य सेठ जगाराम
महेश्वरीका औषधालय चिड़ावा (खेतड़ी) राज्य जयपुर,
आयुर्वेदभूषण ।
श्रीमान् पं० त्रिलोकीनाथजी वैद्य मुहल्ला
वसन्तपुरा, गोरखपुर, भिषग् भूषण ।
श्रीमान् पं० गोपालनारायण शुक्ल आयुर्वेदभवन
नयाबाजार, लशकर ग्वालियर । आयुर्वेदभूषण ।
श्रीमान् हरिदासजी कविराज बनारस । भिषक् सुधाकर ।
श्रीमान् शेषमणि त्रिपाठी बी० ए० साहित्यरत्न
ग्राम कोटिया पो० मेहनावल जि० बस्ती, विद्याभूषण
श्रीमान् पं० गयाप्रसाद शास्त्री, "श्रीहरि" आयुर्वेद-
फार्मेसी गनेशगंज लखनऊ, भिषग् रत्न ।
श्रीमान् पं० मार्तण्ड दत्त वैद्य रायबरेली, भिषग् भूषण ।
श्रीमान् पं० कृष्णलाल वाजपेयी, वैद्यराज, आयुर्वेद वारिधि ।
श्रीमान् पं० रामभरोसे शर्मा, भिषग्रत्न ।
श्रीमान् पं० निजानन्द शर्मा, भिषग्रत्न ।
श्रीमान् पं० श्रीव्रजमोहन मिश्र दरभंगा । आयुर्वेद-भूषण ।
श्रीमान् प० श्रीवासुदेव झा दरभंगा । ज्योतिषशास्त्रालङ्कार ।

संस्कृत विद्योपाधि ।

श्रीमान् पण्डितरत्न, लक्ष्मणशास्त्रीजी द्रविड़ काशी
महामहोपाध्याय ।
श्रीमान् पण्डित भाऊशास्त्रीजी वझे नागपुर महामहोपाध्याय ।
श्रीमान् पण्डित पद्मनाथ भट्टाचार्य एम०ए० काशी। महामहोपाध्याय ।
श्रीमान् पण्डित ईश्वरलालशर्मा राजामेहताकी
पोलमें तोड़ाकीपोल, अहमदाबाद । पण्डितभूषण ।

श्रीमान् पण्डित कपिलेश्वर मिश्र शास्त्री एम० ए०
एल एल० बी० हाईकोर्ट वकील लहेरिया सराय
(दरभंगा) पण्डित-भूषण ।

श्रीमान् सत्यरंजन काव्यव्याकरण स्मृतितीर्थ
अध्यापक चांदनपुर व बीरभूम । पण्डित-भूषण ।

श्रीमान् पण्डित यदुनन्दन लालशास्त्रीजी
मुहल्ला साहुकारा कन्नौज सिटी पण्डित भूषण ।

श्रीमान् पण्डित रामयश त्रिपाठी व्याकरणाचार्य
जगतगंज काशी । पण्डित रत्न ।

श्रीमान् पं० हाराण शास्त्री भट्टाचार्य काशी विद्या वारिधि ।

श्रीमान् पं० गदाधर मिश्रजी फुलड़ीगंज पटना, वैदिकभूषण ।

श्रीरामरत्न चतुर्वेदी काव्यसांख्य तीर्थ पटना । विद्याभूषण ।

श्रीमान् पं०ब्रह्मदत्त द्विवेदी व्याकरणाचार्य पटना,व्याकरणभूषण।

श्रीमान् पं० गङ्गाधर मिश्र काव्यतीर्थ पटना । विद्यारत्न ।

श्रीमान् पं० ताराचरण भट्टाचार्य जंगमबाड़ी काशी ।
पण्डित भूषण ।

श्रीमान् ब्रह्मचारी शिव प्रसादजी त्रिपाठी C/o
बा० हरदेवदास श्रीलाल संस्कृत पाठशाला नं० २५।१२२ बूला-
नाला बनारस सिटी । कविरत्न ।

श्रीमान् पं०कालीप्रसादजी शास्त्री,टेढ़ा,उन्नाव । साहित्यभूषण ।

श्रीमान् पं० माधव प्रसाद शास्त्री व्यास अध्यक्ष काशीनाथ
पाठशाला, बनारस । विद्यारत्न ।

श्रीमान् पं०रामकृष्ण शास्त्री संस्कृत पाठशाला-भोपाल ।
वेदान्तभूषण ।

श्रीमान् पं० केशव शास्त्री, अध्यापक संस्कृत पाठशाला
भोपाल । वेदान्तभूषण ।

श्रीमान् पं० वासुदेव शास्त्री संस्कृत पाठशाला
भोपाल । शुद्धाद्वैतभूषण ।

श्रीमान् पं०धारादत्त शर्मा मिश्र मु० पो० दाहा, जिला
मेरठ । वेदान्तभूषण ।

श्रीमान् पं० गंगाधर शास्त्री, केदारनाथ संस्कृत पाठशाला
मोराआं जिला उन्नाव । विद्याभूषण ।

श्रीमान् पं० मार्तण्डजी त्रिपाठी शास्त्री सामवेदाचार्य मु० वड़ौदा पो० पड़रीकलाँ जि० उन्नाव । विद्यारत्न ।

श्रीमान् पं० नन्दकिशोर शास्त्री द्विवेदी मु० वड़ौदा पो० पड़री जिला उन्नाव । पण्डित भूषण ।

श्रीमान् पं० श्रीमुक्तिनाथ मिश्र दरभंगा । विद्यावारिधि ।

श्रीमान् पं० श्रीबलदेव मिश्र दरभंगा । पण्डित भूषण ।

श्रीमान् पं० पद्मनाथ मिश्र दरभंगा । पण्डित भूषण ।

श्रमान् पं० श्रीसुन्दरलाल झा दरभंगा । वैदिकभूषण ।

श्रीमान् पं० श्रीउग्र झा दरभंगा । न्यायभूषण ।

भाषाविद्योपाधि ।

राय वहादुर पं० श्यामबिहारी मिश्र एम० ए० दीवान टीकमगढ़ । साहित्यसुधाकर ।

श्रीमान् कुंवर हिम्मतसिंहजी भैंसोरगढ़ पो० आ० सिंगली मेवाड़ । साहित्यरञ्जन ।

भक्तकवि श्रीपण्डित वासुदेव हरलाल व्यास कुमावतपुरा घर नं० १२/६ जूनी इन्दौर । कविभूषण ।

श्रीमान् कुंवर गणेशसिंहजी भदोरिया, गणेशमिल आगरा । साहित्यालङ्कार ।

श्रीमान् पण्डित रामबालक त्रिवेदीजी अचलगढ़ पोस्ट, मुकाम श्रीनगर जिला बलिया । साहित्यरत्न ।

श्रीमान् गोरीशंकर प्रसाद 'शायक' मुकाम गोला दीनानाथ बनारस । साहित्यालङ्कार ।

श्रीमान् पण्डित श्रीलालजी शर्मा चतुर्वेदी 'विट्ठल' विद्याभूषण लश्कर-गवालियर । साहित्यरत्न ।

श्रीमान् पण्डित सरयू प्रसाद पाण्डेय 'द्विजेन्द्र' विशारद ग्राम दुबहर पो० अड़सर जिला बलिया । साहित्य भूषण ।

श्रीमान् महालसाकान्त नारायण मजूमदार लश्कर ग्वालियर । साहित्यभूषण ।

श्रीमान् पण्डित गोपालदत्त शास्त्रीजी मु० नारायणपुर पो० सन्देश जिला आरा । साहित्यरत्न ।

श्रीमान् पं० रमाशंकर मिश्र नं० २ हुसेनगंज लखनऊ। कविरत्न।

श्रीमान् पं० बद्रीविशाल शुक्ल कछियाना कानपुर। कविरत्न।

श्रीमान् बाबू गुप्तेश्वर प्रसाद श्रीवास्तव डुमराव आरा। कहानीरंजन।

श्रीमान् श्यामनारायण पाण्डेय, डुमराव पो० मऊभंज जि० आजमगढ़। साहित्यरत्न।

श्रीमान् बाबू द्वारिका प्रसाद गुप्त "रसिकेन्द्र", कालपी। साहित्यालङ्कार।

श्रीमान् बाबूलाल भार्गव 'कीर्ति' बी० ए० सागर। साहित्यरत्न।

श्रीमान् पं० वंशीधर मिश्र एम० ए० लखीमपुर खीरी। साहित्यभूषण।

श्रीयुत मुनीन्द्रनाथ प्रसाद सर्वाधिकारी नं० १७ जेलिया-पाड़ा लेन कलकत्ता। साहित्यालङ्कार।

उपदेशक।

श्रीमान् पण्डित भैरव प्रसाद मु० पो० मौहार, चिन्दकी रोड, जिला—फतेहपुर।

श्रीमान् छेदी प्रसाद शर्मा गोरखपुर।

श्रीमान् जगदीश पाण्डेजी आगरा।

श्रीमान् तपेश्वरी प्रसाद पाण्डे, आरा।

महोपदेशक।

श्रीमान् पं० देवनायकाचार्यजी काशी।

श्रीमान् पं० शिवचरण दीक्षित साहित्यभूषण-मु० पो० चिन्दकी जिला—फतेहपुर।

श्रीमान् पं० लालमणजी पूठिया, मुरादाबाद।

श्रीमान् पं० मोहनलालजी अग्निहोत्री सदर बाजार मेरठ।

श्रीमान् पं० गोपालप्रसादजी संस्कृत पाठशाला मुरादाबाद।

श्रीमान् पं० जनार्दन चौधरी, दरभंगा।

महामहोपदेशक।

श्रीमान् प० गौरीशंकर शर्मा, अमृतसर।

विज्ञान शिल्पोपाधि।

रायसाहब श्रीमान् पं० नन्दकिशोरजी शर्मा १५० सिविल लाइन झांसी कृषि-विद्यासुधाकर।

श्रीमान् नारायणदासजी गार्डन सुपरिन्टेन्डेन्ट टीकमगढ़। वनस्पति-विद्याविशारद।

सम्मानपत्र।

श्रीमान् मांगीलालजी पुजारी उदयपुर।

श्रीमान् डाक्टर प्रयाग नारायणजी वनारस।

श्रीमान् सिंहचन्द्रजी वनारस।

विशेष सम्मानपत्र।

श्रीमान् एम० जी० प्रसाद एन्ड ब्रदर्स स्कलटचर, आर्टिस्ट, नाटीइमली वनारस केन्ट।

श्रीमान् प्रोफेसर माणाक रावजी बड़ोदा।

श्रीमान् बलदेव चन्दजी वनारस।

संगीतोपाधि।

श्रीमान् पं० उदयशंकरजी शर्मा। नृत्यकलाविभूषण।

श्रीमान् उस्ताद जगन्नाथ प्रसादजी कथक, लालदरवाजा c/o जेनरल श्रीतेज शमशेर राणा वहादुर नेपाल। नृत्यकलाभूषण।

स्वर्णपदक।

श्रीमान् राज वैद्य पं० लक्ष्मीनारायण शर्मा, चिड़ावा (खेतड़ी)।

---

(६) श्रीमहामण्डल और गवर्नमेण्ट।

देवताओंके सम्वर्द्धनके विचारसे जिस प्रकार श्रीमहामण्डलने अपने यज्ञविभागकी स्थापना की है और जिस प्रकार नृपयज्ञरूपसे मान-दान-विभागको स्थापित किया है, जिनका वर्णन हम पहिले कर चुके हैं, ऐसे ही धर्मभावसे यह कार्य्यविभाग कि श्रीमहामण्डल

चलाता रहा है। गत कई वर्षोंमें श्रीमहामण्डलने इसी सिद्धान्तके अनुसार गवर्नमेण्टसे पूर्ण सहानुभूति रखकर कार्य किया है। और दूसरी ओर माननीय भारत गवर्नमेण्ट तथा प्रान्तीय गवर्नमेण्टोंने भी सहानुभूति दिखाई है और आवश्यक होनेपर इस अखिल भारतीय महासभासे परामर्श भी किया है।

सन् १९०८ में श्रीमान् स्वर्गवासी माननीय वाइसराय लार्ड मिन्टोके निकट कलकत्तेमें अखिल भारतीय डेपुटेशन भेजकर इस महासभाने बहुत कुछ परामर्श किया था। उसके बाद धार्मिक शिक्षा-विस्तार आदि कई शुभकार्योंके लिये छोटे लाट पञ्जाब, सम्राट प्रति निधि राजपुताना, छोटे लाट बम्बई, छोटे लाट मद्रास, छोटे लाट बङ्गाल आदिके साथ बहुत कुछ परामर्श किये गये थे। जब यूरोपमें पृथिवीव्यापी घोर युद्ध प्रारम्भ हुआ था, तो जिस दिन वह युद्ध प्रारम्भ हुआ उसी दिन श्रीमहामण्डलने भारतके सब प्रान्तोंमें सर्क्युलर भेजकर तथा अन्य प्रकारसे यथाशक्ति सहायता की थी और ब्रिटिश-विजयार्थ दैवी सहायता पहुँचानेके लिये भी यह महासभा नियमित सहायता करती रही थी। जब जब नये वाइसराय हिन्दुस्थानमें आते रहे हैं अथवा जब माननीय भारत सम्राट या उनके कोई वंशधर भारतमें आते रहे हैं उनके स्वागत करनेमें और धर्मशिक्षाके विषयमें उन्हें परामर्श देनेमें यह महासभा नियमित उद्योग करती रही है। गंगाजीकी धाराके अक्षुण्ण रखनेके लिये तथा नाना तीर्थोंकी सुरक्षाके लिये, संस्कृत-शिक्षा विस्तारके लिये धर्म-विरुद्ध कानून पास न होनेके लिये इत्यादि इत्यादि कितने ही आवश्यक कार्योंके लिये यथायोग्य रीतिपर श्रीमहामण्डल सफलता जनक पत्र व्यवहार गवर्नमेण्टसे करता रहा है। जब इस प्रान्तके छोटे लाट बहादुर काशीमें पधारे थे, उनका यथा रीति स्वागत और डेपुटेशन भेजकर उन्हें एड्रेस प्रदान किया गया था। श्रीमान् छोटे लाट बहादुरने बड़े प्रेमसे डेपुटेशनके साथ मिलकर एड्रेसका उत्तर भी दिया था। धर्मशिक्षा, गोरक्षा, सर्वधर्म-सदन-रूपी विश्वविद्यालयकी स्थापना आदिके विषयमें बहुत आशा जनक उत्तर दिया था। उस समय श्रीमहामण्डलने गवर्नमेण्टसे प्रार्थना की थी कि, भविष्यत्में जो वाइसराय आया करें वे कोई राजवंशके व्यक्ति होंगे तो सुविधाजनक होगा।

श्रीमहामण्डलके सप्तम महाधिवेशनमें जो जनवरी १६२७ में हुआ था, जिसमें कई एक आवश्यक विषयोंमें माननीय गवर्नमेण्टको परामर्श दिया गया था, इण्डिया एक्टके भावी परिवर्त्तनमें धार्मिक विषयोंके सम्बन्धमें क्या करना उचित है, इस विषयसे भी परामर्श दिया गया था और इसी सालमें जो धर्मविरोधी कानून पास होने वाला था उसका भी विरोध किया गया था। वर्तमान वर्षमें श्रीमहामण्डलने अपने एक प्रतिष्ठित और विद्वान सभ्य, जो युरोपमें अधिक रहते हैं, जिनका नाम विद्याविभूषण श्रीमान् पण्डित श्यामशङ्कर एम० ए० बारिस्टर एटला है, उनको अपना कानूनी प्रतिनिधि बनाकर उनके द्वारा अपना पक्ष समर्थन और विलायतकी दोनों राजसभाओं और मन्त्रिसभामें वर्णाश्रमधर्मियोंकी मांगका प्रतिपादन यथा योग्य रीतिपर किया है। श्रीमहामण्डलका एक अखिलभारतवर्षीय डेपुटेशन वर्तमान माननीय राजप्रतिनिधि श्रीमान बड़े लाटसाहबकी सेवामें जब वे काशी पधारे थे, तब पहुंचा था और एक अभिनन्दनपत्र अर्पित किया था। यह कार्य्य बहुत सफलतापूर्वक हुआ जिसमें देशके विभिन्न प्रान्तोंके प्रतिष्ठित प्रतिनिधि सम्मिलित थे।

डेपुटेशनका श्रीमान् माननीय वायसराय लार्ड इर्विन महोदयने बड़ी सहानुभूतिके साथ स्वागत किया था और डेपुटेशनके एड्रेसके उत्तरमें जो सहानुभूति सूचक उत्तर दिया था, सो गत पूर्व सालकी कार्यविवरणीमें हम विस्तारित रूपसे प्रकाशित कर चुके हैं। श्रीमान् वायसराय बड़े लाट साहबने अपने अभिभाषणमें श्रीमहामण्डलकी तथा वर्णाश्रमशृङ्खलाकी बड़ी प्रशंसा की थी। सर्व-धर्म-सदन विश्वविद्यालयके प्रस्तावके साथ सहानुभूति दिखायी थी। श्रीमहामण्डलकी भारतवर्षव्यापी धर्मशिक्षाविस्तारकी स्कीमपर पूरा विचार करने और उसको अग्रसर करनेका अभिवचन दिया था, और साथ ही साथ महामण्डलके शुभ कार्योंमें यथाशक्ति और यथासम्भव सहायता करनेका भी अभिवचन दिया था।

इस प्रकारसे माननीय बड़े लाटों और प्रान्तीय लाटोंको सन्मानप्रदर्शन पूर्वक नियमित रूपसे धर्मसम्बन्धसे सत् परामर्श

देनेका कार्य्य और यथा आवश्यक उनसे प्रार्थना करनेका कार्य्य यह विभाग सदा करता रहता है। इस वर्ष माननीय सम्राट्की अस्वस्थताके समयमें भी चिंतित होकर प्रेम और सम्मान प्रदर्शनमें यह सभा पराङ्मुख नहीं हुई थी और उस समय प्रिय सम्राट्को दैवानुष्ठान द्वारा दैवी सहायता भी पहुंचाई गई थी। इस वर्ष श्रीमान् बड़े लाट साहब बहादुरकी इच्छाके अनुसार हिन्दुस्तानके सब स्कूल, कालेज और पाठशालाओंमें निरपेक्ष रूपसे कैसे धर्म-शिक्षाका विस्तार हो सकता है, उसका स्कीम बनाकर उनके पास पेश किया गया था। परन्तु दुःखकी बात है कि, श्रीमान् बड़े लाट साहब बहादुरने कृपा पूर्वक जो पहले स्वीकार किया था कि, श्रीम-हामन्डलके भारतवर्षव्यापी धर्म-शिक्षा विषयकी स्कीमपर पूरा ध्यान दिया जायगा। किन्तु उन्होंने अब उत्तर दिया है कि, इस विषयमें ध्यान देना उनके अधिकारसे बाहर है। तदनन्तर श्रीमहा मण्डलके प्रधान व्यवस्थापकने श्रीमान्का कर्तव्य और श्रीमानके अभिवचनका उन्हें स्मरण दिलाकर पुनः विस्तृत पत्र भेजा है और इसके अतिरिक्त यह चेतावनी भी दी है कि, धर्मशिक्षा प्रजामें न होनेसे प्रजाकी क्या हानि हो रही है और भविष्यत्में राजा और प्रजा दोनोंकी क्या हानि होना सम्भव है। इसके अतिरिक्त श्रीमहा-मण्डलने जो माननीय भारतसम्राट् और पार्लियामेण्टकी दोनों सभाओंको हिन्दुस्तानके राजशासनके भावी परिवर्तनके सम्बन्धमें अपनी सम्मति भेजी है, उसमें भी धर्मशिक्षा विषयपर बहुत ज़ोर दिया है।

इस वर्षमें विवाह विभ्राट्-बिल, तलाक-बिल, सहवास-बिल, उत्तराधिकारीबिल आदि कई एक धर्मविरुद्ध बिलोंका श्रीमहामण्डल-ने घोर प्रतिवाद किया है, और इन विषयोंमें माननीय गवर्नमेण्टको उचित परामर्शभी दिये हैं। श्रीमहामण्डलकी शाखासभाओंसे अनेक शाखा सभाओंने भी उक्त अशुभ कार्य्योंका प्रतिवाद करके महा-मण्डलके पुरुषार्थमें सहायता की है। युक्त प्रान्तकी गवर्नमेण्टने देवस्थान व धर्मस्थान सुधारके अभिप्रायसे जो कमिटी बनायी है, उसमें महामण्डलके प्रतिनिधिको भी सम्मिलित किया है। इसके अतिरिक्त इस वर्षमें धर्म-लाइब्रेरी स्थापन आदि कई एक देश-हितकर

कार्योंके लिये भी माननीय गवर्नमेंएटके पास लिखित प्रार्थना भेजी गई है।

यह वर्ष वर्णाश्रमके लिये बड़ीही विपत्तिका है। इस कारण विवाह विभ्राट्‌बिल पास होते समय श्रीमहामण्डलने आत्म-रक्षाके लिये अपनी पूरी शक्तिका उपयोग किया था। विलायतकी होम गवर्नमेएटको तार और निवेदन पत्रादि द्वारा, भारत गवर्नमेएटको भी तार और अनेक पत्रादि द्वारा प्रतिवाद भेजे और सैकड़ों धर्म-सभाओं द्वारा प्रतिवाद भेजवाये थे। इस स्वधर्मसंरक्षण कार्यमें श्रीब्राह्मणमहासम्मेलनके नेतृवृन्दों और श्रीमहामण्डलके मद्रास, बङ्गाल तथा उत्तर भारतके प्रतिनिधियोंने बहुत कुछ सहायता दी थी। इस वर्ष मर्दुमशुमारीमें वर्णाश्रमियोंकी स्वतन्त्रतारक्षाके उद्योग रूपसे एक निवेदनपत्र गवर्नमेएटके पास भेजा गया है और इङ्गलैण्डमें एक प्रतिनिधि भेजकर भारतवर्षके भावी राजशासनके विषयमें वर्णाश्रमियोंकी यथायोग्य सम्मति अपने सम्राट् और लार्ड तथा कामन्स सभाके प्रतिनिधियोंको दी गई है।

(७) रक्षा-विभाग।

सनातनधर्म तथा वर्णाश्रम सदाचारके सत्वकी रक्षाके निमित्त भारतीय गवर्नमेएट तथा प्रान्तीय गवर्नमेएटों और देशी राजवाड़ोंको ऐसे विषयोंमें नेक सलाह देकर, तीर्थ और धर्मालयों आदिको आपत्तिसे बचाकर और वर्णाश्रमी प्रजाकी नाना विपत्तियोंमें सहायक बनानेके अर्थ इस कार्य विभागकी सृष्टि हुई है।

जबसे यह कार्यविभाग स्थापित होकर स्वदेश और स्वधर्मियोंकी सेवामें प्रवृत्त हुआ है, तबसे इसने अनेक सेवाएं की हैं। भगवती भागीरथीकी पवित्र धाराको अक्षुण्ण रखना इस विभागके शुभ-कार्यका ज्वलन्त दृष्टान्त है। हरिद्वारके दाम पर और नरोराके दामपर दोनों स्थानोंमें श्रीगङ्गाकी धारा एक बार ही रोक ली जाती थी। नरोराके नीचे गंगाजीका जो जल रहता था, वह अन्य नदियोंका जल था। यह इस कार्य-विभागके पुरुषार्थका ही फल है, कि, किसी न किसी प्रकारसे गङ्गामाताकी धारा अक्षुण्ण रक्खी गई है। हरिद्वारमें दामके बीचमें छेद बनाकर धाराको खुलवाकर और नरोरामें स्थायी धाराको दामके ऊपरसे चद्दर रूपमें जारी

रखना इस कार्य-विभागके उद्योगसे हुआ है। उत्तर पश्चिम गवर्नमेण्ट और भारत गवर्नमेण्ट दोनोंसे अनेक पत्रव्योहार करके, प्रतिनिधि भेजकर, गवर्नमेण्टकी कमेटियोंमें शामिल होकर यह सफलतालाभ किया गया है। गवर्नमेण्टने कृपाकर आज्ञा दी है कि, श्रीमहामण्डलके परामर्शानुसार समय समय पर गंगाधाराको बढ़ा देनेका भी नियम रहेगा।

प्रान्तीय गवर्नमेण्टों तथा भारत गवर्नमेण्ट और देशी रजवाड़ोंमें जब कभी वर्णाश्रम विरोधी किसी कानूनके पास होनेकी सम्भावना हुई है, श्रीमहामण्डलके इस विभागने अवश्य ही उन उन समयोंमें उनका घोर विरोध करके वर्णाश्रम, सदाचारकी रक्षामें प्रयत्न किया है। इसके अतिरिक्त सतीरत्न, धर्म-रक्षा, ब्राह्मण-क्षत्रिय जातिकी रज-वीर्य्य शुद्धि, गांधी और गोहत्या विभ्राटआदि कई एक गुरुतर विषयोंमें श्रीमहामण्डलने सर्क्यूलर भी निकालकर प्रचारित किये हैं। इन वर्षोंमें इण्डिया ऐक्टके भावी संस्कारके समय वर्णाश्रमकी स्वत्वरक्षाके लिये विशेष प्रयत्न किया गया है। इसके लिये सेक्रेटरी आफ स्टेटसे लेकर श्रीमान् वाईसराय तकके समीप मेमोरियल भेजे गये हैं। कलकत्तेके व्रजनाथ मन्दिरकी पुनःप्रतिष्ठा कार्यमें जो विशेष सफलता प्राप्त की गई है, इसमें भी इस विभागका ही सराहनीय उद्योग था। हमारे चीफ सेक्रेटरी महोदयने कलकत्तेमें इस कार्यमें अधिक भाग लिया था। ऐसेही जिन जिन कार्यों से वर्णाश्रमधर्मियोंको हानि पहुँचनेकी सम्भावना है, उन सब कार्य्योंमें यह विभाग अपने कर्तव्यसे पराङ्मुख नहीं हुआ है।

इस वर्ष श्री वृन्दावन कात्यायनी पीठकी सुरक्षाके लिये, काशीके कई देवस्थानोंके स्वत्वोंकी सुरक्षाके लिये, सनातनधर्मकी नींव ढाहने वाले कानूनोंसे आत्मरक्षा करनेके लिये और कई एक तीर्थोंकी स्वत्वरक्षा करनेके लिये यह कार्यविभाग नियमित उद्योग करता रहा है।

(८) गोरक्षा।

गोरक्षाके शुभकार्यमें श्रीमहामण्ड चिरकालसे यथाशक्ति भाग लेता आया है। कई म्युनिसिपल्टियोंमें अर्जी भेजकर उक्त म्युनिसिपल्टीके अधिकारमें भारत गोहत्याका होना बन्द कराया

है। बनारस म्युनिसिपलटीमें भी कई वर्षसे उद्योग जारी है। उत्तरपश्चिम प्रान्तके श्रीमान् छोटे लाट बहादुरके समीप बहुत ज़ोरदार प्रार्थनायें की गई हैं। अन्य प्रान्तीय गवर्नमेण्टोंमें भी की गई हैं। इस प्रकारके उद्योग कई एक देशी रजवाड़ोंमें भी नियमित होते रहे हैं। गोरक्षाकी सभाओंको श्रीमहामण्डल उपदेशक आदिकी भी यथासम्भव सहायता देता आया है तथा भारतीय गवर्नमेण्टसे समय समय पर यथायोग्य प्रार्थना भी करता आया है। गोरक्षा कार्यमें और गो-जातिकी उन्नतिके कार्यमें स्थान स्थानपर अच्छे सांड़ पहुंचानेके उद्योगमें कुछ नवीन कार्य इस सालमें हुये हैं। कई जगह सफलता भी हुई है। इस वर्ष श्रीमहामण्डलके मध्यप्रान्तके प्रान्तीय मन्त्री श्री ब्रजमोहनलाल वर्मा बी० ए० एल० एल० बी० महाशयने स्वार्थत्याग पूर्वक गोरक्षाके लिये भारतवर्षव्यापी उद्योग आरम्भ किया है और उसमें यह विभाग सहायक बना है। विशेष विशेष स्थानोंमें गो जातिकी उन्नति और गोरक्षाके उद्योग करनेमें अधिक रूपसे भाग लिया है।

(६) धर्म-प्रचार ।

श्रीभारतधर्ममहामण्डलके अन्यान्य विभागोंकी तरह धर्म-प्रचार विभाग द्वारा प्रारम्भसे ही अनेक उत्तम तथा आवश्यक धर्महितकर जातिहितकर कार्य हुए हैं और बराबर होते रहे हैं। आज जो समस्त भारतवर्षमें सहस्राधिक शाखासभा तथा दस बारह प्रान्तीयमण्डल यथासम्भव हिन्दुजातिके समाजिक, नैतिक तथा आध्यात्मिक जीवनमें जागृति बनाये हुए हैं और इस विपरीतकालमें भी सनातनधर्मकी बीजरक्षा हो रही है, इसके मूलमें धर्मप्रचारविभागका ही सराहनीय पुरुषार्थ है। इसी आवश्यकीय विभागके अदम्य उद्योगसे ही अनेक शाखासभाओं द्वारा अनेक शुभकार्य हुए हैं, जिसके कुछ उदाहरण यों हैं, यथा—कानपुर जैसे स्थानमें सनातनधर्मके दो कालेज, दो स्कूल तथा दातव्य औषधालय बन गये हैं। मेरठ शहरमें एक अति उत्तम धर्मार्थ चिकित्सालय तथा औषधालय सफलताके साथ चल रहे हैं। देहली, रोहतक आदि स्थानोंमें कई एक अनाथालय चल रहे हैं। शिकारपुर, हरिद्वार, शिवपुर आदि स्थानोंमें ब्रह्मचर्याश्रम चल रहे हैं। फिरोजपुर, लुधियाना,

कानपुर, पेशावर, पटियाला, जगरांव, लखीमपुर आदि सौसे अधिक स्थानोंमें गौशालाएं चल रही हैं और बनारस, इटावा, लखीमपुर, शतेपुर, फरिदाबाद, पटियाला, फिरोजपुर, नौशेरां, मुलतान, सक्खर, लखनऊ, प्रतापगढ़, डालटनगञ्ज, लुधियाना, अम्बाला आदि नगरोंमें कई सौ सनातनधर्म हाईस्कूल, मिडिलस्कूल, प्राइमरी स्कूल, बालिकाविद्यालय, सनातनधर्म लाईब्रेरी सबके सब चल रहे हैं।

गत चार वर्षोंसे इस विभागमें खास उन्नति कर दी गयी थी और मण्डलोंके अतिरिक्त कई एक केन्द्रस्थान बनाकर धर्मप्रचारकी व्यवस्था की गई थी। चूंकि, इस समय अन्य धर्मियोंका विपरीत उद्योग प्रबल वेगसे जारी है। इसलिये अपनी औरसे भी इसे परम कर्तव्य समझकर श्रीमहामण्डलके कर्तृपक्षों ने आर्थिक स्थितिके अनुसार यथाशक्ति इस विभागको इतना बल दिया था। कलियुगमें संघशक्तिके द्वारा कार्यमें उन्नति होती है। इस सिद्धान्तके अनुसार श्रीमहामण्डलका सदासे यही प्रयत्न रहा है कि, समस्त प्रान्तके सनातनधर्म-प्रेमिगण व्यक्तिगत रागद्वेषको छोड़कर एकता-सूत्रमें बद्ध हो, सनातनधर्मका कार्य करते रहें। बङ्गाल, बिहार, युक्तप्रदेश, मध्यप्रदेश, राजस्थान, बम्बई, मद्रास आदि सभी प्रान्तोंमें इस एकता-विस्तारकार्यमें महामण्डलको सफलतालाभ होनेपर भी पंजाब प्रान्तमें बीच २ में संघशक्तिके प्राप्त करनेमें बाधायें हुई हैं। परन्तु वे बाधाएं भगवान्‌की कृपासे अतिक्रम होती रही हैं।

वर्तमान वर्षमें धर्मप्रचारार्थ करीब एक हजार रुपयेकी पुस्तक-पुस्तिकाएं अर्थाभाव रहनेपर भी इस विभाग द्वारा बांटी गयी हैं। अगले सालके लिये इस कार्यको और भी बढ़ा दिया गया है। नवशिक्षित विद्यार्थियोंमें धर्मशिक्षाका अभाव हो जानेसे जो गुरुतर हानि हो रही है, सो किसीसे छिपी नहीं है। इस विपत्तिको रोकनेके लिये और कालेजके विद्यार्थियोंकी सहायताके लिये 'वर्ल्डस इटर्नल ट्रूथ' नामक एक सुयोग्य ग्रन्थ अंग्रेजीमें इस वर्ष प्रणीत हुआ है, जो शीघ्र ही प्रकाशित किया जायगा। इस ग्रन्थसे पश्चिमी विद्वानोंको भी पौर्वात्य धर्मविज्ञान समझनेमें बहुत कुछ सहायता मिलेगी, जैसी 'वर्ल्डस इटर्नल रिलिजन' नामक

ग्रन्थसे मिली है और जिसका जर्मन भाषामें भी भाषान्तर हो गया है।

श्रीमहामण्डलके कुछ कार्यकर्त्ताओंके विशेष आग्रहसे उपदेशकों के द्वारा और भजन-मण्डलीके द्वारा धर्मप्रचारका कार्यक्षेत्र गत तीन सालोंसे बहुत कुछ बढ़ा दिया गया था। श्रीमहामण्डलने योग्य सज्जनोंके आग्रहसे अपनी शक्तिसे बाहर अर्थ व्यय करके इस कार्य्य विभागका बहुत कुछ-विस्तार कर दिया था। बहुतसे सज्जनोंने यह आशा दी थी कि, उपदेशोंकी संख्या इस तौरपर बढ़ा देनेपर अर्थ क्लेश नहीं होगा, और धर्मप्रचारकगण अपना कर्तव्य पालन करते हुए श्रीमहामण्डलके अर्थ क्लेशके दूर करनेका भी प्रयत्न करेंगे। परन्तु अधःपतित जातिमेंसे कर्तव्य पालनकी शक्ति नष्ट हो जाती है। एक ओर इस विभागमें खर्च बढ़ा देनेसे व्यय भार बढ़ता रहा, दूसरी ओर आयसे अधिक व्यय बढ़ते रहनेसे अर्थ-क्लेशका बोझ दिन प्रतिदिन बढ़ता ही रहा, और सबसे विचारनेकी बात यह हुई कि, धर्मप्रचार विभागके धर्मोपदेशक और भजनोपदेशक महाशयोंने अपना कर्तव्या पालन नहीं किया। इस कारण अगत्या अर्थ क्लेशके हो जनेसे प्रचारकोंके द्वारा प्रचार-कार्य्य कम करना पड़ा।

इस प्रकार कार्य्य कर्त्ताओंकी प्रकृति प्रवृत्तिको देखकर देशकाल पात्रपर विचार करके और समाजकी वर्तमान अवस्थाकी पर्य्यालोचना करके श्रीमहामण्डलने इस विभागके साथ समाज-हितकारी-कोष वर्णाश्रम संघ, साधारण सभ्य और मुखपत्रके विभाग सम्मिलित कर दिये हैं और इन सब शुभकार्य्यों के लिये ब्राह्मण महासम्मेलनके नेतृवृन्दोंकी सहयोगितासे एक स्वतन्त्र प्रबन्ध कारिणी समित गठित कर दी गई है। और इस विभागको पूर्णस्वाधीन कर दिया गया है। इस नये विभाग और नयी समतिके सम्बन्धसे मद्रास प्रान्तमें विशेष जागृति इस वर्ष दिखायी गई है।

अब हमारे उपदेशकगण धर्मप्रचारका काम करते हुए वर्णाश्रम-संघ और समाज हितकारी कोषविभागके एजेन्ट, डिस्ट्रिक्ट एजेन्ट और सर्कल एजेन्ट आदि बनकर यथेष्टधन भी कमा सकेंगे, जो उनका प्रधान अभीष्ट है, और साथ ही साथ धर्म-प्रचार कार्य भी हो सकेगा। इसी विभागके साथ महामण्डलके मुखपत्रोंका भी संब-

न्ध जोड़ दिया गया है। अतः इस सुकौशल पूर्ण नये नियम द्वारा प्रचारकोंकी संख्या वृद्धि, उनको धनकी प्राप्ति, महामण्डल मुखपत्रोंका प्रचार और हिन्दु-जातिमें संघशक्ति और पारस्परिक सहानुभूतिकी वृद्धि एकाधारसे होगी, ऐसी आशा है।

(१०) वर्णाश्रम-संघ ।

यह विभाग गत दो वर्ष पहले सामान्य रूपसे खोला गया था। इस वर्ष इस विभागकी स्वतन्त्र नियमावली, इस विभागके लाखों मेम्बर संग्रह करके स्वजातीय संघटन और भारतवर्षके सब नगरों और ग्रामोंमें स्थानीय केन्द्र, जिला केन्द्र और प्रान्तीय केन्द्र स्थापन करके वर्णाश्रमरक्षाका शुभ उद्योग दृढ़ता पूर्वक किया गया है। यह विभाग अपने ही प्रतिनिधि भारतवर्षकी भारत कौंसिल और प्रान्तीय कौंसिलों, म्युनिसिपल और डिस्ट्रिक्ट बोर्डों और इण्डियन नेशनल कांग्रेसमें भेजकर त्रिलोक पवित्रकर वर्णाश्रम-शृङ्खलाकी रक्षा करनेका दृढ़ उद्योग कर रहा है।

देवासुर संग्राम तो सर्वत्र चल ही रहा है। उसके अनुसार इस शुभकार्यमें बाधा बहुत हो रही है। परन्तु सर्वशक्तिमयी जगदम्बाकी कृपासे वे सब बाधाएं दूर होंगी और इस विभागके सुकौशल पूर्ण संघटनसे वर्णाश्रमधर्मावलम्बी प्रजा निद्रासे उठकर सचेष्ट और दलबद्ध होगी, ऐसी आशा की जाती है।

(११) अधिवेशन और महाधिवेशन ।

श्रीमथुरापुरीमें भारतधर्ममहामण्डलकी रेजेस्ट्रि होनेके समयसे अबतक इस अखिल भारतीय संस्थाके अनेक अधिवेशन तथा महाधिवेशन हो चुके हैं। जिनमें भारतके समस्त प्रान्तोंसे माननीय नेतागण, राजन्यवर्ग, देश सेवक-गण तथा धर्मप्रेमी सभी श्रेणीके हिन्दु एकत्रित होकर परस्पर मतविनिमय, सत्परामर्शदान, उत्साह वर्द्धन, आर्थिक सहायताप्रदान आदिके द्वारा इस संस्थाको बहुत कुछ मदद पहुंचा चुके हैं। वास्तवमें उत्सव-महोत्सव रूपी इस प्रकार संघशक्तिके द्वारा जातीय-जीवनमें नवीन जागृति उत्पन्न हो जाती है। कितने ही धर्महीन शुष्क हृदयोंमें पवित्र धर्मप्रेमका संचार हो जाता है। कितनी ही मरुभूमिमें मन्दाकिनी बहने लग जाती है। कितनी ही शुष्क धमनियोंमें आर्यरुधिरका स्रोत प्रवाहित होने लगता है। इन्हीं

अलभ्य लाभोंके सम्पादनार्थ कलकत्ता, दिल्ली, मथुरा, बनारस तथा प्रयाग नगरीमें सन् १९१४ तक पांच बड़े-बड़े महाधिवेशन कर दिये गये थे। तदनन्तर १९१५ के दिसम्बरमें श्रीकाशीधाममें जो छठां महाधिवेशन हुआ था, उसका चमत्कार कुछ दूसरा ही था। लगातार सात दिनोंतक सात विशिष्ट महाराजाओंके सभापतित्वमें समग्र भारतसे एकत्रित सहस्रों जनताके साथ यह महाधिवेशन हुआ था। जिसमें देश तथा जाति-हितकर अनेक मन्तव्यस्वीकार, विद्वान सुवक्ताओंकी सुललित सारगर्भित वक्तृताओंकी छटा, गुणी, मानी विविधकलाकुशल भारतवासियोंको उपाधि, मानपत्र, स्वर्णपदक, रौप्यपदक प्रदान, प्रसिद्ध अनोखी वस्तुओंकी विचित्र प्रदर्शिनी आदि कितने ही आवश्यक कार्य हुये थे। इस महाधिवेशनके अनन्तर प्रतिवर्ष भारतके विभिन्न नगरोंमें उन नगरोंकी सभ्य जनताके अनुरोधसे एक एक अधिवेशन गत वर्षतक होता रहा। तदनुसार लखनऊमें दो बार, कानपुरमें दो बार, दिल्ली, मुरादाबाद, गया, कलकत्तामें एक एक बार, इस प्रकारसे कई एक अधिवेशन हो चुके हैं। पुनः श्रीमहामण्डलका सप्तम महाधिवेशन सन् १९२७ में अपूर्व समारोहके साथ काशीधाममें हुआ था। जिसका विस्तारित विवरण हम गत पूर्व वर्षके कार्य विवरणमें प्रकाशित कर चुके हैं।

वार्षिक अधिवेशन ।

१—गत पूर्व अप्रेल मासमें ता० २० से लेकर २३ तक युक्तप्रान्तीय सनातनधर्मसम्मेलन तथा श्रीमहामण्डलका वार्षिक अधिवेशन लखनऊमें बड़े समारोहके साथ सानन्द सम्पन्न हुआ था।

गत पूर्व कार्तिक कृष्ण प्रतिपदासे एकादशी तक, तदनुसार तारीख २९ अक्तूबर १९२८ से ८ नवम्बर तक श्रीकाशीधाममें अखिल भारतवर्षीय ब्राह्मण महासम्मेलन बहुत ही सफलताके साथ निर्विघ्न सम्पन्न हुआ। इस अखिल भारतवर्षीय सम्मेलनको श्रीमहामण्डल अपना एक महाधिवेशन करके मानता है। यह महाधिवेशन साधारणतः वर्णाश्रमधर्मी और विशेषतः जगद्गुरु ब्राह्मण जातिका गौरववर्धक हुआ था, इसमें सन्देह नहीं। श्रीमहामण्डलकी इस सार्वजनिक उत्सवमें पूर्ण सहायता थी और श्रीमहामण्डलके प्रधान सभापति ही इसके सभापति हुए थे। इस

स्वजातीय महोत्सवका विस्तृत विवरण गतवर्षकी कार्यविवरणीमें प्रकाशित किया जा चुका है। जिस अध्यापक ब्राह्मणमण्डलीसे अबतक श्रीमहामण्डलके कार्योंमें बाधा ही पहुंचती रही, जो जगद्‌गुरु स्थानीय विद्वान् ब्राह्मणगण अबतक तमोनिद्रामें निद्रित रहनेके कारण न स्वयं कुछ करते थे और न महामण्डलके पुरुषार्थकी ओर दृष्टिपात ही करते थे, उनमें स्वदेश, स्वधर्म और स्वसमाजकी मङ्गलकर ऐसी शुभ चेष्टा देखकर श्रीमहामण्डल बहुत ही उत्साहित हुआ है आशा है श्रीविश्वनाथकी कृपासे अध्यापक ब्राह्मणगण अब श्रीमहामण्डलकी उपयोगिताको समझेंगे।

इस नवीन उत्साहसे प्रेरित होकर ब्राह्मण महासम्मेलनके नेतृवृन्दोंकी सहायतासे इस वर्षमें, जिसकी यह कार्यविवरणी है, बहुतसे अधिवेशन बंगाल, मद्रास और उत्तर भारतमें हुए। जिनमेंसे दिल्ली और मद्रासके अधिवेशन विशेश उल्लेख योग्य हैं और मद्रासका अधिवेशन तो श्रीमहामण्डलके प्रतिनिधियों द्वारा ही सञ्चालित हुआ था।

(१२) धर्मालय-संस्कार-विभाग।

इस विभागके द्वारा श्रीमहामण्डल तीर्थ और मठमन्दिरादि और सब श्रेणीके धर्मालयोंकी सुरक्षा, उद्धार, संस्कार, सुप्रबन्ध, जीर्णोद्धार आदि शुभ कार्योंमें यथाशक्ति सहायक होता है। जबसे यह विभाग स्थापित हुआ है, तबसे अनेक शुभ कार्य्य इस विभागके द्वारा सम्पादित हुए हैं। इसी कार्य्यविभागके द्वारा श्रीभगवान् शङ्कराचार्य्यके द्वारा स्थापित भारतवर्षकी चारों दिशाओंके चारों पीठोंकी यथाशक्ति सेवा हुई है। इन चारों पीठोंमेंसे शृंगेरीमठ जो दक्षिणमें स्थापित है, वह पीठ विपत्तिसे रहित रहनेसे उसके अतिरिक्त बाकी तीनों पीठोंकी सुरक्षाके लिये यह कार्य्य-विभाग सदा उद्योग करता रहा है। उत्तरा खण्डका ज्योतिर्मठ जो चार पांच सौ वर्षसे उच्छिन्न है और जहां वह मठ था, वह स्थान अरण्यमें परिणत हुआ है। बड़ी खोजसे उस स्थानको श्रीमहामण्डलने ढूंढ़ निकालकर श्रीमान् डिप्टीकमिश्नर साहब गढ़वालकी सहायतासे उस स्थानको खरीद लिया है। उत्तराखण्ड जीर्णोद्धार कमेटी, जिसके सभापति श्रीदर्बार टिहरीनरेश हैं, उस कमेटीके

द्वारा ज्योतिर्मठके मन्दिरादिका संस्कार-कार्य्य जारी है। उक्त कमेटीकी, मददसे श्रीकेदारनाथ तीर्थमें एक धर्मशाला स्थापित होकर उस तीर्थका यह अभाव दूर किया गया है। इस समय ज्योतिर्मठमें पुण्यगिरि देवीके मन्दिरका नये सिलसिलेसे जर्णोद्धार हो रहा है। पुण्यगिरि देवीके मन्दिरका काम केवल धनाभावसे इस समय बन्द है। स्वर्गीय मिथिलाधिपतिके पीड़ित और पीछे स्वर्गवासी हो जानेके कारण यह कार्य रुका है। क्योंकि उसके जीर्णोद्धारका सब व्ययभार उन्होंने ही अपने ऊपर लिया था। आशा है, स्वर्गीय नरेशके सुयोग्य पुत्र श्रीमन्महाराजाधिराज दरभंगा बाकी सहायता श्रीडिप्टी कमिश्नर साहब गढ़वालके पास भेजकर इस शुभ कार्यको पूर्ण करेंगे। इस साल आर्यकुलकमल दिवाकर हिन्दुसूर्य महाराणा साहब उदयपुरने श्रीमहामण्डलके उद्योगसे श्रीकेदारनाथ तीर्थके उद्धारके लिये अस्सी हजार रुपया देना स्वीकार किया है। उसमेंसे पन्द्रह हजार रुपया डिप्टी कमिश्नर साहब गढ़वालके पास भेज भी दिया है। श्रीमहामण्डल की उत्तराखण्ड जीर्णोद्धार कमेटीके मन्त्री श्रीमान् ब्रह्मचारी नर्मदानन्दजी महाराज बड़ी योग्यताके साथ उत्तराखण्ड तीर्थ जीर्णोद्धारकी देखभाल करते हैं। इसके लिये श्रीमहामण्डल उनके निकट कृतज्ञ है। श्रीडिप्टी कमिश्नर साहब गढ़वालके पास पौढ़ीके खज़ानेमें जो २९ हजार रुपया श्रीमहामण्डलकी ओरसे भेजा गया था और जो श्रीकेदारनाथ और जोशीमठमें व्यय हुआ है, उसका हिसाब डिप्टी कमिश्नर साहबने प्रधान कार्यालयमें भेज दिया है। गढ़वालके जितने डिप्टी कमिश्नर साहब नियुक्त हुए हैं, वे प्रायः सब श्रीमहामण्डलके उत्तराखण्डजीर्णोद्धार कार्यमें सहायक रहे हैं। इसके लिये महामण्डल उनके प्रति भी कृतज्ञता है। गंगोत्तरीके श्रीगंगाजीके मन्दिरके जीर्णोद्धारमें श्रीमहामण्डलने विशेष भाग लिया है। और श्रीगंगाजीकी धारा अक्षुण्ण रखनेके लिये श्रीमहामण्डलका पुरुषार्थ नियमित जारी है।

इसी प्रकार श्रीकुरुक्षेत्र तीर्थके उद्धारके लिये श्रीमहामण्डलके संयुक्त प्रधान मन्त्री धर्मभूषण लाला दयालीराम बी० ए० के एक मात्र उद्योगसे वहां एक स्वतन्त्र कमेटी स्थापित

होकर कुरुक्षेत्रके तीर्थोंका उद्धार हो रहा है। कुरुक्षेत्रहृदका जीर्णोद्धार, घाटोंका जीर्णोद्धार, गीताभवनकी स्थापना आदि इस कमेटीके द्वारा अनेक शुभकार्य हुए हैं। इस विभागके उद्योगसे काशीके घाटोंके जीर्णोद्धारमें बहुत कुछ मदद मिली है तथा काशीके कई एक तीर्थोंके जीर्णोद्धारमें भी सहायता की गई है। काशी के अन्नसत्रोंके सुधारमें भी बहुत कुछ सहायता की गई है। श्रीगंगोत्रीके तीर्थोंके मन्दिरकी मरम्मत, श्रीरामेश्वरतीर्थके मन्दिरके सुप्रबन्ध और मरम्मत आदि अनेक शुभकार्य्य हुये हैं। एक कमेटी द्वारा बंगालके सुप्रसिद्ध आमडँगामठका जीर्णोद्धार कराया गया है और श्री १०८ स्वामी केशवानन्दजी महाराजके शुभ उद्योगसे श्रीवृन्दावनमें कात्यायनीपीठका पुनरुद्धार प्रचुर व्ययसे हुआ है। इसके अतिरिक्त उनकी सहायतासे श्रीयमुनाजीकी धाराको वृन्दावनकी ओर लानेका भी प्रबन्ध हुआ है। इस बीचमें श्रीभगवान् आदि शंकराचार्य्यके द्वारिकाके शारदापीठ और पुरीके गोवर्द्धनपीठके झगड़ोंमें बहुत कुछ भाग लेकर उनके सुप्रबन्धके लिये उद्योग किया गया है। गोवर्द्धनमठके उद्धारके लिये कलकत्ते की कमेटीको भी उसके बहुत प्रार्थना करनेपर यथासम्भव सहायता दी गई है। इस प्रकारसे यह कार्य्य-विभाग भारतवर्षके सब प्रान्तोंमें अपनी शक्तिके अनुसार धर्मालय-संस्कार-कार्यमें भाग लेता रहा है।

कलकत्तेके ब्रजनाथ शिवमन्दिरके विषयमें श्रीमहामण्डलकी ओरसे क्या क्या उद्योग हो रहा है, इसका उल्लेख गतपूर्व सालकी रिपोर्टमें किया गया है। विशेष प्रसन्नताकी बात है, कि इस शुभ उद्योगमें श्रीमहामण्डलको पूर्ण सफलता प्राप्त हुई है। इस सम्बन्धमें बंगालके लाट साहबने अनुकूल हुक्म देते समय यह कहा कि—"माननीय सम्राट्की यह आज्ञा है कि, किसी जातिके धर्मपर हस्तक्षेप नहीं करना चाहिये। भारतीय गवर्नमेण्ट इस आज्ञाको सर्वदा मानती है और धर्मस्थान, तीर्थस्थान तथा मन्दिरादिके संरक्षण कार्यमें कभी कोई बाधा देना नहीं चाहती। ब्रजनाथ मन्दिरको जो तोड़ा गया है और शिवलिंगको हटाया गया है, यह बड़ी भारी भूल हुई है और गवर्नमेण्ट इस भूलको सर्वथा स्वीकार करती है और पुलिस-कमिश्नर सर चार्लसको आज्ञा देती

है कि, जितनी जल्दी हो सके, वे सरकारी खर्चसे शिव-मन्दिरको पुनः उसी स्थानपर बना देवें और शिवलिङ्गकी प्रतिष्ठा करा देवें।"

गतपूर्व वर्ष एक बड़ा कार्य्य यह हुआ है कि, श्रीमान् ब्रह्मचारी शारदानन्दजी महाराजने जो श्रीकाशीपुरीमें शान्ति-नगरके नामसे वर्णाश्रम धर्मरक्षाके अभिप्रायसे एक आदर्श नगर स्थापन करनेका विचार किया है, इस शुभ कार्यमें श्रीमहामण्डलने यथेष्ट सहायता की है। उसका ट्रष्ट बन गया है। श्रीमान् महाराजाधिराज मिथिलेश उसके कोषाध्यक्ष हो गये हैं और धनसंग्रहका काम जारी हो गया है और लगभग १४ लाख रुपयोंके अभिवचन प्राप्त हुए हैं और पांच लाख रुपयोंका चतुर्थांश बनारस इम्पीरियल बैंकमें जमा भी हो गया है।

युक्तप्रान्तमें धर्मालयसंस्कारके अभिप्रायसे जो एक कमेटी बनी है और जो युक्तप्रान्तमें घूम घूमकर जांच कर रही है, उसमें श्रीमहामण्डलके प्रधान वक्ता श्रीस्वामी दयानन्दजी महाराज तथा श्रीमहामण्डलके मंत्रीसभाके उपसभापति धर्मरत्न राजा मोतीचन्द्र साहब सी० आई० ई० मेम्बर बनाये गये हैं। भारतके अन्य प्रान्तोंमें भी जो ऐसे कानून बननेका प्रबन्ध हो रहा है, सब जगह श्रीमहामण्डलने यथासम्भव प्रयत्न किया है। श्रीमहामण्डलका यह प्रयत्न है कि, प्रथम तो ऐसे कानून न बनें और हिन्दुप्रजा स्वयं अपने धर्मालयोंका योग्य प्रबन्ध करे और यदि कानून बनें, तो जिससे धर्मानुकूल प्रबन्ध हो और वर्णाश्रमधर्ममें बाधा न हो, ऐसे होने चाहिये। इस विषयमें इस वर्ष महामण्डल-मन्त्रिसभाने निश्चय किया है कि, एक स्वतन्त्र कमीशन नियुक्त किया जाय, जो यू. पी और बिहार प्रान्तमें परिभ्रमण कर अपने तौरपर भी सब विषय निश्चित करे। इसके अतिरिक्त कई रजवाड़ोंके धर्मालय संस्कारमें श्रीमहामण्डलने उचित सहायता की है। इस वर्ष काशीके कई एक देवालयोंके जीर्णोद्धार कार्यमें श्रीमहामण्डलने बहुत कुछ भाग लिया है। पिशाचमोचनके सुप्रसिद्ध तीर्थ, जिसके जीर्णोद्धारमें करीब ६० हजार रुपया लग चुका है और जिसके दक्षिण तटकी १० बीघा जमीन बनारस म्युनिसिपलटीने महामण्डलको बगीचा बनानेके लिये दी है, उस जमीनपर कुछ मुसलमानोंने जबरदस्ती मसजिद बनाना चाहा था। उक्त कार्यमें

बनारस म्युनिसिपल्टीके उद्योगसे इस अन्यायका निराकरण बनारस-अदालतसे हो गया है। जिला-जजके इजलाससे भी विरोधी पक्षवाले हार गये हैं।

श्रीमहामण्डलके निकटस्थ जो विशाल भूमि है, जिसपर सर्वधर्मसदन और संस्कृत-विश्वविद्यालय स्थापित हो रहा है, इसीके निकट एक टुकड़ा बहुमूल्य भूमि, जो श्री १०८ टिकेत गोस्वामी महाराज नाथद्वाराकी थी, वह भी श्रीमहामण्डलको पूज्यवर श्रीगोस्वामीजी महाराजकी अपूर्व उदारतासे विना मूल्य मिल गयी है। इस जमीनमें एक वाल्मीकि टीला नामसे एक टीला है और उसपर वाल्मीकीश्वर महादेवका मन्दिर भी है। यह स्थान अति रम्य है। ऐसी किंवदन्ती है कि, इसी तीर्थपर महर्षि वाल्मीकि निवास करते थे और यहीं उन्होंने रामायणकी रचना कीथी। इस शिवमन्दिरका पूर्णतया जीर्णोद्धार इस वर्ष हुआ है और मन्दिरमें शिव पञ्चायतन और सीताराम, हनूमान तथा बाल्मीकिजी की मूर्तिकी स्थापना हुई है। और इस तीर्थका उत्तम रीतिसे जीर्णोद्धार किया गया है। इसके अतिरिक्त इस टीलेके जीर्णोद्धार और उसमें साधुओंके रहने योग्य स्थानोंके निर्माणका उद्योग भी जारी है।

(१३) महामण्डल-सम्बन्धके ट्रष्ट।

महामण्डलसे सम्बन्धयुक्त कई अलग अलग ट्रष्ट स्थापित हुए हैं। उनके नाम निम्नलिखित हैं।

(१) श्रीविश्वेश्वर ट्रष्ट।

(२) श्रीमहामाया ट्रष्ट।

(३) श्रीअन्नपूर्णा ट्रष्ट।

(४) श्री १०८ स्वामी केशवानन्दजी महाराजका ट्रष्ट (गुरु महाराजका ट्रष्ट)।

(५) एम्परर आफ इण्डिया ट्रष्ट।

(६) संस्कृत-विश्व-विद्यालय ट्रष्ट।

(७) आर्यधर्मप्रचारिणी सभा ट्रष्ट।

(८) जोशीमठ ट्रष्ट।

श्रीभारतधर्ममहामण्डलकी सम्पत्तिकी सुरक्षाके लिये श्रीमहा-

मण्डलके संस्थापक श्रीस्वामीजी महाराजने श्रीविश्वेश्वर ट्रष्टको स्थापित किया है। श्रीमहामण्डलके दफ्तरका विशाल भवन, लाइब्रेरी, चित्रसमूह और अन्याम्य अस्थावर चीजें इस ट्रष्टमें शामिल हैं। सबका मूल्य तीन लाखसे कम नहीं होगा। इस ट्रष्टमें नकद रुपया थोड़ा है। इस ट्रष्टकी सब सम्पत्ति सुरक्षित है। केवल इस बीचमें महामण्डल पोष्टआफिसका मकान बढ़ाया गया है और गत वर्षमें वरुणाके किनारे एक नया बंगला इस ट्रष्टमें शामिल किया गया है। इस ट्रष्टका दूसरा डिक्लेशन भी तैयार हुआ है।

दूसरा महामाया ट्रष्ट, जो श्रीमहामण्डलके संस्थापक पूज्य स्वामीजी महाराजने अपने भेंटके रुपयोंसे सर्व-धर्मसदन नामक धार्मिक विश्वविद्यालय खोलनेके लिये स्थापित किया है। जिसकी भूमि, सम्पत्ति और नकद रुपया चार लाखसे कम नहीं होंगे। इस ट्रष्टसे इस बीचमें कोई नया कार्य्य नहीं हुआ। केवल नाथद्वारेके श्री १०८ गोस्वामीजी महाराजने एक विशाल भूमि, जो इस ट्रष्टकी भूमिके निकट है, कृपापूर्वक दान की है। पट्टा रजिस्ट्री हो गया है। इसका भी दूसरा डिक्लिरेशन तैयार हो रहा है।

इस ट्रस्टमें दैववशात एक लाख पांच हजार रुपयोंका नुकसान हो गया था। यह रुपया बंकोंमें रह गया था। श्रीस्वामीजी महाराजने अपनी पुस्तकोंके स्वत्वाधिकारके बदले सिण्डिकेटके शेअर खरीदकर और इस ट्रस्टको देकर इस नुकसानकी पूर्ति करदी है। जिससे यह त्रुटि दूर हो गयी है।

तीसरे ट्रष्टका नाम श्रीअन्नपूर्णा ट्रष्ट है। इसको पूज्य श्री स्वामीजी महाराजने आर्य्यमहिलाओंके हितार्थ स्थापन किया है। इसमें एक विशाल भवन, जिसकी वर्तमान कीमत ४०-५० हजार रुपयेसे कम नहीं होगी, वह और कई दानपत्र भी शामिल हैं। उस स्थानमें विधवाश्रम और विधवा अन्नसत्र जारी है।

इस ट्रष्टके मङ्गलार्थ श्रीस्वामीजी महाराजने एक नया डिक्लेरेशन इस वर्ष तैयार किया है और अपनी पुस्तकोंके कापीराइटके बदले २० हजार रुपयोंके सिण्डिकेट फंडके शेअर खरीद कर इसको दिये हैं।

चौथा ट्रष्ट श्रीस्वामीजी महाराजके पूज्य गुरुमहाराजका है। जिसको उन्होंने अपने भुवनेश्वर, हरिद्वार, वृन्दावन आदि आश्रमोंकी सुरक्षाके लिये स्थापित किया है।

पांचवां ट्रस्ट जिसका नाम एम्परर आफ इण्डिया ट्रष्ट अर्थात् भारत-सम्राट् ट्रष्ट है, इसको सम्प्रति श्रीमहामण्डलके प्रधान सभापति तथा हिन्दूसमाजके सर्वमान्य नेता हिजहाईनेस श्रीमान् महाराजाधिराज दरभङ्गाने सर्व-धर्म-सदन अर्थात् सर्व-धर्म-विश्व-विद्यालय और अखिल भारतवर्षीय संस्कृतविश्वविद्यालय आदिकी सुरक्षाके लिये और महामण्डलके स्थायीकोषके लिये स्थापित किया है। इसके लिये कई लक्ष रुपया इकट्ठा करनेका आयोजन हो रहा है। गत वर्ष इस शुभ ट्रस्टकी पुष्टिमें परम धार्मिक आर्य्य-कुलकमलदिवाकर हिन्दुसूर्य श्रीमान् महाराणा साहब बहादुर उदयपुरने,एक अच्छी रकमकी सहायता देनेका अभिवचन दिया था और उन्होंने उन रुपयामेंसे डेढ़ लाख रुपया दे भी दिया है। श्रीमान् धार्मिक नरपतिने बड़े उत्साहसे इस स्वधर्म-प्रचार कार्यमें सहायता की है और इस ट्रस्टको अति कृपापूर्वक उदयपुर स्टेट रेलवेका हिस्सेदार बना दिया है। इस कारण श्रीमान् परम धार्मिक नृपवर समग्र हिन्दुजातिके निकट कृतज्ञताभाजन हुए हैं, इसमें सन्देह नहीं।

वर्तमान वर्षमें उक्त ट्रस्टकी रजिस्टरी भी हो गयी है। ट्रस्टके स्थापनकर्ता श्रीमान् मिथिलाधीशके स्वर्गवास हो जानेके कारण उन्होंने जो वचन दिया था कि, उदयपुरसे जो सहायता मिलेगी, वही सहायता वे करेंगे, उस अभिवचनकी पूर्ति न हो सकी। स्वर्गीय महाराजाधिराजके सुयोग्य पुत्र वर्तमान महाराजाधिराज दरभंगाने लिख भेजा है कि, इस विषयपर पीछे ध्यान देंगे। श्रीमान् ओरछाधिपतिने भी एक लाख रुपया इस ट्रस्टमें देनेका अभिवचन दिया था। यह सब उस ट्रस्टमें अन्तर्निहित है।

छठा ट्रस्ट 'जोशीमठ ट्रस्ट' नामसे स्थापित किया गया है। यह ट्रस्ट श्रीभगवान् शङ्कराचार्यकी प्रधान लीलाभूमि गढ़वाल जिलेके अन्तर्गत बदरीनाथ तीर्थके निकट ज्योतिर्मठ नामक पाठ,

(१६) श्रीमहामण्डलका संस्कृत विश्वविद्यालय।

श्रीवाराणसीविद्यापरिषद्की स्थापना इस महत् उद्देश्यसे हुई थी कि, जिसकी तुलना नहीं हो सकती। श्रीमहामण्डलके संस्थापकोंकी यह धारणा है कि, इस प्रकारके उद्योगसे पुरोहित संप्रदाय, गुरुसम्प्रदाय, कर्मकाण्डी सम्प्रदाय आदिकी पुनरुन्नति होगी। संस्कृत विद्याका आदर सर्वत्र बढ़ेगा। शास्त्रीय ग्रन्थोंका बहुत प्रचार होगा। ज्योतिष वैद्यक विद्याओंकी उन्नति होगी और एक बड़ी विद्याशक्तिका उदय होकर भारतवर्षके सब प्रान्तोंमें वर्णाश्रम धर्मकी सुरक्षा हो सकेगी।

जैसे कठोर ग्रीष्मऋतुके अन्तमें सरस वर्षा ऋतुका आगमन होता है,और जैसे प्रबल शीतऋतुके परिणाममें मधुर वसन्त ऋतुका दर्शन होकर संसार चारों ओर मधुमय हो जाता है, उसी प्रकार जगत्की वर्त्तमान स्थिति और शिक्षाप्रणाली एवं भारतवर्ष तथा आर्यजातिकी वर्तमान दशा और शिक्षाप्रणालीके परिणाममें अज्ञानविमोचनी ज्ञानजननी श्रीविद्यादेवीका विशेषरूपसे प्रकट होनेका समय आ गया है। वेदजननी श्रीविद्यादेवीकी लीलाभूमि भारतवर्ष ही जगत्में अध्यात्म ज्ञान प्रकाशक केन्द्र है और उसके मध्यमें श्रीवाराणसी पुण्यक्षेत्र ही सर्वप्रधान और जगत्मान्य पीठ है। इसी सर्वप्रधान विद्यापीठमें एक ऐसी सद्विद्याविस्तारके लिये संस्था स्थापित होनेकी आवश्यकता थी, जिसके उद्देश्य निम्न लिखित हैं।

(१) पूज्यपाद त्रिकालदर्शी और जगत् भरको अपना समझने वाले महर्षियोंकी चलाई हुई शिक्षाप्रणालीका प्रचार करना।

(२) जिससे वर्णाश्रम सदाचारका लोप न होकर आध्यात्मिक उन्नतिशील सम्प्रदायका नाश न होने पावे, ऐसा प्रयत्न करना।

(३) जिससे इस काशी विद्यापीठकी ज्ञानज्योतिकी प्रभासे पृथ्वी भरकी सभ्य जातियां लाभवान हो सकें, इसका प्रयत्न करना।

(४)भारतवर्षके स्थान स्थानपर विद्या प्रचारकी सहायतासे ऐसे प्रयत्न करना, जिससे वर्णाश्रम धर्मकी ठीक ठीक रक्षा हो और आदर्श-चरित्र ब्राह्मणोंका अभाव न होने पावे। और वे अपने स्थानपर रहते हुए और अपने सदाचारोंका पालन करते हुए विद्याका प्रचार कर सकें।

(५) काशीपुरीको केन्द्र बनाकर भारतवर्षके प्राचीन विद्यापीठोंका पुनरुद्धार करना ।

(६) एक विशेष परीक्षाप्रणालीका अवलम्बन करना कि, जो अपनी प्राचीन मर्यादा और आध्यात्मिक उन्नतिकी साधक हो तथा वर्त्तमान देश-काल-पात्रोपयोगी भी हो ।

(७) भारतवर्षकी संस्कृत पाठशालाओं और विद्यापीठोंके साथ सम्बन्ध स्थापन करके उनमें परीक्षा केन्द्रका स्थापन करना ।

(८) काशीमें एक आदर्श महाविद्यालय स्थापन करके और वर्त्तमान विद्यालय, जो काशीमें हैं, उनसे विशेष सम्बन्ध स्थापन करके, उसके द्वारा योग्य धर्मशिक्षक, धर्मप्रचारक और अध्यापक प्रस्तुत करना ।

(९) इस प्रधान विद्यापीठकी सहायतासे एक ऐसा सर्व धर्म-सदन स्थापन करना कि, जिससे पृथ्वीके सर्व देशोंके तत्त्वज्ञानपिपासु विद्वज्जन लाभ उठा सकें और ईश्वरतत्त्व, दार्शनिकतत्त्व तथा परलोकतत्त्वके विषयमें तुलनात्मक ज्ञान लाभ करके पूज्यपाद महर्षियोंकी महिमाको हृदयङ्गम कर सकें ।

(१०) सनातन-धर्मी नरनारी और बालकबालिकाओंमें धार्मिक शिक्षाका विस्तार करना और कराना ।

(११) योग्य शास्त्रीय ग्रन्थ प्रणयन और प्राचीन ग्रन्थ संग्रह करके नियमित रूपसे शास्त्रप्रकाशनका काम करना और ऐसी पुस्तक पुस्तिकायें प्रकाशित करना, जिनसे ऊपर लिखित उद्देश्योंकी सिद्धिमें सहायता मिले ।

इन सब उद्देश्योंको सामने रखकर एक संस्कृत विश्वविद्यालय स्थापित होना उचित है, और इन उद्देश्योंके अनुसार जितने कार्य-विभाग रखनेकी आवश्यकता हो, रखे जायँ । इसी उद्देश्यसे श्रीवाराणसी विद्यापरिषद् स्थापित हुई थी ।

भारतवर्षके कई प्रान्तोंमें इसके परीक्षाकेन्द्र स्थापित होगये हैं । प्रति वर्ष सफलताके साथ परीक्षा भी हो रही है । जो विद्यार्थी परीक्षोत्तीर्ण होते हैं, उनको मानपत्र आदि नियमितरूपसे दिये जाते हैं ।

श्रीमहामण्डलका सदासे भारतवर्षके प्राचीन विद्यापीठोंका

संस्कार करके उनको पुनर्जीवित करनेकी ओर ध्यान रहा है। नदिया, मिथिला, मथुरा, काश्मीर, उज्जैन आदि प्राचीन विद्यापीठोंके उद्धारके लिये महामण्डल नियमित पुरुषार्थ करता रहा है। इसी परिषद्के कार्य्योंमें यह विभाग भी सम्मिलित है।

इस परिषद्का संस्कृत पाक्षिक मुखपत्र 'सूर्योदय' बड़ी सफलताके साथ नियमित प्रकाशित होता है और उसका आदर भारतवर्षके सब प्रान्तोंमें नियमितरूपसे बढ़ता जा रहा है।

इस वर्षमें इस पुण्य कार्यके सफल होनेके विषयमें तीन आशाजनक कार्य हुए हैं। प्रथम—ब्राह्मण महासम्मेलन द्वारा ऐसे ही शुभ कार्यके लिये विशेष प्रस्ताव हुए हैं। दूसरा—आशाजनक कार्य यह है कि, हिन्दु-सूर्य महाराणा साहब उदयपुरने इसको अपनाया है और इसमें विशेष सहायता दी है। जिसका वर्णन स्थानान्तरमें आया है। और तीसरी सफलता यह हुई है, कि नाथद्वाराके श्री १०८ टिकैत गोस्वामीजी महाराजने एक बहुमूल्य जमीनका टुकड़ा जो इस विश्वविद्यालयकी जमीनके पास था, उसको दान कर दिया है। जिससे यह विशाल जमीन चौकोर और अधिक उपयोगी हो गयी है। वर्तमान वर्षमें ब्राह्मण महासम्मेलनके कई एक उत्साही नेतृवृन्दोंकी सहयोगितासे एक प्राविजनल कमेटी अर्थात् आरम्भिक कार्यकारिणी सभा गठित हुई है, जो अखिल भारतवर्षीय संस्कृत विश्वविद्यालयके संघटनका कार्य करेगी। इस स्वजातीय शुभ उद्योगमें महामहाध्यापक पण्डित पञ्चानन तर्करत्न महाशय तथा महामहाध्यापक पण्डित लक्ष्मण शास्त्री द्रविड महाशयकी सहायता सर्वोपरि है। इस सम्बन्धके एक ट्रस्टका मसविदा भी बन गया है, जिसका वर्णन ट्रस्टके अध्यायमें आगया है।

(१७) उपदेशक-महाविद्यालय।

उपदेशक महाविद्यालयका कार्य वर्तमान वर्षमें स्थगित रक्खा गया है। क्योंकि वह कार्य अखिल भारतवर्षीय संस्कृत विश्वविद्यालयके साथ सम्मिलित किया गया है। इनके द्वारा साधु और गृहस्थ विद्वान्गण नियमित शिक्षा लाभ करेंगे। प्रति वर्ष जो धर्मवक्ता विद्वान् इसमेंसे निकले हैं और निकलेंगे, उनको वृत्ति देकर श्रीमहामण्डलके प्रचार विभागमें अथवा प्रान्तीय मण्डल या शाखासभाओंमें नियुक्त करा दिया जाता है।

ऐसा प्रयत्न हो रहा है कि, काशीमें सुप्रतिष्ठित विद्यालयोंमेंसे किसी एकके साथ संस्कृतविश्वविद्यालय अपना विशेष प्रबन्ध करके इस विद्यालयका कार्य सुगमता और दृढ़ताके साथ किया करे। जिससे अपेक्षाकृत व्यय कम हो और कार्य अधिक हो सके ।

(१८) सर्वधर्मसदन ।

(सब धर्मोंका विश्वविद्यालय ।)

आध्यात्मिक विचारसे भारतवर्ष ही जगत्का गुरुस्थान है। अध्यात्मतत्त्व और आत्मलक्ष्यके अनुसन्धानमें हिन्दूजाति ही जगद्गुरु है। यद्यपि वेद और शास्त्रीय ग्रन्थोंका इस समय कोट्यांश भी नहीं मिलता, परन्तु पूज्यपाद त्रिकालदर्शी महर्षियोंके द्वारा प्रकाशित ज्ञानका खजाना अभीतक हिन्दुस्थानमें इतना है कि, जिसके द्वारा जगत्भरकी सभ्य जातियोंको बहुत कुछ लाभ पहुंच सकता है। सारे भारतवर्षका विद्याकेन्द्र काशीपुरी है। अतः श्रीकाशीपुरीमें एक ऐसा दृढ़ विद्याकेन्द्र स्थापित होना उचित है, कि जिसके द्वारा उक्त ज्ञान-ज्योतिका प्रकाश जगत्भरकी सभ्य मनुष्य जातियोंमें फैलाया जाय।

हिन्दूशास्त्रोंमें कहा है कि, "अयं निजः परो वेति गणना लघुचेतसाम्। उदारचरितानान्तु वसुधैव कुटुम्बकम् ॥" अर्थात् यह अपना है यह पराया है, यह अपनी जाति है, यह पराई जाति है, इत्यादि जो मनुष्य सोचता है, उसके विचार लघु हैं। और जो मनुष्य अथवा मनुष्य जाति यह समझती है कि, समस्त संसारके मनुष्य मेरे ही कुटुम्बी हैं, वह मनुष्य या वही मनुष्यसमाज उदार कहाता है। पुनः शास्त्रोंमें कहा है कि, "एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः। स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः ॥" अर्थात् आर्य्यावर्त्त।भारतवर्षके अग्रजन्मा जो ब्राह्मणगण हैं, उनके दिखाये हुए मार्गपर चलकर पृथ्वीकी सब मनुष्य जातियां आध्यात्मिक ज्ञान लाभ करेंगी। इस देववाणीके अनुसार हिन्दु जातिको ही एक जगत् हितकर शिक्षाकेन्द्र हिन्दुस्तानमें स्थापित करना उचित है। और काशीपुरी जब भारतवर्षका प्रधान विद्यापीठ है, तो वह विद्याकेन्द्र काशीमें ही होना सम्भव है। इस विद्यापीठके द्वारा पृथ्वीभरमें सद्विद्याविस्तार, अध्यात्म लक्ष्य-वृद्धि और तत्त्वज्ञान प्रचारमें सहायता की जाय।

इसके द्वारा एक संस्था खोली जाय कि, जिसमें ईश्वरतत्त्व, दार्शनिकतत्त्व पे ही विषय, यथा—परलोकतत्त्व, दैवजगत आदि, सर्व्वदेशीय विद्वानोंके विचार-समन्वयसे तुलनात्मक अनुसन्धान करने, प्रचार करने और शिक्षा देनेमें सुगमता हो। जहांतक सम्भव हो, पृथिवीभरकी सब जातियोंके विद्वानोंमेंसे जो चाहें, उनको मौका दिया जाय कि, वे इस अनुसन्धानकार्य्यमें काशीके "सर्व्वधर्म्ममन्दिर" (टेम्पल आफ आल रिलिजनस्) के द्वारा लाभ उठा सकें। अंग्रेजी आदि भाषाओंमें भाषान्तर करके आध्यात्मिक और दार्शनिक ज्ञानज्योतिका विस्तार, सामयिक पत्र और पुस्तकादिके द्वारा पृथिवीभरमें किया जाय। वस्तुतः यह विद्यापीठ पृथिवीभरकी सभ्य मनुष्यजातियोंका एक आध्यात्मिक विश्वविद्यालय बन जाय, ऐसा प्रयत्न होना उचित है।

भारतवर्ष जैसे धनहीन देशमें कोई सुकौशलपूर्ण यत्न ऐसा होना उचित है, जिससे लोगोंपर बोझा न पड़े, और अपेक्षाकृत सुगमताके साथ यह जगत् हितकर विद्याप्रचार कार्य्य चिरस्थायीरूपसे चल सके और सब देश तथा सब जातिके मनुष्य-समाज इस शुभकार्य्यके सहायक हो सकें, एवं साथ ही साथ लाभवान् भी हो सकें। इसके लिये माननीय गवर्नमेण्टकी आज्ञासे प्रतिवर्ष एक लाटरी करनेका भी उद्योग किया गया था। और दोनों ट्रस्टोंका हाल ट्रस्टके अध्यायमें द्रष्टव्य है। मकान आदिके नक्शे भी तैयार हो गये हैं। धनसंग्रहका भी विशेषरूपसे उद्योग आरम्भ हुआ है। गत वर्षमें इस विभागके एक मन्त्रीने बड़ी सफलताके साथ यूरोपमें भ्रमण भी किया है। इस विषयमें डेपुटेशन शीघ्र ही माननीय बड़े लाट बहादुरके पास उपस्थित होनेवाला है।

खेदका विषय है कि, लाटरी खोलनेके लिये जो भारत गवर्नमेण्टसे प्रार्थना की गयी थी, उसका इस वर्ष सन्तोषजनक उत्तर नहीं मिला। इसके लिये पुनः प्रयत्न किया जायगा। जैसी आशा स्वदेश और विदेशके धनिकोंसे सहायता मिलनेकी की गयी थी, उसमें अभी कुछ भी सफलता नहीं हुई है। केवल हिन्दुसूर्य महाराजाधिराज श्रीमान् महाराणा साहब उदयपुरकी एक मात्र सहा-

यता इसके ट्रस्टमें प्राप्त हुई है। परन्तु वह सहायता भी सनातन-धर्मकी शिक्षाकी उन्नतिके निमित्तसे ही दी गयी है। सहायताके अभावसे विचारमें कुछ न्यूनाधिक किया गया है। अखिल भारतवर्षीय संस्कृत विश्वविद्यालयके साथ ही एक ही ज़मीनपर इसका भी विद्यामन्दिर और पुस्तकालय स्थापन करनेका विचार अगत्या किया गया है। और एक त्रैमासिक पत्र अंग्रेजी भाषामें निकालनेके लिये प्रस्ताव किया गया है।

(१६) सहयोगी-संस्थाएं।

ऐसी संस्थाएं कि, जिनके कार्यालय श्रीभारतधर्ममहामण्डलके प्रधान कार्यालय भवनमें ही स्थित हैं, उनमेंसे जो जो श्रीमहामण्डलके साक्षात् अङ्गरूपसे हैं, उनका वर्णन पहले कर चुके हैं। यथाः- ट्रस्टसमूह, अखिल भारतवर्षीय संस्कृत विश्वविद्यालय, उपदेशक महाविद्यालय, वर्णाश्रमसंघ आदि। इनके अतिरिक्त ऐसी संस्थाएं हैं, जो स्वतन्त्ररूपसे सन् १८६० ईस्वीके कानून नं० २१ के अनुसार रजिष्टर्ड की हुई हैं।

श्रीविश्वनाथ अन्नपूर्णादानभण्डार नामक संस्था उनमेंसे एक है। इसका खर्च श्रीभारतधर्ममहामण्डलके संस्थापक स्वामीजी महाराज और उनके साधु-शिष्योंके द्वारा प्रणीत ग्रन्थोंकी बिक्रीकी आमदनीसे चलता है। साधुसेवा, श्रीमहामण्डलकी अतिथि-सेवा, विना मूल्य पुस्तकवितरण, अनाथ विधवाओंको दान, रोगी तथा दरिद्रोंकी सहायता, अन्त्येष्टिक्रिया आदिके शुभ कार्य्य इस संस्थाके द्वारा सम्पादित होते हैं। जिसका यश महामण्डलको मिलता है। पिछले सालोंमें पांच सौसे छः सौ माहवार तकका इस संस्थाका खर्च रहा है।

दूसरी संस्थाका नाम आर्य्यमहिलाहितकारिणी महापरिषद् है। यह संस्था सनातनधर्मी महिलाओंकी भारतवर्षव्यापिनी संस्था है। इस महापरिषद्के द्वारा अनेक शुभ कार्य्य होते हैं। यथाः—स्त्रीशिक्षामें सहायता शाखासभाओंका स्थापन, पुस्तक और सामयिकपत्रोंका प्रकाशन, स्त्री-अन्नसत्र, विधवाश्रम आदि। इस बीचमें इसके द्वारा निम्नलिखित कार्य्य ऐसे हुए, जो उल्लेख करने योग्य हैं।

(क) श्रीमहामण्डलके व्यवस्थापक श्रीस्वामीजी महाराजने एक विशाल भवन देकर अन्नसत्र और विधवाश्रमके लिये एक ट्रस्टकी स्थापना की है। जिसमें वे स्वयं ट्रष्टी नहीं हैं, किन्तु कई रानी महारानियां और कई रईस आदि ट्रष्टी हैं। इस ट्रस्टमें वर्तमान सालमें सिण्डिकेटके बीस हज़ार रुपयोंके शेयर श्रीस्वामीजी महाराजने अपने पुस्तकोंके स्वत्वाधिकारकी सहायतासे खरीद कर प्रदान किये हैं।

(ख) राज्य बनारसके माननीय महाराजकुमारके हाथसे एक स्त्रीजातिका अन्नसत्र खुलवाया गया है, जो नियमित जारी है।

(ग) आर्य्य-महिला नामक पत्रिका जो पहले त्रैमासिक थी, इस बीचमें मासिक की गई और तीन वर्षसे उसका आकार डबल क्राउन आठ पेजी करके उसकी बहुत कुछ उन्नति की गई है और वह अब हिन्दुस्थानमें एक सर्वोच्च पत्रिका बन गई है। आर्य्यमहिला-हितकारिणी महापरिषद्ने इस वर्ष बहुत ही प्रशंसनीय काम किये हैं। उसकी ज्वाइन्ट जनरल सेक्रेटरी श्रीमती विद्यादेवीने भारतवर्षके रजवाड़े तथा बम्बई आदि कई शहरोंमें भ्रमण करके लोकसंग्रह और धनसंग्रह द्वारा इस संस्थाको स्वाधीन कर दिया है। अंग्रेजी भाषामें इसकी रिपोर्ट प्रकाशित हुई है, सो द्रष्टव्य है।

(घ) वर्तमान वर्षमें उक्त श्रीमतीके विशेष उद्योगसे बिल्डिंग फण्डका काम आरम्भ किया गया है, जिसमें सात हज़ार रुपयेके करीब चन्दा वसूल भी हो गया है। ट्रस्टके मकानमें इस धनके द्वारा छात्री निवासके मकानका बनना शुरू किया जायगा। नकशा वगैरह बन गया है।

(२०) देव-सेवा।

श्रीमहामण्डलके प्रधान कार्यालयमें तीन देवालय हैं। श्रीमहामण्डलके यज्ञमण्डपमें गायत्रीदेवी, भवनके दूसरे मंजिलमें श्रीवेद-भगवान् तथा त्रिमूर्त्ति जिनके नाम पर यह देवोत्तर सम्पत्ति उत्सर्ग की हुई है और तीसरी मंजिलपर श्रीमहामण्डलध्वजाके नीचे श्रीहनुमानजीका मन्दिर है। तीनोंकी नित्य नैमित्तिक पूजाका यथावत् प्रबन्ध रहा है। इसके अतिरिक्त घट-स्थापन पूर्वक चौबीस नैमित्तिक पूजा

और उत्सव हवनादि होते रहते हैं। यथाः-शारदीय नवरात्र,वासन्ती नवरात्र, सरस्वतीपूजा, लक्ष्मीपूजा, गणपतिपूजा, सूर्य्यपूजा, शिव-रात्रिपूजा, जन्माष्टमीपूजा, लक्ष्मीनारायण पूजा, इन्द्रपूजा, श्यामा पूजा, जगद्धात्रीपूजा, हनुमानजयन्ती,शङ्करजयन्ती,दत्तजयन्ती आदि। दोनों नवरात्रोंकी अष्टमीमें पाठ, हवन और महामण्डलध्वजाका नियमित संस्कार भी होता रहा है।

(२१) राष्ट्रभाषाकी उन्नति।

श्रीभारतधर्ममहामण्डलने भारतवर्षकी राष्ट्रभाषा हिन्दीकी उन्नतिके लिये जितना दृढ़ पुरुषार्थ किया है, उतना और किसी संस्थाने नहीं किया है, यदि ऐसा कहा जाय तो अत्युक्ति नहीं होगी। धर्मप्राण हिन्दुजातिकी वर्त्तमान मातृभाषा हिन्दी है। हिन्दीमें सनातनधर्मके प्रचार और अध्यात्म लक्ष्यवृद्धिके अभिप्रायसे अभूतपूर्व ग्रन्थोंका प्रणयन किस अलौकिक रीतिसे हुआ है, इसका कुछ दिग्दर्शन श्रीमहामण्डल डाइरेक्टरीके स्थानान्तरमें कराया गया है। धर्मकल्पद्रुम नामक धार्मिक विश्वकोषकी आठ संख्याएं जो प्रकाशित हो चुकी हैं, कर्ममीमांसा दर्शनका हिन्दीभाष्य जो दो खण्डोंमें प्रकाशित हो चुका है तथा योगदर्शन-भाष्य हिन्दी, उपनिषद्-भाष्य, दुर्गा-भाष्य, भगवद्गीताभाष्य आदिके द्वारा इस गुरुतर परिश्रमका कुछ पता मातृभाषाप्रेमियोंको लग सकेगा। इसी प्रकार सब दर्शन भाष्य और अनेक अभूतपूर्व टीकाग्रन्थ प्रणयन होकर छपनेके लिये तैयार हैं और पन्द्रह हजार १५००० पृष्ठके लगभग हिन्दीभाषाके ग्रन्थ छपकर प्रकाशित हो चुके हैं। जिनकी सूची इस डाइरेक्टरीमें अन्यत्र प्रकाशित है। इसके अतिरिक्त एक मासिक हिन्दीपत्र नियमित प्रकाशित होकर राष्ट्रभाषाकी सेवामें नियुक्त है और राष्ट्रभाषा हिन्दीकी शक्ति वृद्धि और सेवाके लिये श्रीमहामण्डल डाइरेक्टरी कितनी उपयोगी है, सो उसके पाठकगण स्वयं जान सकेंगे। देशके गण्यमान्य राष्ट्रभाषासेवी, सुलेखक तथा कवि, जिनकी संख्या करीब २०० के होगी, उनको श्रीमहामण्डलने विद्योपाधि, पदक आदि द्वारा उत्साहित किया है और इस वर्ष मानपत्रादि देकर जिनके गुणोंकी पूजा की गई है, उनकी नामावली मानदान विभागमें प्रकाशित है।

वर्तमान वर्षके अन्तमें राष्ट्रभाषा हिन्दीकी सर्वाङ्गीण पूर्णता-सिद्धिके लिये श्रीमहामण्डलने भारतधर्मसिण्डिकेट लिमिटेडको इस तरह प्रेरित किया है कि, वह 'इन्साइक्लोपीडियाब्रिटानिका' की तरह एक ऐसा 'शब्दज्ञानार्णव' तैयार कर प्रकाशित करे, जिसमें संसारभरके मौलिक ज्ञानका समावेश हो जाय। इस प्रकारका संग्रह अबतक किसी भाषामें नहीं हुआ है। श्रीभगवान् चाहेंगे, तो यह मान सर्वप्रथम हिन्दी भाषाको ही प्राप्त होगा।

(२२) संगीत-विद्याकी उन्नतिमें उत्साह-प्रदान।

साहित्य और संगीतका परस्पर मिश्रसम्बन्ध है। विशेषतः हिन्दु प्राचीन संगीतका उपासनाकाण्डके साथ बहुत ही घनिष्ठ सम्बन्ध है। आर्य्यसंगीत विद्याकी तुलना पृथिवीके किसी संगीत-विद्याके साथ हो नहीं सकती। जबसे श्रीमहामण्डलकी स्थापना हुई है,श्रीमहामण्डलके नेतृवर्गने लगभग १२५ के संगीतके आचार्य्यों को संगीतोपाधि और पदक आदि देकर सम्मानित किया है। उसके अनन्तर इस बीचमें संगीतके जिन आचार्योंको मान दिया गया है, उनकी नामावली मानदानविभागमें द्रष्टव्य है। इस मानके देनेमें श्रीमहामण्डलने धर्म और जातिका कोई भी विचार नहीं किया है। श्रीमहामण्डलके भवनमें नियमपूर्वक संगीतचर्चा होती रहती है और बाहरसे आये हुए संगीतके आचार्योंका कुछ सत्कार भी किया जाता है। गत चार वर्षोंसे भजनोपदेशक जो संगीत जानते हैं, नियुक्त होकर धर्मवक्ताओंके साथ बाहर भी भेजे जाते हैं।

(२३) जगत्-हितकर धर्मकार्य्योंको उत्साह-प्रदान।

सनातनधर्मियोंके निकट सारे जगत्के मनुष्य ही उनके कुटुम्बी हैं और जगत्के सब देश ही उनका स्वदेश है। इस उदारताको हृदयमें रखकर अपनी शक्तिके अनुसार श्रीमहामण्डल धर्मकार्य्योंमें यथासम्भव उत्साह देता आया है। कहीं पत्र भेजकर, कहीं मान-पत्र भेजकर, देशीरजवाड़ोंमें—वहांके दर्बारोंमें—पत्र भेजकर, विदेशोंमें विद्योपाधि आदिके मानपत्र भेजकर श्रीमहामण्डल इस प्रकारका जगत्‌हितकर कार्य्य करते रहनेको अपना कर्त्तव्य समझता रहा है। मानदानविभागकी नामावलीकी पर्य्यालोचना करनेसे इस शुभ कार्य्यका कुछ दिग्दर्शन होगा। आर्थिक सहायता दिलवानेके लिये

भी श्रीमहामण्डल पत्रादि द्वारा यथाशक्ति उद्योग करता रहता है। इस विभाग द्वारा धार्मिक-व्यवस्था दान, धार्मिक पुस्तकदान, उपदेशकोंको सहायताप्रदान, पत्र द्वारा धर्मोपदेशप्रदान, योगादि साधनमें उपदेशप्रदान आदि अनेक कार्य्य इस विभाग द्वारा होते रहते हैं। पृथिवीके अनेक सभ्य देशोंके पुस्तकालयोंमें श्रीमहामण्डलने अपनी अङ्गरेजी धर्म-पुस्तकें बिना मूल्य भेजी हैं।

इस वर्ष श्रीमहामण्डलने अपनी उदार और जगत्‌हितकर नीतिके अनुसार लाहौरकी इण्डियन नेशनल कांग्रेसमें शुभाशीर्वाद-सूचक सन्देश यथासमय भेजा था। और उसकी नकलें प्रधान २ नेताओंके पास भी भेजी थीं। इस विस्तृत सन्देशमें यह भी चेतावनी दी गई थी कि, कांग्रेसको यदि बलशाली, सर्वमान्य दूरदर्शी और स्थायी कार्यकारी होना है, तो उसको अपनी वर्तमान नीतिसे मुंह मोड़कर किसीके धर्ममें हस्तक्षेप करनेका उद्योग रहित कर देना चाहिये।

(२४) स्थानीय सभाओंका-कार्य।

काशीपुरीमें श्रीभारतधर्ममहामण्डल नाना प्रकारके धर्म-कार्य्योंमें सहायता देता रहता है। ऐसी सभाएं जिनका साक्षात् सम्बन्ध महामण्डलसे है, यथाः-श्रीविश्वनाथ अन्नपूर्णा दानभण्डार, भारतधर्मसिण्डकेट लिमिटेड्, वर्णाश्रमसंघ आदि, जिनका वर्णन स्थानान्तरमें हो चुका है, उनके अतिरिक्त प्रधान प्रधान संस्थाओंका संक्षेप विवरण नीचे दिया जाता है।

भारतवर्षीय आर्यधर्मप्रचारिणी सभा, काशी। यह सुप्रसिद्ध धर्मवक्ता स्वामी कृष्णानन्दजीकी सभा है। यह रजिस्टर्ड सभा है और श्रीमहामण्डलकी काशीकी शाखासभा है। इसके अधीन काशीके महल्लोंमें अलग अलग सभाएं हैं। इस सभाके सुप्रबन्धसे काशीमें प्रत्येक दिन कहीं न कहीं धर्मचर्चा होती है। दशाश्वमेधघाटपर तो धर्म-व्याख्यान नियमित होते हैं। तीर्थयात्रियोंका क्लेश निवारण करना, काशीके तीर्थोंका जीर्णोद्धार करना आदि कार्य्य भी इस सभाके हैं। पिशाचमोचन तीर्थ, श्रीवाल्मीकीश्वर महादेव और टीला, श्रीगिरीशटीला और महादेवजीके सम्हाल आदिका भार भी इसी सभापर है। गंगा दशहरा उत्सवमण्डल,

मणिकर्णिका आरतीमण्डली, सनातनधर्मविद्यालय, सनातनधर्म कन्या पाठशाला, डार्विन पिलग्रिम ट्रष्ट आदि संस्थाओंको भी श्रीमहामण्डल यथासम्भव सहायता दे रहा है।

सम्प्रति शान्तिनगर स्थापनसभा नामसे एक मण्डली स्थापित हुई है। जिसका उद्देश्य है कि, असीकी ओरसे लेकर काशीकी पश्चिम दिशा तक आठ-दश हजार एकड़ जमीन लेकर "शान्ति नगर" नामसे एक आदर्श नगर वर्णाश्रमियोंके लिये स्थापन किया जाय। इस शुभ कार्य्यमें श्रीमहामण्डल यथासाध्य सहायता दे रहा है। चौदहसौसे अधिक सज्जनोंने जमीन लेनेका स्वीकृति पत्र लिख दिया है। कार्य्य बहुत कुछ अग्रसर हुआ है। इस नगरमें प्राचीन आदर्शके अनुसार केवल वर्णाश्रमधर्म मानने वाले सज्जन ही वास कर सकेंगे। शिक्षालय, पुस्तकालय, देवालय, गोशाला, औषधालय, बाजार और ब्रह्मचर्याश्रम आदि प्राचीन धर्मभावके लक्ष्यको रखकर यथा स्थानपर इस नगरमें स्थापित होंगे। वर्णाश्रम सदाचारकी बीजरक्षाके लिये ही यह शुभ आयोजन होरहा है। इस शुभ कार्य्यमें जो योग दान देना चाहें, वे महामण्डल प्रधान कार्यालयसे पत्र व्यवहार कर सकते हैं। इस विराट् और आदर्श धर्मकार्य्यका विस्तृत विवरण 'संस्थाखंड' में द्रष्टव्य है।

(२५) शाखा-सभायें और प्रान्तीय कार्यालय।

श्रीभारतधर्ममहामण्डलकी शाखा सभाएं भारतवर्षके सब प्रान्तोंमें ही स्थापित हैं। जिनकी संख्या महामण्डल प्रधान कार्यालयके रजिस्टरके अनुसार ६५० है। इनके अतिरिक्त भारतवर्षके सब प्रान्तोंकी पोषक सभाएं, जाति सभाएं, विद्यासम्बन्धी सभायें, तीर्थोद्धारक सभायें, गोरक्षिणीसभायें आदि कई श्रेणीके सभायें हैं, जिनकी संख्या १५० होगी। पहले महामण्डलके मुखपत्रोंका बिना मूल्य इन सभाओंमें जानेका नियम था, धनाभावसे इस नियमको कुछ दिनोंसे बन्द करना पड़ा है। श्रीमहामण्डलकी शाखासभाओंकी नियमावलीमें भी इस समय बहुत कुछ अनुकूल परिवर्तन किया गया है, सो छपी हुई नियमावलीमें द्रष्टव्य है।

श्रीमहामण्डलके प्रान्तीय कार्य्यालय भारतवर्षके प्रायः सभी

प्रान्तोंमें स्थापित हैं, जो उन प्रान्तोंके मन्त्रियोंके सम्बन्धसे ही सञ्चालित होते हैं। श्रीमहामण्डलके प्रान्तीय मन्त्री निम्नलिखित केन्द्रोंमें हैं। यथा—कलकत्ता, मद्रास, हैदराबाद, (दक्षिण) श्री रंगम्, नासिक, बंबई, गौहाटी, पटना, नागपुर, अमरावती, उदयपुर, फीरोजपुर, करांची, लखनऊ, मेरठ दिल्ली, अजमेर, अहमदाबाद, रावलपिण्डी और कानपुर।

श्रीमहामण्डलके नये प्रबन्धके अनुसार वर्णाश्रमसंघके केन्द्र भी भारतके अनेक स्थानोंमें स्थापित हुए हैं।

(२६) शृंखला और प्रबन्ध।

गत सप्तम महाधिवेशन जो, काशीमें सन् २७ के अन्तमें हुआ था, उसके सुअवसरपर श्रीमहामण्डलके नियम और उपनियमोंमें बहुत कुछ परिवर्त्तन किया गया है, जो महामंडलकी छपी हुई नियमावलीमें द्रष्टव्य है। भारतवर्षके सब प्रान्तोंके प्रतिनिधियोंकी संख्या चतुर्गुण अर्थात् १२०० कर दी गई है और उनका वार्षिक चन्दा २५) रुपया और १०) रु० ही रक्खा गया है। प्रतिनिधिसंख्या नियमित बढ़ानेका भी प्रयत्न हो रहा है। संरक्षकोंके विषयमें जो नियम परिवर्त्तन किये हैं, उनमें दो विषय उल्लेख करने योग्य हैं। अबतक संरक्षक महोदय स्वाधीन नरपतियोंसे ही चन्दा लिया जाता था, जिनके दानपत्र हैं, अब यह नियम नया किया है कि, जिन्होंने दानपत्र नहीं दिया है, उनसे (कमसे कम १००) सौ रुपया साल चन्दा अवश्य लिया जायगा। इस नियमको कार्य्यरूपमें परिणत करनेका भी प्रयत्न हो रहा है। नये नियमके अनुसार धर्म्माचार्य्य और स्वाधीन नरपतियोंके अतिरिक्त यदि किसी विशिष्ट राजा महाराजा धर्माचार्य विद्वान् ब्राह्मण आदिको मन्त्रीसभा उचित समझेगी, तो संरक्षक श्रेणीमें ले सकेगी। इसके अतिरिक्त सहायक सभ्योंके नियमोंमें परिवर्तन किया गया है। सहायक सभ्य आनरेरी भी होंगे और ५) रु० साल देनेवाले सहायता दाता भी होंगे। आर्यमहिलाएं भी सहायक सभ्या हो सकेंगी। साधारण सभ्य २) रु० साल देनेवाले रहेंगे। उनको कुछ पुस्तकें पत्रादि बिना मूल्य मिलते हैं। विस्तृत नियम नियमावलीमें देखने योग्य है। इनके अतिरिक्त एक बार।) देनेसे ही वर्णाश्रम संघके सभ्य

हो सकते हैं। इस बीचमें प्रतिमास दो चार सर्कुलर नियमित भेजकर इस भारतवर्ष व्यापी शृङ्खलाका कार्य्य चलाया गया है। मन्त्रीसभाका अधिवेशन प्रायः प्रतिमास ही होता रहा है। श्रीमहामण्डलके उद्देश्योंमें इस वर्ष कई एक उद्देश्य बढ़ाये गये हैं। प्रतिनिधि संख्याकी भी वृद्धि हुई है। इस समय १३६ संरक्षक और ३८० प्रतिनिधि श्रीमहामण्डलमें सम्मिलित हैं। इसके अतिरिक्त सहायक सभ्य और साधारण सभ्य हैं। जिनसे सर्कुलर और पत्रादि द्वारा सम्मति लेकर सब काम किया जाता है।

(२७) धन-सम्बन्धीय अवस्था।

जबसे श्रीमहामण्डल स्थापित हुआ है, प्रतिवर्ष लगभग २५०००) रुपयेसे लेकर ५००००) रुपये तक सालका खर्च इसका रहा है। जब कभी महाधिवेशन हुए हैं अथवा कोई विशेष कार्य्य आपड़ा है, तब इसका वार्षिक खर्च बढ़ गया है। चन्दोंकी आमदनीके अतिरक्त राजा-महाराजाओंके दानपत्रोंकी आमदनीसे ही इसका खर्च अधिक चलता रहा है। प्रतिवर्षके प्रारम्भमें आय और व्ययका बजट नियमितरूपसे मन्त्रीसभा द्वारा बनकर संरक्षक महोदय और प्रतिनिधि महोदयोंके पास भेजकर मंजूरी ली गई है। अबकी भी यथासमय बजट सर्क्यूलर प्रकाशित हुआ है। श्रीमहामण्डलके व्यवस्थापक श्रीस्वामीजी महाराजने ऐसा सोचा था, जैसे देशी धर्मालयोंका कार्य्य राजाओंके दानपत्रोंसे चलता रहा है, वैसे ही श्रीमहामण्डलका कार्य्य भी चलता रहेगा। परन्तु वर्त्तमान समय बड़ा कठिन आ गया है। अब देखा गया कि, दानपत्रोंपर भरोसा नहीं किया जा सकता है। क्योंकि इस समय दाताओंकी मति गति कदाचित ठीक भी रहे, तो उत्तराधिकारियोंकी मतिगति ठीक रहना निश्चित नहीं है। गत चार वर्षोंसे दानपत्रोंकी आमदनी घटने लगी है,जिसके कारण श्रीमहामण्डल प्रतिवर्षका व्यय आयसे अधिक रहा है। श्रीस्वामीजी अपनी जिम्मेवरीपर श्रीमहामण्डलको एक बैंकसे रुपया दिलाते रहे हैं। इस वर्षका आय-व्ययका गोशवारा नीचे दिया जाता है। पु०

(१) इस वर्ष देव सेवामें १२६०) खर्च हुए हैं। जो खर्च श्रीमहामण्डलके श्रीमहामाया ट्रस्टकी आमदनीसे निर्वाह होता है।

इसमें नैमित्तिक यज्ञका खर्च भी शामिल है। (२) दफ्तरका तनख्वाह खर्च ३२१३) हुआ है। (३) धर्मप्रचार विभागका खर्च जिसमें वर्णाश्रम संघका खर्च भी शामिल है इसमें ५२८०) खर्च हुआ है। (४) विश्वविद्यालय विभाग, इसमें बाहरके परीक्षाकेन्द्र, पाठशालाओंको सहायता, धर्मशिक्षा, सर्वधर्मगवेषणामंदिरका प्रारंभिक खर्च सब समेत ५४४२) खर्च हुआ है। अबकी इसके लिये केवल सात हजारकी मंजूरी ली गई है। धनाभाव ही इसका कारण है। (५) साधु सेवा और अतिथि सत्कार, इसमें गत वर्ष २६०७) खर्च हुआ है। इस विभागका खर्च महामण्डल नहीं देता है। श्रीविश्वनाथ अन्नपूर्णा दानभण्डार नामक संस्थासे और श्रीस्वामीजी महाराजकी पुस्तकविक्रीकी आमदनीसे यह खर्च चलता है। (६) अधिवेशन विभाग, इसमें मानदान भी शामिल है, इसमें ५१४) खर्च हुआ है। (७) छपाई विभाग इसमें महामण्डल डाइरेक्टरीकी छपाई भी शामिल है, इसमें १३७९) गत-वर्ष खर्च हुआ है। (८) कागज लिफाफे स्टेशनरी आदिमें गत वर्ष २९३) खर्च हुए। (९) टिकट और तारखर्च ११५१) हुआ है। (१०) शास्त्र प्रकाशनका काम पिछले साल भारतधर्मसिं-डिकेटलिमिटेड् द्वारा हुआ था, इस कारण इसमें स्वतंत्र खर्च न हो सका। अर्थाभाव ही इसका कारण है। (११) दफ्तरके लाइब्रेरी-विभागमें केवल ३४) खर्च हुआ है। इसका भी कारण अर्थाभाव ही है। (१२) विना मूल्य धर्मपुस्तक वितरणमें अर्थाभावसे अधिक खर्च नहीं किया जा सका। केवल ८९९) खर्च हुआ।

पूर्व वर्षोंमें जितनी आमदनी होती थी, उसीके अनुसार खर्च भी प्रचार विभाग, उपदेशक महाविद्यालय विभाग (जो अब संस्कृत विश्वविद्यालय विभागमें शामिल कर दिया गया है) यज्ञ विभाग, शास्त्रीय ग्रंथ विना मूल्य दान विभाग, आदि आवश्यकीय विभागोंमें जितना खर्च प्रतिवर्ष होता था, उसका चतुर्थांश भी नहीं हो सका है। इसका प्रधान कारण यह है कि, १३९ संरक्षकोंमें केवल १७ संरक्षकोंने और ३८० प्रतिनिधियोंमें केवल २१ प्रतिनि-धियोंने अपनी सहायता और चन्दा भेजा है। काश्मीर, दरभंगा, किशनगढ़, दतिया, धांगध्रा जैसे सहायक राज्योंसे सहायता नहीं

मिली है। अब बहुत चन्दा बाहरसे लेना बाकी पड़ गया है। वर्तमान कालका प्रभाव ही इसका कारण है।

आनंदका विषय यह कि, गत वर्ष ६४३२३ ॥=)॥ कर्जा था। और वर्तमान वर्षके अन्तमें कर्जा ३७५४०≡)२ रह गया है। इसका प्रधान कारण यह है कि, संयुक्त ट्रस्टों और संस्थाओंने श्रीमहामण्डलका अर्थक्लेश देखकर उसको २६५२० ॥≡)११ की सहायता पहुंचायी है। संरक्षकों तथा मेम्बरोंसे इस विषयमें विशेष सहायता प्राप्त नहीं हुई है। वे यदि अपनी पूरी पूरी सहायता करते, तो महामण्डलकी आर्थिक अवस्था बहुत कुछ सुधर जाती। इस वर्ष भी महामण्डलके संरक्षकों तथा सभ्योंसे केवल ११३१८॥≡) की आमदनी हुई है। और और जरियेसे ५७४८॥।=)४ तथा संयुक्त संस्थाओंसे कर्जा चुकानेके लिये ऊपर लिखित आमदनी हुई है। इससे श्रीमहामण्डल जैसे भारतवर्षव्यापी स्वजातीय धर्मकार्यके गुरुतर आर्थिक क्लेशका अनुभव पाठकोंको हो सकेगा।

इस हिसाबके देखनेसे मालूम होगा कि चन्दा ठीक ठीक न पहुंचनेसे कितना कर्जा हो गया है। यदि संरक्षक प्रतिनिधि महाशय सब अपना चन्दा ठीक ठीक देवें, तो अर्थकी कमी भी नहीं रहे और श्रीमहामण्डलके धर्म-कार्यकी भी उन्नति हो सके। अथवा उनमेंसे उदार हृदय जो हैं, वे यदि कुछ खास चंदा भेजकर उस समय मदद करें, तो श्रीमहामण्डलकी माली हालत अभी सुधर सकती है।

(२८) समाज हितकारी कोषविभाग।

इसवर्ष समाज-हितकारीकोष-विभाग अर्थात् हिन्दु-म्युचुअल बेनी फिटफण्डके नियमोंमें बहुत कुछ नवीनता की गई है। और उसको नया बना दिया गया है आशा है, इस नवीन उद्योगके द्वारा हिन्दु-समाजका बहुत कुछउपकार और महामण्डलकी बहुत कुछ दृढ़ता होगी। उसकी विस्तृत नियमावली इस पुस्तकके स्थानान्तरमें हिन्दु-नरनारी मात्रके देखने योग्य है। उसीके द्वारा कृपापूर्वक इस लोकोपकारी संस्थाका संघटन करके और उसमें शामिल होकर इस अत्यावश्यक कार्य्यको पूर्ण करें।

(२९) डाइरेक्टरी विभाग।

भारतधर्म सिन्डिकेट लिमिटेड से श्रीमहामण्डल डाइरेक्टरी का काम अपने हाथमें लेकर यह विभाग स्वतंत्ररूपसे स्थापित किया गया है। इसका विस्तारित विवरण इस पुस्तकके प्रारम्भमें द्रष्टव्य है ।

(३०) विभिन्नविषय।

भारतधर्म सिण्डिकेट लिमिटेडमें नयी शृङ्खला और नई व्यवस्था हो जानेसे भारत-धर्म और महाशक्तिके निमित प्रकाशित होनेमें बाधा हुई है। अब नये उद्योगसे समाज हितकारी कोपके सम्बन्धसे उनका प्रकाशन-कार्य प्रारम्भ होगा। सूर्योदय नियमित प्रकाशित होता रहा है। मुखपत्रका कार्य सर्क्यूलरोंसे नियमित रूपसे लिया गया है। परन्तु अब यह विचार है कि, शीघ्रही निगमागमचन्द्रिकाका प्रकाशन पुनः प्रारम्भ किया जायगा और सभ्य गणोंको तथा पुरुषार्थ शील संयुक्त संस्थाओंको वह विना मूल्य दी जायगी।

इस सालके अन्तमें एक बड़े शुभकार्यका प्रारम्भ श्रीभारतधर्म महामण्डलने अपनी विशेष सहायतासे कराया है। हिन्दी भाषामें हिन्दुस्तानकी राष्ट्रीय इन्साक्लोपीडिया प्रकाशित करनेका उद्योग प्रारम्भ किया गया है। कोई जाति कदापि उन्नत नहीं समझी जाती जबतक उसकी स्वजाति मातृ-भाषा उन्नत न हो सके। और कोई भाषा तबतक उन्नत और पूर्ण नहीं कही जासकती जबतक उसकी भाषामें इनसाइक्लोपीडिया अर्थात् भाषाका महा-कोष पूर्ण विवरण सहित प्रकाशित न हो। आज तक बंगला, मरहठी, गुजराती हिन्दी आदि भाषामें जो इस तरहके ग्रन्थ प्रकाशित हुए हैं वे सब इन्साईक्लोपीपिडिया नहीं कहे जा सकते हैं, इस कारण भारतधर्म सिण्डिकेट लिमिटेडका नया संस्कार कराकर इस पुण्य जनक कार्यका उसको भार सौंपा गया है।

श्रीगंगाजीकी धाराको अक्षुण्ण रखनेके लिये और हरिद्वार और नरोराके बन्दोंमें धाराको खुली हुई रखनेके लिये श्रीमहामण्डलने बड़े बड़े सफलता जनक उद्योग किये हैं यह सब विदित ही है।

इस सालके अन्तमें श्रीमान् चीफ इन्जीनियर साहबबहादुर महकमा आबपाशीसे इस विषयमें पुनः पत्र व्यवहार किया गया है। जिसका फल अगले सालकी रिपोर्टमें प्रकाशित होगा।

देशके वर्त्तमान राजनैतिक सामाजिक और धार्मिक क्रान्तिके समय नहीं, श्रीमहामण्डलने माननीयगवर्नमेंट और राजनैति नेतृवृन्द और वृटिश जातिको यथा सम्भव सत्परामर्श इस सालके अन्तमें दिये हैं, जिसका विस्तारित हाल पीछेसे प्रकाशित किया जायगा।

अखिल भारतवर्षीय क्षत्रियमहासभाके महाधिवेशनमें शुभ प्रस्ताव करके ब्राह्मण और क्षत्रिय विद्यार्थियोंकी धार्मिक शिक्षाके लिये खास उद्योगका प्रस्ताव हुआ है।

घृतकी अशुद्धीके विषयमें तहकीकात करके विदेशीय बनावटी घीके विषयमें श्रीमहामण्डलने उचित चेतावनी सर्वसाधारणमें प्रकाशितकी है।

संस्कृत भाषाकी उन्नतिके लिये अप्रकाशित उत्तम उत्तम धार्मिक और दार्शिनिक ग्रन्थ सूर्योदय संस्कृत ग्रन्थावली नामसे एक विशेष ग्रन्थावली प्रकाशित करनेका प्रारम्भ किया गया है। उसी प्रकार से हिन्दी भाषाकी पुष्टिकेलिये निगमागम हिन्दी ग्रन्थावलीका नियमित प्रकाशित करनेका उद्योग इस वर्षके अन्तमें किया गया है। श्रीमहामण्डल प्रधानकार्यालयमें जो धार्मिक तथा बहुमूल्य तस- वीरोंका संग्रह है। उस पिक्चर गेलरीमें गतवर्ष करीब ५० पचास उत्तम तसवीरोंका और भी संग्रह हुआ है। उसी प्रकार पुस्तकालयों में भी करीब १५० डेढ़सौ पुस्तकोंका संग्रह हुआ है।

श्रीमहामण्डलकी कार्य्य-नीति ऐसी ही उदार है कि, साम्प्र- दायिक विरोधकी तो बात ही क्या है, अन्य धर्मावलम्बियोंके साथ भी उसका बर्त्ताव भ्रातृभावसे पूर्ण रहा है।

शान्तिः शान्तिः शान्तिः।

॥ श्री ॥

श्रीमहामण्डल-पञ्चाङ्ग ।

श्रीसम्वत् १९८७ श्रीशाके १८५२ बंगला सन् १३३६-३७ हिजरी सन् १३४८-४९ फसली सन् १३३७-३८ ईसवी सन् १९३०-३१ ।

इस पक्ष भर वसन्तऋतु तथा उत्तरायण सूर्य और दक्षिणगोल रहेगा । चैत्र शुक्ल १५ रविवारसे उत्तरगोल होगा ।

चैत्र शुक्ल १ सोमवार घ० १३ प० ४७ । अंग्रेजी ता० ३१ मार्च । बंगला ता० १७ चैत्र । फारसी ता० २९ शव्वाल । फसली ता० १७ चैत्र । रेवती न० घ० १८ प० १० । चन्द्रराशि मीन बाद मेष घ० १८ प० १० । दिनमान घ० ३० प० ३६ । सूर्योदय घं० ५ मि० ४३ । सूर्यास्त घं० ६ मि० ७ । आज नये वर्षका आरम्भ और नवरात्रिका आरम्भ होगा और घटस्थापन दिनमें घ० १६ प० २८ के भीतर होगा । इसके सिवाय आज वर्षपतिपूजन, ध्वजारोपण, पौसलारोपण तथा विद्याव्रत, तिलकव्रत, आरोग्यव्रत और युगादि १ है । यात्रा शुभ नहीं है । आज चन्द्रदर्शन होगा तथा अग्निपूजन, रौप्यदर्शन, चन्द्रपूजन और उमापूजन होता है ।

चैत्रशुक्ल २ मंगलवार घ० १३ प० २३ । अंग्रेजी ता० १ अप्रैल । बंगला ता० १८ चैत्र । फारसी ता० १ जिलकाद । फसली ता० १८ चैत्र । अश्विनी न० घ० १९ प० १५ । दिनमान घ० ३० प० ४० । सूर्योदय घं० ५ मि० ४० । सूर्यास्त घं० ६ मि० ८ । आज मत्स्यजयन्ती है अपराह्नमें होगी । सर्वार्थ अमृतसिद्धियोग घ० १९ प० १५ तक रहेगा । चन्द्रराशि मेष । यात्रा शुभ नहीं ।

चैत्रशुक्ल ३ बुधवार घ० ११ प० ४७ । अंग्रेजी ता० २ एप्रिल । बंगला ता० १९ चैत्र । फारसी ता० २ जिलकाद । फसली ता १९ चैत्र । भरणी न० घ० १९ प० ९ । दिनमान घ० ३० प० ४४ । सूर्योदय घं० ५ मि० ५१ । सूर्यास्त घं० ६ मि० ९ । चन्द्रराशि मेष बाद वृष घ० ३३ प० ५१ पर होगी । आज घ० ४० प० २२ उपरान्त भद्रा लगेगी । गणेशव्रत ४, गण-गौरी ३, मन्वादि ३, सौभाग्यशयन व्रत ३ । मंगलागौरी जन्म है । यात्रा शुभ नहीं है ।

चैत्रशुक्ल ४ गुरुवार घ० ८ प० ४८ । अंग्रेजी ता० ३ एप्रिल । बंगला ता० २० चैत्र । फारसी ता० ३ जिलकाद । फसली ता० २० चैत्र । कृत्तिका न० घ० १७ प० ५६ । दिनमान घ० ३० प० ४७ । सूर्योदय घं० ५ मि० ५१ । सूर्यास्त घं० ६ मि० ९ । चन्द्रराशि वृष । आज घ० ८ प० ४८ तक अर्थात् दिनमें घं० ९ प० २६ तक भद्रा रहेगी । श्रीपंचमी ५ और कल्प-भेदसे मत्स्यानतार है । यात्रा करनेवालोंको घ० १७ प० ५६ उपरान्त उदयमुहूर्तमें शुभ है ।

चैत्रशुक्ल ५ शुक्रवार घ० ५ प० १२ । अंग्रेजी ता० ४ एप्रिल । बंगला ता० २१ चैत्र । फारसी ता० ४ जिलकाद । फसली ता० २१ चैत्र । रोहिणी न० घ० १५ प० ५४ । दिनमान घ० ३० प० ५१ । सूर्योदय घं० ५ मि० ५० सूर्यास्त घं० ६ मि० १० । चन्द्रराशि वृष बाद घ० ४४ प० २६ पर मिथुन होगी । आज स्कन्द ६ है । पश्चिम यात्रा मुहूर्त मध्यम है । दिनमें घं० ७ मि० २६ के बाद घं० ९ मि० ५२ तक ।

चैत्रशुक्ल ६ शनिवार घ० ० प० ३५ बाद ७ । अंग्रेजी ता० ५ एप्रिल । बंगला ता० २२ चैत्र । फारसी ता० ५ जिलकाद । फसली ता० २२ चैत्र । मृगशिरा न० घ० १२ प० ५८ । दिनमान घ० ३० प० ५३ । सूर्योदय घं० ५ मि० ४८ । सूर्यास्त घं० ६ मि० १२ । चन्द्रराशि मिथुन है । आज भद्रा घ० ५२ प० २१ के बाद (रात्रिको घं० २ मि० ५७ के बाद) लगेगी । सूर्य ७ तथा त्रिपुष्करयोग घ० ५ के बाद घ० १७ तक है । यात्रा शुभ नहीं ।

चैत्रशुक्ल ८ रविवार घ० ४९ प० ३८ । अंग्रेजी ता० ६ एप्रिल । बंगला ता० २३ चैत्र । फारसी ता० ६ जिलकाद । फसली ता० २३ चैत्र । आर्द्रा न०

घ० ९ प० २८। दिनमान घ० ३० प० ५८। सूर्योदय घं० ५ मि० ४८। सूर्यास्त घं० ६ मि० १२। चं० रा० मिथुन बाद घ० ५१ प० ३० पर कर्क होगी। आज भद्रा घ० २२ प० २९ तक। दिनमें घं० २ मि० ४८ तक रहेगी। तथा आज अशोककलिका प्राशन ८, अन्नपूर्णाष्टमी, दुर्गा ८, भवान्युत्पत्ति ८, भवानीयात्रा ८ है॥ यात्रा योग शुभ नही है।

चैत्रशुक्ल ९ सोमवार घ० ४३ प० ३९। अंग्रेजी ता० ७ एप्रिल। बंगला ता० २४ चैत्र। फारसी ता० ७ जिलकाद। फसली ता० २४। पु० न० घ० ५ प० ३१। दिनमान घ० ३१ प० १। सूर्योदय घं० ५ मि० ४८। सूर्यास्त घं० ६ मि० १२। चंद्रराशि कर्क है। आज राम ९ व्रतं सर्वेषां मध्याह्नमें कर्क लग्नमें पूजनादि घं० ११ मि० ५५ के बाद घं० २ मि० १२ तक। दुर्गा ९, देवी दमनकेन पूजयेत्। नवरात्रि समाप्तिः ९। मासशून्य ति० ९ यायी जयद्योगः घ० ५ प० ३१ बाद। उत्तरदिशाकी यात्रा शुभ है।

चैत्रशुक्ल १० मंगलवार घ० ३७ प० २६। अंग्रेजी ता० ८ एप्रिल। बंगला ता० २५ चैत्र। फारसी ता० ८ जिलकाद। फसली ता० २५। पु० न० घ० १ प० २४ बाद आश्लेषा न०। दिनमान घ० ३१ प० ५। सूर्योदय घं० ५ मि० ४७ सूर्यास्त घं० ६ मि० १३। चंद्रराशि कर्क बाद घ० ५७ प० १६ पर सिंह होगी। आज यमपूजन मध्याह्नमें १०। तथा घ० १ प० २४ के बाद जातक सन्ततीको आश्लेषा जनन शांति है। नवरात्र व्रतका पारण। यात्रा शुभ नहीं।

चैत्रशुक्ल ११ बुधवार घ० ३१ प० ४१। अंग्रेजी ता० ९ एप्रिल। बंगला ता० २६ चैत्र। फारसी ता० ९ जिलकाद। फसली ता० २६। म० न० घ० ५३ प० २०। दिनमान घ० ३१ प० ९। सूर्योदय घं० ५ मि० ४६ सूर्यास्त घं० ६ मि० १४ चंद्रराशि सिंह है। आज भद्रा घ० ४ प० ३८ दिनमें घं० ७ मि० ३७ से लगेगी घ० ३१ प० ४१ रात्रीमें घं० ६ मि० २६ तक रहेगी। कामदा ११ व्रतम् सर्वेषां तथा लक्ष्मीसहित विष्णुदोलोत्सवः। मघा न० जननशांति यात्रा योग शुभ नहीं है।

चैत्रशुक्ल १२ गुरुवार घ० २६ प० ६। अंग्रेजी ता० १० एप्रिल। बंगला ता० २७ चैत्र। फारसी ता० १० जिलकाद। फसली ता० २७। पू० फा० न० घ० ४९ प० ५१। दिनमान घ० ३१ प० १२। सूर्योदय घं० ५ मि० ४६ सूर्यास्त घं० ६ मि० १४। चन्द्रराशि सिंह है। आज दमनोत्सव १२, (दमन

केन हरिं पूजयेत्) प्रदोष १३ व्रतम् अनङ्ग व्रतम् १३, (दमनकेन अनंगं पूजयेत्) व्यतीपात प्रवृत्ती घ० ४४ प० ५६ पर होगी। व्यतीपात नि० घ० ५५ प० १८ पर होगी। आज विद्यारंभ मुहूर्त ल० ३ सवेरे घं० ९ मि० ३० से घं० ११ मि० ४४ तक शुभ है। यात्रा शुभ नहीं।

चैत्रशुक्ल १३ शुक्रवार घ० २१ प० १। अंग्रेजी ता० ११ एप्रिल। बंगला ता० २८ चैत्र। फारसी ता० ११ जिलकाद। फसली ता० २८। उ० फ० न० घ० ४६ प० ५६। दिनमान घ० ३१ प० १६। सूर्योदय घं० ५ मि० ४५ सूर्यास्त घं० ६ मि० १५। चन्द्रराशि सिंह बाद कन्या घ० ४ प० ७ पर होगी। आज शिवदमनोत्सवः १४। (मध्य रात्रीमें) तथा नृसिंह दोलोत्सवः १४ (अपराण्हमे) नृसिंहजन्म-पूजनं। पशुपतिपूजनं। यात्रा शुभ नहीं।

चैत्र शुक्ल १४ शनिवार घ० १६ प० ५०। अंग्रेजी ता० १२ एप्रिल। बंगला ता० २९ चैत्र। पारसी ता० १२ जिलकाद। फसली ता० २९। हस्त नक्षत्र घ० ५५ प० ५७। दिनमान घ० ३१ प० १९। सू० उ० घं० ५ मि० ४४। सू० अ० घं० ६ मि० १६। चन्द्रराशि कन्या है। आज भद्रा घ० १६ प० ५० (दिनमें घं० १२ मि० २८) से लगेगी सो घ० ४५ प० ५ (रात्रीमें घं० ११ मि० ४६) तक रहेगी। मासान्तः। तथा बुधका उदय पश्चिममे घ० १३ प० ३२ (दिनमे घं० ११ मि० ९) पर होगा। व्रतकी १५ आज होगी, सिद्धेश्वरी जन्म। यात्रा शुभ नहीं।

चैत्र शुक्ल १५ रविवार घ० १३ प० २०। अंग्रेजी ता० १३ एप्रिल। बंगला ता० ३० चैत्र। पारसी ता० १३ जिलकाद। फसली ता० ३०। चि० न० घ० ४३ प० ४५। दिनमान घ० ३१ प० २३। सूर्योदय घं० ५ मि० ४३ सूर्यास्त घं० ६ मि० १७। चन्द्रराशि कन्या बाद तुला घ० १४ प० २१ पर होगी। आज मेषसक्रान्ति घ० २४ प० ८। दिनमें घ० ३ प० २२ पर होगी। संक्रान्ति पु० का० घं० ११ मि० २२ के बाद लगेगा। आज दिन हरिद्वारमे स्नानका माहात्म्य है। चित्र विचित्र वस्त्रोंके दानसे सौभाग्य प्राप्ति। हनुमज्जयन्ति १५। मन्वादि १५। चैत्री १५ वैशाखस्नानारंभ। आज भारतवर्षसे अतिरिक्त (इंगलैंड आदि देशोंमें चन्द्रग्रहण होगा।) यात्रा शुभ नहीं।

चैत्रशुक्ल ६ शनि मिश्रमानं ४६ ० दिनमान ३०।५४

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के
११	१०	०	१	०	८	०	६
२२	२०	०	१९	८	१७	१३	१३
२२	३६	२१	४२	२	१२	३	३
४	४९	५७	५४	१४	२६	३५	३९
५९	४६	१०४	९	७४	०	३	३
०	३४	५३	४४	३३	४९	११	११

चै० शु० १५ रवौ मिश्रमानं ४६।२० दिनमानं ३१।२३ ।

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	१०	०	१	०	८	०	६
०	२६	१३	२१	१७	१७	१२	१२
२१	५२	४३	६	५५	२१	३८	३८
३४	५	५१	५१	४२	१७	१३	१३
५८	४९	६३	१०	७३	०	३	३
५३	५४	२९	३८	५९	४९	११	११
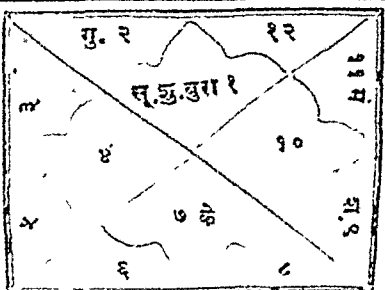
अथ चैत्रमासफलम् ॥

इस महीनेमें मेष, वृष, कर्क राशिवालोंको चित्तमें चिन्ता, सरदीके विकारसे ज्वरादि, कफ, खांसी विकार, कभी २ स्वास आदि, हाल रोजगार सामान्य । मध्यम फल होंगे । और मिथुन, तुला, वृश्चिक, धन, कुंभ वालोंको किसी प्रकारका पश्चात्ताप, उद्योगमें असफलता, मानसिक चिंता तथा वैवाहिक कौटुम्बिक चिंता, किन्तु हाल रोजगार अच्छा एवं शत्रु वर्गोंका नाश आदि शुभाशुभ मिश्रित फल होंगे । बाकी राशि वालोंको उद्योगसे सुख, शरीरारोग्यता एवं आप्त कुटुम्बिजनोंसे प्रेम आदि शुभफल जाने जाते हैं ।

इस महीनेमें मनुष्योंको साधारण रोग होगा । बादलोंकी घटा कभी २ दीख पड़ेगी । अन्नका भाव पहले तेज पीछे सम हो जायगा । सोनेका भाव समान तथा चांदी मन्दी होगी राजा प्रजामें वैमनस्य रहे और बहुत मतभेद होते हुए वर्णाश्रम उड़ानेकी चर्चा फैलानेका उद्योग होगा । तथा गेहूं, जव, चना, रहर, सौंफ इनका भाव साधारण मंदा होगा । गुड़, तिल, हींग, जीरा, कपूर, साधारण तेज होगा । तथा चावल, घी, रूई, उड़द, मूंग, पीपर, खैर, समान भावमें रहेंगे । अन्न अच्छा रुमरीतिसे अच्छा होगा ॥ इति शुभम् ॥

इस मासमें उत्तरायण सूर्य तथा उत्तरगोल और वसन्तऋतु रहेंगे। और अंग्रेजी मा० अप्रैल ता० ३० वैशाख शुक्ल २ बुधतक रहेगी। बाद वैशाख शुक्ल ३ गुरुवारसे मई ता० ३१ सन् १९३० होगा।

वैशाख कृष्ण १ सोमवार घ० १० प० ५४। अंग्रेजी ता० १४ अप्रैल। बंगला ता० १ वैशाख। फारसी १४ जिलकाद। फसली ता० १ वैशाख। स्वाती न० घ० ४३ प० ४०। दिनमान घ० ३१ प० २७। सूर्योदय घं० ५ मि० ४३। सूर्यास्त घं० ६ मि० १७। चं. रा. तुला। आज बंगला वैशाख आरम्भ हुआ। और आज धर्मघटादि दान महीने भरतक करना चाहिये। तथा यायीको यानी मुद्दईको जयप्राप्तकर योग है। घ० १० प० ५४ तक यात्रा शुभ नहीं। आज गृहारम्भमें ल० ३ मंगलके विशेष दानसे मुहूर्त शुभ है। चक्रशुद्धिः तथा जलाशयाराम सुरप्रतिष्ठा मे, ल. ३ गुरूके दानसे मुहूर्त शुभ है। विषुवोत्तर दिनं।

वैशाख कृष्ण २ मंगल घ० ६ प० ४० । अंग्रेजी ता० १५ अप्रैल। बंगला ता० २ वैशाख। फारसी ता० १५ जिलकाद। फसली ता० २। विशाखा न० घ० ४४ प० ४७। दिनमान घ० ३१ प० ३०। सूर्योदय घं० ५ मि० ४२। सूर्यास्त घं० ६ मि० १८। चं. रा. तुला, बाद वृश्चिक घ० २९ प० ३१ पर होगी। आज भद्रा घ० २९ प० ४० रात्रिमें घं० ९ मि० २४ के बाद लगेगी। मासदग्ध तिथिः २। त्रिपुष्करयोग घ० ९ प० ४० तक। यह योग विनाशवृद्धिमें ३ गुणित फलदाता है। यात्रा योग नहीं है।

वैशाख कृष्ण ३ बुधवार घ० ६ प० ४०। अंग्रेजी ता० १६ एप्रिल। बंगला ता० ३ वैशाख। फारसी ता० १६ जिलकाद। फसली ता० ३। अनुराधा न० घ० ४७ प० १४। दिनमान घ० ३१ प० ३४। सूर्योदय घं० ५ मि० ४१। सूर्यास्त घं० ६ मि० १९। चं. रा, वृश्चिक। आज भद्रा घ० ९ प० ४० तक (दिनमें घं० ९ मि० ३२ तक रहेगी।) संकष्टीगणेश ४ व्रतम् चं. उ सू. टा. घं० ९ मि० २४ पर होगा। तथा सर्वार्थसिद्धि अमृतसिद्धियोग घ० ४७ प० १४ तक है। यात्रा शुभ नहीं।

वैशाख कृष्ण ४ गुरुवार घ० ११ प० १। अंग्रेजी ता० १७ एप्रिल। बंगला ता० ४ वैशाख। फारसी ता० १७ जिलकाद। फसली ता० ४।

ज्येष्ठा न० घ० ५० प० ५४। दिनमान घ० ३१ प० ३७। सूर्योदय घं० ५ मि० ४१। सूर्यास्त घं० ६ मि० १९। चं. रा. वृश्चिक, बाद धनु घ० ५० प० ५४ पर होगी। आज मीन लग्नमें वधूप्रवेश मु. शुभ है तथा कर्क लग्नमें चौल (मुण्डन) मु. शुभ है। जातकको ज्येष्ठा नक्षत्र जननदत्ततः। यात्रा शुभ नहीं।

वैशाख कृष्ण ५ शुक्रवार घ० १३ प० ३२। अंग्रेजी ता० १८ अप्रैल। बंगला ता० ५ वैशाख। फारसी ता० १८ जिलकाद। फ० ता० ५। मूल न० घ० ५५ प० ४१। दिनमान घ० ३१ प० ४०। सूर्योदय घं० ५ मि० ४०। सूर्यास्त घं० ६ मि० २०। चं० रा० धनु। आज द्विरागमन मुहूर्त मिथुन लग्नमें शुभ है। वधूप्रवेश मु. ल. चिन्त्यम्। (गुडफ्राइडे) पूर्वकी यात्रा शुभ मेष लग्नमें। तथा २ ल. में उपनयन मु. शुभ है।

वैशाखकृष्ण ६ शनि घ० १७ प० १२। अंग्रेजी ता० १९ अप्रैल। बंगला ता० ६ वैशाख। फारसी ता० १९ जिलकाद। फसली ता० ६। पू० षा० न० घ० ६० प० ०। दिनमान घ० ३१ प० ४४। सूर्योदय घं० ५ मि० ३९ सूर्यास्त घं० ६ मि० २१ चन्द्रराशि धनु। आज भद्रा घ० १७ प० १२। (दिनमें घं० १२ मि० ३२ के उपरान्त घ० ४९ प० २८) (रात्रीमें घं० १ मि० २६ तक रहेगी। वक्री शनिः घ० ५५ प० २५ पर होगा। रवियोग घ० ६० तक रहेगा यह सब दोषोंको दूर करने वाला है यात्रा शुभ नही है।)

वैशाखकृष्ण ७ रविवार घ० २१ प० ४५। अंग्रेजी ता० २० अप्रैल। बंगला ता० ७ वैशाख। फारसी ता० २० जिलकाद। फसली ता० ७। पू० षा० न० घ० १ प० २२। दिनमान घ० ३१ प० ४७। सूर्योदय घं० ५ मि० ३९ सूर्यास्त घं० ६ मि० २१। चन्द्रराशि धन बाद मकरका घ० १७ प० ५८ पर होगा। तथा आज भैरवाष्टमी ८ और भानु सप्तमी है इसमें स्नान दान श्राद्धादि सब अक्षय होता है। तथा आज यायीको जयप्रद योग है घ० १ प० २२ के बाद घ० २१ प० ४५ तक। तथा इसी टाइम तकमें त्रिपुष्कर योग और सर्वार्थसिद्धियोग है। यात्रा शुभ नहीं। इस्टर है।

वैशाखकृष्ण ८ सोमवार घ० २६ प० ४८। अंग्रेजी ता० २१ अप्रैल। बंगला ता० ८ वैशाख। फारसी ता० २१ जिलकाद। फसली ता० ८। उ० षा० न० घ० ७ प० ४३। दिनमान घ० ३१ प० ५१। सूर्योदय घं० ५ मि०

३८ सूर्यास्त घं० ६ मि० २२ । चन्द्रराशि मकर है । आज शीतलाष्टमी ८ है तथा शीतलादर्शन । मासशून्य तिथि ८ । मृत्युयोगः घ० ७ प० ४३ तक यात्रा शुभ है । दक्षिण यात्रा मुहूर्त मिथुन लग्नमें ८ चन्द्र ८ ति० के दानसे ।

वैशाखकृष्ण ९ मंगलवार घ० ३२ प० ३ । अंग्रेजी ता० २२ अप्रैल । बंगला ता० ९ वैशाख । फारसी ता० २२ जिलकाद । फसली ता० ९ । श्र० न० घ० १४ प० २० । दिनमान घ० ३१ प० ४४ । सूर्योदय घं० ५ मि० ३७ सूर्यास्त घं० ६ मि० २२ । चन्द्रराशि मकर बाद कुं० घ० ४७ प० ३३ पर होगी । तथा आज सा० वृ० संक्रान्ति घ० ९ प० १३ । दिनमें घं० ९ मि० १८ के बाद । मास शुन्य तिथि ९ पू० दक्षिण यात्रा मु० मकर लग्नमें १ चक्रेदानसे ।

वैशाखकृष्ण १० बुधवार घ० ३६ प० ५८ । अंग्रेजी ता० २३ अप्रैल । बंगला १० वैशाख । फारसी ता० २३ जिलकाद फसली ता० १० । धनिष्ठा न० घ० २० प० ४४ । दिनमान घ० ३१ प० ५८ । सूर्योदय घं० ५ मि० ३७ सूर्यास्त घं० ६ मि० २३ । चन्द्रराशि कुम्भ है । आज घ० ४ प० ३० । (सवेरे घं० ७ मि० २५ के बादसे घ० ३६ प० ५८ ।) रात्रीमें घं० ८ मि० २४ तक आर्द्रा रहेगी तथा कृत्तिका २ चन्द्र वृष राशिमें शुक्र होता है घ० ३६ प० ४३ पर । अतः गुरु शुक्रका योग फल अवर्षण दुर्भिक्षकारण है । यात्रा योग शुभ नहीं है ।

वैशाखकृष्ण ११ गुरुवार घ० ४१ प० १४ । अंग्रेजी ता० २४ अप्रैल । बंगला ता० ११ वैशाख । फारसी ता० २४ जिलकाद । फसली ता० ११ । शु० न० घ० २६ प० ३४ । दिनमान घ० ३२ प० १ । सूर्योदय घं० ५ मि० ३६ सूर्यास्त घं० ६ मि० २४ । चन्द्रराशि कुम्भ है । आज वरुथिनी एकादशी व्रतम् सर्वेषां यात्रा शुभ नहीं है ।

वैशाख कृष्ण १२ शुक्रवार घ० ४४ प० २९ । अंग्रेजी ता० २५ अप्रैल । बंगला ता० १२ वैशाख । फा० ता० २५ जिलकाद । फ० ता० १२ । पू. भा. न० घ० ३१ प० ३३ । दिनमान घ० ३२ प० ४ । सूर्योदय घं० ५ मि० ३५ । सूर्यास्त घं० ६ मि० २५ । चं. रा. कुम्भ बाद मीन घ० १५ प० १९ पर होगी । आजसे सुभानु नाम सम्वत्सरका प्रवेश हुआ । घ० १ प० ८ के बादसे । स्वामी (सुद्दाहले) को कार्यसिद्धिका योग है घ० ३१ प० ३२ तक । यात्रा शुभ नहीं ।

वैशाख कृष्ण १३ शनिवार घ० ४६ प० ३८। अं० ता० २६ अप्रैल। बंगला ता० १३ वैशाख। फारसी ता० २६ जिलकाद। फसली ता० १३। उ. भा. न० घ० ३५ प० २५। दिनमान घ० ३२ प० ७। सूर्योदय घं० ५ मि० ३५ सूर्यास्त घं० ६ मि० २३। चन्द्रराशि मीन है। आज शनिप्रदोष १३ व्रत है तथा भद्रा घ० ४६ प० २९ (रात्रिमें घं० १२ मि० १४के बाद लगेगी) तथा यायीको जयप्रद योग है घ० ३५ प० २५ तक यात्रा योग नहीं।

वैशाखकृष्ण १४ रविवार घ० ४७ प० २९। अंग्रेजी ता० २७ अप्रैल। बंगला ता० १४ वैशाख। फारसी ता० २७ जिलकाद। फसली ता० १४। रे० न० घ० ३८ प० ६। दिनमान घ० ३२ प० ११। सूर्योदय घ० ५ मि० ३४ सूर्यास्त घं० ६ मि० २६। चन्द्रराशि मीन। बाद घ० ३८ प० ६ पर मेष लगेगी। आज घ० १७ प० ३। (दिनमें घं० १२ मि० २३ तक भद्रा रहेगी।) तथा भरण्याऽर्कः घ० ९ प० ५२ पर होगा। मास शि. रा. व्रत, १४।

वैशाखकृष्ण ३० सोमवार घ० ४६ प० ५७। अंग्रेजी ता० २८ अप्रैल। बंगला ता० १५ वैशाख। फारसी ता० २८ जिलकाद। फसली ता० १५। अ० न० घ० ३९ प० २३। दिनमान घ० ३२ प० १५। सूर्योदय घं० ५ मि० ३३ सूर्यास्त घं० ६ मि० २७। चन्द्रराशि मेष है। आज दर्शश्राद्ध ३०। कूर्मजयन्ती ३०। (सायान्ह व्यापिनी) सोमवती ३० इसमें कपिलधारा तीर्थमें पिण्डदान करनेसे गया श्राद्ध फल होता है। कुहू ३०। यात्रा शुभ नहीं।

वैशाखशुक्ल १ मंगलवार घ० ४५ प० १४। अंग्रेजी ता० २९ अप्रैल। बंगला ता० १६ वैशाख। फारसी ता० २९ जिलकाद। फसली ता० १६। भ० न० घ० ३९ प० ३९। दिनमान घ० ३२ प० १७। सूर्योदय घं० ५ मि० ३३ सूर्यास्त घं० ६ मि० २७। चन्द्रराशि मेष बाद वृष घ० ५४ प० २४ पर होगी। यात्रा शुभ नहीं है।

वैशाखशुक्ल २ बुधवार घ० ४२ प० २१। अंग्रेजी ता० ३० अप्रैल। बंगला ता० १७ वैशाख। फारसी ता० ३० जिलकाद। फसली ता० १७। कृ० न० घ० ३८ प० ३९। दिनमान घ० ३२ प० २०। सूर्योदय घं० ५ मि० ३२ सूर्यास्त घं० ६ मि० २८। चन्द्रराशि वृष है। आज चन्द्रदर्शन होगा। मु० ३० फ० समता। तथा सर्वार्थ सिद्धियोग म० ३८ प० ३९ तक रहेगा। और कुंभ लग्नमें वधूप्रवेश मु० शुभ है।

वैशाखशुक्ल ३ गुरुवार घ० २८ प० ३०। अंग्रेजी ता० १ मई। बंगला ता० १८ वैशाख। फारसी ता० १ जिलहिज। फसली ता० १८। रो० न० घ० ३६ प० ४७। दिनमान घ० ३२ प० २३। सूर्योदय घं० ५ मि० ३१ सूर्यास्त घं० ६ मि० २९। चन्द्रराशि वृष है। आज अक्षय ३ घटादिदानं। त्रेतोत्पत्तिः। कलशादिः। चन्दनपूजा। त्रिलोचनेश्वर यात्रा। समुद्रस्नानं परशुरामजयन्ति, यार्या जयप्रदयोगः घ० ३६ प० ४७ तक होगा।

वैशाखशुक्ल ४ शुक्रवार घ० ३३ प० ४८। अंग्रेजी ता० २ मई। बंगला ता० १९ वैशाख। फारसी ता० २ जिलहिज। फसली ता० १९। मृ० न० घ० ३४ प० १। दिनमान घ० ३२ प० २६। सूर्योदय घं० ५ मि० ३१ सूर्यास्त घं० ६ मि० २९। चन्द्रराशि वृष बाद मिथुन घ० ५ प० २४ पर होगी। आज भद्रा घ० ६ प० ९ (सवेरे घं० ७ मि० ९९ के बाद घ० ३३ प० ४८ तक) (रात्रीमें घं० ७ मि० २ तक रहेगी।) अगस्त्यजीका अस्त हुआ घ० ४१ प० ३४ पर। विनायकी गणेश ४ व्रतम्। स्थायो कार्यर्हियोग घ० ३३ प० ४८ तक।

वैशाखशुक्ल ५ शनिवार घ० २८ प० ३०। अंग्रेजी ता० ३ मई। बंगला ता० २० वैशाख। फारसी ता० ३ जिलहिज। फसली ता० २०। आ० न० घ० ३० प० ३५। दिनमान घ० ३२ प० ३९। सूर्योदय घं० ५ मि० ३० सूर्यास्त घं० ६ मि० ३०। चन्द्रराशि मिथुन है। मकर लग्नमें ६ चं ६ ति. के दानसे दक्षिण यात्रा मुहूर्त शुभ है।

वैशाखशुक्ल ६ रविवार घ० २२ प० ४३। अंग्रेजी ता० ४ मई। बंगला ता० २१ वैशाख। फारसी ता० ४ जिलहिज। फसली ता० २१। पु० न० घ० २६ प० ४७। दिनमान घ० ३२ प० ३२। सूर्योदय घं० ५ मि० ३१ सूर्यास्त घं० ६ मि० ३०। चन्द्रराशि मिथुन बाद कर्क घ० १२ प० ४४ पर होगी। मासदुर्गाति. ६। रवियोग घ० २६ प० ४७ तक। त्रिपुष्करयोग घ० २२ उ० घ० २५ तक। द० यात्रा मु० वृषलग्नमें ६ ति. के दानसे। उ० यात्रा मु० मकर लग्नमें शुभ है।

वैशाखशुक्ल ७ सोमवार घ० १६ प० ४०। अंग्रेजी ता० ५ मई। बंगला ता० २२ वैशाख। फारसी ता० ५ जिलहिज। फसली ता० २२। पु० न० घ० २२ प० ४०। दिनमान घ० ३२ प० ३६। सूर्योदय घं० ५ मि० २९ सूर्यास्त

घं० ६ मि० ३१ । चन्द्रराशि कर्क है । आज भद्रा घ० १६ प० ४० । (दिनमें घं० १२ मि० ९ के बाद घ० ४३ प० ३६ । रात्रिमें घं० १० मि० ५५ तक रहेगी ।) गंगा ७ । सर्वार्थसिद्धियोग घ० २२ प० ४० तक । चौल मु० कर्क लग्नमें शुभ है । उ. या, मु. वृषलग्नमें ८ श. दानसे ।

वैशाखशुक्ल ८ मंगलवार घ० १० प० ३२ । अंग्रेजी ता० ६ मई । बंगला ता० २३ वैशाख । फारसी ता० ६ जिलहिज । फसली ता० २३ । आश्लेषा न० घ० १८ प० २९ । दिनमान घ० ३२ प० ३९ । सूर्योदय घं० ५ मि० २८ सूर्यास्त घं० ६ मि० ३२ । चन्द्रराशि कर्क बाद सिंह घ० १८ प० २९ पर होगी । अन्नपूर्णा ८ । वक्री बुधः घ० २० प० ४१ पर होगा । सर्वार्थसिद्धियोग घ० १८ प० २८ पर होगा ।

वैशाखशुक्ल ९-१० बुधवार घ० $\frac{६}{५४}$ प० $\frac{१}{४६}$ । अंग्रेजी ता० ७ मई । बंगला ता०२४ वैशाख । फारसी ता० ७ जिलहिज । फसली ता० २४ । म० न० घ० १४ प० २९ । दिनमान घ० ३२ प० ४२ । सूर्योदय घं० ५ मि० २८ सूर्यास्त घं० ६ मि० ३२ । चन्द्रराशि सिंह है । दशमीका क्षय है । रवियोग घ० ६० तक ।

वैशाखशुक्ल ११ गुरुवार घ० ५२ प० ४६ । अंग्रेजी ता० ८ मई । बंगला ता० २५ वैशाख । फारसी ता० ८ जिलहिज । फसली ता० २५ । पू० न० घ० १ प० ५४ । दिनमान घ० ३२ प० ४४ । सूर्योदय घं० ५ मि० २७ सूर्यास्त घं० ६ मि० ३३ । चंद्रराशि सिंह बाद कन्या घ० २५ प० ८ पर होगी । आज भद्रा घ० २६ प० २० । (दिनमें घं० २ मि० ४९ के बाद घ० ५२ प० ४६ रात्रीमें घं० २ मि० ५७ तक रहेगी ।) मोहिनी ११ व्रतं । स्मार्तानाम् । यायी ज० प्र० यो० घ० १० प० ५४ उ० ।

वैशाखशुक्ल १२ शुक्रवार घ० ४८ प० २२ । अंग्रेजी ता० ९ मई । बंगला ता० २६ वैशाख । फारसी ता० ९ जिलहिज । फसली ता० २६ । उ० न० घ० ७ प० ५१ । दिनमान घ० ३२ प० ४७ । सूर्योदय घं० ५ मि० २७ सूर्यास्त घं० ६ मि० ३३ । चन्द्रराशि कन्या है । मोहिनी ११ व्रतम् वैष्णवानाम् । कल्पभेदेन नृसिंहावतारः १२ (मध्यान्हमें) हरिवासरः घं० ८ मि० ३१ तक । इसके बाद पारण करना चाहिये ।

वैशाखशुक्ल १३ शनिवार घ० ४५ प० ५२। अंग्रेजी ता० १० मई। बंगला ता० २७ वैशाख। फारसी ता० १० जिलहिज। फसली ता० २७। ह० न० घ० ५ प० ३८। दिनमान घ० ३२ प० ५०। सूर्योदय घं० ५ मि० २६ सूर्यास्त घं० ६ मि० ३४। चन्द्रराशि कन्या बाद तुला घ० २४ प० ५६ पर होगी। आज शनिप्रदोष व्रतम्। तथा कृत्तिका नक्षत्रमें सूर्य घ० ५४ प० ८ पर होगा। (वकरीद)

वैशाखशुक्ल १४ रविवार घ० ४३ प० २२। अंग्रेजी ता० ११ मई। बंगला ता० २८ वैशाख। फारसी ता० ११ जिलहिज। फसली ता० २८। चि० न० घ० ४ प० १४। दिनमान घ० ३२ प० ५३। सूर्योदय घं० ५ मि० २६ सूर्यास्त घं० ६ मि० ३४। चन्द्रराशि तुला है। आज नृसिंह १४। (मध्यान्ह व्यापी-प्रदोष व्यापी) है तथा भद्रा घ० ४३ प० २२। (रात्रीमें घं० १० मि० ४७ के बाद लगेगी।)

वैशाखशुक्ल १५ सोमवार घ० ४२ प० २। अंग्रेजी ता० १२ मई। बंगला ता० २९ वैशाख। फारसी ता० १२ जिलहिज। फसली ता० २९। स्वाती न० घ० ३ प० ५४। दिनमान घ० ३२ प० ५६। सूर्योदय घं० ५ मि० २५ सूर्यास्त घं० ६ मि० ३५। चन्द्रराशि तुला बाद वृश्चिक घ० ४६ प० ३३ पर होगी। और घ० १२ प० ४२। (दिनमें घं० १० मि० ३० तक भद्रा रहेगी।) बुधका अस्त पश्चिममें घ० ५४ प० ४६ पर होगा। महावैशाखीयोगः घ० ३ प० ५४ उ०। व्रतार्थे १५। कूर्म जयन्ती १५। (अपरान्ह व्यापी) पुष्करादेवी जन्म १५। वैशाखस्नान समाप्तिः १५।

वैशाखकृष्ण ७ रवौ मिश्रमानम् ४६।३७ दिनमान ३१।४७

सू	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	११	०	१	०	८	०	६
७	२	२३	२२	२६	१७	१२	१२
११	१९	५७	२७	३२	२१	१५	१५
३६	३४	४५	३१	३	४१	५८	५८
५८	४५	७१	१३	७२	६	३	३
२८	५४	११	२८	२१	व.	११	११

वैशाखशुक्ल ६ रवौ मिश्रमानम् ४७।११ दिनमान ३२।३३

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	११	१	१	५	८	०	६
२०	१२	६	२५	१३	१७	११	११
४६	१०	८	२१	३७	८	३१	३१
४१	५०	३८	१२	४८	३३	२८	२८
५८	४५	२१	१२	७३	३	३	३
२	५४	४३	२६	२१	व	११	११
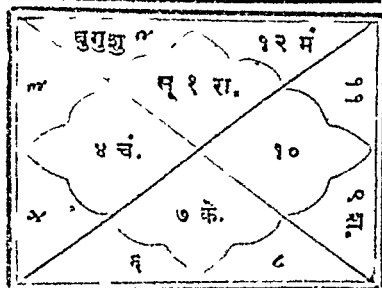
अथ वैशाखमास गोचर फल ।

इस महीनेके अन्त तक मिथुन, तुला, धन, कन्या, राशि वालोंको रोजगारमें हानि होगी । स्त्री चिन्ता तथा झगड़ा बना रहेगा । मानसिक चिन्ता, शरीरमें तकलीफ, मन्दाग्नि आदि हुवा करेगी । एतावता यह मास प्रायः खराब ही बीतेगा, और मकर, मीन, मेष, राशिवालोंको पहला पक्ष खराब, अन्तमें समतासे बीतेगा । रोजगारमें फायदा सम रहेगा, गौको घास, जलका, प्रबंध करनेसे आपत्ति क्लेश निवारण होगा । और अन्य राशि वालोंको नेष्ट रहेगा । घरमें कलह, भाइयोंमें विरोध, खर्चेकी अधिकता आदि किन्तु अन्तमें कुछ अच्छा बीतेगा ।

अथ वैशाख मासफलं ।

वैशाख मासमें अनाजका भाव सम रहेगा । चोर भय, पशुपीड़ा, राज्यमें जनतामें असंतोष रहेगा । बीमारी अधिक रहेगी । अन्नकी उपज कम होगी । गेहूं, जव, चना, मसूर, मूंगका भाव कुछ मंदा रहेगा । कांसा, तांबा, पीतलका भाव सस्ता रहेगा । पशमीना, उर्ण, वस्त्रका भाव सम रहेगा । घास, काष्टकी भी समता रहेगी । गरमीका प्रकोप ज्यादा होगा तथा वैशाखकृष्ण ४, ८, ९, १०, को कुछ बादल वर्षाका योग है । सुदीमें १, ३, ४, ६, ७, को वायुका चलना, १४, १५, को कुछ वृष्टीयोग मालूम पड़ता है ।

इस मासमें उत्तरायण सूर्य तथा उत्तरगोल रहेंगे । और वसन्तऽर्तु ज्यै० कृ० १ मं० तक रहेगा बाद ज्यै० कृ० २ बुधसे ग्रीष्मऋतु होगा । अं० ता० ५ मई ता० २१ सा० १६३० ईसवी ।

ज्येष्ठ कृष्ण १ मंगलवार घ० ४१ प० २६ । अंग्रेजी ता० १३ मई । बंगला ता० ३० वैशाख । फारसी ता० १३ लिलहिज । फसली ता० १ । वि०

न० घ० ४ प० ४६। दिनमान घ० ३२ प० ५८। सूर्योदय घं० ५ मि० ४८। सूर्यास्त घं० ६ मि० २६। चंद्रराशि वृश्चिक। आज मासान्त है। तथा सूतिकास्नानमुहूर्त है। लग्नं चित्यं। यात्रा शुभ नहीं।

ज्येष्ठ कृष्ण २ बुधवार घ० ४३ प० ११। अंग्रेजी ता० १४ मई। बंगला ता० ३१ वैशाख। फारसी ता० १४ जिलहिज। फसली ता० २। अनुराधा न० घ०६ प० ५५। दिनमान० घ० ३२ प० १। सूर्योदय घं० ५ मि० २५ सूर्यास्त घं० ६ मि० ३६। चंद्रराशि वृश्चिक है। आज वृषसंक्रान्ति घ०२१ प० ६ पर होगी। तथा अमृतसिद्धियोग घ० ६ तक है। यात्रा शुभ नहीं है।

ज्येष्ठकृष्ण ३ गुरुवार घ० ४५ प० २६। अंग्रेजी ता० १५ मई। बंगला ता० १ जेष्ठ। फारसी ता० १५ जिलहिज। फसली ता० ३। जेष्ठा न० घ० १० प० २१। दिनमान घ० ३३ प० २ सूर्यास्त घं० ६ मि० ३७ चंद्रराशि वृश्चिक बाद धन घ० १० प० २१ पर होगी। तथा भद्रा घ० १३ प० २३ (दिनमें घं० ८ मि० ८ के बाद घ० ४५ प० २६ रात्रीमें घं० ११ मि० २७ तक रहेगी) बंगला ज्येष्ठः। चौल मु० कर्क लग्नमें शुभ है। यात्रा शुभ नहीं।

ज्येष्ठकृष्ण ४ शुक्रवार घ० ४६ प० ८। अंग्रेजी ता० १६ मई। बंगला ता० २ जेष्ठ। फारसी ता० १६ जिलहिज। फसली ता० ४। मूल न० घ० १४ प० ५३। दिनमान घं० ३३ प० ६ सूर्योदय घं० ५ मि० २६ सूर्यास्त घं० ६ मि० ३७ चंद्रराशि धन है। संकष्टी गणेश ४ व्रतम्। चंद्रोदय रा० घं० १० मि० १२ पर होगा। स्थायी कार्यार्हयोगः घ० १४ प० ५३ के बाद। यात्रा शुभ नहीं।

ज्येष्ठकृष्ण ५ शनिवार घ० ५२ प० ३५। अंग्रेजी ता० १७ मई। बंगला ता० ३ ज्येष्ठ। फारसी ता० १७ जिलहिज। फसली ता० ५। पू० फा० न० घ० २० प० २५। दिनमान घ० ३३ प० ६। सूर्योदय घं० ५ मि० २२ सूर्यास्त घं० ६ मि० ३८। चन्द्रराशि धनु बाद मकर घ० २६ प० ५८ पर होगी। यायी जयप्रद योग घ० २० प० २५ के बाद लगेगा। वधू प्रवेश मु० कुम्भ लग्नमें वा गोधूलि समये शुभ है। यात्रा शुभ नहीं।

ज्येष्ठकृष्ण ६ रविवार घ० ५८ प० २३। अंग्रेजी ता० १८ मई। बंगला ता० ४ ज्येष्ठ। फारसी ता० १८ जिलहिज। फसली ता० ६। उ० षा० न० घ० २६ प० ३८। दिनमान घ० ३३ प० ११। सूर्योदय घं० ५ मि० २१

सूर्यास्त घं० ६ मि० ३८ । चन्द्रराशि मकर है । आज भद्रा घ० ५८ प० ३३ । रात्रीमें घं० ४ मि० ५७ पर लगेगी । मृगशिरा ३ चरयोग मिथुनराशिमें शुक्र घ० १६ प० ४६ पर होगा । मासदग्ध तिथि ६ । स० सि० यो० घ० २६ प० २८ तक रहेगा ।

जेष्ठकृष्ण ७ सोमवार घ० ६ प० ० अंग्रेजी ता० १९ मई । बंगला ता० ५ ज्येष्ठ । फारसी ता० १९ जिलहिज । फसली ता० ७ । श्र० न० घ० ३३ प० १२ । दिनमान घ० ३३ प० १३ । सूर्योदय घं० ५ मि० २१ सूर्योदय घं० ६ मि० ३९ । चन्द्रराशि मकर है । आज भद्रा घ० ३१ प० ८ । सायं घं० ५ मि० ४८ तक रहेगी । रवियोगः घ० ३३ प० १२ तक रहेगा । और सर्वार्थ-सिद्धि-अमृतसिद्धियोग घ० ३३ प० १२ तक रहेगा । यात्रा शुभ नहीं ।

ज्येष्ठकृष्ण ७ मंगलवार घ० ३ प० ४३ । अंग्रेजी ता० २० मई । बंगला ता० ६ ज्येष्ठ । फारसी ता० २० जिलहिज । फसली ता० ८ । धनिष्ठा न० घ० ३६ प० ४२ । दिनमान घ० ३३ प० १६ । सूर्योदय घं० ५ मि० २१ सूर्यास्त घं० ६ मि० ३९ । चन्द्रराशि मकर बाद कुम्भ घ० ६ प० २७ पर होगी । आज भैरवाष्टमी व्रत है, यात्रा शुभ नहीं ।

ज्येष्ठकृष्ण ८ बुधवार घ० ८ प० ३४ । अंग्रेजी ता० २१ मई । बंगला ता० ७ ज्येष्ठ । फारसी ता० २१ जिलहिज । फसली ता० ९ । शतभिषा न० घ० ४५ प० ४० दिनमान घ० ३३ प० १८ । सूर्योदय घं० ५ मि० २० सूर्यास्त घं० ६ मि० ४ । चन्द्रराशि कुम्भ है । आज शीतलाष्टमी, बुधाष्टमी आज स्नान दान तथा श्राद्धादिसब अक्षय होता है ।

ज्येष्ठकृष्ण ९ गुरुवार घ० १२ प० ४४ । अंग्रेजी ता० २२ मई । बंगला ता० ८ ज्येष्ठ । फारसी ता० २२ जिलहिज । फसली ता० १० । पू० भा० न० घ० ५५ प० ५३ । दिनमान घ० ३३ प० २० । सूर्योदय घं० ५ मि० २० सूर्यास्त घं० ६ मि० ४० । चन्द्रराशि कुम्भ बाद मीन घ० ३४ प० ३८ पर होगी । आज घ० ४४ प० २० (रात्रीमें घं० ११ मि० ४ पर भद्रा लगेगी ।) यात्रा शुभ नहीं ।

ज्येष्ठकृष्ण १० शुक्रवार घ० १५ प० ५७ । अंग्रेजी ता० २३ मई । बंगला ता० ९ ज्येष्ठ । फारसी ता० २३ जिलहिज । फसली ता० ११ । उ० भा०

न० घ० ५४ प० ५८। दिनमान घ० ३३ प० २३। सूर्योदय घं० ५ मि० २० सूर्यास्त घं० ६ मि० ४०। चन्द्रराशि मीन है। तथा आज भद्रा घ० ११ प० ५७। (दिनमें घं० ११ मि० ४३ तक रहेगी।) सायन मिथुन संक्रान्ति घ० १५ प० ३१ पर होगी। यात्रा शुभ नहीं।

ज्येष्ठकृष्ण ११ शनिवार घ० १८ प० ५। अंग्रेजी ता० २४ मई। बंगला ता० १० ज्येष्ठ। फारसी ता० २४ जिलहिज। फसली ता० १२। रेवती न० घ० ५७ प० ५५। दिनमान घ० ३३ प० २५। सूर्योदय घं० ५ मि० १९ सूर्यास्त घं० ६ मि० ४१। चन्द्रराशि मीन बाद मेष घ० २७ प० ५५ पर होगी। आज रोहिणी नक्षत्रमें सूर्य घ० ४८ प० ४३ पर प्रवेश करेंगे। अतः कुछ बादल और कहीं २ वृष्टियोग भी है। अपरा ११ व्रतम्, सर्वेषां। यायी जय प्र० यो० घ० १८ प० ५ तक। द० यात्रा मु० कर्क लग्नमें शुभ है।

ज्येष्ठकृष्ण १२ रविवार घ० १८ प० ५२। अंग्रेजी ता० २५ मई। बंगला ता० ११ ज्येष्ठ। फारसी ता० २५ जिलहिज। फसली ता० १३। अश्विनी न० घ० ५९ प० ३५। दिनमान घ० ३३ प० २७। सूर्योदय घं० ५ मि० १९ सूर्यास्त घं० ६ मि० ४१। चन्द्रराशि मेष। आज मृगशिरा ३ च० मिथुन राशिमें गुरु घ० ३४ प० ७ पर। प्रदोष १३ व्रतम्। वटसावित्री त्रिरात्र व्रतम्। स० सि० योग घ० ५६ प० २५ तक है। मासशून्य तिथि १२। पूर्वयात्रा मु० सिंह लग्नमें शुभ है।

ज्येष्ठ कृष्ण १३ सोमवार घ० १८ प० २०। अंग्रेजी ता० २६ मई। बंगला ता० १२ ज्येष्ठ। फारसी ता० २६ जिलहिज। फसली ता० १४। भरणी न० घ० ६ प० ०। चन्द्रराशि मेष। दिनमान घ० ३३ प० २९। सूर्योदय घं० ५ मि० १८। सूर्यास्त घं० ६ मि० ४२। आज भद्रा घ० १८ प० २० (दिनमें घ० १२ मि० २८ के बाद घ० ४७ प० २८ रात्रिमें घं० १२ मि० १७) तक रहेगी। मेष राशिमें मंगल घ० ५१ प० १० पर होगा। मास शिवरात्रि १४ व्रतम्। यायी जयप्रद मु० घ० १८ प० २० तक रहेगा।

ज्येष्ठ कृष्ण १४ मंगलवार घ० १६ प० ३७। अंग्रेजी ता० २७ मई। बंगला ता० १३ ज्येष्ठ। फारसी ता० २७ जिलहिज। फसली ता० १५। भरणी न० घ० ५६ प० ५८ दिनमान घ० ३३ प० ३१। सूर्योदय घं० ५ मि०

१८। सूर्यास्त घं० ६ मि० ४२। चं० राशि मेष बाद वृष घ० १४ प० ५१ पर होगा। आज गौड़ लोगोंका वटसाविञी व्रत है। दर्शश्राद्धम् ३०। सिनीवाली ३०। स्थायीकार्यार्हयोग घ० १३ प० ३७ तक। यात्रा शुभ नहीं।

ज्येष्ठ कृष्ण ३० बुधवार घ० १२ प० ४२। अं० ता० २८ मई। बंगला ता० १४ ज्येष्ठ। फसली ता० २८ जिलहिज। फसली ता० १६। रोहिणी न० घ० ५५ प० ३३। दिनमान घ० ३३ प० ३२। सूर्योदय घं० ५ मि० १८। सूर्यास्त घं० ६ मि० ४२। चन्द्रराशि वृष। आज वटसाविञी व्रत पारण घं० २० मि० ४७ के बाद करना चाहिये। स्नानेदाने तर्पणे ३०। कुहू ३०। स० सि० योग घ० ५७ प० ३३ तक है। यात्रा शुभ नहीं।

ज्येष्ठ शुक्ल १ गुरुवार घ० ९ प० ४८। अं० ता० २९ मई। बंगला ता० १५ ज्येष्ठ। फारसी ता० २९ जिलहिज। फसली ता० १७। मृगशिरा न० घ० ५४ प० ५८। दिनमान घ० ३३ प० ३४। सूर्योदय घं० ५ मि० १७। सूर्यास्त घं० ६ मि० ४३। चन्द्रराशि वृष बाद मिथुन घ० २६ प० १५ पर होगी आज चन्द्रदर्शन होगा। मु. ३० फल समता। मार्गी बुधः घ० ३३ प० ३५ पर होगा। दशहरा प्रारम्भः १। करवीरव्रतम्। दशाश्वमेधमें १० दिन स्नानारम्भः। कल्पभेदेन बौद्धावतारः। यात्रा शुभ नहीं।

ज्येष्ठ शुक्ल २ शुक्रवार घ० ७ प० ३७। अं० ता० ३० मई। बंगला ता० १६ ज्येष्ठ। फारसी ता० १ मुहर्रम। फसली ता० १८। आर्द्रा न० घ० ५१ प० ४१। दिनमान घ० ३३ प० ३६। सूर्योदय घं० ५ मि० १७। सूर्यास्त घं० ६ मि० ४३। चन्द्रराशि मिथुन है। आज रम्भा ३ सायंकाल-व्यापिनी तथा फा० मुहर्रम १ सन् १३४६।

ज्येष्ठशुक्ल ५ शनिवार घ० ५२ प० ५२। अंग्रेजी ता० ३१ मई। बंगला ता० १७ज्येष्ठ। पारसी ता २ मुहर्रम। फसली ता० १९। पु० न० घ० ४७ प० ५९। दिनमान घ० ३३ प० ३६। सू० उ० घं० ५ मि० १६ सू० अ० घं० ६ मि० ४४। चन्द्रराशि मिथुन बाद कर्क घ० ३३ प० ५१ पर होगी। आज भद्रा घ० २६ प० ४७। (दिनमें घं० ३ मि० ५९ के बादसे घ० ५२ प० ५२। रात्रीमें घं० २ मि० ४९ तक रहेगी।) और बुधका उदय पूर्वमें घ० ४२ प० १९ पर होगा। विनायकी गणेश ४ व्रतं उमाव्रतम्‌ ४ रात्रौ।

ज्येष्ठशुक्ल ५ रविवार घ० ४७ प० ४५। अंग्रेजी ता० १ जून। बंगला ता० १८ ज्येष्ठ। पारसी ता० ३ मुहर्रम। फसली ता० २०। पु० न० घ० ४३ प० ५१। दिनमान घ० ३३ प० ४। सूर्योदय घं० ५ मि० १६ सूर्यास्त घं० ६ मि० ४४। चन्द्रराशि कर्क है। आज अंग्रेजी माह जून ६। सर्वार्थसिद्धियोगः घ० ४४ तक।

ज्येष्ठशुक्ल ६ सोमवार घ० ४१ प० ३४। अंग्रेजी ता० २ जून। बंगला ता० १९ ज्येष्ठ। फारसी ता० ४ मुहर्रम। फसली ता० २१। श्ले० न० घ० ३९ प० ४०। दिनमान घ० ३३ प० ४१। सूर्योदय घं० ५ मि० १६। सूर्यास्त घं० ६ मि० ४४। चंद्रराशि कर्क बाद सिंह घ० ३९ प० ४० पर होगी। आज रवियोग घ० ३९ प० ४० वधूप्रवेश मुहूर्त कुम्भ लग्नमें शुभ है।

ज्येष्ठशुक्ल ७ मंगलवार घ० ३५ प० ३०। अंग्रेजी ता० ३ जून। बंगला ता० २० ज्येष्ठ। फारसी ता० ५ मुहर्रम। फसली ता० २२। म० न० घ० ३५ प० ३८। दिनमान घ० ३३ प० ४२। सूर्योदय घं० ५ मि० १५ सूर्यास्त घं० ६ मि० ४५। चंद्रराशि सिंह है। आज भद्रा घ० ३५ प० ३०। (सायंकालमें घं० ९ मि० २८ पर लगेगी।) सम्राटका जन्म दिवस है।)

ज्येष्ठशुक्ल ८ बुधवार घ० २९ प० ४५। अंग्रेजी ता० ४ जून। बंगला ता० २१ ज्येष्ठ। फारसी ता० ६ मुहर्रम। फसली ता २३। पू० न० घ० ३१ प० ५। दिनमान घ० ३३ प० ४४। सूर्योदय घं० ५ मि० १५। सूर्यास्त घं० ६ मि० ४५। चन्द्रराशि सिंह बाद कन्या घ० ४६ प० ८ पर होगी। आज भद्रा घ० २ प० ३७। (दिनमें घं० ६ मि० ७८ तक रहेगी।) अन्नपूर्णा ८। शुक्लादेवी पूजा ८। म ष्णोपूजा रात्रौ बुधाष्टमी इसमें स्नान दान श्राद्धादि करनेपर सब अक्षय होता है। यात्रा शुभ नहीं है।

ज्येष्ठशुक्ल ९ गुरुवार घ० २४ प० ३१। अंग्रेजी ता० ५ जून। बंगला ता० २२ ज्येष्ठ। फारसी ता० ७ मुहर्रम। फसली ता० २४। उ० न० घ० २८ प० ४५। दिनमान घ० ३३ प० ४६। सूर्योदय घं० ५ मि० १५ सूर्यास्त घं० ६ मि० ४५। चन्द्रराशि कन्या है। आज यायी (मुद्दई) की जय प्रदयोग घ० २४ प० ३१ तक है। रवियोग घ० ६० यावत्।

ज्येष्ठशुक्ल १० शुक्रवार घ० २० प० २। अंग्रेजी ता० ६ जून। बंगला ता० २३ ज्येष्ठ। फारसी ता० ८ मुहर्रम। फसली ता० २५। ह० न० घ० २६ प० २०। दिनमान घ० ३३ प० ४६। सूर्योदय घं० ५ मि० १५ सूर्यास्त घं० ६ मि० ४५। चन्द्रराशि कन्या बाद तुला घ० ५५ प० ३१ के बाद होगी। आज भद्रा घ० ४८ प० १२। (रात्रिमें घं० १२ मि० ३२ के बाद लगेगी। आज गंगा दशहरा है। इसमें सेतुबन्ध रामेश्वरकी प्रतिष्ठाका दिवस होनेसे विशेष पूजन करना चाहिये। यात्रा शुभ नहीं है।

ज्येष्ठशुक्ल ११ शनिवार घ० १६ प० २२। अंग्रेजी ता० ७ जून। बंगला ता० २४ ज्येष्ठ। फारसी ता० ९ मुहर्रम। फसली ता० २६। चित्रा न० घ० २४ प० ४२। दिनमान घ० ३३ प० ४८। सूर्योदय घं० ५ मि० १४ सूर्यास्त घं० ६ मि० ४६ चन्द्रराशि तुला है। आज भद्रा घ० १६ प० २२। (दिनमें घ० ११ प० ४७ तक रहेगी।) और मृगशिरा नक्षत्रमें सूर्य घ० ४७ प० ५४ पर प्रवेश करेंगे। आजके दिन बादल तथा कुछ वृष्टियोग है। गुरुका अस्त पश्चिम दिशामें घ० २ प० २३। (दिनमें घं० ६ मि० ११ पर होगा) निर्जला एकादशी व्रतं सर्वेषाम्। यात्रा शुभ नहीं है।

ज्येष्ठशुक्ल १२ रविवार घ० १३ प० ४६। अंग्रेजी ता० ८ जून। बंगला ता० २५ ज्येष्ठ। फा० ता० १० मुहर्रम। फ० ता० २७। स्वा० न० घ० २४ प० ०। दिनमान घ० ३३ प० ४९। सूर्योदय घं० ५ मि० १४। सूर्यास्त घं० ६ मि० ४६। चं. रा. तुला है। आज प्रदोष १३ व्रत है। और वटसावित्री त्रिरात्र व्रतका आरंभ होता है। मासशून्य तिथिः १२। यात्रा शुभ नहीं है।

ज्येष्ठशुक्ल १३ सोमवार घ० १२ प० १९। अंग्रेजी ता० ९ जून। बंगला ता० २६ ज्येष्ठ। फारसी ता० ११ मुहर्रम। फसली ता० २८। वि० न० घ० २४ प० ४३। दिनमान घ० ३२ प० ५०। सूर्योदय घं० ५ मि० १४ सूर्यास्त घं० ६ मि० ४६। चं. रा. तुला, बाद वृश्चिक घ० ९ प० २४ पर होगी। आज महादेव प्रीत्यर्थ धेनु दान करना चाहिये। यात्रा योग नहीं है।

ज्येष्ठशुक्ल १४ मंगलवार घ० १२ प० ८। अंग्रेजी ता० १० जून। बंगला ता० २७ ज्येष्ठ। फारसी ता० १२ मुहर्रम। फसली ता० २९ ज्येष्ठ। अनुराधा न० घ० २६ प० ३४। दिनमान घ० ३३ प० ५१। सूर्योदय घं० ५

मि० १४ । सूर्यास्त घं० ६ मि० ४६ । चन्द्रराशि वृश्चिक है । आज भद्रा घ० १२ प० ८ (दिनमें घं० १० मि० ५ के बादसे घ० ४२ प० ४१ रात्रिमें घं० १० मि० १८ तक रहेगी ।) व्रताय १५ । दाक्षिणात्यानां वटसावित्री व्रतम् । पूजनसमय घं० १० मि० ५ के उपरान्त है । यात्रा शुभ नहीं ।

ज्येष्ठ शुक्ल १५ बुधवार घ० १२ प० १४ । अंग्रेजी ता० ११ जून । बंगला ता० २८ ज्येष्ठ । फारसी ता० १३ मुहर्रम । फसली ता० २० । ज्येष्ठा न० घ० २६ प० ४२ । दिनमान घ० ३३ प० ५२ । सूर्योदय घं० ५ मि० १४ । सूर्यास्त घं० ६ मि० ४६ । चं. रा. वृश्चिक बाद धन घ० २९ प० ४२ पर होगी । तिथ्यन्तेपारणं घं० १० मि० ३१ के बाद । आज ज्येष्ठा नक्षत्रयुक्त ज्येष्ठ १५ को स्नानदानादि करनेसे १० गुणित फल है । पुरुषोत्तम देवताकी प्रीतिके लिये छत्र उपानह सुवर्ण आदि दान करना महाफलदायक है । यात्रा शुभ नहीं ।

ज्येष्ठकृष्ण ६ रवौ मिश्रमानम् ४७।३० दिनमान ३३।११

सू	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	११	१	१	२	८	०	९
४	२२	०	२८	०	१६	१०	१०
१५	२,४	१६	२६	३६	२५	४६	४६
२४	२	२०	१८	५६	५६	५७	५७
५७	४५	३८/४६	१४	७२	३/५	३	३
३४	१५	व.	१०	६	व	११	११
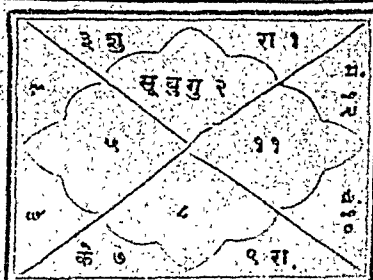
ज्येष्ठकृष्ण १२ रवौ मिश्रमानम् ४७।२६ दिनमान ३३।२७

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	११	०	२	२	८	६	६
१०	२९	२६	०	१	१६	१	१
५७	१२	१	३	२	२	२४	२४
३६	२०	११	११	३६	५९	४२	४२
५७	४४	१४/३४	१४	७२	५/५८	३	३
२१	१५	व	१०	४२	व	११	११
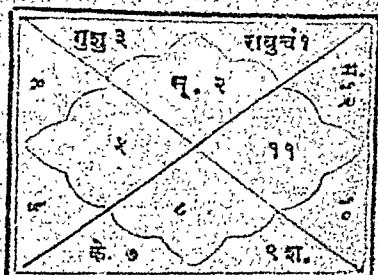
ज्येष्ठशुक्ल ५ रवौ मिश्रमानं ४७.५२ दिनमान ३३।४०

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श	रा.	के
१	०	०	२	२	८	०	६
१७	४	२६	१	१७	१९	१	१
१८	२८	४०	४०	२९	४६	२	२
३६	११	११	९	२६	४६	२७	२७
९७	४४	५८/२७	१३	७१	३/५८	२	३
५२	९	मा	१६	२७	व.	११	११
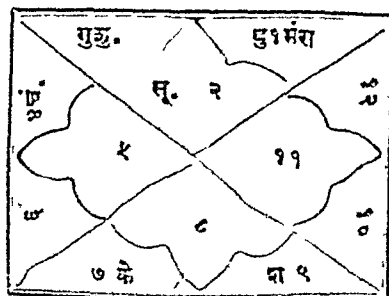
ज्येष्ठशुक्ल १२ रवौ मिश्रमानं ४७।४५ दिनमानं ३३।४६

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	०	१	२	२	८	०	६
२४	९	२	३	२५	१५	९	९
१८	४१	४	१७	४७	१७	४०	४०
३५	३७	५३	३५	१२	२१	१२	१२
९७	४४	६४	१४	७१	५/६६	३	३
३	१२	४	५	२७	व.	११	११
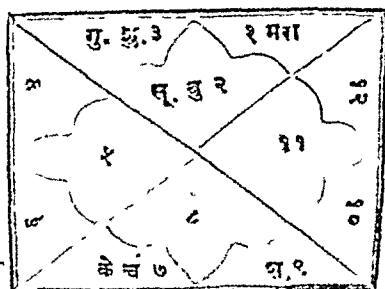
अथ ज्येष्ठ मास गोचर फलम्।

इस महीनेमें मेष, मिथुन, धन, तुला, कर्क, वालोंको श्रीवृद्धि नये काममें फायदा किन्तु स्त्री विशयक चिन्ता, और आपसमें झगड़ा लगा रहेगा। चिन्ता मनमें लगी रहेगी। शत्रुको हानि। रोजगार करनेमें सिद्धि होगी। इन राशियोंमें मिथुन, तुला धन, वालोंको १५ दिन खराब अन्य सम रहेंगे; और मेष, कर्क, वालोंको १४ दिन खराब ६ दिन मध्यम बाकी दिन शुभ रहेंगे। कन्या, वृष, सिंहको लाभ, मित्र मिलाप, रोजगारमें तरक्की रहेगी। घरमें झगड़ा लगा रहेगा, दिलमें बेचैनी रहेगी, किन्तु शुभ कार्मोंमें प्रेम अधिक रहेगा। गौको अन्न घास खिलानेसे सब कामोंमें फायदा रहेगा। शेष राशिवालोंको वैशाखसे मध्यम रहेगा। अर्थात् १४ दिन खराब। १५ दिन अच्छे रहेंगे। गौसेवा करना लाभ दायक होगा।

ज्येष्ठमास फलम्।

इस मासमें रुधिरका प्रकोप और गर्मी अधिक पड़ेगी। मनुष्योंको नाना प्रकारकी व्याधि होगी। और वर्षाका योग भी पड़ा है, किन्तु खंड वृष्टि होगी, बादल बड़े जोरोंसे चलेंगे। धान्यका भाव तेज रहेगा। खांड़, उड़द, सूत, वस्त्र, तेल, हींग, हलदी, जीरा, तेज होंगे। चावल, गेहूं, चना, आदिका भाव मन्दा रहेगा। धातुओंका भाव ज्यादा कम होता रहेगा। जनतामें वैमनस्य रहेगा। राज्य क्रांतिका जोर ज्यादा बढ़ेगा।

इस मासमें सूर्य उत्तरायण तथा उत्तरगोल रहेंगे। ग्रीष्मऋतु रहेगी। अं० माह जून ६। ता० ३०। आषाढ़ सु० ५ मंगलतक रहेगा, बाद जुलाई ७ ता० ३१ सन् १९३० ई० होगा।

आषाढ़ कृष्ण १ गुरुवार घ० १५ प० ३२। अं०ता०१२ जून। बंगला ता० २९ ज्येष्ठ। फारसी ता० १४ मुहर्रम। फसली ता० १। मूल न० घ० २२ प० ५६। दिनमान घ० ३३ प० ५२। सूर्योदय घं० ५ मि० १२। सूर्यास्त घं० ६ मि० ४७। चन्द्रराशि धन है। आज पुनर्वसू ४ चन्द्र कर्क राशिमें शुक्र घ० २० प० २ के वाद होंगे। यात्रा शुभ नहीं है।

आषाढ़ कृष्ण २ शुक्रवार घ० १८ प० ५७। अं० ता० १३ जून। बंगला ता० ३० ज्येष्ठ। फारसी ता० १४ मुहर्रम। फसली ता० २। पूर्वा न० घ० २९ प० १६। दिनमान घ० ३३ प० ५३। सूर्योदय घं० ५ मि० १३। सूर्यास्त घं० ६ मि० ४७। चन्द्रराशि धन, वाद मकर घ० ५५ प० ४७ पर होगी। आज भद्रा घ० ५५ प० ७ (रात्रिमें घं० १ मि० ४० के वाद लगेगी।) यात्रा शुभ नहीं है।

आषाढ़कृष्ण ३ शनिवार घ० २३ प० १७। अंग्रेजी ता० १४ जून। बंगला ता० ३१ ज्येष्ठ। फारसी ता० १६ मुहर्रम। फसली ता० ३। उत्तरा न० घ० ४५ प० २। दिनमान घ० ३३ प० ५४। सूर्योदय घं० ५ मि० १३ सूर्यास्त घं० ६ मि० ४७। चन्द्रराशि मकर है। भद्रा घ० २३ प० १७ (दिनमें घं० २ मि० ३२) तक रहेगी। और मिथुन संक्रान्ति घ० ४७ प० ९ रात्रिमें घं० १२ मि० ४ पर लगेगी। मु० ३० फल समता। संकष्टी गणेश ४ व्रतम्। चन्द्र उ० सं. टा. घं० ९ मि० ३८। यात्रा शुभ नहीं। यायी जयद योगः घ० २३ प० १७ यावत्।

आषाढ़ कृष्ण ४ रविवार घ० २८ प० १२ । अं० ता० १५ जून । बंगला ता० १ आषाढ़ । फारसी ता० १७ मुहर्रम । फसली ता० ४ । श्रवण न० घ० ५१ प० २१ । दिनमान घ० ३३ प० ५५ । सूर्योदय घं० ५ मि० १३ । सूर्यास्त घं० ६ मि० ४७ । चन्द्रराशि मकर है । आजसे बंगला आषाढ़ आरम्भ हुआ । संक्रान्ति पुण्यकाल घं० ६ मि० २९ तक है । यात्रा शुभ नहीं ।

आषाढ़ कृष्ण ५ सोमवार घ० ३३ प० १७ । अं० ता० १६ जून । बंगला ता० २ आषाढ़ । फारसी ता० १८ मुहर्रम । फसली ता० ५ । धनिष्ठा न० घ० ५८ न० २२ । दिनमान घ० ३३ प० ५५ । सूर्योदय घं० ५ मि० १३ । सूर्यास्त ६ मि० ४७ । चन्द्रराशि मकर, बाद कुंभ घ० २९ प० ६ पर होगी । *युद्धमें यायी (जानेवालेको) जयप्रद योग घ० ३३ प० १७ तक* है । यात्रा शुभ नहीं है ।

आषाढ़ कृष्ण ६ मंगलवार घ० ३८ प० ५ । अं० ता० १७ जून । बंगला ता० ३ आषाढ़ । फारसी ता० १९ मुहर्रम । फसली ता० ६ । शतभिष न० घ० ६० प० ० । दिनमान घ० ३३ प० ५६ । सूर्योदय घं० ५ मि० १७ । सूर्यास्त घं० ६ मि० ४७ । चन्द्रराशि कुम्भ है । आज भद्रा घ० ३८ प० ५ (रात्रिमें घं० ८ मि० २७ के बाद लगेगी ।) रवियोगः घ० ६० यावत् । यात्रा शुभ नहीं है ।

आषाढ़कृष्ण ७ बुधवार घ० ४२ प० १५ । अंग्रेजी ता० १८ जून । बंगला ता० ४ आषाढ़ । फारसी ता० २० मुहर्रम । फसली ता० ७ । श० न० घ० ४ प० २८ । दिनमान घ० ३३ प० ५६ । सूर्योदय घं० ५ मि० १३ सूर्यास्त घं० ६ मि० ४७ । चन्द्रराशि कुम्भ, बाद मीन घ० ५३ प० ३१ पर होगी । आज भद्रा घ० १० प० १० । (दिनमें घं० ९ मि० १७ तक रहेगी ।) यात्रा शुभ नहीं है ।

आषाढ़कृष्ण ८ गुरुवार घ० ४५ प० २८ । अंग्रेजी ता० १९ जून । बंगला ता० ५ आषाढ़ । फारसी ता० २१ मुहर्रम । फसली ता० ८ । पू० न० घ० ९ प० ५१ । दिनमान घ० ३३ प० ५६ । सूर्योदय घं० ५ मि० १३ सूर्यास्त घं० ६ मि० ४७ । चन्द्रराशि मीन है । आज शीतलाष्टमी ८। भैरवाष्टमी ८। मासशून्य तिथि ८। यात्रा शुभ नहीं ।

आषाढ़कृष्ण ९ शुक्रवार घ० ४७ प० ३५ । अंग्रेजी ता० २० जून । बंगला ता० ६ आषाढ़ । फारसी ता० २२ मुहर्रम । फ० ता० ९ । उ० न० घ० ४ प० १० । दिनमान घं० ३२ प० ५७ । सूर्योदय घं० ५ मि० १३ । सूर्यास्त घं० ६ मि० ४७ । चं० रा० मीन है । अमृतसिद्धि सर्वार्थसिद्धियोग घ० १४ प० १० के बादसे है । यात्रा शुभ नहीं ।

आषाढ़ कृष्ण १० शनिवार घ० ४८ प० २४ । अं० ता० २१ जून । बंगला ता० ७ आषाढ़ । फारसी ता० २३ मुहर्रम । फसली ता० १० । रेवती न० घ० ४७ प० २२ । दिनमान घ० ३२ प० ५७ । सूर्योदय घं० ५ मि० १३ । सूर्यास्त घं० ६ मि० ४७ । चन्द्रराशि मीन बाद मेष घ० १७ प० २२ पर होगी । आज भद्रा घ० १७ प० ५१ (दिनमें घं० १२ मि० २५ के बादसे घ० ४८ प० २४ रात्रिमें घं० १२ मि० ३५ तक रहेगी ।) और आर्द्रा नक्षत्रमें सूर्य घ० ४८ प० ४५ के बाद प्रवेश करेंगे । यात्रा शुभ नहीं है ।

आषाढ़कृष्ण ११ रविवार घ० ४७ प० ५५ । अंग्रेजी ता० २२ जून । बंगला ता० ८ आषाढ़ । फारसी ता० २४ मुहर्रम । फसली ता० ११ । अश्विनी न० घ० १९ प० १७ । दिनमान घ० ३३ प० ५७ । सूर्योदय घं० ५ मि० १३ । सूर्यास्त घं० ६ मि० ४७ । चन्द्रराशि मेष है । योगिनी ११ व्रतम् सर्वेषां सर्वार्थसिद्धियोग घ० १९ प० १७ तक है । यात्रा शुभ नहीं है ।

आषाढ़ कृष्ण १२ सोमवार घ० ४६ प० १२ । अं० ता० २३ जून । बंगला ता० ९ आषाढ़ । फारसी ता० २५ मुहर्रम । फसली ता० १२ । भरणी न० घ० १९ प० ५८ । दिनमान घ० ३३ प० ५७ । सूर्योदय घ० ५ मि० १३ । सूर्यास्त घं० ६ मि० ४७ । चन्द्रराशि मेष, बाद वृष घ० ३४ प० ५० पर होगी । सायनकर्क संक्रान्ति घ० ४६ प० ४५ पर होगी । यात्रा शुभ नहीं है ।

आषाढ़कृष्ण १३ मङ्गलवार घ० ४३ प० १९ । अंग्रेजी ता० २४ जून । बंगला ता० १० आषाढ़ । फारसी ता० २६ मुहर्रम । फसली ता० १३ । कृ० न० घ० १६ प० २६ । दिनमान घ० ३३ प० ५७ । सूर्योदय घं० ५ मि० १३ सूर्यास्त घं० ६ मि० ४७ । चंद्रराशि वृष है । आज भद्रा घ० ४३ प० १९ । (रात्रीमें घं १० मि० २३ के बाद लगेगी ।) भौम प्रदोष १३ व्रतम्, मास-शिवरात्रि व्रतम् । सर्वार्थसिद्धियोग घ० १६ प० २६ यावत् ।

आषाढ़कृष्ण १४ बुधवार घ० २९ प० २८। अंग्रेजी ता० २५ जून। बंगला ता० ११ आषाढ़। फारसी ता० २७ मुहर्रम। फसली ता० १४। रो० न० घ० १७ प० ५२। दिनमान घ० ३३ प० ५६। सूर्योदय घं० ५ मि० १३ सूर्यास्त घं० ६ मि० ४७। चंद्रराशि वृष। बाद मिथुन घ० ४६ प० ४१ पर होगी। आज भद्रा घ० ११ प० २३। (दिनमें घं० ९ मि० ४६ तक रहेगी।) मासशून्य १४। यात्रा शुभ नहीं।

आषाढ़कृष्ण १५ गुरुवार घ० ३४ प० ४४। अंग्रेजी ता० २६ जून। बंगला ता० १२ आषाढ़। फारसी ता० २८ मुहर्रम। फसली ता० १५। मृ० न० घ० १५ प० २९। दिनमान घ० ३३ प० ५६। सूर्योदय घं० ५ मि० १३ सूर्यास्त घं० ६ मि० ४७। चन्द्रराशि मिथुन है। आज दर्शनश्राद्ध ३०। कुहू ३०। मृत्युयोग घ० २५ पर २६ यावत। यात्रा शुभ नहीं है।

आषाढ़ शुक्ल १ शुक्रवार घ० २९ प० २३। अंग्रेजी ता० २७ जून। बंगला ता० १३ आषाढ़। फारसी ता० २९ मुहर्रम्। फसली ता० १६। आर्द्रा न० घ० १२ प० १९। दिनमान घ० ३३ प० ५६। सूर्योदय घं० ५ मि० १३। सूर्यास्त घं० ६ मि० ४७। चं. रा. मिथुन, बाद कर्क घ० ५४ प० ३२ पर होगी। आज चन्द्रदर्शन मु० ४५ फलं समता। मृगशिरा ३ चरणे मिथुन राशिमें बुध घ० ४० प० ३२ पर प्रवेश करेंगे। यात्रा शुभ नहीं है।

आषाढ़ शुक्ल २ शनिवार घ० २३ प० ३२। अंग्रेजी ता० २८ जून। बंगला ता० १४ आषाढ़। फारसी ता० १ सफर। फसली ता० १७। पुनर्वसु न० घ० ८ प० २७। दिनमान घ० ३३ प० ५५। सूर्योदय घं० ५ मि० १३। सूर्यास्त घं० ६ मि० ४७। चन्द्रराशि कर्क है। आज मुसलमानी महीना सफर लगा। श्रीरामरथोत्सवः घ० ८ प० २७ यावत्। यात्रा शुभ नहीं है।

आषाढ़ शुक्ल ३ रविवार घ० १७ प० २३। अंग्रेजी ता० २९ जून। बंगला ता० १५ आषाढ़। फारसी ता० २ सफर। फसली ता० १८। पुष्य न० घ० ४ प० ३४। दिनमान घ० ३३ प० ५५। सूर्योदय घं० ५ मि० १३ सूर्यास्त घं० ६ मि० ४७। चन्द्रराशि कर्क है। आज भद्रा घ० ४४ प० १६ (रात्रिमें घं० १० मि० ५५ के बाद लगेगी।) विनायकीगणेश ४ व्रतम्। बायीको जयप्रदयोग घ० ४ प० ३४ के बादसे घ० १७ प० २३ तक है। स० सि० यो० घ० ४ प० ३४ तक है। यात्रा शुभ नहीं है।

आषाढ़ शुक्ल ४ सोमवार घ० ११ प० ९ । अं० ता० ३० जून । बंगला ता० १६ आषाढ़ । फारसी ता० ३ सफर । फसली ता० १९ । श्लेषा न० घ० ५८ प० ३४ दिनमान घ० ३३ प० ५४ । सूर्योदय घं० ५ मि० १३ । सूर्यास्त घं० ६ मि० ४७ । चंद्रराशि कर्क, बाद सिंह घ० प० २३ पर होगी । आज भद्रा घ० ११ प० ९ । (दिनमें घं० ९ मि० ४१ तक रहेगी) ।

आषाढ़ शुक्ल ५ मंगलवार घ० ५४ प० ३६ । अंग्रेजी ता० १ जुलाई । बंगला ता० १७ आषाढ़ । फारसी ता० ४ सफर । फसली ता० २० । पूर्वा न० घ० ५२ प० २८ । दिनमान घ० ३३ प० ५४ । सूर्योदय घं० ५ मि० १३ । सूर्यास्त घं० ६ मि० ४७ । चन्द्रराशि सिंह है । आज रवियोग घ० ५२ प० २८ तक है । मासदग्ध तिथि ५ । अं० माह जुलाई ७ का आरम्भ ।

आषाढ़ शुक्ल ७ बुधवार घ० ५३ प० ५६ । अंग्रेजी ता० २ जुलाई । बंगला ता० १८ आषाढ़ । फारसी ता० ५ सफर । फसली ता० २१ । उत्तरा न० घ० ४९ प० ७ । दिनमान घ० ३३ प० ५३ । सूर्योदय घं० ५ मि० १३ । सूर्यास्त घं० ६ मि० ४७ । चन्द्रराशि सिंह, बाद कन्या घ० ६ प० ३८ पर होगी । आज भद्रा घ० ५३ प० ५६ (रात्रिमें घं० २ मि० ४७ के बाद लगेगी ।) मासशून्य ति० ७ । यात्रा शुभ नहीं है ।

आषाढ़शुक्ल ८ गुरुवार घ० ४९ प० २१ । अंग्रेजी ता० ३ जुलाई । बंगला ता० १९ आषाढ़ । फारसी ता० ६ सफर । फसली ता० २२ । ह० न० घ० ४६ प० २८ । दिनमान घ० ३३ प० ५२ । सूर्योदय घं० ५ मि० १४ । सूर्यास्त घं० ६ मि० ४६ । चन्द्रराशि कन्या है । आज भद्रा घ० २१ प० ३८ । (दिनमें घं० १ मि० ५३ तक रहेगी ।) अन्नपूर्णाष्टमी । यात्रा शुभ नहीं है ।

आषाढ़शुक्ल ९ शुक्रवार घ० ४५ प० ३६ । अंग्रेजी ता० ४ जुलाई । बंगला ता० २० आषाढ़ । फारसी ता० ७ सफर । फसली ता० २३ । चि० न० घ० ४४ प० ३६ । दिनमान घ० ३३ प० ५१ । सूर्योदय घं० ५ मि० १४ सूर्यास्त घं० ६ मि० ४६ । चन्द्रराशि कन्या । बाद तुला घ० १५ प० ३३ पर होगी । आज गुरुका उदय पूर्वमें घ० ९ प० १७ । (दिनमें घं० ८ मि० ५७ पर होगा ।) रवियोग घ० ६० तक है । यात्रा शुभ नहीं ।

आषाढ़शुक्ल १० शनिवार घ० ४३ प० ४६ । अंग्रेजी ता० ५ जुलाई । बंगला ता० २१ आषाढ़ । फारसी ता० ८ सफर । फसली ता० २४ । स्वा०

न० घ० ४३ प० ४८। दिनमान घ० ३३ प० ५०। सूर्योदय घं० ५ मि० १४ सूर्यास्त घं० ६ मि० ४६। चन्द्रराशि तुला है। पुनर्वसु नक्षत्रमें सूर्य घ० २१ प० ४६ पर प्रवेश करेंगे। आज बुधका अस्त पूर्वमें घ० २८ प० २४ पर होगा। गिरिजा पूजन मध्यान्हमें। मन्वादि १०। और स० सि० यो० घ० ४३ प० ४८ तक रहेगा। यात्रा शुभ नहीं।

आषाढ़शुक्ल ११ रविवार घ० ४१ प० १५। अंग्रेजी ता० ६ जुलाई। बंगला ता० २२ आषाढ़। फारसी ता० ९ सफर। फसली ता० २५। वि० न० घ० ४४ प० ७। दिनमान घ० ३३ प० ४९। सूर्योदय घं० ५ मि० १४ सूर्यास्त घं० ६ मि० ४६। चन्द्रराशि तुला। बाद वृश्चिक घ० २९ प० ३ पर होगी। आज भद्रा घ० १२ प० २। (दिनमें घं० १० मि० ३ के बादसे घ० ४१ प० १५। रात्रीमें घं० ९ मि० ४४ तक रहेगी।) कृत्तिका २ च. वृष राशिमें मंगल घ० ४१ प० ४८ में होगा। विष्णुशयनी ११ व्रतं सर्वेषां। चातुर्मास्य व्रतारंभः ११। यात्रा शुभ नहीं।

आषाढ़शुक्ल १२ सोमवार घ० ४० प० ५५। अंग्रेजी ता० ७ जुलाई। बंगला ता० २३ आषाढ़। फारसी ता० १० सफर। फसली ता० २६। ऽनु० न० घ० ४५ प० ४०। दिनमान घ० ३३ प० ४८। सूर्योदय घं० ५ मि० १४ सूर्यास्त घं० ६ मि० ४६। चन्द्रराशि वृश्चिक है। आज मघा १ च० सिंह राशिमें शुक्र घ० ५५ प० १५ पर होगा। मत्स्य जयन्ती १२। इस द्वादशीको वामनपूजनसे बड़ा फल है। शाक व्रतारंभः १२। स० सि० यो० घ० ४५ प० ४० तक रहेगा। यात्रा शुभ नहीं।

आषाढ़शुक्ल १३ मंगलवार घ० ४१ प० ५५। अंग्रेजी ता० ८ जुलाई। बंगला ता० २४ आषाढ़। फारसी ता० ११ सफर। फसली ता० २७। ज्येष्ठा न० घ० ४८ प० २९। दिनमान घ० ३३ प० ४७। सूर्योदय घं० ५ मि० १५ सूर्यास्त घं० ६ मि० ४५। चन्द्रराशि वृश्चिक बाद धन घ० ४८ प० २९ पर होगी। आज भौम प्रदोप १३ व्रत है। यात्रा शुभ नहीं है।

आषाढ़ शुक्ल १४ बुधवार घ० ४४ प० ६। अंग्रेजी ता० ९ जुलाई। बंगला ता० २५ आषाढ़। फारसी ता० १२ सफर। फसली ता० २८। मूल न० घ० ५२ प० २९। दिनमान घ० ३३ प० ४६। सूर्योदय घं० ५ मि० १५। सूर्यास्त घं० ६ मि० ४५। चन्द्रराशि धन है। आज व्रता घ० ४४

प० ६ । (रात्रिमें घं० १० मि० ५३ के उपरान्त लगेगी ।) रवियोग घ० ५२ प० २९ तक रहेगा । यात्रा शुभ नहीं ।

आषाढ़ शुक्ल १५ गुरुवार घ० ४७ प० २८ । अंग्रेजी ता० १० जुलाई । बंगला ता० २६ आषाढ़ । फारसी ता० १३ सफर । फसली ता० २९ । पूर्वा० न० घ० ४७ प० ३४ । दिनमान घ० ३३ प० ४४ । सूर्योदय घं० ५ मि० १५ । सूर्यास्त घं० ६ मि० ५५ । चन्द्रराशि धन है । आज भद्रा घ० १५ प० ४७ (दिनमें घं० ११ मि० ३४) तक रहेगी । कोकिलाव्रतम् । शिव-शयनोत्सवः १५ । व्यासपूजन १५ । यात्रा शुभ नहीं ।

आषाढ़ कृष्ण ४ रवौ मिश्रमानम् ४७।४७ दिनमान ३३।५५

सू	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	०	१	२	३	८	०	६
०	१४	१०	४	४	१४	९	९
१७	४२	५०	४६	३	४५	१७	१७
४	१५	२६	२	१	५३	५६	५६
५६	४३	८५	१४	७०	६६ ४	३	३
४७	४९	१४	१०	४८	व	११	११
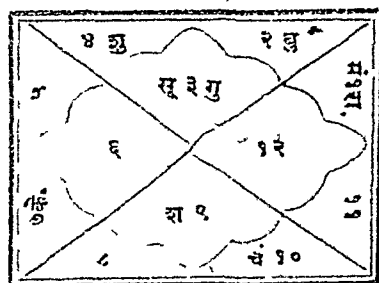
आषाढ़ कृष्ण ११ रवौ मिश्रमानम् ४७।४७ दिनमान ३३।५७

सू.	मं.	बु.	गु.	शु	श.	रा.	के.
२	०	१	२	३	८	०	६
७	१९	२१	६	१७	१४	८	८
३६	५९	२६	३३	१९	१२	५५	५५
९	१५	२७	५५	३७	४९	४१	४१
५६	४३	९७	१४	७०	५३ ५	३	३
५३	२७	२०	१०	४९	व	११	११
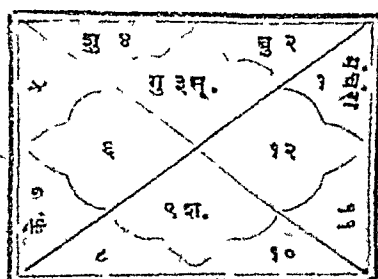
आषाढ़शुक्ल २ रवौ मिश्रमानं ४७।४५ दिनमान ३३।५५

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श	रा.	के
२	०	२	२	३	८	०	६
१४	२५	३	८	२०	१२	८	८
१४	३	३७	११	३२	३९	३३	३३
१४	४७	३५	१३	३८	४८	२६	२६
५६	४२	१०२	१४	७०	५/८३	३	३
५१	४३	३७	५	४८	व.	११	११
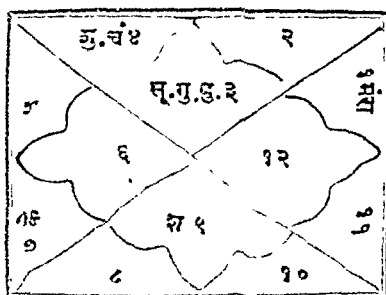
आषाढ़शुक्ल ११ रवौ मिश्रमानं ४७।४१ दिनमानं ३३।४६

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	१	२	२	३	८	०	६
२०	०	१६	९	२८	१२	८	८
५२	४	२१	४९	४१	६	११	११
६	९	१०	३२	४४	५६	११	११
५६	३२	१११	१३	६९	५/८६	३	३
५१	२१	४४	१६	३१	व.	११	११
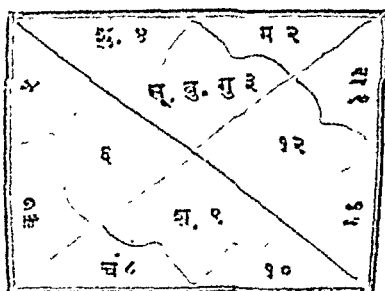
अथ आषाढ़ मास गोचर फल ।

इस महीनेमें धन, कर्क, मेष तथा तुला राशिवालोंको शुभ ही बीतेगा किन्तु शारीरिक चिन्ता, ज्वर, पेटमें पीड़ा बनी रहेगी। रोजगारमें लाभ साधारण रहेगा। इनको शुक्र और बुधका दान करना आवश्यक है। १२ दिन अच्छे रहेंगे, १० दिन समतासे बीतेंगे, शेष अच्छे नहीं। मीन, वृष, वृश्चिक, कन्या राशिवालोंको यह मास सामान्यरूपसे रहेगा। १९ दिन अच्छे रहेंगे, बाकी अन्तके खराब होंगे। स्त्री-चिन्ता, घरमें क्लेश बना रहेगा, राज्यसे कुछ भय होगा। अतः इनको स्तोत्रादि पाठ करना परमावश्यक है और राशि-वालोंको यह मास सामान्य रहेगा।

अथ आषाढ़ मासफल ।

आषाढ़ मासमें वर्षाका योग किंचित् पाया गया है। अतः दुर्गाजीका अनुष्ठान, हवन, इन्द्रपूजन करनेसे वर्षा होनेमें सन्देह नहीं। मनुष्योंको

व्याधियें अधिक रहेंगी। छोटे बच्चोंको तकलीफ रहेगी। इस महीनेमें तेजी-मन्दी वैशाखसे विपरीत होगी। आषाढ़कृष्ण १४–३० को साधारण बादल वर्षा तथा शुक्लपक्षमें २–७–८–९ को वर्षाका योग है। ११–१२–१४–१५ को साधारण योग है। बादलका गर्जना, अन्धकार आदि होगा। धान्यका भाव कुछ मन्दा पड़ेगा। सोनेका भाव तेज तथा चांदी सम रहेगी। सामाजिक झगड़े विशेष रूपसे चलेंगे। घर घरमें कलह फैलेगा, इत्यादि।

इस महीनेमें श्रावणकृष्ण ५ बुध तक उत्तरायण सूर्य और उत्तर-गोल, ग्रीष्मर्तु रहेगी। बाद दक्षिणायन सूर्य उत्तरगोल वर्षाऋतु होगी। तथा अंग्रेजी माह जुलाई ता० ३१ श्रावणशुक्ल ७ शुक्र तक रहेगी। बाद अगस्त म ता० ३१ सन् १९३० ई० होगा।

श्रावण कृष्ण १ शुक्रवार घ०५१ प० ४२। अंग्रेजी ता० ११ जुलाई। बंगला ता०२७ आषाढ़। फा०ता०१४। फसली ता०१। उ० न० घ०६० प० ०। दिनमान घ० ३३ प० ४३। सूर्योदय घं० ५ मि० १५। सूर्यास्त घं० ६ मि० ४५। चन्द्रराशि धन। बाद मकर घ० १४ प० २ पर होगा। आजसे श्रावण महीने भर ब्रतीको तरकारी वर्जित है। इष्टिः। यात्रा शुभ नहीं है।

श्रावण कृष्ण २ शनिवार घ० ५६ प० २३। अं० ता० १२ जुलाई। बंगला ता० २८ आषाढ़। फारसी ता० १५ सफर। फसली ता० २। उत्तरा न० घ० ३ प० २१। दिनमान घ० ३३ प० ४२। सूर्योदय घं० ५ मि० १६। सूर्यास्त घं० ६ मि० ४४। चन्द्रराशि मकर है। आज अशून्यशयन ब्रत है। त्रिपुष्करयोग घ० ३ प० २१ तक है। स० सि० योग घ० ३ प० २१ के बादसे है। यात्रा शुभ नहीं है।

श्रावणकृष्ण ३ रविवार घ० ६० प० ०। अं० ता० १३ जुलाई। बंगला ता० २९ आषाढ़। फारसी ता० १६ सफर। फसली ता० ३। श्रवण न० घ० ९ प० ५५। दिनमान घ० ३३ प० ४०। सूर्योदय घं० ५ मि० १६। सूर्यास्त घं० ६ मि० ४४। चन्द्रराशि मकर, बाद कुंभ घ० ४३ प० ११ पर पर होगी। आज भद्रा घ० २९ प० ५ (दिनमें घं० ४ मि० ५७) के बाद लगेगी। पूर्व-दक्षिण यात्रामुहूर्त सिंह लग्नमें ६ चन्द्रके दानसे शुभ है। पापी ज्यमदयोग घ० ३ प० ५५ के बादसे है।

श्रावणकृष्ण ३ सोमवार घ० १ प० ३७। अंग्रेजी ता० १४ जुलाई। बंगला ता० ३० आषाढ़। फारसी ता० १७ सफर। फसली ता० ४। धनिष्ठा न० घ० १६ प० २८। दिनमान घ० ३३ प० ३८। सूर्योदय घं ५ मि० १६ सूर्यास्त घं० ६ मि० ४४। चन्द्रराशि कुंभ है। आज भद्रा घ० १ प० ३७ (दिनमें घं० ५ मि० ५५) तक रहेगी। पुनर्वसु ४ चन्द्र कर्क राशिमें घ० ७ प० ४६ पर होगा। संकष्टी गणेश ४ व्रतम्। चन्द्रोदय घं० ९ मि० २६ पर होगा। सोमवार व्रत। सायंकालमें उमा महेश्वर पूजन। पश्चिम यात्रा मुहूर्त। सिंह लग्नमें रिक्तातिथिके दानसे शुभ है।

श्रावणकृष्ण ४ मंगलवार घ० ६ प० २७। अंग्रेजी ता० १५ जुलाई। बंगला ता० ३१ आषाढ़। फारसी ता० १८ सफर। फसली ता० ५। श० न० घ० २२ प० ४१। दिनमान घ० ३३ प० ३७। सूर्योदय घं ५ मि० १७ सूर्यास्त घं० ६ मि० ४३ चन्द्रराशि कुम्भ है। आज मासान्त है। भौमचतुर्थी। गौरीपूजनं। दुर्गायात्रा मृत्युयोग घ० २२ प० ४१ यावत्। यात्रा शुभ नहीं है।

श्रावणकृष्ण ५ बुधवार घ० १० प० ३॥। अंग्रेजी ता० १६ जुलाई। बंगला ता० ३२ आषाढ़। फारसी ता० १९ सफर। फसली ता० ६ पू० न० घ० २८ प० १३। दिनमान घ० ३३ प० ३५। सूर्योदय घं० ५ मि० १७ सूर्यास्त घं० ६ मि० ४३। चन्द्रराशि कुंभ। बाद मीन घ० ११ प० ५० पर होगी। आज कर्क संक्रान्ति घ० २४ प० ५९। (दिनमें घं० ३ मि० ७ पर होगी।) मु० ३० फलमसमता संक्रान्तिका पुण्यकाल सूर्योदयसे लेकर मध्यान्हके घं० ३ मि० १७ तक रहेगा। यात्रा शुभ नहीं है।

श्रावणकृष्ण ६ गुरुवार घ० १३ प० ५५। अंग्रेजी ता० १७ जुलाई। बंगला ता० १ श्रावण। फारसी ता० २० सफर। फसली ता० ७। उ० न० घ० ३२ प० ४८। दिनमान घ० ३३ प० ३३। सूर्योदय घं० ५ मि० १७ सूर्यास्त घं० ६ मि० ४३। चन्द्रराशि मीन है। आज भ० घ० १३ प० ५५। (दिनमें घं० १० मि० ५१ के बादसे घ० ४४ प० ४९। रात्रि में घं० ११ मि० १७ तक रहेगी।) बंगला श्रावण। मास दग्ध मास शून्य ९। यायी जयप्रद योग घ० १३ प० ५५ के बादसे घ० ३२ प० ४८ तक रहेगा। रवियोग घ० ३२ प० ४८ तक रहेगा।

श्रावण कृष्ण ७ शुक्रवार घ० १६ प० ४। अं० ता० १८ जुलाई। बंगला ता० २ श्रावण। फारसी ता० २१ सफर। फसली ता० ८। रेवती न० घ० ३६ प० १८। दिनमान घ० ३३ प० २१। सूर्योदय घं० ५ मि० १८। सूर्यास्त घं० ६ मि० ४१। चन्द्रराशि मीन, बाद मेष घ० ३६ प० १८ पर होगी। भैरवाष्टमी। मन्वादिः ८। स० सि० योग अ० सि० योग घ० ३६ प० १८ यावत्।

श्रावणकृष्ण ८ शनिवार घ० १६ प० ५८। अंग्रेजी ता० १९ जुलाई। बंगला ता० ३ श्रावण। फारसी ता० २२ सफर। फसली ता० ९। अश्विनी न० घ० ३८ प० २८। दिनमान घ० ३३ प० ३० सूर्योदय घं० ५ मि० १८। सूर्यास्त घं० ६ मि० ४२। चन्द्रराशि मेष है। आज पुष्य नक्षत्रमें सूर्य घ० ५६ प० ४७ पर होगा। शीतलादर्शनम् ८।

श्रावण कृष्ण ९ रविवार घ० १६ प० २४। अंग्रेजी ता० २० जुलाई। बंगला ता० ४ श्रावण। फारसी ता० २३ सफर। फसली ता० १०। भरणी न० घ० ३९ प० २४। दिनमान घ० ३३ प० २८। सूर्योदय घं० ५ मि० १९। सूर्यास्त घं० ६ मि० ४१। चन्द्रराशि मेष, बाद वृष घ० ६४ प० २० पर होगी। आज भद्रा घ० ४५ प० ४५ (रात्रिमें घं० ११ मि० ३१) उपरान्त लगेगी। यायी (मुद्दई) को जय देनेवाला योग घ० १६ प० २४ तक रहेगा। यात्रा शुभ नहीं है।

श्रावण कृष्ण १० सोमवार घ० १४ प० ५७। अंग्रेजी ता० २१ जुलाई। बंगला ता० ५ श्रावण। फारसी ता० २४ सफर। फसली ता० ११। कृत्तिका न० घ० ३१ प० ९। दिनमान घ० ३३ प० २५। सूर्योदय घं० ५ मि० १९। सूर्यास्त घं० ६ मि० ४१। चन्द्रराशि वृष है। आज भद्रा घ० १४ प० ५७ (दिनमें घं० ११ मि० १८) तक रहेगी। सोमवार व्रतम्। सायंकालमें उमा-महेश्वरपूजन करना चाहिये। यात्रा शुभ नहीं है।

श्रावण कृष्ण ११ मंगलवार घ० १२ प० ७। अंग्रेजी ता० २२ जुलाई। बंगला ता० ६ श्रावण। फारसी ता० २५ सफर। फसली ता० १२। रोहिणी न० घ० ३७ प० ४५। दिनमान घ० ३३ प० २३। सूर्योदय घं० ५ मि० १९। सूर्यास्त घं० ६ मि० ४१। चन्द्रराशि वृष है। आज कामदा ११ व्रतम् सर्वेषाम्। गौरीपूजनम् दुर्गायात्रा। यात्रा शुभ नहीं है।

श्रावण कृष्ण १२ बुधवार घ० ८ प० १६। अंग्रेजी ता० २३ जुलाई। बंगला ता० ७ श्रावण। फारसी ता० २६ सफर। फसली ता० १३। मृगशिरा न० घ० ३५ प० ३५। दिनमान घ० ३२ प० २१। सूर्योदय घं० ५ मि० २०। सूर्यास्त घ० ६ मि० ४०। चन्द्रराशि वृष, बाद मिथुन घ० ६ प० ४० चन्द्रराशि वृष, बाद मिथुन घ० ६ प० ४० के बाद होगी। प्रदोष १२ व्रतम्। सं० सि० योग घ० ३५ प० ३५ तक रहेगा। यात्रा शुभ नहीं है।

श्रावणकृष्ण १३ गुरुवार घ० ३/५४ प० ४/४१। अंग्रेजी ता० २४ जुलाई। बंगला ता० ८ श्रावण। फारसी ता० २७ सफर। फसली ता० १४। आ० न० घ० ३२ प० ३२। दिनमान घ० ३१ प० १९। सूर्योदय घं० ५ मि० २० सूर्यास्त घं० ६ मि० ४०। चन्द्रराशि मिथुन है। आज भद्रा घ० ३ प० ४०। (दिनमें घं० ६ मि० ४८ के बादसे घ० ३१ प० १। सायंकालमें घं० ५ मि० ४४ तक रहेगी।) मास शिवरात्री व्रतम् १४। कल्पभेदेन कलियुगोत्पत्तिः १३। यात्रा शुभ नहीं है।

श्रावणकृष्ण ३० शुक्रवार घ० ५२ प० ३३। अंग्रेजी ता० २५ जुलाई। बंगला ता० ९ श्रावण। फारसी ता० २८ सफर। फसली ता० १५। पुं० न० घ० २८ प० ५६। दिनमान घ० ३३ प० १७। सूर्योदय घं० ५ मि० २१ सूर्यास्त घं० ६ मि० ३९। चन्द्रराशि मिथुन। बाद कर्क घ० १४ प० ५० के बाद होगी। सायन सिंह संक्रान्तिः घ० २४ प० ३४ पर होगी। दर्शश्राद्धम् ३०। दीपपूजनम् ३०। स० सि० यो० घ० २८ प० ५६ यावत। यात्रा शुभ नहीं है।

श्रावणशुक्र १ शनिवार घ० ४६ प० २५। अंग्रेजी ता० २६ जुलाई। बंगला ता० १० श्रावण। फारसी ता० २९ सफर। फसली ता० १६। पु० न० घ० २४ प० ५६। दिनमान घ० ३३ प० १५। सूर्योदय घं० ५ मि० २१ सूर्यास्त घं० ६ मि० ३६। चन्द्रराशि कर्क, है। आजसे एक भुक्त व्रतका आरंभ होता है। विष्णु शिवादिकोंके अभिषेकका आरंभ। यात्रा शुभ नहीं।

श्रावणशुक्र २ रविवार घ० ४० प० १३। अंग्रेजी ता० २७ जुलाई। बंगला ता० ११ श्रावण। फारसी ता० ३० सफर। फसली ता० १७। श्लेो० न० घ० २० प० ४५। दिनमान घ० ३३ प० १२। सूर्योदय घं० ५ मि० २२ सूर्यास्त घं० ६ मि० ३८। चन्द्रराशि कर्क। बाद सिंह घ० २० प० ४५ पर होगा। आज चन्द्रदर्शनं मु० ३० कर्क समता। यात्रा शुभ नहीं।

श्रावणशुक्ल ३ सोमवार घ० २४ प० ६। अंग्रेजी ता० २८ जुलाई। बंगला ता० १२ श्रावण। फारसी ता० १ रविउल्लऔव्वल। फसली ता० १८। म० न० घ० १६ प० ३६। दिनमान घ० ३३ प० १०। सूर्योदय घं० ५ मि० ० सूर्यास्त घं० ६ मि० ३८। चन्द्रराशि सिंह है। आज फारसी महीना रविउल्ल-औव्वल ३ आरंभ हुआ। बुधका उदय पश्चिममें घ० ११ प० ४८ पर होगा। मधुश्रवा ३। स्वर्णगौरी व्रतम् ३। सुकुल व्रतं ३। कच्छप जयन्ती ३। सोमवार व्रत सायंकालमें उमामहेश्वर पूजन। यात्रा शुभ नहीं है।

श्रावणशुक्ल ४ मंगलवार घ० २८ प० १७। अंग्रेजी ता० २९ जुलाई। बंगला ता० १३ श्रावण। फारसी ता० २ रविउल्लऔव्वल। फसली ता० १९। पू० न० घ० १२ प० ४४। दिनमान घ० ३३ प० ७। सूर्योदय घं० ५ मि० २३। सूर्यास्त घं० ६ मि० ३७। चन्द्रराशि सिंह बाद कन्या घ० २६ प० ५१ पर होगा। आज भद्रा घ० १ प० ११। (दिनमें घं० ५ मि० ५१ के बादसे घ० २८ प० १७। रात्रिमें घं० ४ मि० ४२ तक रहेगी।) अंगारकी विनायकी गणेश ४ व्रतम्। स्थायी (मुद्दालेह) को कार्यार्ह यो० घ० १२ प० ४४ यावत्। और रवियोग घ० १२ प० ४४ तक है। यात्रा शुभ नहीं है।

श्रावणशुक्ल ५ बुधवार घ० २२ प० ५६। अंग्रेजी ता० ३० जुलाई। बंगला ता० १४ श्रावण। फारसी ता० ३ रविउल्लऔव्वल। फसली ता० २०। उ० न० घ० ९ प० १२। दिनमान घ० ३३ प० ५। सूर्योदय घं० ५ मि० २३ सूर्यास्त घं० ६ मि० ३७। चन्द्रराशि कन्या है। आज मघा १ च० सिंह राशिमें बुध घ० २८ प० ५ पर होगा। नागपञ्चमीपर नागकूप यात्रा ५। वराहावतारः ६। कल्कीअवतार ६। पू. या, मु. सिंह लग्नमें शुभ है।

श्रावणशुक्ल ६ गुरुवार घ० १८ प० १६। अंग्रेजी ता० ३१ जुलाई। बंगला ता० १५ श्रावण। फारसी ता० ४ रविउल्लऔव्वल। फसली ता० २१। ह० न० घ० ६ प० २१। दिनमान घ० ३३ प० २। सूर्योदय घं० ५ मि० २४ सूर्यास्त घं० ६ मि० ३६। चन्द्रराशि कन्या। बाद तुला घ० ३५ प० २१ पर होगी। आज रवियोग घ० ६ प० २१ यावत्। गृहारंभ मु० मिथुन लग्नमें १२ मंगलके दानसे शुभ है। यात्रा शुभ नहीं है।

श्रावणशुक्ल ७ शुक्रवार घ० १४ प० २९। अंग्रेजी ता० १ अगस्त। बंगला ता० १६ श्रावण। फारसी ता० ५ रविउल्लऔव्वल। फसली ता० २२।

चित्रा न० घ० ४ प० २१। दिनमान घ० ३३ प० ०। सूर्योदय घं० ५ मि० २४। सूर्यास्त घं० ६ मि० ३६। चन्द्रराशि तुला है। आज घ० १४ प० २९ (दिनमें घं० ११ मि० १२) के बादसे घ० ४३ प० ३ (रात्रिमें घं० १० मि० ३७) तक भद्रा रहेगी। अं० म० अगस्त ८ शुरू हुआ। अन्नपूर्णाष्टमी। यात्रा शुभ नहीं है।

श्रावणशुक्ल ८ शनिवार घ० ११ प० ३८। अंग्रेजी ता० २ अगस्त। बंगला ता० १७ श्रावण। फारसी ता० ६ रबिउलऔवल। फसली ता० २३। स्वाती न० घ० ३ प० १३। दिनमान घ० ३२ प० ५७। सूर्योदय घं० ५ मि० २५। सूर्यास्त घं० ६ मि० ३५। चन्द्रराशि तुला, बाद वृश्चिक घ० ४८ प० १४ पर होगी। आज आश्लेषा नक्षत्रमें सूर्य घ० ५६ प० ४८ पर प्रवेश करेंगे। स० सि० योग घ० ३ प० १३ तक है। यात्रा शुभ नहीं है।

श्रावणशुक्ल ९ रविवार घ० १० प० ०। अंग्रेजी ता० ३ अगस्त। बंगला ता० १८ श्रावण। फारसी ता० ७ रबिउलऔवल। फसली ता० २४। विशाखा न० घ० ३ प० १५। दिनमान घ० ३२ प० ५४। सूर्योदय घं० ५ मि० २५। सूर्यास्त घं० ६ मि० ३५। चन्द्रराशि वृश्चिक है। आज उ. फ. १ चन्द्र कन्याराशिमें शुक्र घ० ९ प० २७ पर होगा। यायी जययोग घ० ३ प० १५ तक है। उ. या. शु. सिंह लग्नमें शुभ है।

श्रावणशुक्ल १० सोमवार घ० ९ प० ३५। अंग्रेजी ता० ४ अगस्त। बंगला ता० १९ श्रावण। फारसी ता० ८ रबिउलऔवल। फसली ता० २५। अनु० न० घ० ४ प० २६। दिनमान घ० ३२ प० ५१। सूर्योदय घं० ५ मि० २६ सूर्यास्त घं० ६ मि० ३४। चन्द्रराशि वृश्चिक है। आज भद्रा घ० ४० प० ० (रात्रीमें घं० ९ मि० २६ पर लगेगी।) सोमवार व्रत सायंकालमें उमामहेश्वर पूजन। मासदग्ध तिथि १०। रवियोग घ० ६० यावत्। स० सि० यो० घ० ४ प० २६ तक है। यात्रा शुभ नहीं है।

श्रावणशुक्ल ११ मंगलवार घ० १० प० २६। अंग्रेजी ता० ५ अगस्त। बंगला ता० २० श्रावण। फारसी ता० ९ रबिउलऔवल। फसली ता० २६। ज्ये० न० घ० ६ प० ५७। दिनमान घ० ३२ प० ४८। सूर्योदय घं० ५ मि० २६ सूर्यास्त घं० ६ मि० ६४। चन्द्रराशि वृश्चिक। बाद धन घ० ६ प० ५७ पर होगी। आज घ० १० प० २६। (दिनमें घं० ९ मि० ३६ तक भद्रा है।

पुत्रदा ११ व्रतं सर्वेषां। विष्णु भगवानको पवित्रारोपण १२। यात्रा शुभ नहीं है।

श्रावण १२ बुधवार घ० १२ प० ३६। अंग्रेजी ता० ६ अगस्त। बंगला ता० २१ श्रावण। फारसी ता० १० रविउल्लऔव्वल। फसली ता० २७। मू० न० घ० १० प० ४२। दिनमान घ० ३२ प० ४८। सूर्योदय घं० ५ मि० २७ सूर्यास्त घं० ६ मि० ३३। चन्द्रराशि धन है। आज प्रदोष १२ व्रत है। दधिव्रतारंभ १२। शाकव्रत त्याग १२। विष्णु प्रतिमादानं १२। (बारह वफात) यात्रा शुभ नहीं है।

श्रावण शुक्ल १३ गुरुवार घ० १६ प० ४३। अंग्रेजी ता० ७ अगस्त। बंगला ता० २२ श्रावण। फारसी ता० ११ रविउलऔवल। फसली ता० २८। पूर्वा न० घ० १५ प० ३३। दिनमान घ० ३२ प० ४२। सूर्योदय घं० ५ २७। सूर्यास्त घं० ६ मि० ३३। चन्द्रराशि धन। बाद मकर घ० ३१ प० ५८ पर होगी। आज शिवपवित्रारोपणं १४। यात्रा शुभ नहीं है।

श्रावणशुक्ल १४ शुक्रवार घ० २० प० ४। अंग्रेजी ता० ८ अगस्त। बंगला ता० २३ श्रावण। फारसी ता० १२ रविउलऔवल। फसली ता० २९। उत्तरा न० घ० २७ प० १६। दिनमान घ० ३२ प० ४। सूर्योदय घं० ५ मि० २८। सूर्यास्त घं० ६ मि० ३२। चन्द्रराशि मकर है। आज घ० २० प० ४ (दिनमें घं० १ मि० २९ के उपरान्तसे) घ० ५२ प० ३० (रात्रिमें घं० २ मि० २८ तक भद्रा है।) हयग्रीवोत्पत्तिः १४। रवियोग घ० २१ प० १५ तक है। यात्रा शुभ नहीं।

श्रावण शुक्ल १५ शनिवार घ० २४ प० ४६। अंग्रेजी ता० ९ अगस्त। बंगला ता० २४ श्रावण। फारसी ता० १३ रविउलऔवल। फसली ता० ३। श्रवण न० घ० २७ प० ३५। दिनमान घ० ३२ प० ३७। सूर्योदय घं० ५ मि० २९। सूर्यास्त घं० ६ मि० ३१। चन्द्रराशि मकर है। आज रक्षाबन्धन १५। श्रावणीकर्म १५ सर्वेषां। स० सि० योग घ० २७ प० ३५ यावत्। यात्रा शुभ नहीं है।

श्रावणकृष्ण ३ रवौ मिश्रमानं ४७।४६ दिनमानं ३३।४०

सू	मं.	बु	गु.	शु.	श.	रा.	के
२	१	२	२	४	८	०	६
२७	५	२९	११	६	१२	७	७
३०	०	२२	२६	४६	२४	४८	४८
१२	४७	४१	१	४३	२८	४५	५९
५६	४२	१११	१४	६८	[illegible]	३	३
५२	०	०	१	५१	व.	११	११
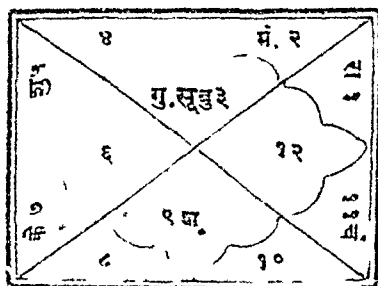
श्रावणकृष्ण ६ रवौ मिश्रमानं ४७।२८ दिनमानं ३३।२८

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के
३	१	३	२	४	८	०	६
४	९	१२	१३	१४	१२	७	७
८	५३	२७	२	४६	२	२६	२६
४३	१६	४४	३	७	१६	४०	४०
५६	४१	१११	१३	२८	[illegible]	३	३
५७	१३	०	११	१२	व.	११	११
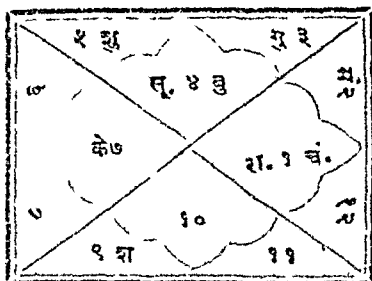
श्रावण शुक्ल २ रवौ मिश्रमानं ४७।१८ दिनमानं ३३।१२

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	१	३	२	४	८	०	६
१०	१४	२५	१४	२२	११	४	७
४७	४२	१२	३७	४८	३४	७	म
५२	३७	४४	२१	५५	४७	२५	२५
५७	४०	१०७	१३	६८	[illegible]	३	३
४	५०	१२	११	१३	व	११	११

श्रावणशुक्ल ६ रवौ मिश्रमानं घ. ४७ प. १८ दिनमान घ. ३३ प. १२

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	१	४	२	५	८	०	६
१७	१९	७	१६	१२	११	६	६
२८	२७	१२	९	४१	१७	४२	४२
८	४०	३९	१६	५५	४३	१०	१०
५७	४०	१००	१३	६७	४	३	३
१३	२४	१७	११	१	व	१३	११
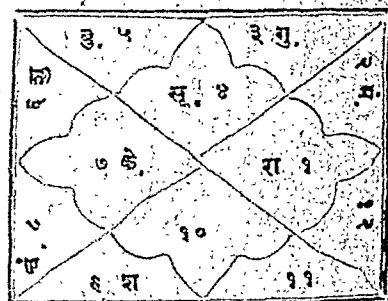
श्रावणमास गोचरफलम् ।

यह मास मेष कन्या वृष, मिथुन राशिवालोंको शुभ ही रहेगा, किन्तु कुटुम्बियोंमें झगड़ा होनेसे नुकसान होगा । धनका खर्च अधिक रहेगा । कारोबारमें मध्यम रहेगा और तरहसे अच्छा ही रहेगा । २० दिन पहलेके अच्छे रहेंगे । तुला वृश्चिक धन कुम्भ मकर सिंह राशिवालोंको साधारण ही रहेगा, रोजगारमें फायदा रहेगा, किन्तु शरीरमें तकलीफ बनी रहेगी । दिमागी चक्कर आने लगेगा । नेत्रमें पीड़ा रहेगी, आलस्य बना रहेगा, दिलमें फिकर लगी रहेगी २१ दिन प्रायः अच्छे रहेंगे । बाकीके खराब ही बीतेंगे । अन्य राशिवालोंको मध्यम है ।

श्रावण मास फलम् ।

श्रावण मासमें पहले पक्षमें कुछ वर्षाका योग मध्यम है, किन्तु वर्षा कहीं २ होगी । जिससे किसी जगह बाढ़ आकर बहुत नुकसान पहुंचावेगी । आषाढ़की वर्षासे अन्न सूखे दिखाई देंगे परन्तु श्रावण वृष्टिसे हरे हो जायगे और अन्न घासका भाव शुक्ल पक्षमें मन्दा होजायगा । पशुओंको तथा मनुष्योंको इस मासमें कष्ट अधिक होगा । देशान्तरोंमें हैजेका प्रकोप बढ़ेगा । तांबा जस्ता पीतल रांगाका भाव तेज होकर सम हो जायगा, तिथी १ से १२।१२ तक बादल बिजुली खूब गर्जना रहकर वर्षा होगी, फिर शुक्ल १२ से २३ तक कुछ वर्षाका योग पड़ता है, खण्ड वर्षा होगी ।

इस महीनेमें दक्षिणायन सूर्य उत्तरगोल और वर्षाऋतु रहेगी। अंग्रेजी महीना ८ अगस्त ता० ३१ आ० शु० ६ सो० तक रहेगा, बाद म० ६ सप्टेम्बर ता० ३० सन् १९३० ई० होगा।

भाद्रपदकृष्ण १ रविवार घ० २९ प० ५९। अंग्रेजी ता० १० अगस्त। बंगला ता० २५ श्रावण। फारसी ता० १४ रविउल्लऔव्वल। फसली ता० १। घ० न० घ० ३४ प० ७। दिनमान घ० ३२ प० ३४। सूर्योदय घं० ५ मि० २९ सूर्यास्त घं० ६ मि० ३१। चन्द्रराशि मकर। बाद कुम्भ घ० ० प० ५१ पर होगी। आज अशून्यशयनव्रतम्। २ चन्द्रोदये घं० ७ मि० २८। भाद्रपद मासमें दही त्याग करना। यायीजयप्रदयोग घ० ३० यावत्। यात्रा शुभ नहीं है।

भाद्रपदकृष्ण २ सोमवार घ० ३४ प० ५५। अंग्रेजी ता० ११ अगस्त। बंगला ता० २६ श्रावण। फारसी ता० १५ रविउल्लऔव्वल। फसली ता० २। श० न० घ० ४० प० २७। दिनमान् घ० ३२ प० ३१। सूर्योदय घं० ५ मि० ३०। सूर्यास्त घं० ६ मि० ३०। चन्द्रराशि कुम्भ। आज भीमचण्डी जन्म २। विन्ध्याचल जयन्ती २। मासशून्य ति० २। यात्रा शुभ नहीं है।

भाद्रपदकृष्ण ३ मंगलवार घ० ३६ प० १२। अंग्रेजी ता० १२ अगस्त। बंगला ता० २७ श्रावण। फारसी ता १६ रविउल्लऔव्वल। फसली ता० ३। पू० न० घ० ४६ प० ८। दिनमान घ० ३२ प० २८। सूर्योदय घं० ५ मि० ३० सूर्यास्त घं० ६ मि० ३०। चन्द्रराशि कुम्भ। बाद मीन घ० २९ प० ४२ पर होगी। आज भद्रा घ० ७ प० ३। (दिनमें घं० ८ मि० १९ के बादसे घ० ३६ प० १२। रात्रीमें घं० ९ मि० ११ तक रहेगी।) विशालाक्षी यात्रा ३। कजली ३। मासशून्य ति० ३।

भाद्रपदकृष्ण ४ बुधवार घ० ४२ प० ३८। अंग्रेजी ता० १३ अगस्त। बंगला ता० २८ श्रावण। फारसी ता० १७ रविउल्लऔव्वल। फसली ता० ४। उ० न० घ० ५० प० ५५। दिनमान घ० ३२ प० २५। सूर्योदय घं० ५ मि० ३१ सूर्यास्त घं० ६ मि० २९। चन्द्रराशि मीन है। आज संकष्टी बहुला गणेश ४। चन्द्रोदय घं० ८ मि० ५६। यात्रा शुभ नहीं है।

भाद्रपदकृष्ण ५ गुरुवार घ० ४४ प० ४२। अंग्रेजी ता० १४ अगस्त। बंगला ता० २९ श्रावण। फारसी ता० १८ रविउल्लऔव्वल। फसली ता० ५। रे० न० घ० ५४ प० ४२। दिनमान घ० ३२ प० २२। सूर्योदय घं० ५ मि०

२१। सूर्यास्त घं० ६ मि० २८। चन्द्रराशि मीन। बाद मेष घ० ५४ प० ४२ पर होगी। यायीजयद्योग: घ० ४४ प० ५२ तक रहेगा। स० सि० यो० घ० ५९ प० ४२ यावत्। य० उ० यात्रा मु० सिंह लग्नमें ८। चन्द्र दानसे शुभ है।

भाद्रपदकृष्ण ६ शुक्रवार घ० ४५ प० ४५। अंग्रेजी ता० १५ अगस्त। बंगला ता० ३० श्रावण। फारसी ता० १९ रबिउलौव्वल। फसली ता० ६। ०० न० घ० ५७ प० ११। दिनमान घ० ३२ प० १९। सूर्योदय घं० ५ मि० ३२ सूर्यास्त घं० ६ मि० २८। चन्द्रराशि मेष है। आज भद्रा घ० ४५ प० ५२। (रात्रीमें घं० ११ मि० ५४ के बादसे लगेगी।) चन्द्रषष्ठी व्रतम्। हलषष्ठी। हरदेवजयन्ती। ललई छठ। रवियोग: सर्वार्थसिद्धियोग घ० ५७ प० ११ तक रहेगा। यात्रा शुभ नहीं है।

भाद्रपदकृष्ण ७ शनिवार घ० ४५ प० ३८। अंग्रेजी ता० १६ अगस्त। बंगला ता० ३१ श्रावण। फारसी ता० २० रबिउलऔव्वल। फसली ता० ७। भरणी न० घ० ५८ प० २२। दिनमान घ० ३२ प० १९। सूर्योदय घं० ५ मि० ३३। सूर्यास्त घं० ६ मि० २७। चन्द्रराशि मेष है। आज भद्रा घ० १५ प० ४१ (दिनमें घं० ११ मि० ५१) तक रहेगी। मघा १ घ० सिंह राशिमें सूर्य घ० ५४ प० १२ पर प्रवेश करेंगे। शीतला व्रतम् ७। श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी व्रतम् स्मार्तानाम्। यायी जयद्योग: घ० ४५ प० ३८ यावत् है। यात्रा शुभ नहीं है।

भाद्रपदकृष्ण ८ रविवार घ० ४४ प० ७। अंग्रेजी ता० १७ अगस्त। बंगला ता० १ भाद्रपद। फारसी ता० १ रबिउलऔवल। फसली ता० ८। कृत्तिका न० घ० ५८ प० २२। दिनमान घ० ३८ प० १३। सूर्योदय घं० ५ मि० ३३। सूर्यास्त घं० ६ मि० २७। चन्द्रराशि मेष, बाद वृष घ० १३ प० २२ के उपरान्त होगी। आजसे बंगला भाद्रपद शुरू हुआ। सिंह संक्रान्तिका पुण्यकाल घं० १२ तक है। श्रीकृष्णजन्माष्टमी व्रतम् वैष्णवा-नाम्। घं. उ. स्टें. टा. घं० ११ मि० ७। भैरवाष्टमी। शीतलादर्शनम् ८। यात्रा शुभ नहीं।

भाद्रपदकृष्ण ९ सोमवार घ० ४१ प० २५। अंग्रेजी ता० १८ अगस्त। बंगला ता० २ भाद्रपद। फारसी ता० २२ रबिउलऔवल। फसली ता० ९।

रोहिणी न० घ० ५७ प० १३ । दिनमान घ० ३२ प० १० । सूर्योदय घं० ५ मि० ३४ । सूर्यास्त घं० ६ मि० २६ । चन्द्रराशि वृष है । आज राधावल्लभ सम्प्रदायियोंको रोहिणी व्रत है । स० सि० यो० घ० ६० यावत् । यायी जयद मुहूर्त घं० ४१ प० १३ तक है । यात्रा शुभ है ।

भाद्रपदकृष्ण १० मंगलवार घ० ३७ प० ४३ । अं० ता० १९ अगस्त । बंगला ता० ३ भाद्रपद । फारसी ता० २३ रविउलऔवल । फसली ता० १० । मृगशिरा न० घ० ५५ प० १२ । दिनमान घ० ३२ प० ६ । सूर्योदय घं० ५ मि० २५ । सूर्यास्त घं० ६ मि० २४ । चन्द्रराशि वृष, बाद मिथुन घ० २६ प० १३ के बाद होगी । आज भद्रा घ० ९ प० ३४ (दिनमें घं० ९ मि० २४ के बादसे) घ० ३७ प० ४३ (रात्रिमें घं० ८ मि० ४०) तक रहेगी मृगशिरा ३ चन्द्र । मिथुन राशिमें मंगल घ० ४६ प० १४ पर होंगे । कन्या राशिमें बुध घ० २५ प० ४१ पर होंगे । मासदग्ध तिथी १० । यात्रा शुभ नहीं ।

भाद्रपदकृष्ण ११ बुधवार घ० ३३ प० ८ । अं० ता० २० अगस्त । बंगला ता० ४ भाद्रपद । फारसी ता० २४ रविउलऔवल । फसली ता० ११ । आर्द्रा न० घ० ५२ प० २१ । दिनमान घ० ३२ प० ३ । सूर्योदय घं० ५ मि० २५ । सूर्यास्त घं० ६ मि० २५ । चन्द्रराशि मिथुन है । आज जया ११ व्रतं सर्वेषां । यात्रा शुभ नहीं ।

भाद्रपदकृष्ण १२ गुरुवार घ० २७ प० ५५ । अं० ता० २१ अगस्त । बंगला ता० ५ भाद्रपद । फारसी ता० २५ रविउलऔवल । फसली ता० १२ । पुनर्वसु न० घ० ४८ प० ४९ । दिनमान घ० ३२ प० ० । सूर्योदय घं० ५ मि० २६ । सूर्यास्त घं० ६ मि० २४ । चन्द्रराशि मिथुन, बाद कर्क घ० ३४ प० ४२ पर होगी । आज प्रदोष १३ व्रत है और स० सि० योग घ० ६० यावत् । यात्रा शुभ नहीं है ।

भाद्रपदकृष्ण १३ शुक्रवार घ० २२ प० ६ । अंग्रेजी ता० २२ अगस्त । बंगला ता० ६ भाद्रपद । फारसी ता० २६ रविउलऔवल । फसली ता० १३ । पु० न० घ० ४४ प० ५४ । दिनमान घ० ३१ प० ५७ । सूर्योदय घं० ५ मि० २७ सूर्यास्त घं० ६ मि० २३ । चन्द्रराशि कर्क है । आज घ० २२ प० ६

(दिनमें घं० २ मि० २८ के बादसे घ० ४९ प० ६। रात्रीमें घं० १ मि० १५ तक भद्रा रहेगी।) मास शिवरात्री व्रतम्। कलियुगोत्पत्तिः १२। यात्रा शुभ नहीं।

भाद्रपदकृष्ण १४ शनिवार घ० १६ प० २। अंग्रेजी ता० २३ अगस्त। बंगला ता० ७ भाद्रपद। फारसी ता० २७ रबिउल्लऔव्वल। फसली ता० १४। श्ले० न० घ० ४० प० ४४। दिनमान घ० ३१ प० २२। सूर्योदय घं० ५ मि० ३७ सूर्यास्त घं० ६ मि० मि० २३। चन्द्रराशि कर्क। बाद सिंह घ० ४० प० ४४ पर होगी। आज दर्शश्राद्ध ३०। सिनीवाली ३० मध्यान्हमें धर्मेश्वर पूजन ३०। यात्रा शुभ नहीं है।

भाद्रपदकृष्ण ३० रविवार घ० ९, प० ५०। अंग्रेजी ता० २४ अगस्त। बंगला ता० ८ भाद्रपद। फारसी ता० २८ रबिउल्लऔव्वल। फसली ता० १५। म० न० घ० ३६ प० २२। दिनमान घ० ३१ प० २०। सूर्योदय घं० ५ मि० २८। सूर्यास्त घं० ६ मि० २२। चन्द्रराशि सिंह है। आज कुहू ३०। पंचपोखरी स्नान, कुशोत्पाटन ३०। यमदंडयोग घ० ३६ प० २२ यावत्। यात्रा शुभ नहीं है।

भाद्रपदशुक्ल १ सोमवार घ० ०४ प० ४६। अंग्रेजी ता० २५ अगस्त। बंगला ता० ९ भाद्रपद। फारसी ता० २९ रबिउल्लऔव्वल। फसली ता० १६ पू० न० घ० ३२ प० ३१। दिनमान घ० ३१ प० ४६। सूर्योदय घं० ५ मि० ३९ सूर्यास्त घं० ६ मि० २१। चन्द्रराशि सिंह। बाद कन्या घ० ४६ प० ३९ पर होगी। आज चन्द्रदर्शन होगा। मु० ३० फ० समता और सायन कन्या संक्रान्ति घ० ४६ प० १ के उपरांत होगी। अगस्त्योदय घ० २० प० ३० पर होगा। कल्पभेदेन बलरामावतारः। यात्रा शुभ नहीं है।

भाद्रपदशुक्ल ३ मंगलवार घ० ५२ प० ४२। अंग्रेजी ता० २६ अगस्त। बंगला ता० १० भाद्रपद। फारसी ता० १ रबिउल्लसानी। फसली ता० १७। उ० न० घ० २८ प० ५५। दिनमान घ० ३१ प० ४३। सूर्योदय घं० ५ मि० ३८ सूर्यास्त घं० ६ मि० २१। चन्द्रराशि कन्या है। आजसे फारसी महीना ४ रबिउल्लसानी आरंभ हुआ। मन्वादि ३। और हरितालिका व्रत है। राजगौरी। मंगलागौरी। वाराहजयन्ती। अन्नगुडापूपपायसदानं महाफलदं। यात्रा शुभ नहीं।

भाद्रपदशुक्ल ४ बुधवार घ० ४८ प० १। अंग्रेजी ता० २७ अगस्त। बंगला ता० ११ भाद्रपद। फारसी ता० २ रबिउलसानी। फसली ता० १८। ह० न० घ० २५ प० ५२। दिनमान घ० ३१ प० ४०। सूर्योदय घं० ५ मि० ४० सूर्यास्त घं० ६ मि० २०। चन्द्रराशि कन्या। बाद घ० ५४ प० ४६ पर तुला होगी। आज भद्रा घ० २० प० २१। (दिनमें घं० १ मि० १ मि० ४८ के बादसे घ० ४८ प० १। रात्रीमें घं० १२ मि० तक रहेगी।) ह० नक्षत्रमें सामवेदियोंका श्रावणी कर्म। सिद्धिविनायक गणेश ४ व्रतम्। कपर्दीश्वर व्रतम्। स० सि० यो० घ० २५ प० २ यावत्। यात्रा शुभ नहीं है।

भाद्रपदशुक्ल ५ गुरुवार घ० ४४ प० १२। अंग्रेजी ता० २८ अगस्त। बंगला ता० १२ भाद्रपद। फारसी ता० ३ रबिउलसानी। फसली ता० १९। चि० न० घ० २३ प० ४०। दिनमान घ० ३१ प० ३६। सूर्योदय घं० ५ मि० ४१ सूर्यास्त घं० ६ मि० १९। चन्द्रराशि तुला है। आज ऋषिपञ्चमी नीवाशादि धान्य आहाराः। यात्रा शुभ नहीं है।

भाद्रपदशुक्ल ६ शुक्रवार घ० ४१ प० २२। अंग्रेजी ता० २९ अगस्त। बंगला ता० १३ भाद्रपद। फारसी ता० ४ रबिउलसानी। फसली ता० २०। स्वा० न० घ० २२ प० १७। दिनमान घ० ३१ प० ३३। सूर्योदय घ० ५ मि० ४१। सूर्यास्त घं० ६ मि० १९। चन्द्रराशि तुला है। आज अर्कषष्ठी ६। लोलार्क छठ। लोलार्ककुण्डे स्नानम्। स्वामी कार्तिकेय दर्शनम्। पञ्चगव्य प्राशनम् ६।

भाद्रशुक्ल ७ शनिवार घ० ३९ प० ४१। अंग्रेजी ता० ३० अगस्त। बंगला ता० १४ भाद्रपद। फारसी ता० ५ रबिउलसानी। फसली ता० २१। वि० न० घ० २१ प० ५९। दिनमान घ० ३१ प० २९। सूर्योदय घं० ५ मि० ४२ सूर्यास्त घं० ६ मि० १८। चन्द्रराशि तुला बाद वृश्चिक घ० ७ प० ३ पर होगी। आज भद्रा घ० ३९ प० ४१। रात्रीमें घं० ९ मि० ३४ के उपरान्त रहेगी और घ० ५३ प० ४६ पर पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्रमें सूर्य प्रवेश करेंगे। मुक्ताभरणव्रत ७ सन्तान ७। महालक्ष्मी व्रतारंभः ८। यात्रा शुभ नहीं है।

भाद्रपदशुक्ल ८ रविवार घ० ३९ प० १४। अंग्रेजी ता० ३१ अगस्त। बंगला ता० १५ भाद्रपद। फारसी ता० ६ रबिउलसानी। फसली ता० २२।

ऽनु न० घ० २२ प० ५३। दिनमान घ० ३१ प० २६। सूर्योदय घं० ५ मि० ४३ सूर्यास्त घं० ६ मि० १७। चन्द्रराशि वृश्चिक है। आज भद्रा घ० ९ प० २५। (दिनमें घं० ९ मि० ३० तक रहेगी।) और त्रि० न० ३ च० तुला राशिमें शुक्र घ० ० प० ३७ पर होंगे। वक्रीबुधः घ० ५५ प० २ पर होंगे। लक्ष्मीकुण्डे स्नानारंभः। दिन १६। मासदुग्ध ८। अन्नपूर्णा ८। ज्येष्ठा ८। दूर्वा ८। यात्रा शुभ नहीं है।

भाद्रपदशुक्ल ९ सोमवार घ० ४० प० ४। अंग्रेजी ता० १ सप्टेम्बर। बंगला ता० १६ भाद्रपद। फारसी ता० ७। रविउल्लसानी। फसली ता० २३। ज्ये० न० घ० २५ प० ४। दिनमान घ० ३१ प० २२। सूर्योदय घं० ५ मि० ४४ सूर्यास्त घं० ६ मि० १६। चन्द्रराशि वृश्चिक। बाद धन घ० २५ प० ४ पर होगी। आजसे अंग्रेजी महीना १ सेप्टेम्बर शुरु हुआ। ज्येष्ठा देवी पूजनम्। यात्रा शुभ नहीं है।

भाद्रपद शुक्ल १० मंगलवार घ० ४२ प० १३। अंग्रेजी ता० २ सेप्टेम्बर। बंगला ता० १७ भाद्रपद। फारसी ता० ८ रविउल्लसानी। फसली ता० २४। मूल न० घ० २८ प० ३१। दिनमान घ० ३१ प० १९। सूर्योदय घं० ५ मि० ४४। सुर्यास्त घं० ६ मि० १६। चन्द्रराशि धन है। मूल नक्षत्रमें ज्येष्ठा। देवीविसर्जनम्। यात्रा शुभ नहीं है।

भाद्रपदशुक्ल ११ बुधवार घ० ४५ प० २८। अंग्रेजी ता० ३ सितम्बर। बंगला ता० १८ भाद्रपद। फारसी ता० ९ रविउलसानी। फसली ता० २५। पूर्वा न० घ० ३३ प० ५ दिनमान घ० ३१ प० १५। सूर्योदय घं० ५ मि० ४५। सूर्यास्त घं० ६ मि० १५। चन्द्रराशि धन, बाद मकर घ० ४९ प० २८ पर होगी। आज भद्रा घ० १३ प० ५० (दिनमें घं० ११ मि० १७ के बादसे) घ० ४५ प० ४८ (रात्रिमें घं० ११ मि० ५६) तक रहेगी। पद्मा ११ व्रतं सर्वेषां। वामनजयन्ती ११। यात्रा शुभ नहीं है।

भाद्रपद शुक्ल १२ गुरुवार घ० ४९ प० ४१। अं० ता० ४ सेप्टेम्बर। बंगला ता० १९ भाद्रपद। फारसी ता० १० रविउलसानी। फसली ता० २६। उत्तरा न० घ० ३८ प० ३६। दिनमान घ० ३१ प० १२। सूर्योदय घं० ५ मि० ४६। सूर्यास्त घं० ६ मि० १४। चन्द्रराशि मकर है। आज वामन १२

है। विष्णुपरिवर्तनोत्सवः १२। दधिव्रतत्यागः १२। शक्रध्वजोत्थापनं १२। दुग्धव्रतारम्भः। पू. यात्रा मु. वृष लग्नमें १२ तिल के दानसे शुभ है।

भाद्रपद शुक्ल १३ शुक्रवार घ० ५४ प० ३२। अं० ता० ५ सेप्टेम्बर। बंगला ता० २० भाद्रपद। फारसी ता० ११ रविउलसानी। फसली ता० २७। श्रवण न० घ० ४४ प० ४७। दिनमान घ० ३१ प० ८। सूर्योदय घं० ५ मि० ४६। सूर्यास्त घं० ६ मि० १४। चन्द्रराशि मकर है। आज प्रदोष १३ व्रत है। स० सि० योग घ० ४४ प० ४७ यावत्। पूर्वयात्रा मु. वृष लग्नमें शुभ है।

भाद्रपद शुक्ल १४ शनिवार घ० ५१ प० ३९। अं० ता० ६ सेप्टेम्बर। बंगला ता० २१ भाद्रपद। फारसी ता० १२ रविउलसानी। फसली ता० २८। धनिष्ठा न० घ० ५१ प० १३। दिनमान घ० ३१ प० ५। सूर्योदय घं० ५ मि० ४७। सूर्यास्त घं० ६ मि० १३। चन्द्रराशि मकर, बाद कुंभ घ० १८ प० ३ पर होगी। आज घ० ५९ प० २९ (रात्रिमें घं० ५ मि० ३९ के उपरान्त) भद्रा लगेगी। अनन्त १४ व्रतम्। रवियोग घ० ५१ प० १९ यावत्। यात्रा शुभ नहीं।

भाद्रपद शुक्ल १५ रविवार घ० ६० प० ०। अं० ता० ७ सेप्टेम्बर। बंगला ता० २२ भाद्रपद। फारसी ता० १३ रविउलसानी। फसली ता० २९ शतभिष न० घ० ५७ प० ५२। दिनमान घ० ३१ प० १। सूर्योदय घं० ५ मि० ४८। सूर्यास्त घं० ६ मि० १२। चन्द्रराशि कुंभ है। आज घ० ३२ प० १० (सायं घं० ६ मि० ४०) तक भद्रा रहेगी। प्रौष्ठपदी १५। श्राद्धमपराह्णे। नान्दीश्राद्धं १५। व्रताय १५। पितृपक्षारम्भः १५। यात्रा शुभ नहीं है।

भाद्रपदशुक्ल १५ सोमवार घ० ४ प० ४२। अं० ता० ८ सेप्टेम्बर। बंगला ता० २३ भाद्रपद। फारसी ता० १४ रविउलसानी। फसली ता० ३०। पूर्वा न० घ० ६० प० ०। दिनमान घ० ३१ प० ५८। सूर्योदय घं० ५ मि० ४९। सूर्यास्त घं० ६ मि० १८। चन्द्रराशि कुंभ, बाद घ० ४७ प० ६ पर मीन होगी। आज बुधका अस्त पश्चिममें घ० ५९ प० ४ पर होगा और मार्गी शनिः घ० ५२ प० ३ पर होगा। महालयारम्भः। प्रतिपदा श्राद्धम्। भाद्रपदी १५। यात्रा शुभ नहीं है।

भाद्रपद कृष्ण १ रवौ मिश्रमानम् ४८।५८ दिनमान ३२।३४

सू	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	१	४	२	५	८	०	६
२४	२४	१८	१७	८	१०	६	६
९	६	३१	३८	२६	४६	१९	१९
५	४६	७	९	५६	५०	५४	५४
५७	३९	९	१२	६५	३/३	३	३
२३	३९	१२	१७	४५	व	३/५५	३/५५
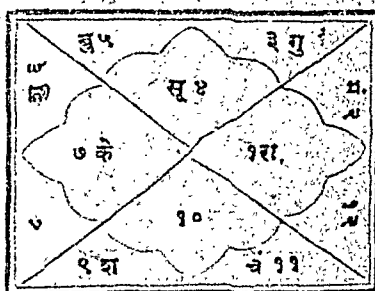
भाद्रपद कृष्ण ८ रवौ मिश्रमानम् ४८।४९ दिनमान ३२।५७

सू.	मं.	बु.	गु.	शु	श.	रा.	के.
४	१	४	२	५	८	०	६
०	२८	२७	१९	१६	१०	५	५
५१	४२	५८	४	३	२९	५७	५७
२०	४४	२६	१९	१६	०	३९	३९
५७	३८	७३	१२	६४	३/३	३	३
३६	४९	४६	१२	२९	व	११	११
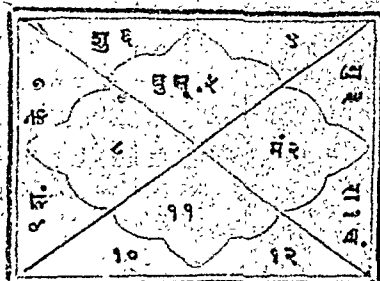
भाद्रपदकृष्ण ३० रवौ मिश्रमानं ४८।४६ दिनमान ३१।५०

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के
४	२	९	२	५	८	०	६
७	३	४	२०	२३	१०	५	५
३४	१२	४७	२७	३१	१५	३९	२५
५९	५०	४१	१७	९०	२५	२४	२४
९७	३७	४२	११	६२	३/३	३	३
५०	५४	३२	२३	३५	व.	११	११
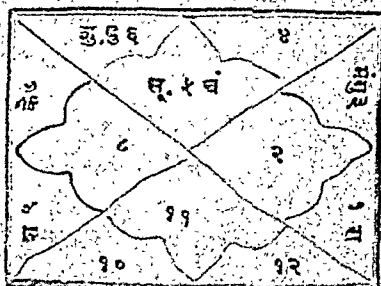
भाद्रपदशुक्ल ८ रवौ मिश्रमानं ४६ ३९ दिनमानं ३१।२६

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	२	५	२	३	८	०	६
१४	७	७	२१	२८	१०	९	९
२०	३७	३२	५५	४१	७	१३	१३
१३	२१	५८	१२	४४	५०	९	९
५८	३७	१	११	६९	१/८	३	३
२	२६	५६	२२	३१	व.	११	११
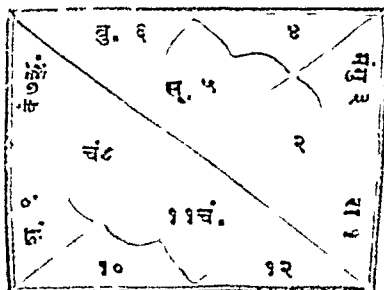
भाद्रपदशुक्ल १५ रवौ मिश्रमानं ४८।२१ दिनमानम् ३१।१

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के
४	२	५	२	६	४	०	६
२१	११	५	२२	७	१०	४	४
७	५५	१६	५९	४५	४	५	५
२	७	२८	१९	२१	८	५३	५३
५८	२६	४०/२	९	५९	११	३	३
१२	२७	व	३१	८	व.	११	११
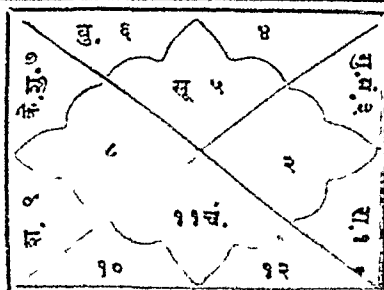
भाद्रपद मास फलम् ।

भाद्रपद मासमें कहीं कहीं वर्षा बड़े जोरोंसे होगी, ग्रामके ग्राम बहकर बाढ़से चले जायेंगे, हानि बहुत होगी, अन्नमें भी हानि पहुंचेगी, भाव सब मन्दे होंगे । गुड़, खांड़, मिष्टान्नका भाव तेज रहेगा, सोना, चांदी, नीलम, इत्यादिका भाव सम रहेगा, उड़द, मूंग, गेहूं, चना, इत्यादिका भाव पहले मन्दा रहेगा, पीछे तेज हो जायगा, रूई, कपास, सूतके भाव मन्दे रहेंगे, और सरसो, अलसीका भाव भी अन्तमें तेज होगा । (वर्षा बदी ३।७।११।२० तिथियोंमें बादल तथा गर्जना अन्धकार पड़ेगा, और वर्षा भी होगी, फिर सुदीसे ७।९ तक फिर १३ से १५ तिथियोंमें कहीं २ वर्षा होगी । लोगोंमें वैमनस्य रहेगा ।

भाद्रपदमास गोचर फलम् ।

इस मासमें मेष, तुला, धन, मीन, राशि वालोंको प्रायः शुभ ही बीतेगा, रोजगारमें तरक्की रहेगी । परन्तु अपने घरमें द्वेष होनेसे हृदयमें चिन्ता बनी

रहेगी, दो दिन अच्छे रहेंगे तो ४ दिन खराब बीतेंगे, स्त्रियोंमें विरोध रहेगा, कमानेमें फिकर बनी रहेगी, किन्तु मनोरथ सिद्ध नहीं होगा । किसी धर्मकार्यमें चित्त लगाना परमावश्यक है । इनमें २२ दिन सामान्य ही बीतेंगे,बाकी दिन बुरे बीतेंगे, और मिथुन कर्क, वृष, वृश्चिक राशि वालोंको यह मास मध्यम ही बीतेगा, रोजगारमें कभी लाभ कभी हानि मुकद्दमा आदि बना रहेगा, झगड़ेसे पीछे हार न होगी, २० दिन प्रायः समही रहेंगे। अन्य राशि वालोंको ज्येष्ठकी तरह फल रहेगा, अर्थात् बराबर ही रहेगा, न तो अच्छा न बुरा । किसी स्तोत्रका पाठ करना सबको अत्यन्त उपयोगी होगा ।

इस महीनेमें दक्षिणायन सूर्य और उत्तरगोल रहेगा । ततः वर्षाऋतु आश्विन कृष्ण ८ मंगल तक रहेगी । बाद शरदऋतु होगा । और अंग्रेजी महीना ६ सेप्टेम्बर ता० ३० आश्विन शुक्ल ६ बुध तक रहेगा । बाद अक्तूबर १० ता० ३१ सन् १६३० ई० होगा ।

आश्विनकृष्ण १ मंगलवार घ० ६ प० ४ । अंग्रेजी ता० ६ सेप्टेम्बर । बंगला ता० २४ भाद्रपद । फारसी ता० १५ रबिउलसानी । फसली ता० १ पू० न० घ० ३ प० ३४ । दिनमान घ० ३०,प० ५४ । सूर्योदय घं० ५ मि० ४० सूर्यास्त घं० ६ मि० ११ । चन्द्रराशि मीन है । इस महीनेमें दुग्ध त्याग करना चाहिये । अशून्यशयन व्रतम् २ । चन्द्रोदयमें । आज द्वितीयाका श्राद्ध है। स० सि० यो० घ० ३ प० ३४ उ० । यात्रा शुभ नहीं है ।

आश्विनकृष्ण २ बुधवार घ० १२ प० २७ । अंग्रेजी ता० १० सेप्टेम्बर । बंगला ता० २५ भाद्रपद । फारसी ता० १६ रबिउलसानी । फसली ता० २ । उ० न० घ० ८ प० ३७ । दिनमान घ० ३० प० ४० । सूर्योदय घं० ५ मि० ५० सूर्यास्त घं० ६ मि० १० । चन्द्रराशि मीन है । आज भद्रा घ० ४३ प० ४७ । (रात्रीमें घं० ११ मि० २१ उपरान्त लगेगी ।) बृहद् गौरी व्रतम् ३। यात्रा शुभ नहीं है ।

आश्विनकृष्ण ३ गुरुवार घ० १४ प० ५८ । अंग्रेजी ता० ११ सेप्टेम्बर । बंगला ता० २६ भाद्रपद । फारसी ता० १७ रबिउलसानी । फसली ता० ३ । रे० न० घ० १२ प० १२ । दिनमान घ० ३ प० ४७ । सूर्योदय घं० ५ मि० ५१ सूर्यास्त घं० ६ मि० ९ । चन्द्रराशि मीन । बाद मेष घ० १२ प० १२

पर होगी। आज भद्रा घ० १४ प० ५८ (दिनमें घं० ११ मि० ५०) तक रहेगी। ललिता देवी यात्रा ३। संकष्टी गणेश ४ व्रतम्। पं० उ० सूं० रा० घ० ७ मि० ५८ पर है। चतुर्थी श्राद्ध आज है। य० ज० यो० घ० १२ प० १८ तक है तथा स० सि० यो० घ० ६ तक है। यात्रा शुभ नहीं है।

आश्विन कृष्ण ४ शुक्रवार घ० १६ प० १०। अंग्रेजी ता० १२ सेप्टेम्बर। बंगला ता० २७ आश्विन। फारसी ता० १८ रविउल्लसानी। फसली ता० ४। अश्विनी न० घ० १५ प० २०। दिनमान घ० ३० प० ४३। सूर्योदय घं० ५ मि० ५१। सूर्यास्त घं० ६ मि० २। चन्द्रराशि मेष है। आज भरणी-श्राद्ध है (गया श्राद्धफलं)। स्थायी (मुद्दालेह) को कार्यार्हयोग घ० १५ प० २० तक है। स० सि० यो० घ० १५ प० २० तक है। यात्रा शुभ नहीं।

आश्विन कृष्ण ५ शनिवार घ० १६ प० २। अंग्रेजी ता० १३ सेप्टेम्बर। बंगला ता० २८ भाद्रपद। फारसी ता० १९ रविउल्लसानी। फसली ता० ५। भरणी न० घ० १६ प० ५१। दिनमान घ० ३० प० ३९। सूर्योदय घं० ५ मि० ५२। सूर्यास्त घं० ६ मि० ८। चन्द्रराशि मेष, बाद वृष घ० ३१ प० ५५ पर होगी। आज उ. फ. नक्षत्रमें सूर्य घ० २१ प० ५० पर प्रवेश करेंगे। चन्दषष्ठी व्रतम् ६। षष्ठीश्राद्धम्। यात्रा शुभ नहीं है।

आश्विन कृष्ण ६ रविवार घ० १४ प० ३७। अंग्रेजी ता० १४ सेप्टेम्बर। बंगला ता० २९ भाद्रपद। फारसी ता० २० रविउल्लसानी। फसली ता० ६। कृत्तिका नक्षत्र घ० १७ प० ८ दिनमान घ० ३० प० ३६ सूर्योदय घं० ५ मि० ५२ सूर्यास्त घं० ६ मि० ८ चंद्रराशि वृष है। आज घ० १४ प० ३७ (दिनमें घं० ११ मि० ४२ के बादसे) घं० ४२ प० १० (रात्रिमें घं० ११ मि० १३ तक) भद्रा रहेगी। वक्रगत्यासिंहराशिमें बुध घ० २६ प० १४ पर होगा। सप्तमी श्राद्धम्।

आश्विन कृष्ण ७ सोमवार घ० १२ प० २। अंग्रेजी ता० १५ सेप्टेम्बर। बंगला ता० ३० भाद्रपद। फारसी ता० २१ रविउल्लसानी। फसली ता० ७ रोहिणी न० घ० १६ प० १५। दिनमान घ० ३० प० ३२। सूर्योदय घं० ५ मि० ५४। सूर्यास्त घं० ६ मि० ९। चन्द्रराशि वृष, बाद मिथुन घ० ४५ प० १९ पर होगी। आज सामान्य है। महालक्ष्मी व्रत चन्द्रोदयमें। घं,

स. स्टं. टा. घं० १० मि० ५१ पर होगा । गजगौरीजन्म मध्याह्नमें । मैथिलनिबन्धसे आज ही जीवत्पुत्रिका व्रत है । यात्रा शुभ नहीं । अष्टमी श्राद्धम् ।

आश्विन कृष्ण ८ मंगलवार घ० ८५ प० २७ । अंग्रेजी ता० १६ सेप्टेम्बर । बंगला ता० ३१ भाद्रपद । फारसी ता० २२ रबिउल्लसानी । फसली ता० ८ । मृगशिरा न० घ० १४ प० २३ । दिनमान घ० ३० प० २९ । सूर्योदय घं० ५ मि० ५४ । सूर्यास्त घं० ६ मि० ६ । चन्द्रराशि मिथुन है । आज कन्या संक्रान्ति घ० ५४ प० ४७ पर होगी । महालक्ष्मीदर्शन ८ । लक्ष्मीकुण्डस्नान समाप्तिः । जीवत्पुत्रिका ८ । नवमीश्राद्धम् । शीतला ८ । मातृनवमी ९ अविधवा स्त्रियोंका श्राद्ध ।

आश्विन कृष्ण ९ बुधवार घ० $५\frac{3}{४}$ प० ५६ । अंग्रेजी ता० १७ सेप्टेम्बर । बंगला ता० १ आश्विन । फारसी ता० २३ रबिउलसानी । फसली ता० ९ । आर्द्रा न० घ० ११ प० ४१ । दिनमान घ० ३० प० २५ । सूर्योदय घं० ५ मि० ५५ । सूर्यास्त घं० ६ मि० ५ । चन्द्रराशि मिथुन बाद कर्क घ० ५४ प० ८ पर होगी । आज भद्रा घ० ३१ प० २५ (सायं० घं० ६ मि० २६ के बादसे) घ० ५८ प० ५० (रात्रिमें घं० ५ मि० २७) तक रहेगी । बंगला आश्विन आरम्भ हुआ । कन्या संक्रान्ति पुण्यकाल घं० १० मि० यावत् है । १० श्राद्धम् । यात्रा शुभ नहीं ।

आश्विन कृष्ण ११ गुरुवार घ० ५३ प० ८ । अंग्रेजी ता० १८ सेप्टेम्बर । बंगला ता० २ आश्विन । फारसी ता० २४ रबिउल्लसानी । फसली ता० १० । पुनर्वसु न० घ० ८ प० १७ । दिनमान घ० ३० प० २१ । सूर्योदय घं० ५ मि० ५६ । सूर्यास्त घं० ६ मि० ४ । चन्द्रराशि कर्क है । आज इन्दिरा ११ व्रतं स्मार्तोंको है । तथा स० सि० योग घ० ६० यावत् । यात्रा शुभ नहीं है ।

आश्विन कृष्ण १२ शुक्रवार घ० ४७ प० ७ । अंग्रेजी ता० १९ सेप्टेम्बर । बंगला ता० ३ आश्विन । फारसी ता० २५ रबिउल्लसानी । फसली ता० ११ । पुष्य न० घ० ४ प० २५ । दिनमान घ० ३ प० १७ । सूर्योदय घं० ५ मि० ५७ । सूर्यास्त घं० ६ मि० ३ । चन्द्रराशि कर्क है । आज इन्दिरा ११ व्रत वैष्णवोंको है । संन्यासि ब्रह्मचारि और वैष्णवोंका महालय श्राद्ध है और हरिवासरः घं० ८ मि० २६ यावत् । बाद पारण । यात्रा शुभ नहीं है ।

आश्विन कृष्ण १३ शनिवार घ० ४० प० ५७। अंग्रेजी ता० २० सेप्टेम्बर। बंगला ता० ४ आश्विन। फारसी ता० २६ रबिउलसानी। फसली ता० १२। श्लेo न० घ० ८८ प० १७/६४। दिनमान घ० ३ प० १४। सूर्योदय घं० ५ मि० ५७। सूर्यास्त घं० ६ मि० ३। चन्द्रराशि कर्क, बाद सिंह घ० ० प० १७ के बाद होगी। आज भद्रा घ० ४७ प० ५७ (रात्रिमें घं० १० मि० २०) के बाद लगेगी। आज शनिप्रदोष १३ व्रत है। मास शिवरात्रि व्रतम्। मघा श्राद्धम्। यात्रा शुभ नहीं है।

आश्विनकृष्ण १४ रविवार घ० ३४ प० ५४। अंग्रेजी ता० २१ सेप्टेम्बर। बंगला ता० ५ आश्विन। फारसी ता० २७ रबिउलसानी। फसली ता० १३। पू० न० घ० ४१ प० ४७। दिनमान घ० ३० प० १०। सूर्योदय घं० ५ मि० ५८ सूर्यास्त घं० ६ मि० २। चन्द्रराशि सिंह है। आज घ० ७ प० ५५। (दिनमें घं० ९ मि० ८ तक भद्रा रहेगी।) शस्त्रादिसे अथवा घातादिसे मरे हुयेका श्राद्ध १४। यात्रा शुभ नहीं है।

आश्विनकृष्ण ३० सोमवार घ० २९ प० १० । अंग्रेजी ता० २२ सेप्टेम्बर। बंगला ता० ६ आश्विन। फारसी ता० २८ रबिउलसानी। फसली ता० १४। उ० न० घ० ४८ प० १८। दिनमान घ० ३० प० ६। सूर्योदय घं० ५ मि० ५९ सूर्यास्त घं० ६ मि० १। चन्द्रराशि सिंह। बाद कन्या घ० ६ प० १ पर होगी। आज दर्शश्राद्धम् ३०। सोमवती ३०। सर्वपितृअमावास्या ३०। कुहू ३०। पितृविसर्जनम् ३०। यात्रा शुभ नहीं है।

आश्विनशुक्ल १ मंगलवार घ० २३ प० ४५। अंग्रेजी ता० २३ सेप्टेम्बर। बंगला ता० ७ आश्विन। फारसी ता० २९ रबिउलसानी। फसली ता० १५। ह० न० घ० ४५ प० १। दिनमान घ० ३० प० ३। सूर्योदय घं० ५ मि० ५९ सूर्यास्त घं० ६ मि० १। चन्द्रराशि कन्या है। आज चन्द्रदर्शन होगा। मु० ३० फल समता। और मार्गी बुध घ० ५० प० ४९ पर होगा। शारदीय नवरात्रारंभः। घटस्थापन प्रातः होगा। उच्चैःश्रवानीराजनविधिः। दौहित्र श्राद्धम्। यात्रा शुभ नहीं है।

आश्विनशुक्ल २ बुधवार घ० १९ प० १९। अंग्रेजी ता० २४ सेप्टेम्बर। बंगला ता० ८ आश्विन। फारसी ता० १ जमादिउलअौव्वल। फसली ता० १६। चि० न० घ० ४२ प० ३०। दिनमान घ० २९ प० ५९। सूर्योदय घं० ६

मि० ० सूर्यास्त घं० ६ मि० ०। चन्द्रराशि कन्या। बाद तुला घ० १२ प० ४१ पर होगी। आज मु० म० १ जमादिउलऔव्वल आरंभ हुआ। यात्रा शुभ नहीं है।

आश्विनशुक्ल ३ गुरुवार घ० १५ प० ३१। अंग्रेजी ता० २५ सेप्टेम्बर। बंगला ता० ९ आश्विन। फारसी ता० २ जमादिउलऔव्वल। फसली ता० १७। स्वा० न० घ० ४१ प० ०। दिनमान घ० २९ प० ५५। सूर्योदय घं० ६ मि० १ सूर्यास्त घं० ५ मि० ५९। चन्द्रराशि तुला है। आज घ० ४४ प० ७। (रात्रिमें घं० ११ मि० ४० के बाद भद्रा लगेगी।) सायन तुला संक्रान्ति घ० ३७ प० ९ पर होगी। विनायकी गणेश ४ व्रतम्। यात्रा शुभ नहीं है।

आश्विनशुक्ल ४ शुक्रवार घ० १२ प० ४४। अंग्रेजी ता० २६ सेप्टेम्बर। बंगला ता० १० आश्विन। फारसी ता० ३ जमादिउलऔव्वल। फसली ता० १८। वि० न० घ० ४० प० २७। दिनमान घ० २९ प० ५२। सूर्योदय घं० ६ मि० २ सूर्यास्त घं० ५ मि० ५८। चन्द्रराशि तुला। बाद वृश्चिक घ० २५ प० ३६ पर होगी। आज भद्रा घ० १२ प० ४४। (दिनमें घं० ११ मि० ७ तक रहेगी।) ललितापञ्चमी ५। उपाङ्ग ललिता व्रतम् ५। यहांपर जागरण करना कहा है। यात्रा शुभ नहीं है।

आश्विनशुक्ल ५ शनिवार घ० ११ प० ०५ अंग्रेजी ता० २७ सेप्टेम्बर। बंगला ता० ११ आश्विन। फारसी ता० ४ जमादिउलऔव्वल। फसली ता० १९। अनु० न० घ० ४१ प० ४ दिनमान घ० २९ प० ४८ सूर्योदय घं० ६ मि० २ सूर्यास्त घं० ५ मि० ५८ चंद्रराशि वृश्चिक है। आज हस्त नक्षत्रमें सूर्य घ० ७ प० ५१ पर प्रवेश करेंगे। तथा बुधका उदय पूर्वमें घ० ४३ प० १ पर होगा। और उ० यात्रा मु० मकर लग्नमें ६ ति० के दानसे शुभ है।

आश्विनशुक्ल ६ रविवार घ० १० प० ४० अंग्रेजी ता० २८ सेप्टेम्बर। बंगला ता० १२ आश्विन। फारसी ता० ५ जमादिउलऔव्वल। फसली ता० २०। ज्येष्ठा नक्षत्र घ० ४२ ५८ दिनमान घ० २८ प० ४४ सूर्योदय घं० ६ मि० ३ सूर्यास्त घं० ७ मि० ५७ चंद्रराशि वृश्चिक बाद धन घ० ४२ प० ५८ पर होगी। आज रवियोग घ० ४२ प० ५८ यावत् है। यात्रा शुभ नहिं है।

आश्विन शुक्ल ७ सोमवार घ० ११ प० २४ अंग्रेजी ता० २९ सेप्टेम्बर। बंगला ता० १३ आश्विन फारसी ता० ६ जमादिउल औव्वल फसली ता० २१।

मूल नक्षत्र घ० ४६ प० ८ दिनमान घ० २९ प० ४१ सूर्योदय घं० ६ मि० ४ सूर्यास्त घं० ५ मि० ५६ चंद्रराशि धन है। आज भद्रा घ० ११ प० ३४ (दिन में घं० १० मि० ५१ के बादसे) घ० ४२ प० ४० (रात्रीमें घं० ११ मि० ८ तक) रहेगी। सरस्वत्यावाहनम्। भद्रकाली जन्म ८ अर्ध रात्रिमें।

आश्विन शुक्ल ८ मंगलवार घ० १३ प० ४६ अंग्रेजी ता० ३० सेप्टेम्बर। बंगला ता०१४ आश्विन। फारसी ता० ७ जमादिउल्लऔव्वल। फसली ता० २२। पू० न० घ० ५० प० २५ दिनमान घ० २९ प० ३७ सूर्योदय घं० ६ मि० ५ सूर्यास्त घं० ५ मि० ५५ चंद्रराशि धन है। पू० षा० नक्षत्रमें सरस्वती पूजन। गरुड़जन्म ७। महाष्टमी। अन्नपूर्णाष्टमी ८। यात्रा शुभ नहीं है।

आश्विन शुक्ल ९ बुधवार घ० १७ प० ४ अंग्रेजी ता० १ अक्टुबर। बंगला ता० १५ आश्विन। फारसी ता० ८ जमादिउल्लऔव्वल। फसली ता० २३। उत्तरा नक्षत्र घ० ५५ प० ४९ दिनमान घ० २९ प० ३३ सूर्योदय घं० ६ मि० ५ सूर्यास्त घं० ५ मि० ५५ चंद्रराशि धन बाद मकर घ० ६ प० ४५ के बाद होगी। आज अंग्रेजी माह अक्टूबर १० शुरू हुआ। उ० षा० नक्षत्र शुक्ल नवमी में पूजन बलिदानादि करना चाहिये। सरस्वतीबलिदानम्। मन्वादिः। दुर्गा ९। बौद्धजयन्ती १०।

आश्विन शुक्ल १० गुरवार घ० २१ प० २२ अंग्रेजी ता० २ अक्टुबर। बंगला ता० १६ आश्विन। फारसी ता० ९ जमादिउल्ल औव्वल। फसली ता० २४। श्रवण नक्षत्र घ० ६० प० ० दिनमान घ० २९ प० २० सूर्योदय घं० ६ मि० ६ सूर्यास्त घं० ५ मि० ५४ चंद्रराशि मकर है। आज भद्रा घ० ५३ प० ५० (रात्रीमें घं० ३ मि० २८ उपरान्त) लगेगी। उ० फा० २ चन्द्र, कन्याराशी में बुध घ०४६ प०२२ के बाद होगा। विजयादशमी १०। अपराजिता (शमी) पूजनम्। अपराह्नमें विजयादेवी पूजनम्। खञ्जनदर्शनम्। ध्वजारोपणम्। अश्व, गज, रथ, शस्त्रादि पूजनम् १०। सीमोल्लंघनम्। बौद्धावतारः १०। सायंकालमें सरस्वती विसर्जनम्। नवरात्रपारणम्। यात्रा शुभ है।

आश्विन शुक्ल ११ शुक्रवार घ० २६ प० १८। अंग्रेजी ता० ३ अक्टोबर। बंगला ता० १७ आषाढ़। फारसी ता० १० जमादिउल्लऔव्वल। फसली ता० २५। श्र० न० घ० १ प० ४८। दिनमान घ० २९ प० २६। सूर्योदय घं०

६ मि० ७। सूर्यास्त घं० ५ मि० ५३। चन्द्रराशि मकर, बाद कुम्भ घ० ३९ प० २ पर होगी। आज भद्रा घ० २६ प० १८ (दिनमें घं० ४ मि० ३८) तक रहेगी। वि० न० ४ चन्द्र वृश्चिक राशिमें शुक्र घ० ४२ प० ५७ पर होगा। पाशांकुशा ११ मठम् सर्वेषाम्। सत्स्यजयन्ती ११ प्रातः। यात्रा शुभ नहीं है।

आश्विन शुक्ल १२ शनिवार घ० ३१ प० ३०। अंग्रेजी ता० ४ अक्टूबर। बंगला ता० १८ आश्विन। फारसी ता० ११ जमादिउलऔवल। फसली ता० २६। धन न० घ० ८ प० १७। दिनमान घ० २६ प० २२। सूर्योदय घं० ६ मि० ८। सूर्यास्त घं० ५ मि० ५२। चन्द्रराशि कुम्भ है। आज शनि-प्रदोष १३ व्रत है। द्विदल व्रतारम्भः १२।

आश्विन शुक्ल १३ रविवार घ० ३६ प० ३५। अंग्रेजी ता० ५ अक्टोबर। बंगला ता० १९ आश्विन। फारसी ता० १२ जमादिउलऔवल। फसली ता० २७। शतभिष न० घ० १४ प० ४५। दिनमान घ० २९ प० १९। सूर्योदय घं० ६ मि० ८। सूर्यास्त घं० ५ मि० ५२। चन्द्रराशि कुम्भ है। पक्षप्रदोष १३ व्रतम्। यात्रा शुभ नहीं है।

आश्विनशुक्ल १४ सोमवार घ० ४१ प० १। अंग्रेजी ता० ६ अक्टूबर। बंगला ता० २० आश्विन। फारसी ता० १३ जमादिउलऔव्वल। फसली ता० २८। पू० न० घ० २० प० ४६। दिनमान घ० २६ प० १५। सूर्योदय घं० ६ मि० ९ सूर्यास्त घं० ५ मि० ५१। चन्द्रराशि कुम्भ। बाद मीन घ० ४ प० १५ के उपरान्त होगी। आज भद्रा घ० ४१ प० १। (रात्रिमें घं० १० मि० २३ के बाद लगेगी।) वाराही पूजा सायंकालमें १४। रवियोग घ० २० प० ४६ यावत्। आज भद्रा घ० १२ प० ४०। (दिनमें घं० ११ मि० १८) तक रहेगी। कोजागरी १५। शारद १५। लक्ष्मी इन्द्र कुवेरादि पूजनं। यात्रा मुहूर्त शुभ नहीं।

आश्विनशुक्ल १५ मंगलवार घ० ४४ प० ४०। अंग्रेजी ता० ७ अक्टूबर। बंगला ता० २१ आश्विन। फारसी ता० १४ जमादिउलऔव्वल। फसली ता० २९। उ० न० घ० २६ प० ५। दिनमान घ० २९ प० ११। सूर्योदय घं० ६ मि० १० सूर्यास्त घं० ५ मि० ५०। चन्द्रराशि मीन है। आज चन्द्रग्रहणम् स्पर्श घ० ४५ प० ५१। मोक्ष घ० ४७ प० २४ पर होगा। यहां पर ग्रामके

अतिसूक्ष्म होनेसे दुर्बीन द्वारा दृष्टिगोचर होगा । अतः ग्रासके अल्पाल्प होनेसे पर्वकाल नहीं माना जायगा ।

आश्विनकृष्ण ६ रवौ मिश्रमानं ४६।२३ दिनमानं ३।३६

सू	मं.	बु	गु.	शु.	श.	रा.	के
५	२	४	२	६	८	०	६
२७	१६	२१	२४	१४	१०	४	४
५९	७	४९	१	२४	५	२८	२८
३३	५३	२४	५१	४६	३४	३८	३८
५८	३५	४८/२	८	१४	४१	३	३
२८	३६	व	४१	१२	व.	११	११
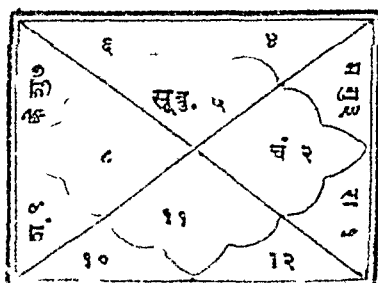
आश्विनकृष्ण १४ रवौ मिश्रमानं ४६।१४ दिनमानं ३०।१

सू.	मं.	बु	गु.	शु.	श.	रा.	के
५	२	४	२	६	८	०	६
४	२०	२६	२९	२०	१०	४	४
४५	१३	९	४	३६	१२	६	६
४८	५	४९	२६	२२	३६	२३	२३
५८	३४	३०/१	८	५१	०	३	३
४४	४५	व	३७	७	४९	११	११
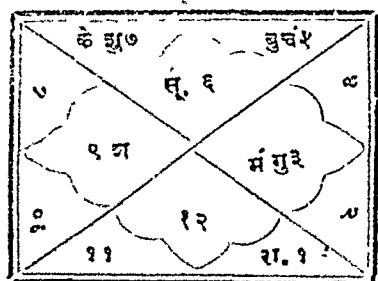
आश्विनशुक्ल ६ रवौ मिश्रमानं घ. ४६ प. ५ दिनमान घ. २९ प. ४४

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के
५	२	४	२	६	८	०	६
११	२४	२७	२५	२६	१०	३	३
३७	१२	२८	५९	१६	२६	४९	४९
५५	३	३०	३७	३५	२७	८	८
५२	३३	३३	७	४६	१	३	३
०	१८	मा	४७	५५	४६	११	११

आश्विन शुक्ल १२ रवौ मिश्रमानं ४५।५६ दिनमानं २९।१९

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	२	५	२	७	८	०	६
१८	२८	३	२६	१	१०	३	३
३१	१	७	५०	११	४३	२१	२१
५२	११	३	२३	५२	२३	५२	५२
५६	३१	६२	५	३८	२	३	३
१६	५१	३०	५९	१०	४३	११	११
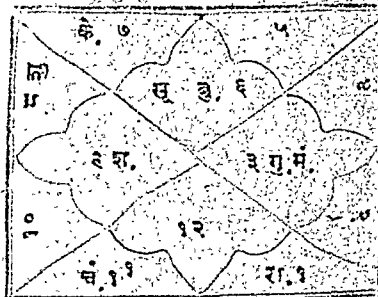
आश्विन मास गोचरफलम् ।

इस मासमें कर्क, कन्या, वृष, वृश्चिक, राशि वालोंको धनकी चिन्ता रहेगी। किसी कार्यमें खर्च करके पीछे पछतायेंगे, फिर कुछ रोग सतावेगा, शिवकी आराधनासे सर्व चिन्ता दूर होगी, रोजगारमें भी फायदा होगा, १९ दिन अच्छे बीतेंगे, बाकीके सम रहेंगे; किन्तु घरमें अवश्य क्लेश बना रहेगा। धन, मकर, मेष, कुम्भ, राशि वालोंको रोजगारमें लाभ, मनमें चिन्ता, शरीरमें पीड़ा लगी रहेगी। कुटुम्बमें झगड़ा लगा रहेगा। स्त्रियोंमें क्लेश रहेगा। व्यापारमें खुशी रहेगी, फायदा कम रहेगा। १० दिन अच्छे रहेंगे, १० दिन सम रहेंगे, शेष दिन खराब रहेंगे, बाकी राशि वालोंको यह मास क्लेशदायक ही रहेगा। कन्या जिमानेसे शुभ रहेगा, वा गौवोंको अन्न देना आवश्यक है।

आश्विन मास फलम् ।

आश्विन मासमें किंचित् वर्षा होगी। थोड़ा वर्षनेसे भी अन्नको फायदा पहुंचेगा, सब पदार्थ पहले सम रहेंगे। फिर बादमें तेज हो जायेंगे, गुड़, शकर का भाव सम रहेग, घृतका भाव पहले मन्द रहकर तेज होगा, और इस मासमें कोई नया रोग पैदा होगा, प्रजामें अशान्ति रहेगी, विवाद झगड़े बहुत होंगे, घर-घरमें क्लेश रहेगा। इसमें शान्तिके लिये दुर्गा पाठ तथा हवन करनेसे शान्ति होगी, फिर गौवोंको अन्न घास देकर तृप्त करना लाभ दायक होगा।

इस महीनेमें दक्षिणायन सूर्य और उत्तरगोल। शरदऋतु कार्तिक कृष्ण १० शुक्रवार तक रहेगा, बाद दक्षिणगोल हो जायगा। तथा

अंग्रेजी महीना १० अक्टूबर ता० ३० कार्तिक शुक्ल १० शनिवार तक रहेगा। बाद नवम्बर ११ ता० ३० स० १६२० ई० होगा।

कार्तिक कृष्ण १ बुध घ० ४७ प० ८ अंग्रेजी ता० ८ अक्टूबर। बंगला ता० २२ आश्विन। फारसी ता० १५ जमादिउल्लऔवल्ल। फसली ता० १। रेवती नक्षत्र घ० ३० प० १८ दिनमान घ० २९ प० ८ सूर्योदय घं० ६ मि० १० सूर्यास्त घं० ५ मि० ५ चन्द्रराशि मीन बाद मेष घ० ३ प० १८ पर होगी। कार्तिक महीनेमें दाली वर्जित करना। इष्टिः उ० यात्रा मु० वृश्चिक लग्नमें ८ गुरु के दानसे तथा पु० यात्रा मु० वृष लग्नमें शुभ है।

कार्तिककृष्ण २ गुरुवार घ० ४८ प० २७ अंग्रेजी ता० ९ अक्टूबर। बंगला ता० २३ आश्विन। फारसी ता० १६ जमादिउल्लऔव्वल। फसली ता० २। अश्विनी न० घ० ३३ प० २४। दिनमान घ० २९ प० ४। सूर्योदय घं० ६ मि० ११ सूर्यास्त घं० ५ मि० ४९। चन्द्रराशि मेष है। आज पुनर्वसु ४ च० कर्क राशिमें मंगल घ० २२ प० ५८ पर होगा। अशून्यशयन व्रतम् २ चन्द्रोदयमें। च० उ० ई० रा० घं० ६ मि० ३२ पर होगा। स० सि० यो० घ० ३३ प० २४ यावत्। यात्रा शुभ नहीं है।

कार्तिककृष्ण ३ शुक्रवार घ० ४७ प० ७। अंग्रेजी ता० १० अक्टूबर। बंगला ता० २४ आश्विन। फारसी ता० १७ जमादिउल्लऔव्वल। फसली ता० ३। भ० न० घ० ३५ प० १३। दिनमान घ० २९ प० ०। सूर्योदय घं० ६ मि० १२ सूर्यास्त घं० ५ मि० ४८। चन्द्रराशि मेष। बाद वृष घ० ५० प० २२ उपरान्त होगी। आज भद्रा घ० १८ प० २६। (दिनमें घं० १ मि० ३४ के बादसे घ० ४८ प० २५। रात्रीमें घं० १ मि० २४ तक रहेगी।) और चित्रा नक्षत्रमें सूर्य घ० ३५ प० ५२ पर प्रवेश करेंगे। करकौरी व्रतम् ३। चन्द्रोदयमें च० उ० ई० रा० घं० ७ मि० ८ पर होगा।

कार्तिककृष्ण ४ शनिवार घ० ४७ प० ७। अंग्रेजी ता० ११ अक्टूबर। बंगला ता० २५ आश्विन। फारसी ता० १८ जमादिउल्लऔव्वल। फसली ता० ४। कृ० न० घ० ३५ प० ४९। दिनमान घ० २८ प० ५७। सूर्योदय घं० ६ मि० १३ सूर्यास्त घ० ५ मि० ४७। चन्द्रराशि वृष है। करक चतुर्थी। करवा-चौथ। गणेश ४ व्रतम्। संकष्टगणेश ४ व्रतम्। च० उ० ई० रा० घं० ७ मि० ५९। यात्रा शुभ नहीं है।

कार्तिककृष्ण ५ रविवार घ० ३४ प० ३७ । अंग्रेजी ता० १२ अक्टूबर । बंगला ता० २६ आश्विन । फारसी ता० १९ जमादिउल्लऔव्वल । फसली ता० ५ । रो० न० घ० ३५ प० १२ । दिनमान घ० २९ प० ५३ । सूर्योदय घं० ६ मि० १३ सूर्यास्त घं० ५ मि० ४७ । चन्द्रराशि वृष है । युद्धमें यायीको जयप्रदयोग घ० ३५ प० १२ तक है । और पू० यात्रा मुहूर्त । वृश्चिक लग्नमें ८ गुरुके दानसे शुभ है । बाद सिंह लग्नमें ।

कार्तिककृष्ण ६ सोमवार घ० ४१ प० ८ । अंग्रेजी ता० १३ अक्टूबर । बंगला ता० २७ आश्विन । फारसी ता० २० जमादिउल्लऔव्वल । फसली ता० ६ । मृ० न० घ० ३३ प० ३३ । दिनमान घ० २८ प० ४९ । सूर्योदय घं० ६ मि० १४ सूर्यास्त घं० ५ मि० ४६ । चन्द्रराशि वृष है घ० ४ प० २२ तक बाद मिथुन होगी । आज भद्रा घ० ४१ प० ८ । (रात्रीमें घं० १० मि० ४१ के बाद लगेगी ।) स० सि० यो० अ० सि० योग घ० ३३ प० ३३ तक रहेगा । पू० यात्रा मुहूर्त वृश्चिक लग्नमें ८ गुरु ६ तिल के दानसे शुभ है ।

कार्तिककृष्ण ७ मंगलवार घ० ३६ प० ४५ । अंग्रेजी ता० १४ अक्टूबर । बंगला ता० २८ आश्विन । फारसी ता० २१ जमादिउल्लऔव्वल । फसली ता० ७ । आ० न० घ० ३१ प० ४ । दिनमान घ० २८ प० ४६ । सूर्योदय घं० ६ मि० १५ सूर्यास्त घं० ५ मि० ४५ । चन्द्रराशि मिथुन है । आज भद्रा घ० ८ प० ५६ । (दिनमें घं० ९ मि० ४८ तक रहेगी ।) अहोई ७ मतम् । चन्द्रोदयमें । चं० उ० घं० रा० घं० १० मि० ३४ पर होगा । रवियोग घ० ३१ यावत् । यमदंड योगः घ० ३१ प० ४ यावत् । यात्रा शुभ नहीं है ।

कार्तिककृष्ण ८ बुधवार घ० ३१ प० ४१ । अंग्रेजी ता० १५ अक्टूबर । बंगला ता० २९ आश्विन । फारसी ता० २२ जमादिउल्लऔव्वल । फसली ता० ८ । पु० न० घ० २७ प० ५१ । दिनमान घ० २८ प० ४२ । सूर्योदय घं० ६ मि० १६ सूर्यास्त घं० ५ मि० ४४ । चन्द्रराशि मिथुन । बाद कर्क घ० १३ प० ४० पर होगी । भैरवाष्टमी ८। शीतला दर्शन ८। मथुरामण्डल वासियोंको राधाकुण्डमें स्नान करना चाहिये ।

कार्तिककृष्ण ९ गुरुवार घ० २६ प० ५ । अंग्रेजी ता० १६ अक्टूबर । बंगला ता० ३० आश्विन । फारसी ता० २३ जमादिउल्लऔव्वल । फसली ता० ९ । पु० न० घ० २४ प० ६ । दिनमान घ० २८ प० ३९ । सूर्योदय घं० ६

मि० १६ सूर्यास्त घं० ५ मि० ४४। चन्द्रराशि कर्क है। आज भद्रा घ० ४३ प० ६। रात्रीमें घं० १० मि० ४१ के बादसे लगेगी। मासान्तः। स० सि० यो० घ० २४ प० ६ यावत्। और अ० सि० यो० भी घ० २४ प० ६ यावत्। यात्रा शुभ नहीं है।

कार्तिककृष्ण १० शुक्रवार घ० २० प० ८। अंग्रेजी ता० १७ अक्टूबर। बंगला ता० ३१ आश्विन। फारसी ता० २४ जमादिउलऔव्वल। फसली ता० १०। श्ले० न० घ० २० प० १ दिनमान घ० २८ प० ३५। सूर्योदय घं० ६ मि० १७ सूर्यास्त घं० ५ मि० ४३। चन्द्रराशि कर्क। बाद सिंह घ० २० प० १ पर होगी। आज भद्रा घ० २० प० १। (दिनमें घं० १ मि० २० तक रहेगी।) और तुला संक्रान्ति घ० १९ प० ५६ पर होगी। मु० १९ फ० महर्घता। संक्रान्ति पुण्यकाल घं० १० मि० १५ उपरान्त दिन भर है। यात्रा शुभ नहीं है।

कार्तिककृष्ण ११ शनिवार घ० १४ प० ४। अंग्रेजी ता० १८ अक्टूबर। बंगला ता० १ कार्तिक। फारसी ता० २५ जमादिउलऔव्वल। फसली ता० ११। म० न० घ० १९ प० ४८। दिनमान घ० २८ प० ३२। सूर्योदय घं० ६ मि० १८ सूर्यास्त घं० ५ मि० ४२। चन्द्रराशि सिंह है। आजसे बंगला कार्तिक आरंभ हुआ। रम्भा ११ व्रतं सर्वेषां। गोवत्स १२। मासशून्य ति० ११। यात्रा शुभ नहीं।

कार्तिक कृष्ण १२ रवि घ० ८ प० ९। अंग्रेजी ता० १९ अक्टोबर। बंगला ता० २ कार्तिक। फारसी ता० २६ जमादिउलऔव्वल। फसली तारीख १२। पू० न० घ० ११ प० ४। दिन मान घ० २८ प० २८ सूर्योदय घं० ६ मि० १८ सूर्यास्त घं० ५ मि० ४२। चन्द्रराशि सिंह बाद कन्या घ० २५ प० ४२ के बाद होगी। प्रदोष १३ व्रतम्। धन्वन्तरी त्रयोदशी (धनतेरस) सायंकालमे यमप्रीत्यर्थं अपमृत्युनिवारक दीपदान करना चाहिये।

कार्तिक कृष्ण १३ सोमवार घ० $\frac{२}{५८}$ प० $\frac{१}{५६}$। अंग्रेजो ता० २० अक्टोबर। बंगला ता० ३ कार्तिक। फारसी ता० २७ जमादिउलऔव्वल। फसली ता० १३। उ० न० घ० ७ प० ४० दिनमान घ० २८ प० २४। सूर्योदय घं० ६ मि० १९। सूर्यास्त घ० ५ मि० ४१। चन्द्रराशि कन्या है। आज घ० २ प० २५। (दिनसे घं० ७ मि० १६) के बादसे घ० २९ प० ४७। (रात्रिमे

घं० ६) मिनट १६ तक भद्रा रहेगी। बुधका अस्त पूर्वमे घ० ४६ प० १३ पर होगा। मास शिवरात्रि व्रतम्। नरक चतुर्थदशी १४ हनुमानजीका जन्मदिन। यात्रा शुभ नहीं।

कार्तिककृष्ण १४ मंगलवार घ० ५२ प० ३९। अंग्रेजी ता० २१ अक्टुबर। बंगला ता० ४। जमादिउल्लऔव्वल। फारसी ता० १४। हस्त न० घ० ४ प० ३। दिनमान घ० २८ प० २१ सूर्योदय घं० मि० २०। सूर्यास्त घं० ५ मि० ४०। चन्द्रराशि कन्या बाद तुला घ० २३ प० १० पर होगी। दर्श-श्राद्धम् ३० आज अर्धरात्रिमे लीलाकाली जन्म। लक्ष्मीपूजनं ३०। दीपावली ३०। यात्रा शुभ नहीं।

कार्तिक शुक्ल १ बुधवार घ० ४८ प० ५७। अंग्रेजी ता० २२ अक्टूबर। बंगला ता० ५ कार्तिक। फारसी ता० २९ जमादिउल्लौवल। फसली ता० १५। चित्रा न० घ० १ प० ५०। दिनमान घ० २८ प० ५७। सूर्योदय घं० ६ मि० २१। सूर्यास्त घं० ५ मि० ३९। चन्द्रराशि तुला है। आज बलिपूजनं। गोक्रीड़ा। अन्नकूट १। गोवर्धनपूजनं। अभ्यङ्गस्नानं। नववस्त्रादिधारणं १ यात्रा शुभ नहीं है।

कार्तिक शुक्ल २ गुरुवार घ० ४१ प० १५। अंग्रेजी ता० २३ अक्टूबर। बंगला ता० ६ कार्तिक। फारसी ता० ३० जमादिउल्लऔवल। फसली ता० १६। स्वाती न० घ० ५६ प० ५६। दिनमान घ० २८ प० १४। सूर्योदय घं० ६ मि० २१। सूर्यास्त घं० ५ मि० ३९। चन्द्रराशि तुला, बाद वृश्चिक घ० ४९ प० २२ के बाद होगी। आज चन्द्रदर्शन होगा। मु. ४५ फ० समर्घता। यमद्वितीया २। यमतर्पणं। भ्रातृ २। यमुनास्नानं २। यमधर्मेश्वर पूजनं २। भाईदुइज। भगिनीगृहे भोजनं। यात्रा शुभ नहीं।

कार्तिकशुक्ल ३ शुक्रवार घ० ४४ प० ४२। अंग्रेजी ता० २४ अक्टूबर। बंगला ता० ७ कार्तिक। फारसी ता० १ जमादिउलसानी। फसली ता० १७। अनु न० घ० ५९ प० ३०। दिनमान घ० २८ प० १०। सूर्योदय घं० ६ मि० २२। सूर्यास्त घं० ५ मि० ३८। चन्द्रराशि वृश्चिक है। आजसे मु० म० ६ जमादिउलसानी आरम्भ हुआ। स्वाती न० में सूर्य घ० ० प० ५३ के बाद प्रवेश करेंगे। चित्रा न० ३ चन्द्र तुला राशिमें बुध घ० २५ प० ४२

पर होंगे। भगिनी २। भ्रातृगृहे भोजनं। स० सि० योग घ० ९६ प० २० यावत्। यात्रा शुभ नहीं है।

कार्तिक शुक्ल ४ शनिवार घ० ४४ प० २१। अंग्रेजी ता० २५ अक्टूबर। बंगला ता० ८ कार्तिक। फारसी ता० २ जमादिउलसानी। फसली ता० १८। ज्येष्ठा न० घ० ६० प० ०। दिनमान घ० २८ प० ७। सूर्योदय घं० ६ मि० २३। सूर्यास्त घं० ५ मि० २५। चन्द्रराशि वृश्चिक है। आज भद्रा घ० १४ २१ (दिनमें घं० १२ मि० ११) के बादसे घ० ४४ प० २१ (रात्रिमें घं० १२ मि० ६ तक) रहेगी। सायन वृश्चिकसंक्रान्ति घ० ५२ प० ५७ पर होगी। विनायकी गणेश ४ व्रतम्। यात्रा शुभ नहीं है।

कार्तिक शुक्ल ५ रविवार घ० ४५ प० २३। अंग्रेजी ता० २६ अक्टूबर। बंगला ता० ९ कार्तिक। फारसी ता० ३ जमादिउलसानी। फसली ता० १९। ज्येष्ठा न० घ० १ प० ५। दिनमान घ० २८ प० ३। सूर्योदय घं० ६ मि० २३। सूर्यास्त घं० ५ मि० ३७। चन्द्रराशि वृश्चिक बाद धन घ० १ प० ५ पर होगी। स० सि० योग घ० १ प० ५ के बादसे लगेगा। यात्रा शुभ नहीं है।

कार्तिक शुक्ल ६ सोमवार घ० ४७ प० ४०। अंग्रेजी ता० २७ अक्टूबर। बंगला ता० १० कार्तिक। फारसी ता० ४ जमादिउलसानी। फसली ता० २०। मूल न० घ० ३ प० ५६। दिनमान घ० २८ प० ०। सूर्योदय घं० ६ मि० २४। सूर्यास्त घं० ५ मि० ३६। चन्द्रराशि धन है। आज वक्री शुक्र घ० ८ प० २४ पर होगा। यात्रा शुभ नहीं है।

कार्तिकशुक्ल ७ मंगलवार घ० ५१ प० ६। अंग्रेजी ता० २८ अक्टूबर। बंगला ता० ११ कार्तिक। फारसी ता० ५ जमादिउलसानी। फसली ता० २१। पू० न० घ० ७ प० ५५। दिनमान घ० २७ प० ५७। सूर्योदय घं० ६ मि० २५। सूर्यास्त घं० ५ मि० ३५। चन्द्रराशि धन। बाद मकर घ० २४ प० १२ पर होगा। आज घ० ५१ प० ६। (रात्रीमें घं० २ मि० ५१ के बाद लगेगी।) त्रिपुष्करयोग घ० ७ प० ५५ के बादसे घ० ५१ प० ६ यावत्। कल्पादि ७। यात्रा शुभ नहीं है।

कार्तिकशुक्ल ८ बुधवार घ० ५५ प० २९। अंग्रेजी ता० २६ अक्टूबर। बंगला ता० १२ कार्तिक। फारसी ता० ६ जमादिउलउसानी। फसली ता० २२। उ० न० घ० १३ प० ३। दिनमान घ० २७ प० ५३। सूर्योदय घं० ६ मि० २५ सूर्यास्त घं० ५ मि० ३४। चन्द्रराशि मकर है। आज भद्रा घ० २३ प० १७। (दिनमें घं० ३ मि० ४५ तक रहेगी।) गोपाष्टमी ८। अन्नपूर्णाष्टमी ८। बुधाष्टमी। पू० द० यात्रा मु० सिंह लग्नमें ८ तिल के दानसे शुभ।

कार्तिकशुक्ल ९ गुरुवार घ० ६० प० ०। अंग्रेजी ता० ३० अक्टूबर। बंगला ता० १३ कार्तिक। फारसी ता० ७ जमादिउलउसानी। फसली ता० २३। श्र० न० घ० १८ प० ५६। दिनमान घ० २७ प० ५०। सूर्योदय घं० ६ मि० २६। सूर्यास्त घं० ५ मि० ३४। चन्द्रराशि मकर। बाद कुंभ घ० ५२ प० ८ पर होगी। आज अक्षय ९। कूष्माण्ड दानं। मथुरा प्रदक्षिणा। युगादि श्राद्धम्। कृतयुगोत्पत्तिः। यात्रा शुभ नहीं है।

कार्तिकशुक्ल ९ शुक्रवार घ० ३ प० ३। अं०ता० ३१ अक्टूबर। बंगला ता० १४ कार्तिक। फारसी ता० ८। जमादिउलउसानी फसली ता० २४। ध० न० घ० २५ प० १९। दिनमान घ० २७ प० ४७। सूर्योदय घं० ६ मि० २७ सूर्यास्त घं० ५ मि० ३३ चन्द्रराशि कुम्भ है। आज यमुना पूजनं १० मध्याह्नमें। रवियोग घ० २५ प० १६ यावत्। यात्रा शुभ नहीं है।

कार्तिकशुक्ल १० शनिवार घ० ५ प० ४९। अं० ता० १ नवम्बर। बंगला ता० १५ कार्तिक। फारसी ता० ९ जमादिउलसानी। फसली ता० २५ शतभिष न० घ० ३१ प० ५१ दिनमान घ० २७ प० ४३। सूर्योदय घं० ६ मि० २७ सूर्यास्त घं० ५ मि० ३३। चन्द्रराशि कुम्भ है। आज भद्रा घ० ३८ प० २४ (रात्रीमे घं० ३ मि० ४८) के बाद लगेगी। अं० स० ११ नवम्बर आरम्भ हुआ। यात्रा शुभ नहीं।

कार्तिकशुक्ल ११ रविवार घ० ११ प० ०। अं० ता० २ नवम्बर। बंगला ता० १६ कार्तिक। फारसी ता० १ जमादिउलउसानी। फसली ता० २६। पू० न० घ ३८। प० दिनमान २७ प० ४०। सूर्योदय घं ६ मिनट २८ सूर्यास्त घं० ५ मि० ३२। चन्द्रराशि कुम्भ बाद मीन घ० २१ प० २८ पर

होगी। आज घ० ११ प० ० (दिनमें घं० १० मि० ५२) तक भद्रा रहेगी। प्रबोधिनी ११ व्रतम् सर्वेषां। भीष्मपंचक प्रारम्भः। तुलसी विवाह रात्रिमें। त्रिपुष्कर योग घ० ११ उ० घ० ३८ यावत। यात्रा शुभ नहीं है।

कार्तिकशुक्ल १२ सोमवार घ० १५ प० ३१ अंग्रेजी ता० ३ नवम्बर। बंगला ता० १७ कार्तिक। फारसी ता० ११ जमादिउल्लसानी। फसली ता० २७। उ० न० घ० ४३ प० ३०। दिनमान घ० २७ प० ३७। सूर्योदय घं० ६ मि० २९ सूर्यास्त घं० ५ मि० ३१ चन्द्रराशि मीन है। आज मन्वादिः १२। द्विदल दानं। चातुर्मास्य व्रत समाप्तिः। सोमप्रदोष १३ व्रतम्। यात्रा शुभ नहीं है।

कार्तिक शुक्ल १३ मंगलवार घ० १२ प० १२। अं० ता० ४ नवम्बर। बंगला १८ कार्तिक। फारसी ता० १२ जमादिउल्लसानी। फसली ता० २८। रेवती न० घ०-४८ प० ०। दिनमान घ० २७ प० ३४। सूर्योदय घं० ६ मि० २९। सूर्यास्त घं० ५ मि० ३१। चंद्रराशि मीन, बाद मेष घ० ४८ प० ० के बाद होगी। वैकुण्ठ चतुर्दशी १४। यात्रा शुभ नहीं है।

कार्तिक शुक्ल १४ बुधवार घ० २१ प० ४१। अंग्रेजी ता० ५ नवम्बर। बंगला ता० १९ कार्तिक। फारसी ता० १३ जमादिउल्लसानी। फसली ता० २९। अश्विनी न० घ० ५१ प० २६। दिनमान घ० २७ प० ३०। सूर्योदय घं० ६ मि० ३०। सूर्यास्त घं० ५ मि० ३०। चन्द्रराशि मेष है। आज भद्रा घ० २१ प० ४१ (दिनमें घं० ३० मि० १०) उपरान्त घ० ५२ प० २२ (रात्रिमें घं० ३ मि० २७) तक रहेगी। त्रिपुरोत्सवः १५। अमृत योग घ० २१ प० २६ यावत। यात्रा शुभ नहीं है।

कार्तिकशुक्ल १५ गुरुवार घ० २३ प० ३। अंग्रेजी ता० ६ नवम्बर। बंगला ता० २० कार्तिक। फारसी ता० १४ जमादिउल्लसानी। फसली ता० ३१। भ० न० घ० ५३ प० ३१। दिनमान घ० २७ प० २७। सूर्योदय घं० ६ मि० ३१। सूर्यास्त घं० ५ मि० २९। चन्द्रराशि मेष है। आज विशाखा न० में सूर्य घ० २० प० ५४ के बाद होगा। और वक्री गुरु घ० ३० प० ४३ पर होगा। व्रताय १५। मन्वादि १५। दीपदान १५। स्वामी कार्तिकेय दर्शनं। कार्तिकी १५। कार्तिक स्नान समाप्तिः। यात्रा शुभ नहीं है।

कार्तिक कृष्ण ५ रवौ मिश्रमानम् ४५।४६ दिनमान २८।५३

सू	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	३	५	२	७	८	०	६
२९	१	११	२७	५	११	२	२
२७	४२	४०	२८	८	५	५९	५९
३८	३२	५७	१७	१८	२७	३७	३७
५६	३०	८४	९	३०	३	३	३
३२	२०	३९	०	६	४१	११	११
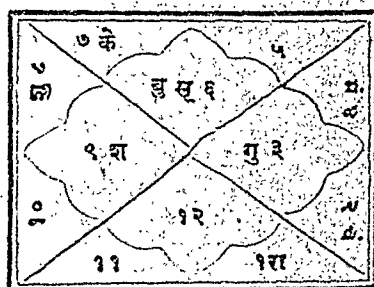
कार्तिक कृष्ण १२ रवौ मिश्रमानम् ४५।३७ दिनमान २८।२८

सू.	मं.	बु.	गु.	शु	श.	रा.	के.
६	३	५	२	७	८	०	६
२	५	२२	२७	७	११	२	२
२५	१३	१	५८	४४	३२	३७	३७
१५	७	५७	१३	७	३६	२२	२२
५९	२८	९९	४	३६	४	३	३
४८	४८	३	६	१८	३८	११	११
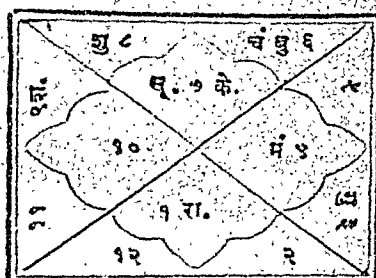
कार्तिकशुक्ल ५ रवौ मिश्रमानं ४५।२७ दिनमान २८।३

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के
६	३	६	२	७	८	०	६
९	८	३	२८	८	१२	२	२
२४	३२	२९	१९	४६	२	१९	१५
३८	१८	७	१४	१८	७	७	७
६	२१	१२	२	०	४	३	३
४	१२	४६	१८	४१	२८	११	११
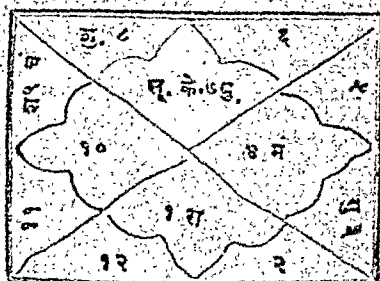
कार्तिकशुक्ल ११ रवौ मिश्रमानं ४५।१८ दिनमानं २७।००

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	३	६	२	७	८	०	६
१६	११	१९	२८	७	१२	१	१
२५	३५	२३	२९	४५	३९	५२	५२
४२	१९	४९	५९	३४	५५	५२	५२
६०	२९	१०५	०	९३ ४३	५	३	३
१४	१२	१३	२९	व	३५	११	११
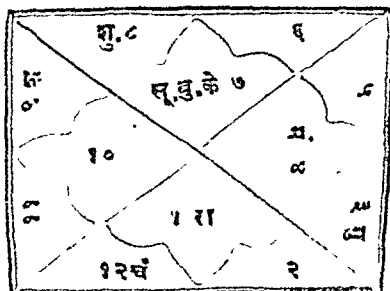
कार्तिक मासगोचर फल ।

इस मासमें कर्क तुला धन मिथुन राशि वालोंको नये काममें फायदा स्त्रीकी तरफसे चिन्ता शरीरमें तकलीफ रहेगी, भाइयोंमें विरोध धनका खर्च अधिक आय कमती रहेगा, मानसिक पीड़ा बनी रहेगी, पहले १७ दिन अच्छे रहेगा कुछ बाकीके मध्यम रहेंगे। मेष वृष मीन मकर राशिवालोंको कारोबारमें मध्यम तथा शरीरमें पीड़ा घरमें झगड़ा मित्रोंमें कहल बनी रहेगी नये काम में रुकावट रहेगी द्रव्य हानी होगी राज्य भय होगा। पीपलमें पानी तथा शिवाराधना करना आवश्यक है। दो दिन अच्छे फिर बाकीके खराब रहेंगे। अन्य राशिवालों श्रावणकी तरह रहेंगे। अर्थात् कुछ दिन अच्छे और कुछ दिन खराब। क्लेश बना रहेगा।

कार्तिक मासफल।

कार्तिक मासमें धान्य वस्तुओंमें हानि होगी। किसी २ देशमें धान्यमें कृमि लगकर बहुत कम उपज रहेगी। मसूर, चना, बाजराका भाव साधारण रूपसे रहेगा। सूत, कपड़ा, कम्मलका भाव भी सम रहेगा, पीतल, तामा, रांगा जस्त आदिका भाव सम रहेगा, गाय, भैंस इत्यादिका भाव तेज रहेगा, चांदी, सोनेका भाव मन्दा होकर फिर सम हो जायगा। बादलोंकी घटा छगी रहेगी, कुछ पानी बर्षनेका योग तथा गर्दा गुबार अन्धकार बड़े जोरसे चलेगी, किन्तु वर्षा मध्यम रहेगी। कार्तिक वदी ५।६।८ तक थोड़ी वर्षा होगी, फिर सुदी ३ से ५।१३।१५ तक मतान्तरसे योग कुछ पाया जाता है। किन्तु कहीं २ होगी। सामाजिक झगड़े अवश्य लगे रहेंगे। धर्मपर बहुत आघात पहुंचनेका समय निकट आवेगा।

इस महीनेमें दक्षिणायन सूर्य और दक्षिण गोल शरदऋतु मार्गशीर्ष कृष्ण ११ रविवार तक रहेगा बाद हेमन्तऋतु हो जायगा। तथा अं० महीना ११ नवम्बर मार्गशीर्ष शुक्ल ११ सोमवार तक रहेगा बाद दिसम्बर १२ ता० ३१ सन् १९३० ई० होगा।

मार्गशीर्ष कृष्ण १ शुक्रवार घ० २३ प० ४। अंग्रेजी ता० ७ नवम्बर। बंगला ता० २१ कार्तिक। फारसी ता० १५ जमादिउल्लसानी। फसली ता० १। कृत्तिका न० घ० ५४ प० २३। दिनमान घ० २७ प० २४। सूर्योदय घं० ६ मि० ३१। सूर्यास्त घं० ५ मि० २९। चन्द्रराशि मेष, बाद वृष घ० ८ प० ४४ पर होगी। आज इष्टि है। यात्रा शुभ नहीं।

मार्गशीर्ष कृष्ण २ शनिवार घ० २१ प० ५०। अंग्रेजी ता० ८ नवम्बर। बंगला ता० २२ कार्तिक। फारसी ता० १६ जमादिउल्लसानी। फसली ता० २। रोहिणी न० घ० ५४ प० ४। दिनमान घ० २७ प० २१। सूर्योदय घं० ६ मि० ३२। सूर्यास्त घं० ५ मि० २८। चन्द्रराशि वृष है। आज भद्रा घ० ५ प० २६ (रात्रिमें घं० २ मि० ४६) के बाद लगेगी। और स० सि० योग अ० सि० योग घ० ५४ प० ४ यावत् रहेगा। यात्रा शुभ नहीं है। गृहारम्भ मु० कुंभ लग्नमें ८ केतुके दानसे शुभ है।

मार्गशीर्षकृष्ण ३ रविवार घ० १९ प० २२। अंग्रेजी ता० ९ नवम्बर। बंगला ता० २३ कार्तिक। फारसी ता० १७ जमादिउल्लसानी। फसली ता० ३। मृ० न० घ० ५२ प० ३७। दिनमान घ० २० प० १८। सूर्योदय घं० ६ मि० ३२। सूर्यास्त घं० ५ मि० २८। चन्द्रराशि वृष। बाद मिथुन घ० २३ प० २० के उपरांत होगी। आज भद्रा घ० १९ प० २३। (दिनमें घं० २ मि० १७) यावत् रहेगी। संकटी गणेश ४ व्रतम्। घं० उ० ए० रा० घं० ७ मि० २७ पर होगा। यात्रा शुभ नहीं है।

मार्गशीर्षकृष्ण ४ सोमवार घ० १४ प० ५७। अंग्रेजी ता० १० नवम्बर। बंगला ता० २४ कार्तिक। फारसी ता० १८ जमादिउल्लसानी। फसली ता० ४। आ० न० घ० ५० प० २३। दिनमान घ० २७ प० १५। सूर्योदय घं० ६ मि० ३३। सूर्यास्त घं० ५ मि० २७। चन्द्रराशि मिथुन है। आज प० यात्रा मु० सिंह लग्नमें शुभ है।

मार्गशीर्षकृष्ण ५ मंगलवार घ० ११ प० ३७। अंग्रेजी ता० ११ नवम्बर। बंगला ता० २५ कार्तिक। फारसी ता० १९ जमादिउल्लसानी। फसली ता० ५। पु० न० घ० ४७ प० १९। दिनमान घ० २७ प० १२। सूर्योदय घं० ६ मि० ३४। सूर्यास्त घं० ५ मि० २६। चन्द्रराशि मिथुन। वाद कर्क घ० ३३ प० ५ के वाद होगी। आज त्रि० न० ४ च० वृश्चिक राशिमें बुध घ० ६ प० ४१ पर होंगे। मासशून्य तिथि ५। प० यात्रा मु० सिंह लग्नमें ६ ति० के दानसे शुभ है।

मार्गशीर्ष कृष्ण ६ बुधवार घ० ६ प० ३६। अंग्रेजी ता० १२ नवम्बर। बंगला ता० २६ कार्तिक। फारसी ता० २० जमादिउल्लसानी। फसली ता० ६। पुष्य न० घ० ४३ प० ४०। दिनमान घ० २७ प० ९। सूर्योदय घं० ६ मि० ३४। सूर्यास्त घं० ५ मि० २६। चन्द्रराशि कर्क है। आज भद्रा घ० ६ प० ३६ (दिनमें घं० ९ मि० १२) के वादमे घ० ३२ प० ५० (रात्रिमें घं० ८ मि० ६) तक रहेगी। रवियोग घ० ४३ प० ४० तक रहेगा। यात्रा शुभ नहीं है।

मार्गशीर्षकृष्ण ७ गुरुवार घ० ... प० ...। अंग्रेजी ता० १३ नवम्बर। बंगला ता० २७ कार्तिक। फारसी ता० २१ जमादिउल्लसानी। फसली ता० ७। श्लेषा न० घ० ३९ प० ३७। दिनमान घ० २७ प० ६। सूर्योदय घं० ६ मि० ३५। सूर्यास्त घंत ५ मि० २५। चंद्रराशि कर्क, वाद सिंह घ० ३९ प० ३७ पर होगी। महाभैरवाष्टमी व्रतम् ८ सर्वेषां। शीतलादर्शनं ८। कालभैरवयात्रा। यात्रा शुभ नहीं है।

मार्गशीर्ष कृष्ण ९ शुक्रवार घ० ४९ प० १०। अंग्रेजी ता० १४ नवम्बर। बंगला ता० २८ कार्तिक। फारसी ता० २२ जमादिउल्लसानी। फसली ता० ८। मघा न० घ० ३५ प० २५। दिनमान घ० २७ प० ३। सूर्योदय घं० ६ मि० ३५। सूर्यास्त घं० ५ मि० २५। चन्द्रराशि सिंह है। आज मासान्त है। यात्रा शुभ नहीं है।

मार्गशीर्षकृष्ण १० शनिवार घ० ४३ प० १९। अंग्रेजी ता० १५ नवम्बर। बंगला ता० २९ कार्तिक। फारसी ता० २३ जमादिउल्लसानी। फसली ता० ९। पू० न० घ० ३१ प० १९। दिनमान घ० २७ प० १। सूर्योदय घं० ६ मि० ३६ सूर्यास्त घं० ५ मि० २४। चन्द्रराशि सिंह। वाद कन्या घ० ४९

प० १६ पर होगी। आज भद्रा घ० १६ प० १४। (दिनमें घ० १ मि० ९ के बादसे घ० ४३ प० १९। रात्रिमें घं० ११ मि० ५१ तक रहेगी) शुक्रका अस्त पश्चिममें घ० ४१ प० ३९ पर होगा। मास दर्वति १०। यात्रा शुभ नहीं है।

मार्गशीर्षकृष्ण ११ रविवार घ० ३७ प० ४१। अंग्रेजी ता० १६ नवम्बर। बंगला ता० ३० कार्तिक। फारसी ता० २४ जमादिउल्लसानी। फसली ता० १०। उ० न० घ० २७ प० २०। दिनमान घ० २६ प० ५८। सूर्योदय घं० ६ मि० ३६ सूर्यास्त घं० ५ मि० २४। चन्द्रराशि कन्या है। आज वृश्चिक संक्रान्ति घ० १२ प० ३९ पर होगी। मु० ४५ फ० समर्घतार संक्रान्ति पुण्यकाल घं० ११ मि० ४० यावत्। उत्पन्ना ११ व्रतं सर्वेषां। स० सि० यो० यापी जयदयोग घ० २७ प० २० यावत् रहेगा। यात्रा शुभ नहीं है।

मार्गशीर्षकृष्ण १२ सोमवार घ० ३२ प० ३५। अंग्रेजी ता० १७ नवम्बर। बंगला ता० १ मार्गशीर्ष। फारसी ता० २५ जमादिउल्लसानी। फसली ता० ११। ह० न० घ० २३ प० ४८। दिनमान घ० २६ प० ५५। सूर्योदय घं० ६ मि० ३७ सूर्यास्त घं० ५ मि० २३। चन्द्रराशि कन्या। बाद तुला घ० ४२ प० २२ पर होगी। आजसे बंगला मार्गशीर्ष आरंभ हुआ। यात्रा नहीं है।

मार्गशीर्ष कृष्ण १३ मंगलवार घ० २८ प० ६। अंग्रेजी ता० १८ नवम्बर। बंगला ता० २ मार्गशीर्ष। फारसी ता० २६ जमादिउल्लसानी। फसली ता० १२। चित्रा न० घ० २० प० ५७। दिनमान घ० २६ प० ५३। सूर्योदय घं० ६ मि० ३७। सूर्यास्त घं० ५ मि० २३। चन्द्रराशि तुला है। आज भद्रा घ० २८ प० ६ (दिनमें घं० ५ मि० ५१) के बादसे घ० ५६ प० १७ (रात्रिमें घं० ५ मि० ८) तक रहेगी। भौमप्रदोष १३ व्रतं मासशिवरात्रि व्रतम् १४। यात्रा शुभ नहीं है।

मार्गशीर्ष १४ बुधवार घ० २४ प० २९। अंग्रेजी ता० १९ नवम्बर। बंगला ता० ३ मार्गशीर्ष। फारसी ता० जमादिउल्लसानी। फसली ता० १३। स्वाती न० घ० १८ प० ५८। दिनमान घ० २६ प० ५०। सूर्योदय घं० ६ मि० ३८। सूर्योदय घं० ६ मि० ३८। सूर्यास्त घं० ५ मि० २२। चन्द्रराशि तुला है। आज अनुराधा नक्षत्रमें सूर्य घ० २९ प० ५५ पर प्रवेश करेंगे। सिनीवाली ३०। यात्रा शुभ नहीं है।

मार्गशीर्ष कृष्ण ३० गुरुवार घ० २१ प० ५३। अंग्रेजी ता० २० नवम्बर। बंगला ता० ४ मार्गशीर्ष। फारसी ता० २८ जमादिउल्लसानी। फसली ता० १४। विशाखा न० घ० १७ प० ११। दिनमान घ० २६ प० ४७। सूर्योदय घं० ६ मि० ३८। सूर्यास्त घं० ४ मि० २२। चन्द्रराशि तुला, बाद वृश्चिक घ० ३ प० ७ के बाद होगी। दर्शश्राद्धम् ३०। कुहू ३०। यात्रा शुभ नहीं है।

मार्गशीर्ष शुक्ल १ शुक्रवार घ० २० प० २८। अंग्रेजी ता० २१ नवम्बर। बंगला ता० ५ मार्गशीर्ष। फारसी ता० २९ जमादिउल्लसानी। फसली ता० १५। अनु० न० घ० १७ प० ५४। दिनमान घ० २६ प० ४५। सूर्योदय घं० ६ मि० ३९। सूर्यास्त घं० ५ मि० २१। चन्द्रराशि वृश्चिक है। आज चन्द्रदर्शन होगा। मु. १५ फलं महर्घता। स० सि० योग घ० १७ प० ५४ यावत् रहेगा। दृष्टिः। यात्रा शुभ नहीं है।

मार्गशीर्ष शुक्ल २ शनिवार घ० २० प० १८। अंग्रेजी ता० २२ नवम्बर। बंगला ता० ६ मार्गशीर्ष। फारसी ता० १ रज्जब। फसली ता० १५। ज्येष्ठा न० घ० १९ प० ७। दिनमान घ० २६ प० ४३। सूर्योदय घं० ६ मि० ३६। सूर्यास्त घं० ५ मि० २१। चन्द्रराशि वृश्चिक, बाद धन घ० १६ प० ७ पर होगी। आज मु० म० रज्जब ७ आरम्भ हुआ। रम्भाव्रतम् २०। यात्रा शुभ नहीं है।

मार्गशीर्ष शुक्ल ३ रविवार घ० २१ प० २६। अंग्रेजी ता० २३ नवम्बर। बंगला ता० ७ मार्गशीर्ष। फारसी ता० २ रज्जब। फसली ता० १७। मूल न० घ० २१ प० ३९। दिनमान घ० २६ प० ४०। सूर्योदय घं० ६ मि० ४०। सूर्यास्त घं० ५ मि० २०। चन्द्रराशि धन है। आज घ० ५२ प० ३८ (रात्रिमें घं० ३ मि० २३) के बादसे भद्रा लगेगी। स० सि० योग घ० २१ प० ३९ यावत् रहेगा। यात्रा शुभ नहीं है।

मार्गशीर्ष शुक्ल ४ सोमवार घ० २३ प० ५०। अंग्रेजी ता० २४ नवम्बर। बंगला ता० ८ मार्गशीर्ष। फारसी ता० ३ रज्जब। फसली ता० १८। पू० न० घ० २५ प० २५। दिनमान घ० २६ प० ३८। सूर्योदय घं० ६ मि० ४०। सूर्यास्त घं० ५ मि० २०। चन्द्रराशि धन। बाद मकर घ० ४१ प० ३८ पर होगी। आज भद्रा घ० २३ प० ५०। (दिनमें घं० ४ मि० १२ तक रहेगी।)

सायन धन संक्रान्तिः घ० ३७ प० ४१ पर होगी । विनायकी गणेश ४ व्रतम् । रवियोग घ० २५ प० २९ यावत् । यात्रा शुभ नहीं है ।

मार्गशीर्षशुक्ल ५ मंगलवार घ० २७ प० २५ । अंग्रेजी ता० २५ नवम्बर । बंगला ता० ९ मार्गशीर्ष । फारसी ता० ४ रज्जब । फसली ता० १९ । उ० न० घ० ३० प० १६ । दिनमान घ० २६ प० ३६ । सूर्योदय घ० ६ मि० ४१ सूर्यास्त घं० ५ मि० १९ । चन्द्रराशि मकर है । आज कर्कोटक नाग ५ । यात्रा शुभ है ।

मार्गशीर्षशुक्ल ६ बुधवार घ० ३१ प० ५४ । अंग्रेजी ता० २६ नवम्बर । बंगला ता० १० मार्गशीर्ष । फारसी ता० ५ रज्जब । फसली ता० २० । श्र० न० घ० ३५ प० ५९ । दिनमान घ० २६ प० ३३ । सूर्योदय घं० ६ मि० ४१ सूर्यास्त घं० ५ मि० १६ । चन्द्रराशि मकर है । आज शुक्रका उदय पूर्वमें घ० ४३ प० ५७ पर होगा । स्कंद ६ । चम्पाषष्ठी । यात्रा शुभ नहीं है ।

मार्गशीर्षशुक्ल ७ गुरुवार घ० ३७ प० ४ । अंग्रेजी ता० २७ नवम्बर । बंगला ता० ११ मार्गशीर्ष । फारसी ता० ६ रज्जब । फसली ता० २१ । ध० न० घ० ४२ प० १९ । दिनमान घ० २६ प० ३१ । सूर्योदय घं० ६ मि० ४२ सूर्यास्त घ० ५ मि० १८ । चन्द्रराशि मकर । बाद कुम्भ घ० ९ प० ९ के बाद होगी । आज भद्रा घ० ३७ प० ४ । (रात्रिमें घं० ९ मि० ३१ के उपरान्त लगेगी ।) यायी जयप्रदयोग घ० ३७ यावत् । यात्रा शुभ नहीं है ।

मार्गशीर्षशुक्ल ८ शुक्रवार घ० ४२ प० २५ । अंग्रेजी ता २८ नवम्बर । बंगला ता० १२ मार्गशीर्ष । फारसी ता० ७ रज्जब । फसली ता० २२ । श० न० घ० ४८ प० ५१ । दिनमान घ० २६ प० २९ । सूर्योदय घं० ६ मि० ४२ सूर्यास्त घं० ५ मि० १८ । चन्द्रराशि कुम्भ है । आज भ० ९ प० ४४ । (दिनमें घं० १० मि० ३५ तक रहेगी ।) अन्नपूर्णाष्टमी । यात्रा शुभ नहीं है ।

मार्गशीर्षशुक्ल ९ शनिवार घ० ४७ प० ३९ । अंग्रेजी ता० २९ नवम्बर । बंगला ता० १३ मार्गशीर्ष । फारसी ता० ८ रज्जब । फसली ता० २३ । पू० न० घ० ५५ प० ६ दिनमान घ० २६ प० २७ । सूर्योदय घं० ६ मि० ४३ । सूर्यास्त घं० ५ मि० १७ । चन्द्रराशि कुम्भ । बाद मीन घ० ३८ प० ३४ के उपरान्त लगेगी । आज मूल १ घ० धन राशिमें बुध घ० १० प० १७ पर होगा । छत्रपादि ७ । रवियोग घ० ६० यावत् रहेगा । यात्रा शुभ नहीं है ।

मार्गशीर्ष शुक्ल १० रविवार घ० ५२ प० १४ । अं० ता० ३० नवम्बर । बंगला ता० १४ मार्गशीर्ष । फारसी ता० ६ रजब । फसली ता० २४ । उ० न० घ० ६० प० ० । दिनमान घ० २६ प० २५ । सूर्योदय घं० ६ मि० ४३। सूर्यास्त घं० ५ मि० १७ । चन्द्रराशि मीन है । आज रवियोग स० सि० योग घ० ६० यावत् है । यात्रा शुभ नहीं है ।

मार्गशीर्ष शुक्ल ११ सोमवार घ० ५५ प० ५७ । अं० ता० १ दिसम्बर । बंगला ता० १५ मार्गशीर्ष । फारसी ता० १० रजब । फसली ता० २५ । उ० न० घ० प० ५० । दिनमान घ० २६ प० २३ । सूर्योदय घं० ६ मि० ४३ । सूर्यास्त घं० ५ मि० १७ । चन्द्रराशि मीन है । आज भद्रा घ० २४ प० ५ (दिनमें घं० ४ मि० २१) के बादसे घ० ५५ प० ५७ (रात्रिमें घं० ५ मि० ६) तक रहेगी । अं० म० दिसम्बर १२ शुरू हुआ । मोक्षदा ११ व्रतम् सर्वेषाम् । यायी जयप्रद योग है घ० ० प० ५० के उपरान्त । यात्रा शुभ नहीं है ।

मार्गशीर्ष शुक्ल १२ मंगलवार घ० ०८ प० ५८ । अं० ता० २ दिसम्बर । बंगला ता० १६ मार्गशीर्ष । फारसी ता० ११ रजब । फसली ता० २६ । रेवती न० घ० ५ प० ३५ । दिनमान घ० २६ प० २२ । सूर्योदय घं० ६ मि० ४४ । सूर्यास्त घं० ५ मि० १६ । चन्द्रराशि मीन, बाद मेष घ० ५ प० ३५ उपरान्त होगी । आज ज्येष्ठा नक्षत्रमें सूर्य घ० ३६ प० ५६ पर होगा । बुधका उदय पश्चिममें घ० ४९ प० २९ पर होगा । हरिवासर घं० ११ मि० २२ यावत् बाद पारण । स्थायी कार्यार्हयोग घ० ५ प० २५ उपरान्त । स० सि० योग घ० ५ प० ३५ उपरान्त यात्रा शुभ नहीं है ।

मार्गशीर्ष शुक्ल १३ बुधवार घ० ५९ प० ४७ । अं० ता० ३ दिसम्बर । बंगला ता० १७ मार्गशीर्ष । फारसी ता० १२ रजब । फसली ता० २७ । अश्विनी न० घ० ९ प० १९ । दिनमान घ० २६ प० २० । सूर्योदय घं० ६ मि० ४४ । सूर्यास्त घं० ५ मि० १६ । चन्द्रराशि मेष । प्रदोष १३ व्रतम् । मृत्युयोग घ० ९ प० १६ यावत् । यात्रा शुभ नहीं है ।

मार्गशीर्ष शुक्ल १४ गुरुवार घ० ५९ प० ४६ । अं० ता० ४ दिसम्बर । बंगला ता० १८ मार्गशीर्ष । फारसी ता० १३ रजब । फसली ता० २८ । भरणी न० घ० ११ प० ४५ । दिनमान घ० २६ प० १८ । सूर्योदय घं० ६

मि० ४४। सूर्यास्त घं० ५ मि० १६। चन्द्रराशि मेष, बाद वृष घ० २७ प० २ के बाद होगी। आज भद्रा घ० ५९ प० ४६ (रात्रिमें घं० ६ मि० ३८) के बाद लगेगी। पिशाचमोचनके तीर्थमें पित्रादिके उद्देश्यसे श्राद्ध। पिशाचमोचन यात्रा। विमल तीर्थ यात्रा। यात्रा शुभ नहीं है।

मार्गशीर्षशुक्ल १५ शुक्रवार घ० ५८ प० ३२। अंग्रेजी ता० ५ दिसम्बर। बंगला ता० १६ मार्गशीर्ष। फारसी ता० १४ रजब। फसली ता० २९। कृ० न० घ० १२ प० ३३। दिनमान घ० २६ प० १७। सूर्योदय घं० ६ मि० ४९ सूर्यास्त घं० ५ मि० १५। चन्द्रराशि वृष है। आज भद्रा भ० २९ प० ९ सायंकालमें घं० ६ मि० २४ तक रहेगी। महामार्गीयोग घं० ११ मि० ४७ उपरान्त। व्रताय १५। दत्तजयन्ती १५। यात्रा शुभ नहीं है।

मार्गशीर्षकृष्ण ३ रवौ मिश्रमानं ४५।८ दिनमानं २७।१८

सू	मं.	बु	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	३	६	२	७	८	०	६
२३	१४	२७	२८	४	१३	१	१
२८	२५	३७	३०	४८	१३	२०	२०
२२	५७	२	२३	२८	४९	२६	२६
६०	२२	१०५	२०/२८	२९/१९	५	३	३
२६	१	१३	व	व	३५	११	११
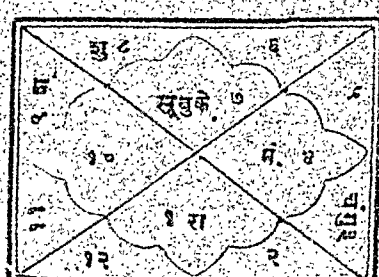
मार्गशीर्षकृष्ण ११ रवौ मिश्रमानं ४४।५२ दिनमानं २६।५८

सू	मं.	बु	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	३	७	२	७	८	०	६
०	१६	९	२८	०	१३	१	१
१२	५८	४२	२२	३	५६	८	८
३१	१७	४५	८	५	१६	२१	२१
६०	१८	१०२	११/१	५५/५८	६	३	३
४०	०८	२	व	व.	२२	११	११

मार्गशीर्षशुक्ल ३ रवौ मिश्रमानं घ. ४४ प. ३८ दिनमान घ. २६ प. ४०

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के
७	३	७	२	६	८	०	६
७	१९	२१	२८	२६	१४	०	०
३८	१०	२२	३	१३	३८	४६	४६
११	३	५५	१०	२३	२८	६	६
६०	३५	९५	४/१	२४/५९	६	३	३
५३	२	३९	व	म	३३	११	११
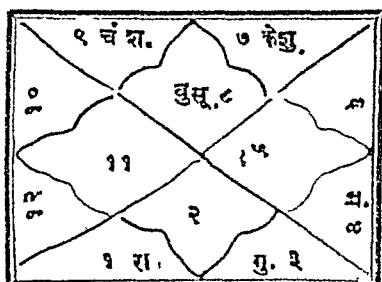
मार्गशीर्षशुक्ल १० रवौ मिश्रमानं ४४।२३ दिनमानं २६।२५

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	३	८	२	६	८	०	६
१४	२०	२	२७	२३	१५	०	०
४४	५८	१५	३३	०	२३	२३	२३
५२	२३	३	१	१	२	५१	५१
६१	११	८९	५५/४	८३/४७	७	३	३
३	५०	५	व	व	३०	११	११
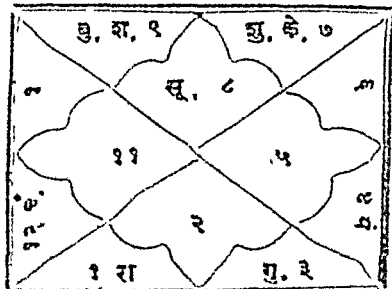
मार्गशीर्ष मास गोचर फलम् ।

इस मासमें मिथुन, वृश्चिक, धन, वृष, राशि वालोंको उदर पीड़ा मानसिक चिन्ता, शत्रुओंसे भय, किन्तु रोजगारमें लाभ रहेगा, खर्च अधिक अपने मित्रोंसे झमेला लगा रहेगा, घरमे भी नुकसान झगड़ा होगा, बेचयनी रहेगी, २० दिन अच्छे रहेंगे, बाकी दिन खराब बीतेंगे, पीपलमें शनिवारको पानी देनेसे शुभ

होगा, १ दफे भोजन करें, मेष, कन्या, कर्क, तुला, राशिवालोंको यह मास मध्यम रूपसे अच्छा ही रहेगा, पीछेके दिनसे इस मासमें अच्छा ही कारबार फायदा रहेगा, २० दिन अच्छे और दिन समतासे बीतेंगे, किन्तु दिलमें फिकर लगा रहेगा, घरमें भी कुछ कलह रहेगा। भाइयोंमें विरोध रहेगा, विष्णु स्तोत्र का पाठ करनेसे सब चिन्तायें दूर होगी।

मार्गशीर्ष फलम्।

मार्गशीर्ष मासमें वर्षा होनेसे फसलमें अधिक हानि होगी, गेहूँ, चना, मसूर, यव, इत्यादि का भाव तेज हो जायगा, उड़द, मूंग, धान, चावलका भाव पहले सम होकर बादमें मन्दा हो जायगा। ज्वार, कोदव, बाजरा इत्यादिका भाव मन्दा रहेगा, कपड़ा, रूई, ऊन, कम्बलका भाव तेज हो जायगा। पीतल-से लेकर जस्ता तक तेज होनेकी सम्भावना रहेगी, सर्दी होनेसे पशुओंकी हानि होगी, बालकोंको रोग पैदा होगा, राजा-प्रजामें कुछ गड़बड़ रहेगी और इस मासमें अन्नका भाव समान रहेगा और वर्षाका योग प्रायः पहले कम, अन्तमें हवा अधिक चलेगी, जाड़ा शीघ्र सतावेगा, वर्षा कहीं कहीं होगी, अन्धकार तूफान बहुत चलेंगे। तिथि २ से लेकर १२ तक वर्षाका कुछ योग पाया जाता है। मतान्तरसे बहुत योग है।

इस महीनेमें दक्षिणायन सूर्य एवं दक्षिणगोल हेमन्तऋतु रहेगी। और अंग्रेजी माह १२ दिसम्बर ता० ३१ सन् १९३० ई० पौष शुक्ल १२ गुरु तक रहेगी। बाद अंग्रेजी माह १ जनवरी ता० ३१ सन् १९३१ ई० होगी।

पौषकृष्ण १ शनिवार घ० ५६ प० ६। अंग्रेजी ता० ६ दिसम्बर। बंगला ता० २० मार्गशीर्ष। फारसी ता० १५ रज्जब। फसली ता० १। रो० न० घ० १२ प० ५१। दिनमान घ० २६ प० १५। सूर्योदय घं० ६ मि० ४५। सूर्यास्त घं० ५ मि० १५। चन्द्रराशि वृष। बाद मिथुन घ० ४१ प० १२ पर होगी। आज स० सि० यो० अ० सि० यो० घ० १२ प० ५१ तक रहेगा। और पार्श्री

कार्याह् यो० घ० १२ प० ५१ तक है तथा वधू प्रवेश मुहूर्त कुंभ लग्नमें ४ घं० ८ के दानसे शुभ है। द० प० यात्र मुहूर्त तुला लग्नमें शुभ है।

पौषकृष्ण २ रविवार घ० ५२ प० ४१। अंग्रेजी ता० ७ दिसम्बर। बंगला ता० २१ मार्गशीर्ष। फारसी ता० १६ रज्जब। फसली ता० २। मृ० न० घ० ११ प० ३९। दिनमान घ० २६ प० १४। सूर्योदय घं० ६ मि० ४५। सूर्यास्त घं० ५ मि० १५। चन्द्रराशि मिथुन है। आज मार्गी शुक्र घ० ० प० २३ पर होगा। मासदग्ध ति० २। यात्रा शुभ नहीं है।

पौष कृष्ण ३ सोमवार घ० ४८ प० २३। अंग्रेजी ता० ८ दिसम्बर। बंगला ता० २२ मार्गशीर्ष। फारसी ता० १७ रज्जब। फसली ता० ३। आर्द्रा न० घ० ९ प० ३८। दिनमान घ० २६ प० १३। सूर्योदय घं० ६ मि० ४५। सूर्यास्त घं० घं० ७ मि० १५। चन्द्रराशि मिथुन, बाद कर्क घ० ५२ प० २७ के बाद होगी। आज भद्रा घ० ५२ प० २७ के बाद होगी। आज भद्रा घ० २० प० ३२ (दिनमें घं० २ मि० ५८) के उपरान्त घ० ४८ प० २३ (रात्रिमें घं० २ मि० ६) तक रहेगी। रेवती न० ४ च० मीन राशिमें राहु और चित्रा न० २ च० कन्याराशिमें केतु घ० १४ प० १ पर होगा। आवश्यके पश्चिमयात्रा मु० तुला लग्नमें २ तिथीके दानसे शुभ है।

पौष कृष्ण ४ मंगलवार घ० ४३ प० २४। अंग्रेजी ता० ९ दिसम्बर। बंगला ता० २३ मार्गशीर्ष। फारसी ता० १८ रजब। फसली ता० ४। पुनर्वसु न० घ० ६ प० ४४। दिनमान घ० २६ प० ११। सूर्योदय घं० ६ मि० ४६। सूर्यास्त घं० ५ मि० १४। चन्द्रराशि कर्क है। आज अंगारकी गणेश ४ व्रतम्। चन्द्रउदय स्टं० टा० घं० ८ मि० ३१ उपरान्त होगा। स्थायी कार्याह् योग घ० ६ प० ४४ उपरान्त। यात्रा शुभ नहीं।

पौष कृष्ण ५ बुधवार घ० ३७ प० ५५। अंग्रेजी ता० १० दिसम्बर। बंगला ता० २४ मार्गशीर्ष। फारसी ता० १९ रजब। फसली ता० ५। पुष्य न० घ० ५६ प० १३ दिनमान घ० २६ प० १०। सूर्योदय घं० ६ मि० ४६। सूर्यास्त घं० ५ मि० १४। चन्द्रराशि कर्क, बाद सिंह घ० ५९ प० १५ के उपरान्त होगी। यात्रा शुभ नहीं है।

पौषकृष्ण ६ गुरुवार घ० ३२ प० ७। अंग्रेजी ता० ११ दिसम्बर। बंगला ता० २५ मार्गशीर्ष। फारसी ता० २० रज्जब फसली ता० ६। म०

म० घ० ५९ प० ४ दिनमान घ० २६ प०। सूर्योदय घं० ६ मि० ४८। सूर्यास्त घं० ५ मि० १४। चन्द्रराशि सिंह है। आज घ० ३२ प० ७ (साय० घं० ७ मि० ३७) के बादसे घ० ५८ प० ९ (रा० घं० ९ मि० २६) तक भद्रा रहेगी। रवियोग घ० ३५ यावत रहेगा। वधूप्रवेश मु० कुम्भ लग्नमे ७ केतूके दानसे शुभ है। यात्रा शुभ नहीं।

पौषकृष्ण ७ शुक्रवार घ० २६ प० १२। अंग्रेजी ता० १२ दिसंवर। बंगला ता० २६ मार्गशीर्ष। फारसी ता० २१ रज्जब फसली ता० ७। पू० न० घ० ५० प० ५२ दिनमान २६ प०। सूर्योदय घं० ५ मि० ४६। सूर्यास्त घ० ५ मि० १४। चन्द्रराशि सिंह है। आज भैरवाष्टमी है। द्वि० रा० मु० तुला लग्नमे शुभ है। यात्रा शुभ नहीं।

पौषकृष्ण ७ शनिवार घ० २० प० २४। अंग्रेजी ता० १३ दिसम्बर। बंगला ता० २७ मार्गशीर्ष। फारसी ता० २३ रजब फसली ता० ८। उ० न० घ० ४६ प० ४१। दिनमान घ० २६ प० ७ सूर्योदय घं० ६ मि० ४६। सूर्यास्त घं० ५ मि० १४। चन्द्रराशि सिंह बाद कन्या घ० ४ प० ५२ पर होगी। शीतलादर्शन ८। वधू प्र० मु० गोधूलि० शुभ है। यात्रा शुभ नहीं है।

पौषकृष्ण ९ रविवार घ० १४ प० ५४। अंग्रेजी ता० १४ दिसम्बर। बंगला ता० २८ मार्गशीर्ष। फारसी ता० २३ रज्जब। फसली ता० ९। ह० न० घं० ४३ प० १४। दिनमान घ० २६ प० ७। सूर्योदय घं० ६ मि० ४७ सूर्यास्त घं० ५ मि० १३। चन्द्रराशि कन्या है। आज भद्रा घ० ४२ प० २२। (रात्रिमें घं० ११ मि० ४४ के उपरान्त लगेगी। यायीजयदयोग घ० १४ प० ५४ यावत् रहेगा। स० सि० यो० अ० सि० यो० घ० ४३ प० १४ तक है। मासान्तः। यात्रा शुभ नहीं है।

पौषकृष्ण १० सोमवार घ० ९ प० ५१। अंग्रेजी ता० १५ दिसम्बर। बंगला ता० २९ मार्गशीर्ष। फारसी ता० १४ रज्जब। फसली ता० १०। चि० न० घ० ४० प० १४। दिनमान घ० २६ प० ६। सूर्योदय घं० ६ मि० ४७ सूर्यास्त घं० ५ मि० १३। चन्द्रराशि कन्या। बाद तुला घ० ११ प० ४४ बाद होगी। आज घ० ९ प० ५१। (दिनमें घं० १० मि० १३ तक भद्रा रहेगी। और मूल न० धन राशिमें सूर्य घ० ४१ प० ११ पर प्रवेश करेंगे।

शु० १९ फ० महर्घता। संक्रान्ति पु० फा० घं० १२ यावत्। यात्रा शुभ नहीं है।

पौषकृष्ण ११ मंगलवार घ० ५ प० ३२। अंग्रेजी ता० १६ दिसम्बर। बंगला ता० १ पौष। फारसी ता० २५ रज्जब। फसली ता० ११। स्वा० न० घ० ३८ प० ६ दिनमान घ० २६ प० ५। सूर्योदय घं० ६ मि० ४७ सूर्यास्त घं० ५ मि० १६। चन्द्रराशि तुला है। आजसे बंगला पौष आरंभ हुआ। सफला ११ व्रतं सर्वेषां यहांपर सुरुवा १२ व्रत करना चाहिये। यात्रा शुभ नहीं है।

पौष कृष्ण १२ बुधवार घ० ५८ प० ३५। अं० ता० १७ दिसम्बर। बंगला ता० २ पौष। फारसी ता० २६ रज्जब। फसली ता० १२। विशाखा न० घ० ३६ प० ४७। दिनमान घ० २६ प० ५। सूर्योदय घं० ६ मि० ४७। सूर्यास्त घं० ५ मि० १३। चन्द्रराशि तुला, बाद वृश्चिक घ० २२ प० ९ तक तक है। आज भद्रा घ० ५९ प० ३९ (रात्रिमें घं० ६ मि० ३७) के उपरान्त लगेगी। प्रदोष १३ व्रतम्। यात्रा शुभ नहीं है।

पौष कृष्ण १४ गुरुवार घ० ५८ प० १९। अंग्रेजी ता० १८ दिसम्बर। बंगला ता० ३ पौष। फारसी ता० २७ रज्जब। फसली ता० १३। अनुराधा न० घ० ३६ प० ३३। दिनमान घ० २६ प० ४। सूर्योदय घं० ६ मि० ४७ सूर्यास्त घं० ५ मि० १३। चन्द्रराशि वृश्चिक है। आज भद्रा घ० २८ प० ५७ (दिनमें घं० ४ मि० २२) तक रहेगी। मास शिवरात्रि व्रतं। स० सि० योग घ० ३६ प० ३३ यावत् है। यात्रा शुभ नहीं।

पौष कृष्ण ३० शुक्रवार घ० ५८ प० १८। अंग्रेजी ता० १९ दिसम्बर। बंगला ता० ४ पौष। फारसी ता० २८ रज्जब। फसली ता० १४। ज्येष्ठा न० घ० ३७ प० २०। दिनमान घ० २६ प० ४। सूर्योदय घं० ६ मि० ४७। सूर्यास्त घं० ५ मि० १३। चन्द्रराशि वृश्चिक, बाद धन घ० ३७ प० ३० पर होगी। आज दर्शश्राद्धं ३०। कुहू ३०। यात्रा शुभ नहीं है।

पौष शुक्ल १ शनिवार घ० ५९ प० ३४। अंग्रेजी ता० २० दिसम्बर। बंगला ता० ५ पौष। फारसी ता० २९ रज्जब। फसली ता० १५। मूल न० घ० ३९ प० ४५। दिनमान घ० २६ प० ४। सूर्योदय घं० ६ मि० ४७। सूर्यास्त घं० ५ मि० १३। चन्द्रराशि धन है। यात्रा शुभ नहीं है।

पौष शुक्ल २ रविवार घ० ६० प० ०। अंग्रेजी ता० २१ दिसम्बर। बंगला ता० ६ पौष। फारसी ता० ३० रजब। फसली ता० १६। पूर्वा न० घ० ४३ प० १७। दिनमान घ० २६ प० ३। सूर्योदय घं० ६ मि० ४७। सूर्यास्त घं० ५ मि० १३। चन्द्रराशि धनु, बाद मकर घ० ५६ प० २६ के बाद होगी। आज चन्द्रदर्शन होगा। मु० ३० फ० समता। शनिका अस्त पश्चिममें घ० ४२ प० १४ पर होगा। मासदग्ध २। यात्रा शुभ नहीं।

पौष शुक्ल २ सोमवार घ० २ प० ७। अंग्रेजी ता० २२ दिसम्बर। बंगला ता० ७ पौष। फारसी ता० १ साबान्। फसली ता० १७। उत्तरा न० घ० ४७ प० ५४। दिनमान घ० २६ प० ३। सूर्योदय घं० ६ मि० ४७। सूर्यास्त घं० ५ मि० १३। चन्द्रराशि मकर है। आज मुसलमानी म० ८ साहबान् आरम्भ हुआ। यायी जयददयोग घ० २ प० ७ के बादसे लगेगा। और मृ० यो० घ० ४७ प० ४५ यावत् रहेगा। यात्रा शुभ नहीं है।

पौषशुक्ल ३ मंगलवार घ० ५ प० ४८। अंग्रेजी ता० २३ दिसम्बर। बंगला ता० ८ पौष। फारसी ता० २ साबान्। फसली ता० १८। श्र० न० घ० ५३ प० २९। दिनमान घ० २६ प० ३। सूर्योदय घं० ६ मि० ४७ सूर्यास्त घं० ५ मि० १३। चन्द्रराशि मकर है। आज भद्रा घ० ३६ प० ५। (रात्रिमें घं० १० मि० १ के बाद लगेगी। आज वक्री बुध घ० १९ प० १३ पर होगा। विनायकी गणेश ४ व्रतम्। स्थायी कार्यार्ह, योग घ० १ प० ४८ के बाद लगेगा। रवियोग घ० ५३ प० २९ यावत्। यात्रा शुभ नहीं है।

पौषशुक्ल ४ बुधवार घ० १० प० २३। अंग्रेजी ता० २४ दिसम्बर। बंगला ता० ९ पौष। फारसी ता० ३ साबान्। फसली ता० १९। ध० न० घ० ५७ प० ४२। दिनमान घ० २६ प० ३। सूर्योदय घं० ६ मि० ४७। सूर्यास्त घं० ५ मि० १३। चन्द्रराशि मकर। बाद कुम्भ घ० २६ प० ३६ पर होगी। आज भद्रा घ० १० प० २३। (दिनमें घं० १० मि० ५६ तक रहेगी। सायन मकर संक्रांति घ० २४ प० ८ पर होगी। मासदग्ध ति० ४। यात्रा शुभ नहीं है।

पौषशुक्ल ५ गुरुवार घ० १५ प० ३८। अंग्रेजी ता० २५ दिसम्बर। बंगला ता० १० पौष। फारसी ता० ४ साबान। फसली ता० २०। श० न०

घ० ६० प० ० । दिनमान घ० २६ प० ३ । सूर्योदय घं० ६ मि० ४७ । सूर्यास्त घं० ५ मि० १३ । चन्द्रराशि कुम्भ है । आज रवियोग घ० ६० तक है । मास शून्य ति० ५ । (बड़ा दिन) यात्रा शुभ नहीं है ।

पौषशुक्ल ६ शुक्रवार घ० २० प० ४ । अंग्रेजी ता० २६ दिसम्बर । बंगला ता० ११ पौष । फारसी ता० ५ सावान् फासली ता० २१ । श० न० घ० ६ प० १७ । दिनमान घ० २६ प० ४ । सूर्योदय घं० ६ मि० ४७ । सूर्यास्त घं० ५ मि० १३ । चन्द्रराशि कुम्भबादमीन घ० ५६ प० ५ के बाद होगी । आज बौद्धजयन्ती ७ । यात्रा शुभ नहीं है ।

पौषशुक्ल ७ शनिवार घ० २६ प० १८ । अंग्रेजी ता० २७ दिसम्बर । बंगला ता० १२ पौष । फारसी ता० ६ सावान् फसली ता० २२ । पू० न० घ० १२ प० ४२ । दिनमान घ० २६ प० ४ । सूर्योदय घं० ६ मि० ४७ । सूर्यास्त घं० ५ मि० १३ । चन्द्रराशि मीन है । आज भद्रा घ० २६ प० १६ (दि० मे घं० ५ मि० १७) के बाद घ० ५८ प० ३२ (रात्रिमे० घं० ६ मि० १२) तक रहेगी । त्रिपुष्करयोगः घ० प० ४२ यावत रहेगा । यात्रा शुभ नहीं ।

पौषशुक्ल ८ रविवार घ० ३० प० ४९ । अंग्रेजी ता० २८ दिसम्बर । बंगला ता० १३ पौष । फारसी ता० ७ सावान् फसली ता० २२ । उ० न० घ० १८ प० ३५ । दिनमान घ० २६ प० ५ । सूर्योदय घं० ६ मि० ४७ सूर्यास्त घं० ५ मि० १३ । चन्द्रराशि मीन है । आज पू० पा० नक्षत्रमे सूर्य घ० ५३ प० ५८ पर होंगे । अन्नपूर्णाष्टमी । स० सि० यो० घ० १८ प० ३४ यावत् है । यात्रा शुभ नहीं है ।

पौषशुक्ल ९ सोमवार घं० ३४ प० २८ । अंग्रेजी ता० २९ दिसम्बर । बंगला ता० १४ पौष । फारसी ता० ८ सावान् फसली ता० २३ । रेवती न० घ० २३ प० २९ । दिनमान घ० २९ प० ५ सूर्यास्त घं० ६ मि ४७ । सूर्यास्त घं० ५ मि० १३ । चन्द्रराशि मीन बादमेश घ० २३ प० ३९ पर होगी । आज पापी (मुद्दई को) जय देनेवाला योग घ० २३ प०३० तक रहेगा । यात्रा शुभ नहीं ।

पौषशुक्ल १० मंगलवार घ० ३६ प० ५७ । अं० ता० ३० दिसम्बर । बंगला ता० १५ पौष । फारसी ता० ९ सावान् फसली ता० २४ । अ० न०

घ० २७ प० ३६ दिनमान घ० २७ प० ३६। सूर्योदय घं० ६ मि० ४७ प० सूर्यास्त घं० ५ मि० १३। चन्द्रराशि मेष है। आज र० यो० घ० ६० यावत् है। और स० सि० यो० अ० सि० यो० घ० २७ प० ३६ तक रहेगा। यात्रा शुभ नहीं है।

पौषशुक्ल ११ बुधवार घ० ३८ प० ११। अं० ता० ३१ दिसम्बर। बंगला ता० १६ पौष। फारसी ता० १० सावान्। फसली ता० २५ भ० न० घ० ३ प० २३। दिनमान घ० २६ प० ७ सूर्योदय घं० ५ मि० १३। चन्द्रादि मेष वाद वृष घ० ३१ प० ४६ पर होगी। आज भद्रा घ० ७ प० ३४ (दि० मे० घं० ९ मि० ४८) के बा घ० ३८ प० ११ (रा० मे० घं० १० मि० ३) तक रहेगी। पुत्रदा ११ व्रतं सर्वेषां। मन्वादि ११ यात्रा शुभ नहीं।

पौषशुक्ल १२ गुरुवार घ० ३८ प० ६। अंग्रेजी ता० १ जनवरी। बंगला ता० १७ पौष। फारसी ता० ११ सावान्। फसली ता० २६। कृ० न० घ० ३१ प० ५४। दिनमान घ० २६ प० ७। सुर्दोदय घं० ६ मि० ४७। सूर्यास्त घं० ५ मि० १३। चन्द्रराशि वृष है। आज अंग्रेजी महीना जनवरी सन् १९३१ ई० आरंभ हुआ। बुधका अस्त पश्चिममें घ० २० प० ४० पर आरंभ हुआ। यमदंडयोग घ० ३१ प० २४ यावत् रहेगा। यात्रा शुभ नहीं है। (न्यूईयर्सडे)

पौषशुक्ल १३ शुक्रवार घ० ३६ प० ४४। अंग्रेजी ता० २ जनवरी। बंगला ता० १८ पौष। फारसी ता० १२ सावान्। फसली ता० २७। रो० न० घ० ३२ प० १०। दिनमान घ० २६ प० ८। सूर्योदय घं० ६ मि० ४६ सूर्यास्त घं० ५ मि० १४। चन्द्रराशि वृष है। आज प्रदोष १३ व्रत है। यात्रा शुभ नहीं है।

पौषशुक्ल १४ शनिवार घ० ३४ प० १४। अंग्रेजी ता० ३ जनवरी। बंगला ता० १९ पौष। फारसी ता० १३ सावान्। फसली ता० २८। मृ० न० घ० ३१ प० १८। दिनमान घ० २६ प० ६। सूर्योदय घं० ६ मि० ४६ सूर्यास्त घं० ५ मि० १४। चन्द्रराशि वृष। वाद मिथुन घ० १ प० ४२ पर होगी। आज घ० ३४ प० १४। रात्रिमें घं० ८ मि० २९ के वाद भद्रा लगेगी। र० यो० घ० ३१ प० १८ यावत रहेगा। यात्रा शुभ नहीं है।

पौषशुक्ल १५ रविवार घ० ३० प० ४५ । अंग्रेजी ता० ४ जनवरी । बंगला ता० २० पौष । फारसी ता० १४ सावान । फसली ता० २६ । आ० न० घ० ३६ प० १८ । दिनमान घ० २६ प० ११ । सूर्योदय घं० ६ मि० ४६ सूर्यास्त घं० ५ मि० १४ । चन्द्रराशि मिथुन है । आज भद्रा घ० २ प० ३९ (दिनमें घं० ७ मि० ४७ तक) रहेगी । आज शाकंभरी १५ । व्रताय १५ । माघ स्नानारंभः । (शवेवशात) यात्रा शुभ नहीं है ।

पौष कृष्ण २ रवौ मिश्रमानम् ४०।१० दिनमान २६।१४

सू	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	३	८	२	६	८	०	६
२१	२२	११	२६	२२	१६	०	०
५२	२०	४३	५७	२८	७	१	१
४९	१६	१७	१४	२५	३९	३५	३५
६१	७	७४	५ ८०	३ १८	३	३	३
१२	३	१३	व	मा	३३	११	११
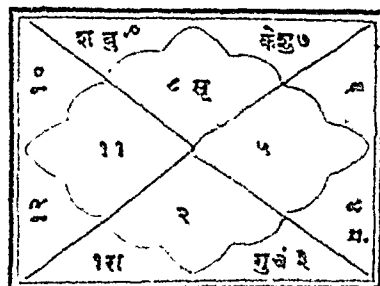
पौष कृष्ण ६ रवौ मिश्रमानम् ४३।६ दिनमान २६।७

सू.	मं.	बु.	गु.	शु	श.	रा.	के.
७	३	८	२	९	८	११	५
२९	२३	१८	२६	२३	१९	२९	२९
१	१२	५३	१२	३९	५५	३९	३०
३३	२८	२	४९	३१	३३	२०	२०
६१	०	५८	६ ४९	१९	७	३	३
१९	७७	५०	व	१८	२०	११	११
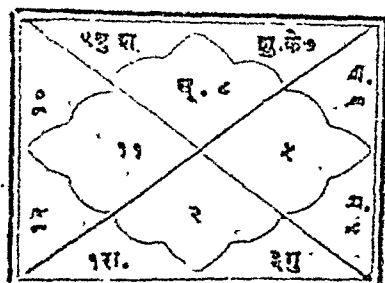
पौषशुक्ल २ रवौ मिश्रमानं ४३।५१ दिनमान २६।३१

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के
८	३	८	२	९	८	११	५
६	२३	२२	२५	२६	१७	२९	२९
१०	३२	२७	३३	२३	४६	१७	१७
५६	१	४७	३६	२९	१	४	५
६१	५ १	८	७ ३८	७	७	३	३
२३	व	५१	व	३०	३०	११	११

पौषशुक्ल ८ रवौ मिश्रमानं ४३।४४ दिनमानं २६।३

सू	मं.	बु	गु.	शु.	श.	रा.	के
८	३	८	२	७	८	११	५
१३	२३	२१	२४	०	१७	१८	२८
२०	१५	११	२९	२८	३६	५४	५४
४४	१६	५६	५	५४	२९	५०	५०
६१	६२ ११	३२ ११	८ ३२	४०	७	३	३
२५	व	व	व	५	३०	११	११
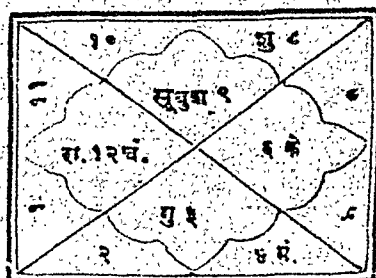
पौषशुक्ल १५ रवौ मिश्रमानं ४६।२६ दिनमानं २६।११

सू.	मं.	बु	गु.	शु,	श.	रा.	के
८	३	८	२	७	८	११	५
२०	२२	१५	२३	५	१९	२८	२८
३०	२१	२१	३३	३३	२५	३३	३२
४०	५२	३०	११	४५	५०	३४	३४
६१	१२ ११	३२ ११	८ २	४०	७	३	३
१५	व	व	व.	५	३०	११	११
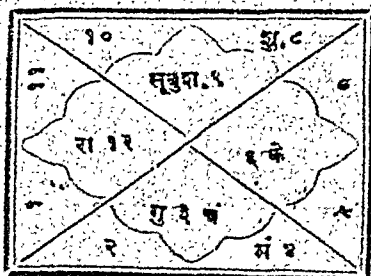
पौषमासगोचरफल।

इस मासमें मेष, तुला, कन्या, वृश्चिक, धन राशिवालोंको शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा बीतेगा। किन्तु सरदी लगी रहेगी, स्त्रियोंमें झगड़ा फिसाद बना रहेगा। खर्च भी मध्यम रहेगा, कारोबारमें उद्योग करनेसे फायदा रहेगा, किन्तु मेष, तुला, वृश्चिक वालोंको अच्छा ही रहेगा, औरोंको खराब रहेगा। वृष, मिथुन, कर्क, मीन, मकर, राशि वालोंको यह महीना अच्छा रहेगा, कारोबारमें तरक्की होगी, कोई नया काम करे तो फायदा होगा, किन्तु घरमें क्लेश बना रहेगा, मानसिक चिन्तायें लगी रहेंगी, सरदीसे मिजाज खराब रहेगा, गौको अन्न देनेसे लाभ होगा, इसमें सन्देह नहीं।

पौष मास फलम्।

इस मासमें शीत अधिक पड़ेगी, अन्नोंमें भी नुकसान पहुंचेगा और ३।४ दिन पानी बड़े जोरोंसे बर्षेगा और पर्वतके देशोंमें तुषारसे अधिक हानि पहुंचेगी, पूर्वकी ओर भी वर्षा होगी किन्तु चैत्रकी फसल अच्छी ही होगी, विशेष वर्षा होनेसे अन्नका भाव तेज होगा, जानवरोंको क्लेश रहेगा, प्रजामें आन्दोलन तथा विरोध बढ़ता जायगा, सबही चीजोंमें मंहगाई, रहेगी, किन्तु फसल कहीं २ अच्छी ही होगी और कहीं २ दरिद्र नारायण ही बने रहेंगे। मेघ मण्डल बड़े जोरोंसे चलेंगे। वर्षा जाते २ माघशुक्ल १ से १५ वर्षाका योग पाया गया है। गर्जना अन्धकार झड़ खूब पड़ेगी और गरीबोंको दुःख होगा।

इस महीनेमें दक्षिणायन सूर्य और दक्षिणगोल। हेमन्तर्तुः। माघ कृष्ण ११ बुधवार तक रहेगी। बाद उत्तरायण सूर्य शिशिरर्तुः होगी। और अंग्रेजी महीना १ जनवरी ता० ३१ माघ शुक्ल १२ रविवार तक रहेगा। बाद फरवरी २ ता० २८ सन् १९३१ ई० होगा।

माघ कृष्ण १ सोमवार घ० २६ प० २४। अंग्रेजी ता० ५ जनवरी। बंगला ता० १ पौष। फारसी ता० १४ साबान्। फसली ता० १। पुनर्वसु न० घ० २६ प० ४५। दिनमान घ० २६ प० १२। सूर्योदय घं० ६ मि० ४६। सूर्यास्त घं० ५ मि० १४। चन्द्रराशि मिथुन, बाद कर्क घ० १२ प० २५ पर होगा। माघ महीने भर मूलक भक्षण नहीं करना चाहिये। चायी अदद्योग घ० २१ प० २४ यावत्। यात्रा शुभ नहीं है।

माघ कृष्ण २ मंगलवार घ० २१ प० १४। अंग्रेजी ता० ६ जनवरी। बंगला ता० २१ पौष। फारसी ता १५ सावान्। फसली ता० २। पुष्य न० घ० २३ प० २३। दिनमान घ० २६ प० १२। सूर्योदय घं० ६ मि० ४५। सूर्यास्त घं० ५ मि० १५। चन्द्रराशि कर्क है। आज भद्रा घ० ४८ प० ३८ (रात्रिमें घं० २ मि० १२) के बाद लगेगी। यात्रा शुभ नहीं है।

माघ कृष्ण ३ बुधवार घ० १५ प० ५२। अंग्रेजी ता० ७ जनवरी। बंगला ता० २३ पौष। फारसी ता० १६ सावान्। फसली ता० ३। श्लेषा न० घ० १९ प० ३२। दिनमान घ० २६ प० १४। सूर्योदय घं० ६ मि० ४५। सूर्यास्त घं० ५ मि० १५। चन्द्रराशि कर्क, बाद सिंह घ० १९ प० ३२ पर होगी। आज घ० १५ प० ५२ (दिनमें घं० १ मि० ६) तक भद्रा रहेगी। सौभाग्यसुन्दरी व्रतं। संकष्टीगणेश ४ व्रतं। चन्द्रउदय स्टै० टा० घं० ८ मि० ३२ पर होगा। यात्रा शुभ नहीं है।

माघकृष्ण ४ गुरुवार घ० १० प० ४। अंग्रेजी ता० ८ जनवरी। बंगला ता० २३ पौष। फारसी ता० १७ सावान्। फसली ता० ४। म० न० घ० १५ प० २७। दिनमान घ० २६ प० १६। सूर्योदय घं० ६ मि० ४८ सूर्यास्त घं० ५ मि० १५। चन्द्रराशि सिंह है। मासशून्य ति० ४। यात्रा शुभ नहीं है।

माघकृष्ण ५ शुक्रवार घ० ५४ प० १४। अंग्रेजी ता० ९ जनवरी। बंगला ता० २४ पौष। फारसी ता० १८ सावान्। फसली ता० ५। पू० न० घ० ११ प० ११। दिनमान घ० २६ प० १७। सूर्योदय घं० ६ मि० ४५। सूर्यास्त घं० ५ मि० १५। चन्द्रराशि सिंह। बाद कन्या घ० २५ प० १४ के बाद होगी। आज भद्रा घ० ५८ प० २४। (रात्रिमें घं० ६ मि० ६ के बाद) लगेगी। रवियोग घ० ११ प० १५ पर होगा। मासशून्य ति० ५। यात्रा शुभ नहीं है।

माघकृष्ण ७ शनिवार घ० ५३ प० ०। अंग्रेजी ता० १० जनवरी। बंगला ता० २५ पौष। फारसी ता० १९ सावान्। फसली ता० ६। उ० न० घ० ७ प० १२। दिनमान घ० २६ प० १९। सूर्योदय घं० ६ मि० ४४। सूर्यास्त घं० ५ मि० १६। चन्द्रराशि कन्या है। आज घ० २५ प० ४२। (दिनमें घं० ५ मि० १ तक) भद्रा रहेगी। उ० षा० नक्षत्रमें सूर्य घ० ४३ प० ५९ पर

होंगे। बुधका उदय पूर्वमें घ० २३ प० ४० पर होगा। आदि वाराह जयन्ती। मध्यान्हमें वाराही दर्शनं। जायीजयद्योग घ० ५२ यावत् है। त्रिपुष्करयोग घ० ७ प० १२ यावत्। यात्रा शुभ नहीं है।

माघकृष्ण ८ रविवार घ० ४८ प० ०। अंग्रेजी ता० ११ जनवरी। बंगला ता० २६ पौष। फारसी ता० २० सावान्। फसली ता० ७। ह० न० घ० ३ प० ३२। दिनमान घ० २६ प० २०। सूर्योदय घं० ६ मि० ४४। सूर्यास्त घं० ५ मि० १६। चन्द्रराशि कन्या। बाद तुला घ० ३१ प० ५७ पर होगी। आज भैरवाष्टमी ८। शीतला दर्शनं ८। अन्यष्टका श्राद्धम् ८। सु० सि० यो० अ० सि० यो० घ० ३ प० ३२ यावत् रहेगा। यात्रा शुभ नहीं है।

माघकृष्ण ९ सोमवार घ० ४३ प० ४७। अंग्रेजी ता० १२ जनवरी। बंगला ता० २७ पौष। फारसी ता० २१ सावान्। फसली ता० ८। चि० न० घ० ०/५७ प० ३२/३१ दिनमान घ० २६ प० २२। सूर्योदय घं० ६ मि० ४४ सूर्यास्त घं० ५ मि० १६। चन्द्रराशि तुला है। आज मासान्त है।

माघकृष्ण १० मंगलवार घ० ४० प० २५। अंग्रेजी ता० १३ जनवरी। बंगला ता० २८ पौष। फारसी ता० २२ सावान्। फसली ता० ९। वि० न० घ० ० प० २९। दिनमान घ० २६ प० २४। सूर्योदय घं० ६ मि० ४३। सूर्यास्त घ० ५ मि० १७। चन्द्रराशि तुला। बाद वृश्चिक घ० ४२ प० ५१ के बाद होगी। आज भद्रा घ० १२ प० ६। (दिनमें घं० ११ मि० ३३ के बादसे घ० ४७ मि० २५। रात्रिमें घं० १० मि० ५३ तक रहेगी।) यात्रा शुभ नहीं है।

माघ कृष्ण ११ बुधवार घ० ३८ प० ३। अंग्रेजी ता० १४ जनवरी। बंगला ता० ३० पौष। फारसी ता० २४ सावान्। फसली ता० १०। अनु० न० घ० ५६ प० ०। दिनमान घ० २६ प० २६। सूर्योदय घं० ६ मि० ४३। सूर्योदय घं० ५ मि० १७। चन्द्रराशि वृश्चिक है। आज मकरसंक्रान्ति घ० ० प० १२ पर लगेगी। मु० ३० फ० समता। संक्रान्ति पुण्यकाल घं० ६ मि० ४८ के बादसे लगेगा। शट्तिला ११ व्रतं सर्वेषां। यात्रा शुभ नहीं है।

माघ कृष्ण १२ गुरुवार घ० ३६ प० ५५। अंग्रेजी ता० १५ जनवरी। बंगला ता० १ माघ। फारसी ता० २५ सावान्। फसली ता० ११। ज्येष्ठा

न० घ० ५६ प० ४२ । दिनमान घ० २६ प० २८ । सूर्योदय घं० ६ मि० ४२ । सूर्यास्त घं० ५ मि० १८ । चन्द्रराशि वृश्चिक, बाद धन घ० ५६ प० ४२ के बाद होगी । आज बंगला माघ आरम्भ हुआ । मार्गी बुधः घ० १० प० ० पर होगा । तिलद्वादशी १२ । यात्रा शुभ नहीं है ।

माघ कृष्ण १३ शुक्रवार घ० १७ प० १ । अंग्रेजी ता० १६ जनवरी । बंगला ता० २ माघ । फारसी ता० २६ सावान् । फसली ता० १२ । मूल न० घ० ५८ प० ४० । दिनमान घ० २६ प० ३० । सूर्योदय घं० ६ मि० ४२ । सूर्यास्त घं० ५ मि० १८ । चन्द्रराशि धन है । आज भद्रा घ० १७ प० ७ (रात्रिमें घं० ९ सि० ३०) के बाद भद्रा लगेगी । प्रदोष १३ व्रतम् । यात्रा शुभ नहीं है ।

माघ कृष्ण १४ शनिवार घ० १८ प० २८ । अंग्रेजी ता० १७ जनवरी । बंगला ता० ३ माघ । फारसी ता० २७ सावान् । फसली ता० १३ । पूर्वा न० घ० ३८ प० २८ । दिनमान घ० २६ प० ३२ । सूर्योदय घं० ६ मि० ४२ । सूर्यास्त घं० ५ मि० १८ । चन्द्रराशि धन है । आज घ० ७ प० ४४ (दिनमें घं० ९ मि० ४८) तक भद्रा रहेगी । आज यमतर्पण है । यात्रा शुभ नहीं है ।

माघकृष्ण ३० रविवार घ० ४१ प० ६ । अंग्रेजी ता० १८ जनवरी । बंगला ता० ४ माघ । फारसी ता० २८ सावान् । फसली ता० १४ । पू० न० घ० १ प० ५६ । दिनमान घ० २६ प० ३४ । सूर्योदय घं० ६ मि० ४१ । सूर्यास्त घं० ५ मि० १८ । चन्द्रराशि धन बाद मकर घ० १८ प० २ पर होगी । आज दर्शश्राद्धम् ३० । मौनी ३० । ब्रह्मसावित्री व्रतं ३० । कुहू ३० । सर्वार्थसिद्धियोग घ० १ प० ५६ के बाद होगा । यात्रा शुभ नहीं है ।

माघ शुक्ल १ सोमवार घ० ४४ प० ५४ । अंग्रेजी ता० १९ जनवरी । बंगला ता० ५ माघ । फारसी ता० २९ सावान् । फसली ता० १५ । उत्तरा न० घ० ६ प० १६ । दिनमान घ० २६ प० ३५ । सूर्योदय घं० ६ मि० ४१ । सूर्यास्त घं० ५ मि० १९ । चन्द्रराशि मकर है । आज मृत्युयोग घ० ६ प० १९ यावत् । सर्वार्थ सि० अमृत सि० यो० घ० ६० तक है । यात्रा शुभ नहीं है ।

माघ शुक्ल २ मंगलवार घ० ३६ प० २९ । अंग्रेजी ता० २० जनवरी । बंगला ता० ६ माघ । फारसी ता० ३० साबान् । फसली ता० १६ । श्रवण न० घ० ११ प० ४३ । दिनमान घ० २६ प० ३८ । सूर्योदय घं० ६ मि० ४० । सूर्यास्त घं० ५ मि० २० । चन्द्रराशि मकर, बाद कुम्भ घ० ४४ प० ४७ पर होगी । आज अभिजिन्नक्षत्रमें सूर्य घ० ३६ प० ५३ पर होंगे । चन्द्रदर्शन । मु० ३० फ० समता । त्रिपुष्करयोग घ० ११ प० ४३ । अपराह्न घ० ४३ प० ३५ यावत् है । यात्रा शुभ नहीं है ।

माघ शुक्ल ३ बुधवार घ० ५४ प० ५३ । अंग्रेजी ता० २१ जनवरी । बंगला ता० ७ माघ । फारसी ता० १ रमजान् । फसली ता० १७ । धन न० १७ प० ५० । दिनमान घ० २६ प० ४० । सूर्योदय घं० ६ मि० ४० । सूर्यास्त घं० ५ मि० २० । चन्द्रराशि कुंभ है । आज मुसलमानी म० ९ रमजान आरम्भ हुआ । शिव-गौरी प्रीत्यर्थ गुड़ नीमकका दान करना चाहिये । कल्किजयन्ती ३ । यात्रा शुभ नहीं है ।

माघशुक्ल ४ गुरुवार घ० ६० प० ० । अंग्रेजी ता० २२ जनवरी । बंगला ता० ८ माघ । फारसी ता० २ रमजान । फसली ता० १८ । श० न० घ० २४ प० २३ । दिनमान घ० २६ प० ४२ । सूर्योदय घं० ६ मि० ४० सूर्यास्त घं० ५ मि० २० । चन्द्रराशि कुंभ है । आज भद्रा घ० २७ प० ३६ । (सायं घं० ५ मि० ४२ के बाद लगेगी । सायन कुंभ संक्रान्ति घ० २१ प० ३ पर होगी । शनिका उदय पूर्वमें घ० २२ प० ५२ पर होगा । विनायकी गणेश ४ व्रतम् । प्रदोष व्यापिनी तिलका ४ । कुन्द पुष्पोंसे शिवपूजन करना चाहिये । रवियोग घ० २४ यावत् । यात्रा शुभ नहीं है ।

माघशुक्ल ४ शुक्रवार घ० ० प० २० । अंग्रेजी ता० २३ जनवरी । बंगला ता० ९ माघ । फारसी ता० ३ रमजान । फसली ता० १९ । पू० न० घ० ३० प० ४२ । दिनमान घ० २६ प० ४१ । सूर्योदय घं० ६ मि० ३९ । सूर्यास्त घं ५ मि० २१ । चन्द्रराशि कुम्भ । बाद मीन घ० १४ प० १४ के बाद होगी । आज घ० ० प० २० । (दिनमें घं० ६ मि० ४७ तक भद्रा रहेगी । श्रवण नक्षत्रमें सूर्य घ० ५० प० ८ पर होगा । वधू प्रवेश मु० गु भिक्ष लग्नमें ८ । गुरु बालसे शुभ है । यात्रा शुभ नहीं है ।

माघशुक्ल ५ शनिवार घ० ६ प० २९। अंग्रेजी ता० २४ जनवरी। बंगला ता० १० माघ। फारसी ता० ४ रमजान। फसली ता० २०। उ० न० घ० ३६ प० ४४। दिनमान घ० २६ प० ४७। सूर्योदय घं० ६ मि० २१। सूर्यास्त घं० ५ मि० १९। चन्द्रराशि मीन है। आज वसन्तपञ्चमी ५। श्रीपञ्चमी ५। उ० यात्रा शु० वृश्चिक लग्नमें ८ गुरु दानसे शुभ है।

माघ शुक्ल ६ रविवार घ० १०.प० १। अंग्रेजी ता० २५ जनवरी। बंगला ता० ११ माघ। फारसी ता० ५ रमजान्। फसली ता० २१। रेवती न० घ० ४२ प० १३। दिनमान घ० २६ प० ५०। सूर्योदय घं० ६ मि० २८। सूर्यास्त घं० ५ मि० २२। चन्द्रराशि मीन, बाद मेष घ० ४२ प० १३ पर होगी। मास शून्य ति० ६। रवियोग घ० ४२ प० १३ तक होगा। जलाशयादि प्र० शु० कुंभ लग्नमें ८ केतुदानसे शुभ है। वधू प्र० शु० कुंभ लग्नमें ८ केतुके दानसे और वृष लग्नमें ८ बुध शनिदानसे शुभ है। पश्चिमयात्रा शु० तुला लग्नमें ६ चन्द्रके दानसे शुभ है।

माघ शुक्ल ७ सोमवार घ० १३ प० ३३। अंग्रेजी ता० २६ जनवरी। बंगला ता० १२ माघ। फसली ता० ६ रमजान्। फसली ता० २२। अनु० न० घ० ४६ प० २१। दिनमान घ० २६ प० ५३। सूर्योदय घं० ६ मि० २७। सूर्यास्त घं० ५ मि० २३। चन्द्रराशि मेष है। आज भद्रा घ० १३ प० ३३ (दिनमें घं० १२ मि० २) के उपरान्त घ० ४४ प० ४७ (रात्रिमें घं० १२ मि० ३२) तक रहेगी। मन्वादि ७। रथसप्तमी ७। अचला ७। सूर्यरथोत्सवः। यात्रा शुभ नहीं है।

माघशुक्ल ८ मंगलवार घ० १६ प० ०। अंग्रेजी ता० २७ जनवरी। बंगला ता० १३ माघ। फारसी ता० ७ रमजान्। फसली ता० २३। भरणी न० घ० ४९ प० ३१। दिनमान घ० २६ प० ५५। सूर्योदय घं० ६ मि० २७। सूर्यास्त घं० ५ मि० २३। चन्द्रराशि मेष है। आज भीष्माष्टमी ८। अन्नपूर्णाष्टमी ८। यात्रा शुभ नहीं है।

माघशुक्ल ९ बुधवार घ० १७ प० ६। अंग्रेजी ता० २८ जनवरी। बंगला ता० १४ माघ। फारसी ता० ८ रमजान। फसली ता० २४। कृ० न० घ० ५१ प० १६। दिनमान घ० २६ प० ५८। सूर्योदय घं० ६ मि० २६। सूर्यास्त घं० ५ मि० २४। चन्द्रराशि मेष। बाद वृष घ० ४ प० ५८ पर

होगी। आज महानन्दा नवमी व्रतं ९। रवियोग घ० ६० यावत्। स० सि० यो० घ० ५१ प० १९ यावत्। यात्रा शुभ नहीं है।

माघशुक्ल १० गुरुवार घ० १६ प० २३। अंग्रेजी ता० २९ जनवरी। बंगला ता० १५ माघ०। फारसी ता० ९ रमजान। फसली ता० २५। रो० न० घ० ५१ प० ५९। दिनमान घ० २७ प० १। सूर्योदय घं० ६ मि० ३६ सूर्यास्त घं० ५ मि० २४। चन्द्रराशि वृष है। आज भद्रा घ० ४६ प० १०। (रात्रिमें घं० १ मि० ९ के उपरांत लगेगी।) जलाशयादि प्र० मु० कुंभ लग्नमें ८। केतुदानसे। गृह प्रवेश वृश्चिक लग्नमें ८। गुरुदानसे। और वधू प्र० मु० वृश्चिक लग्नमें ८। गुरुदानसे शुभ है। यात्रा शुभ नहीं है।

माघशुक्ल ११ शुक्रवार घ० १५ प० २७। अं० ता० ३० जनवरी। बंगला ता० १६ माघ। फारसी ता० १० रमजान। फसली ता० २६। मृ० न० घ० ५१ प० १७। दिनमान घ० २७ प० ३। सूर्योदय घं० ६ मि० ३५। सूर्यास्त घं० ५ मि० २५। चन्द्रराशि वृष। बाद मिथुन घ० २१ प० ३६ उपरान्त लगेगी। आज भद्रा घ० १५ प० ३७। (दिनमें घं० १२ मि० ४६ तक रहेगी) सूर्य १ च० धन राशिमें शुक्र घ० ५९ प० ७ पर रहेगा। जया ११ व्रतं सर्वेषां भीष्म ११। यात्रा शुभ नहीं है।

माघशुक्ल १२ शनिवार घ० १२ प० ५१। अं० ता० ३१ जनवरी। बंगला ता० १७ माघ। फारसी ता० ११ रमजान। फसली ता० २७। आ० न० घ० ४९ प० ३८। दिनमान घ० २७ प० ६। सूर्योदय घ० ६ मि० ३५। सूर्यास्त घं० ५ मि० २५। चन्द्रराशि मिथुन है। आज भीष्म द्वादशी १२। तिल १२। शनिप्रदोष १३ व्रतम्। यात्रा शुभ नहीं है।

माघशुक्ल १३ रविवार घ० ९ प० १५। अं० ता० १ फरवरी। बंगला ता० १८ माघ। फारसी ता० १२ रमजान। फसली ता० २८। पु० न० घ० ४७ प० ९। दिनमान घ० २७ प० ९। सूर्योदय घं० ६ मि० ३४ सूर्यास्त घं० ५ मि० २६। चन्द्रराशि मिथुन। बाद कर्क घ० ३९ प० ४७ पर होगी। आजसे अं० म० २ फरवरी आरंभ हुआ। कल्पादिः १३। रवियोगः घ० ४७ यावत्। यात्रा शुभ नहीं है।

माघशुक्ल १४ सोमवार घ० ५४ प० ५९। अं० ता० २ फरवरी। बंगला ता० १९ माघ। फारसी ता० १३ रमजान। फसली ता० २९। पु० न० घ० ४३ प० ५४। दिनमान घ० २७ प० १२। सूर्योदय घं० ६ मि० ३४ सूर्यास्त

घं० ५ मि० २६ । चन्द्रराशि कर्क है । आज भद्रा घ० ४ प० ५० । (दिनमें घं० ८ मि० ३० के बादसे घ० २२ प० १७ । रात्रिमें घं० ७ मि० २९ तक रहेगी ।) व्रताय १५ । माघ स्नान समाप्तिः । तिलपात्रदानं । सर्वार्थसिद्धियोग घ० ४३ प० ५४ तक रहेगा । यात्रा शुभ नहीं है ।

माघकृष्ण ८ रवौ मिश्रमानं ४३।३७ दिनमानम् २६।२०

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के
८	३	८	२	७	८	११	५
२७	२०	११	२२	११	२०	२८	२८
४०	५१	२५	२५	२५	१५	१०	१०
३७	४९	१	२१	३	३१	१९	१९
६१	२५/४१	२७/१८	८/३२	५२	७	३	३
२४	व	व	व	२१	३०	११	११
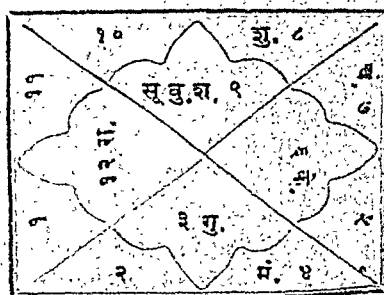
माघकृष्ण ३० रवौ मिश्रमानम् ४३।३७ दिनमानम् २६।३५

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	३	९	२	७	८	११	५
४	१८	११	२१	१७	२१	२७	२७
५	४८	२८	४०	४७	५	४८	४८
२	४२	५९	३५	४२	५८	४	०
६१	३०/१	१८/१९	७/३८	५६	७	३	३
१९	व	मा	व	२६	३०	११	११
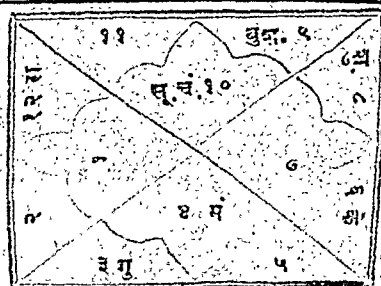
माघशुक्ल ६ रवौ मिश्रमानं घ. ४३ प. ३९ दिनमान घ. २६ प. ५०

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के
९	३	८	२	७	८	११	५
११	१६	१६	२०	२४	२१	२७	२७
५८	१७	११	५७	३७	५६	२५	२५
५१	२९	४६	२	२७	२५	४६	४०
६१	३३/४८	५६	७/३८	६१	७	३	३
१३	व	११	व	६	३०	११	११
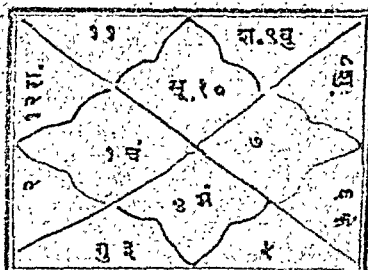
माघशुक्ल १३ रवौ मिश्रमानं ४३।४२ दिनमानं २७।९

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	३	८	२	८	८	११	५
१९	१३	२४	१६	१	२२	२७	२७
६	३०	१३	५८	४९	४१	३	३
४८	२०	४२	१२	३३	५२	३३	३३
६१	३३/४८	७८	६/४४	६२	६	३	३
४	व	१६	व	५१	३३	११	११
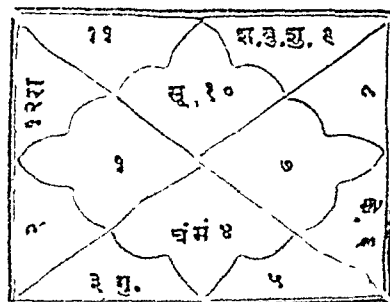
माघ मास गोचर फलम्।

इस मासमें मेष, मकर, वृष, कुम्भ राशि वालोंको कारोबारमें लाभ तथा घरमें झगड़ा रहेगा, प्रत्यक्ष नहीं तो मनमें द्वेष बना रहेगा, धनकी चिन्ता घनी रहेगी, सरदी अधिक सतावेगी, कुछ राज्य भय रहेगा, २० दिन अच्छे ही बीतेंगे, शेषमें तकलीफ रहेगी, मगर कुम्भ राशि वालोंको अच्छा ही बीतेगा, तुला, मीन राशि वालोंको तथा मिथुन, कर्क, वालोंको आदिमें खराब रहेगा, पीछे अच्छा ही बीतेगा। रोजगारमें फायदा तब होगा जब कि गरीबोंको वस्त्र दान देकर शीत त्राण करेंगे नहीं तो १३ सम ११ दिन खराब बीतेंगे, शेष दिन अच्छे ही रहेंगे। धनका खर्च अधिक रहेगा, शेष राशिवालोंको पौष मासकी तरह बीतेगा, अर्थात समान ही रहेगा। सरदीकी शिकायत रहे, किन्तु श्रद्धानुसार गरीबोंको भोजन तथा गंगा स्नान करनेसे सब कष्ट दूर होंगे, स्नान करना माहात्म्य है।

माघ मास फलम्।

इस मासमें तुषार अधिक पड़ेगा, उससे हानी बहुत होगी और अन्तमें कोई नया कृमी (कीड़ा) उत्पन्न होगा। पानी बरसनेसे वह मर जायगा। और फसल अच्छी होगी, रोज पानी बरसेगा। गर्जना तोफान अन्धकार मेघाच्छन्न रहेगा। इस मासमें गेहूँ, जव, मसूर, चना, मूंग, उड़द, कुलथी, राई, तिल, चावल, गुड़, चीनी, पहले तेज फिर मंदा होनेकी सम्भावना रहेगी। सोना, चांदीका भाव कुछ तेज होगा, तांबा, पीतल, रांगा, जस्ता, कांसेका भाव घटता रहेगा, अरहर, कदूनी, कोदों, धान, मकईका भाव सम रहेगा, राजनैतिक विषय

बड़े जोरोंसे चलता रहेगा, लोग अपनी मर्यादामें न रहेंगे, दण्डशासन करने पर भी खलबली मची रहेगी। ब्राह्मणोंको अब जागृत हो जाना चाहिये नहीं तो अब अधःपतनका अवसर नजदीक आने वाला दीख पड़ता है।

इस महीनेभर उत्तरायणसूर्य और दक्षिणगोल शिशिरऋतु रहेगी। और अं० म० २ फरवरी ता० २८ सन् १९३१ का० शु० १२ रवि तक रहेगा, बाद मार्च ३ ता० ३१ सन् १९३१ ई० होगा।

फाल्गुनकृष्ण १ मंगलवार घ० ५४ प० ११। अंग्रेजी ता० ३ फरवरी। बंगला ता० २० माघ। फारसी ता० १४ रमजान। फसली ता० १। श्ले० न० घ० ४० प० १२। दिनमान घ० २७ प० १५। सूर्योदय घं० ६ मि० ३३ सूर्यास्त घं० ५ मि० २७। चन्द्रराशि कर्क। बाद सिंह घ० ४० प० १२ पर होगी। आज स० सि० यो० घ० ४० प० १२ यावत् रहेगा। इष्टिः। यात्रा शुभ नहीं है।

फाल्गुनकृष्ण २ बुधवार घ० ४८ प० २०। अंग्रेजी ता० ४ फरवरी। बंगला ता० २१ माघ। फारसी ता० १५ रमजान। फसली ता० २। म० न० घ० ३६ प० ७। दिनमान घ० २७ प० १८। सूर्योदय घं० ६ मि० ३२ सूर्यास्त घं० ५ मि० २८। चन्द्रराशि सिंह है। यात्रा शुभ नहीं है।

फाल्गुनकृष्ण ३ गुरुवार घ० ४२ प० २६। अंग्रेजी ता० ५ फरवरी। बंगला ता० २२ माघ। फारसी ता० १६ रमजान। फसली ता० ३। पू० न० घ० ३१ प० ५६। दिनमान घ० २७ प० २१। सूर्योदय घं० ६ मि० ३२ सूर्यास्त घं० ५ मि० २८। चन्द्रराशि सिंह। बाद कन्या घ० ४५ प० ५५ के बाद होगी। आज भद्रा घ० १५ प० २२। (दिनमें घं० १२ मि० ४१ के बादसे घ० ४२ प० २६। (रात्रिमें घं० ११ मि० ३० तक रहेगी।) धनिष्ठा न० में सूर्य घ० ५४ प० ८ पर प्रवेश करेंगे। उ० पा० २ च० मकर राशिमें बुध घ० ५० प० ४५ पर होंगे। यात्रा शुभ नहीं है।

फाल्गुनकृष्ण ४ शुक्रवार घ० ३५ प० ३९। अंग्रेजी ता० ६ फरवरी। बंगला ता० २३ माघ। फारसी ता० १७ रमजान। फसली ता० ४। उ० न० घ० २७ प० ५१। दिनमान घ० २७ प० २७। सूर्योदय घं० ६ मि० ३१। सूर्यास्त घं० ५ मि० २९। चन्द्रराशि कन्या है। आज संकष्टी गणेश ४ व्रतम्।

घं० ३० एवं रा० घं० २ मि० ३० पर होगा। । वधू प्रवेश मु० वृश्चिक लग्न ८ । गुरुदानसे शुभ है । यात्रा शुभ नहीं है ।

फाल्गुनकृष्ण ५ शनिवार घ० ३१ प० १२ । अंग्रेजी ता० ७ फरवरी । बंगला ता० २४ माघ । फारसी ता० १७ रमजान् । फसली ता० ५ । ह० न० घ० २४ प० ४ । दिनमान घ० २७ प० २८ । सूर्योदय घं० ६ मि० ३० । सूर्यास्त घं० ५ मि० ३० । चन्द्रराशि कन्या । बाद तुला घ० ५२ प० २७ पर होगी । मासशून्य ति० ५ । यायी जयदयोग घ० २४ यावत् । यमदंडयोग और मृत्युयोग घ० २४ प० ४ यावत् । यात्रा शुभ नहीं है ।

फाल्गुनकृष्ण ६ रविवार घ० २६ प० १६ । अंग्रेजी ता० ८ फरवरी । बंगला ता० २५ माघ । फारसी ता० १९ रमजान् । फसली ता० ६ । चि० न० घ० २० प० ५० । दिनमान घ० २७ प० ३१ । सूर्योदय घं० ६ मि० ३० सूर्यास्त ५ मि० ३० । चन्द्रराशि तुला है । आज भद्रा घ० २६ प० १६ (दिनमे घं० ५ मि० ० के बादसे घ० ५४ प० ११ । रात्रिमें घं० ४ मि० १० तक रहेगी ।) यात्रा शुभ नहीं है ।

फाल्गुनकृष्ण ७ सोमवार घ० २२ प० ७ । अंग्रेजी ता० ९ फरवरी । बंगला ता० २६ माघ । फारसी ता० २० रमजान् । फसली ता० ७ । स्वा० न० घ० १८ प० १६ । दिनमान घ० २७ प० २४ । सूर्योदय घं० ६ मि० २९ । सूर्यास्त घं० ५ मि० ३१ । चन्द्रराशि तुला है । यायीजयदयोगः घ० १८ प० १६ यावत् । रवियोग घ० १८ प० १६ यावत् । भैरवाष्टमी ८ । वधूप्रवेश मु० कुम्भलग्नमें ८ केतुदानसे शुभ है ।

फाल्गुनकृष्ण ८ मंगलवार घ० १८ प० ४८ । अंग्रेजी ता० १० फरवरी । बंगला ता० २७ माघ० । फारसी ता० २१ रमजान । फसली ता० ८ । वि० न० घ० १६ प० २२ । दिनमान घ० २७ प० ३७ । सूर्योदय घं० ६ मि० २९ । सूर्यास्त घं० ५ मि० ३१ । चन्द्रराशि तुला बाद वृश्चिक घ० १ प० ५८ पर होगी । आज जानकी जन्म मध्याह्नमें है । शीतलादर्शन ८ । स्थायीकार्यार्ह योग घ० १६ प० २२ यावत् । यात्रा शुभ नहीं है ।

फाल्गुनकृष्ण ९ बुधवार घ० १६ प० ३१ । अंग्रेजी ता० ११ फरवरी । बंगला ता० २८ माघ । फारसी ता० २२ रमजान । फसली ता० ९ । अनु० न० घ० १५ प० २० । दिनमान २७ प० ४० । सूर्योदय घं० ६ मि० २८ ।

सूर्यास्त घं० ५ मि० ३२ । चन्द्रराशि वृश्चिक है । आज घ० ४५ प० ५९ (रा० मे घं० १२ मि० ५२ के बाद भद्रा लगेगी) मासान्तः । स० सि० यो० अ० सि० यो० घ० १५ प० ५० यावत् । यात्रा शुभ नहीं है ।

फाल्गुनकृष्ण १० गुरुवार घ० १५ प० २८ । अंग्रेजी ता० १२ फरवरी । बंगला ता० २९ माघ । फारसी ता० २३ रमजान । फसली ता० १० । ज्ये० न० घ० १६ प० १८ । दिनमान घ० २७ प० ४४ । सूर्योदय घं० ६ मि० २७ सूर्यास्त घं० ५ मि० ३२ । चन्द्रराशि वृश्चिक बाद धन घ० १६ प० १८ पर होगी । आज भद्रा घ० १५ प० २८ (दिन में घं० १२ मि० ३८) तक रहेगी और कुम्भसंक्रान्ति घ० २७ प० २३ पर होगी । मु० ३० फ० समता । संक्रान्तिपुण्यकाल घं० ११ मि० के बादसे होगा । यात्रा शुभ नहीं है ।

फाल्गुनकृष्ण ११ शुक्रवार घ० १५ प० ३९ । अंग्रेजी ता० १३ फरवरी । बंगला ता० १ फाल्गुन । फारसी ता० २४ रमजान । फसली ता० ११ । मूल न० घ० १८ प० ०१ । दिनमान घ० २७ प० ४७ । सूर्योदय घं० ०६ मि० २७ । सूर्यास्त घं० ५ मि० ३३ । चन्द्रराशि धन है । आजसे बंगला फाल्गुन आरंभ हुआ । विजया ११ व्रतंसर्वेषां । स्थाईकार्याहं यो० घ० १८ उपरांत । वधूप्रवेश मु० कुम्भलग्नमें ८ केतुदानसे शुभ है । यात्रा शुभ नहीं है ।

फाल्गुनकृष्ण १२ शनिवार घ० १७ प० १२ । अंग्रेजी ता० १४ फरवरी । बंगला ता० २ फाल्गुन । फारसी ता० २५ रमजान । फसली ता० १२ । पूर्वा न० घ० २१ प० १ । दिनमान घ० २७ प० ५० । सूर्योदय घं० ६ मि० २६ । सूर्यास्त घं० ५ मि० ३४ । चन्द्रराशि धन बाद मकर घ० ३७ प० २ पर होगी । आज शनिप्रदोष १३ व्रतं है । वधूप्रवेश मु० गोधूलिमें शुभ है । यात्रा शुभ नहीं है ।

फाल्गुनकृष्ण १३ रविवार घ० १९ प० ५४ । अंग्रेजी ता० १५ फरवरी । बंगला ता० ३ फाल्गुन । फारसी ता० २६ रमजान । फसली ता० १३ । उ० न० घ० २५ प० ६ । दिनमान घ० २७ प० ५४ । सूर्योदय घं० ६ मि० २५। सूर्यास्त घं० ५ मि० ३५ । चन्द्रराशि मकर है । आज भद्रा घ० १९ प० ५४ । (दिनमें घं० २ मि० २३ के बादसे घ० ५१ प० ५१ । रात्रिमें घं० ३ मि० ९ तक रहेगी) महाशिवरात्रि १४ व्रतं । चतुर्दशलिङ्ग पूजा । कृत्तिवासेश्वर दर्शनं । वैद्यनाथ जन्म १४ । यायी जयदयोग घ० २० यावत् । यात्रा शुभ नहीं है ।

फाल्गुनकृष्ण १४ सोमवार घ० १३ प० १८ । अंग्रेजी ता० १६ फरवरी । बंगला ता० ४ फाल्गुन । फारसी ता० २७ रमजान् । फसली ता० १४ । श्र० न० घ० ३० प० २१ । दिनमान घ० २७ प० ५७ । सूर्योदय घं० ६ मि० २५ सूर्यास्त घं० ५ मि० ३४ । चन्द्रराशि मकर है । आज सिनीवाली ३० । स० सि० यो० घ० ३० प० २१ यावत् । अ० सि० योगश्च । यात्रा शुभ नहीं है ।

फाल्गुनकृष्ण ३० मंगलवार घ० २८ प० ३० । अंग्रेजी ता० १७ फरवरी । बंगला ता० ५ फाल्गुन । फारसी ता० २८ रमजान् । फसली ता० १५ । ध० न० घ० ३६ प० २० । दिनमान घ० २८ प० १ । सूर्योदय घं० ६ मि० २४ । सूर्यास्त घं० ५ मि० ३५ । चन्द्रराशि मकर । बाद कुम्भ घ० २ प० २१ के बाद होगी । आज दर्शश्राद्धम् ३० । भौमवती ३० । कुहू ३० । यात्रा शुभ नहीं है ।

फाल्गुनशुक्ल १ बुधवार घ० ३३ प० ४४ । अंग्रेजी ता० १८ फरवरी । बंगला ता० ६ फाल्गुन । फारसी ता० २९ रमजान् । फसली ता० १६ । श० न० घ० ४२ प० ५१ । सूर्योदय घं० ६ मि० २३ । सूर्यास्त घं० ५ मि० ३७ चन्द्रराशि कुंभ है । यात्रा शुभ नहीं है ।

फाल्गुनशुक्ल २ गुरुवार घ० ३९ प० ९ । अंग्रेजी ता० १९ फरवरी । बंगला ता० ७ फाल्गुन । फारसी ता० ३० रमजान । फसली ता० १७ । पू० न० घ० ४९ प० ०५ । दिनमान घ० २८ प० ८ । सूर्योदय घं० ६ मि० २२ सूर्यास्त घं० ५ मि० ३८ । चन्द्रराशि कुम्भ । बाद मीन घ० २२ प० ४६ के बाद होगी । आज शततारक न० में सूर्य घ० ४ प० ८ पर होंगे । चन्द्रदर्शनं मु० ३० फल समता । यात्रा शुभ नहीं है ।

फाल्गुनशुक्ल ३ शुक्रवार घ० ४४ प० १३ । अंग्रेजी ता० २० फरवरी । बंगला ता० ८ फाल्गुन । फारसी ता० १ शव्वाल । फसली ता० १८ । उ० न० घ० ५५ प० ३६ । दिनमान घ० २८ प० ११ । सूर्योदय घं० ६ मि० २२ सूर्यास्त घं० ५ मि० ३८ । चन्द्रराशि मीन है । मु० म० १० शव्वाल आरंभ हुआ । सायन मीन संक्रान्ति घ० ५२ प० ३५ पर होगी । बुधका अस्त पूर्वमें घ० १६ प० ४५ पर होगा । मासशून्य ति० ३ । (ईद) जलाशयादि प्र० मु० वृष लग्नमें ८ शुक्र शनिके दानसे शुभ है । और द्विरागमन मु० तुला लग्नमें शुभ है । यात्रा शुभ नहीं है ।

फाल्गुनशुक्ल ४ शनिवार घ० ४८ प० ३८। अंग्रेजी ता० २१ फरवरी। बंगला ता० ९ फाल्गुन। फारसी ता० २ शव्वाल। फसली ता० १९। रेवती न० घ० ६० प० ०। दिनमान घ० २८ प० १५। सूर्योदय घं० ५ मि० ३९। चन्द्रराशि मीन है। आज भद्रा घ० १६ प० २६ (दिनमें घं० १२ मि० ५५) के बादसे घ० ४८ प० ३८ (रात्रिमें घ० १ मि० ४८) तक है। विनायकी गणेश ४ व्रत। र० यो० घ० ६० यावत्। प० उ० यात्रा मु० मेष लग्नमें ४ तिलके दानसे शुभ है।

फाल्गुनशुक्ल ४ रविवार घ० ५२ प० १। अंग्रेजी ता० २२ फरवरी। बंगला ता० १० फाल्गुन। फा० ता० ३ शव्वाल। फसली ता० २०। मृगशिरा न० घ० १ प० ७। दिनमान घ० २७ प० १८। सूर्योदय घं० ६ मि० २०। सूर्यास्त घं० ५ मि० ४०। चन्द्रराशि मीन, बादमें श० घ० १ प० ७ के बाद होगी। आज स० सि० यो० घ० १ प० ७ उपरांत लगेगा। यात्रा शुभ नहीं है।

फाल्गुनशुक्ल ६ सोमवार घ० ५४ प० १९। अंग्रेजी ता० २३ फरवरी। बंगला ता० ११ फाल्गुन। फारसी ४ शव्वाल। फसली ता० २१। अनुराधा न० घ० ५ प० ३६। दिनमान घ० २८ प० २२। सूर्योदय घं० ६ मि० २०। सूर्यास्त घं० ५ मि० ४०। चन्द्रराशि मेष है। आज धनिष्ठा ३ च० कुम्भराशि में बुध घ० ५२ प० १२ पर होगा। उ० यात्रा मु० वृष लग्नमें शुभ है।

फाल्गुनशुक्ल ७ मंगलवार घ० ५५ प० १६। अंग्रेजी ता० २४ फरवरी। बंगला ता० १२ फाल्गुन। फारसी ता० ५ शव्वाल। फसली ता० २२। भरणी न० घ० ९ प० ०। दिनमान घ० २८ प० २४। सूर्योदय घं० ६ मि० १९। सूर्यास्त घं० ५ मि० ४१। चन्द्रराशि मेष बाद वृष घ० २४ प० २१ पर होगी। आज भद्रा घ० ५५ प० १६ (रा० मे० घं० ४ सि० २४) के बाद लगेगी त्रिपुष्कर योग घ० ९ उपरांत घ० २५ यावत्। र० यो० घ० ९ यावत्। स० सि० यो० ९ बाद घ० ६० तक है। यात्रा शुभ नहीं है।

फाल्गुनशुक्ल ८ बुधवार घ० ५४ प० ५५। अंग्रेजी ता० २५ फरवरी। बंगला ता० १३ फाल्गुन। फारसी ता० ६ शव्वाल। फसली ता० २३। कृत्तिका न० घ० ११ प० ३। दिनमान घ० २८ प० २९। सूर्योदय घं० ६ मि० १८। सूर्यास्त घं० ५ मि० ४२। चन्द्रराशि वृष है। आज भद्रा घ० २५

प० ६ (दिनमें घं० ४ मि० २०) तक है । होलाष्टक ८ आरंभः । बुधाष्टमी ८ । अन्नपूर्णाष्टमी ८ । स० सि० यो० घ० ११ प० ३० यावत् । यात्रा शुभ नहीं है ।

फाल्गुनशुक्ल ९ गुरुवार घ० ५३ प० १९ । अंग्रेजी ता० २६ फरवरी । बंगला ता० १४ फाल्गुन । फारसी ता० ७ शव्वाल । फसली ता० २४ । रोहिणी न० घ० ११ प० ५९ । दिनमान घ० २८ प० ३३ । सूर्योदय घं० ६ मि० १७ । सूर्यास्त घं० ५ मि० ४३ । चन्द्रराशि वृष बाद मिथुन घ० ४१ प० ४४ पर होगी । यायीजयद् यो० घ० ११ प० ५९ यावत । यात्रा शुभ नहीं ।

फाल्गुनशुक्ल १० शुक्रवार घ० ५० प० ३७ । अंग्रेजी ता० २७ फरवरी । बंगला ता० १५ फाल्गुन । फारसी ता० ८ शव्वाल । फसली ता० २५ । मृगशिर न० घ० ११ प० ३३ । दिनमान घ० २८ प० ३६ । सूर्योदय घं० ६ मि० १७ सूर्यास्त घं० ५ मि० ४३ । चन्द्रराशि मिथुन है । उत्तराषाढा २ च० मकरराशिमें शुक्रः घ० २३ प० ३६ पर होगा । रवियोग घ० ६० यावत् । द० यात्रा मु० वृष लग्नमें ८ । शुक्रदानसे शुभ है ।

फाल्गुनशुक्ल ११ शनिवार घ० ४६ प० ५५ । अंग्रेजी ता० २८, फरवरी । बंगला ता० १६ फाल्गुन । फारसी ता० ९ शव्वाल । फसली ता० २६ । आ० न० घ० १० प० ५ । दिनमान घ० २८ प० ४० । सूर्योदय घं० ६ मि० १६ । सूर्यास्त घं० ५ मि० ४४ । चन्द्रराशि मिथुन । बाद कर्क घ० ५३ प० २४ पर होगी । आज भद्रा घ० १८ प० ४६ । (दिनमें घं० १ मि० ४६ के बादसे घ० ४६ प० ५५ । रात्रिमें घं० १ मि० २ तक) रहेगी । आमलकी ११ व्रतं सर्वेषां । विश्वनाथ महापूजा काशीमें दर्शन (शृंगारी ११) यायी जयद मु० घ० १० प० ५ बाद होगा । यात्रा शुभ नहीं है ।

फाल्गुनशुक्ल १२ रविवार घ० ४२ प० २१ । अंग्रेजी ता० १ मार्च । बंगला ता० १७ फाल्गुन । फारसी ता० १० सव्वाल । फसली ता० २७ । पु० न० घ० ७ प० ५१ । दिनमान घ० २८ प० ४३ । सूर्योदय घं० ६ मि० १५ । सूर्यास्त घं० ५ मि० ४५ । चन्द्रराशि कर्क है । आजसे अंग्रेजी महीना मार्च ३ आरंभ हुआ । गोविन्दद्वादशीयोग घं० ९ मि० २३ के बाद होगा । त्रिपुष्कर योग घ० ७ प० ५१ यावत् । जलाशयादि प्र० मु० वृष लग्नमें ८ शनिके दानसे शुभ है । यात्रा शुभ नहीं ।

फाल्गुन शुक्ल १३ सोमवार घ० ३७ प० १४। अं० ता० २ मार्च। बंगला ता० १८ फाल्गुन। फारसी ता० ११ शव्वाल। फसली ता० २८। पुनर्वसु न० घ० ३७ प० १४। दिनमान घ० २८ प० ४७। सूर्योदय घं० ६ मि० १५। सूर्यास्त घं० ५ मि० ४४। चन्द्रराशि कर्क है। आज सोम-प्रदोष १३ व्रत है। यायी जयदयोग घ० ४ प० ४५ उपरान्त तथा रवियोग स० सि० योग भी घ० ४ प० ४५ उपरान्त है। चौल मु० मेष लग्नमें शुभ है। उत्तर यात्रा मु० मेष लग्नमें शुभ है।

फाल्गुन शुक्ल १४ मंगलवार घ० ३१ प० ३६। अं० ता० ३ मार्च। बंगला ता० १९ फाल्गुन। फारसी ता० १२ शव्वाल। फसली ता० २९। श्लेषा न० घ० ३६ प० ० दिनमान घ० २८ प० ५१। सूर्योदय घं० ६ मि० १४। सूर्यास्त घं० ५ मि० ४६। चन्द्रराशि कर्क, बाद सिंह घ० १ प० ९ पर होगी। आज भद्रा घ० ३१ प० ३६ (सायं घं० ६ मि० ५२) के बादसे घ० ४८ प० ३९ (रात्रिमें घं० ४ मि० ४२) तक रहेगी। आज रात्रिमें घं० १ मि० ४७ के बाद होलिकादहन। ढुण्डा राक्षसीपूजा १५। हुताशनी जन्म। यात्रा शुभ नहीं है।

फाल्गुन शुक्ल १५ बुधवार घ०२५ प० ४१। अंग्रेजी ता० ४ मार्च। बंगला ता० २० फाल्गुन। फारसी ता० १३ शव्वाल। फसली ता० ३०। पूर्वा न०घ० ४२ प० ५८। दिनमान घ० २८ प० ५५। सूर्योदय घं० ६ मि० १३। सूर्यास्त घं० ५ मि० ४७। चन्द्रराशि सिंह है। आज पूर्वा भाद्रपदा नक्षत्रमें सूर्य घ० १९ प० ८ पर होंगे। मन्वादि १५। होलिकाविभूतिधारणं। रजोत्सवः। सायं चतुःषष्ठीयात्रा १९। यात्रा शुभ नहीं है।

फाल्गुनकृष्ण ६ रवौ मिश्रमानम् ४३।४६ दिनमान २७।३१

सू.	मं.	बु.	गु.	शु	श.	रा.	के.
९	३	९	२	६	८	११	५
२६	१०	४	१५	२२	२३	२६	२६
१२	४५	२०	१५	३९	२७	४१	४१
४२	[illegible]	३८	५	३१	४	१८	१८
६०	३१ ३८	१९	५५ ४	३९	१६	३	३
५९	व	५०	व	१८	२३	११	११
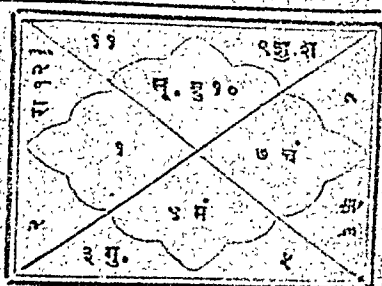
फाल्गुनकृष्ण ३ रवौ मिश्रमानम् ४३।३ दिनमान २७।५४

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	३	९	२	८	८	११	५
३	८	१५	१८	१६	२४	२६	२६
१९	२०	४७	४०	५५	१०	१९	१५
३६	२१	७	२९	५६	४९	३	३
६०	२७ ३	१०१	८५ ४	१८ ३	५	३	३
४२	व	७	व	मा	२७	११	११
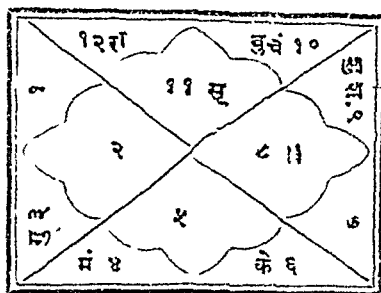
फाल्गुनशुक्ल ५ रवौ मिश्रमानं ४४।१८ दिनमान २८।१८

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	३	९	२	८	८	११	५
१०	६	२८	१८	२४	२५	२५	२५
२३	२३	०	१२	४५	५२	५६	५६
४७	५७	२०	१५	२१	४४	४८	४८
६०	२१ ३३	१०५	३ ७	६७	६	३	३
२८	च	४४	व	३१	३५	११	११
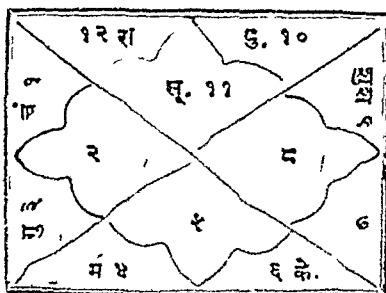
फाल्गुनशुक्ल १२ रवौ मिश्रमानं ४४।३५ दिनमानं २८।४३

सू.	म.	बु	गु.	शु.	श.	रा.	के
१०	३	१०	२	९	८	११	५
१७	५	१०	१०	२	२५	२५	२५
२६	४	४०	५६	४१	३४	३४	३४
३४	५	१९	१८	१९	२९	३२	३२
५०	१३ १२	१०८	१ १०	६८	५	३	३
१४	व	५०	व	४१	३५	११	११
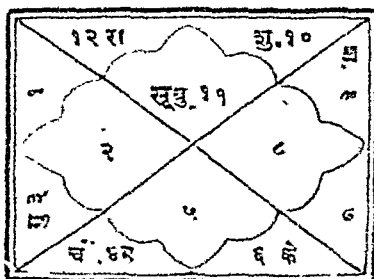
फाल्गुन मास गोचर फलम्।

इस मासमें वृष, धन, कर्क, मीन, राशिवालोंको अङ्गमें पीड़ा मानसिक चिन्ता रोजगारमें साधारण लाभ रहेगा, १० दिन पीछेके अच्छे बीतेंगे, मिथुन, सिंह, कन्या राशि वालोंको १२ दिन उत्तम रहेंगे १० दिन सम रहेंगे, अपने रोजगारमें फायदा रहेगा, राज्य दण्डसे भय, शत्रुओंसे सदा दूर रहना चाहिये। उड़द दान तथा तेल दान करनेसे सब शुभ होगा, शेष राशि वालोंको आषाढ़की तरह बीतेगा, ९ दिन सम १३ दिन खराब बाकी अच्छे रहेंगे किन्तु ४ बजे स्नान करनेसे महादेवजीके ऊपर विल्वपत्र युक्त जल चढ़ानेसे यह मास अच्छा रहेगा। आगे ईश्वर इच्छा बलवती है।

फाल्गुन मास फलम्।

इस मासमें किञ्चित जल बरसेगा अन्नकी फसलमें मूषक अधिक हानी पहुंचावेंगे, वर्षाके सबबसे फसल अच्छी ही रहेगी। पशुओंको सुख रहेगा, शुक्ल पक्षमें मनुष्योंके वास्ते साधारण रोग लगा रहेगा, दिलमें बेचयनी रहेगी, बच्चोंके लिये भी कष्टकारक है। गेहूं, जव, चना, धानका भाव तेज होगा मास कहनी, जवार बाजरा, कोदो, मक्का, भाव सम होकर मन्द हो जायेंगे, श्वेत वस्तु मंहगी रहेगी, ऊर्ण वस्त्र पस्मीन इत्यादिका भाव तेज होकर मन्दा हो जायगा, सोना, चांदी, जवाहिरात मोतीका भाव तेज रहेगा, प्रजामें राज्य भय असन्तोष धर्म विप्लव उठे रहेंगे, यह वर्ष कन्या, मीन, तुला, वृश्चिक राशिवालोंको कष्टकारक रहेगा।

इस पक्षभर उत्तरायण सूर्य दक्षिण गोल और शिशिर ऋतु चैत्र कृष्ण ११ शनिवार तक रहेगी, बाद वसन्तऋतु होगी। अं० महीना ३ मार्च ता० ३१ सन् १९३१ ईस्वी होगा।

चैत्र कृष्ण १ गुरुवार घ० १९ प० ४३। अंग्रेजी ता० ५ मार्च। बंगला ता० २१ फाल्गुन। फारसी ता० १४ शव्वाल। फसली ता० १। उत्तरा न० उत्तरा न० घ० ४८ प० ५२। दिनमान घ० २८ प० ५८। सूर्योदय घं० ६ मि० ०। सूर्यास्त घं० ५ मि० ४८। चन्द्रराशि सिंह, बाद कन्या घ० ६ प० ४७ के बाद होगी। आज वसन्तोत्सव १। चूतकुसुमप्राशनं १। यायी जयदयोग घ० १९ प० ४३ यावत है। जलाशयादि प्र० मु० वृष लग्नमें ८ शनिके दानसे, तुला लग्नमें १२ चन्द्रके दानसे शुभ है। वधूप्रवेश मु० गोधूलि में शुभ है। यात्रा शुभ नहीं है।

चैत्र कृष्ण २ शुक्रवार घ० १५ प० ५५। अंग्रेजी ता० ६ मार्च। बंगला ता० २२ फाल्गुन। फारसी ता० १५ शव्वाल। फसली ता० २। हस्त न० घ० ४५ प० ०। दिनमान घ० २९ प० २। सूर्योदय घं० ६ मि० १२। सूर्यास्त घं० ५ मि० ४८। चन्द्रराशि कन्या है। आज भद्रा घ० ४१ प० ११ (रात्रिमें घं० १० मि० ४०) के वादसे लगेगी। मासदग्ध तिथि २। यात्रा शुभ नहीं।

चैत्रकृष्ण ३ शनिवार घ० ८ प० २६। अंग्रेजी ता० ७ मार्च। बंगला ता० २३ फाल्गुन। फारसी ता० १६ शव्वाल। फसली ता० ३। चि० न० घ० ४१ प० ३६। दिनमान घ० २९ प० ५। सूर्योदय घं० ६ मि० ११। सूर्यास्त घं० ५ मि० ४९। चन्द्रराशि कन्या। वाद तुला घ० १३ प० १९ पर होगी। आज भद्रा घ० ८ प० २६ (दिनमें घं० ९ मि० ३३ तक) रहेगी। संकष्टी गणेश ४ व्रतम्। चं० उ० इं० रा० घं० ९ मि० १९ पर होगा। कल्पादिः ३। यात्रा शुभ नहीं है।

चैत्रकृष्ण ४ रविवार घ० ५४ प० ३३। अंग्रेजी ता० ८ मार्च। बंगला ता० २४ फाल्गुन। फारसी ता० १७ शव्वाल। फसली ता० ४। स्वा न० घ० ३८ प० ५४। दिनमान घ० २९ प० ९। सूर्योदय घं० ६ मि० १०। सूर्यास्त घं० ५ मि० ५०। चन्द्रराशि तुला है। आज रङ्ग पंचमी है। मासशून्य ति० ४। जलाशयादि प्र० मु० वृष लग्नमें ८ श० के दानसे शुभ। यात्रा शुभ नहीं है।

चैत्रकृष्ण ६ सोमवार घ० ५६ प० ०। अंग्रेजी ता० ९ मार्च। बंगला ता० २५ फाल्गुन। फारसी ता० १८ शव्वाल। फसली ता० ५। वि० न० घ० ३७ प० ३। दिनमान घ० २९ प० १३। सूर्योदय घं० ६ मि० ९। सूर्यास्त घं० ५ मि० ५१। चन्द्रराशि तुला। वाद वृश्चिक घ० २२ प० ३० पर होगी। आज भद्रा घ० ५६ प० ० (रात्रिमें घं० ४ मि० ३३ के वाद लगेगी। यमदंष्ट्रयोग घ० ३७ प० ३ यावत्। यात्रा शुभ नहीं है।

चैत्र कृष्ण ७ मंगलवार घ० ५३ प० ४५। अंग्रेजी ता० १० मार्च। बंगला ता० २६ फाल्गुन। फारसी ता० १९ शव्वाल। फसली ता० ६। ऽनु० न० घ० ३६ प० ५। दिनमान घ० २९ प० १७। सूर्योदय घं० ६

मि० ९। सूर्यास्त घं० ५ मि० ५१। चन्द्रराशि वृश्चिक है। आज घ० २४ प० ५३ (दिनमें घं० ४ मि० ६) तक भद्रा रहेगी। रवियोग घ० ३६ यावत्। यात्रा शुभ नहीं है।

चैत्र कृष्ण ८ बुधवार घ० ५२ प० १२। अंग्रेजी ता० ११ मार्च। बंगला ता० २७ फाल्गुन। फारसी ता० २० शव्वाल। फसली ता० ७। ज्येष्ठा न० घ० ३६ प० १७। दिनमान घ० २९ प० २०। सूर्योदय घं० ६ मि० ८। सूर्यास्त घं० ५ मि० ५२। चन्द्रराशि वृश्चिक, बाद धन घ० ३६ प० १७ पर होगी। आज शीतलादर्शनं ८। वन्दीदेवी जन्म ८। भैरवाष्टमी ८। बुधाष्टमी ८। मार्गीगुरु घ० ५२ प० ५१ पर होगा। यात्रा शुभ नहीं है।

चैत्र कृष्ण ९ गुरुवार घ० ५२ प० ५९। अंग्रेजी ता० १२ मार्च। बंगला ता० २८ फाल्गुन। फारसी ता० २१ शव्वाल। फसली ता० ८। मूल न० घ० ३७ प० ४३। दिनमान घ० २९ प० २४। सूर्योदय घं० ६ मि० ७। सूर्यास्त घं० ५ मि० ५३। चन्द्रराशि धन है। आज पू० भा० न० ४ चन्द्र मीन राशिमें शुभ घ० १२ प० ५९ पर होगा। यात्रा शुभ नहीं है।

चैत्रकृष्ण १० शुक्रवार घ० ५४ प० २८। अंग्रेजी ता० १३ मार्च। बंगला ता० २९ फाल्गुन। फारसी ता० २२ शव्वाल। फसली ता० ९। पू० घ० ४० प० २५। दिनमान घ० २९ प० २८। सूर्योदय घं० ५ मि० ५४। चन्द्रराशि धन, बाद मकर घ० ५६ प० २३ पर होगी। मासान्त। यात्रा शुभ नहीं।

चैत्र कृष्ण ११ शनिवार घ० ५७ प० ११। अं० ता० १४ मार्च। बंगला ता० ३० फाल्गुन। फारसी ता० २३ शव्वाल। फसली ता० १०। उ० न० घ० ४४ प० १९। दिनमान घ० २९ प० ३२। सूर्योदय घं० ६ मि० ६। सूर्यास्त घं० ५ मि० ५४। चन्द्रराशि मकर है। आज मीन संक्रान्ति घ० १७ प० २९ पर होगी। मु० ४५ फ० समर्घता। संक्रान्ति पुण्यकालादिमें घं० १ मि० ६ के बादसे सूर्यास्त तक। पापमोचिनी ११ व्रतम्। स्मार्तानां। यायी जययोग घ० २९ यावत। यात्रा शुभ नहीं है।

चैत्रकृष्ण १२ रविवार घ० ६० प० ०। अंग्रेजी ता० १५ मार्च। बंगला ता० १ चैत्र। फारसी ता० २४ शव्वाल। फसली ता० ११। श्र० न० घ० १९ प० २०। दिनमान घ० २९ प० ३५। सूर्योदय घं० ६ मि० ५। सूर्यास्त घं० ५ मि० ४५। चन्द्रराशि मकर है। आजसे बंगला चैत्र आरम्भ हुआ।

पापमोचनी ११ व्रतं संन्यासि वैष्णवोंको । हरिवासरः घं० ११ मि० ५, बाद पारण करना चाहिये । यात्रा शुभ नहीं है ।

चैत्र कृष्ण १२ सोमवार घ० १ प० ४ । अंग्रेजी ता० १६ मार्च । बंगला ता० २ चैत्र । फारसी ता० २५ शव्वाल । फसली ता० १२ । धन न० घ० ५५ प० १२ । दिनमान घ० २९ प० ३९ । सूर्योदय घं० ६ मि० ४ । सूर्यास्त घं० ५ मि० ४६ । चन्द्रराशि मकर, बाद कुंभ घ० २२ प० १६ पर होगी । आज सोमप्रदोष १३ व्रत है । यायी जयदयोग घ० १ प० ४ के बादसे होगा । यात्रा शुभ नहीं ।

चैत्र कृष्ण १३ मंगलवार घ० ५ प० ४६ । अंग्रेजी ता० १७ मार्च । बंगला ता० ३ चैत्र । फारसी ता० २६ शव्वाल । फसली ता० १३ । शतभिष न० घ० ६० प० ० । दिनमान घ० २९ प० ४३ । सूर्योदय घं० ६ मि० ३ । सूर्यास्त घं० ५ मि० ५७ । चन्द्रराशि कुंभ है । आज भद्रा घ० ५ प० ४५ (दिनमें घं० ८ मि० २१) के बादसे घ० ३८ प० २४ (रात्रिमें घं० ९ मि० २५) तक रहेगी । उ० भा० नक्षत्रमें सूर्य घ० १५ प० ८ पर होंगे । मास शिवरात्रि व्रतम् १४ । वारुणीयोग घं० ८ मि० २१ यावत् । यात्रा शुभ नहीं है ।

चैत्र कृष्ण १४ बुधवार घ० ११ प० १ । अंग्रेजी ता० १८ मार्च । बंगला ता० ४ चैत्र । फारसी ता० २७ शव्वाल । फसली ता० १४ । शतभिष न० घ० १ प० ३८ । दिनमान घ० २९ प० ४७ । सूर्योदय घं० ६ मि० ३ । सूर्यास्त घं० ५ मि० ५७ । चन्द्रराशि कुंभ, बाद मीन घ० ५१ प० २५ के बाद होगी । रुद्रकर तीर्थस्नानं १४ । केदारकुंडोदकस्नानं । सिनीवाली ३० । दर्शश्राद्धम् ३० । मन्वादि ३० । यात्रा शुभ नहीं ।

चैत्र कृष्ण ३० गुरुवार घ० १६ प० १९ । अंग्रेजी ता० १९ मार्च । बंगला ता० ५ चैत्र । फारसी ता० २८ शव्वाल । फसली ता० १५ । पूर्वा न० घ० ८ प० ०४ । दिनमान घ० ०९ प० ५० । सूर्योदय घं० ६ मि० २ । सूर्यास्त घं० ५ मि० ५८ । चन्द्रराशि मीन है । आज स्नान-दान तर्पणमें ३० । कुहू ३० । यात्रा शुभ नहीं ।

चैत्रकृष्ण ४ रवौ मिश्रमानं ४४।५१ दिनमानं २६।६

सू.	मं.		गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	३	१०	२	९	८	११	५
२४	४	२३	१७	१	२६	२५	२५
२७	२५	२७	४९	४४	१०	१२	१२
५१	५६	५६	१०	५५	३४	१७	१७
६	५५	१०६	२५	६९	५	३	३
४	व	२८	व.	७	३५	११	११
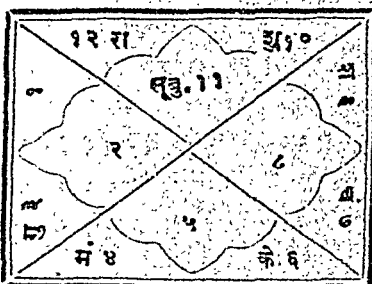
चैत्रकृष्ण १२ रवौ मिश्रमानं ४५।८ दिनमानं २६।२५

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	३	११	२	६	८	११	५
१	४	६	७	१८	२६	२४	२४
२७	२५	३	५१	५४	४३	५०	५०
२६	४५	०	३३	१८	४५	२	२
५९	०/९	१०४	१/२३	७०	५	३	३
४८	व	८	मा	१६	३५	११	११
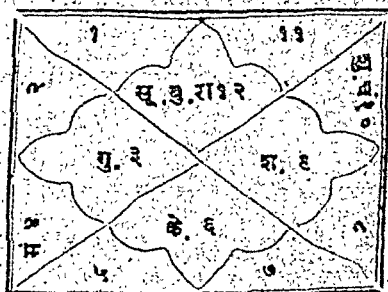
चैत्रमास फल।

चैत्र मासमें प्रायः धान्यका भाव तेजीमें रहेगा। जनतामें बड़ी हलचल मची रहेगी, किन्तु राजासे भय अधिक रहेगा। अधिक मतमतान्तर होनेकी सम्भावना है। अन्त्यज जातियोंका जोर पुष्ट रहेगा, धर्मद्रोही कुनीतिसे कार्य चलावेंगे। समयके प्रभावसे द्विज भी अपना कर्म छोड़कर कुमार्गगामी होंगे, इसीलिये आसन्नाधःपतन दृष्टिगोचर होता है। इस मासमें तुला, वृश्चिक, धन, कुम्भ राशिवालोंको १२ दिन अच्छे, ८ दिन सम और शेष बुरे बीतेंगे। रोजगारमें विशेष लाभ न रहेगा। स्त्रियों-भाइयोंमें झगड़े लगे रहेंगे। सिर तथा पेटमें पीड़ा अधिक रहेगी। मीन, मेष, सिंह, कन्या राशिवालोंको यह मास बुरा ही प्रतीत होता है। नौकरीमें फायदा न रहेगा, सत्यनारायणकी पूजासे सब दोष दूर होंगे। गरमीका स्वरूप होने लगेगा।

श्रीभारतधर्ममहामण्डलके संरक्षकत्वमें

निगमागम-ग्रन्थ-प्रकाशनका नया आयोजन ।

निगमागमग्रन्थमाला ।

पाश्चात्य देशोंमें धार्मिक ग्रन्थप्रकाशनका बड़ा महत्त्व है । वहांके लोग स्वदेश विदेशोंमें टीका टिप्पणी और भाष्यों सहित अपने धर्मके ग्रन्थोंका ऐसा प्रकाशन करते हैं जिससे वे सर्वसाधारणको अल्पमूल्यमें मिल जाते हैं । ग्रन्थ भी सर्ववादिसम्मत, सुलभ, शुद्ध और मधुर भाषामें निकलते हैं, तथा इस कार्यमें वहांकी जनता प्रति वर्ष करोड़ों रुपये आनन्द और उत्साहसे व्यय कर देती है ।

खेदका विषय है कि अपने इस भारतवर्षमें स्वधर्मके ग्रन्थ अप्राप्य हो रहे हैं । यहांतक कि, वेदों और उनकी शाखाओं तकके ग्रन्थोंके शुद्ध संस्करण हमें जर्मनीसे खरीदने पड़ते हैं । श्रीभारतधर्ममहामण्डलने अबतक सहस्रों रुपये व्यय कर टीका टिप्पणी और भाष्यसहित कई दार्शनिक और सनातनधर्मके रहस्य प्रकाशक ग्रन्थ प्रकाशित किये हैं और 'धर्मकल्पद्रुम' 'नवीन दृष्टिमें प्रवीण भारत' 'प्रवीण दृष्टिमें नवीन भारत' 'सप्त गीताएं' तथा बालक बालिकाओंकी धर्मशिक्षाके उपयोगी कई ग्रन्थ प्रकाशित कर सनातनधर्मावलम्बी जनताका प्रचुर उपकार साधन किया है । परन्तु अर्थाभावसे वेदों, उपनिषदों, स्मृतियों और पुराणोंके वैज्ञानिक टिप्पणियों, अनुवादों और भाष्यों सहित शुद्ध संस्करण निकालनेमें वह असमर्थ रहा है । यह कार्य अबतक अन्य किसी प्रकाशकने भी अपने हाथमें नहीं लिया है । अब श्रीमहामण्डलने इस महत् कार्यको सुश्रीकृत साथ सुसिद्ध करनेके अभिप्रायसे भारतधर्म सिण्डिकेट लिमिटेड नामक कंपनीको सौंप दिया है ।

विचार ऐसा रखा गया है कि इस कार्यमें साधारणसे साधारण व्यक्तिसे लेकर स्वाधीन राजा महाराजा तक हमारा हाथ बटा सकते। इस कार्यमें भाग लेनेवाले सहानुभावोंकी चिरकालिक जीवित स्मृति भी रह जायगी, उन्हें पुण्य और यशकी प्राप्ति होगी तथा सनातनधर्मावलम्बियोंका परम उपकार होगा। इसके लिये निम्नलिखित योजना स्थिर की जाती है:—

(१) इस ग्रन्थमालाके द्वारा चारों वेदों, उनकी शाखाओं, ब्राह्मण ग्रन्थों, उपनिषदों, स्मृतियों और पुराणोंके शुद्ध संस्करण अपूर्व वैज्ञानिक टिप्पणियां, जो आजतक प्रकाशित नहीं हुई हैं, और हिन्दी अनुवाद सहित प्रकाशित किये जायेंगे।

(२) वेदों, उपनिषदों, स्मृतियों, महापुराणों, पुराणों, उपपुराणों आदि शास्त्रीय ग्रन्थोंकी ऐसी बृहत्सूची श्रीमहामण्डलने सम्बन्धयुक्त भारतविख्यात पण्डितोंके द्वारा बनाई गई है, जिससे प्रत्येक श्लोक और एक ही विषय कहां कहां है, इसका पता लग सकता है, ऐसी अद्भुत सूची अबतक कहीं नहीं बनी थी। जो शास्त्रीय ग्रन्थ हिन्दी अनुवाद और वैज्ञानिक टिप्पणियोंके साथ प्रकाशित होंगे, उनके साथ यह सूची भी दी जायगी।

(३) ग्रन्थमालाका प्रत्येक खण्ड डिमाई ८ पेजी फार्मके ज्यादासे ज्यादा २०० से ३०० पृष्ठ तक रहेगा और उसका मूल्य सस्ता और पृष्ठोंकी संख्याके अनुसार रक्खा जायगा। अन्य साइजोंमें भी पुस्तकें निकलेंगी। नमूनेके तौरपर कुछ उपनिषद्, दर्शनशास्त्र और तुलसीकृतरामायण आदि ग्रन्थ प्रकाशित हुए हैं। निम्नलिखित ग्रन्थोंके पाठ करनेसे इस शास्त्रीय पुरुषार्थका कुछ महत्त्व पाठक जान सकेंगे यथाः—योगदर्शन भाष्य सहित, कर्ममीमांसादर्शन भाष्य सहित, धर्मकल्पद्रुमके सात खण्ड, बृहदारण्यक उपनिषद्‌का प्रथम खण्ड, हिन्दी भाष्य सहित ईशोपनिषत्, केनोपनिषत्, सप्तशती गीता भाष्य व टीका सहित इत्यादि।

बिनामूल्य धर्मप्रचार, पुण्य, यश और भरपूर आर्थिक लाभकी नयी योजना।

(४) ऊपर लिखित शास्त्रोंको छपाने और इसके सहायतार्थ यन्त्रालय (प्रेस) को सर्वाङ्गपूर्ण बनानेके लिये एक लाख रुपयेका

डिबेञ्चर पांच वर्षके लिये निकालनेका सिण्डिकेटके सञ्चालकोंने निश्चय किया है। डिबेञ्चर पर ६॥) साढ़े छः रुपया सैकड़ा सूद हर साल बराबर मिलेगा और डिबेञ्चर खरीदनेके समयसे पांच वर्षके बाद यह रुपया वापस दे दिया जायगा। दोनों विभागोंमें लगभग ४००००) लगा है और अबतक प्रकाशन विभागमें लगभग १२) सैकड़े और प्रेसमें लगभग १०) सैकड़े लाभ हो रहा है। यदि इन लाभदायक विभागोंमें एक लाख रुपया और लगाया जायगा तो ५०) सैकड़े लाभ होना भी असम्भव नहीं है। उपर्युक्त डिबेञ्चरके लेनेमें देशके छोटे बड़े सब हिन्दू हाथ बटा सकें, इस लिये डिबेञ्चर लेनेवालों तथा सहायकोंकी निम्न लिखित श्रेणियां निर्धारित की गई हैं:—

(क) देशके दानी स्वाधीन धार्मिक नृपतिवृन्द अथवा जो धनी सज्जन केवल एक खण्डकी छपाई एक बार देंगे, वे मालाके स्थाई संरक्षक माने जायंगे। उन्हें मालाकी उसी पुस्तककी १० प्रतियां विना मूल्य दी जायगी और जो खण्ड वे छपा देंगे, उसमें उनका सचित्र चरित्र छापा जायगा तथा वह खण्ड उन्हींको समर्पित किया जायगा।

(ख) जो धनी सज्जन कमसे कम ५ सहस्र रुपयेका डिबेञ्चर लेंगे, उन्हें भी स्थाई संरक्षक समझा जायगा और उनका भी सचित्र चरित्र एक किसी खण्डमें प्रकाशित होकर उन्हें समर्पित किया जायगा।

(ग) मालाके पोषक वे होंगे, जो एक सहस्र या इससे अधिकका डिबेञ्चर लेंगे। वे विशेष सहायक कहावेंगे। उन्हें भी सूद ६॥) सैकड़े दिया जायगा। यदि वे चाहें तो सूदके द्विगुणित रकमकी पुस्तकें विना मूल्य उन्हें मिला करेंगी। यदि पुस्तकोंका मूल्य बाद करके भी सूदका रुपया बच रहा, तो वह उन्हें लौटा दिया जायगा।

(घ) जो केवल १००) का ही डिबेञ्चर लेंगे, उन्हें भी ६॥) सैकड़ा सूद मिलेगा और वे सहायक कहावेंगे। नियम (ग) के अनुसार उन्हें भी पुस्तकें और सूद पानेका सुभीता रहेगा।

(५) इस आयोजनके अनुसार डिबेञ्चर लेनेवालोंको सूद देकर और खर्च आदि बादकर भी यदि लाभांश बच रहा, (बच रहना सम्भव भी है) तो उसमेंसे ५०) सैकड़ा दोनों विभागोंकी उन्नतिके लिये रखकर शेष रुपया नियम ख, ग, घ, के सभ्योंको यथा भाग समान रूपसे बांट दिया जायगा।

(६) ऊपर लिखित लाभके अतिरिक्त इन सज्जनोंके घरमें सुगमताके साथ एक पवित्र पुस्तकालय बन जायगा, जो सद्गृहस्थमात्रके लिये आवश्यक है।

(७) महामण्डल ग्रन्थमालाके जो सज्जन १) प्रवेश शुल्क देकर सदस्य हो गये हैं या होंगे, उन्हें पौने मूल्यमें इस मालाके सब ग्रन्थ मिलेंगे।

उक्त कम्पनी दस लाख रुपयेके हिस्सेमें विभक्त होकर खोली गई है। जिसके हिस्से भी मिल सकते हैं, जिसमें प्रेस विभाग, बुकडिपो विभाग, शास्त्र प्रकाशन विभाग, सम्बादपत्र विभाग आदि कई विभाग हैं। प्रस्तावित उक्त कार्य शास्त्र प्रकाशन विभाग द्वारा सम्पादित होंगे।

इस योजनाके अनुसार 'निगमागम ग्रन्थमाला' से लाभ उठाना और हिन्दुजातिका एक प्रचण्ड प्रकाशन विभाग तथा सर्वाङ्गपूर्ण यन्त्रालय बनाना सनातनधर्मावलम्बी मात्रका कर्तव्य है। सर्वसाधारण और धनी मानी पुरुषोंसे विनम्र प्रार्थना है कि यथा सम्भव शीघ्र इस कार्यमें हाथ बढ़ानेकी कृपा करें, जिससे इस विराट अभावकी पूर्ति बिना बिलम्बके की जा सके। जो सज्जन इस परम शुभ कार्य्यमें सहायक बनना चाहें, वे मेरे नाम पत्र भेजें।

चीफ अफसर—
भारतधर्म सिण्डिकेट लिमिटेड, सिण्डिकेट भवन,
बनारस सिटी।

स्थिर ग्राहकोंके नियम।

(१) इनमेंसे जो कमसे कम ४) मूल्यकी पुस्तकें पूरे मूल्यमें खरीदेंगे अथवा स्थिर ग्राहक होनेका चन्दा १) भेज देंगे, उन्हें

शेष और आगे प्रकाशित होने वाली सब पुस्तकें ¾ मूल्यमें दी जायँगी।

(२) स्थिर ग्राहकोंको मालामें प्रकाशित होनेवाली हर एक पुस्तक खरीदनी होगी। जो पुस्तक इस विभाग द्वारा छापी जायगी वह एक विद्वानोंकी कमेटी द्वारा पसन्द करा ली जायगी।

(३) हर एक ग्राहक अपना नम्बर लिख कर या दिखा कर हमारे कार्यालयसे अथवा जहां वह रहता हो वहां हमारी शाखा हो तो वहांसे स्वल्प मूल्य पर पुस्तकें खरीद सकेगा।

(४) जो धर्मसभा इस धर्मकार्य्यमें सहायता करना चाहे और जो सज्जन इस ग्रंथमालाके स्थायी ग्राहक होना चाहें, वे नीचे लिखे पतेपर पत्र भेजनेकी कृपा करें।

मैनेजर, निगमागम बुकडिपो,
भारतधर्म सिण्डिकेट लिमिटेड, स्टेशन रोड, बनारस सिटी।

सनातनधर्मकी पुस्तकें।

धर्मकल्पद्रुम।

[श्रीस्वामी दयानन्द विरचित]

यह हिन्दुधर्मका अद्वितीय और परमावश्यक ग्रंथ है। हिन्दु-जातिकी पुनरुन्नतिके लिये जिन जिन आवश्यकीय विषयोंकी जरूरत है, उनमेंसे सबसे बड़ी भारी जरूरत एक ऐसे धर्मग्रन्थकी थी कि जिसके अध्ययन अध्यापनके द्वारा सनातनधर्मका रहस्य और उसका विस्तृत स्वरूप तथा उसके अङ्ग उपाङ्गोंका यथार्थ ज्ञान प्राप्त हो सके और साथ ही साथ वेद और सब शास्त्रोंका आशय तथा वेदों और सब शास्त्रोंमें कहे हुए विज्ञानोंका यथाक्रम स्वरूप जिज्ञासुको भलीभांति विदित हो सके। इसी गुरुतर अभावको दूर करनेके लिये भारतके प्रसिद्ध धर्मवक्ता और श्रीभारतधर्म-महामण्डलस्थ उपदेशक महाविद्यालयके दर्शनशास्त्रके अध्यापक

श्रीमान् स्वामी दयानन्दजी महाराजने इस ग्रन्थका प्रणयन किया है। इसमें वर्तमान समयके आलोच्य सभी विषय विस्तृतरूपसे दिये गये हैं। इस ग्रन्थसे आजकलके अशास्त्रीय और विज्ञानरहित धर्मग्रन्थों और धर्मप्रचारके द्वारा जो हानि हो रही है, वह सब दूर होकर यथार्थरूपसे सनातन वैदिक धर्मका प्रचार होगा। इस ग्रंथरत्नमें साम्प्रदायिक पक्षपातका लेशमात्र भी नहीं है और निष्पक्षरूपसे सब विषय प्रतिपादित किये गये हैं, जिससे सकल प्रकारके अधिकारी कल्याण प्राप्त कर सकें। इसमें और भी एक विशेषता यह है कि, हिन्दुशास्त्रके सभी विज्ञान शास्त्रीय प्रमाणों और युक्तियोंके सिवाय, आजकलकी पदार्थ विद्या (Science) के द्वारा भी प्रतिपादन किये गये हैं, जिससे आजकलके नवशिक्षित पुरुष भी लाभ उठा सकें। इसके सात खण्ड प्रकाशित हो चुके हैं। प्रथम खण्डका मूल्य २), द्वितीयका २॥), तृतीयका २), चतुर्थका २), पञ्चमका २), षष्ठका २॥), सप्तमका २) और अष्टमका २) है। इसके प्रथम दो खण्ड बढ़िया कागजपर भी छापे गये हैं। और दोनों ही एक बहुत सुन्दर जिल्दमें बांधे गये हैं। मूल्य ५) है।

प्रवीण दृष्टिमें नवीन भारत।

[श्रीस्वामी दयानन्द सम्पादित]

इस ग्रन्थमें आर्यजातिका आदि वासस्थान, उन्नतिका आदर्श निरूपण, शिक्षादर्श, आर्यजीवन, वर्णधर्म आदि विषय वैज्ञानिक युक्ति तथा शास्त्रीय प्रमाणोंके साथ वर्णित है। यह ग्रन्थ धर्मशिक्षाके अर्थ बी० ए० क्लासका पाठ्य है। इसके दो खण्ड हैं। प्रत्येकका मूल्य २)

नवीन दृष्टिमें प्रवीण भारत।

[श्रीस्वामी दयानन्द सम्पादित]

भारतका प्राचीन गौरव और आर्यजातिका महत्व जाननेके लिये यह एक ही पुस्तक है। इसका द्वितीय संस्करण परिवर्द्धित और सुन्दर होकर छप चुका है। यह ग्रन्थ भी बी० ए० क्लासका पाठ्य है। मू० १)

साधनचन्द्रिका ।

[श्रीस्वामी दयानन्द विरचित]

इसमें मंत्रयोग, हठयोग, लययोग और राजयोग इन चारों योगोंका संक्षेपमें अति सुन्दर वर्णन किया गया है। यह ग्रंथ प्रथम वार्षिक एफ० ए० क्लासका पाठ्य है। मू० १॥)

शास्त्रचंद्रिका ।

अज्ञाननाशिनी और ज्ञानजननीको विद्या कहते हैं। विद्या दो भागोंमें विभक्त है, एक परा विद्या और दूसरी अपरा विद्या। गुरुमुखसे प्राप्त होनेवाली ब्रह्मविद्या परा विद्या कहलाती है। परा विद्या ग्रन्थोंसे नहीं प्रकाशित होती। ग्रंथोंसे प्रकाशित होनेवाली विद्याको अपरा विद्या कहते हैं। अपरा विद्या भी पुनः दो भागोंमें विभक्त है, यथा—लौकिक विद्या और पारलौकिक विद्या। शिल्प, कला, वाणिज्य, पदार्थविद्या, सायन्स, राजनीति, समाजनीति, युद्धविद्या, चिकित्साविद्या आदि सब लौकिक विद्याके अन्तर्गत हैं और वेद और वेदसम्मत दर्शन पुराणादि शास्त्र सब पारलौकिक विद्याके अन्तर्गत माने गये हैं। पारलौकिक विद्याके दिग्दर्शनार्थ यह ग्रन्थ इस विचारसे बनाया गया है कि, जिससे विद्यार्थियोंको धर्म शिक्षा प्राप्त करनेमें सहायता प्राप्त हो सके। मूल्य १॥) रुपया।

धर्मचंद्रिका ।

[श्रीस्वामी दयानन्द विरचित]

एन्ट्रेंस क्लासके बालकोंके पाठोपयोगी उत्तम धर्मपुस्तक है। इसमें सनातनधर्मका उदार सार्वभौम स्वरूपवर्णन, यज्ञ, दान, तप आदि धर्माङ्गोंका विस्तृत वर्णन, वर्णधर्म, आश्रमधर्म, नारीधर्म, आर्यधर्म, राजधर्म तथा प्रजाधर्मके विषयमें बहुत कुछ लिखा गया है। कर्मविज्ञान, संध्या, पञ्चमहायज्ञ आदि नित्यकर्मोंका वर्णन, षोडश संस्कारोंके पृथक पृथक वर्णन और संस्कारशुद्धि तथा क्रियाशुद्धि द्वारा मोक्षका यथार्थ मार्ग निर्देश किया गया है। इस ग्रन्थके पाठसे छात्रगण धर्मतत्त्व अवश्य ही अच्छी तरहसे जान सकेंगे। मूल्य १)

धर्मसोपान ।

यह धर्मशिक्षा विषयक बड़ी उत्तम पुस्तक है । बालकोंको इससे धर्मका साधारण ज्ञान भलीभांति हो जाता है । यह पुस्तक क्या बालक बालिका, क्या वृद्ध स्त्री पुरुष, सबके लिये बहुत ही उपकारी है । धर्मशिक्षा पानेकी इच्छा करने वाले सज्जन अवश्य इस पुस्तकको मगावें । यह स्कूलकी ५ वीं कक्षाका पाठ्य है । मूल्य ।) आना ।

धर्म-कर्म-दीपिका ।

इस पुस्तकमें कर्मका स्वरूप, कर्मके भेद, संस्कारके लक्षण और भेद, वैदिक संस्कारोंका रहस्य, त्रिविध कर्मका वैज्ञानिक स्वरूप, कर्मबन्धनसे मुक्ति, कर्मके साथ धर्मका मिश्र सम्बन्ध, धर्मरूप कल्पद्रुमका विस्तृत वर्णन, वर्णाश्रमधर्मकी महिमा और विज्ञान, उपासना रहस्य, उपासनाका मूलभित्तिरूप पीठ रहस्य, धर्म कर्म और यज्ञ शब्दोंका वैज्ञानिकरहस्य और सदाचारका विज्ञान और महत्त्व प्रतिपादन किया गया है । यह ग्रन्थ मूल और सुस्पष्ट हिन्दी-अनुवाद सहित शास्त्रीय प्रमाण देकर छापा गया है । यह ग्रन्थरत्न प्रत्येक सनातनधर्मावलम्बीके लिये उपादेय है । मूल्य ॥)

सदाचारसोपान ।

यह पुस्तक कोमलमति बालक बालिकाओंकी धर्मशिक्षाके लिये प्रथम पुस्तक है । यह स्कूलकी तीसरी कक्षाका पाठ्य है । मूल्य -) एक आना ।

कन्याशिक्षासोपान ।

कोमलमति कन्याओंको धर्मशिक्षा देनेके लिये यह पुस्तक बहुत ही उपयोगी है । मूल्य -)

ब्रह्मचर्य्यसोपान ।

ब्रह्मचर्यव्रतकी शिक्षाके लिये यह ग्रन्थ बहुत उपयोगी है । सब ब्रह्मचारी आश्रम, पाठशाला और स्कूलोंमें इस ग्रन्थकी पढ़ाई होनी चाहिये । मूल्य ।) आना ।

राजशिक्षासोपान

राजा महाराजा और उनके कुमारोंको धार्मिक शिक्षा देनेके लिये यह ग्रन्थ बनाया गया है। परन्तु सर्वसाधारणकी धर्मशिक्षाके लिये भी यह ग्रन्थ बहुत ही उपयोगी है। इसमें सनातनधर्मके अङ्ग और उसके तत्त्व अच्छी तरह बताये गये हैं। मूल्य ≡) तीन आना।

साधनसोपान।

यह पुस्तक उपासना और साधनशैलीकी शिक्षा प्राप्त करनेमें बहुत ही उपयोगी है। इसका बंगला अनुवाद भी छप चुका है। बालक बालिकाओंको पहलेसे इस पुस्तक को पढ़ाना चाहिये। यह पुस्तक ऐसी उपकारी है कि, बालक और वृद्ध समानरूपसे इससे साधन-विषयक शिक्षा लाभ कर सक्ते हैं। मूल्य ।) आना।

शास्त्रसोपान।

सनातनधर्मके शास्त्रोंका सारांश इस ग्रन्थमें वर्णित है। सब शास्त्रोंका कुछ विवरण समझनेके लिये प्रत्येक सनातनधर्मावलम्बीके लिये यह ग्रन्थ बहुत ही उपयोगी है। मूल्य ।)

धर्मप्रचारसोपान।

यह ग्रन्थ धर्मोपदेश देनेवाले उपदेशक और पौराणिक पण्डितों के लिये बहुत ही हितकारी है। मूल्य ।) आना।

उपदेशपारिजात।

यह संस्कृत गद्यात्मक अपूर्व ग्रन्थ है। सनातनधर्म क्या है, धर्मोपदेश किसको कहते हैं, सनातनधर्मके सब शास्त्रोंमें क्या क्या विषय हैं, धर्मवक्ता होनेके लिये किन किन योग्यताओंके होनेकी आवश्यकता है इत्यादि अनेक विषय इस ग्रंथमें हैं। संस्कृत विद्वान् मात्रको पढ़ना उचित है और धर्मवक्ता, धर्मोपदेशक, पौराणिक पण्डित आदिके लिये तो यह ग्रंथ सब समय साथ रखने योग्य है। मूल्य ।।) आना।

कल्किपुराण।

कल्किपुराणका नाम किसने नहीं सुना है ? इस कलियुगमें कल्कि महाराज अवतार धारण कर दुष्टोंका संहार करेंगे, उनका

पूर्ण वृत्तान्त है। वर्तमान समयके लिये यह बहुत हितकारी ग्रन्थ है। विशुद्ध हिन्दी अनुवाद और विस्तृत भूमिका सहित यह ग्रन्थ प्रकाशित हुआ है। धर्मजिज्ञासुमात्रको इस ग्रन्थको पढ़ना उचित है। मूल्य १॥)

योगदर्शन।

हिन्दी भाष्यसहित। इस प्रकारका हिन्दी भाष्य और कहीं प्रकाशित नहीं हुआ है। सब दर्शनोंमें योगदर्शन सर्ववादिसम्मत दर्शन है और इसमें साधनके द्वारा अन्तर्जगत्के सब विषयोंको प्रत्यक्ष अनुभव करा देनेकी प्रणाली रहनेके कारण इसका पाठन और भाष्य एवं टीका निर्माण वही सुचारुरूपसे कर सकता है, जो योगके क्रियासिद्धांशका पारगामी हो। प्रत्येक सूत्रका भाष्य प्रत्येक सूत्रके आदिमें भूमिका देकर ऐसा क्रमबद्ध बना दिया गया है कि, जिससे पाठकोंको मनोनिवेशपूर्वक पढ़ने पर असम्बद्ध नहीं मालूम होगा और ऐसा प्रतीत होगा कि, महर्षि सूत्रकारने जीवोंके अभ्युदय और निःश्रेयसके लिये मानो एक महान् राजपथ निर्माण कर दिया है। इसका द्वितीय संस्करण छपकर तैयार है। इसमें इस भाष्यको और भी अधिक सुस्पष्ट, परिवर्द्धित और सरल किया गया है। मूल्य २) दो रुपया।

श्रीभारतधर्ममहामण्डलरहस्य

इस ग्रन्थमें सात अध्याय हैं। यथा-आर्य्यजातिकी दशाका परिवर्त्तन, चिन्ताका कारण, व्याधिनिर्णय, औषधिप्रयोग, सुपथ्यसेवन, बीजरक्षा और सहायकसाधन। यह ग्रन्थरत्न हिन्दूजातिकी उन्नतिके विषयका असाधारण ग्रन्थ है। प्रत्येक सनातनधर्मावलम्बीको इस ग्रन्थको पढ़ना चाहिये। द्वितीयावृत्ति छप चुकी है। इसमें बहुतसा विषय बढ़ाया गया है। इस ग्रन्थका आदर सारे भारतवर्षमें समान रूपसे हुआ है। धर्मके गूढ़तत्त्व भी इसमें बहुत अच्छी तरहसे बताये गये हैं। इसका बंगला अनुवाद भी छप चुका है। मूल्य १)

निगमागमचन्द्रिका।

प्रथम, द्वितीय, पञ्चम और षष्ठ भाग धर्मानुरागी सज्जनोंके

मिल सकते हैं। इन भागोंमें सनातनधर्मके अनेक गूढ़ रहस्यसम्बन्धी ऐसे ऐसे प्रबंध प्रकाशित हुए हैं कि, आजतक वैसे धर्मसम्बन्धी प्रबंध और कहीं भी प्रकाशित नहीं हुए हैं। जो धर्मके अनेक रहस्य जानकर तृप्त होना चाहें, वे इन पुस्तकोंको मंगावें। प्रत्येक का मूल्य १)

मन्त्रयोगसंहिता।

भाषानुवादसहित। योग विषयक ऐसा अपूर्व ग्रन्थ आजतक प्रकाशित नहीं हुआ है। इसमें मन्त्रयोगके १६ अङ्ग और क्रमशः उनके लक्षण, साधनप्रणाली आदि सब विषय अच्छी तरहसे वर्णन किये गये हैं। इसमें मंत्रोंका स्वरूप और उपास्यनिर्णय बहुत अच्छा किया गया है और अनर्थकारी साम्प्रदायिक विरोधके दूर करनेके लिये यह एकमात्र ग्रन्थ है। इसमें नास्तिकोंके मूर्ति पूजा, मन्त्रसिद्धि आदि विषयोंमें जो प्रश्न होते हैं, उनका अच्छा समाधान है। मूल्य १) एक रु०।

हठयोगसंहिता।

भाषानुवादसहित। योगविषयक ऐसा अपूर्व ग्रन्थ आजतक प्रकाशित नहीं हुआ है। इसमें हठयोगके ७ अंग और क्रमशः उनके लक्षण साधन प्रणाली आदि सब विषय अच्छी तरहसे वर्णन किये गये हैं। गुरु और शिष्य दोनों ही इससे पूरा लाभ उठा सकते हैं। मूल्य ।॥)

तत्त्वबोध।

भाषानुवाद और वैज्ञानिक टिप्पणी सहित। यह मूल वेदान्त ग्रन्थ श्रीशंकराचार्य्य कृत है। इसका बंगानुवाद भी प्रकाशित हो चुका है। मूल्य =)

स्तोत्र कुसुमाञ्जलि।

इसमें पंचदेवता, अवतार और ब्रह्मकी स्तुतियोंके साथ साथ आजकलकी आवश्यकतानुसार धर्मस्तुति, गंगादि पवित्र तीर्थोंकी स्तुति, वेदान्तप्रतिपादक स्तुतियां और काशीके प्रधान देवता श्रीविश्वनाथादिकी स्तुतियां हैं। मूल्य ।) आना।

श्रीमद्भगवद्गीता प्रथमखण्ड ।

श्रीगीताजीका अपूर्व हिन्दी—भाष्य यह प्रकाशित हो रहा है। जिसका यह प्रथम खण्ड है। इसमें प्रथम अध्याय और द्वितीय अध्यायका कुछ हिस्सा प्रकाशित हुआ है। आज कल श्रीगीताजी पर अनेक संस्कृत और हिन्दी—भाष्य प्रकाशित हुए हैं, परन्तु इस प्रकारका भाष्य आज तक किसी भाषामें प्रकाशित नहीं हुआ। गीताका अध्यात्म, अधिदैव, अधिभूतरूपी त्रिविध स्वरूप, प्रत्येक श्लोकका त्रिविध अर्थ और सब प्रकारके अधिकारियोंके समझने योग्य गीता—विज्ञानका विस्तारित विवरण इस भाष्यमें मौजूद है। मूल्य १) एक रु०।

सप्त गीताएं ।

पञ्चोपासनाके अनुसार पांच प्रकारके उपासकोंके लिये पांच गीताएं-श्रीविष्णुगीता, श्रीसूर्य्यगीता, श्रीशक्तिगीता, श्रीधीशगीता और श्रीशम्भुगीता, एवं संन्यासियोंके लिये संन्यासगीता और साधकोंके लिये गुरुगीता भाषानुवाद सहित छप चुकी हैं। इन सातों गीताओंमें अनेक दार्शनिक तत्त्व, अनेक उपासनाकाण्डके रहस्य और प्रत्येक उपास्य देवकी उपासनासे सम्बन्ध रखने वाले विषय सुचारु रूपसे प्रतिपादित किये गये हैं। ये सातों गीताएं उपनिषद्रूप हैं। प्रत्येक उपासक अपने उपास्यदेवकी गीतासे तो लाभ उठावेगा ही, किन्तु अन्य चार गीताओंके पाठ करनेसे भी वह अनेक उपासनातत्त्वोंको तथा अनेक वैज्ञानिक रहस्योंको जान सकेगा और उसके अन्तःकरणमें प्रचलित साम्प्रदायिक ग्रन्थोंसे जैसा विरोध उदय होता है, वैसा नहीं होगा, वह परम शान्तिका अधिकारी हो सकेगा। संन्यासगीतामें सब सम्प्रदायोंके साधु और सन्यासियोंके लिये सब जानने योग्य विषय सन्निविष्ट हैं। संन्यासिगण इसके पाठ करनेसे विशेष ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। गृहस्थोंके लिये भी यह ग्रन्थ धर्मज्ञानका भण्डार है। श्रीमहामण्डलसे प्रकाशित गुरुगीताके सदृश ग्रंथ आजतक किसी भाषामें प्रकाशित नहीं हुआ है। इसमें गुरु-शिष्यलक्षण, उपासनाका रहस्य और भेद, मन्त्र हठ लय और राजयोगोंके लक्षण और अङ्ग एवं गुरुमाहात्म्य, शिष्यकर्तव्य, परम तत्त्व

का स्वरूप और गुरुशब्दार्थ आदि सब विषय स्पष्टरूपसे हैं। मूल, स्पष्ट सरल और सुमधुर भाषानुवाद और वैज्ञानिक टिप्पणी सहित यह ग्रंथ छपा है। गुरु और शिष्य दोनोंके लिये यह उपकारी ग्रन्थ है। विष्णुगीताका मूल्य १), सूर्य्यगीताका मूल्य ॥), शक्तिगीताका मूल्य १), धीशगीताका मूल्य ।॥), शम्भुगीताका मूल्य १) संन्यासगीताका मूल्य १) और गुरुगीताका मूल्य ।) है। इनमेंसे पञ्चोपासनाकी पांच गीताओंमें एक एक तीनरंगा विष्णुदेव, सूर्यदेव, भगवती और गणपति देव तथा शिवका चित्र भी दिया गया है। शम्भुगीतामें वर्णाश्रमबन्ध नामक चित्र भी देखने योग्य है।

कर्म्ममीमांसा दर्शन।

महर्षि भरद्वाजकृत यह दर्शनशास्त्र अनुसन्धान द्वारा प्राप्त हुआ है, जिसका यह प्रथम धर्मपाद प्रकाशित हुआ है। सूत्र, सूत्रका हिन्दीमें अर्थ और संस्कृत भाष्यका हिन्दी अनुवाद इस प्रकार इसको छापा गया है। कर्मके साथ धर्मका सम्बन्ध, धर्मके अङ्गोपाङ्ग, पुरुषधर्म, नारीधर्म, वर्णधर्म, आश्रमधर्म, आपद्धर्म, प्रायश्चित्त प्रकरण आदि अनेक विषयोंका विज्ञान धर्मपादमें वर्णित हुआ है। संस्कारशुद्धिसे क्रियाशुद्धि कैसे होती है तथा उसके द्वारा मोक्षप्राप्ति किस प्रकार हो सकती है इत्यादि विषयोंका विज्ञान संस्कारपाद, क्रियापाद और मोक्षपादमें वर्णित हुआ है। ज्ञानकी सप्त भूमिकाओंके अनुसार पञ्चम भूमिकाका यह दर्शन है। महर्षि जैमिनीकृत जो वृहत् कर्ममीमांसा दर्शन उपलब्ध होता है वह केवल वैदिक कर्मकाण्डके विज्ञानका प्रतिपादक है। वैदिक यज्ञोंका प्रचार आजकल बहुत कम होनेके कारण जैमिनीदर्शनका उपयोग बिलकुल नहीं होता है यही कहना युक्तियुक्त होगा। महर्षि भरद्वाजकृत उपर्युक्त दर्शन ग्रंथ कर्मके सब अङ्गोंके विज्ञानका प्रतिपादक और धर्म विज्ञानके रहस्यका वर्णन करनेवाला है। इस ग्रंथरत्नका चार खण्डोंमें प्रकाशित होना सम्भव है। इसका प्रथम और द्वितीय पाद प्रकाशित हो गया है। क्रमशः मूल्य १॥) २)

श्रीरामगीता।

श्रीमहर्षि वशिष्ठकृत तत्वसारायणमें कथित यह श्रीरामगीता

है। परमधार्मिक विद्वान् स्वर्गवासी भारतधर्म-सुधाकर श्रीमहारा-वलजी साहब सर विजयसिंहजी बहादुर के० सी० आई० ई० डूंगर-पुर राज्याधिपतिके पुरुषार्थ द्वारा इसका सुललित हिन्दी भाषामें अनुवाद हुआ है और विस्तृत वैज्ञानिक टिप्पणियोंके द्वारा इसके दुरूह विषयोंका स्पष्टीकरण किया गया है। इन टिप्पणियोंके महत्वको सब दर्शनोंका ज्ञाता और सब योगोंका अभ्यासी समझ कर आन-न्दित हो सकता है क्योंकि इसमें सब तरहके विषय आये हैं। इसके आदिमें श्रीरामचन्द्रजीके मर्यादा-पुरुषोत्तम अवतारकी लीलाओंका विशद रहस्य प्रकाशित किया गया है। इस पुस्तकमें श्रीरामचन्द्र सीता और हनुमान आदिके कई त्रैवर्णिक चित्र भी दिये गये हैं। कागज छपाई तथा जिल्द आदि उत्कृष्ट हैं। इसमें अयोध्या मण्ड-पादि वर्णन, प्रमाणसार विवरण, ज्ञान-योग निरूपण, जीवन्मुक्ति निरूपण, विदेह मुक्ति निरूपण, वासना क्षयादि निरूपण, सप्तभूमिका निरूपण, समाधि निरूपण, वर्णाश्रम व्यवस्थापन, कर्मविभाग योग निरूपण, गुणत्रय विभाग योग निरूपण, विश्वरूप निरूपण, तारक प्रणव विभाग योग, महावाक्यार्थ विवरण, नव चक्र विवेक योग निरूपण, अणिमादि सिद्धि दूषण, विद्यासन्तति गुरुतत्व निरूपण, और सर्वाध्याय संगति निरूपण इत्यादि विषय हैं। एक धर्म-फण्डकी सहायताके लिये यह ग्रंथ बिकता है। प्रस्तुतका मूल्य केवल २॥)

कहावत रत्नाकर।

न्यायावली और सुभाषितावली सहित। परम धार्मिक तथा विद्वान् स्वर्गीय श्रीमान् भारतधर्म सुधाकर हिज़हाइनेस महारावल साहब सर विजयसिंह बहादुर, के० सी० आई० ई० डूंगरपुर नरे-शके सम्पादकत्वमें इस पुस्तकका छपना प्रारम्भ हुआ था। जिसको श्रीमहामण्डलके शास्त्र प्रकाशक विभागकी पण्डित-मण्डलीने सुचारूपसे समाप्त किया है। हिन्दी भाषाका यह एक अद्वितीय ग्रन्थ है। इसमें हिन्दीभाषाकी प्रधानता रखकर पांच भाषाओंमें कहावतें दी गई हैं। हिन्दी और उसीकी संस्कृत कहावत, अंगरेजी कहावत, फारसी कहावत, उर्दू कहावत, और अरबी कहावत। ये

कहावतें प्रत्येक भाषाके प्रधान प्रधान विद्वानों द्वारा संग्रहीत और संशोधित हुई हैं। इसी प्रकार संस्कृत न्यायवली और इसका अङ्ग्रेजी अनुवाद और विस्तृत अङ्गरेजी विवरण तथा हिन्दी अनुवाद और हिन्दी विवरण दिया गया है। अन्तमें संस्कृत सुभाषितावलीको सर्वसाधारणके सुभीतेके लिये अकारादि क्रमसे दिया गया है। इसके प्रारम्भमें अंग्रेजी और हिन्दी भाषाका महत्त्व प्रतिपादन करनेवाली एक भूमिका दी गई है। पुस्तक सर्वाङ्ग सुन्दर है, सुन्दर जिल्दबंधी हुई है। एक धर्म्मफण्डकी सहायताके लिये यह ग्रन्थ बिकता है। रायल एडीशन १०) साधारण संस्करण ७)

श्रीगोस्वामी तुलसीदासजीकी रामायण।

श्रीगोस्वामीजीकी हस्तलिखित पुस्तकके साथ मिलाकर सम्पूर्ण विशुद्धरूपसे छपायी गयी है। हम दावेके साथ कह सकते हैं कि, इसके मुकाबिलेकी पुस्तक बाजारमें नहीं मिलेगी। इसमें कठिन कठिन शब्दोंका अर्थ इस तरहसे दिया गया है कि बिना किसीके सहारे औरतें, बालक, बुड्ढे आदि सभी कोई अच्छी तरह कठिन कठिन भावोंको समझ ले सकते हैं। और भी इसकी विशेषता यह है कि, इस तरहकी टिप्पणियां इसमें दी गई हैं कि, जिनको पढ़नेसे सनातनधर्मकी सब बातें समझमें आजावेंगी। धर्मसम्बन्धीय सब तरहकी शङ्काओंका समाधान भली भांति हो जायगा। इसकी छपाई, कागज वगैरह बहुत ही उत्तम और सुदृश्य है और केवल प्रचारके लिये ही मूल्य भी १॥) रक्खा गया है।

गीतार्थचन्द्रिका।

[श्रीस्वामी दयानन्द विरचित]

श्रीस्वामीजीकी विद्वत्ता किसीसे छिपी नहीं है। उन्होंने बहुत ही परिश्रमके साथ गीतापर यह अपूर्व टीका लिखी है। केवल हिन्दी भाषाके जाननेवाले भी इसके द्वारा गीताके गूढ़रहस्यको जान सकें इसी लक्ष्यसे यह टीका लिखी गई है। इसमें श्लोकके प्रत्येक शब्दका हिन्दी अनुवाद, समस्त श्लोकका सरल अर्थ और अन्तमें एक अति मधुर चन्द्रिका द्वारा श्लोकका गूढ़ तात्पर्य बतलाया गया

है। इसमें किसीका आश्रय न लेकर ज्ञान, कर्म और उपासना तीनों-का सामञ्जस्य किया गया है। भाषा अति सरल तथा मधुर है। इस ग्रन्थके पाठ करनेसे गीताके विषयमें कुछ भी जाननेको बाकी नहीं रह जाता। हिन्दी भाषामें ऐसी अपूर्व गीता अबतक निकली ही नहीं है। मूल्य २॥)

सनातनधर्म-दीपिका।

[श्रीस्वामी दयानन्द विरचित]

इसमें १ धर्म, २ नित्यकर्म, ३ उपासना, ४ अवतार, ५ श्राद्धतर्पण, ६ यज्ञोपवीत संस्कार, ७ वेद और पुराण, ८ वर्णधर्म, ९ नारीधर्म, १० शिक्षादर्श और ११ उपसंहार शीर्षक निबंध लिखकर श्री स्वामीजीने बड़ी ही सरल भाषामें सनातनधर्मके मौलिक सिद्धान्त समझा दिये हैं। यह पुस्तक अंगरेजी स्कूलोंकी दशम श्रेणीके विद्यार्थियोंके धर्मशिक्षा देनेके उपयोगी बनाई है। मूल्य केवल ॥।) बारह आने।

आदर्श-जीवन-संग्रह।

महापुरुषोंके जीवन चरित्रसे भावी सन्तानके चरित्र संघटनपर बहुत ही प्रभाव पड़ता है। अतः बालकोंको आदर्श महापुरुषोंके जीवन चरित्र अवश्य पढ़ाने चाहिये। इस पुस्तकमें श्रीभगवान् शंकराचार्य, ईसामसीह, गो० स्वा० तुलसीदास, महाराज युधिष्ठिर, महात्मागांधी, लोकमान्य तिलक, महारानी अहिल्याबाई आदि २२ महानुभावों तथा महादेवियोंके जीवन चरित्रका संग्रह किया गया है। इस प्रकार यह अनेक आदर्शोंकी पुष्पमाला है। बालकोंके लिये अत्युपयोगी है। ऐसी पुस्तकका मूल्य १॥) मात्र है।

वीर बाला अथवा अपूर्व नारीरत्न।

यह एक अत्युपयोगी तथा शिक्षाप्रद सामाजिक उपन्यास है। इसमें राज-मद, धन-मद, यौवन-मदसे युक्त मनुष्यके पतन तथा राज-धन-यौवन-पूर्ण विवेकयुक्त पुरुषके उत्थानका अति सरल एवं ललित भाषामें दिग्दर्शन तो कराया ही गया है, इसके साथ ही विपत्ति-

ग्रस्त भारतीय नारियोंके साहस, धैर्य, पराक्रम, कर्त्तव्य और प्रेमका अत्युत्तम चित्र खींचा गया है। इसके अतिरिक्त लेखकने जगत् विख्यात शेक्सपियरके "Two Gentlemen of Verora" "Twelfth Night" पात्रोंसे भी अधिक इसकी नायिकाको कौशलपूर्ण दिखला कर अपनी कौशलताका परिचय दिया है। उपन्यासके आरम्भ करनेपर, बिना समाप्त किये उसे छोड़नेको जी नहीं चाहता। १७० पृष्ठकी पुस्तकका मूल्य केवल ।॥) मात्र है।

कल्पलतिका बाल-चिकित्सा।

आजकल बच्चे कमजोर तो होते ही हैं, अनेकों रोगोंसे सदैव ग्रसित रहते हैं। अपढ़ माताओंके होनेसे उनकी औषधि भी ठीक ठीक नहीं होती। परिव्राजक मैथिल स्वामीकी रचित प्रस्तुत पुस्तकमें बहुत ही कम कीमतकी जड़ी बूटीके नुसखे बतलाये गये हैं। बिना गुरुके थोड़ी भी हिन्दी जाननेवाले इसके द्वारा बच्चोंकी चिकित्सा कर सकते हैं। प्रत्येक माता पिताको यह पुस्तक अपने पास रखनी चाहिये। मूल्य ।) मात्र है।

त्रिवेदीय सन्ध्या।

शास्त्रविशारद-महोपदेशक पं० राधिकाप्रसाद वेदान्तशास्त्री प्रणीत।

इसमें तीनों वेदकी सन्ध्या दी गई है। हर एक मंत्रका हिन्दीमें अन्वय और विशुद्ध सरल हिन्दी भाषामें अनुवाद दिया गया है। सन्ध्या क्यों की जाती है? सन्ध्याका स्वरूप क्या है? उपासनाकी रीतिसे सन्ध्याके द्वारा अपने अपने जीवनको कैसे उन्नत कर सकते हैं, सन्ध्या किस समय की जाती है और कैसे की जाती है, सन्ध्या न करनेसे क्या क्या हानि होती है, सन्ध्याका वैज्ञानिक तात्पर्य क्या है, प्राणायामका स्वरूप क्या है और कैसे किया जाता है। गायत्रीका रहस्य क्या है, प्रणवका विस्तृत स्वरूप और विज्ञान क्या है, गायत्री जप करनेका विधान क्या है, इस प्रकारसे सन्ध्यासम्बन्धीय सब बातें युक्ति और शास्त्रीय प्रमाणोंसे सिद्ध की गई है। इसके साथ साथ गायत्रीशापोद्धार, गायत्रीकवच और गायत्रीहृदय

भी सानुवाद दिया गया है। इसकी विशेषता यह है कि, इस पुस्तक के देखनेसे बिना किसीसे पूछे आप ही आप, सन्ध्याका कार्य ठीक तरहसे कर सकेंगे और सन्ध्याके विषयमें जो कुछ शंकाएं हो सकती हैं, सबका भलीभांति समाधान हो जायगा। मूल्य केवल ।=) आने।

संगीतसुधाकर।

इसमें अच्छे अच्छे भजनोंका संग्रह है। मूल्य ।=)

वर्णाश्रमसंघ और स्वराज्य।

इसमें वर्णाश्रम संघ और स्वराज्यका विस्तृत निरूपण, उनके पारस्परिक सम्बन्ध, स्वराज्यकी आवश्यकता आदि प्रश्नोत्तरके रूपमें दर्शाये गये हैं। प्रत्येक भारतीयको इसकी एक प्रति पास रखनी चाहिए। मूल्य =) मात्र है।

व्रतोत्सव-चन्द्रिका।

अर्थात्

हिन्दु-त्यौहारोंका शास्त्रीय विवेचन।

लेखक—महामहोपदेशक पं० श्रवणलाल शर्मा।

उत्सवोंसे मनुष्यके जीवनपर बड़ा ही प्रभाव पड़ता है, क्योंकि अभी तक हिन्दी साहित्यमें कोई भी ऐसी पुस्तक नहीं है जिससे हिन्दुओंके व्रतोत्सवोंके महत्त्वके विषयमें कुछ ज्ञान हो। इसीसे हिन्दु लोग व्रत तथा उत्सवकी ओरसे उदासीन होते जा रहे हैं। थोड़े ही दिन हुए श्रीमान् वाणीभूषण महामहोपदेशक पं० श्रवणलालजीने "व्रतोत्सवचन्द्रिका" नामकी पुस्तक लिखकर हिन्दू-जनताका बड़ा ही काम किया है। प्रस्तुत पुस्तकमें उन्होंने व्रतोत्सवोंके शास्त्रीय स्वरूपपर प्रकाश डालकर उनकी अनुष्ठान-विधि, उनका लौकिक स्वरूप, उनके सम्बन्धकी प्रचलित कथादि और अन्तमें इन व्रतोत्सवोंसे देश तथा जातिहितकर कैसी शिक्षा मिलती है इन सबका बड़ा ही सुन्दर विवेचन किया है। इस प्रकार यह ग्रन्थ अत्युपयोगी हुआ है। पुस्तकको प्रकाशित हुए अभी एक वर्ष भी न हुआ, इसकी एक सहस्रसे अधिक प्रतियां बिक चुकीं।

रायल आठपेजी आकारके लगभग पौनेचारसौ पृष्ठोंकी सजिल्द पुस्तकका मूल्य ३) मात्र है। शीघ्र खरीदिये, अन्यथा विलम्ब करनेपर द्वितीय आवृत्तिकी प्रतीक्षा करनी पड़ेगी।

आचार-प्रबन्ध।

विदेशी शिक्षाके प्रचारके कारण भारतीयोंकी शास्त्रीय विधिसे श्रद्धा उठती चली जाती है। इसी कारण भारतीय अपने शास्त्रके विरुद्ध व्यवहारोंके अनुकरणमें प्रवृत्त होते जाते हैं। ऐसे ही लोगों-को वास्तविक मार्गपर ले आनेके लिये स्वर्गीय पं० भूदेव मुखोपा-ध्यायजी सी० आई० ई० ने "आचार-प्रबन्ध" नामक पुस्तक रच-कर देशका बड़ा ही काम किया है। इसमें दिनचर्या तथा अव-स्थानुसार संस्कारका विस्तृत-रूपसे निरूपण किया गया है। परिशिष्टमें यह भी बतलाया गया है कि हमारे यहां कितने व्रत, किस देवताके उपलक्षमें एवं किस किस प्रदेशमें किस किस भांति मनाये जाते हैं। २१० पृष्ठकी पुस्तकका मूल्य १) मात्र है।

पारिवारिक प्रबन्ध।

परिवारका प्रबन्ध कैसे होना चाहिए इस विषयका स्वर्गीय भूदेव मुखोपाध्याय सी० आई० ई० का रचित यह एक अनूठा ग्रन्थ है। इसमें दाम्पत्यप्रेम, पिता-माता, पुत्र कन्या, भाई, बहिन, पुत्र-वधू आदि सम्बन्ध कैसे होने चाहिये इसका बहुत ही सुन्दर निरू-पण किया गया है। प्रत्येक गृहस्थको यह पुस्तक पास रखनी चाहिये। १८२ पृष्ठकी पुस्तकका मूल्य १) मात्र है।

भूदेव चरितम्।

आचार-प्रबन्ध" तथा "पारिवारिक प्रबन्ध" के रचयिता स्वर्गीय भूदेव मुखोपाध्याय सी० आई० ई० का पं० महेशचन्द्र तर्कचूड़ा-मणिने संस्कृतमें जीवनचरित्र लिखा है। उसीको पं० श्रीकुमार देव मुखोपाध्यायने अपनी टीका सहित प्रकाशित किया है। मूल्य १।।) मात्र है।

प्रयाग-माहात्म्य।

बिना यज्ञोंके, बिना दानोंके, बिना सांख्यके, बिना योगके, बिना

आत्मज्ञानके और बिना तपस्याके तीर्थसेवा मात्रसे मोहकी निवृत्ति हो सकती है। ऐसे माहात्म्यपूर्ण तीर्थोंमेंसे तीर्थराज प्रयागका माहात्म्य—वर्णन, जिसके सम्बन्धमें तुलसीदासने कहा है "को कहि सकै प्रयाग प्रभाऊ। कलुष पुंज कुंजर मृग राऊ" और जिसकी बड़ाई श्रीरामचन्द्रजीने स्वयं अपने श्रीमुखसे की है, श्रीमत्स्यपुराण में किया गया है। महाभारतके अनन्तर युधिष्ठिरके व्याकुल होनेपर श्रीमार्कण्डेयजीने प्रयागका महात्म्य, वहां गमनकी विधि तथा फल आदि जो बतलाया है वह सब उक्त पुराणमें दर्शाया गया है। प्रस्तुत पुस्तकमें उसी अंशका मूल देते हुए व्याकरणाचार्य न्याय-शास्त्री पण्डित सूर्यनारायणशर्माने अति सरल तथा सुन्दर टीका की है। पुस्तक लगभग १५० पृष्ठकी है और इसका मूल्य ॥=) मात्र है।

वैष्णव-रहस्य।

भगवद्भक्तोंके बड़ेही कामकी यह पुस्तक है। श्लोकोंके साथ साथ हिन्दी टीका भी दी हुई है। मूल्य)॥

इङ्गलिश ग्रामर।

हिन्दी भाषा द्वारा अंगरेजी सीखनेके लिये "इङ्गलिश ग्रामर" अत्युपयोगी है। इसके पढ़नेसे थोड़े ही परिश्रममें शीघ्र अङ्गरेजी आ सकती है। हिन्दी, उर्दू मिडिल उत्तीर्ण छात्रोंके लिए बड़े ही कामकी चीज है। मूल्य ।)

कन्या विनय चद्रिका।

यह छोटीसी पुस्तिका भारतीय बालिकाओंके हृदयमें धार्मिक भावोंके उत्पन्नकरनेके लिये अत्युपयोगी है। प्रत्येक माता-पिताको अपनी दुलारी कन्याको गुड़ियोंके स्थानमें इसे ही देना चाहिये। मूल्य) मात्र है।

इश्क दोहावली।

प्रेम सम्बन्धी ६१ दोहोंका यह अत्युत्तम संग्रह है। प्रत्येक दोहा कविवर बिहारीलालके दोहोंके सदृश भावपूर्ण है। मूल्य)

दिव्य जीवन।

यह ग्रंथ संसार भरमें नाम पाये हुये डाक्टर स्विट्मार्स्डनकी

जगद्विख्यात पुस्तक " The Miracles of Right Thoughts" का हिन्दी अनुवाद है। पुस्तक क्या है, एक महात्माका दिव्य संदेशा है जिसको पढ़नेसे हृदयमें एक अद्भुत शक्तिका सञ्चार होता है और आत्मामें स्थित अनन्त शक्तियोंका ज्ञान होता है। पुस्तक उत्साहवर्धक विचारोंसे परिपूर्ण है। प्रत्येक नवयुवकको पढ़ना चाहिये। यह दूसरी बार छपी है। मूल्य केवल ॥।)

डाक्टर सर जगदीशचन्द्र वसु और उनके आविष्कार।

विज्ञानाचार्य्य वसुको कौन नहीं जानता? उनके आविष्कार आज संसारमें सबको आश्चर्य्यमें डाल रहे हैं। उन्हीं आविष्कारोंका, यन्त्रोंका, इस पुस्तकमें वर्णन किया गया है। पुस्तक बड़ी मनोरञ्जक और अपने ढंगकी पहली ही है। मूल्य केवल।=)

स्वतन्त्रताकी झनकार।

यदि आप भारतके राष्ट्रीय कवियोंकी चुनी हुई जोशीली, स्वतन्त्रताका मार्ग बतानेवाली कविताओंको एकही पुस्तकमें पढ़ना चाहते हैं तो इसे शीघ्र मंगाइये। यह पुस्तक लोगोंको ऐसी पसंद आई कि प्रायः छः ही महीनेमें इसकी तीन हजार कापियां समाप्त हो गयीं। अब दूसरी बार पहलेसे बढ़ियां कागज और सुन्दर छपाईके साथ तैयार हुई है, पृष्ठ संख्या भी बढ़ा दी है। शीघ्र मगा लीजिये। सचित्र मूल्य ॥)

जीवनमें चैतन्यकी ज्योति जगमगानेवाला

असहयोग दर्शन।

भूमिका लेखक—श्रीमान् पण्डित मोतीलाल नेहरू।

इसकी भूमिका पूज्य पण्डित मोतीलाल नेहरूने लिखी है, इसीसे आप समझ सकते हैं कि, यह पुस्तक कितनी महत्वपूर्ण है। सारे भारतमें आज जो खलबली मच रही है उसका प्रधान कारण असहयोगकी पुकार है। इसमें म० गांधीके मद्रास, कलकत्ता, काशी, पटना, बेलगांव आदि अनेक स्थानोंके चुने हुए व्याख्यान तथा स्त्रियोंकी सभाओंमें दिये हुये व्याख्यान तथा तलवार सिद्धान्त, स्वराज्यही रामराज्य है, अहिंसाकी विजय, पंजाबमें दमन, स्फूर्त

और कालेजोंका इन्द्रजाल, अङ्गरेजोंके नाम खुली चिट्ठी, राक्षसी राज्यमें दिवाली कैसे मनावें, रावण राज्यमें शृङ्गार छोड़ दो, यदि मैं पकड़ा जाऊँ तो—आदि अनेक जीवनमें नई जागृति पैदा करने वाले लेखोंका अनूठा संग्रह है। संक्षेपमें यह पुस्तक गांधीजीके युक्तिमन्त्रोंका अनूठा कोष है। यह पुस्तक लोगोंको इतनी पसन्द हुई है कि, छः महीनेमें ही इसकी दो हजार कापियां समाप्त हो गयीं। यह दूसरी आवृत्ति है। अब जल्दी मंगा लीजिये, नहीं तो तीसरी बार छापनेतक ठहरना पड़ेगा। बढ़िया कागजपर बढ़िया छपी हुई सचित्र पुस्तकका मूल्य केवल १।)

गो-व्रत-तीर्थ-महिमा।

(श्रीस्वामी दयानन्दजी विरचित)

इस पुस्तकमें गो महिमा, व्रतोत्सव महिमा और तीर्थ महिमा शास्त्रीय प्रमाण तथा वैज्ञानिक युक्तिके साथ विस्तृत रूपसे वर्णित है। धर्मकल्पद्रुमके अष्टम खण्डके प्रथम तीन अध्यायको ही गो व्रत तीर्थ महिमा नाम देकर पृथक् पुस्तक रूपसे प्रकाशित किया गया है। जो धर्मकल्पद्रुम जैसा विराट् धर्म ग्रन्थ नहीं खरीद सकते वे इस छोटी सी पुस्तकसे सनातनधर्मके सबसे श्रेष्ठ गो महिमा, व्रतोत्सव महिमा और तीर्थ महिमाका रहस्य जान सकते हैं। मूल्य ।।) आठ आना।

ब्रह्मविद्याका मूलग्रन्थ।

(धर्मरत्न राव बहादुर श्रीमान् श्याम सुन्दरलाल B. A. C. I. E. प्रणीत)

सरल हिन्दीमें वेदान्तका यह सिद्धान्त ग्रंथ है। थियोसोफीकी दृष्टिसे ब्रह्मविद्याका रहस्य इस पुस्तकमें लिखा गया है। २५० पृष्ठकी पुस्तकका दाम ।।=) मात्र है।

धर्म-सुधाकर।

(श्रीस्वामी दयानन्दजी विरचित)

यह पुस्तक धर्मकल्पद्रुमका सारांश है। धर्मकल्पद्रुम जैसे विशाल ग्रंथके रहते हुए भी धर्मसुधाकरकी आवश्यकता क्यों पड़ी? इस प्रश्नके कई उत्तर हैं। प्रथमतः धर्मकल्पद्रुम तीन हजार पृष्ठोंका

विशाल ग्रन्थ है, और यह ८ खण्डोंमें पूर्ण है। साधारण मनुष्यों के लिये इस ग्रन्थमेंसे धर्मका साधारण ज्ञान प्राप्त करना बहुत कठिन है। द्वितीयतः इसका मूल्य १५) पन्द्रह रुपया साधारण लोगों के लिये अधिक है। तृतीयतः भाषा तथा भावके विचारसे साधारण शिक्षित जनोंके लिये धर्मकल्पद्रुमका समझना अति कठिन है। चतुर्थतः धर्मकल्पद्रुम जिस समय लिखा गया था उस समयका सामाजिक धार्मिक और राजनैतिक हिन्दू जीवन आजकलके ऐसा वैचित्र्यमय नहीं था। इन्हीं कारणोंको देखते हुए हिन्दूधर्मके अनन्त विषयोंसे चुन चुन कर धर्म, वर्णधर्म, आश्रमधर्म, नारीधर्म, सामाजिक प्रश्नोत्तरी, नित्यकर्म, श्राद्धतर्पण, सदाचार, षोडश संस्कार, उपासना विज्ञान, विविधोपासना वर्णन, मूर्तिपूजा रहस्य, अवतार रहस्य, श्रीकृष्ण चरित्र वर्णन इस प्रकार १४ उपयोगी विषय इस ग्रन्थमें दिये गये हैं। इन विषयोंके भीतर अवान्तर विषय अनेक हैं जिनकी उपयोगिता पाठकगण पढ़कर जान सकते हैं। इसकी भाषा सरल और सार्वदेश कालोपयोगी है। मूल्य २) दो रुपया।

दैवीमीमांसा दर्शन प्रथम भाग।

वेदके तीन काण्ड हैं। यथा—कर्मकाण्ड, उपासनाकाण्ड और ज्ञानकाण्ड। ज्ञानकाण्डका वेदान्तदर्शन, कर्मकाण्डका जैमिनी दर्शन और भरद्वाजदर्शन और उपासनाकाण्डका यह अङ्गिरादर्शन है। इसका नाम दैवीमीमांसा दर्शन है। यह ग्रन्थ आज तक प्रकाशित नहीं हुआ था। इसके चार पाद हैं, यथाः-प्रथम रसपाद, इस पादमें भक्तिका विस्तारित विज्ञान वर्णित है। दूसरा सृष्टिपाद, तीसरा स्थितिपाद और चौथा लयपाद, इन तीनों पादोंमें दैवीमाया, देवताओंके भेद, उपासनाका विस्तारित वर्णन और भक्ति और उपासनासे मुक्तिकी प्राप्तिका सब कुछ विज्ञान वर्णित है। इस प्रथम भागमें इस दर्शनशास्त्रके प्रथम दो पाद हिन्दी अनुवाद और हिन्दीभाष्यसहित प्रकाशित हुए हैं।

[illegible]साधनचन्द्रिका।

वर्तमान काल इतना कराल है कि, जीवोंकी स्वाभाविक रुचि विषयोंकी ओर होती है। आत्मसाधन, ईश्वर आराधना और नित्य

कर्मके लिये उनको समय मिलता ही नहीं। इस कारण वर्तमान देश काल और पात्रके विचारसे यह सुगमसाधन चन्द्रिका नामक पुस्तिका प्रकाशित की जाती है। इसके द्वारा प्रत्येक व्यक्ति थोड़े ही समयमें अपने नित्य कर्तव्योंका कुछ न कुछ अनुष्ठान करके आध्यात्मिक उन्नति मार्गमें कुछ न कुछ अग्रसर हो सकेगा। "अकरणान्मन्दकरणं श्रेयः" इस शास्त्रीय वचनके अनुसार इस पुस्तिकामें शाखाभेद, अधिकारभेद आदिका कुछ भी विचार न रखकर एक अति सुगम मार्ग बताया गया है। मूल्य =)

सामाजिक प्रश्नोत्तरी।

इसके हिन्दी, बंगला और उर्दू तीनों संस्करण हैं। इसमें वर्तमान समयके बड़े बड़े जटिल विषयोंकी प्रश्नोत्तररूपसे मीमांसा की गयी है। मूल्य यथाक्रम -) =) और)॥

हठयोग।

अनुवादक—ठाकुर प्रसिद्धनारायणसिंहजी बी० ए०। बाबा रामचरणदासकी लिखी हुई इसी नामकी पुस्तकका हिन्दी अनुवाद। इसमें स्वामीजीके बताए हुए ऐसे सरल अभ्यास हैं जिन्हें आप खाते, पीते, उठते, बैठते, चलते, फिरते हर समय कर सकते हैं। थोड़े ही अभ्याससे आपकी शारीरिक उन्नति और मनःशक्ति प्रबलता उस मात्रा तक पहुंच जायगी, जिसका आपको स्वप्नमें भी ख्याल न होगा। मूल्य १।=)

योगकी कुछ विभूतियां।

योगकी विभूतियां तो अनन्त हैं, परन्तु इस पुस्तिकामें कुछ ऐसी विभूतियोंका वर्णन है, जिन्हें जानकर आप अनंत लाभ उठा सकते हैं। इसमें ध्यान, समाधि और संयम इत्यादिका ऐसा सुन्दर वर्णन है कि, थोड़े ही अभ्याससे मनुष्यकी विचित्र शक्तियोंका विकास हो सकता है। हमारे कथनका सत्य, पुस्तकके तनिक पढ़ने ही से ज्ञात हो सकता है। पृष्ठ संख्या १२४ मू० ।॥)

योगत्रयी।

इसमें कर्मयोग, ज्ञानयोग और भक्तियोगका संक्षेप, किन्तु

विशद वर्णन है। इसके अध्ययनसे मनुष्य आत्म तथा परमात्म-ज्ञान प्राप्त करके अपने जीवनको सफल, शुभाशापूर्ण और शान्त बना सकता है। पृष्ठ-संख्या १०४; मूल्य ॥)।

योगशास्त्रांतर्गत धर्म।

संसारमें धर्मका विचित्र झमेला है। धार्मिक मतभेदोंसे संसारमें असंख्य अनिष्ट हुए हैं। ग्रन्थकारने धार्मिक अनेकतामें एकता और प्रतिकूलतामें अनुकूलता दिखलाई है। इसके मनन और अध्ययनसे धर्म-विषयक सारे संशय मिट जाते हैं। मूल्य ॥)

राजयोग अर्थात् मानसिक विकास।

वह विद्या है, जिसके द्वारा आप अपने मानसिक दूषणों और त्रुटियोंको दूर करके मनःशक्तिको प्रबल तथा हृदय' को परमानन्द-परिप्लावित कर सकते हैं। लेखकने इसमें मनके भिन्न भिन्न भेदों का स्पष्ट वर्णन करके आत्मोद्धारके उत्तम उपाय बतलाए हैं। इसमें अनुभव-हीनोंकी तरह मनको मारना या उसे जबरदस्ती दबा लेना नहीं बतलाया गया है। ग्रन्थकारने इसमें मतवाले मनको स्वच्छंद रीतिसे वशमें करना सिखाया है। सुंदर उपदेशोंके साथ-साथ सरल भाषामें ऐसे मंत्र दिये गए हैं, जिनके मननसे वास्तविक कल्याण होगा। पृष्ठ ३००; मूल्य १॥)

मातृभूमि अब्दकोष।

HINDI YEAR BOOK.

पं० रघुनाथ विनायक धुलेकर एम० ए० लिखित।

हिन्दुस्तान और हिन्दी संसारका ज्ञान प्राप्त करनेका यह अद्वितीय ग्रन्थ है।

विषय-सूची।

१—भारतवर्षका संक्षिप्त इतिहास। २—प्राकृतिक स्वरूप। ३—हिन्दी साहित्य (ग्रन्थोंके नाम लेखकों सहित)। ४—वर्तमान भारतीय शासन (मांटेगु चेम्सफोर्ड सुधार सहित)। ५—भारत सरकारकी रचना (वायसराय, गवर्नर-जनरल कौंसिल, लेजिस्लेटिव एसेम्बली, कौंसिल आफ स्टेट, नामांकित तथा निर्वाचित निर्वाचक)।

हिन्दी भाषामें इसकी इस प्रकार टीका की गयी है कि, जिसके पाठ करनेसे श्रीदुर्गाके सब प्रकारके आध्यात्मिक आधिदैविक और आधिभौतिक रहस्यको अनायास समझ सकते हैं। दुर्गाके विषयमें किसी प्रकारकी आशङ्का क्यों न हो इस ग्रन्थके पाठ करनेसे सब नष्ट हो जायगी। तरह तरहके सुन्दर अक्षरोंमें उत्तम कागज और छोटे साइजमें यह ग्रन्थ प्रकाशित हो गया है। दुर्गापाठ करनेवाले प्रत्येक विद्वान् और हिन्दू सद्गृहस्थ मात्रको यह ग्रन्थ खरीदना चाहिये। मूल्य पूरे कपड़ेकी जिल्द १) आधे कपड़े की जिल्द ॥)

महिला प्रश्नोत्तरी।

इस पुस्तकमें महारानी और वाणी देवीके प्रश्नोत्तर रूपसे महिलाओंके जानने योग्य सनातनधर्मके अनेक गूढ़ विषय वर्णित हैं। मूल्य -) एक आना।

वेदान्त दर्शन।

महर्षि वेदव्यासजीने उपनिषदोंकी मीमांसारूपसे वेदान्त दर्शनके सूत्र बनाये। उन सूत्रोंमें प्रथम चार सूत्र—"अथातो ब्रह्मजिज्ञासा" "जन्माद्यस्य यतः" "शास्त्रयोनित्वात्" और "तत्तु समन्वयात्" चतुःसूत्री नामसे प्रसिद्ध हैं और इन्हीं चार सूत्रोंपर विस्तृत रूपसे समन्वय भाष्य लिखा गया है। इस पुस्तकके पढ़नेसे वेदान्तका रहस्य जाना जा सकता है। मूल्य ।=) छः आना।

कन्याशिक्षासोपान।

कोमलमति कन्याओंको धर्मशिक्षा देनेके लिये यह पुस्तक बहुत ही उपयोगी है। मूल्य =)

सब पुस्तकोंके मिलनेका पता:—

मैनेजर—निगमागम बुकडिपो,

भारतधर्म सिण्डिकेट लिमिटेड, बनारस।

श्रीभारतधर्ममहामण्डल

का

समाजहितकारीकोष विभाग।

इस हिन्दु स्वजातीय कोषका उद्देश्य।

श्रीभारतधर्ममहामण्डल हिन्दुजातिकी अद्वितीय धर्म महासभा और हिन्दु समाजकी उन्नति करनेवाली भारतवर्षकी सकल प्रान्त-व्यापी संस्था है। श्रीमहामण्डलके सभ्य महोदयोंने केवल धर्म-प्रचार करना ही इसका लक्ष्य नहीं है, किन्तु हिन्दु-समाजकी उन्नति, हिन्दु-समाजकी दृढ़ता और हिन्दु-समाजमें पारस्परिक प्रेम और सहायताकी वृद्धि करना भी इसका प्रधान लक्ष्य है।

हिन्दु-समाजके बीचके दर्जेके लोगोंकी अवस्था बहुत ही शोच-नीय है, और दरिद्र लोगोंकी तो बात ही क्या है। हिन्दु-गृहस्थोंमें प्रायः देखनेमें आता है, कि वे अपने भोजन वस्त्रका काम भी बड़ी मुशकिलसे चलाते हैं, और जब कभी गृहस्थीमें गमी, शादी आदिका नैमित्तिक खर्च आ जाता है, तो वे बड़ी ही विपत्तिमें पड़ जाते हैं। पुराने ज़मानेमें सामाजिक बन्धनकी दृढ़ता थी। उस समय जो शादी, गमी आदिके समय परस्परमें "न्योता" देनेकी रीति प्रच-लित थी, हिन्दु-समाजकी वह सुन्दर सामाजिक रीति प्रायः अस्त हो गयी है और धनहीन प्रतिष्ठित गृहस्थोंमें आत्मसम्मानके विचारसे ऐसा भी देखनेमें आता है कि, वे घोर संकटमें पड़नेपर भी मित्र और रिश्तेदारोंसे भी सहायता लेना अपमान समझते हैं। छोटे दर्जेके लोगोंमें तो गमी और शादीके समय बड़ी ही विपत्ति देखनेमें आती है।

इस समय जो जीवन-बीमाकी कम्पनियां पश्चिमी सभ्यताके ढंग पर लोकोपकारार्थ स्थापित देखनेमें आती हैं, उनके नियम ऐसे कठिन और उनका चन्दा इतना अधिक है कि, [illegible]

श्रेणीके गृहस्थ उन कम्पनियोंसे कुछ लाभ नहीं उठा सकते हैं। केवल धनीलोग उन कम्पनियोंसे लाभ उठा सकते हैं। इस कारण पुरानी न्योता प्रथाको सुकौशल रीतिपर दुबारा बनाकर गृहस्थोंको मदद देनेकी इच्छा श्रीमहामण्डलने की है।

हिन्दु गृहस्थोंमें गमी-शादी आदिके समय उन गृहस्थोंपर जो आर्थिक विपत्ति आती है, उनको दूर करनेके निमित्त और परस्परमें सहानुभूति बढ़ानेके अभिप्रायसे श्रीभारतधर्ममहामण्डलने इस समाज-हितकारी कोषकी कई वर्षोंसे स्थापना की है, और उचित समय देखकर इस कोषके नियमोंमें यथायोग्य परिवर्तन करके हिन्दु समाजकी सहायताके लिये इस विभागके कार्यको दृढताके साथ अग्रसर किया है। हिन्दु नर-नारी मात्रका कर्तव्य है कि, श्रीमहामण्डलका सभ्य-सभ्या बनकर इस समाजहितकर कोषसे लाभ उठावें। श्रीमहामण्डलके इस विभागके नियम बहुत ही सीधे सादे बनाये गये हैं। जिससे सब श्रेणीके सद्गृहस्थ इससे अच्छी तरह लाभ उठा सकें। इस कोषके सम्बन्धमें श्रीमहामण्डलके मेम्बरोंकी संख्या जितनी अधिक होगी, उतना ही अधिक लाभ उनको मिल सकेगा।

नियम।

(१) सनातनधर्मी हर एक हिन्दु नर नारी मात्र दो रुपया साल चन्दा देना स्वीकार करके महामण्डलके मेम्बरशिपके फार्मपर दस्तखतकर देनेसे वे साधारण मेम्बर होनेके अधिकारी होंगे। फार्म महामण्डल दफ्तरसे मुफ्तमें मिलेगा।

(२) १८ वर्षका पुरुष और १६ वर्षकी स्त्री अथवा इससे अधिक उमरके हिन्दु नर नारी श्रीमहामण्डलके साधारण सभ्य हो सकते हैं।

(३) साधारण सभ्य होने योग्य नर-नारी मात्रको संस्कृत भाषाका एक अति मनोहर मासपत्र विना मूल्य प्राप्त होगा। केवल डाक खर्च देना होगा।

(४) ऐसे स्त्री या पुरुष जो साधारण सभ्य होंगे, वे समाज हितकारीकोषके मेम्बर हो सकेंगे और अपने आत्मीय स्वजनोंमेंसे जितने व्यक्तियोंको चाहें मेम्बर बना सकेंगे।

(५) समाज हितकारी कोषके सम्बन्धसे दो श्रेणीके कोष अलग २ स्थापित रहेंगे।

(क) विवाह सहायक फण्ड (शादी फण्ड)

(ख) मृत्यु सहायक फण्ड (गमी फण्ड)

(६) चन्दा निम्न लिखित रीतिके अनुसार मेम्बरोंको देना होगा।

(क १) हर एक नामके रजिस्टर दर्ज होते समय १) एक रु० दाखिला देना होगा।

(क २) ऊपर लिखित विवाह-सहायक फण्डके लिये १) तथा मृत्युसहायक फण्डके लिये ॥) आठ आना महीना चन्दा देना होगा।

(ख) प्रत्येक मेम्बर चाहे स्त्री हो चाहे पुरुष उनको अधिकार होगा कि वे शादी फण्ड और गमी फण्डमें अथवा दोनोंमें अलग अलग चन्दा देकर शामिल हो सकेंगे। प्रत्येक फण्डकी मेम्बरीके लिये पृथक् प्रार्थना पत्र भेजना होगा।

(७) समाज हितकारी कोषके दोनों फण्डोंके मेम्बर होनेका प्रमाण पत्र प्रत्येक व्यक्तिको अलग अलग दिया जायगा। जिसमें मेम्बर संख्या आदिका विवरण रहेगा। यदि वह प्रमाण पत्र खोय जाय तो फिर २) रु० देनेपर उस सार्टीफिकेटका डुप्लीकेट् अर्थात् दूसरी प्रति दी जा सकेगी। फण्डसे सहायता मिलते समय इसकी आवश्यकता होगी। इस कारण प्रमाण पत्र बहुत ही हिफाजतसे रखना होगा।

(८) प्रत्येक साधारण सभ्योंको अपना दो रुपया सालाना चन्दा और अपने शादी फण्ड और गमी फण्डका जो चन्दा हो उसको नियमित सदर दफ्तर काशीमें पहुंचाना होगा। फण्डका चन्दा तीन तीन महीनेमें अर्थात् मार्च, जून, सितम्बर और दिसंबर तक प्रतिमासका चन्दा पेशगी दफ्तरमें पहुँच जाना चाहिये। यथा समय सब चन्दा वसूल हो जाना चाहिये। यदि समयके अन्दर चंदा न आवेगा, तो एक आना फी रुपया जुर्माना होगा। यदि मयसूद सब रुपया दूसरी जनवरी तक अदा न हो जाय, तो मेम्बरके सब अधिकार जप्त हो जायेंगे, और मेम्बरका नाम रजिस्टरसे खारिज कर दिया जायगा।

(९) जब कोई मेम्बर चाहे स्त्री हो या पुरुष किसी कारणसे अपने हक्को जप्त करा चुका हो, उसका नाम दुबारा उसके पुराने नम्बर पर उसकी दरख्वास्त आने पर और उसके पास जितना रुपया पावना था वह रुपया दफ्तरमें मय एक आना फी रुपया माहवार सूद और सार्टीफिकटका १) रु० आने पर दुबारा उसका नाम दर्ज रजिस्टर हो जावेगा। परन्तु यह कार्यवाही ३ वर्षके अन्दर होनी चाहिये।

(१०) अगर कोई मेम्बर अपने स्वजनोंमेंसे किसीका नाम परिवर्तन कराना चाहे, और परिवर्तनका काफी कारण बता सके तो ऐसा परिवर्तन भी हो सकेगा। परन्तु ऐसे परिवर्तनके लिये २) रुपया भेजकर नाम परिवर्तन कराना होगा।

(११) समाज हितकारी कोषके सभ्य तीन साल तक लगातार चन्दा देनेपर समाज हितकारी कोषसे लाभवान हो सकेंगे।

(१२) इस कार्यमें जो आमदनी होगी वह निम्नलिखित प्रकारसे काममें आवेगी, और उससे निम्नलिखित सहायता मेम्बरोंको पहुंचेगी।

(क) साधारण सभ्यका वार्षिक जो दो रुपया आवेगा, वह कुल रुपया ओमहामण्डलके हिन्दी तथा अंग्रेजी मुखपत्रोंके खर्चमें व्यय होगा। इसी पत्रमें समाज हितकारी कोषका सब हाल प्रकाशित किया जायगा। और वह कई भाषाओंमें प्रकाशित होनेकी आशा है। प्रकाशित होने पर हर एक साधारण मेम्बरको किसी भाषाका एक पत्र विना मूल्य दिया जायगा।

(ख) शादी फण्डमें जितना रुपया हर तिमाहीमें इकट्ठा होगा उसमेंसे दफ्तर खर्च, मानपत्र और प्रमाण पत्र आदिका खर्च काट-कर बाकी सब रुपया समान रूपसे उस फांडके मेम्बरोंके विवाहके लिये बांट दिया जायगा जिन जिन लोगोंका विवाह उस समय होने वाला होगा।

(ग) उसी प्रकार गमीफण्डमें जितना रूपया हर तिमाहीमें इकट्ठा होगा उस कुल रुपयेमेंसे दफ्तरखर्च आदिका खर्च काटकर कुल रुपया उस तिमाहीमें जितनी गमी होगी, उनको समानरूपसे बांट दिया जायगा।

(घ) प्रत्येक सभ्यसे पहले तीन सालकी जो आमदनी होगी और जो मुतफर्रिक आमदनी एडमिशन फी आदि की होगी, उस आमदनीसे एजेंट तथा ब्रेंच आदिका खर्च देकर जो बचेगा, सो रिजर्व फण्डमें जमा किया जायगा।

(१३) प्रत्येक तीन महीनेमें अर्थात् मार्च, जून, सितम्बर और दिसम्बरके आखिरमें इन चार तिमाहियोंमें शादी फण्ड और गमी फण्ड दोनोंकी सहायता बांटी जायगी।

(१४) फण्डसे सहायता लेनेके लिये निम्न लिखित नियमोंका पालन करना होगा।

(क) शादी फण्डके लिये कन्या या पुत्रकी शादीके तीन महीना पहले विवाहका समय और कहां विवाह होगा, उसका पता लिखकर प्रार्थनापत्र काशी प्रधान कार्यालयमें भेजना होगा।

(ख) गमी हो जाने पर जिस मृत व्यक्तिका नाम दर्ज था उसकी मृत्युका समय लिखकर मृत्युके एक महीनेके अन्दर प्रार्थना पत्र सदर दफ्तर काशीमें पहुंचना चाहिये।

(१५) उपरोक्त १३ और १४ नम्बरके नियम साधारणतया लिखे गये हैं, परन्तु किसी खास अवसरपर प्रबन्धकारिणी कमिटीके खास प्रबन्धसे सभ्योंको सहायता पहुँचायी जा सकेगी, और आवश्यकता पर पेशगी भी रुपया देकर सहायता की जा सकेगी।

(१६) "समाज हितकारीकोष" का रुपया किसी विश्वस्त बैंकमें रक्खा जायगा।

(१७) इस कोषके प्रबन्धके लिये एक खास कमेटी रहेगी, और यह कमेटी सहायताकी व्यवस्थाके लिये समय समयपर उपनियम भी बनावेगी। और नियमोंमें न्यूनाधिक भी कर सकेगी, वर्त्तमान प्रबन्ध कारिणी कमिटीकी नामावली अन्यत्र प्रकाशित है।

(१८) समाज हितकारी कोषकी प्रबन्धकारिणी कमेटीको पूर्ण अधिकार रहेगा, कि ऊपर लिखित सहायताओंका निर्णय करे, तथा योग्यव्य क्तियोंका बाद तहकीकात सहायता पहुंचावे और सहायताकी रकम निर्णय करे, तथा इस विभागके सम्बन्धका अन्यान्य

सब कार्य करे। समाजहितकारीकोषकी प्रबन्धकारिणी कमेटीको पूर्ण अधिकार रहेगा कि जो मेम्बर अधिक दिनसे फण्डकी सहायता करते हों, उनको यथायोग्य रीतिपर अधिक सहायता पहुंचावें।

(१६) शादी फण्ड और गमी फण्ड दोनोंकी सहायता पहुंचानेसे पहले यदि कमेटी आवश्यक समझेगी, तो स्थानीय म्युनिसिपलटी, स्थानीय पुलिस, स्थानीय शाखा सभा अथवा निकटस्थ प्रतिनिधि सभ्य अथवा देशी रजवाड़ोंमें होनेपर वहांके दरबारके मार्फत जांच कराकर सहायता पहुंचावेगी।

(२०) सहायता पानेवालेको सहायता मिलनेके लिये उसके सम्बन्धका प्रमाण पत्र प्रधान कार्यालयमें वापस भेजना होगा।

(२१) गमी फण्डकी सहायता मृत पुरुष या स्त्रीके द्वारा नामजद होगी, उसीको मिल सकेगी। परन्तु मेम्बरका वारिस मृत व्यक्तिकी मृत्युका सबूत पहुंचाने और उसका प्रमाणपत्र वापिस करनेपर ही सहायता पानेका अधिकारी होगा।

(२२) शादी फण्डकी सहायता कन्या या पुत्रके पितामाता या अन्यान्य सज्जन जो चन्दा देते हों उनको तभी पहुँच सकेगी, जब वे विवाह होनेका तथा विवाहके समयका पूरा सुबूत पहुँचा सकेंगे। और मेम्बरीकी प्रमाण पत्र दफ्तरमें फेर देंगे।

(२३) यदि प्रमाण पत्र किसी कारणसे खोया जाय तो कमेटीको अखतियार होगा, कि काफी सुबूत लेकर और उस शहरके योग्य व्यक्ति अथवा व्यक्तियोंका जमानतमामा लेकर तब रुपया उनके मार्फत देवें।

(२४) यदि मृत व्यक्तिका नामजद सहायता पाने वाला नाबालिग हो, तो वह सहायता उसके वलीको काफी सबूत लेकर दे देनेका अधिकार कमेटीको रहेगा। और यदि मृत व्यक्ति इस विषयमें कुछ निश्चय कर पहले सदर दफ्तरमें इत्तला कर जावे तो उसके पालन करनेका कमेटीको फर्ज होगा।

(२५) अगर नाबालिगका वली न हो तो कमेटीको इखतियार रहेगा कि जबतक नाबालिग बालिग न हो जावे तबतक इस रकमको अपने मार्फत ही जमा रक्खे। या तब तक जमा रक्खें जबतक किसी अदालतके मार्फत उसका वली मुकर्रर न हो जाय।

(२८) मृत व्यक्ति का वारिस यदि विधवा हो तो उसको सहूलियतके साथ सहायता पहुंचाना कमेटीका फर्ज होगा। जिससे विधवाको अधिक दिक्कत न हो।

(२७) समाज हितकारी कोषका प्रधान कार्यालय श्रीभारतधर्म महामण्डल जगतगंज बनारसमें स्थायी रूपसे रहेगा।

विशेष प्रार्थना।

श्रीभारतधर्म महामण्डलने समाज-हितकारी कोषको किस उद्देश्यसे स्थापित किया है। उसका विस्तृत हाल भूमिकामें बतलाया गया है। नियमोंके पाठ करनेसे सर्व साधारणको विदित होगा कि चन्दाको दर और सहायता विभागके नियम कितने सरल बनाये गये हैं, और कितनी सरलतासे सहायता प्राप्त हो सकती है। अब प्रार्थना है कि हर एक हिन्दु स्त्री-पुरुष, अपना २ लाभ उठाकर परस्परमें सहानुभूति प्राप्त कर सकते हैं।

सर्व साधारणकी आय कम और व्यय बहुत कुछ बढ़ गया है, उस अभावकी पूर्तिके लिये अनेक बीमा कम्पनियां स्थापित हैं, परन्तु उनके चन्दाका भाव इतना अधिक और नियम इतने कठिन हैं कि सर्व साधारण उनसे लाभ नहीं उठा सकते हैं। इस कारण मध्य वृत्तिके लोगोंकी तकलीफ बहुत बढ़ गयी है, समाज-हितकारी कोषके मध्य श्रेणीके मनुष्यों और हर दर्जेके लोगोंके वास्ते बहुत ही लाभदायक बने हैं। फण्डके नियमोंका पाठ करनेसे विदित होगा कि जितनी अधिक संख्या फण्डके सभ्योंकी होगी उतना ही अधिक लाभ सभ्योंको पहुँच सकेगा, हिसाबसे देखा गया है कि यदि सभ्योंकी संख्या ५ हजार भी हो तो हर एक सभासद् को कमसे कम २००) दो सो रुपया मिल सकता है। और इसी तरहसे यदि सभ्योंकी संख्या एक लाख या दो लाख हुई तो सहायता भी १०००), २०००) एक हजार दो हजार हो सकती है, हर एक कुटुम्बमें लड़का या लड़कोंकी शादी अवश्य होती है। और हर एक कुटुम्बमें गमी भी हुआ ही करती है, उस समय जो धनका क्लेश होता है उसको दूर करनेके लिये समाज-हितकारी-कोष (हिन्दु-म्युचुअल बेनीफिट फण्डमें सभ्य होनेसे आर्थिक क्लेश दूर जाता है।

दूसरी ओर एजेन्ट लोग अपने गांवमें और समीप वर्त्ता कस्बोंमें गांवके आदमियोंको समाज हितकारी कोषका फायदा समझकर बहुत आसानीसे सैकड़ों रुपया माहवारी पैदा कर सकते हैं। इसमें मेहनत कम और लाभ अधिक है। रोजगारसे खाली आदमियोंको अर्थ क्लेश दूर करनेके लिये इससे सहल उपाय और कुछ नहीं हो सकता है।

इस समाज हितकारी कोषके कमसे कम एक लाख मेम्बरकी जरुरत हैं, अगर प्रत्येक सभ्य अपने लाभ पर ध्यान रखकर सभ्य संग्रहका उद्योग करे, तो यह संख्या बहुत ही शीघ्र पूरी हो जायगी और उनको अधिक संख्यामें सहायता मिलनेका मौका मिल सकेगा।

संयुक्त प्रान्तमें इटावा शहरकी जल-वायु अत्यन्त

स्वास्थ्यवर्धक है ।

इसीलिये

देश-देशान्तरोंसे लोग जल-वायु-परिवर्तनके लिये यहां सदैव आते रहते हैं। शहरके वयोवृद्ध और अनुभवी आयुर्वेद चिकित्सक पं० बिहारीलालजी वैद्यराजका यश-सौरभ आजकल दिग-दिगन्तमें व्याप्त हो रहा है, क्योंकि आज ४० वर्षसे अधिक हुआ, जबसे वे अपने दीनोपकारक औषधालय द्वारा नित्य सैकड़ों रोगियोंको अपने पाससे निःशुल्क औषधि और व्यवस्था देकर आरोग्य-जीवन प्रदान कर रहे हैं। यदि कभी आपको इटावा पधारनेका अवसर हो, तो एक बार हमारे औषधालयका अवश्य निरीक्षण कीजिये।

पूज्य पंडितजी नाड़ीके विशेषज्ञ और राजयक्ष्माके सुप्रसिद्ध चिकित्सक हैं।

निवेदक:—

पं० रामसनेहीलाल वैद्य,

आयुर्वेदभूषण,

व्यवस्थापक—दीनोपकारक औषधालय, कूंचा शीलचन्द्र,

इटावा। (यू. पी.)

श्रीसीतारामौ विजयतेतराम् ।

चिकित्सा कौशलंचेत्थं न भूतं न भविष्यति ।
सुलभे सुफलं तूर्णं वैद्यविज्ञानयोगतः ॥

१—ॐ श्रीविश्वनाथजीकी कृपासे प्राचीन आयुर्वेद तथा नये अमेरिकन विज्ञानके सहयोगके अलावा कम कीमतपर जल्दी इस तरह अत्यन्त फल देने वाला चिकित्साकौशल अभीतक प्रकाश नहीं हुआ, न होनेवाला है । यह नये तरीकेसे तैयार किया गया है, इसकी परीक्षा कीजिये । जो मरीजने अपनी बीमारी अच्छी होनेकी आशा त्याग दिया हो, उनको शास्त्रानुसार, विज्ञानके तरीकेसे, स्वरोदय, तान्त्रिक, जलचिकित्सा, नाड़ीचिकित्सा, इत्यादि हरेक प्रकारके उपायोंसे बहुत ही जल्दी शर्तिया इलाज से आराम किया जाता है । और आराम होनेपर इनाम लिया जाता है । अनुपानकी कोई जरूरत नहीं ।

२—जगति पूज्य स्वामीजीका सेवक कविराज उमाचरण जी का प्रिय शिष्य है । बहुत बड़े पण्डितों व कविराज व साधु महात्मा लोगोंने परीक्षा की है, उन्हीं लोगोंके कहनेके अनुसार, चिकित्सा विभ्राटसे जो मेह, प्रदर, क्षय इत्यादि बीमारी आराम हो बहुत ही कम सम्भव है, उसको आराम किया गया है और अकाल मृत्युसे रक्षाके लिये बहुत ही परिश्रम उठाकर नये तरीकेसे इलाज किया जाता है । गुंजा बराबर मीठी औषधियोंसे भी चिकित्साकी जाती है, उसका नमूना स्वरूप कई प्रकारकी दवा जो कि बहुत ही शीघ्र फल देनेवाली हैं, परीक्षा कर लाभ उठाइये अधिक कहनेकी जरूरत नहीं । हिन्दुस्थान भरमें ऐसा विचक्षण तपस्वी पण्डित नहीं दिखाता है ।

हेमरसायन । १५ रोजके दवाकी कीमत ॥) रत्नगिरि गोलियां । ७ खुराक दवा कीमत ॥~)॥ वसन्त कल्याण । १ खुराक दवाकी की० १) ज्वर कालान्तक । १४ मात्रा १) रु० स्मरारि वटी । ७ खुराक कीमत ॥) विशूची वारण । ७ खुराक कीमत ॥) रसेन्द्र योग । ७ खुराक कीमत १) धन्वन्तरी तैल । =) ।) ।=) ॥) १) शीशी । सफल घृत । १ सेरका ८) कामाख्या सालसा । १॥), २) बोतल । दद्रुनाशिनी ।) आना डिबिया । इसके अलावा हरेक प्रकारके शास्त्रीय मकरध्वज, च्यवनप्राश, गोलियां, घृत, मोदक, तैल, आसव अरिष्ट आदि कम दामपर मिलता है ।

आयुर्विज्ञानाचार्य, वैद्य महोपाध्याय, कविभूषण,
कविराज, श्रीरामकिशोर भट्टाचार्य वेदान्त भूषण,
काशीधाम दशाश्वमेधघाट, बनारस सिटी ।

अंग्रेज़ी ग्रन्थमाला।

निगमागम ग्रन्थमाला, सूर्योदय ग्रन्थमाला और वाणी-पुस्तक मालाकी तरह अंग्रेजी ग्रन्थमाला भी श्रीभारतधर्म महामण्डलके प्रधान संचालक महोदयकी सहायतासे प्रकाशित हो रही है। वर्ल्ड सिटरनल रिलीजन नामक जगत्प्रसिद्ध तथा सनातनधर्मका अंग्रेजी भाषाका एकमात्र ग्रन्थ प्रकाशित हो चुका है। त्रिभावात्मक अंग्रेजी भाष्य सहित श्रीमद्भगवद्गीता खंडाकारमें प्रकाशित हो रही है। अब वर्ल्डसिटरनल ट्रुथ, नामक एक अपूर्व ग्रन्थ यन्त्रस्थ है। इस अपूर्व ग्रन्थके द्वारा पाश्चात्य शिक्षासे भूले हुए युवकोंको पथप्रदर्शकका काम होगा। इसमें प्रथम यही दिखाया गया है कि उनके वर्त्तमान गुरु बड़े बड़े विदेशी विद्वानोंने भारतवर्षकी प्राचीन सभ्यता और आर्यजातिके जगत् गुरुत्वके विषयमें कैसा दृढ़ और सर्ववादी सम्मत मत प्रकाशित किया है। उसके बादके अध्यायोंमें पूज्यपाद ब्राह्मणगण जगत्को क्या क्या सिखा गये हैं, उसका संक्षेप वर्णन है। अभीसे जो लोग ग्राहक होंगे उनको सुभीतेके साथ यह ग्रन्थ मिलेगा।

गवर्निंग डाइरेक्टर—

भारतधर्मसिण्डिकेट लिमिटेड्,

स्टेशनरोड बनारस सिटी।

पौराणिक ग्रन्थमाला।

जैसी अपूर्व टीका सहित श्रीसप्तशती (दुर्गा) वाणी-पुस्तकमालामें प्रकाशित हुई है, उसी प्रकार पुराण, उपपुराण, महापुराण आदि शास्त्रसमूह शुद्ध हिन्दी अनुवाद और वैज्ञानिक हिन्दी टीका सहित ग्रन्थमालामें प्रकाशित होंगे। इस ग्रन्थमालाके द्वारा पौराणिक पण्डितगण कुछ लाभ उठा सकेंगे। और जो अंग्रेजी पढ़े-

लिखे लोग पुराणोंपर नाना शंका करते हैं, उनको शंका करनेका अवसर ही नहीं रहेगा। पहलेसे ग्राहक होनेवालोंको विशेष सुभीता रहेगा। कुछ ग्राहक होते ही माला शीघ्र ही प्रकाशित होगी।

खण्डाकारसे ग्रन्थमाला निकलेगी, जिससे खरीदनेमें भी लोगोंको सुभीता रहेगा।

गवर्निङ्ग डाइरेक्टर,
भारतधर्मसिण्डिकेट लिमिटेड, स्टेशन रोड,
जगतगंज, बनारस।

वैद्यक ग्रन्थमाला।

हमारा आयुर्वेद शास्त्र एक समय जगत् प्रसिद्ध था, अब उसकी मर्य्यादा पुनः जगत्में प्रकाशित होती जा रही है। वैद्यक शास्त्रकी चर्चा और उसका विस्तार भी दिन पर दिन बढ़ता जाता है।

हिन्दी भाषाकी पुष्टि और आयुर्वेद शास्त्रीय ग्रन्थोंके अधिक प्रचारके शुभ उद्देश्यसे प्रकाशित अप्रकाशित आयुर्वेद सम्बन्धी शास्त्रीय ग्रन्थोंको हिन्दी अनुवाद और वैज्ञानिक टीका सहित प्रकाशित करनेका आयोजन हो रहा है।

खण्डाकारसे यह ग्रन्थमाला निकलेगी, जिससे खरीदनेमें भी लोगोंको सुभीता होगा, कुछ ग्राहक होते ही माला प्रकाशित होगी।

गवर्निंग डाइरेक्टर—
भारतधर्मसिण्डिकेट लिमिटेड,
स्टेशनरोड, बनारस।

शान्तिनगर।

—:※:—

जगत्‌के लोगोंने सभ्यताका पाठ भारतवर्षके आर्योंसे ही पढ़ा है, इसमें किसीका मतभेद नहीं है। परन्तु कालके प्रभावसे हमारी सभ्यताके चिह्नतक लुप्तसे हो रहे हैं। हम उदाहरणसे यह नहीं बता सकते कि, हमारी सभ्यता अमुक प्रकारकी थी। उसी आदर्शको स्थिर रखने और उसका पुनरुद्धार करनेके सत् उद्देश्यसे यह शान्ति नगरके स्थापन-की योजना तैयार की गयी है। यह नगर काशीपुरीके निकट और वरुणाके मध्यमें ही संघटित शक्तिके सहारे स्थापन किया जायगा और इसकी स्थापनामें देशके स्वाधीन राजन्य वर्ग, समाजके प्रतिष्ठित नेता और वर्णाश्रमधर्मावलम्बी सर्वसाधारणने उत्साहके साथ समानरूपसे भाग लिया है। विस्तृत योजना इस डाइरेक्टरीके "संस्थाखण्ड"में (पृष्ठ २४५ से २५५ तक) प्रकाशित की गयी है। उसके पाठसे ज्ञात होगा कि, यह कार्य कितना महत्त्व पूर्ण, उपयोगी और आव-श्यक है। इस कार्यमें आशातीत सफलता भी हुई है। हमारा विश्वास है कि, इस योजनाके महत्वको सभी सनातन-धर्मावलम्बी हृदयसे सराहेंगे और इस कार्यमें यथाशक्ति भाग लेकर इसे सफल बनानेमें हमारा हाथ बंटावेंगे। पत्र-व्यवहार इस पतेपर करना चाहिये:—

श्रीशारदानन्द ब्रह्मचारी, एम्. ए.

संघटननायक, शान्तिनगर संघटन-

कार्यालय, ११८ मिश्रपोखरा,

बनारस सिटी।